182 Qe. 899. 11.

अस्य कु उद्वाधन।

विक्रिक्त बाधक बाधा स्टासका है

ne 809

রামকৃষ্ণ মিশনের বান্ধালা-পাঞ্চিক-পত্র

ধর্মনীতি, সমালনীতি, রালনীতি, ধর্মন, বিজ্ঞান, চুকি, শিল, সান্তিম, ইতিহাস, অমণ আহুতি নামাধিব বিষয়ব

क्रीबं नमं।

२००५ व च हरेरा ५७०५ (भीव)

শ্বামী বিবেকানন্দ প্ৰভৃতি লেখক ।

খানী নিভগতীত-সম্পাৰ্ক

অলিম বারিক স্বাদ্ধ স্থাত সংগ্

পুরারর রূপ্ত সমগ্র উর্থানন স্পাত্ কার্ড ব্রাই রাজ , প্রতিমাহল ভাতি স্থানত, ও ভিজ্ঞানিক বৃত্তি

L

क किलावा, बाधकार्थार हाते, बन्दरतार्गामा करते, इत्यत्रम देशका गामक

ended in comments and again relieve

dex3 is

3



- স্থানীপ্ৰতা। উদ্বোধন—তৃতীয় বৰ'।

ৰ্ষয়ের আদ্যবর্ণাকুক্তমিক **ছ**টী

| 2 100 | ब्यु ६ श्र | आकारता देखान के किए। | a distribution |
|--------------------|-------------|-----------------------------|--------------------|
| fava | Labor | Colde I | 781 |
| অপ্রোকাহ কৃতি . কা | भो विदय | কাৰৰ কেব্ৰা হ'বানী ওচান | ₹) ६००,६३३, |
| | Twell. | | - 645, 620 |
| 湖河 4.月 | d | | 091, 093 |
| | *** | ৰাবু হতিলাস নত | 201 |
| পাত্যাপাশন | iix. | সম্পাধক | w/2, 639 |
| আবার সূক্ষভাব | रामी विद | वकानन (जंदराहक-वामी उद्यो | कहम, इत्र (म्ब |
| খার-না | 2.2.5 | ৰপাৰক | 310 |
| मार्थ्य नगरम | *** | বাবু শরচনত চক্রবর্তী বি, এ | 841. |
| উপনিষদের বিবর | A | वासी मिक्किसासमा | 85,98 |
| P1F 2 2 7 2 0 | | বাবু শবক্তল চক্ৰবৰ্তী বি, জ | 344 |
| कर्वकी बटन दिनासः | यामी विध | विकासन (बस्यानक—यानी अना | सन्दर्भ वदन, ५५% - |
| কি ভার কহিব | | সম্পাধন | 65.4 |
| ক্ৰিয়াৰ | राष्ट्र बार | 1115E O. (F. B. H. S. Lon | idon) sw. |
| | 100 | Shaker a | 1 220, 5.6 |
| প্ৰাৰ্ক | 200 | পানী প্রচানক 🗀 | × |
| গীতা শহরত গাহিৰাদ | | প্ৰিত প্ৰহণনাৰ প্ৰকৃত্ | 24, 60,000, |
| | | 285, 050, 081, 081, 805, 8 | 90, 609, 400 |
| सर्गद र | ामी विदय | বাৰক (অনুবাধক -বানী গুৱান | (म) ५ss, |
| | 4.3 | | 10, 600, 601 |
| श्रीवनकृष्ट्य - | 4,2 | गत् विशास मञ | 954 |
| SIN . | | नाव नेप्रकल प्रकारको, वि.च | det |

| | A Contract of the Contract of | | The Object of the I |
|--|--|----------------------|---------------------|
| | (ল্পক | | পৃষ্ঠা |
| বিষয় | the Control of the Co | চক্ৰবৰ্তী, বি, এ | Och |
| ছুইটা বছু | . 3 | • | . 799 |
| দেরাছ্ন | স্বামী সচিচ | क्रांत्रक | 269 |
| भन्मकार्ड अन् | িবেক্টনন্দ (অং | ত্ত্বাক্তন ভাততাব | শ্বিভ্ৰণ খোষ, |
| ধর্মের আবশ্যকভাত্যাম | 11८वकहनना (अ | ্ত্য বি) | et., 618, epo |
| 100 | | ٠, ١, ١, ١ | |
| ন্বাহ্যাপ | 刘柳村并强 | | ₹ 9◆ |
| मूज्य वश्यव | नात् इति | | 5, 64 |
| अवग्रद्शादित छेल्दम | স্থামী এগ | | 35, 69 |
| পরিত্রাত্তক | | ্যকানন্দ | 24, 80,288 |
| न 15 कथा | ··· > > > > > = = = = = = = = = = = = = = | | |
| es's / | | জন্ত চক্ৰবৰী, বি, | |
| क्षां व भारतको | | 1011111 | 0, 29, 122, 120 |
| ল্লী ত উপহার | ৰাৰু গি | त्रिभव्य (चाव | ** |
| বহুত্বে একড় স্থ | मा विद्वकानम् (अ | মুবাদক — স্বামী 🦁 | द्यानम्, ८०५, ६७७ |
| | বাব ভাৰ | তুকলচন্দ্ৰ খোষ | 89.8 |
| ব্ৰজ্ঞানিক কৰা ব্ৰহ্ম ও জ্বংসামী বি | ৰবেকানল (অনুবা | দ্ৰ-স্থানী তছা- | (報) 285,その3,883 |
| ज्यवर्क्षण व माध्न | সামী এ | য়ক।শান ল | 31174 |
| মন্তিক ও শিকা | খামী ং | ওয়া-ন্স | ₹ • \$ |
| माउक उरान्या ग्रहाकांशास्त्रान | পণ্ডিত | মোকদাচরণ সাম | भगाती २६,५२३,५४४, |
| Maleldukzu | 239, 21 | > 885, 6.6, 64 | ba, ७०३, ५७६, ५३° |
| মানবজীবন—উদেশ্য | ত উল্লিড বাব জ | हिन हस नाथ | 99. |
| মানবজাবন—ডেপেড মানুবের মধার্থবরপ | অগ্নী বিবেকানন | অেনু বাদক—স্থান | विकालम् ११,८०,४४ |
| मास्ट्रस्त्रं यथाययमा | ক্ষাবিকাশ ঐ | 3 | 100, 534 |
| भाषा । स्वत्रधातमात | 3 | 3 | 584, 59' |
| মাছা ও মুক্তি | 2.4.4 | नःहान हान्यकी, | वि. ५ ३० |
| वृद्धि | THE REST | অথভানন্দ | |
| भूनियानाय क्याबाट | | भव्रक्तम ठक्क रही. | fa. a >૧ |
| गुरुग | TO SERVE OF A STREET AND A | | |
| বুমকুঞ্চনহেবং শবে ! | 1.10 | ধাক | |
| স্থানক্ষ মিশন | 1/10 | णापक . | |

| ार्यय | C*17 | |
|---|------------------------|-----------------|
| च्या (वर्तेष्ठ) व्रख्याः वर्षे | ভাকার পশিভূষণ ঘোর, | वर, वि |
| श्री अंत्रकृष्णकृष्णभूष्ठ | ं विष्⊸ा ३०६, ० | १ १७४, राज्य, ४ |
| তংগ ৩৯৩, | 882, 270, 470, 48°, 43 | 9, 80 3, 6-5, |
| শ্ৰী হী বাসত্ত কৰে সংগ্ৰহৰ ব | প্রেরিড পঞ | 19 92 62., |
| এইবিষয় আহমর | শ্বশাদক | 100 |
| ত্রী সক্ষাধোষৰ | ুলোৱত শ্ৰ | |
| श्रीकी शामान कर्ता बाल | প্রী রাম্প্রান্দ কর | , 500, 800, |
| | | 288, 6172, |
| স্বাহালেড়েনা 💮 \cdots | भूत्रशांत्रह | |
| क्षणानिव | প্ৰাথা প্ৰচলাৰক | 羅二型 |
| স্কাৰত বিষয়পুৰ পান | विद्यक्षतम् । अञ्चलक् | त्रभी करानचा |
| | | 366, |
| शामी विदेशवानेस , हावा) | প্রেরিত গয় | |
| | | |
| | | |
| | | |
| | | |
| | | |
| | | |
| | | |
| | | |
| 420000 | | |
| | | |
| | | |
| | | |
| | | |
| | | |
| Washington of the State of the | | |
| | A Walter | |
| The state of the state of the | THE STREET | COMPANIE AND A |

২। লেখকগণের নামের আদ্যবর্ণাসুক্রমিক স্চী।

লেগক

বিবর

অথগুনিক স্থানী।—মূর্শিগবাদ অনাধার্ত্রম।
আটল চন্দ্র নাথ।—মানবজীবন—উদ্দেশ্ত ও উন্নতি।
আনুকূলচন্দ্র ঘোঘ। বৈজ্ঞানিক কথা।
গিরিশচন্দ্র ঘোষ।—প্রীতি উপহার।
বিশ্রেণাতীত স্থানী (সম্পাদক ।—মাজ্ঞাপালন, আর—না, কি আর
কহিব, নবাল্লাগ, পাঁচকথা, রামকৃষ্ণমিশন, আঞ্জীরামক্ষাঞ্জ্ঞাৎ সব, সমালোচনা।

क्षकामानम भागी।—क्षत्रक्षा क माधन।

প্রবোধচন্দ্র দে F. R. H. S. (London.)—কৃষিব্যান্ধ বা পদ্মীভাগার। প্রমথনাথ তর্কভূষণ (পণ্ডিত)।—গীতাশঙ্কভাষ্যান্থবাদ। ব্রহ্মানন্দ স্বামী।—গরমহংদেবের উপদেশ।

বিবেকানন্দ স্থামী।—পরিবাদক, থান্টা ও পাশ্চাতা।

বিৱেকানন্দ স্থামী।—(অহবাদক—ছাক্তার শশিভ্রণ গ্রহার এম, বি)—
ধর্মের আবস্তকতা।

বিবেকানন সামী।—(সহবাদক—ওছানস সামী)—অপরোকাহভৃতি,
সমূত্ব, আয়ার মুক্তসভাব, কর্মজীবনে বেলান্ত,
লগং, বহুতে একন্দ, ত্রন্ম ও জগং, মানুষের ষ্থার্থ
স্ক্রপ, মায়া ও স্বর্ধারণার জেমবিকাশ, মারা ও
মৃতি, সর্ধান্ততে প্রস্কাশন।

"ম—লিখিত"।—এ শীরামকক্ষরণামুত।

মোক্ষদাচরণ সামাধ্যায়ী (পণ্ডিত)।—মহাভাব্যাহ্বাহ।
রামকৃষ্ণানন্দ স্থামী।—শীশীরামাহলচরিত।
শারক্তক্রে চক্রবর্তী, বি, এ।—আশুর্য সমন্তর, এবন ও বহন্দ, ভাগ,
হুইটা বন্ধু, দেনাহ্বন, এক্তি, মৃক্তি, মৃত্যু।

শশিভ্ষণ ঘোষ এম, বি (ভাক্তার)।—তক্ষেবচরিত।
ভাজানন্দ আমী।—গদাবকে, মতিক ও শিক্ষা।
সচিদানন্দ আমী।—উপনিবদের বিবর, ধর্মজগতে ওক্ল; স্থাশিব।
ছরিদাস দত্ত।— কর্ম, জীবনকুম্বন, নৃত্তন বৎসর।

৩ ৷ ভাবানুসারে হলী ৷ . . .

সোলোক প্রয়ন্ধ ক প্রাণ্ডগা কার্যন উপনিবনের বিষয়, একটা বা ব্যাদ্ধিক পা পলীজা তার, এইটা বন্ধু বেরাছন, ব্যাদ্ধিক পা পরিবাদে কা পর্বাহ্ব উপনেক, পরিবাদে করে, পরিবাদে করে, তার্যক প্রাণ্ড কার্যন করে, তার্যন করে, তার্যক প্রাণ্ড কার্যন করে, তার্যন করে,

আনুবার । নীতীপ্রতিধা, মুহানায়, ধর্মের আগত্তত।, আন্দোগ।
তরানায়ার। নুজপ্রেছিক্তি, অন্তর্গ, আর্থাঃ মুজস্বতার, কর্তীয়তে
বেনাস্ত হুপর, বহুপে একবা, এফ ও অগত, নাহুদের ব্যাগ
অরপ, সালা ও স্থিরগারণার ক্রমাবিকাশ, লাহা ও মুজি,
স্থায়াত ব্যাগনা

ক্ৰিন্তঃ ব - অৰ্থ, জীবনকুত্ম, ভাগি, নুভল বংলত, প্ৰতি উপহাৰ, মুকি-মুন্তঃ।

স্কাল কীয় ৷— গাজাণালন (বোধানের মান্ত আজাণালন, আন্ধাণালনের আন্ধানিক), আনবাণালনের আল্বাণালন, আনবাণালনের বিশেষ
কাল্ডাবিপাল, কাল্ডাবিপালের অন্ধান, আল্বাণালনিক।
নিমান, আল্লানালিকিয়া কর্মান, আল্লাণালনিক।
নাধানাপ কর্মান, আল্লাণালনি নিধিনার উপাং, আল্লাণালন—ধর্মের আল, উপান্ধার।), আর—না, বি আল্লানন—ধর্মের আল, উপান্ধার।), আর—না, বি আল্লাননিকিয়ার। পালিকানিকিয়ার ইনিরাধানক।
ক্রিকাধনাকিয়ার।

প্রাচি । ক্পিবান অবাধান্তম, গ্রহক্ষরহাৎসংগ নিন্দ্রণ, কীনীবামরক্ষ-মধ্যাংস্থ, উঞ্জীবামরক সেক্রান, স্থামী বিবেছারুল। চালে।)

্ৰাষ্ট্ৰকান্দ প্ৰণ্ড

ং বেন ভিন্ন দেশ হিঁল জাৰোৰ গ্ৰন্থেও জনে বি নিজনিন্তি লেখনিন্তি লিখনিন্তি লেখনিন্তি লিখনিন্তি লিখনি লিখনি লিখনিন্তি লিখনি লিখনিন্তি লিখনিনি নিন্তি লিখনিনি লিখনিনি লিখনিনি নিন্তি লিখনিনি ল

ু বুলি কাৰ্য্য হোৱাৰ লাকেন জান ৷ বেচন মহাজ্যের পালালে জ্যান চাল নাপে, চহান সাধী গ্ৰেছেৰ নিজ্পেত্ৰ দানা ধানা করে নাল আগিৰে দেহ, তেন্দি চগ্ৰান জ্যান কৰি হ্যিয়ে দেন, একল কজেন ভাব জ্যান কা বিল বইপজা লানীৰ জান স্বিদ্ধে চ্যিত্ৰ বৃদ্ধি :

্ৰ প্ৰতিপৰি সহ । সাংগ**েলা ৮ কেট হা ভাতে** ভাত বাৰ্ছে কেট ভাষা ক^ট হ, কেট প্ৰতি ভাষাৰ পাঠি কসুছে ; দেখি আলোৰ লোৰ আলা বিজ্ঞি ভগৰতনৰ লাবে অভি তেগা কৰ্ম, কেট দুই কাতে তেটা ভাইছে, লোকি ভাষানেক ধোন ক

ত্র বিশ্ব কর নাগবের ভারত আর বেলা বর্ণ না । তেমনি জীবে ুমু^{নি চি} শব্দ কর জ্ঞান প্রথমনে, ভারত আতু গায়ন চলে না । বে জেল-নার্থা কাগজ এটি বিশ্ব করে নিশ্বে ভারত সেখা মুখ্য । তেমনি জাবে কালিনী কাশ্যু কর্প বেশ্ব বাহু কে, ভাগে তুল খাছি বিশ্বে বনে, নিশ্বে ভব্দে বাংল জ্ঞা

্ ব্যাপি শ্বন থাবে, কাল হৈছে নি সাক্ষা ভাষাৰ ভ্ৰতস্তা কাৰ কাৰ ভূমা সাম, পি তাই বাছ শিলাল বহু জংল গোলা পালা বিশ্ব হাই কোটোৰ লভ ইংগ্ৰানে কাৰে, "কামি বেশ শাছি" — জনবান্ত ভ্ৰম বাছেল ভূমি বেব ভাষা পালা প্ৰদৰ্শনৈ প্ৰথমন নিজে বংগ্ৰহণ, ভ্ৰম বাৰ্ব্যাল পালে, আ ভ্ৰাব বিশ্ব মি — ভ্ৰপবাৰ্থ জ্বন বল বেন "ভাষা ভূমি বাছে ভিৰুপ

নরান্মরাগ।

আজ আমাদের শুভ দিন—উলোধনের নববর্ষারন্ত। আজ আমার্বাদ কর্মন, নৃতন উল্পান্তর সহিত যেন ইহাকে চালাইতে পারি; উলোধন যেন নববর্ষ নবান্থরাগের ভরে অধিকতর বেগে উর্দ্ধানে ছুটিতে থাকে। আজ একটু মঙ্গল কামনা কর্মন, যেন সকলে নব উৎসাহে, নব উল্পামে স্থ স্থ কার্য্যে রত হইতে থাকেন; নব প্রেমে, নব অম্বরাগে যেন সকলে নির্মাণ আনন্দ্রমর মুর্ত্তি হইয়া বিচরণ করিতে থাকেন। আজ একটু শুভেচ্ছা কর্মন, যেন মর মুর্ত্তি হইয়া বিচরণ করিতে থাকেন। আজ একটু শুভেচ্ছা কর্মন, যেন মর মুর্ত্তি হইয়া বিচরণ করিতে থাকেন। আজ একটু শুভেচ্ছা কর্মন, যেন মর মুর্ত্তি হইয়া বিচরণ করিতে থাকেন। আজ একটু শুভেচ্ছা কর্মন, যেন মর মুর্তি হইয়া বিচরণ করিতে থাকেন। আজ একট শুভেচ্ছা কর্মন, থেন মার তিত্ব-ভব্ত উল্লীপিত হইয়া উঠে—নবাহুরাগে সকলে যেন মন্ত হইতে থাকেন; ইন্দ্র বায়ু বরুণ প্রস্তৃতি প্রোণিগণ, মুনি ঋষি রাজা প্রজা প্রভৃতি মনুষ্যাণণ, পত্ত পক্ষী কীট পত্তক প্রভৃতি প্রোণিগণ, যিনি যেখানে আছেন, সকলে যেন আজ একতানে নবামুরাগে গাইতে থাকেন—"জয় বঙ্গের জয়, জয় সকলের জয়।"

'নবানুরাগ' শক্টী অনেকেরই পক্ষে অতি শুভি-নুথকর; শ্রবণমাত্রই অনেকের আনল ও আশা-সমুদ্র উদ্বেশিত হইয়া উঠে। ভগবন্তুল, বিশেষভঃ, তলাত বৈশুবগণ, এই অর্থ ও ভাবপূর্ণ শব্দের বর্ণে বর্ণে অমুতাম্বাদন করেন। কেবলই যে প্রমার্থ-পিথে, তাহা নহে; সকল পথের সকল বিষয়েই নবান্থরাগের অভুত ক্রিয়া ও সামর্থ্য প্রত্যক্ষদেখিতে পাওরা যায়। যে আধারে ইনি ক্রীড়া করিতে থাকেম,—যে ভাগারান্ এই স্বর্গীর পদার্থের কণামাত্রও লাভ করিতে পারিয়াছেন,—যে স্কৃতি-বাক্তির অস্তরে এই অমুতোপম নবান্থরাগ কিঞ্চিল্মাত্রও উদ্রিক্ত হইয়াছে,—তিনি সাধুই হউন বা ভদগ্রই হউন, তিনি পরমার্থ-পিপাস্থই হউন বা মানবীয় প্রেমরাজ্যের পথিকই হউন, অধ্বা অস্ত্র কোনও বিষয়ের প্রতি অমুধাবনেজ্বক হউন,—জানিবেন, নিশ্চয়ই অনম্ভ উন্নতি-পথের মান্ধ ভাগার সন্থুও উদ্রাতিত হইল; জানিবেন, তিনি অচিরাং নানাপ্রকার সত্যের আলোক প্রতিপদ-বিক্ষেপেই দেখিতে পাইবেন। আর তাঁহাকে অক্তার রাজ্যে বন্দী করিয়া রাথে কাহার সাধ্য ছ কাহার সাধ্য আক্র

'ন্বামুরার'—''ন্ব-রাগে রঞ্ডি,'' ''কোটী শশিবিনিশিত,''—ম্বর্গ ছইতে

স্রোত্থিনীতে ঝম্প প্রদান করিলেন। তৎক্ষণাৎ অদৃশ্য। কিছুপরে, দেখি যে এক স্থানে ভাসিয়া উঠিয়া ভীষণ হার ডুবু খাইতেছেন; এমন সময়ে, বোধ হইল, যেন এক প্রকাণ্ড রক্ষ ভাসিয়া যাইতেছিল, তাহার একটা স্থল শাখার উপর স্থান আশ্রম লইলেন। শাখাগুলির অগ্রভাগ একটু একটু দেখিতে পাইলাম বটে,কিন্ত সে বৃহৎ রক্ষের মূল যে কোথা—তাহা দেখিতে পাইলাম না। অত বড়বে প্রকাণ্ড বৃক্ষ, প্রোত তাহাকেও বেগে লইয়া যাইতে লাগিল। শ্রাম তাহার এক শাখায় অতি ধীরাং ধীরতর রূপে প্রশাস্ত ও আনন্দময় মুর্ত্তিতে, বিদ্যা প্রোতের সহিত কোথায় চলিয়া গেলেন বৃষিতে পারিলাম না।

ন্যান্থরাগের এমনি স্থান তাথান টান যে, তাথাতে একবার পড়িলে আর ফিরিবার স্থান থাকে না। নাাল্যাগ এমনি ছোঁ। চেল এমনি সংকামক, এবং এমনি তার আকর্বণ শক্তি যে, ন্যাল্যাগির দহিত যিনি একটু মিশিয়াছেন, যার গায়ে একটু ন্যাল্যাগের হাওয়া লাগিয়াছে, আর তাঁথাকে খুজিয়া পাইবার যো নাই—অমনি তাঁথাকে একেবারে ছুবিতে হইয়াছে। কেবল যে, ছোঁয়াটে, তাহা নহে; ন্যাল্যাগ মথ্যে মার্যা দার্যাগাপী হইয়া পড়ে। তথন ত, দেশকে দেশই, ছুবিয়া যায়। আকৃষ্ণ, চৈতভলের প্রভৃতি, এক একবার আগিলেই, দেশ জৈরপ যেন বলা-প্রাবিত হইয়া যায়। নাল্য ও দ্রের কথা; শুনিয়াছি, চৈতভি দেবের সময়, হিংল্রক পণ্ড প্রস্তুও নাকি, ন্যান্ত্রাগে মত্ত হইয়াছিল।

ন্ধানুরাগে মন্ত হইলে ঐট্কি গ্রাপার বা ইহিক জ্ঞান ক্রমণঃ লুপু হইয়া যার। প্রীপতি-জ্ঞানে তনাসকে অবলাগণ আলিঙ্গন করেন; রহং কাঠজ্ঞানে গলিত মৃত দেহের উপর আর্গেংশ করিয়া ব্রাহ্মণ, নদী পার হইয়া যান। এমন কি, হিংশ্রক পশুও হিংদা প্রায় ত্যাপ করে।

ঐহিক ব্যাপ।র নই ইইয়া যায় যাক; ঐহিক জ্ঞান লুপ্ত হইয়া যায় যাক। ছুই দিনের অকিঞ্জিংকর ম্রাচিকার ভ্রমণ করিবার আবগুক কি পুলুকারিত-বিপদ্ মর্ণের মায়া-মূগকে ধরিবার জগু ভ্রান্ত রালোকের ছায় অনর্থক অভ ব্যস্ত হইবার প্রয়োজন কি পুলোকে কিপ্ত বলে বলুক—ব্যানাম বা বায়-প্রস্ত বলে বলুক; লোকে কি না বলে গু আমার সঙ্গে না মেশেন, কিছু ক্ষতি নাই, বরং শুভুগুণে ভাল—অপবিত্র হাওয়াট। কিছু ক্ম লাগিবে; জাতে ঠেলেন—সোভি আউর আছো, নির্বিপাদে অগ্রসর হইতে পারিব; গালাগালি দিরা ভূত ভাগান—ত ক্থাই নাই, পাপরাজ্য হইতে আরও শীঘ্র দৌ উয়া প্লাইতে পারিব। (একটী গান মনে পড়িতেছে।)

কে বলে ?—ভামা আমার কালো ?
(যদি কালো) তবে, কেন হানর করে আলো ?
আমার মা, যদি কালো হ'ত
তবে কি ডাকিতাম এত ?
যার কালো, তার কালো ভামা,
আমার সে বে ভাল।
গগণ কালো, সিন্ধু কালো,
কালো সে অনস্ত কালো ;
তবু কালো নর, সে কালো।

তাঁচাদেরই বা দেবে কি ? বাঁচারা সে জিনিষ আখাদন করেন নাই, তাহার সবলে ত যা তাই তাঁহারা বলিবেনই—তাহার আর আশ্চর্যা কি ? বিনি যাহা শইয়া পড়িয়া আছেন, তিনি তাহা দমর্থন কবিবার জন্ম ত স্বর্গ-মর্ত্ত্যা সংগ্রাম করিবেন—এ ত ধরা কথা আছেই। তবে, মাঝখান থেকে আমি কেন নির্ন্নোধের মত নিজেকে স্বর্গন্থ হ'তে বফিত করি? আমার অদৃষ্টে যদি এখন "ওপ্ন্ দিদেম" (চিচিঙ্কাক) হইয়া যায়, আমি রুত্ব কেন লুগুন না করি? অপরের জন্ম চন্টা করিগেও তাহা কি অপরের ভাগ্যে কথন ঘটাইতে পারিব ?ঘিনি নবাহ্মনাগ আখাদন করেন নাই, তাঁহাকে হাজার বুঝাইলেও তিনি বুঝিতে পারিবেন না। বাঁহার অদৃষ্টে দে স্থখ রাজ্য নাই, কাহার দাধা, তাঁহাকে দে রাজ্য ভোগ করাইতে পারে প

তবে কি নবাসুরাগ অদৃষ্ট-গত ? সকলকার অদৃষ্টে কি নবাসুরাগ ঘটে না ? তবে, নবাসুরাগের জন্ম এত সাধনা করিবার প্রয়োজন ? নবাসুরাগ ভাহা হইলে ছোঁয়াচে বা সংক্রামক হইল কি কপে ?—

যদি পুনর্জন্মনাদ বা কর্মবাদ মানেন ত আর কথাই নাই, উত্তর হইয়াই রহিয়াছে। পূর্বাহ্ কতিবশতঃ নবানুরাগ বাঁহার ভাগ্যে অদৃষ্টভাবে সঞ্চিত্র থাকে, তাঁহারই ইহ জন্মে সেইটা প্রক্টিত হয়। বাঁহার ভাগ্যে নবানুরাগের অমি বেশী পরিমাণে সঞ্চিত থাকে, তাঁহার ভাগ্যে উহা এক ফ্রেই অলিয়া উঠে। আর বাঁহার ভাগ্যে খুব কম পরিমাণে থাকে, তাঁহার ভাগ্যে ফ্রু পাছিতে পাড়িতে জান অস্ত হয়। তবে কি জানেন, কাই বিদি হাজার ভিজেও থাকে, ড, আগুনের কাছে থাকিলেই ক্রমশঃ কাই

শুকাইরা শুকাইরা শেষে চাই কি দপ ক'রে একেবারে জ্বলিরাও উঠিতে পারে। তাই বলি, নবাস্থরাগ ভোঁযােচে ব্যামাে। নবাস্থরাগীর নিকট থাকিতে থাকিতে নবাস্থরাগের উদ্রেক হইতে পারে। অবশ্রু, তাই বলিরা যে, যার তার হবে, তা নর। বিস্চিকা সংক্রামক; কিন্তু বাঁরা বিস্চিকার নিকট থাকেন, তাঁদের সকলকারই কি নিস্চিকা শীঘ্র হয় ? যাঁহাদের শরীর মােটা, মন মেটা, ম ভিল্ল মোটা, বুদ্ধি মোটা, হৃদর মোটা,তাঁহাদের ব্যুহ ভেদ করিতে, নবাস্থরাগের একটু বিলম্ব লাগে। সাধনার দ্বারা সেইগুলি মার্জিত করিয়া জনশঃ স্থান্ত সান্ত্রিক করিতে হর, তবে তাহাতে নবাস্থরাগের উদয় হয়। যাঁহাদিগের ভিতর নবাম্বাগের উদয় হয়, তাঁহারা ধন্য হম।

তাহা হইলে ত দেণিতেছি আমাদের আর গতি নাই। নবাছরাগী না হইতে পারিলে ত ধন্ত হইতে পারিব না? নবাছরাগী হইতে হইতে ঈধরতে মানিতে হবে, ধার্ম্মিক হইতে হইবে, ভক্ত হইতে হইবে,—তবে ত ? বাবাঃ— তাহা হইলেই ত গেছি!—-

নবাহুরাগ শ্বনীয় পদার্থ— শতি পনিত্র; ঠাকুর ঘবেই থাকুক, আর আঁচ্তাকুড়েই থাকুক, ইহা নিজেও কখন অপবিত্র হয় না অপর কাহাকেও
অপবিত্র করিতেওজানে না। ইহা সদা পাবক-রত্র অনপ; ইহা অগ্নি সরুপ।
ঈশ্বরেই হউক, বা মহুব্যেই হউক, অথবা কোন জড় পদার্থ সমুদ্ধেই হউক,
'নবাহুরাগ' কথাটা সক্তর প্রযুক্তা হইতে পারে। কাহারও, ঈশবে নবাহুরাগ হয়,
কাহারও বা কোন মহুব্যে নবাহুরাগ হয়, কাহারও বা কোনও কার্য্য করিতেই
অভাস্ত নবাহুরাগ হইতে দেখা যায়। নবাহুরাগ ম্পত্রই প্রশংসনীয়।
নবাহুরাগ—এই গুণ থাকিলেই যথেই উপকার হইল।

কোনও কার্য্য অত্যন্ত আগ্রহের সহিত করার নাম—অনুরাগের সহিত কার্য্য করা। অত্যন্ত আগ্রহের নাম অনুরাগ। ঈর্পর বা মন্থ্যের প্রতি অনু-রাগের মানে—ঈর্পর বা মন্থ্যের প্রতি অত্যন্ত ভালবাসা। সেই অনুস্বাগ কোন কোন ছলে প্রথম অবস্থার অতি তীত্র থাকে; সেই অবস্থার নাম 'নবান্থরাগ'। বেমন, কোন কোন গোঁলা ফুলের বোঁটা—খুব মোটা, কিন্তু ফুল—এক টু খানি; আবার কোন কোন গোঁলা ফুলের বোঁটা—খুব সক্র, কিন্তু ফুল—এত বড়। তেমনি, আধার অনুসারে কোথাও নবান্থরাগের বেশী বিকাশ দেখিতে পাওয়া যায়; কোথাও বা কম দেখিতে পাওয়া যায়। কোনও বিষয়ে নবান্থরাগ হইলে মন আপনা হইছেই ক্রমণঃ একাগ্র তইয়া

व्याभिट बारक, अस्तर 📲 इहेमा व्याभिट बारक, क्रमम व्याभेष इहेमा আদিতে থাকে। এইরূপ-ফ্রায়ে, ঈশ্বর বা প্রমার্থ-চিস্তার উদয় হেইতে বিলম্ব হয় না। যাঁহার চকু আছে, তিনি সবই দেখিতে পান; যাঁর হৃদয়ে ভালবাদা আছে, তিনি ইচ্ছা করিলে বা আবশ্রক পড়িলে, সকলকেই ভাল-বাসিতে পারেন। তেমনি বার জ্লয়ে অনুরাগ আছে, তিনি সকল বিষয়েই দেই অনুরাগের চালনা করিতে পারেন।

ষ্টার্থরকে না মানিলে যে, অনুরাগী হইতে পারিব না, তাহার কিছু मात्म नाहे। जेवत्रक मानियात किছू चावश्रक नाहे। अञ्चला थाकिलाहे ষ্টার নিজেকে নিজে মানাইয়া লইবেন, কিছু চিন্তা নাই। কেবল, নৌকার পাল খাটাইয়া রাখুন; হাওয়া আপনা হইতেই তাহাতে লাগিবে এবং আরোহী দমেত নৌকাকে বহন করিয়া লইয়া ঘাইবে; হাওয়াকে ডাকিয়া আনিতে इटेरा ना- ওলো হাওয়া আইস, ওলো হাওয়া আইস। আর र्माम हा अप्रा थारक, এवः भान ना थाहान, श्वासाह तोका कि हिमर्द ? স্বির স্বতঃই সদা সর্বত্ত বিদ্যমান: অনুবাগ না থাকিলে কি-চক্ত আপনি তাঁকে দেখিবেন ? তাই বলি, নবামুরাগ অভ্যাস করুন, বে কোনও গতিকে হউক। ন্যালুরাগী ছউন-তে বিষয়েই হউক। ন্যা-তুরাগের পথ অতি আশাপ্রদ। এ প্রের প্রিকরণ নানা ধনে ধনী হন। নবাধুরাগ বল্পতক বিশেষ; ইছার মূলে থাকিলে, না চাহিতেই ন্নোপ্রকার সভ্যের মালোক দেখিতে পাওয়া যায়; অবশেষে, এমন কি, নিরপেক পরম দতঃ পর্যাস্তও লাভ করা যায়।

তবে নাকি, ভনিয়াছি, ঘাঁহারা নবামুরাগী, তাঁহাদিগকে নানাপ্রকার আপদ বিপদ্ সহ্য করিতে হয় १—

নদীর তীরে দাঁড়াইয়া থাকিলে বেশী শীত করিবে, এমন কি ঠকঠক করিয়া কাঁপিতে হইনে; অনেককে, হয় ত, ঠাণ্ডা দেখিয়া ভয়ে পলায়ন कतिए७ इम, ज्ञान कता चात्र इम ना। विख, नगीए नामून, जन्मा कतिमा এক ডুব দিন, দেখিবেন আর তত শীত নাই; আর ওত ভর নাই; শরীর মন, অপেকাকৃত হুস্থ ও প্রিত্ত হইয়াছে। বাহির থেকে দেখিতে, না জানি, নথানুরাগে কভই বিগদ: কিন্তু সে পথের পথিক যিনি, তিনি তত বিপদ্ অহুভব করেন না, অহুভব করিতে অবসরও পান না—এত তার অমুরাগ। সে পথের প্রহরী-সর্ববিদ্বনাশক যে ঈশর তিনিই। তিনি স্বয়ং পথিকের হস্ত ধারণ করিয়া, কেমন স্থল্ব,নান। প্রকার স্বালোক দেখাইতে দেখাইতে, নানা প্রকার সত্য দেখাইতে দেখাইতে, অতি যৃত্বর সহিত, অতি বিত্রর সহিত পারি; সকলের শরীর মনপ্রাণ, যেন লালে লাল হইরা যায়। আজ আমাদের নববর্ধের শুভদিনে আশীর্কাদ করুন, নবালুরাগের পিচকারি লইয়া, মন খুলিয়া সকলে যেন পরক্ষার পরক্ষারের সহিত দে অমিয়-থেলা বিলতে পারি, স্বপ্রোথিত হইয়া দেথিতে পাই —দেশ যেন নব লুরাগের গোরি ময় হইয়া গিয়াছে।

शका-नटका

(यागी एकानम ।)

বৈশাথের বিকালেতে জাহুনীর কোলে,

वरह मृष्ट् मन्त वाब,

नहती नाहिया धात.

রক্ষে ভঙ্গে কি মধুব স্থন্দর দোলে! স্থনীল আকাশ —সব নীরব নীথর, প্রকৃতির সৌমা মৃতি প্রশাস্ত-দর্শনা,

বেন স্বেহ্ময়ী মাতা,

আনন্দেতে প্রফুল্লিতা,

সক্তানের স্নেছে গেন ব্যাকুল-অক্তর,
সক্তানের শুভ থেন নিয়ত কামনা।
এথনো তপন নিজ কার্য্য-অবসানে,
থান নাই অক্তঃপুরে বিশ্রাম আগারে,
এথনো তেজেতে তাঁর সবে শোভা পার,

এগনো পতন তাঁর,

হয় নাই রে আবার,

এখনো প্রচণ্ড ভাবে উদিত গগনে।
কিন্তু নিমগতি তাঁর—ক্রমে অন্তাচলে,
চলিছেন নিজ রশ্মি করি সংবরণ,
দেখাছেন যেন এই জগতীমগুলে,
চির্রাজ্য কাবো কভু হয় না কখন।

জাহ্নবীর বক্ষে সব কাতারে কাতারে, বিবিধ বিচিত্রবর্ণা ভাসিছে তর্নী, দণ্ডবলে চলে কেহ, কেহ পালভরে, চলিতেছে নম্বনের আনন্দদায়িনী।

যাইতেছে ওই দেখি প্রশস্ত তরণী, ঝপাঝপ পড়ে লাঁড়, আনন্দেতে চলে,

মধ্যে তার ছই জন,

পরস্পরে আলাপন,

'আজন্ম প্রাপরবন্ধ আমরা যুগলে,'
পুরুষ পুরুষ—নতে পুরুষ রমণী।

চলে যায়—বহিতেছে দক্ষিণ প্রন, ধীরে ধীরে মৃছ মন্দ অতি মন্দ চলে, আকাশে নাহিক মেঘ, নাহি কোন স্থন, নেম গো প্রকৃতি সুমধুর ভাষ বলে।

সহসা সকল স্তব্ধ—নাহিক বাতাস—
শুমটে অবশ তণু—ক্ষেদ অক্ষে কারে,
বাহিরি বসিলা দোঁচে আনন্দ অত্যর—
দেখে সে স্থনীলবর্ণ—নীল—নীলাকাশ।

অনস্ত দেখিয়া দোঁহা দোঁহে বিশারণ, অনস্তের ভাবে দোঁহে হইল বিভোরা, ভূলিল দেহের প্রেম—ভূলে গেল মন, অনস্তের ভাবে দোঁহে হ'ল মাতোয়ারা।

ভাবেতে বিহবণ গুৰ-নাহি সংজ্ঞা জ্ঞান. ধীরে ধীরে ধীরে বায়ু বহে নাসিকার, াগিমত, ভাবেতে হইয়া গড়,

সমাধিস্থ যোগিমত, ভাবেতে প্রকৃতির কোলে হুটী বালক ঘুমার।

> কড়—কড়—কড়, ওকি—সহসা জাগিয়া, দেখিলেন বন্ধৰয় অতি সসম্ভ্ৰমে, "

পূর্ণিমা চাঁদিনী দব মেঘেতে ভরিষা,

দোঁ। দোঁ। দোঁ। দোঁ। বহে বায়ু পীড়িয়া মরমে।
চমকে চপলা—ভাঁধি দবার ধাঁধিয়া,
কত বর্ণ বাহিরায় চপলা ভিতরে,
এ দিকে—গোঁ। গোঁ। গোঁ। রবে গর্জিয়া গর্জিয়া,
বহিতেছে ঝড় হায় জাহ্নবী-মাঝারে।
বায়র সম্পতে রক্ষে ক্রীড়া করে জল,
উক্ত উচ্চ বীচিকম্পে গর্জিয়া গর্জিয়া;
তরণীটী হায়, করিতেছে টলমল—
কভু উঠে, কভু পড়ে থাকিয়া থাকিয়া।

'গেল বুঝি'—চীৎকারিল মাঝি অন্তমন,
উল্টিল বুঝি হায় ফুলর এ তরী—
না— না—পুন স্থির হয়—কিন্ত এন্ত মন—
চলাচ্চল—চলাচ্চল উঠে শুধু বারি।
'রাঝিতে নারিম্ম বুঝি', উঠিল চীৎকার—
উলটিয়া গেল হায় তরণী ফুলব,
মাঝি দাঁড়ি লক্ষ্য দিল—কোথা গেল চলি!
কোথা পেল যুবাদয় ভাবুক প্রবর ?
এক ক্ষীণকায়, কিন্তু পটু সন্তরণে,
অন্ত হায় স্বলিষ্ঠ—সাঁতার না জানে।
সন্তরণপটু চায় উদ্ধারে অপরে,
বিলিষ্ঠ সে—নিয়তই নিবারণ করে;
এ উহার পানে চায়,

অতল জাহ্নীগর্ভে, অতল ভিতরে। কিন্তু পুন দেখি জ্যোভিশ্বয় দেহ লয়ে,

मः मारत्र ७ विष्ठत्रव,

করে হুই মহাজন,

'বার্থত্যাগ,' এই ব্রত জগতে শিখারে— উত্তরেতে অমরতা অমূল্য লভিয়ে।

পরিব্রাজক।

(यागी विदिकानमः।)

আমাদের দেশে বলে, পায়ে চক্কর থাক্লে, সে লোক ভবযুরে হয়। আমার পারে বোধ হয় সমস্তই চকর। বোধ হয় বলি কেন? পা নিরীক্ষণ করে, চক্কর আনিভার করনার অনেক চেন্তা করেছি, কিন্তু দে চেন্তা একেবারে বিফল—দে নীত্রের চোটে পা কেটে থালি চৌ-চাক্লা, তার চক্কর ফক্কর বড় দেথা গেল না। যা হক্—যণন কিহলন্তা রয়েছে, তথন মেনে নিলুম যে, আমার পা চক্করময়। ফল কিন্তু সাক্ষাৎ—এত মনে কর্লুম যে, পারিসে বসে, কিছুদিন ফরাসী তায়া, সভ্যতা, আলোচনা করা যাবে। পুরাণ বন্ধু বান্ধব ত্যাগ করে, এক গরীব ফরাসী নবীন বন্ধুর বাসায় গিয়ে বাস কর্লুম; তিনি না জানেন ইংরাজি, আমার ফরাসী নেবীন বন্ধুর বাসায় গিয়ে বাস কর্লুম; তিনি না জানেন ইংরাজি, আমার ফরাসী নে এক অন্তুত ব্যাপার; বাসনা যে, বোবা হয়ে বদে থাকার না-পারকতায়, কাজে কাজেই ফরাসী বল্বার উদ্যোগও ত হবে—আর গড় গড়িয়ে ফরাসী ভাষা এসে পড়বে;—কোথায় চলুম, ভিয়েনা, তুরকী, গ্রীদ্, ইজিপ্তা, জিক্সালম, প্রাটন কর্কে! ভবিত্ন্য কে ঘোচায় বল। তোমায় প্রাণিতিনাপল হ'তে!!

সংশ্ব সন্ধা তিন জন—ছ জন ফরাসা, এগজন আমেরিক। আমেরিক তোমাদের পরিচিতা মিদ্ ম্যাক্লউড্; ফরামী পুরুষ বন্ধ্ মন্তির জুল্ বোওয়া— একজন ফ্রান্সের স্থাতিষ্ঠিত দার্শনিক ও সাহিত্যলেথক; আর এক ফরাসিনী বন্ধ্ জগরিথাতে গারিকা মাদ্মোয়াজেল্ কাল্তে। ফরাসা ভাষায় "মিইর" হচ্চেন "নিত্তর," আর "মিদ্" হচ্ছেন "মাদ্মোয়াজেল্"— "ভ"টা পূর্কা-বাঙ্গলার জ। নাদ্মোয়াজেল্ কাল্তে আধুনিক কালের সর্বাশ্রেণা গারিকা—অপেরা-গারিকা। এর গীতের এত সমাদর যে, এর তিন লক্ষ্ক, চার লক্ষ্ক টাকা বাৎসরিক আর, থালি গান গেয়ে। এর সহিত আমার পরিচয় পূর্ব্ব হতে। পাশ্চাত্য দেশের স্বাধিশ্রেণা অভিনেত্রী মাদাম্ সার। বাব্নহার্ড, আর স্ববশ্রেণ্ঠা গারিকা কাল্ছে, ছজনেই ফরাসী, ছজনেই ইংরালী ভাষায় সম্পূর্ণ অনভিক্রা, কিন্তু ইংলগু ও আমেরিকায় মধ্যে মধ্যে যান্, ও, অভিনন্ধ আর গীত গেয়ে লক্ষ্ণ ভদার (Dollar) সংগ্রহ করেন। ফরাসী ভাষা সভ্যতার ভাষা, পশ্চাত্য জগতের ভদ্রগোকের চিত্র, সকলেই জানে,—কাজেই এঁদের ইংরাজী শেখবার অবকাশ এবং প্রবৃত্তিও নাই। মাদাম্ বার্ন্হার্ড বর্ষীয়সী; কিন্তু সেজে মধ্যে

যথন ওঠেন,—তথন যে বয়স, যে লিক, অভিনয় করেন, তারই হবছ নকল। वालिका, वालक, या वल छाहे, - इवह ;---आत (म आक्रिया आउम्राह् ! अता বলে, তাঁর কঠে রূপার তার বাজে। বারন্হার্ডের অনুরাগ--বিশেষ ভারতবর্ষের উপর; আমার বারগার বলেন, "তোমাদের দেশ"তে জাঁদিএন", "তে দিভিলিজে",", অতি প্রাচীন, অতি স্থানভা। এক বংসর ভারতবর্ষসংক্রান্ত এক নাটক **অভিনয় করেন**; তার মঞ্চের উপর বেলকুল এক ভারতবর্ষের রাস্তা থাড়া करत निराहित्न-। सारा, ८ इतन, शूक्य, माथु, नाना, ८ वनतून ভाরতবর্ধ!! আমার অভিনয়াত্তে বলেন যে, "আমি মানাবধি প্রত্যেক মিউলিয়ম বেড়িয়ে, ভারতের পুরুষ, মেরে, পোষাক, রাস্তা, ঘাট, পরিচয় করেছি।" বার্নহার্ডের ভারত দেখবার ইচ্ছা বড়ই প্রবল—"সে মঁরাভূ" (ce mon rave "সে মঁ র্য়াভ্"-নে আমার জীবন-স্প্র! আবার প্রিন্ম অফ্ ওয়েল্য তাকে বাম হাতী শিকার করাবেন, প্রতিশ্রুত আছেন। তবে বার্নুহার্ড বল্লেন —সে দেশে থেতে গেলে, দেড় লাথ ফলাখ টাকার খরজ না করলে কি হয়? টাকার অভাব উরে নাই,--"লা দিভীন্ পারা!!" (La divine Sara), "দৈবী সারা" ;--তার আবার টাকার অভাব কি ৭ খার স্পেনাল ট্রেণ ভিন্ন গতায়াত নাই,—সে ধুম বিলাদ ইয়ুরোপের অনেক রাজ। রাজ্ঞ গারে না,—গার থিয়েটারে মাদা-विध बाला थिएक जूना नाम हिकिहे किन द्राथल उत्व द्यान देश, ठांद्र টাকার বড় অভাব নাই। তবে, সারা বাবুনুহার্ড বেজায় থরজে। তাঁরে ভারত-ভ্ৰমণ কাজেই এখন রইল।

মান্মোগাজেল্ কাল্ভে এ শিতে গাইবেন না, বিশ্রাম কর্বেন,—ইজিপ্ত প্রভৃতি নাতিশীত দেশে চলেছেন। আমি যাছি—এর অভিথি হয়ে। বাল্ভে যে সুধু সঙ্গীতের চর্চা করেন তা নয়; বিল্যা যথেষ্ঠ, দর্শনশাস্ত্র ও ধন্মশাস্ত্রের বিশেষ সমাদর করেন। অতি দরিদ্র অবস্থায় জন্ম হয়; ক্রমে নিজের প্রতিভাবনে, বহু পরিশ্রমে, বহু কই স্থা, এখন প্রভৃত ধন,—রাজা, বাদ্সার সন্ধানের করিবী।

মাদাম্ মেল্ণ, মাদাম্ এমা এমদ্, প্রভৃতি বিখ্যাত গায়িকা দকল আছেন;
কাঁ দরেজ কি, প্রাদাঁ, প্রভৃতি অতি বিখ্যাত গায়ক দবল আছেন; এঁরা দকলেই
তুই তিন লক্ষ টাকা বাংদরিক রোজগার করেন;—কিন্ত কাল্ভির বিদ্যার দক্ষে
সঙ্গে এক অভিনৰ প্রভিভা। অদাধারণ রূপ, যৌবন, প্রতিভা, আর দৈবী
কঠ—এ দব একএ সংযোগে কাল্ভেকে গায়কামগুলীর শীর্ষ্থানীয় করেছে।

কিছ হ:খ, দারিজ অপেকা শিক্ষক আর নেই। দে শৈশবের অতি বঠিন मातिम, इःथ, कष्टे — यात्र मान भिन त्राख युक्त करत काल् छत এই विकत नाख, দে সংগ্রাম তার জীবনে এক অপূর্ব সহায়ভৃতি, এক গভীর ভাব এনে দিয়েছে। व्यावात्र এरमध्य छेरमात रयमन, छेलायुक एक्सन। व्यामारमञ्जल पर पेरकात থাকলেও, উপায়ের একান্ত অভাব। বালালীর মেয়ের বিদ্যা শিধ্বার সম্ধিক ইচ্ছা থাক্লেও, উপায়াভাবে বিকল,—বাঙ্গলা ভাষায় আছে কি শিখ্-বার ? বড় জোর পচা নভেল নাটক !! আবার বিদেশী ভাষায়, বা সংস্কৃত ভাষার আবন্ধ বিস্তা, হ চার জনের জন্ত মাতা। এ সব দেশে নিজের ভাষায় অসংখ্য পুত্তক; তার উপর ধবন যে ভাষার একটা নৃতন কিছু বেরুছে, তৎ-ক্ষণাৎ তার অনুবাদ করে সাধারণের স্মক্ষে উপস্থিত করছে।

মিনায় জুল বোওয়া প্রদিদ্ধ লেখক ; ধর্ম সকলের, কুনংস্কার সকলের উত্তি-হাসিক তত্ত্ব আবিকারে বিশেষ নিপুণ। মধাযুগে ইউরোপে যে স্কল সম্ভান-পূজা, জাতু, মারণ, উচাটন, ছিটে ফেঁটো, মন্ত্র ভন্ত ছিল এবং এখনও যা কিছু আছে, সে দকল ইতিহাদবদ্ধ করে এঁর এক প্রাদিদ্ধ পুস্তক। ইনি ফুকবি এবং ভিক্তর ছালো, লা মাটিন্ প্রভৃতি করানী মহাকবি এবং গেটে, সিলার প্রভৃতি জর্মান মহাকবিদের ভেতর যে ভারতের বেদান্তি-ভাব প্রবেশ করেছে, দেই ভাবের পোষক। বেদাভের প্রভাব ইউরোপে কাব্য এবং দর্শনশাল্তে সমধিক। ভাল কবি মাত্ৰই দেখছি বেদান্তী; দার্শনিক তত্ত্ব লিখতে গেলেই ঘুরিয়ে ফিরিয়ে বেদান্ত। তবে কেউ কেউ স্বীকার কর্তে চার না, নিজের সম্পূর্ণ নূতনত্ব বাহাণ রাধতে চাল,—যেমন হারবাট স্পেন্সার প্রভৃতি। কিন্ত অধিকাংশরাই স্পৃতি স্বীকার করে। এবং না করে যায় কোথা--এ তার, রেলওয়ের, খবর-কাগজের দিনে? ইনি অতি নিরভিমানী, শান্তপ্রকৃতি, এবং সাধারণ অবস্থার লোক হলেও, অতি যত্ন করে আমার নিজের বাসার পারিদে রেখেছিলেন। এখন একগঙ্গে ভ্রমণে চলেছেন।

কল্টান্টনোপল পর্যন্ত পথের সঙ্গী আর এক দম্পতী-পেরর হিয়া-সাম্ব এবং তাঁর সহধর্মিণী। পেয়র, অর্থাৎ পিতা হিলাসাম্ব ছিলেন-ক্যাথ-নিক সম্প্রদায়ের, এক কঠোর তপদী-শাথাভূক সন্নাদী। পাণ্ডিত্য অসাধারণ বাগ্মিত্ব-গুণে, এবং তপস্থার প্রভাবে, ফর.সী দেশে এবং সমগ্র ক্যাথনিক সম্প্রনারে, ইংার অতিশয় প্রতিষ্ঠা ছিল। মহাকবি ভিকর ফুগো তজন লোকের ফরানী ভাষার প্রশংসা কর্তেন। তার মধ্যে পেয়র হিয়ানাছ

একজন। চল্লিশ বংসর বয়ঃক্রমকালে পেয়র ছিয়াসাস্থ এক আমেরিক নারীর প্রণয়াবদ্ধ হয়ে, ভাকে করে ফেলেন বে-মহা হ্লুসুল পড়ে গেল ;- অব্ ক্যাথলিক সমাজ তৎক্ষণাৎ তাঁকে ভ্যাগ কলে। গুধু পা, আলখেলা-পরা-তপস্বী-বেশ ফেলে, পেরর ছিয়াসাস্ গৃহস্বে হাট্কোট্বুট্ পরে হলেন —মন্তির লইদন। আমি কিন্তু তাঁকে তাঁর পূক্ষের নামেই ডাকি। দে অনেক দিনের কথা –ইউরোপ-প্রদিদ্ধ হ'লাম, প্রোটেল্টাণ্টরা তাঁকে সমাদরে গ্রহণ কর্বে, ক্যাথলিকরা মুণা কর্তে লাগ্লো, পোপ লোকটার খ্রণাতি শ্যো তাঁকে ত্যাগ করতে না চেয়ে, বল্লেন বে, "তুমি গ্রীক্ ক্যাথলিক্ পান্রী হরে থাক. (সে শাখার পাজী একবার মাত্র বে করতে পায়, কিন্তু বড পদ পায় না), কিন্তু রোমান চার্চ্চ ত্যাগ করে। না"; কিন্তু প্রয়জন-গেহিনী তাঁকে টেনে হিঁচড়ে পোপের ঘর থেকে বার কর্লে। ক্রনে পুত্র পৌত্র হলো; এখন অতি স্থবির লয়জন জিকসালমে চলেছেন,—কি ভান আর মুধলমানের মধ্যে যাতে সদ্ভাব হল, সেই চেষ্টায়। তাঁর গেহিনী বোধ হয় আনেক সংগ দেখেছিলেন, যে শন্তন বা দিতীয় মার্টিন লুথার হয়, পোপের সিংহাসন উल्टि वा क्लिल (मंग, - जूमधामांगाता। तम मव । विकूरे शता ना ; शता-क्तामीता वर्ण, "हेट जानहेक्ट जा नहे:"। किन्नु मानाम् अध्यस्तत् एम नःना দিবাৰাম চলেছে !! বুক লয়জন অতি মিটভাষী, নম, ভক্ত একুভির লোক। আমার সঙ্গে দেখা হলেই কত কণা, নানা ধণ্মের, নানা মতের; কেবল ভক্ত ম'মুষ – অবৈভবাদে একটু ভয় খাওয়া আছে। গিরির ভাবটা বোধ হয় আমার উপর কিছু বিকপ। বৃদ্ধের সঙ্গে যথন আমার ত্যাগ, বৈরাপ্য, সন্নাদের চর্চা হয়, থবিবের প্রাণে সে চির্দিনের ভাব জেগে ওঠে, আর গিরির বোধ 💵 গা কন কনু করে। তাব উপর মেয়ে মন্দ সমস্ত ফরানীর। যত দোষ গিল্লির উপর ফেলে; বলে, "ও মাগী, আমাদের এক মহাজ্পরী সাধুকে নষ্ট করে দিয়েছে !!" গিলির কিছু বিপদ্ বই কি,—জাবার बाम इटाइ शांतिरम, काार्थालरकत (मध्या (त कता शांतीरक अता भारत দ্বণা করে; মাগ ছেলে নিয়ে ধর্ম প্রচার, এ ক্যাথলিকু আদতে সহ্থ কর্বে না। গিরির আবার একটু ঝাজ আছে কি না। একবার গান্ন এক অভিনেতীর উপর ঘণা প্রকাশ করে বল্লেন, "তুমি বিবাহ না করে অমুকের সঙ্গে বাস্ কর্ছো, ভূমি বড় খারাপ"। সে অভিনেত্রী ঝটু জ্বাব দিলে যে, "আমি ভোমার চেয়ে गण ওবে ভাল। আমি একজন সাধারণ মানুবের মঙ্গে বাস করি, আইন মত বে নাহয় নাই করেছি; আর তুমি মহাপাপী—এত বড় একটা সাধুর ধর্ম নষ্ট কর্লে !! যদি তোমার প্রেমের চেউ এতই উঠেছিলো কি, না হয় সাধুর দেবা-দাসী হয়ে থাক্তে; তাকে বে করে, গৃহস্থ করে, ভাকে উংসন্ন কেন দিলে ?" "পচাকুম্ডো শরীরের" কথা যে দেশে ভনে हांत्रज्ञ. जात बात अक निक् नित्य मान हव प्रश्रहा ?

याक, जामि ममन्त्र अनि, हूल करत्र शाकि। स्माना वृक्त लग्नत हिनामान्द वर्ज़रे প্রেমিক, আর শান্ত; সে খুসি আছে, তার মাগ ছেলে নিয়ে, দেশগুদ্ধ লোকের ভাতে কি 📍 তবে গিনিটা একটু শাস্ত হলেই, বোধ হয় সৰ মিটে যায়। ভবে कि जान जाया, आमि त्मथिह त्य शुक्रम आत त्मरात्र मर्था भव तम्भे বোঝবার, বিচার করবার, রাস্তা আলোদ। পুরুষ এক দিক্ দিয়ে বুঝ্বে, মেয়ে মানুষ আর এক দিকু দিয়ে বুঝাবে; পুরুষের ঘুক্তি এক রকম, মেন্ধে-মান্ধের আর এক একম। পুরুষে মেয়েকে মান্ধ করে, আর পুরুষের. ঘাড়ে দোষ দেয়; মেরেতে:পুরুষকে মাফ করে, আর সব দোষ মেরের ঘাড়ে (नज्ञ ।

এমন সঙ্গে আমার বিশেষ লাভ বে, ঐ এক আমেরিক ছাড়া এরা क्रिको कारन ना, এवर देश्ताको छात्र। এक मूम वक्त, कार्छ्ह कान्छ রকম করে, আমায় কইতে হচ্ছে ফরাসী এবং গুনুতে হুচ্ছে ফরাসী।

পারিসনগরী হতে বন্ধুবন্ন ম্যাক্সিম্নানা স্থানে চিঠিপত্র যোগাড় করে দিয়েছেন, যাতে দেশ গুলো যথায়থ রক্ষে দেখা হয়। মাক্সিম্—বিখ্যাত মাক্সিম্-গনে"র নির্মাতা, যে ভোপে ক্রমাগত পোলা চল্তে থাকে, আপনি ঠালে, আপনি ছোঁড়ে, বিরাম নাই। ম্যাক্সিম্ আদিতে আমেরিকান্; এখন ইংলভে বাদ, তোপের কারখানা ইত্যাদি। মাল্লিম্ তোপের কথা বেশী কইলে বিরক্ত হয়, বলে, "আরে বাপু, আমি कি আর কিছুই করিনি,—খালি ঐ মানুষ মার। কল্টা ছাড়া ?" ম্যাল্লিম চীনভক্ত, ভারত-ভক্ত, ধর্ম 🍱 দর্শনাদি সম্বন্ধে স্থান্ধক। আমার বই পত্র পড়ে জনেকদিন হতে জামার উপর বিশেষ অকুরাগ, বেজায় অকুরাগ। আর ম্যাক্সিম্ স্ব রাজা রাজভাকে তোপ বেচে, সব দেশে জানা খনা; কিন্তু তাঁর বিশেষ বছু লি-ছং-চাঙ্গ, विरमय अहा हात्नत छेनत, धर्मा स्वान वरक्ष् मट्ड। हीत्न नाम निष्त मध्य मर्पा कार्शक इन्हान পाजीदनत्र विशदक लाबा इत्र ; जाता हीरन कि कत्रछ यांव, (कन वां वांव,--- ब मार्क्तिम् चांवरण मह कद्रण नारव नाः माकि-

মের গিরিটীও ঠিক অফুরুপ, চীন-ভক্তি, ফুশ্চানী-মুণা; ছেলে পিলে নেই, বুড়ো মানুষ,—অগাধ ধন।

যাত্রার ঠিক হলো পারিস্থেকে রেলযোগে ভিয়েনা, তার পর কনটান্টিনোপল, তার পর জাহাত্তে এথেন্স, গ্রীস্, তার পর ভ্রমধ্যসাগর-পার ইজিপ্ত, তার পর আসি-মিনর, জিরুদালম্, ইত্যাদি। "ওরিজাঁতাল এরু প্রেস্ ট্রেণ'পারিস্ হতে স্তান্থল পর্যান্ত ছোটে, প্রভিদিন। তার আমেরিকার নকলে শোবার, বসবার, থাবার স্থান। ঠিক আমেরিকার গাড়ীর মত স্থ্যস্পন্ন না হলেও, কতক বটে। সে গাড়ীতে চড়ে ২৪শে অক্টোবর পারিস্ ছাড়তে হচে। (ক্রমশঃ)

에 주의 1

খোরা ফেলবো না ত কি ? রাস্তাটা ত মোটা হ'ক। রাস্তার না জল দাঁড়াণেই হ'ল; লোকের উঠোন নীচু হবে, লোকের ঘরে জল সেঁধুবে, শোবার ঘরের তক্তাপোষ তেনে উঠ্বে, তা আমি ক'রব কি ? যাও যাও—রাস্তার না জল দাঁড়ালেই হ'ল। ফেলরে ফেল্, রাস্তার ওপরেই ফেল্—গাড়ি গাড়ি ফেল্! আর, পারিশ ত এই নেড়া বোই, মটার………।

মোরে যায় যাক্, আবক ও রক্ষে হবে। বিশি, অত ঘেরাটোপের দরকারটা কি । একে পানিতে যাচে,তার ওপর ছপানে ছই-লাঠি-হাতে দরোয়ান ; তার ওপর, আবার ঘেরাটোপের দরকার কি । একটু দরজাটা ফাঁকে ক'রে রাখনে, পাল্কির খড় খড়িটা একটু খুলে রাখলে,—হাওয়া থেলতে পার ; তা নইলে যথন হাঁপিযে পেট ফুলে অস্থ ক'রবে, ডাক্রার এনে এগলামিন করবে, তথন আবক্রটা কোথার খাকবে । পোয়াতীর হাঁশিয়ে ওঠার দক্ষন, যথন পেটের ছেলেটার হাঁপানির বাারাম হবে, ওথন কুলে বাঙী ভালবে কে ?

প্রাপ্তি-স্বীকার।— 'The Bench and Bar Diary, 1901,' by M. N. Banerjee, Esqr., B. L., Govt. Pleader, Darjeeling. উপহার দক্ষণ পাইরাছি। বিজ্ঞালোকের প্রণীত। উকীল-বাবুদ্ণিরে বিশেষ উপহারে আদিবে। গ্রন্থভারের নিকট প্রাপ্তব্য। মূল্য দাত দিকা।

ৰাবু বটকুট পান এন্ত কোং, (৭, বনফিল্ডদ্ লেন, কলিকাতা) ও বাবু বনাৰ্চ্চি এন্ত মলিক কোম্পানির (৩৫০, আপার চিৎপুর রোড) শিট্ ক্যালেন্ডার এবং প্রাত্যাহিক দিন-পরিবর্তনের ক্যালেন্ডার। ক্যালে-ভার ভালি দেখিতে অতি ক্লায় ও প্রশংসনীয় হইয়াছে। তদত্বেরণ না করিয়া, 'ঋতক' এইরূপ 📲 করিয়া উচ্চারণ করা)। স্থাধ্য 'ঋতক' শব্দেরই, সংজ্ঞাদিতে কল্লনা করা, সাধ্ (সঙ্গত) বশিষা মনে করিতে হইবে। স্থাতরং ইহা 'ঋতক'ই যগার্থ শিক্ষ, '৯তক' কদাচ নছে।

ভাষামূল।—অপ্র আহ। স্থায়া ঋতক শদঃ শাস্ত্রান্থিতোহন্তি স কর্মান্তিবা: সাধু সংজ্ঞানিষু ঋতক এবাদেশ ন ৯৩ক:।

বসার াদ।—অভা কৈছ কেছ বলিয়া থাকেন যে, ভাষ্য 'ঝডক' শব্দই হইছাছে যথার্থ শিল্পসিন, (যদিও কালকেনে অনভিজ্ঞ লোক্ষারা উহা অপ্রংশ
হইয়া থাকে, তথাপি শাল্পজ অমুক্বণ-কাবী ব্যক্তির), সুতরাং দেই পরিশুদ্ধ
'ঋতক' শব্দই, বিশুদ্ধ সংজ্ঞাদিতে, প্রয়োগ করা কর্ত্তবা; '৯ভক' কদাচ নহে। .

ভাষামূল।—কাং তহি বিদৃ**দ্ধাশন্ধ: অ**পরিহার্যাঃ। ১ফিডঃ ১ফিডঃ ১ফিডঃ ৩ বেবি থিকিডঃ ঋফিডড় ৮। কথম্। তার্তি প্রতিশিচ্ব ছি লোকে লক্ষাতে। ফিড ফিডেড়ে বেবিবাদিনে প্রভাষাে।

বসায়বার।—(অশক্তিজাতুকরণ স্থলে, এই ১কারের অনাবশুক্ত। প্রমাণিত হটলেও,) এই যদৃত্য শক্ষা কিন্তু পরিগাবের (পরিত্যাবের) অবোগ্য। যথা ;— ১ফিড এবং ৯ কিড্ড, ইত্যাদি (প্ররোগ জ হইয়। থাকে)।

্না, ইংাও মূল শক নহে, অপলংশ শক্ষাত্র)। ইংাও (মূল শক্ষ)
ঋফিডঃ এবং ঋকিডচ ইং (মূল ঋকিড, ঋফিড্ড শব শাস্ত্রসিদ্ধ হয়,
ভাছা কোন্ধাতু হুইতে উৎপন্ন ?) কিকপে সিদ্ধ ?

('ঝ' গতৌ, এই জুহোত্যাদিগণীর ধাতুর উত্তর, এই ধাতু শ্রতিনিহিঙ্ক হইলেও,] ডিপ্ প্রতায় করিয়া, অতি পদ লোক মধো বাবহার আছে।) অতি অর্থাং 'ঝ' ধাতুর প্রবৃত্তি (বেদবং), লৌকিক বাবহারেও দৃষ্ট হয়। অতএব সেই 'ঋ' ধাতুর উত্তর, উণাদিতে বিহিত ফিড বা ফিডচ প্রভার করিলে, অবশ্র ঋফিড বা ঋফিডচ পদ সিদ্ধ হইবে। (উণাদয়ে। বহুলম্ তেওা)। এই স্ত্রাম্পারে উণাদি প্রকরণে বছবিধ প্রভার ই বিধান হইতে পারে, স্তরাং ফিড, ফিডচ প্রভার অসমতে নহে। ঋফিডাদি পদসিদ্ধিও অসমত নহে।

ভাষাম্ব।—ত্রয়ী 5 শকানাং প্রবৃত্তিঃ। জাতিশকা গুণশকাঃ ক্রিয়াশকা ইতি। ন সম্ভিষ্ট জাশকাঃ।

বঙ্গারুবান।—(ঋষিড।নি প্রয়োগ সিদ্ধ হইলেও, অসংখ্য অসংখ্য যদ্চহা
শব্দের বৃংপত্তি করা অসম্ভব। আর যদি একাছ্ট সম্ভব হয়, তবে অত্যস্ত ১লামান, ১৩০৭। উদোধন। [৪] ২৫ বৃহং এক প্রকাণ্ড গ্রন্থ প্রথমন প্রয়োজন। স্থতরাং এইরূপ অবস্থব বা গৌরব হেতু বলিতে হউবে যে) তিন প্রকার শব্দের প্রবৃত্তি (স্থিতি)। যথা;—জ্ঞাতি শক্ষ, গুণ শক্ষ এবং ক্রিয়াশক। কিন্তু যদ্চহু। শক্ষ বলিয়া কোন শক্ষ নাই।

ভাষামূল। — মান্তথা করে। প্রবোজন মুক্তমন্তথা করা পরিহারঃ। সাত্তি যদূত্বাশকা ইতি করতা প্রবোজন মুক্তংন সন্তীতি পরিহারঃ। সমানে চার্থে শাস্তাবিভাগ শাস্তাবিত্ত নিবর্তকো ভবতি। ভদ্বথা। দেবদ ভশক্ষো দেবদিন শব্দং নিব্রত্তিয়তি। ন গাবাদীন্।

্বসাত্বাদ।—এ কিরপ হইল ? অন্ন প্রকাবে ('৯'কারের) প্রয়োজন স্বীকাব কবিষা, আব এক প্রকাবে তাহার পরিচার (খণ্ডণ) করা হইল ? বদুজ্যা শক্ষ আছে, এই বলিয়া, '৯'কারের প্রয়োজন স্বীকার করিয়া, যদৃজ্যা শক্ষ নাই, এই বলিয়া তাহার খণ্ডণ করা হইল ? (অর্থাৎ বাহারা যদৃজ্যা শক্ষ লইয়া, চারিপ্রকার শক্ষের প্রন্তি মানে, তাহাদের মতে প্রয়োজন দেগাইয়া, গ্রামি তাহা মানি না, আমি তিন প্রকাবই মানি," এই বলিয়া খণ্ডণ করা কি সঙ্গত হয় ? কোনও একদলের লোকগণ, স্বাকার করিলেই শান্তের প্রন্তি ছইয়া গাকে।

(আর ভোমরা ঘাহা পূর্নে বলিয়াছিলে যে. "য়তক" শক্ষই অপলংশ হইয়া '৯তক' শক্ষ হটয়াছে," যদি 'য়তক' এবং '৯তক', এই উভয় শক্ষের সমান অর্থ হইড, ভবে এইরপ বলিয়া '৯তক' শক্ষের বারণ করা সঙ্গত হইড; কেন না,) সমান অর্থেতেই শাস্ত্রসঙ্গত শক্ষ, শাস্ত্রবিভিভূত শক্ষকে নিবারণ করে। যেমন, শাস্ত্রবিহিত 'দেবদত্ত' শক্ষ অমাজীয় 'দেবদিয়' শক্ষকে নিবারণ করে। (কেন না এই উভয় শক্ষ সমান অর্থবাচক)। কিছু সেই দেবদত্ত শক্ষ, ভিয়ার্থ বোধক গাব্য প্রভৃতি শক্ষকে নিবারণ করে। এই হলেও সেইরপ 'য়তক' শক্ষের ছাঙ্গা বা আভাস মাত্র '৯তক' শক্ষে না থাকাতে, ['য়তক' শক্ষ ছাঙ্গা বা আভাস মাত্র '৯তক' শক্ষের মার '৯তক' শক্ষ বাতুপ্রভায়বির্জিত মংকা মাত্র 'ঝতক' শক্ষ বাতুপ্রভায়বির্জিত মংকা মাত্র 'ঝতক' শক্ষ, '৯তক' শক্ষের নিবর্ত্তক হইতে পাবে না, অত্রব '৯'কার উপদেশ কর্ত্তর।)

ভাষামূল।— নৈষ দোষ:। পকান্তরৈরণি পরিহার। ভবন্ধি। অমুকরণং শিষ্টাশিষ্টাপ্রচিষিদ্ধের যথা লৌকিক বৈদিকের।* অনুকরণং হি শিষ্ট্র সাধু উরোধন। তিয়—১ম সংখ্যা:

Ĩ,

ভাঙি। অশিষ্টা প্রতিনিদ্ধ য় বা নৈৰ তদ্ধোষায় ভব্তি নাভ্যদ্যায়। যথা লৌজিক বৈদিকে বু। খ। যথা লৌকিকে বু বৈদিকে বুচ ক্তাভেয়ু।

লোকে তাবদ্। য এবমদৌ দ্দাতি, য এবনুদৌ যজতে, য এবনসাবধীত ইতি তহালুকুর্বন্ দ্লাচ যজেত চাবীগীত ■ সোহণাভাদেয়েন যুজাতে। বেদেহপি য এবং বিশ্বস্তঃ স্ত্ৰণাধ্যাসত ইতি তে্যামনুকুর্বন্ তহৎ স্ত্রণাধ্যাসীত গোপাভাদ্যেন যজাতে। অশিপ্তাপ্তিষিদ্ধং যথা। য এবমসৌ

সত্রাণ্যধ্যাদীত গোপ্যভ্যদ্য়েন যুদ্ধতে। অশিষ্টাপ্রভিষিদ্ধং যথা। য এবমসৌ হিক্তি, য এবমদৌ হস্তি, য এবমদৌ কণ্ডৃয়ভীতি, তত্যাতুকুর্বন্ হিক্কেচ হস্চেচ কণ্ডুয়েচ্চ নৈব তদ্ধোষায় ভালাভ্যদ্যায়।

বঙ্গাস্থাদ। —পূনঃ উত্তর এই যে. ইহা দোষ নহে। প্রকারাস্তরেও '৯কাব' পরিহার হইতেছে। শিষ্ট, অশিষ্ঠ, এবং অনিষিদ্ধ শব্দ সমূহেরই অনুকরণ করা কর্ত্তব্য; যেমন শৌকিক ও বৈদিক ব্যবহারে হইয়া থাকে। ■

অনুকরণ ও, শিষ্ট (শাস্ত্রসঙ্গত) শব্দেরই করা সঙ্গত। আর শান্তে বাহা বিধান নাই, অথচ নিষেধ ও নাই, ভাহা প্রয়োগ করাতে, কোন দোষ ও হয় না, অথবা অভাদয়ও (উন্নতি বা মঙ্গলও) হয় না। বেরূপ লৌকিক বৈদিকেতে। * যেমন লৌকিক সিদ্ধান্ত এবং বৈদিক সিদ্ধান্ত সমূহে অমুকরণ হইয়া থাকে।

লোকে, শৃষ্ঠি, প্রাণ, ইতিহাস, শিশ্ট মলুষা প্রাভৃতির বাবহারে)
যথা;—কোনও ব্যক্তি, "যে এই রূপে ইহা দান করে, যে এইরূপে এই যজ্ঞ
করে, যে এইকণে ইহা অনায়ন করে," এই কথা বলিয়া তাহাদের অনুকরণ
দেখাইতে গিয়া, সভা সতাই কিছু দান করে, কোনও যজ্ঞ (১) করে
এবং কোন কোন শাস্ত্র অধায়ন করে, দেও (অনুকারী দাতারাও) অভ্যাদয়. (অর্গাদি) লাভ করে।

বেদেভেও সেইরূপ, যে ব্যক্তি "ব্রহ্মা (বিশ্বস্টিকর্তা) এই প্রাকারে সত্র (২) সমূহ নির্বাহ করিয়াছিলেন," এই বলিয়া ভাহার অমুকরণ করিত্তে করিছে, নিজেও দেই ব্রহ্মার আফ, সত্র (রহৎ যজ্ঞ) সমূহের অমুষ্ঠান করে, সেও অভ্যুদয় (প্রগাদি) লাভ করে। শাস্ত্রে অবিহিত অনিষ্দ্ধি কর্মা, যথা;—ইনি এইরূপে ঢেচুর (হিকা) ভোলেন, ইনি এইরূপে হাসেন, ইনি এইরূপে গা চুকান (কঞ্দুন করেন); এই বলিয়া যিনি, ভজ্ঞপ অঞ্করণ

⁽১) মৃতি শাস্ত্র বিহিত যজ। (২) ছিনদিনের অধিক কালব্যাণী য**জ্ঞাকে শত্র কহে।** ১লা মাল, ১৩০৭। } উদ্বোধন। ২৭

করিতে করিতে, নিজেও ঢেকুর তোলেন, হাসেন, চুলান, এই কর্ম সকল (শাস্ত্রে বিধি বা নিষেব না থাকাতে) তাহার দোষের জন্মও হয় না, অথবা উন্নতির জন্মত হয় না।

ভাষ্যমূল।--যন্ত থাৰেবমনৌ ব্ৰাহ্মণং হস্তি, এবমনৌ সুৰাং পিবতীতি তথাসুকুৰ্বানু ব্ৰাহ্মণং হ্যাং, সুৱাং বা পিবেং, মোপি মত্যে পতিতঃ ভাং।

বঙ্গালুবাদ।—"এই ব্যক্তি এইরপে বন্ধহত্যা করে, এই ব্যক্তি এইরপে স্বরাপান করে," এই বলিয়া যে ব্যক্তি তাহার অনুকরণ করিতে করিতে, নিজেও সত্য সভাই বান্ধণকে বধ করে, অথবা স্থরাপান করে, সেও পতিত হয় বলিয়াই মানিতে হয়। (স্তরাং অভেদ্ধের অনুকরণও অভদ্ধ হইয়া থাকে।)

ভাষামূল।—বিষন উপভাষঃ। যদৈবং হস্তি, ষশ্চাসুহস্তি উভো তৌ হতঃ।
ষশ্চাপি পিবতি, যশ্চামপিবতি উভো তৌ পিবতঃ। যস্ত থবেবমসোঁ আহ্বাধ
হন্তি, এবমসোঁ সুরাং বা পিবতাত অভামুকুর্কন্ স্নাতাত্বলিপ্তা মাল্যগুণকণ্ঠঃ
কলনীস্তস্তং হিন্দাং পয়ো বা পিবেৎ ন সমত্তে পতিতঃ ভাং। এবামহাপি
ম এবম্মাবপশ্লং প্রমুগ্রেক ইতি ভভাতুকুর্মন্দশ্লং প্রযুগ্রীত মোহপাপশ্লভাক্ ভাং।

বঙ্গাহুবাদ। — অসমান দুষ্টাস্ত উলিখিত হইল , (কারণ এই স্থলে ত অনুকরণ হয় নাই;) কেন না, যে ব্যক্তি (ত্রাহ্মণ / হত্যা করিল, এবং যে ব্যক্তি পশ্চাৎ (ভাহার অনুকরণ করিতে গিয়া বাহ্মণ) হত্যা করিগ্রাহ্মণ্যতা ত তাহারা হুই ব্দনেই করিল। যে হারাবান করে, (ভাগর অফুকরণ করিয়া) প্লাৎ যে বাজি মুরাপান করে, মুরাপান কার্যাটী ত তাধার। এই জনেই করিল। কিছ বে ব্যক্তি আক্ষণহত্যা বা জরাপানের অতুক্রণ কর্ণ করিতে শিয়া, প্রকৃতপক্ষে সুরাপান না করিলা, "এই ব্যক্তি এইরপে আক্ষণ বধ করে, অথবা এই ব্যক্তি এইরপে স্কাপান করে," এই বলিগা, তাহার (প্রক্রত হত্যাকারীর) অমুকরণ করিতে করিতে, (ঠিক্ সেই ব্রশ্ধহত্যাকারীর স্তায়), স্মান করিয়া, চন্দনাদি স্থান্ধ দ্রবা বা রক্তচন্দন গায়ে কপালে লেপিয়া, স্তরে গাঁপা মালা গলায় ঝুলাইতে পুলাইতে, কলাগাছের স্তম্ভ (থামের স্তার কলাগাছের মধ্যভাগ), ছেনন করে. (মলপানের চং করিয়া) গ্রাকাল পান করে, সেপ্তিত বলিখা গ্লাহ্র ना । तिरेक्न अरे शत्तु रा वाकि, "हंनि अरेक्न ज्ञान अध्यात करतन," এই বৰিয়া তাহার অমুকরণ করিতে করিতে, নিজেও অপশক্ত প্রয়োগ করে, 21 **केटबांधन**। (०४-- १य मरसा :

সেও (প্রাংগাকারীর ভাষ অফুকরণকারীও) অপশক প্রয়োগ ভাগী হয় (অপ-শক্পায়োগজনিত দেবিভাগী হয়)।

ভাষ্যমূপ। — শ্বন্ধং প্রত্যোহপশক্রপদার্থকঃ শক্ষো যদর্থ উপদেশঃ কর্ত্তন্তঃ। ন চাপশক্ষ পদার্থকঃ শক্ষোহপশক্ষ ভনতীতি। অপশক্ষ ইত্যেব তহ্যাপশক্ষঃ স্থাং। ন চৈয়োগশকঃ।

বঙ্গান্তবাদ।— এই স্থলে কিন্তু অন্ত প্রকার (অর্থাং কুমার্যন্তক' এইরূপ বলাতে, অন্ত করণকারী বক্তা যে, সর্বাত্রই 'শুত্রক' বলিতে অসমর্থা কুমারীর [নালিকার] স্থায়, '৯ তক' শব্দ বলিবে তাহা নহে; তবে ''বালিকাগণ 'শুত্রক' স্থানে অসমর্থতাহেতু '৯ তক' বলিয়া থাকে,'' ইহা অস্তাকে বুঝাইবার জন্ত 'কুমার্যন্তক' শব্দ প্রয়োগ করিয়াছে;) অপশব্দ প্রয়োগের প্রয়োজন বুঝাইবার জন্ত, এই স্থানে অপশব্দ প্রয়োগ করিয়াছে; (স্কৃতরাং ইহা অপশব্দ হইতে পারে না;) এই হেতুই '৯কার' উপদেশ করা কর্ত্তবা। অপশব্দ প্রয়োগের প্রয়োজন বুঝাইবার জন্ত যে শব্দ, তাহা অপশব্দ হইতে পারে না; ইহা এইরূপ জানিতে, অবশ্রই বাধ্য হইবে। নতুবা, যে ব্যক্তি ইহা মনে করে যে, অপশব্দ (অভ্যন্তবা আপত্রংশ শব্দ) পদের প্রয়োজন বুঝাইবার জন্ত, যে শব্দ প্রয়োগ করা হয়, তাহাও অপশব্দই হয়; তবে সে যে 'অপশব্দ,' এই শব্দী (আমাদের শব্দক্ত অপশব্দ বলিবার জন্ত) প্রয়োগ করিন, তাহাও ত তাহার অপশব্দ হইরাছে। কিন্ত ইহা অপশব্দ নহে।

ভাষ্যসূত্র।— অয়ং ধ্বণি ভূয়ে। স্করণশকোইপরিইবিঃ। যদর্থ উপদেশঃ কর্ত্রিঃ। সাধ্ব, কর্মধীতে, মধ্ব, কর্মধীত ইতি। কল্প পুনরে ছদ্দ্-করণম্।

ক্ পিস্থ । যদিক্ পিস্থ । ক্ পেশ্চ ল বমসিদ্ধ । তথাসিদ্ধ ভাদ্ব র এবাচ্কার্যাণি ভবিষ্যস্তি।

বঙ্গাহ্মবাদ।—এইস্থলে এইরূপ হইলেও, এই যে রাশি বাশি অকুকরণ শক্ষ তাহা পরিত্যাগের উপায় নাই। যাহার জন্ত '৯'কার উপদেশ, অবশুই করিতে হইবে। যেমন,এই বালক, সাধু (পরিশুরু) '৯'কারটী পাঠ করিতেছে। স্থমধুর '৯'কারটী পাঠ করিতেছে। (এইরূপ অনুকরণ করিতে গিয়াও ত '৯'কার পাঠ করা হয়।) (পূর্ব্বে '৯'কার উপদেশের প্রযোজন নাই দেখান হইয়াছে) পুনরায় এই অসুকরণ (রুত '৯'কার) কোণা হইতে আদিল।

'ক্»পি' ধাড়ু হইতে আসিয়াছে।

যদি 'ক্ সপি' ধাজু হইতেই আসিয়া থাকে; তবে ক্ সপি ধাজুর 'ল'ত্ব ('ঋ' ভানে, '৯' বিধান সন্ধির পরে বলিয়া, পর শাস্ত্রের নিকট পূর্বাশাস্ত্র অসিদ্ধত্বহেতৃ) অসিদ্ধ, তাহার অসিদ্ধতা প্রযুক্ত, 'ঋ'কারেতেই অচ্তু ধর্ম মানিয়া (ইক্
এর স্থানে, যণ্ হয়, অচ্ পরে থাকিলে) সন্ধি প্রভৃতি (ই স্থানে 'য়', উ স্থানে
'ব' ইভাদি) কার্য্য হইবে। (কেন না, "ক্পোরোলঃ।" এই স্ত্রের দৃষ্টিতে,
"ইকো যণ চি'' স্ত্র অসিদ্ধ।)

ভাষামূল। — ভবেভদথেন নার্থঃ আং। আয়ং তৃত্তঃ কৃ শিস্থপদার্থকঃ শব্দঃ বৃদ্ধ উপদেশঃ কর্ত্তবাঃ।

বস্থার্থাদ।—এইর প ইউক ষে, সেই প্রয়োজনের জ্ঞে (ক্রপি ধাতুর '৯' কারেতে অচ্তু ধর্ম মানিয়া, সদি করিয়া 'য'কাবাদি কার্যা হইবার জ্ঞা), ইহার ('৯'কার উপ্দেশের) প্রয়োজন নাই। এথানে '৯'কার উচ্চার্থের ছঞ্জ উদ্দেশ্য, ক্রপি এই ধাতুটীর পদাথ নির্ণায়ের জ্ঞা (অর্থাৎ এই ধাতুটী কোথা হইজে জাদিল, কিরপে উৎপন্ন হইল ইড্যাদির জ্ঞা) যে,ক্রপি উচ্চার্থের প্রথোজন; ষাহার (যে ক্রপি উচ্চার্থের) জ্ঞা '৯' কারের উপ্দেশ করা ক্ট্রা।

ভাষ্যমূল।—ন কর্ত্রা:। ইনং অবশ্বং কর্ত্রবাং প্রকৃতিবদ্যুকরণং ভবতীতি।
কিং প্রয়োজনম্। বিঃ প্রচীত্যাহ। বিঙ্ঙু তিও ইতি নিঘাতো মথাস্যাং।
অধী ইত্যাহ। ঈদ্দেবিবচনং প্রগৃহ সংজ্ঞং ভবতীতি প্রগৃহসহলা
মধাস্থাং।

বশাস্বাদ।— ১ কার উপদেশ কর্ত্তব্য নহে; কেননা ইছা আন্শ্রেই স্থাকার করা কর্ত্তব্য বে, প্রকৃতির (মূল শব্দের) ভার, অমুকরণ শব্দেও হইরা থাকে। কি হেড় প্রকৃতির ভার অনুকরণ শব্দেও হইরা থাকে। কি হেড় প্রকৃতির ভার অনুকরণ শব্দেও হইরা থাকে। কি হেড় প্রকৃতির ভার অনুকরণ শব্দেও হইরা থাকে। কিঃ পচন্তু,'' এই স্থলে "তিঃ ও তিঃ" (অভিভ্রুশক্রের পরে তিওয়ে নিম্পার পদ শাকিলে, ভাষার অর্থাই সেই অতিঙ্ অন্তের, অনুদান্ত স্থর হয়) সূত্র ঘারার সেনন "বিঃ" অনুদান্ত স্থর-বিশিপ্ত হয়, তদ্রেপ সেই "বিঃ" শব্দের অম্করণার্থ পুনঃ পাঠেও নিমাত (অমুদাত) স্থর হইবে।

এইরপ, অন্নী ইত্যাহ (অন্নি এই শক্ষ বলিরাছিল), এই ছলে, এই পূর্ব উচ্চারিত শব্দের বেমন, "ঈদ্দে দ্বিচনন্ প্রগৃহন্"। ১ । ১ । ১ ১ । (দ্বিচন নিম্পন্ন ঈশারাস্ত, উকারাস্থ এবং একারাস্থ শব্দের প্রগৃহ সংক্রা হয়),(প্লুড এবং প্রগৃহসংক্রক শব্দের পরেতে স্বরবর্ণ থাকিলে, প্রক্রতি ভাব হয় অর্থাৎ বেমন ৩০ উশোধন। [৩য়-->ম সংখ্যা;

অবস্থা ছিল,তেম্নই থাকে, সদ্ধি হয় না),এই স্তান্দারে প্রগৃহ দংজা হওরাতে, প্রেক্তি-ভাব হইরাছিল; পরবর্তী অনুকরণ "অগ্লীত্যাহ"শব্দেও ভাহাই ইইয়াছে, সদ্ধি হয় নাই। স্ত্রাং অনুকরণ শব্দও গ্রক্তিগত শব্দের হায় হয়, এইরূপ ব্লা যাইতে পারে।

ভাষামূল।— যদি প্রকৃতিবদম্করণং ভবতীতৃ চাতে। স্বপশন এবাসে ভবতি কুমার্মণক ইত্যাহ। আন্তান্তক ইত্যাহ। অবশন্দে হল্ল প্রকৃতি:। ন চাপশনঃ প্রকৃতিঃ। নৃহ্পশন। উপ্দিশ্নাস্ত। ন চানুপ্দিগ্রা গ্রুক্তিরন্তি।

বৃদানুবাৰ।— যদি অনুক্রণ শক্ও প্রকৃতির ভাষই হয়, এইরূপ বলা মায়, তাহা হইলে এই যে "কুমার্মতক ইত্যাহ" (কুমারী 'মতক' এই কথা বিনিয়াছিল), "বাজাণ্য্মতক ইত্যাহ" (বাজাণী মতক' এই কথা বলিয়াছিল), এইরূপ অনুক্রণীকৃত শক্ষ সমূহও কুনারী-উক্ত প্রকৃতি-গত শক্ষের ভাষা, অপশক্ষ হইবে। কেন্না অপশক্ষ ইহার প্রকৃতি।

অপশক কাহারও প্রকৃতি হইতে পারে না। যে হেতু পণিনি কোনও অপশক্ত উপদেশ করেন নাই; আর যাহা পাণিনি উপদিও নহে, তাহা কথনও প্রকৃতি হইতে পারে না। অভএব ১০ক শক্ত যাদ প্রকৃতি না হইল, তবে ১কার উপদেশ সৃক্তই হইল।

যভোকেশেশবিক্তমনপ্রবন্ধ বিভারতাত । রাজ্জঃ ক চ। রাজকীয়ন্। শংলোপন ইতি লোপঃ প্রাপ্রোতি।

একদেশবিক্ব ভমনক্সবং ষ্ঠা নিদিষ্টশু।

বঙ্গালুবাদ।—এক অংশ বিকৃত হইলেও,সেই শব্দ অনন্ত হয় বলিয়া, প্লুতি প্রত্তি কাষ্য হইবে। *। কোনও শব্দের একটী অংশ বিকৃত হইলেও, সেই শ্রুদ অন্ত শব্দ বলিয়া পরিগাণত হয় না; স্থতগাং প্লুত্যাদি কাৰ্য্য (অর্থাং ঝাব, রকারের স্থানে ল কার হটয়া ৯ হইলেও, ঝাকার নিমিত্ত, যে স্থানে প্লুত, প্রকৃতি ভাব প্রভৃতি কার্য্য হইত, ১কার নিমিত্তও তাহাই হইবে) বিকৃতাবস্থায়ও হইবে।

"যদি এক অংশ বিক্লুত হইলেও রূপান্তর ন। হয়," এইরূপ বলা যায়, তবে রাজ্ঞ ক চ।৪।২০১৪ । (বুদ্ধির পরে ছুপ্রতায় নিদি, হইলে, তাহার স্লামাম, ১৩০৭।] উ:বংশন। ৩১ সহিত মিলিও হইয়া, রাজন্ শব্দের উত্তর 'ক'কার আদেশ ইইয়া থাকে), এই স্ত্রাফ্নারে রাজকীয় শব্দ সিদ্ধ ইইয়া, "অলোপোহনঃ," এই স্তামুসারে অকারের লোপ প্রাপ্তি হইবে। (অথাৎ 'রাজকীয়" এই অশুদ্ধ
প্রয়োগ হইবে।)

ভাহা হইবে না; ষে হেতু, ষষ্ঠা বিভক্তি নির্দিষ্ট শক্রেই, একদেশ বিক্ত ইইলেও, রূপাপ্তর হয় না, এইরূপ জানিতে হইবে। (রূপ্ধাত্র ঋকার যথন. "কুপোরোলঃ" এই স্ত্রে ষষ্ঠা বিভক্তি দার। নির্দিষ্ট হয় নাই, তথন এই স্থলে, ঝকারের রূপাস্তর প্রাপ্তি হইবে। আর "রাজঃ কচ," এই স্ত্রীর সমন্ত রাজন শক্তেই ষষ্ঠা বিভক্তি হইয়াছে। কিন্তু কেবল মাত্র রাজন্ শক্তের অন্ ভাগেতে ষষ্ঠা বিভক্তি হয় নাই; স্ক্তরাং গিয়োপোনঃ এই স্ত্রাকুসারে অকারের লোপ হইবে না।)

ভাষামূল। — যদি ষষ্ঠী নির্দিষ্ট জে ভাচাতে ক্লণ্ড শিখ ইতি প্লুভো ন প্রাপ্রোতি নছত ঋকারং ষষ্ঠীনির্দিষ্টঃ। কন্তর্হি। রেফঃ। ঋকারোপ্যত ষষ্ঠীনিন্দিষ্টঃ। কথা,। অবিভক্তিকোনির্দেশঃ। কুপ উঃ রঃ লঃ রুপোরোল ইতি।

বঙ্গামুবাদ। — যদি ষষ্টা বিভক্তির দারা নির্দিষ্ট বর্ণেরই একদেশ বিকৃত হইলে, রূপান্তর হয় না,এইরূপ বলা যায়; তবে ক্লওপুশিথ এই হুলে ও,৯কার প্লুত হইবে না, যে হেতু এই হানে ঋকার যদ্ধী বিভক্তির দারা নির্দিষ্ট হয় নাই (অর্থাৎ কুপ ধাতুর ঋকার হানে যে ৯কার আদেশ হইয়াছে, সেই ঋকারের র মাত্র অংশেরই, ল আদেশ হইয়া ৯কার হইয়াছে; সমস্ত ঋকার (>) অবরবের ছানে, সমস্ত ৯কার (২) আদেশ হয় নাই, যথন স্কুতরাং ঋকার যদ্ধী নির্দিষ্ট হয় নাই, তখন তাহার একদেশ বিকৃত হইয়া যে, রূপান্তরিত হইবে না, তাহার নহে; অতএব ক্লওপ্র শিখ্য (৩) এই হুলে ৯কার প্লুত্ত হইবে না ।) তবে যদ্ধীনির্দিষ্ট কোন্ বর্ণ ? রেক্ অর্থাৎ রেকার মাত্র বর্ণ । না, এই স্থলে কেবল মাত্র রেক্ট যদ্ধী বিভক্তি নির্দিষ্ট হয় নাই । পরস্ত ঋকারও এই স্থানে ষধী বিভক্তির দারা নির্দিষ্ট হইয়াছে । কির্নুপে ষদ্ধী বিভক্তির দারা নির্দিষ্ট হইয়াছে । কিরুপে ষদ্ধী বিভক্তির দারা নির্দিষ্ট

⁽১) ককারের এক অংশ (রু) ব্যঞ্জন, এবং এক অংশ স্বর ('ই'বং কোনও বর্ণ) জানিবে।

⁽२) ১বর্ণের একভাগ বংপ্লন (ল্) এবং একভাগ স্বর ('ই'বং কোনও বর্ণ) জানিবে ।

⁽৩) যে সকল হালে স্থাবর্ণের পরে, 'ত' থাকিবে, ভাহাকে প্লুভ স্থা বিশিষ্ট ভানিখে। বেষন কুওপ্রশিষ্ট

প্রাচ্য ও পাশ্চাতা।

श्वाभी विदिकाः नः।]

ি ৫৮৩ পৃষ্ঠার পর।

খা ওয়া দা ওয়া সম্বন্ধে ত এই মোট কথা ওন্লে। এখন পাশ্চাত্যরা কি থার এবং তাদের আহারের ক্রমশঃ কেমন পরিবর্তন হয়েছে, তাও কিছু বলি।

গরীব অবস্থায় সকল দেশের থাওয়াই ধাক্ত বিশেষ; এবং শাক তরকারি. মাছ মাংস বিলাদের মধ্যে এবং চাট্নির মত ব্যবস্থত হয়। যে দেখে যে শতা প্রধান ফদল, প্রীবন্দের প্রধান খাওয়া তাই; অভাতা জিনিস আছু-দঙ্গিক। বেমন বাঙ্গালা, ও উড়িবাা, ও মাজাজ উপকূলে ও মালাবার উপকূলে ভাত প্রধান থাদা; তার দক্ষে ডাল তরকারি, কথন কখন মাছ মাংস চাট্নিবং।

ভারতবর্ষের অন্যান্য দেশে অবস্থাপর লোকের জন্য গমের রুটি ও ভাত; সাধারণ লোকের নানা প্রকার বঙ্বা, মড়ুয়া, জনার, ঝিঞ্বোরা প্রভৃতি ধাতের কটি প্রধান থাদা।

শাক,তরকারি, দা'ল,মাছ, মাংস,সমস্তই সমগ্র ভারতবর্ষে, ই কটি বা ভাতকে স্তবাদ করবার জন্য ব্যবহার—তাই ওদের নাম ব্যঞ্জন। এমন কি, পঞ্জাব, রাজপুতানা 🖷 দাকিণাত্য দেশে, অবস্থাপর অমিষাশী লোকেরা, ও এমন কি রাজারাও, যদিও নিত্য নানা প্রকার মাংস ভোজন করে, তথাপি ফটি বা ভাতই প্রধান খাদ্য। যে ব্যক্তি আধ্দের মাংদ নিত্য খার, দে এক দের কটি ভার সঙ্গে নিশ্চিৎ খার।

পাশ্চাত্য দেশে এখন যে সকল গরীব দেশ আছে এবং ধনী দেশের গরীবদের মধ্যে, ঐ প্রকার কৃটি এবং আলু'ই প্রধান খাদ্য , মাংসের চাট্রি মাত্র—তাও কালে ভদে। স্পেন, পোর্তুগাল, ইতালি প্রভৃতি অপেকায়ত উষ্ণ দেশে যথেষ্ট প্রাক্ষা জন্মার এবং ক্রাক্ষা ওয়াইন ছতি সন্তা। সে সকল ওয়াইনে মাদকতা নাই (অৰ্থাং পিপেথানেক না খেলে ত আৰু নেদা হৰে না এবং তা কেউ থেতেও পারে না) এবং মথেট পুটিকর খাদ্য। 🖪 দেশের দরিত লোকে এজন্য মাছ মাংসের জায়গায় ঐ ভাক্ষা-রুদ ছারা পুটি সংগ্রাহ করে। কিন্তু উত্তরাঞ্চল, বেখন ক্রদিয়া, স্মাইডেন, নরওয়ে অভৃতি দৈশে দরিশ্র লোকের আহার প্রধানতঃ রাই-নামক ধান্যের কটি ् ও এক बार् हूक्ता उँ है कि माइ ७ बानू।

ইউরোপের অবস্থাপন লোকের এবং আমেরিকার আবালবৃদ্ধবনিতার খাওয়া আর এক রকম, অর্থাৎ কৃটি, ভাত প্রভৃতি চাট্নি এবং মাছ मारमहे रुष्ट थ। आद्मित्रिकां कृष्टि था छत्र। नाहे वर्ह्महे हत्। माष्ट মাছই এলো, মাংস মাংসই এলো, ভাকে অমনি খেতে হবে, ভাত কটির भःरयोग नम् । এবং এজনা প্রত্যেক বারেই থালা বদ্লান হয়। यनि मण्डा थाराव किनिम थारक, ज मण्डात थाना वन्तार्ड इस। स्यमन মনে কর, আমাদের দেশে প্রথমে তথু ভক্ত এলো, তার পর থালা বদ্লে अर् डांन वरना, जातात थाना वन्त अर् त्यान वरना, जातात थाना वन्त ছটি ভাত, নয় ত হুখান লুচি ইত্যাদি। এর লাভের মধ্যে এই যে, নানা জিনিদ আল আল আপ্তয় হয়, পেট বোঝাই করা হয় না ৷ ফরাসী চা'ল সকালবেলা "কাফি" এবং এক আদু টুক্রা রুটি-মাখুম; ছপর বেলা মাছ মাংস ইত্যাদি মধ্যবিং ; রাত্রে লখা খাওয়া। ইতালি, স্পেন প্রভৃতি জাতিদের ঐ এক রকম। জর্মান্রা ক্রমাগত থাচ্ছে, --পাঁচ বার, ছ বার,প্রত্যেক বারেই অর বৈশুর মাংস। ইংরাজরা তিনবার; সকালে অর, কিন্তু মধ্যে মধ্যে কফি-যোগ, চা-যোগ আছে। আমেরিকানদের তিনবার—উত্তম ভোজন, মাংস প্রচুর। তবে এ সকল দেশেই "ডিনার"টা প্রধান ঝাদা—ধনী হলে, ভার ফরাসী রাঁধুনি এবং ফরাসী চা'ল। প্রথমে একট আদ্টু নোনা মাছ বা মাছের ডিম, বা কোনও চাট্নি বা দণ্জি। এটা হচ্চে লুখাবুদি। তার পর ত্প; তার পর আক্রকাল ফ্যাসান—একটা ফল; তার পর মাছ; তার পর মাংসের একটা উদ্বকারি; তার পর থান মাংস শূলা, সঙ্গে কাঁচা সব্বি ; ভার পর আরণ্য মাংস মৃগপক্যাদি; তার পর মিন্টার; শেষ কুলী-মধুরেণ সমাপ্রেং। ধনী হলে আছ প্রত্যেক বার থাল বদলাবার সঙ্গে সংক भन वन्तारक,--(मति, क्रारति, छामभा हेलानि धवः मर्था मर्था मर्पत कृती এক টু व्याध है। थाल वन्नावात मर्क मरक काँछ। ठामह मव वन्नारहः। व्याहा-बार्ड "कांकि" -- विना इक्ष, व्यागव मना थूरन थूरन शारम এवर धूमभान । चाउरात রকমারির সঙ্গে মদের রক্মারি দেখাতে পার্লে, তবে বড়মান্সি চা'ল বলুবে। धकेंगे बांक्शव बांशानत (मानत धकेंगे मधाविक लाक मर्सवाध करक পারে, এমন খাওয়ার ধূম এরা করে।

স্বার্যারা একটা পীঠে ব'সত, একটা পীঠ ঠেসান দিত এবং একটা জলচৌকীর উপর থানা রেখে, এক খালাভেই সকল খাওয়া খেত। ঐ চা'লু এখন্ও পঞ্চাব,

রাজপুতানা, মহারাষ্ট্র ও গুর্জের দেশে বিদামান। বাঙ্গালী, উড়ে, তেলিঙ্গি, মালানারি প্রাভৃতি মাটিতেই "গাপ্ডান"। মহীশুরের মহারাজও মাটিতে আঙ্গট্র পাতে ভাত ডাল থান। মুগলমানেরা চাদর পেতে থায়। বর্মি, জাপানী প্রভৃতি উপু হয়ে বসে মাটিতে থাল রেথে খায়। চীনেরা টেবিলে খায়; চেয়ারে বসে, কাটি ও চামচ্যোগে খায়। রোমান ও গ্রীক্রা কোচে ভয়ে, টেবিলের উপর থেকে হাত দিয়ে খেত। ইউরোপীরা টেবিলের উপর হতে, কেদারায় বসে, হাত দিয়ে পুর্বের্থেত; এখন নানা প্রকার কাঁটা চামচ্।

চীনের খাওয়াটা কদরৎ বটে—যেমন আমাদের পানওয়ারীরা ছথানা সম্পূর্ণ আলাদা লোহার পাতকে হাতের কায়দায় কাঁচির কাজ করায়, চীনেরা তেমনি ছটো কাটিকে ডা'ন হাতের ছটো আঙ্কুল আর মুটোর কায়দায় চিম্টের মত ক'রে শাকাদি মুখে ডোলে। আবার ছটোকে একত্র করে, এক বাটি ভাত মুখের কাছে এনে, ঐ কাটিবয়নির্মিত খোস্থা-যোগে ঠেলে ঠেলে মুখে পোরে।

সকল জাতিরই আদিম পুক্ষ নাকি প্রথম অবস্থার বা পেত তাই থেত।
একটা জানোয়ার মার্লে, সেটাকে এক মাস ধরে থেত; পচে উঠ্লেও তাকে
ছাড়ত না। জনে সভ্য হয়ে উঠ্লো চাস্ বাস্ শিখ্লে; আরণ্য পশুকুলের মত একদিন বেদম্ খাওরা, আর ত্ পাঁচে দিন অনশন ঘুচ্লো; আহার নিত্য যুট্তে লাগ্ল; কিন্তু পচা জিনিস্ খাবার চা'ল একটা দাঁড়িয়ে গেল। পচা হুর্গর একটা যা হয় কিছু আবশ্যক ভোজা হতে নৈমিত্তিক, আদ্রের চাট্নি হয়ে দাঁড়াল।

এস্ইমো জাতি বরফের মধ্যে বাদ করে। শশু সে দেশে একদম্ জনায়না; নিতা ভোজন—মাছ মাংদ; ১০০ দিনে অকটি বোধ হলে, এক টুকুরা পটা মাংদ থায়—অকটি দারে।

ইউরোপীরা এখনও বক্ত পশু পক্ষীর মাংস না পচ্লে খার না। তাক্ষা পেলেও, তাঁকে টাঙ্গিয়ে রাখে—য়তক্ষন নাপ'চে গুর্গন্ধি হয়। কল্কেতার পচাহরিপের মাংস পড়তে পার না; রসা ভেট্কির উপাদেরতা প্রসিদ্ধ। ইংরেজদের পনীর বত পচ্বে, বত পোকা বিল্বিল কর্বে, ততই উপাদের। পারমান পনীর-কীটকেও তাড়া করে ধরে মুখে পুরবেঁ—তা নাকি বড়ই অখাদ!! নিরামিষানী হয়েও প্রজ লম্নের জন্ত ছোঁক ছোঁক কর্বে। দক্ষিণী বাম্নের পাঁচল লম্ন নইলে খাওয়াই হবে না। শাস্তকারেরা সেপ্থও বন্ধ করে দিলেন। পাঁচল, লম্বন, গোঁও শোব, গোঁয়ো মুরগি খাওয়া এক-

কাতের পাপ, সাজা—জাতিনাশ। যারা শুন্লে এ কথা, তারা ভরে পাঁাজ লস্ত্র ছাড্লে, কিন্তু তার চেয়ে বিষমহর্গদ হিন্দ থেতে আরম্ভ কর্লে!! পাহাড়ি গোঁড়া হিঁহু লস্থনে-ঘাস পাঁাজ লস্ত্রের আয়গায় ধর্লে। ও ছটোর নিষেধ ত আর পুঁথিতে নেই!!

সকল ধর্ম্মেই খাওরা দাওরার একটা বিধি নিষেধ আছে; নাই কেবল ক্রিশ্চানি ধর্মে। জৈন, বৌদ্ধয় মাছ মাংস থাবেই না। জৈন আবার বা মাটির নীচে জন্মায়, আলু মুলো প্রভৃতি, তাও থাবে না। খুঁড়ভে গেলে পোকা মর্বে, রাত্রে থাবে না—অন্ধকারে পাছে পোকা খার।

য়াহুদীরা যে মাছে আঁশ নেই তা খাবে না, শোর খাবে না, যে জানোয়ার ছিশক নয় এবং জাগৰ কাটে না, তাকেও থাবে না। আবার বিষম কণা, হুধ বা হুশ্লোৎপল কোনও জিনিস বদি হেঁদেলে ঢোকে, যখন মাছ মাংস রালা হচ্ছে, ত সে সব বালা ফেলে দিতে হবে। এ বিধার গোঁড়া যাহুদী অন্ত কোনও জাতির রালা থায় না। আবাব হিঁহুর মত য়াহুণীরা বুথা-মাংস থার না। যেমন বাঙ্গালা দেশ ও পঞ্জাবে মাংসের নাম "মহাপ্রদাদ''। য়াছদীরা সেই প্রকার মহাপ্রদাদ অর্থাৎ যথা নিয়মে বলিদান না হলে, মাংস খায় না। কাজেই হিঁতুর মত, য়াছদীদেরও বে দে দোকান হতে মাংস কেনবার অধি-কার :নাই। মুসলমানেরা সাল্দীদের অনেক নিয়ম মানে, তবে অত বাড়াবাড়ি করে না; চধ মাছ মাংস একসঙ্গে খায় না এই মাত্র, ছোঁয়া ছুঁ য়ি হলেই যে সর্কাশ, অত মানে না। য়:ভ্লীদের আর হিঁতুদের অনেক সৌদাদ্র — খাওয়া সম্বে ; তবে য়াহ্দীরা বুনো শোরও খায় না, হিঁহুরা খায় । পঞ্জাবে মুদ্রমান হিঁচুর বিষম গংখাত পাকাল, বুনো শোর আবার হিঁছুদের একটা অত্যাবশ্রক থাওবা হয়ে দাড়িয়েছে। রাজপুতদের মধ্যে বুনো শোর শিকার করে থাওরা একটা ধর্মবিশেষ। দক্ষিণ দেশে ত্রাহ্মণ ছাড়া স্বান্তান্ত জাতের মধ্যে গেঁও শোবও যথেষ্ঠ চলে। হিঁতা। বুলো মুরগী খায় ; গেঁও ধায় না। বাঙ্গলা দেশ থেকে নেপাণ ও আকাশীর হিনালয় এক রকম চালে চলে। মনুক্ত খাওয়ার প্রথা এই অংশলেই সম্ধিক বিদ্যমান আজ্ও।

কিন্ত কুনায়্ন হতে আরম্ভ করে কান্দীর পর্যাস্ত, বালালী, বেহারী, প্রায়াণী ও নেপালীর চেয়েও মহার আইন বিশেষ প্রচার। বেমন বালালী, মুর্লী বা মুর্লীর ডিম বায় না,কিন্ত হাঁদের ডিম বায়, নেপালী ও তাই, কিন্ত কুমায়্ন হতে ভাও চলে না। কান্দীরীরা বুনো হাঁদের ডিম পেলে স্থেধ ধায়, গ্রাম্য নয়। আলাহাবাদের পর হতে, হিমালর ছাড়া, ভার এবর্ষের অব্য সমস্ত দেশে বে ছাগল থার, দে মুরগীও খার।

এই সকল বিধি নিষেধের মধ্যে জবিকাংশই যে স্বাস্থ্যের জন্ম, তার সন্দেহ
নাই। তবে সকল জায়গায় সমান পারে না। শোর মুরগী যা তা থায়, অতি
অপরিকার জানোয়ার, কাজেই নিষেধ ; বুনো জানোয়ার কি থায় কে দেখ্তে
যায় বল। তা ছাড়া বোগ,বুনো জানোয়ারে কম। ছুধ্, পেটে অয়াধিক্য হ'লে
একেবারেই ছুল্পাচা, এমন কি একদ্মে এক প্রাস্থ্য থেয়ে কখন কখন স্প্রুঃ ঘটেছে।

তথ যেমন শিশুতে মাতৃত্ত পান করে, তেম্নি ঢোকে ঢোকে থেলে তবে শীঘ্র হজন হয়, নতুবা অনেক দেরী লাগে। হধ একটা গুরুপাক জিনিস, মাংদের সঙ্গে হজনে আরও গুরুপাক, কাজেই এ নিষেধ য়াহলীদের মধ্যে। মুর্থ মাতা কচিছেলেকে জোর করে ঢক্ ঢক্ কবে হুদ খাওয়ায়, আর হু ছ্ মাসের মধ্যে মাণায় হাত দিয়ে কাদে!! এখনকার ডাক্তারের। পূর্ণবয়বের জন্ত একপোয়া হুদ আতে আতে আধ্ ঘল্টায় খাওয়ার বিধি দেন; কচিছেলের জন্ত একপোয়া হুদ আতে আতে আধ্ ঘল্টায় খাওয়ার বিধি দেন; কচিছেলের জন্ত "কিডিং বটল্' হাজা উপায়ান্তর নাই। মা ব্যক্ত কাজে—দাসী একটা ঝিরুকে করে, হেলেটাকে চেপে ধরে সাঁ৷ সাঁ হুদ খাওয়াছেছ়!! লাভের মধ্যে এই, যে রোগা-পট্কা গুলো আর বড়, বড় হচ্ছে না, ভারা ঐ খানেই জন্মের মত হুদ খাছেছ; আর যে গুলো এ বিষন খাওয়ার মধ্য দিয়ে ঠেলে ঠুলে উঠ্ছে, সে গুলো প্রায় সুত্রকায় এবং বলিট।

সে কেলে আঁতুড় ঘর, হব খাওয়ান প্রভৃতির হাত থেকে যে ছেলেশিলে
খলো বৈচে উঠ্তো, সে খলো একরকম স্কুত্ব সবল আহীবন থাক্ত।
মা ষ্টার সাক্ষাৎ বরপুত্র নাহলে কি আর দে কালে একটা ছেলে বাঁচতো!!
দে তাপদেক, দাগা, ফে ড়া প্রভৃতির মধ্য দিয়ে বেঁচে ওঠা, প্রস্তি ও প্রস্ত
উভয়েরই পকে হংসাধ্য ব্যাপার ছিল। হরিলুঠের, তুলদীতলার খোকা
মা হই প্রায় বেঁচে যেত, সাক্ষাং যুম্বাজের দৃত চিকিৎসকের হাত এড়াঙ্ক
বলে।

(কাপ্ডে সভ্যতা।)

দকল দেশেই কাপড় চোপড়ে কিছু না কিছু ভদ্ৰতা লেগে থাকে। "বেতন না জান্লে বোদ্ৰ অবদ্ৰ বুঝবো ক্যাম্নে ?" তথু ব্যাতনে নয়, "কাপড় না দেখলে, ভদ্ৰ অভ্জ বুঝ্বো ক্যাম্নে" দক্দেশে কিছু না কিছু চলন। আমাদের দেশে তথু গায়ে ভদ্ৰোক রাস্তায় বেকতে গারে না; ভারতের অভাত প্রদেশে আবার পাগড়ী না মাথায় দিয়ে কেউই রাস্তায় বেরোয় না। পাশ্চাতা দেশে ফরামীরা বরাবর সকল বিষয়ে অগ্রশী,—তাদের থাওয়া, তাদের পোষাক সকলে নকল কবে। এখনও ইউরোপের ভিন্ন ভিন্ন দেশে বিশেষ বিশেষ পোষাক বিজ্ঞমান, কিন্তু ভদ্র হলেই, ছুপয়দা হলেই, অমনি সে পোষাক অন্তর্জান হন, আর ফরাদী পোষাকের আবিভাব। কাবুলি-পাজামা-পরা ওলন্দাঞ্জি চাষা, ঘাঘরা-পরা গ্রীকৃ, তিব্বতি-পোষাক-পরা রুষ, যেমন "বোদ্র" ছওয়া, অম্নি ফরাসী কোট প্যান্টালুনে আবৃত হয়। মেয়েদের ত কথাই নাই, ভাদের প্রদা হয়েছে কি পারি রাজধানীর পোষাক প্রতে হবেই ছবে। আমেরিকা, ইংলও, ফ্রান্স 🖩 জর্মানী এখন ধনী জাত; ও সব দেশে সকলেরই একরকম পোষাক—সেই ফরাদী নকল। তবে আজকাল পারি অপেকা লণ্ডনে পুরুষদের পোষাক ভব্যতর, তাই পুরুষের পোষাক "লণ্ডন মেড্", আর মেয়েদের পারিসিযেন নকল। যাদের বেশী পয়সা, তারা ঐ ছই স্থান হতে তৈয়ারী পোবাক বারমাদ ব্যবহার করে। আমেরিকা বিদেশী আম-দানী পোষাকের উপর ভয়ানক ষাহল বসায়, সে মাওল দিয়েও পারি লওনের পোষাক পর্ত্তে হবে। এ কাজ এক। আমেরিকান্রা পারে---আমেরিকা এশন কুবেরের প্রধান আড্ডা।

প্রাচীন আর্যাঞ্জাতির। ধুতি চাদর পরত; ক্ষত্রিগদের ইকার ও লখা জামা, লড়ায়ের সময়। অস্তু সময় সকলেরই ধুতি চাদর। কিন্তু পাগড়ীটা ছিল। অতি প্রাচীনকালে ভারতবর্ষে মেয়ে মদে পাগড়ী পরত। এখন মেমন বাঙ্গালা ছাড়া অস্তান্ত প্রদেশে কপ্নি মাত্র থাক্লেই শরীর ঢাকার কাজ হলো, কিন্তু পাগড়ীটা চাই; প্রাচীনকালেও তাই ছিল, মেরে মদে। বৌদদের সমরের যে সকল ভান্ধ্যু-মূর্ত্তি পাওয়া যায়, তার মেয়ে মদে কৌপীন-পরা। বুরুদেবের বাপ্ কপ্নি পরে বসেছেন সিংহাসনে; ভন্নং মাও বসেছেন—বাড়ার ভাগা, এক-পা মল ও একহাত বালা; কিন্তু পাগড়ী আছে।! স্রাট্ ধর্মা-শোক ধুতি পরে, ঢাদর পলায় ছেলে, আছড় পায়ে, একটা ডমক-আকার আসননে বসে নাচ দেবছেন। নর্ত্তীরা দিব্যি উলঙ্গ; কোমর থেকে কতক গুলো সাক্টার ফালি ঝুল্ছে। মোদা পাগড়ী আছে। নেরু টেবু সব ঐ পাগড়ীতে। তবে রাজ-সামন্তরা ইজার ও লখা জামা পরা—চুন্ত ইজার ও চোলা। সার্থি নগরাজ এমন রূব চালালেন বে, রাজা অতুপর্বের চাদর কোথীয় পড়ে রইল; রাজা অতুপর্ব আত্ত্ব গারে বে কর্তেত চললেন। ধুতি

চাদর আর্যাদের ভিরম্ভন পোষাক, এই জন্তুই ক্রিয়া কর্মের বেলায় গুতি চাদর পর্তেই হয়।

প্রাচীন গ্রীকৃ ও রোমানদের পোষাক ছিল ধুতি চাদর; একখান বৃহৎ কাপড ও চানর —নাম ছিল "তোগা", তারি অপত্রংশ এই "চোগা"। তবে কথন কথনও একটা পিরহানও পরা হত। বুদ্ধকালে ইজার জামা। মেয়েদের একটা খুব লম্বা চৌড়া চারকোণা জামা, বেমন ছুথানা বিছানার চাদর লছা ল্ম্বি সেল্টে ক্রা, চওড়ার তুদিক খোলা। তার মধ্যে চুকে, কোমরটা বাদলে ছুবার, —একবার বুকের নীচে,একবার পেটের নীচে। ভার পর, উপরের থোলা ছপাট ছ হাতের উপর ছজায়গার ভূলে মোটা ছুঁচ দিলে আট্কে দিলে, বেমন উত্তরাথণ্ডের পাহাড়িরা **কম্বল** পরে। সে পোষাক অতি স্থন্দর ও মহজ। ওপরে একখান চাদর।

কাটা কাপড় এক ইরাণীরা প্রাচীনকাল হতে পরত। বোধ হয় চীনেদের কাছে শেখে। চীনেরা হচ্ছে সভাতার অর্থাং ভোগ বিলাসের, সুধস্কভন্তার আদ্গুরু। অনাদি কাল হতে চীনে টেবিলে খায়, চেয়ারে বদে, যন্ত্র ভন্ত ৰুত খাওয়রে জন্ম, এবং কাটা পোষাক নানা রক্ম, ইজার, জামা, টুপি, টাপা পরে।

নিকল্ব সাইবাণ জয় করে, খুতি চাদর ফেলে ইজার প্রতে লাগলেন। তাতে তাঁর খদেশা দৈজরা এমন চটে গেল যে বিজোহ হবার মত হরেছিল। মোদা দিকলর নাছাড প্রক্ষ, ইজার জাগা চালিয়ে দিলেন।

পরমদেশে কাপড়ের দরকার বড় হয় না ৷ কোপীনমাত্রেই কজানিবারণ, বাকি কেবল অনন্ধার। ঠাণ্ডাদেশে শীতের চোটে অস্থির, অসভ্য অবস্থায় জানোরারের ছাল টেনে পরে, ক্রমে কখল পরে, ক্রমে জামা পাজামা ইত্যাদি নানান থানা হয়। তারপর আতুড় গারে গ্রনা পরতে গেলেই ত ঠাঙার মুত্যু, কাজেই অশ্বার-প্রিগ্রাটা ঐ কাপড়ের উপর গিন্ধে পড়ে। -বেমন আমাদের দেশে গমনার ফ্যামান্ বদলাম, এদের তেমন ঘড়ি ঘড়ি বদুলাচ্ছে কাপড়ের ফ্যামন্।

विश्वादिन मार्वाद अञ्चल मर्सना मर्साङ ना एएक कांक माम्दन दक्करोत्र থে নাই। বিলেতে ঠিক ঠিক পোষাকটি না পরে বরের বাইরে যাবার যো নাই। পাশ্চাত্যদেশের মেরেদের পা দেখান বড়ই লক্ষা; কিন্তু গলাও वूटकत्र थानिक है। दिशान रिएक शारत । कामारमत रिएम पूर्व : दिशान वर्ष्ट्र শক্তা; কিন্তু সে ঘোমটা টানার চোটে লাঙ্টি কোমরে ওঠেন উঠুন, তার দোষ নাই। রাজ্পুভানার ও হিমাচলের অপ্তান্ধ চেকে তলপেট দেখান!

পাশ্চাত্য দেশের নর্দ্ধকী ও বেখারা লোক ভুলাবার জন্ম অনাচ্চাদিত। এদের নাচের মানে,:ভালে ভালে শবীর অনাবৃত করে দেখান। আমাদের শেশের আছড় গা ভদ্রলোকের মেয়ের; নর্তকী বেশ্যা দর্কাঙ্গ ঢাকা। পাশ্চাত্য দেশে মেয়েছেলে সর্বাদাই গা-ঢাকা, গা আহুড় করলে আকর্ষণ বেশী হয়; আমা-দের দেশে দিন রাভ আহুড় গা, পোষাক পরে চেকে চুকে থাকলেই আকর্ষণ অধিক। মালাবাব দেশে মেরে মন্দ্র কৌপীনের উপর বহিব বিমাত্র, আর বস্ত্র-মাত্রই নাই। বাঙ্গালির ও তাই, তবে কোপীন নাই এবং পুরুষদের সাক্ষাতে মেরেরা গাটা মুড়ি ঝুড়ি দিয়ে ঢাকে।

পাশ্চাত্য দেশে পুরুষে পুরুষে স্বর্জি অক্রেশে উলঙ্গ হয়—আমাদের মেয়ে-দের মত। বাপে ছেলের সর্বাঙ্গ উলঙ্গ করে স্নানাদি করে, দোষ নাই। কিন্তু মেয়েদের সাম্নে, বা রাস্তা ঘাটে, বা নিজের ঘর ছঃড়া, সর্কাঙ্গ ঢাকা চাই ।

এক চীনে ছাড়া সর্বাদেশেই এ লক্ষা সম্বন্ধে অনেক অন্তুত বিষয় দেখ ছি---কোনও বিষয়ে বেক্সায় লজ্জা, আবার তদপেক্ষা অধিক লজ্জাকর বিষয়ে আদতে লজ্জা নাই। চীনে মেয়ে মদে দর্মদা আপাদমন্তক ঢাকা। চীনে কল-ফুছের চোলা, বুদ্ধের চেলা, বড় নীতি চরস্ত ৷ থারাণ কথা, চাল, চলন—ভং-ক্ষণাৎ সাজা। কুণ্ডান পাদ্রী গিয়ে চীনে ভাষায় বাইবেল ছাপিয়ে ফেল্লে। এখন বাইবেল পুরাণ হচ্ছেন হিঁছর পুরাবের চোদ্দ পুরষ-দে দেবতা-মানুষের অন্তত কেলেঙ্কার পড়ে চীনে ত চটে অন্থির, শ্ল্লে, "এ বই কিছুতেই এদেশে চালান হবে না, এ—ত—অতি অগ্লীল কেতাব"; তার উপর পাদ্রিনী বুকুখোলা সান্ধ্য পোষাক পরে, পর্দার বার হয়ে, চীনেদের নিমন্ত্রণে আহ্বান কর্লেন। চীনে মোটা-বৃদ্ধি, বল্লে—"সর্কানাশ! এই খারাপ বই পঞ্জি, चात्र वहे मात्रीतनत चाल्ल ना तनिथतन, चामातनत हों ज़ा वहेत्य नित्ज, এ ধর্ম এসেছে।" এই হচ্ছে চীনের ক্লুচানের উপর মহাক্রোধ। নতুবা চীনে কোনও ধর্মের উপর আঘাত করে না। ভন্ছি যে, পাদীরা এখন অমীল অংশ ত্যাগ করে বাইবেগ ছাপিগেছে; কিন্তু চীনে ভাতে আরও স্বিহান ৷

আবার এ পাশ্চাত্য দেশে, দেশ বিশেষে লজ্জা-দেলার ভারতম্য আছে। हैश्टबब्ब, व्यात्मिक्कारम्ब र ब्ब्बा मतम এकतकम ; क्रामीत व्यात এकतकम ; জ্বানের সার :এক রকম। রুষ আর ভিক্তি বড় কাছাকাছি; তুরুছের আর এক ডৌল; ইতাদি। (ক্ৰমশ:)

উপনিষ্দের বিষয়।

(श्रामी मिकिशानना)

উপনিষ্ণ্যতে ব্রহ্মণিতা অন্য। ইতি উপনিষ্ণ ;—যাহার ধারা ব্রহ্মগ্রন্ধীর ভত্তরান প্রাপ্ত হওরা শার, জাহার নাম উপনিষদ্। সাধারণতঃ মামুষ হে সম্দর বিষয় লুইয়া নাড়া চাড়া কবে, সে সম্দর বিষয় ছই ভাগে বিভক্ত,--জ্ভ-জঝং ও চিত্ত-জগং। যে সম্ভ বিষয় অফুড়ত করিতে হইলে, চকুঃ, শ্রেছে ইত্যাদি পঞ্চ জ্ঞ'নেন্দ্রির, এবং যে সমস্ত বিষয়ের সহিত মানুষের কোনও ব্যবহারিক সম্পর্ক স্থাপিত করিতে হউলে, বাক্, পাণি ইত্যাদি পঞ্চ কর্ম্বেন্সিয়ের, একটার অধ্যা ততোধিকের, কার্য্যকারিতার আবগুক, তংমমুদরের সমষ্টি---জড়-জগং। পুরাতন হিলু পদার্থনিদ্ দার্শনিকগণের ফিতি, অপ্, তেজ:, মকুং, ব্যোম এই পঞ্জুল ভূত, ও ঋাধুনিক পাশ্চাত্য পদাধবিদ্-গণের লৌহ, অঙ্গাব,অক্সিজেন ইত্যাদি বছতর ভূত সমূহের পরম্পর সংমিশ্রণে, যে জগৎ গঠিত, ভাষাই জড়-জগং। আব যে জগতের কার্য্যকলাপ জ্ঞান বা কর্মেন্দ্রিয়ের সাক্ষাং সম্প্রী সাধায়া ব্যতিরেকে, কেবলমাত্র মহাতম অন্তরিন্তির মনের দারা স্প্রার তাহার নাম চিত্ত জগং। অবশ্র বলিতে হইবে, দর্শন, শ্রণ ইত্যাদি এবং কথন, গ্রহণ ইত্যাদি কোন কার্যাই ভতদিলিয়ে মনঃ-সংযোগ ভিন্ন নিষ্পান হয় না , আবার মনও কথনও জ্ঞান বা কম্মেন্দ্রিয়ের দ্বারা পূর্দ্রগৃহীত বিষয় ছাড়া অভিনব বিষয়ের ধারণা করিতে পারে কি না, সন্দেহ। একাগ্রচিত্ত হইয়া পুস্তকপাঠে স্মবহিত থাক, পাশে ঘড়ি বাজিয়া বাইল, ভূমি গুনিতে পাইলে না : শ্রবণেক্রিরের বিদ্য-মতা সত্ত্বেও, সে ইন্দ্রিয়ে তোমার সনের অসংযোগই ঘড়ির শব্দ ওনিতে না পাইবার কারণ। অনেকে চক্ষু: মুদ্রিত না করিয়াই, নিভা যান; অথচ, সুযুধ্রি-হেতু অবসন্ন সনের চক্রিন্ডিয়ের সহিত যোগ না থাকায়, বহিল্পতের কোনও বিষয়ই সে নিদ্রাবস্থায় তাঁহাদের দৃষ্টিগোচর হয় না। অপর দিকে, চক্ষুঃ মুদ্রিত ক্রিয়া ধ্যান ক্রিবার চেষ্টা কর, নিরবছিল চিস্তাশ্রেতে ভাগিতে যাও, দেখিৰে --- cकवन अस्कांत ; आंत (मिश्टल शां विनि कि कू, मिश्टत-मा वाहिरत शृःसी षा हे कि त्यत पात्रा (मथिशाहित्म, छारारे धथन अखितिसिय मत्मत विषयी हुछ रहेशारका धारे क्या, कड़ ७ किंख कनत्त्व ठिक् ठिक् शार्थकारबाधक मःका क्द्रा अम्बद । এই क्ष्मेर्ट, माःशाकात बलान, क्रफ्-क्शर हिल-क्शर डब शतिशाम মাত্র; একটা সুগ, অপরতী স্থা। একটা কার্যা, অপরটা কারণ; বর্ষ বেরুপ জলের পরিণাম, তেমনি স্থুণ ভূতাকাশ স্কু চিতাকাশের পরিণাম; বছত

শ্বরূপতং, ঐ উভয়ই এক। এ তুই জগং ছাড়া আব কোন জগং আছে কি না ? ও যদি গাকে, মাকুষো সহিত গে জগতের কি সম্পর্ক,—গে জগং মানবীয় ননেব গ্রাহ্য বিষয় কি না ? কিরুপেট বং দে জগং মানবম্নেব আয়ন্তাধীন হটতে পারে ? আয়ান্তাধীন হইলেই বা আমাদের ফল কি ?—এই সমস্ত নিগুড় ভবের মীমাংসা উপনিষ্দের বিষয়।

অধিকাংশ লোকই জড়-জগং লইয়া ব্যাপুত। ক্লুংপিপাসা নিবারণের জন্ম বিবিধ আহার্য্য ও পানীয় সংগ্রহের উদ্দেশ্যে ভূতসমষ্টিকে ভাঙ্গিতেছে,গড়িতেছে। পরিধেয় ভূষণাদির বিলাদেক্তা পবিতৃপ্ত করিবার জন্ত, কামক্রোধাদি রিপুকুলের তীব্র ভৃষণা শাস্ত করিতে গিয়া, জড় জগংকে কত ছাঁচে ঢালিয়া নি**জের** ৰাবহারোপ্যোগী করিয়া ফেলিতেছে। অবার, কেহু কেই মান্বস্থান্ড সভ্যান্ত-স্থাৎিয়া চ্রিতাথ করিতে যাইয়া, জড়ভগতের বিভিন্ন অংশের গুণ ও অক্যোত্ত সাপেক্ষতা, তিকি ও গতিৰ কাৰণ, প্ৰস্পুৰের মধ্যে আক্ষণ ও নিক্ষেপ্ণ শক্তির খেলা আবিকার কবিতেছেন , ইহারটে পদার্থ-বিদ, কোটো দদ, র্যাণন-তত্বদি, ভু-ভত্তবিদ, প্রভৃত্তি। যে কৌশলে পূপিবা আম'দের সহজ ও সুখ উপভোগ্য হইতে প বে, যে আলোচনার পথ অনুস্বণ করিলে, আমবা জড়ের ওপ ও ক্রিয়া-নিবহ স্থপত বুঝিতে পাবি, তংসমুলার অশুগুলভাবে সমাবেশিত করিয়া ওকা একটীর পর আব একটী, পরদার পর প্রদা ভূলেবা, জানপ্রপান্ত শিষ্ট্রের সমূপে উপস্থিত করান; শিষাও স্থায় অমুগাননশক্তির ক্রনোংকর্য বলে একটার প্র অপর্টী বুঝিয়া লইয়, আপনার জিনিব কবিয়া লন,—এই আদান-প্রদানের নাম বিস্থাচর্চ্চা। বিস্থাচর্চা কনিতে হইলো শিধেরে তুইটী সহায়ের আবিগুক্—নিজের খাতস্ত্র বিচার, া থে কোতে ভিনি সভালাভ করিবার জন্ম প্রস্তুত হইতেছেন, সেই কেতে তাঁহার পূর্ব্য পূর্ব্য আচার্য্যাণ কি কি সভা আিছার করিয়া গিছাছেন, তংসকলের রুতান্ত। এই রুতান্তই শিষ্যের গন্তবা ভানের পথপ্রদর্শক। সেই সমস্ত রুতান্ত ভিনি প্রথমে, 'স্তা ব্লিয়া মানিষা লয়েন,' প্রে স্বায় স্বাধীন বিচাব ছারা পরীক্ষা করিখা দেখেন, তংসনুদ্ধ 'প্রকৃত সভা কিন।'। যভদিন তিনি নিজের জীবনে ঐ সমস্ত মতা প্রত্যক্ষ না করিতেছেন, ওতদিন সে স্মুদয়কে অন্বিশাপার হইয়া মানিয়া লইলে, তাঁহাকে কপট বলিতে হইবে। অমুদ্ধান ও উদ্লান, এই ছই বাস্প সমাক মিশ্রিত হইলে, জল উংপর হয়,— এই সভাটী কোন পুর্বাহন বিশ্ প্রভাক করিয়া বলিয়া গিয়াছেন। ভূমি যদি রুগায়ন-বিক্তা বিবিতে চাও, ভা হ'লে তোমাকে প্রথম এটা সত্য বলিয়া মানিয়া লইতে

্ছটবে: পরে অনুসান ■ উদ্জান বাস্প আনিয়া, যেগপ ভাবে তিনি মিঞিত করিতে ৰশিয়াছেন, দেইক্লপ ভাবে উহাদিগকে মিশ্রিত করিয়া দেখিতে হইবে 🕫 মিশ্রিত করিবার পরু যদি দেখ, জল উংপর হইল, তখন তুমি বলিতে পার, "তিনি शहा विलग्नाहान, जाहा मछा"। मछा वर्षे, शृक्षाशान आंहार्यानिराज कथाय অবিখাদ খাপন করা ধৃষ্টভার পরিচারক; কিন্তু, নিজের জীবনে দত্য প্রভ্যক্ষ कतिएक निर्क्टे शांकिया, रकवल भरत्य कथाय मात्र मिर्य यांध्यां अनम अ মুর্থের কার্যা। পুরুকেও ত দে সব বৃত্তান্ত লিখিত থাকে; ভাহাদিগকে ২০ছ कतिरागर यमि छान। छन रहा, जरन कड़ शुक्रक बात रिज्न गांधर ध्याउन कि १ জ্জ-জগং মাসুদের সংস্থোধা, জড় জগতের বাংশিতির সামুষ সংদা সভাস্তঃ তাই এই প্রত্যক্ষার সভিক্রণ প্রমাণ অবলগনে জড হাগতের সত্যের দিকে অগ্র-সর হইতে শিষ্যের বেশী কটি হয় না। আচাষ্য কঠে থড় জোগড়ে করিয়া, হাতে কল্মে শিব্যের সংস্থে যা ক্রিণার, দেখাইবাব, তা ক্রেন ও দেখান; শিবাও বে সমস্ত বিষয় রাতিদিন দেখিতেতে, শুনি:ততে, সেই ই ক্রিয়গ্রাহ্য বিষয় সমূহেরই ব্যাপার বলিয়, সে সকল বিনালেশে বুঝিতে পারে। মানসিক জগতেও ঐ এক নিয়ন,—প্রথমে বিশাস, পরে স্থাধীন বিচার। মনসভ্বিদ্ উদালক আকৃতি শিধা খেতকে চুকে বলিলেন, '' অৱনয়ং হি সৌমা মন,''— অশিত অন্নের অণিষ্ঠ অংশের ছার। মন গঠিত। খেতকেতু প্রথমে শির্থাস করিলেন, পরে বলিলেন," ভূর এব মা ভগবায়িক্তাপ্যভূ,"--আমাকে এ বিষয় বিশদকপে বুঝাইবা দিন। উদালক থেতকে তুকে পঞ্চনশাহ উপবাসী থাকিতে বণিলেন। উপবাদের পর প্রত্যাগত থেতকেতু পূর্নণাঠত বেনানি সম্বনে জিজ্ঞাসিত হইয়া দেখিলেন, তং সমুদাধ কিছুই তাহাৰ মনে প্রতিভাও হইতেছে ন।। ভার পর, আচাষ্য করক অকুজাত ২ইরা অন্ন-অশনের পর ক্রিলেন, সমস্ত প্রশ্নের বিষয় একে একে স্থৃতিপথে ফিরিয়া আদিতেছে; তথ্য বুঝিলেন, মন ভুক্ত আলেরই পরিণাম-বিশেষ। এই প্রত্যক্ষ-জ্ঞানই সমন্ত স্তে,র মূল ভিত্তি। কড়-জ্ঞাৎ ও চিত্ত-লগং ছাড়া অন্ত জগং যদি থাকে, যদি আত্মা, ভগবান বলিয়া কোনও অ ঙীল্রিয় সত্য থাকে, তাঁহাকে প্রভাক্ষ করিতে হইবে। উপনিষদ স্নিগ্ধগভীর বরে বলিতেছেন, " ৰাজা বা অরে দ্রুটব্যঃ,''--আত্মাকে দেখিতে হইবে।

বিশুদ্ধনাৰ শ্বি-ছদৰে কতকণ্ডলি ইন্সিয়াতীত সভ্য প্ৰাভক্ষিত হইয়াছিল। ঋষিগণ দেখিয়াছিলেন, জড় 🔹 চিত্ত জগতের পশ্চাতে আর এক অতীক্সিয় শাং আছে, যেখানে প্রিজ মনবুদ্ধির গতিবিধি হইতে পারে: এই জগতের নাম চিং-জগং; ভগবান্, আত্মা, ব্রহ্ম, মুক্তি, ঐ জ্বগংস্থ সত্যের জ্ঞাপক ভাষা। উপনিষদ দেই ঋষিগণের প্রভ্যক্ষীকৃত সত্যনিচয়ের বৃত্তান্ত। ধর্ম মানে— সেই সমস্ত ঋষিদৃষ্ট চিৎ-জগতের সত্যসমূহের প্রত্যক্ষ অরুভূতি। ধর্মরাজ্যে विष्ठतर्गष्टू नवीन माधक यथन मल्लाह्त छक्रजात शीक्षि रहेशा, বর্ম কি সত্য, না বিক্লতমন্তিকের মিথা। কল্পনামাত্র, ঠিক করিতে না পারিয়া হতাশ হইয়া পড়েন, নাত্তিক ধখন স্পর্কা করিয়া ভগবানের অসতা প্রতিপানন করিতে চেষ্টা করে, তথন উপনিষদ আখাদ দিয়া বলেন, "বেদাহমেতং পুরুষং মহাস্তমাদিতাবর্ণং ভমদঃ পবস্তাং,"--আমি দেই অন্ধকাবের পার, আদিতাবর্ণ মহান্ পুরুষকে দেখিয়াছি; আমাকে বিশ্বাস কর; আমার প্রদশিত পথ অক্সরণ কবিষা জাগদর হাব, তুমিও তাঁখাকে দেখিতে পাইবে। ভাই উপনিষ্দের নাম-- আপুবাকা।

কিছ, ধন্মরাজ্যে উপনিষদের কাজ ঐ থানেই শেষ। উপনিষদ কেবল বলিয়া দিলেন, 'ধর্ম বলিয়া, যথার্থ একটা জিনিদ আছে, ধবিবা তাহা দেখিমা-ছেন, এই লও তাঁহাদের প্রমাণ-বাক্য।" দেখিবাছি, জড ও চিত্ত জগং সম্প্রকীয় বিভার চর্চা করিতে হইলে, শিষা প্রথমে সে বিভাবিষণে তাহার পূর্বতন আচার্যাগণ যে ষে দভ্য জানিয়া গিণাছেন, দে সকল সানিয়া লইয়া তুৎ-সহায়ে অগ্রসর হুইতে থাকেন: চিং-জগতের সত্য ধর্মের চর্চা সম্বন্ধেও সেই এক নিয়ম। ধর্মজিজাস্থান শিষাকে যাহা প্রথমে মানিয়। লইতে হয়, তাহাই উপনিষ্দ ।

কেবল মানিয়া বিগিণা থাকিলে চলিনে না। নিজের জীবনে ধর্ম প্রত্যক্ষ क्तिए इहेर्द। हाजान उपनिषम् हाजात-नात भए, "नाममाजा धानहतनन লভো;—ন বহুনা খ্রুতেন,"—মহা পণ্ডিক হও, উপনিধনের প্রত্যেক লোক জিহবাণ্ডে থাকুক, যদি ভোষার কিছু না কিছু অতীক্রিয় সভ্যের দাক্ষাধ উপলব্ধি ना इरेब्रा थात्क, कृति धर्मवात्कात व्यानक मृत्। नाखित्कत क्या व्याहि। আন্তিক ! ভুমি "ভগবান, ভগবান," করিয়া চীংকার করিতেছ-যদি দেই "প্রের: পুরাং, প্রেরোবিভাং, প্রেরোহক্তমাৎ সক্ষমাং," নিবিস বিশ্ব অপেক্ষা প্রিয়তম পুরুষকে জানিবার জ্বন্ত প্রাণ অবধি পণ না কর, তুমি নাত্তিকেরও व्यथ्य ।

ভবে মাফ আছে।

"কুরভ ধারা নিশিতা হ্রতায়া হর্ণপাধত্বং,"—দে জগতে ফাইবার প্র

শানিত ক্রধারের ফ্রায়, প্রতিপদে পতনের সন্তাবনা, প্রতিপদে ক্তবিক্ষত ছইতে হইবে। যদি যাইতে পারেন, লক্ষ্, কোটা যত্নকারী লোকের মধ্যে এক জনও,--তিনি ধন্ত। মাস্কার্যর অপরাধ কি ?

এই ভগ্নদ্থভ্ডি, ভাষা ভাষা, অপ্সেট, স্থের ছায়া-দৃশ্যের স্থার নহে।
মন ষধন জড় ও চিত্ত-জগং পশ্চাং ফেলিয়া, ইব্রিটাটাত চিং-জগতে ক্রীড়া
করিতে থাকে ও তথাকার স্তা অম্ভন করে, দে অনুভব, এই যে স্থল ভূত-জগতের ইব্রিয়গৃগীত অনুভব, তদপেকা সহস্র সহস্র গুণ পরিস্কার ও খন।
"বণা আন:শ্,"—আর্শিতে যে ক্রণ নিজের চেহারা স্থাপান্ত দেখা যায়, এ দর্শন ও
ভিজাপ নির্দান।

উপনিবদের ভাষা মহাকবিছের পরিচায়ক। যে ঋষি-ছাদ্যের সর্কাসংশন্ধ, সর্বাগতি, পরাধ্রের সাক্ষাং দশনে ছিল ভিল, ভুমানন্দের মধুর হিলোলে যে হার্ম-পুঞ্াীক নিয়ত নিতাপর, যোগদৃষ্টি সহারে বাঁহারা সমত্ত আত্মার, "দর্মভৃতেধু চামানম্" দাজগ্যমান প্রত্যক্ষ করিতেছেন, দে হৃদয়োখিত অশেষকল্যাণকরী বাণী ওজঃস্বরূপের ঐশব্রিক বলে বলীয়ান্। বন্ধার ভাষার দিকে লক্ষ্য নাই-অথচ উপনিষ্দের প্রত্যেক অক্ষর প্রাণ্সান্দ্রে অধ্র। "রসো বৈ সং", – সে মহাকবির অনন্তর্সের প্রস্ত্রবণে উপনিবল স্থাত। অত্তেবাসী উপনিষদের স্নেহময় ক্রোড়ে শরান ;—মাতুরুপা উপনিষদ ধর্মশিশুকে কত কথা বলিতেছেন, কত খেলা দেখাইতেছেন, জড়ভূমি হইতে চিত্তভূমিতে, চিত্তভূমি হইতে চিৎ-ভূমিতে উঠাইলেন,—শিশু অমৃতপীযুষপানে মাতোয়ারা, জননী শাস্ত, স্থির, অক্তলানে হাজমুখী;--সহসা সব ভাসিয়া----
 নাম-রূপ পরাৎ-পর বন্ধ-সমূত্রের অতল গর্ভে চিরকালের জন্ম ডুবিনা গেল, "ন ভক্ত ক্র্য্যো ভাতি, ন চক্রতারকং,"—চক্র, স্থা, গ্রহ, তারা, তিজগং ঘুর্ণায়মান, তিজগং শত থঙে বিভক্ত, শৃক্তে বিলীন ;— শিশু ভীত, স্তক্তিত, মাধের সে শান্তমূর্তি কোপায় ? কোপায় শিশু ? কোপায় জননী ? সব "নেতি, নেতির"র—কঠোর আবাতে চুৰ্ণ বিচুৰ্ণ,—"খত্ৰ নাজৎ পশুতি, ষত্ৰ নাজৎ শৃণোতি, নাজৎ বিজ্ঞানাতি, স ভূমা, যো বৈ ভূমা ভদ্যতম," দেখানে একমাত্র আত্মা,—কে কাহাকে দেখিবে ? কে কাহাকে শুনিবে ? কে কাহাকে জানিবে ?—তাহাই অনুত। এ কবিভ আর কোণাও নাই। মানবম্নের তত্ত্ব স্মাক্ ন্থানিয়া, তাহাকে নামান, উঠান, আশে পাশে খেলানু, একবার ছেড়ে দেওয়া, ষ্পাবার ধরা,—ইহাই কবিছ। ক্ষমি, বারু ইশ্র প্রভৃতি দেবভাগণ সমুধে

প্রাহভূত ব্রেক্স স্থাপ বুঝিতে অসমর্থ হটয়া, "কিমিদং যক্ষমিতি,"— এ অপুশাদৃষ্ট বাপার কি! ভাৰিয়া আকুল হইতেছেন,— ওৎক্ষণাৎ দৃশাের পরিবর্তন — মাঝানে বহুণােভনানা হৈমবতী স্ত্রাক্ষপী উমা—বলিলেন, "আমিই দেই ব্রহ্ম"। বালক নচিকেতা পিতৃসতাপালনে মৃত্যুম্থে পতিত,—কি কঠাের অভিনয়! ফিরিয়া দেখি, সে বালক নচিকেতা মৃত্যুম্থাৎ প্রত্যাগত, ব্রহ্ম নাল্য অতুনস্থে পিতার সম্মুখে দণ্ডারমান!!

মুস্লমানদিগের ধন্মগ্রন্থ কোরান, খৃফান্দের বাইবেল; তেমনি হিন্দু ধর্মের মূল গ্রন্থ উপনিষদ্ । এই উপনিষদ্ অবলম্বন করিয়া বাসে হইতে শক্ষর, রামান্তর, সংবর, প্রভাগ হিন্দুধর্ম প্রচারকার স্বায় স্বায় স্বত্ত হাপিত করিয়াছেন। সাংখ্যা, পাত্রল, লীতা, তত্ত্ব, প্রাণ প্রভৃতি ধর্মাণাস্তের প্রতিপাদ্য বিষয়ের বাজি উপনিষদের উকরো ক্ষেত্রে অঙ্কুরিত। সূল পাথর-পূজা হইতে ধন্মরাজ্যের চরম আবিজিয়া "অহম্ ত্রনাম্বি"—কন্মা, যোলী, ভক্ত, জ্ঞানা, সকল সম্প্রান্থর প্রমাণস্থানায় একমাত্র উপনিষদ্। আচার্য্যণ উপনিষদ্কে এত সন্মানের চন্দে দেখিতেন যে, ভারবানে বিশ্বাদ থাকুক, না থাকুক, ভাহাতে আনে যায় না, কিন্তু বাহার উপনিষদে বিশ্বাদ নাই, সে নাজিক। নিরীধরবাদা সাংখ্যকাবের ভারবিন বিশ্বাদ না থাকিলেও, তিনি উপনিষদের প্রামাণ্য স্বীকার কবিতেন বলিয়া, নাজিক বলিয়া গণ্য হন নাই।

এখন উপনিবলের রচ্যিত। কে । কেহট নহে, — কোন বিশেষ উপনিষদ্ যে কোন বিশেষ ঋষিক টুক রচিত, একপ কোন নিদ্দান্ট পাওয়া থায় না। উপনিষদ্ স্বাং বলিতেছেন,— ''ইতি শুক্ষম ধারাণাং যে নস্থদিচচক্ষিয়ে.'' আমরা পূর্বি পূর্বি আচামাগ্রণের নিকট হইতে এই জ্ঞান এই রূপ শুনিয়াছ। আবে, অন্ত ধ্যাগ্রন্থের ভাষা উপনিষ্ঠের উপিট্রাসিক ভিত্তিনা থাকাই হিন্দ্

অবি, অন্ত ধলাত্রন্থের ন্তায় উপান্যদের এটিছাস্ক লিভার না থাকাহ হিন্দুধর্মের গৌরনের বিবন। বাইবেল থুটের কথা; আজ যদি প্রমাণ হয়, খৃষ্ট বলিয়া কোনও ব্যক্তি বিশেষ কথনও জন্মগ্রহণ করেন নাই, ছিলেন না, ভাহা হইলে তাঁহার উক্তি বাইবেল, গৃষ্টধর্মের মূল অবলম্বন, সঙ্গে স্প্রেমাং হইবে। যদি ভবিষাং কালের গতিতে মহল্মদের মানবলীলার অভিষ্ক সন্দেহের বিষয় হইয়া দাঁড়ায়, মুদলমান-ধর্ম-স্তত্ত্বেও, সলে সঙ্গে ভাঙ্গিরার কথা। কিন্তু হিন্দুধর্মের সে ভয় নাই। হিন্দুধর্ম কোনও ব্যক্তি বিশেষের উপর নির্ভর করে না। ঋষিরা হিন্দুধর্ম প্রেতিষ্ঠিত; তবে ঋষিরা সেই জ্ঞান

প্রতাক করিয়াছিলেন, এই মাতা। শত যাজবেলা, জনক সনংকুমার, নারদ, গার্গী ছিলেন, বা না ছিলেন, ভাতে হিন্দু বর্মের ক্ষতি বৃদ্ধি নাই। ই হারা উপনিধ-দের ব্রহ্মজ্ঞান দর্শন করিয়াছিলেন, সে জন্য হিন্দু তাঁহাদিগকে প্রভা করিতে প্রস্ততঃ হিন্দু বিশেষ বিশেষ আচার্যাকে অবভার বলিয়া পূজা করেন, কারণ তাঁহাদের ভাষ অভ কেহ উপনিষ্দের বিশ্ব ব্যাখ্যা করিতে সমর্থ হন নাই। কিন্তু বে কোন মহাচার্য হউন না, যদি তিনি উপনিষ্পের ফুগোচিত সম্মান করিতে বিক্ষক্তি কবেন, তিনি হিন্দুর পূজ্যস্থানীয় নহেন।

मघाटलाइना ।

"প্রাচীন বাঙ্গালা গ্রন্থাবলী"।

সকল দেশেই প্রাচীন জব্যের আদর চিরকালই হইষা পাকে। উপস্থিত-কচি বিরুদ্ধ ইইলেও, প্রাচীন দ্রব্য সর্ব্য ছই প্রশংসনীয়; ভগাংশনারও অতি যত্ন ও ভক্তি সহকারে সকলে রকা করিয়া থাকেন। ভাষার সহকেও এইরপ: সকলদেশে সকলকালে সকল লোকেই প্রাচীন ভাষার সমানর কার্যা থাকেন। কিন্তু, আমাদের দেশে অদৃষ্ঠ ক্রমে সবই বিপরীত। ভ্রা অর্থ-করী এবং রাজভাষা বিজাতীয় হওয়ার দক্ষনই আমাদের দেশে প্রাচীন ভাষার উপর সকলকার আবে আদর নাই। ইংরাজী শিংখতে পরিলেই প্রদা আদিবে-- অন্নপ্রাশন হইতে ইংরাজীই শিথিতেছি। ইংবাজ কর্ত্রপক্ষের মনে यित कथन नग्रा इहेन (अशवा यिन कथन छांशानितात स्वविधा एहेन छ, मछाडात পোষাক পরিয়া, কেছ তাঁহাদিগের কর্তৃক প্রেরিত হইয়া, তু দশ দিন একবার व्याठीन जनानित क्रम इ- এक निक् पृतिया वानितन माता। गाहात्नत क्राडीय জ্ঞানষ,গাঁহাদের নিজের দেশের জিনিষ—নিজের পৈত্রিক জ্ঞানিষ, তাঁহাদের বে, দে বিষয়ে চাড় বা খোঁজ-থবর লওয়া একটা আবেশুকতা মনে করা—তা কিছুই নাই বলিলেই হয়; যা ঐ হ-চারজন বুড়ো-বুড়ী বৈকাল বেলা প্রিত্র-ধর্মভাবে পাঠ গান কণকতা বা কার্তন প্রভৃতি আকারে যংকিকিৎ ভনিতেন মাত্র। ইংরাজি সভাতার অস্বাবহারে, তাও আজ্কাল লোপ পাইয়া আসিতেছে। একেবারেই সমস্ত লোপ পাইবার উপক্রম হইয়াছিল, ভাগ্যীশ াআজ সাহিত্য-পরিষদের সৃষ্টি হইয়াছিল—তাই রক্ষা। বোধ হয়, বঙ্গের ঘাবতীয় শিক্ষিত নর নারী শুনিষা থাকিবেন, এবং শুনিয়া পর্মানন্দিত হইয়া থাকিবেন থে, কলিকাভার "গাছিত্য-পরিষং"নামক সভা, বঙ্গীয় সাহিত্যের "অঙ্গং গলিতং

প্ৰতিমুঞ্জ দ্ভবিহীনং জাভং ভূত্তং" এমন যে বুদ্ধপিতামাতা, তাঁহাদিগের সে 🗗 কত্র রতস্কল হট্যাছেন, বলীয় প্রাচান সাহিত্য উদ্ধারের জন্য ক ভ দূর ওঁ।হারা মন্ন করিভেছেন। সম্প্রতি ভাঁহারা "বাঙ্গালা প্রাচীন গ্রন্থাবলী" নামে বঙ্গের অমূল্য ভাষা-কার্ত্তি সকল আম্বিকার কবিয়া বঙ্গের স্কল্তেই কুতজ্ঞভাপাশে বদ্ধ করিভেত্তন। ইহার এক থণ্ড বাহির হইয়াছে। তাহার স্থা,-(১) বিভাগতির পদাবলী; সম্ভবতঃ বিভাগতির সময়কার; ইহা নেপাল-রাজ হইতে বহুষ ললানিত। (১) ছটি খাঁর মহাভারত: -- মুসলমান-রাজ্যণ যে কেবল পীড়ন করিতেন তাত। নংহ; তাঁহাদিগের মধ্যে কোন কোন মহাশরের কত্তর হিল্ব প্রতি শ্রদ্ধ ছিল, তাহা ইহার ভূমিকা পাঠে কিঞিং অবগত হটতে পারিবেন : বঙ্গের স্থণতান আলা-উদ্দীন-হুদেন-সাংগ্র সময়ে এই মহাভারত রচিত— ম.জ ৪০০ বংসরেব কথা : (৩: বনমালিদাসের জয়দেবচরিত —৩৫০ বংসরের পুরাতন পূঁথি। (৪) বাস্থদেব ঘোষের পদাবলী—৪০০ বংগবের। এ চাবধানি এত্ট ইতিপূর্কে আর ক্রন্ত মুদ্রিত হয় নাই।

"প্র'চান বাঙ্গলো গ্রহাবলীর" বাংস্বিক তুইটাকা মাত্র সাহায্য : চুই মাস্ ষ্মন্তব একধানি করিয়া বহি বাহির হয়। আশা করি, বঙ্গের প্রত্যেক সাহিত্যাহ্বাণী সাধ্যমত ইঁহাদিগকে সাহা্য্য করিতে কুণ্ঠিত হইবেন না। এ মহংকার্য্যে স্কলেবই যথাসাধ্য আন্তরিক সাহায্য করা একান্ত কর্ত্তব্য।

সহ্বদয় সংদেশীর নিকট আর অধিক কি লিখিব। "প্রাচীন গ্রন্থাবলী" (বিশেষ चদেশের) দর্বতোভাবে প্রশংসনীয়, ফুলর ও প্রক্রেয়; ইহা সদসংস্মালোচনার পারের দ্রবা; পুত্তক-পৃষ্ঠে "ফর বিভিট্র" (For Review) গেখা থাকিলেও, সেইজ্ঞ ইহার বিশেষ সমালোচন। হইতে বিরত রহিলাম।

ইহাদিগের উপস্থিত ঠিকানা—১৩৭।১ কর্ণ ওয়ালিগদ্ধীট, কলিকাতা।

নিসত্ৰণ-পত্ৰ।

উদোধন-গাহক মহাপয়েযু-

স্বিনয় নিবেদন,—১২ইফাল্পন, রবিবার, গঙ্গাতীরত্ব বেলুড়-মঠ ঠাকুরণাটীতে ভগবান और: तामकुक्छान्दवत्र ष्रहेशहि हम अत्याः मृद इहेद्व । आहक महानम्भन, আপনারা স্বান্ধ্রে যোগদান ক্রিয়া আনন্দ বর্দ্ধন ক্রিবেন। ইঙি।—মঠাধ্যক।

क्रिकाला आहितीरहे।तात चारे हटेरफ, शांत्रिकात रकान्यांनीत वढ़ वढ़ आहास, मबस বিন 💶 ঘটা। লাভৰ 🐷 মঠে বাত্তীপণকে লাইছা বাভাৱাত করিবে।

বৃদ্ধিরও পশ্চাতে শাসা। প্রথম যেন সামরা পাইবাম, সাসা শরীর হইতে পৃথক্, মন হইতেও পৃথক্। এই খান হইতেই ধর্মজগতের মতভেদ দেখা যার। বৈতবাদী বলেন, সাসা সত্ত্ব সর্থাৎ ভোগ, মুখ, ছুঃখ সবই যথাওঁতঃ আস্থার ধর্ম; অহৈতবাদী বলেন, উহা নিপ্তা।

আমরা প্রথমে দ্বৈত্বাদীদের মত,--আত্মা 🔳 উহার গতি সম্বন্ধে তাঁহাদের মত বর্ণন করিয়া, ভার পর যে মত উহা সম্পূর্ণরূপে খণ্ডন কবে, ভাহা বর্ণন করিব। অবশেষে অধৈতবাদের দারা উভয় মতের সামঞ্জ্যা সাধন করিতে 65 है। করিব। এই মানবাত্মা শরীর-মন হইতে পুথক বলিয়া এবং আকাশ প্রাণে গঠিত নম্বলিয়া অমব। কেন ? মরজের বা বিনশ্বর্থের অর্থ কি ? যাহা বিশ্লিপ্ট হট্যা যায়, তাহাই বিনশ্বর। আর যে দ্রব্য কতকগুলি পদার্থের সংযোগ-লব্ধ, তাহাই বিশ্লিপ্ত হটবে। কেবল যে পদার্থ অপর পদার্থের সংযোগোংপর নহ, তাহা কথন বিলিট হয় না, স্কুতরাং ভাহার বিনাশ কথন হইতে পারে না। তাহা অবিনাশী। তাহা অনম্ভ কাল ধরিয়া রহিয়াছে, তাহার কথন স্ষ্টি হয় নাই। সৃষ্টি কেবল সংযোগমাত্র, শুক্ত হইতে সৃষ্টি কেছ কখন দেখে নাই। স্ষ্টি সম্বন্ধে আমরা কেবল এই মাত্র জানি যে, উহ। পূর্ব্ধ হইতে অবস্থিত কতক ঋণি বস্তর নূতন নূতন রূপে একত্র মিশন মাতা। তাহা যদি হইল, তবে এই মানবাত্মা ভিন্ন ভিন্ন বস্তুর সংযোগোংপন্ন নগু বলিয়া অবশ্য অনস্ত কাল ধরিয়া ছিল এবং অনন্ত কাল ধরিষা থাকিবে। এই শরীর পাত হইলেও আত্মা थांकित्तन । त्वनाष्ठवानीत्मत्र ,यत्व यथन अर्थ भंदीत्र भवन रहा, उथन छांहात्र हे क्तितृत्रण मत्न लग्न हत्र, मन श्रार्ण लग्न हत्र, श्रांण कांजांय श्रार्थ करत्र, स्वात তথন সেই মানবাত্মা বেন ফলা শ্বীর বা লিক শ্রীররপ ব্যন পরিধান করিয়া যান। এই সূত্র শরীরেই মাতুষের সমুদর সংকার বাস করে। সংকার কি 📍 মন যেন প্রদের তুল্য, আর আমানের প্রত্যেক চিন্তা থেন দেই ব্রদে তরক্ষতন্য। যেমন হ্রদে তরক উঠে, আবার পড়ে, পড়িয়া অন্তর্হিত হইয়া বায়, সেইরূপ মনে এই চিম্বাতরস্ত্রলি ক্রমাগত উঠিতেছে, সাধার অন্থবিত হুইতেছে। উহার। একেবারে অস্তহিত হয় না। উহারা ক্রমশঃ স্কুতর **হইয়া** यांग्र, किन्छ वर्त्तम'न थारक, जावश्रक ६हेटल जावात छेनत বে চিন্তাগুলি স্ক্ৰতৰ ৰূপ ধাৰণ কৰিয়াছে, তাহাৰই ক্তকগুলিকে আবাৰ তরঙ্গাকারে আনয়ন করাকেই খুতি বলে। এইরূপে আমরা किছু 6 छ। कतिवाहि, य द्वान कार्या आमत्रा कतिवाहि, नवह मरनद मरन >गा भाष, . ১७०१ |] **ड**ेटषाधन । [0]

আকৃষ্ঠিত আছে। সবগুলিই স্ক্ষতাবে অবস্থিতি করে এবং মানুষ মরিলেও এই সংস্কারগুলি তাহার মনে বর্তুমান থাকে—উহারা আবার স্ক্র শরীরের উপর কার্য্য করিয়াথাকে। আত্মা, এই সকল সংস্কার এবং স্ক্র শরীর রূপ বসন পরিধান করিয়া চলিয়া যান, ও এই বিভিন্নসংস্কারক্রপ বিভিন্ন শক্তির সমবেত ফলই আত্মার গতি নিয়্মিত করে। তাহাদের মতে আত্মার ব্রিধি গতি হুর্মাথাকে।

থাহারা অত্যন্ত ধার্মিক, তাঁহাদের মৃত্যু হইলে তাঁহারা সুর্যারশির অনুসরণ করেন; সূর্যারশ্মি অনুসরণ করিয়া তাঁহাবা সূর্যালোকে উপনীত হন; তথা হইতে চক্রলোক এবং চক্রলোক হইতে বিগ্নালোকে উপস্থিত হন, তথায় তাঁহাদের সহিত আর একজন মুক্তাত্মার পাকাং হয়; তিনি ঐ দ্বীবাত্মাগণকে দর্ম্বোক্ত ব্রহ্মণোকে লইখা যান। এই স্থানে উ থার। দর্ম্বজ্ঞতা ও সর্বশক্তিমন্তা লাভ করেন; তাঁহাদের শক্তি ও জ্ঞান প্রায় ঈথরের তুল্য হয়: আর দ্বৈতবাদীদের মতে তাঁগারা তথার অনস্তকাল বাস করেন, অথবা, অবৈতবাদীদের মতে কলাবসানে ব্রহ্মর সহিত একত্ব লাভ করেন। যাহারা সকাম ভাবে সংকার্য্য করে, তাহারা মৃত্যুর পর চল্রবোরেক গমন করে। এখানে নানাবিধ স্বৰ্গ আছে। তাহাগা এখানে স্থল্ম শ্রীর-নেবশরার শভ করে। তাহারা দেবতা হইলা তথার বাদ করে ও দীর্ঘকাল ধরিয়া বর্গ হব উপভোগ করে। এই ভোগের অবদানে আনার ভাহাদের প্রাচীন কর্ম বলবান হয়, স্তরাং পুনরায় ভাহাদের মত লেতেক পভন হয়। তাহারা বায়ুলোক, নেঘলোক, প্রভৃতি লোকের ভিতর দিয়া আসিয়া অবশেষে বৃষ্টি-ধারার দহিত পৃথিবীতে পভিত হয়। বুষ্টির দহিত পভিত হইয়া ভাহারা কোন শদ্যকে আশ্রয় করিয়া থাকে। তংপরে দেই শদ্য কোন ব্যক্তি ভোজন করিলে, তাহার ঔরদে দেই জীবাত্ম। পুনরার কলেবর পরিগ্রহ করে। যাহার। অভিশয় ছর্কৃত্ত, তাহাদের মৃত্যু হইলে তাহার। ভূত বা দানব হয় এবং চন্দ্রলোক ও পুণিবীর মাঝামাঝি কোন স্থানে বাদ করে। ভাহাদের মধ্যে কেই কেই মথ্যাগণের উপর নানাবিধ অত্যাচার করিয়া থাকে, কেই কেই আবার মাহুষের প্রতি নিত্রভাবাপর। তাহার। কিছুকাল ঐ স্থানে থাকিয়া পুনরার পৃথিবীতে আসিয়া পভলম গ্রহণ করে। কিছুদিন পতদেহে নিবাস করিয়া তাহারা আবার মাত্র হয়, আর একবার মুক্তিলাভ क्तिराद छे पराती करहा आध रहा। छांश इरेल जामना प्रिश्नाम, উদ্বোধন। 76 [७व-- > म मः था ;

বাঁহারা মুক্তির নিকটতম সোণানে পঁতছিয়াছেন, বাঁহাদের ভিতরে থুব অব্লেপরিমাণে অপ্বিত্রতা অবশিষ্ঠ আছে, তাঁহারাই স্থাকিরণ ধরিয়া ব্রহ্ম-লোকে গমন করেন। যাঁহারা মাঝারি রকমের লোক, যাঁহারা স্বর্গে যাইবার কামনক রাখিয়া বিছু মৎবার্যা করেন, চক্রলোকে গমন করিয়া সেই সকল वाकि (मह चानच चार्श वाम व रतन, एथाय छांशात्रा (मवरमह धारा हन, কিন্তু তাঁহাদিগকে মুক্তিলাভ করিবার জন্ম আবার মহাদেহ ধারণ করিতে হইবে। আর যাহারা অতাও অসং, তাহারা ভূত দানব প্রভৃতি রূপে পরিণত হয়, তার পর তাহারা পশু হয়; তৎপরে মুক্তিলাভের জন্ম তাহাদিগকে আবার মনুষ্ক্র গ্রহণ করিতে হয়। এই পৃথিবীকে কর্মভূমি বলে। ভাল মন্দ ক্রা স্বই এখানে করিতে হয়। মানুষ স্বর্গকাম হইয়া সংকার্য্য করিলে তিনি স্বর্গে গিয়া দেবতাহন: এই অবস্থায় আর তিনি কোন নতন কর্ম বরেন না, কেবল পৃথিবীতে তাঁথাকর্ত্ত ক্ত সংকর্মের ফলভোগ করেন। আর এই দংকর্ম্মাই শেষ হইয়া যায়, অমনি ভিনি জীবনে বে স্কল অস্থ কথা করিয়াছিলেন, তাহার স্মবেত ফল ভাহার উপর বেগে আইনে, তাহাতে তাঁহাকে পুনর্কাব এই পৃথিবীতে টানিয়া আনে। এইরূপে, যাহারা ভূত হয়, তাহারা দেই অবজায় কোনকপ নূতন কর্ম না ক্রিয়াই কেবল ভূতকশ্বের ফলভোগ করে, তার পর প্রজন্মগ্রহণ ক্রিয়া তথায়ও কোন নূতন কর্ম কবে না, তার পর তাহারা আবার মানুষ হয়।

ননে কর, কোন ব্যক্তি সারা জীবন অনেক মন্দ কায় করিল, কিন্তু একটী খুব ভাল কায় করিল, তাহা হইলে দেই সংকার্য্যের ফল তংক্ষণাৎ প্রকাশ পাইবে, আর ঐ কার্য্যের ফল শেষ হইয়া যাইবামাত্রই, অসংকর্মা শুলিও তাহাদের ফল প্রদান করিবে শেষ ক্রমা জীবনের গতিটা ভাল বড় বড় কায় করিয়াছে, কিন্তু বহানের সারা জীবনের গতিটা ভাল নহে, তাহারা দেবতা হইবে। দেবদেহসম্পন্ন হইয়া দেবতাদের শক্তি কিছু কাল সন্তোগ করিয়া আবার তাহাদিগকে মানুষ হইতে হইবে। যথন সংকর্মের শক্তি কর্মা ঘাইবে, তথন আবার সেই পুরাতন অসংকার্য্য শুলির ফল হইতে থাকিবে। যাহারা অতিশয় অসংকর্মা কবে, তাহাদিগকে ভূতযোনি দানব্যোনি গ্রহণ করিতে হইবে, আর যথন ঐ অসংকার্য্যগুলির ফল শেষ হইয়া যাস, তথন যে শংকর্মাটুকু অর্শিষ্ট থাকে, তাহাতে ভাহাদিগকে আবার মানুষ করিবে। যে পথে ব্রন্ধলোকে যাওয়া যায়, য়থা হইতে ১লা মায়, ১০০৭।]

পতন বা প্রত্যাবর্ত্তনের সম্ভাবনা নাই, ভাহাকে দেবধান বলে, আর চক্রণোকের পথকে পিতৃধান বলৈ।

অত এব বেদায়দর্শনের মতে মামুষই জগতের মধ্যে সর্পশ্রেষ্ঠ প্রাণী, আর এই পৃথি ই সর্পশ্রেষ্ঠ স্থান, কারণ, এইখানেই মুক্ত হইবার প্রক্ষাত্র সম্ভাবনা। দেবতা প্রভৃতিকেও মুক্ত হইতে হইলে মানবজনা এইণ করিতে হইবে। এই মানবজনেই মুক্তির স্বাধিক্ষা অধিক স্থানি।

এক্ষণে এই মতের বিরোধী মতের আলোচনা করা যাউক। বৌরূপণ এই আত্মার অভিত্ব একেবারে অস্বীকার করে। পৌরগণ বলেন, এই শরীর-মনের পশ্চাতে আতা বলিয়া একটা পদার্থ আছে মানিবার আবেশুক্তা কি ? ইহা মানিবার আবশুকভা কি ? এই শরীর ও মনোরূপ যন্ত্র কি স্বতঃ নিদ্ধ বলিলেই যথেট ব্যাব্যা হইল না ? আবার আর একটী তৃতীয় পদার্থ কলনার প্রয়োজন কি ? এই যুক্তিওলি খুব প্রবল। যতদূর পর্যান্ত অমুসন্ধান চলে, ততদুর বেধ্হয়, এই শ্রীর ও মনোবল্ন স্বতঃসিদ্ধ ; অস্ততঃ স্থামরা অনেকে এই ভত্তনী এই ভাবেই দেখিয়া থাকি। ভবে শ্রীরও মনাতিরিক, অবচ শরীরমনের আশ্রয়ভূমিকরপ আত্মানামক একটী পদার্থের অন্তিত্ব করনার আবেশ্রক কি ? শুধু শরীর, মন, বলিলেই ত যথেট হয়। নিয়তপরিণামশীল জড়লোতের নাম শরীর, আর নিয়তপরিণামশীল চিন্তা-স্রোতের নাম মন। তবে এই যে একত্বের প্রতীতি হইতেছে, ভাহা কিনে হয় ? বৌদ্ধ বলেন, এই একত্ব বান্তবিক নাই। একটা অলম্ভ মশাল লইয়। ঘুবাইতে থাক। ঘুরাইলে একটা অগ্নির বৃত্তবন্ধপ হইবে। বাস্তবিক কোন ব্রন্থ হয় নাই, কিন্তু মণালের নিয়ত ঘূর্ণনে উহা ঐ বুংত্তর আকার ধারণ করিয়াছে। এইরূপ আমাদের জীবনেও একত্ব নাই। জড়ের রাশি ক্রমাগত চলিয়াছে, সমুদ্র জড়রাশিকে এক বলিতে ইচ্ছা কর বল, কিন্তু তদভিরিক্ত বাস্তবিক কোন এক ছ নাই। মনের সংস্কেও তদ্ধপ ; প্রত্যেক চিঙা অপর চিন্তা হইতে পুণক্ এই প্রবল চিন্তাম্রোভেই এই ভ্রমাত্মক একত্বের ভাব রাবিদা বাইতেছে; হাত্রাং চুতীর প্রার্থের আর আবশ্রকতা কি? এই যাহা किছু (मर्थ) यारेट ग्रह, अरे कड़ाखांत ७ अरे विश्वाखांत-- (कदन स्रोतन्त्रहें অন্তিঃ কাছে; ইহাদের পণ্চাতে আর কিছু ভাবিবার আবশুকতা কি? আধুনিক অনেক সম্প্রদায় বৌদ্ধদের এই মত গ্রহণ করিয়াছেন, কিন্তু তাঁহারা সকলেই এই মতকে তাঁহাদের নিজ আবিদার বলিয়া প্রতিপন্ন করিতে ₹• উৰোধন। [०व -- ১म मश्या ;

हेक्का करत्रन । व्यक्तिश्म रोक्तमर्गत्न इट साठे कथांठा এह स्त, এह পद्रिम्मामान জগংই পর্যাপ্ত; ইহার পশ্চাতে আর কিছু আছে কিনা, তাহা অনুসঞ্চান করিবার কিছুমাত অবিশ্রক্তা নাই। এই ইক্রিয়গ্রাহ্ম জগতই দর্মশ্ব; কোন বস্তুকে এই জগতের আশ্রব্যুপে কল্লনা করিবার আবশ্রুক কি প সমুদয়ই গুণসমষ্টি। এমন অনুমানিক পদার্থ কলনা করিবার কি আবশুকতা चाहि, यहार उपलि नाभिया थाकित ? भनार्थंत ज्ञान चाहेरम, रकतन গুণরাশির বেগে স্থানপরিবর্ত্তনবশতঃ, কোন অপরিণামী পদার্থ বাস্থবিক উহাদের পশ্চাতে আছে বলিয়ানয়। আমরা দেখিলাম, এই যুক্তিগুলি অতি প্রবল, আর উহা সাধারণ মানবের অনুভৃতির সপক্ষে থুব সাক্ষা দিয়া থাকে; বাস্তবিকও লক্ষে একজনও এই দৃশ্য জগতের অতীত কিছুর ধারণা করিতে পারে কি না দলেহ। অধিকাংশ লোকের পক্ষে প্রকৃতি নিতাপরিণাম-শীল মাত্র। আমাদের মধ্যে খুব অল্ল লোকই আমাদের পশ্চাদ্দেশস্ত সেই ির সমুদ্রের অত্যল আভাসও পাইয়াছেন। আমাদের পক্ষে এই জগং কেবল তরকপূর্ণমাত্র। তাহা হটলে আমরা চুইটা মত পাইলাম। একটা এই,— এই শরীর মনের পশ্চাতে এক অপরিণামী সন্তা রহিয়ছে; আর একটী মত এই,-এই জগতে নিশ্চলত্ব বলিয়া কিছুই নাই, দবই চঞ্চল, দবই কেবল পরি-গ্ন, অকৈতবাদেই এই ছুই মতের সামঞ্জন্য পাওয়া যায় ।

करेब डवानी बरबन, कनर डव अवि अविवासी आधार कारह, देव ड-বাদীর এই বাক্য সভা: অপরিণামী কোন পদার্থ কল্লনা না করিলে আমরা পরিণামই কল্পনা করিতে পারি না। কোন অপেকাকত অল-পরিণামী পদার্থের তুলনার কোন পদার্থকে পরিণামিরপে চিস্তা কর। যাইতে পারে. আবার তাহা অপেকাও অলপরিণামী পদার্থের সহিত তুলনার উহাকেও আনার পরিণামিরপে নির্দেশ করাযাইতে পারে, যতক্ষণ না একটী সম্পূর্ণ चानविनामी ननार्थ वांना इहेबा शीकांत्र कविट्ड इया अहे कन्द्रश्रेतक च्या अ এমন এক অব্যার ছিল, যধন উহা ছিবশাস্ত ছিল, যখন উহা শক্তিছয়ের সামঞ্জদাক্তরপ ছিল, অর্থাৎ কোন শক্তিরই অন্তিত্ব ছিল না, কারণ বৈষ্ম্য না হইলে শক্তির বিকাশ হয় না। এই ব্রহ্মাণ্ড আবার সেই সাম্যাবস্থা প্রাপ্তির জাত চলিয়াছে। যদি আমাদের কোন বিষয় সম্বন্ধে নিশ্চিত জ্ঞান থাকে. তাহা এই। বৈতব দীরা যখন বলেন, কোন অপরিণামী পদার্থ আছে, তখন उँशिता ठिक्टे बरनन, किंग्र छेटा व अजीवमरनव मुण्यूर्व खाठीछ, अजीवमन >मा माप, ১७०१। উद्रष्ठांधन । 43

হইতে সম্পূর্ণ পৃথক, এ কথা ভূল। বৌদ্ধেরা যে বলেন, সমুদর জগং কেইল পরিল্যে প্রবাহমাত্র, এ কথাও সভা, কারণ যতদিন আমি জগং হইতে পৃথক, যতদিন আমি আমার অতিরিক্ত আর কিছুকে দেখ, মোট কথা, যতদিন হৈত ভাব থাকে, ততদিন এই জগং পরিণানশীল বলিয়াই প্রতীত হইবে। বিশ্ব প্রকৃত কথা এই,জগং পরিণ মীও বটে,অপরিণামীও বটে। আত্মা, মন ও শরীর, তিনটী পৃথক বস্ত নংহ, উহারা একই। একই বস্ত কথন দেহ, কথন মন, কথন বা দেহমনের অতীত আত্মা বলিয়া প্রতীত হয়। যিনি শরীরের দিকে দেখেন, তিনি মন পর্যান্ত দেখিতে পান না; যিনি মন দেখেন, তিনি আত্মা দেখিতে পান না; যার যিনি আত্মা দেখেন, তাহার পকে শরীর মন উভরই কোথা চলিয়া যায়! যিনি কেবল গভি দেখেন, তিনি সম্পূর্ণ হিরভাব দেখিতে পান না, আর যিনি সেই সম্পূর্ণ হিরভাব দেখেন, তাহার পকে গতি কোথায় চলিয়া যায়! সর্পে হজ্জুন হইল। যে ব্যক্তির ব্যক্তির ক্রপ্ত কেথিতে, তাহার পকে রক্তু কোথার চলিয়া যায়! করে হলিয়া হলিয়া ব্যক্তির ক্রিয়া হলিয়া হ

छाहा इटेटल तिथा राम, এक निमाज वस्तरे चार्ट, टाहारे नानाक्षण विमारे প্রতীত হইতেছে। ইহাকে আগ্নাই বল, আর বস্তুই বল, বা আর কিছুই বল, জনতে কেবল একমাত্র ইহারহ অভিত আছে। অবৈতব'দের ভাষায় বলিতে গেলে এই আত্ম,ই ব্ৰহ্ম, কেবল নাম্মপ-উপাধিবশতঃ বহু প্ৰতীত হইতেছে। সমুদ্রের তর্দ্রগণির দিকে দৃষ্টিপাত কর; একটা তর্দ্র সমুদ্র **ছইতে পৃথক্** নহে। তবে তরুপকে পুণক্ দেখা^ইতেছে কেন ? নামরূপ— তঃলের আকৃতি,—আর আমরা উহাকে 'তরক' এই যে নাম প্রদান করিয়াছি, ভাহাতেই উহাকে সমুদ্র হইতে পৃথক্ করিয়াছে। নামরূপ চলিয়া গেলেই, উহা যে সমুদ্র ছিল, দেই সমুদ্রত রহিয়া বার। তরক ও সমুদ্রর মধ্যে কে প্রভেদ ক্রিতে পারে ? অত এব এই সমুদ্র জগং এক করপ হইল। নামরূপই যত পার্বকা রচনা করিয়াছে। যেমন সূর্যা লক্ষ কলকণার উপরে প্রতিবিধিত হইয়া প্রত্যেক জনকণার উপরেই কর্ম্যের একটা পূর্ণ প্রতিক্বতি কৃষ্টি করে, ভিক্রপ সেই এক আয়া, সেই এক সত্তা ভিন্ন বস্ততে প্রতিবিধিত হইয়া নানারপে উপলব্ধ হইতেছেন। কিন্তু বাঞ্বিক উহা এক। বাজবিক 'অ,মি' বা 'কুমি' বলিয়া কিছুই নাই--- স্বট এক । হয় বল স্বই আমি, না হয় বল সবই তুনি। এই হৈডজান সম্পূর্ণ মিথ্যা, আর সমুদয় জলং এই হৈডজানের िण्य--: य मश्था ; केटवाधन । २२

ফল। যথন বিবেকের উদরে মাথ্য দেখিতে পার, গুইটী বস্ত নাই, একটী বস্ত আছে, তথন ঠাঁহার উপলব্ধি হয়, তিনিই এই অনস্ত ব্যাণ্ড-স্থান্স হয়ছেন। আনিই এই পরিবর্তনশীল জগং, আনিই আবার অপরিণ নী, নির্ভাণ, নিতাপূর্ণ, নিতানিক্ষয়।

অত এব নিত্যশুদ্ধ, নিত্যপূর্ণ, অপরিণামী, অপরিবর্তনীয় এক আগ্না আছেন: তাঁহার কথন পরিণাম হয় নাই, আর এই সকল বিভিন্ন পরিণাম দেই একমাত্র আত্মাতেই প্রতীত হইতেছে মাত্র। উহার উপরে নাম্রূপ এই সকল বিভিন্ন স্থাতিক অবিত করিয়াছে। আকৃতিই তরসকে স্মৃদ্র হইতে পুথক করিলাছে। মনে কর, তরঙ্গটী মিশাইলা গেল, তথন কি ঐ আকৃতি থাকিবে । না, উহা একেবারে চলিয়া য'ইবে। তরকের অন্তিত সম্পর্কেপে সাগবের অভিতের উপর নির্ভর করে, কিন্তু সাগবের অন্তিম্ব ভার**কে**র অন্তিন্তের উপর নির্ভর করে না^{্ খ}্যতক্ষণ তরক থাকে, তত্তক্ষণ রূপ্থাকে, কিন্তু তরক নিবৃত্ত হইলে এ রূপ আর পাকিতে পারে না। এই নামরপকেই মারা বলে। এই মারাই ভিন্ন ভিন্ন থাক্তি বজন করিয়া এক জনকে আরু একজন ছইতে পুণক বোধ করাইতেছে। কিন্তু ইহার মন্তিত্ব নাই। মায়ার অভিত্ব আছে, বলা যাইতে পারে না। রূপের অভিত্র আছে, বলা যাইতে পারে না, কারণ উহা অপরের অন্তিত্তের উপর নির্ভর করে। আবার উচা নাই, তাহাও বলা ঘাইতে পারে না, কারণ উহাই এই সকল ভেদ করিখাছে। অত্তৈবাদীর মতে এই মারা বা অজ্ঞান বা নামক্রপ, অথবা ইয়ুরোপীয়গণের মতে দেশকালনিমিত্ত, এই এক অনম্ভ দত্তা হইতে এই বিভিন্নরূপ জগৎসত্তা দেখাইতেছে ; পরমার্থতঃ এই জগং এক মুখ ও বরপ। যতদিন প্রাপ্ত কেছ ছুইটা বস্তুর কল্পনা করেন, তিনি আন্ত। য ন তিনি লানিতে পারেন, এক্ণাত্র দত্তা আছে, তথনই তিনি যথার্থ জানিয়াছেন। যতই দিন যাইতেছে, ততই আমাদের নিকট এই সতা প্রমাণিত হইতেছে। কি জড জগতে, কি মনোজগতে, কি অধাায় জগতে, স্ক্রিই এই সভা প্রাণিত ইইতেছে। এখন প্রমাণিত ইইয়াছে যে, তুমি, আমি, সুর্য্য, চক্র, তারা, এ সবই এক জড়সমূদ্রের বিভিন্ন অংশের নামমাত্র। এই অভরাশ ক্রমাগত পরিণাম প্রাপ্ত ছইতেছে। যে শক্তিকণা করেক মান পুৰে সুৰ্যোছিল, ভাহা আজ মনুষোর ভিতৰ হয়ত আদিরাছে; কাল হয়ত উহা পশুর ভিতরে, জাবাব পর্থ হয়ত কোন উদ্ভিদে প্রবেশ করিবে। সর্বাংটি আসিতেছে গাইতেছে। উহা একমাত্র অধণ্ডফডরাশি— কেবল নামরূপে ১শা মাখ, ১৩০৭।] **উ**र्याधन । २७ পূথক্। উহার এক বিন্দুব নাম স্থা, এক বিন্দুর নাম চক্র, এক বিন্দু তারা, এক বিন্দু মান্ত্রম, এক বিন্দু পত, এক বিন্দু উদ্ভিদ, এইরদ। আর এই বে বিভিন্ন নাম, ইহা ভ্রমাত্মক, কারণ, এই জড়রাশির জনাগত পরিবর্ত্তন ঘটতেছে। এই জগংকেই আর এক ভাবে দেখিলে চিন্তাসমুদ্ররূপে প্রতীন্নান হইবে, উহার এক একটা বিন্দু এক একটা মন; ভূমি একটা মন, আমি একটা মন, প্রভাবেই এক একটা মনমাত্র। আবার এই জগং জ্ঞানের দৃষ্টি হইতে দেখিলে, অর্থাং যথন চকু হইতে মেহাবরণ অপসারিত হইরা যায়, যথন মন শুদ্ধ হইরা যায়, তথন উহাকেই নিতাভ্রদ, অপরিবানী, অবিনাশী, অবশু, পূর্ণস্করণ পুরুষ বলিয়া প্রতীত হইবে। তবে বৈভবাদীর পরলোকবাদ নামুষ মরিলে স্থার, অথবা অনুক অনুক লোকে যায়, অসংলোকে ভূত হয়, পরে পশু হয়, এদব কথার কি হহল ? অবৈত্বাদী বলেন, কেই আনেও না, কেই যায়ও না। তোমার পক্ষে যাওয়া আদা কিনে সন্তব ? ভূমি অনপ্রস্থান আর কোথায় প্রক্ষ যাইবার স্থান আর কোথায় ?

কোন বিস্তান্যরে কতকগুলি ছোট বাদক বালিকার পরীক্ষা হইতেছিল।
পরীক্ষক ঐ ছোট ছেলেগুলিকে নানারপ কঠিন প্রশ্ন করিতেছিলেন। অন্যান্ত প্রান্থর মধ্যে তাহার এই প্রশ্নও ছিল, পৃথিবী পড়িয়া যার না কেন? অনেকেই প্রশ্নতিই বুনিতে পারে নাই, ক্মতরাং যাহার বাহা মনে আদিতে লাগিল, সে সেইরূপ উত্তর দিতে লাগিল। একটা বুদ্ধিনতা বালিকা আর একটা প্রশ্ন করিয়া ঐ প্রশ্নটার উত্তর করিল,—"কোথায় উহা পড়িবে ?"ঐ প্রশ্নটাই ভ ভূল।
কগতে উঁচ্ নীচু বলিয়া ত কিছুই নাই। উঁচু নীচু বলা কেবল আলেকিক মাত্র। আয়াদধন্মেও তত্রপ; জনমৃত্যু সম্বন্ধে প্রশ্নই ভূল। কে যার, কে আ দে ? ভূমি কোথায় নাই? এমন শ্বর্গ কোথায় আছে, যেধানে ভূমি পূর্ন্ম হইতেই অবস্থিত নহ ? মামুষের আয়া দর্শব্যাপা। ভূমি কোথায় যাইবে ? কোথায় যাইবে না শু আয়া ত সর্বত্র। স্মৃতরাং সম্পূর্ণ জীবন্মুক্ত ব্যক্তির পক্ষে এই বালকস্থলভ ল্বপ্ন, এই জনমৃত্যুরূপ বালকস্থলভ ল্রম, শ্বর্গ নরক প্রভৃতি শ্বন্ধ—সবই একেবারে অন্তর্হিত হয়া যায়; যাহাদের ভিতরে কিঞ্চিৎ অজ্ঞান আরশিষ্ট আছে, তাহাদের পক্ষে উহা ব্রহ্মলোকাক্ত নানাবিধ দৃষ্টা দেখাইয়া সম্বিহিত হয়; অক্তানীর পক্ষে উহা থাকিয়া যায়:

সমৃদর জগং, স্থর্গে বাইবে, মরিরে, জনিবে, এ কথা বিশাদ করে কেন ?
আমি একথানি গ্রন্থ পাঠ করিভেছি, উহার পৃষ্ঠার পর পৃষ্ঠা পঠিত হইতেছে

উদ্যোধন।
[৩য়—১ম সংখ্যা;

এवः छ छै।न इनेट ज्ञा आत अक शृज आमिल — डेहा छ उन्होंन इहेल। श्रि-नाम প্রাপ্ত इटेटल एक १ एक गात्र कारम १ जामि नहे, - के भूजरक दूरें भाजा ওটান হইতেছে। সনুদয় প্রকৃতিই আত্মার সন্মুগন্থ একথানি পুস্তক স্বরূপ। উচার অধ্যায়ের পর অধ্যায় পড়া হইয়া ষাইতেছে ও ওন্টান হইতেছে, নৃতন দৃশ্য সন্মুখে আদিতেছে। উহাও পড়া হইরা গেল ও এণ্টান হইল। আবার মৃতন অব্যায় আদিল, দিস্ত আত্মা বেমন তেমনিই, অন্যুক্তরপ। প্রকৃতিই পরিণাম প্রাপ্ত হইতেছেন, আ্যানহেন। ডঁহার ক্থন পরিণাম হয় না। জনমৃত্য প্রকৃতিতে, ভোমাতে নংহ। তথাপি অভেরা ভ্রান্ত হইয়া মনে করে, জামরা জনাইতে ছ, মরিলেছি, প্রকৃতি নর্হেন, বেনন জামরা ভ্রাপ্তিবশতঃ মনে করি, স্টাট চলিতেছেন, পৃথিনা নবে। এ সকল, স্কুতরাং, ভ্রান্তিমাত্র, যেমন আমিরা ভ্রমনশতঃ রেলগাড়ার পরিবর্ত্তে মাঠকে দচল বলিয়া মনে করি। জনমূত্যভাপ্তি ঠিক এইরূপ। ধর্মন মাতৃষ কোন বিশেষরূপ ভাবে থাকে, তথুন দে ইহাকেই পুণিনী, সূর্যা, চক্র, তারা প্রস্তুতি বলিয়া দেখে, আর যাহারা এরূপ মনোভাবদপান, তাগারাও ঠিক ভাষেই দেখে। তোমার আনার মধ্যে কক লক শোক থাকিতে পারে, যাহারা বিভিন্ন প্রকৃতিসম্পান । তাহারাও আমা-দিগকে কখন দেখিলে না, আমরাও ভাহাদিগকে কখন দেখিতে পাইব না। আমরা একরপ্রিভর ভিদপের প্রাণীবেট ধেথিতে পাই। সেই হস্তুপ্তলিই পরস্পর প্রস্পরকে দেখিতে গায়, যে গুলি এক প্রকার কম্পনবিশিষ্ট। মনে কর, আমরা এক্ষণে দের্প প্রাণকম্পন্সার, উহাকে আমরা মানব-কম্পন নাম প্রদান কবিতে পারি ;— যদি উহা পবিবত্তিত হট্যা যায়, ভবে আর মতুষ্য দেখা যাইবে না,উহাব পরিবর্ত্তে অগ্ররূপ দৃশ্য আমাদের সম্প্রে আদিবে,—হয়ত দেবতা ও দেবজগং, কিম্বা অসং লোকের পক্ষে দানব ও দানবজগং; কিছু ঐ সকণ গুণিই এই এক জগতেরই বিভিন্ন ভাব মাত্র। এই জগং মানবদৃষ্টিতে পৃথিধী, ত্র্যা, চল্র, ভারা প্রভূতিরূপে, আবার দাণবের দৃষ্টিতে দেখিলে ইহাই নরক বা শান্তিস্থানকপে প্রতীত ২ইবে, আবার যাহারা স্বর্গে যাইতে চাহে, তাহাবা এই স্থানকেই স্বৰ্গ বলিয়া দোখবে। যাহাগ্য সারা জীবন ভাবিতেছে, আমরা স্বর্ণসিংহাসনারত ঈশ্ববের নিক্ট গিয়া সারা জীবন উপাদনা করিব, তাহাদের মৃত্যু হইলে তাহারা তাহাদের চিত্তস্থ ঐ বিষয়ই पिषित । এই क्व उरे এक न दृश्य कर्त श्रीतगठ श्रीता गाहित ; जाशांता (पिष्टित, নানাপ্রকার অপ্র কিল্লর চতুর্দ্ধিকে উড়িয়া বেড়াইতেছে, আর দেবতারা ३८६ माघ, ১७०१।} **केटबा**धन । [0]

সিংহাদনে উপবিষ্ট আছেন। স্বর্গাদি সমুদয়ই মামুষেরই ক্লত। অভএব ष्यरेन ठवानी वरणन, देव ठवानी व क्या मधा, किश्व के मक्या खादाव निस्त्रवहे ब्रिटिंग এই मन लोक, बहे भन प्रति रेने हा, श्रूनब्हा अञ्चि मनहे जानक, মানবজীবনও তাহাই। ঐগুলি কেবল রূপক, আর মানবজীবন সত্য, ভাহ। হইতে পারে না। মানুষ দর্বদাই এই ভল করিতেছে। অভাত জিনিষ, ৰধা স্বৰ্গ নরক প্রভৃতিকে রূপক বলিলে, ভাছার। বেশ ব্ঝিতে পারে, কিন্তু ভাছার। নি:জনের অস্তিত্বকে রূপক বলিয়া কোন মতে স্বীকাব করিতে চায় না। এই আপাতপ্রতীয়মান দম্দয়ই রূপক্ষাত্র, আর স্বাপেকা মিথ্যা এই যে, আমরা भरीत, यांडी आमश कथनहें नहें खबर कथन इहेट उ शांति ना। आमता (कवन মানুষ, ইহাই ভয়ানক মিথ্যা কথা। আমরাই জগতের ঈথর। ঈখরেব উপাসনা করিতে গিয়া আমুরা নিজেদের অবাক আয়ারই উপাসনা করিয়া আসিতেছি। ভূমিজনা হইতে পাপী বা অন্নং পুক্ষ, এইটী ভাবাই স্ক্রাপেকা মিথ্যা কথা। ঘিনি নিজে পাপী, তিনিট কেবল অপরকে পাপী দেখিয়া থাকেন। মনে কর, এখানে একটা শিশু রহিয়াছে, আর তুমি টেবিশের উপর এক মোহরের থলি রাখিলে। মনে কর, একজন দহ্য আসিয়া ঐ মোহর লইয়া গেল। শিশুর পক্ষে ঐ মোহরেব থলির অবস্থান ও অস্তর্মন, উভয়ই সমান; তাহ র ভিতরে চোর নাই, স্কুতরং সে বাহিরেও চোর দেখে না। भाशी । कामः लाकहे वाहित्व भाभ विश्वतं भाग, किन्न मांधु लात्कन পক্ষে ভাহা বোধ হয় না। আহাত্ত অসাধু পুরুষের এই জগৎকে নরক্ষরণ দেখে, যাহারা মাঝামাঝি লোক, ভাগারা ইছাকে মর্গম্বরূপ দেখে, আর বাঁহারা পূর্ণ দিদ্ধ পুরুষ, তাঁহারা উহাকে ঘাঁকাৎ ভগবান-অকপে দশন করেন। তথনট কেবল তাঁগ্রিচকু হটতে আববণ পড়িয়া যার, আর তথন সেই ব্যক্তি প্ৰিত্ৰ ও শুদ্ধ হুইয়া দেখিতে পান, তাঁহার দৃষ্টি একেবারে সম্পূর্ণ পরিবর্ত্তিত হুট্রা গিয়াছে। যে স্কল গ্রন্থপ উল্লেখ্যে লক লক্ষ্ম বংসর धतिका छे: भीड़न कति: उक्ति, उक्ता शक्ताति हिल्ला यात्र, आत यिन আপনাকে এগদিন মামুষ, দেবত। দানৰ প্রভৃতি বলিয়া মনে করিতেছিলেন, बिनि जाननारक कथन छेर्द्ध, कथन जाशाल, कथन পृथितीरङ, कथन খ:ৰ্ম, কখন বা অন্ত স্থানে অৰ্থিত বলিয়া ভাবিতেছিলেন, তিনি দেখিতে भान, डिनि राष्ट्रिक मर्सवाशी, डिनि कालब अधीन नन, कांग डाँहाइ अधीन. দম্দৰ স্বৰ্গ জাহাৰ ভিভবে, তিনি কোনজণ স্বৰ্গে অবস্থিত নহেন, আৰ 4. **উ**रदाधन । ि ० स- ३ व मश्या :

মানুষ কোন না কোন কালে যে কোন দেবতা উপাসনা করিয়াছে, সবই তাঁহার ভিতরে, তিনি কোন দেবতার অবস্থিত নহেন। তিনিই দেবামুর, মামুষ, পশু, উদ্ভিদ প্রান্তর প্রভৃতির সৃষ্টিক্রা, করে তথন মানুষের প্রকৃত স্থকপ তাঁচার নিকট এই জগং হইতে শ্রেষ্ঠতর, স্বর্গ হইতে শ্রেষ্ঠতর এবং সর্বব্যাপী অকাশ হইতে অধিক সর্পব্যাপীরাপে প্রকাশ পায় ৷ তথন কমামুষ নির্ভন্ন इहेग्रा यात, जशनहे म सूप मूक इहेग्रा यात । जथन मन ज्ञासि हिना यात, সব তঃখ দর হইয়া যায়, সব ভর একেবারে চিবকালের জ্বতা শেষ হইয়া যার। তখন জন্ম কোথায় চলিয়া বায়, ভার দলে মৃত্যুও চলিয়া বায়; হুংখ চলিয়া যায়, তার সঙ্গে সুখও চলিশ যার। পৃথিনী উড়িয়া যাল, ভাষার সঙ্গে স্থর্গও উড়িয়া বায়; শরীর চলিয়া যাব, তাহার সঙ্গে মনও চলিয়া যায়। সেই ব্যক্তির প্रक्ष मुम्दर कर कर एक श्रदा क जाद धातन करत । अहे स्व श्रक्तिता निरूप সংগ্রাম, নিয়ত সংঘর্ণ, ইহা একেবারে স্থগিত হইয়া যায়, আরে যাহা শক্তি ৪ ভূতরপে, প্রকৃতির বিভিন্ন চেষ্টারূপে প্রকাশ পাইতেছিন, যাহা ম্বরং গ্রকৃতি-রূপে প্রকাশ পাইতেছিল, যাহা স্বর্গ, পৃথিনী, উদ্ভিদ, গন্তু, মানুষ, দেবতা প্রভৃতিকপে প্রকাশ পাইতেছিল, নেই সমুদ্রই এক অনন্ত অচ্চেল, অপ্রিণামী সতারতে পরিণত হট্যা যার, আর জানী পুরুষ দেখিতে পান, তিনি দেই সভার সহিত অভেদ। "যেমন আকাশে নানাব্রের মেঘ আসিয়া থানিক কণ খেলা করিয়াপরে অস্থহি 5 হইবা ষায়," দেইরূপ এই আয়ার সমুখে পৃথিতী, স্বৰ্গ, চল্ললোক, দেবতা, স্থৰ তুঃৰ প্ৰভৃতি আনিতেছে; কিছ উशंश (मर्टे এक अमन्त्र अभितिनामी मीनवर्ग आकानटक आमारमन नचाः ध রাখিয়া অন্তহিতি হয় : আকাশ কখন পরিণাম প্রাপ্ত হয় না, মেঘট কেবল পরিণাম প্রাপ্ত হয়। ভ্রমবাশতঃ অনুমরা মনে করি, আমরা অপ্রিত্ত, আমরা সান্ত, আমরা জগং হইতে পুণক্। প্রকৃত মামূষ এই এক অধণ্ড সন্তাশক্ষপ।

একণে চুইটা প্রশ্ন আসিতেছে। প্রথমটা এই, "এই অবৈ হজান উপলব্ধি করা কি সন্তব ? এতকণ পর্যা দ্বত মতের কথা হটল, ইহার অপরোক্ষান্ত তি কি সন্তব ?" ইা, সম্পূর্ণই সন্তব। এমন অনেক লোক সংসারে এখনও জীবিত, মাহাদের পক্ষে অক্তান চিরকালের জন্ত চলিয়া গিয়াছে। ইহারা কি এই সতা উপগন্ধি করিবার পরক্ষণেই মরিয়া যান ? আমরা যত দীল্ল মনে করি, তত দীল্ল নয়। এককাঠবন্তসংশোজিত ভুইটা চক্র এককে চলিতেছে। বদি আমি একধানি চক্র ধরিয়া সংযোজক কাঠবন্তটিকে কাটিয়া কেলি, তবে আমি বে ১০ই মাব্য: ১০৭।) উথেখন।

চক্রথানি ধরিয়াছি, তাহ। থামিয়া যাইবে, কিন্তু অপর চক্রের উপর পূর্ব-প্রদন্ত বেগ রহিয়াছে, স্বতরাং উহা কিছুক্ষণ গিয়া তবে পড়িয়া যায়। পূর্ণ ও শুদ্ধরূপ আয়া যেন একথানি চক্র, আর এই শরীরমনরূপ জাত্তি আর একটা চক্র, কশ্বরূপ কার্চনত্ত ঘারা যোজিত। জ্ঞানই সেই কুঠার, যাহা ঐ ছইটীর সংযোগদণ্ড ছেদন করিয়। দেয়। তথন আত্মারপ চক্র স্থাগিত হইটা যাহবে, তথন আ্মা, আদিতেছেন ষ্টতেছেন অথবা ঠাহার জন্মত্যু হইতেছে, এ দক্ষ অজ্ঞ নের ভাব পরিভাগে করিবেন, আর প্রকৃতির সহিত তাঁহার মিলিভভাব, এবং অভাব বাননা সব চনিয়া ঘাইবে, তথন আত্মা দেখিতে পাহবেন, তিনি পূর্ণ, বাসনার্ছিত। কিন্তু শ্বীর্মনূর্প অপর চক্রে প্রাক্তন কম্মের বেগ থাকিবে। স্থ চরাং যতদিন না এই প্রাক্তন কম্মের বেগ একেব.রে নিবৃত্তি হয়, তত্রিন উহারা থাকিবে। ঐ বেল নিবৃত্তি হইলে শরীরননের পতন হইবে, তথন আ্যা মুক্ত হইবেন। তথন আর অর্গে যুওয়া বা স্বর্গ হটতে জগতে ফিরিয়া আসা, এমন কি, ব্রহ্মলোকে গমন পর্যান্ত স্থগিত হইয়া याइँद्रित, कांत्रण डिलि दकाया इटेटि आभित्वन, दकायाग्रहे वा यहिद्रन १ যে ব্যক্তি এই জীংনেই এই অবস্থা লাভ করিয়াছেন, বঁ,থার পক্ষে, অস্ততঃ এক মিনিটের জন্ত এই সংগারদুর পরিবভিত হত্যা গিয়া সতা প্রভিত্ত হইয়াছে, তিনি জীবলুক বলিয়া কথিত ২ন। এই জাবলুকি অব্ছা লাভ করাই বেদান্ত্রীর লক্ষা।

এক সমরে আমি ভারত মহাসাগরের উপকূলে ভারতের পাশ্চমভাগন্থ
মক্থণে ভ্রমণ কবিতেছিলাম। আমি অনেক দিন ধরিয়া পদর্কে মক্তে ভ্রমণ
করিলাম, কিন্তু প্রতিদিন এই দেখিয়া আশ্চর্যা ছইতাম যে, চণ্টুদ্ধিক স্থানর
ক্ষের হুদ রহিষ্যাহে, ভাইাদের সক্ষগুলির চণ্টুদ্ধিক সুক্ষর ক্ষের ই জলে বৃজ্ধমূহের ছায়া বিপরাত ভাবে পড়িয়া মড়িভেছে। কি অন্তুত্ত
দুশা ইহাকে আলার লোকে মক্তুমি বলে পু আমি একমাস ভ্রমণ করিলাম,
ভ্রমণ করিতে করিতে এই অন্তুত হুদ দক্ত ও বৃক্ষণাজি দেখিতে লাগিলাম।
একদিন অভিনার ভ্রমণ্ড হও্যার আলার একটু জল গাইবার ইচ্ছা ছইল,
স্বতরাং আমি ঐ সক্ষ স্ক্রের নির্মাল হুদ সকলের মধ্যে একটার দিকে অগ্রসর
ছইলাম। অগ্রসর হইলামাত্র হঠাং উল্লাক্ত ছইল, আন আলার মন্তিক
ছঠাং এই ভ্রান আলিল, 'যে মরীচিকা সম্বন্ধ সারা জীবন প্রত্তকে পড়িয়া
আন্দিভেছি, এ সেই মরীচিকা।' আর ভাহার সহিত্ত এই ভ্রানও আদিল,
হে

এই সারা মাসের মধ্যে প্র গ্রহই আমি মরীচিকাই দেখিয়া আসিতেছি, কিন্তু জানিনা যে, ইহা মরীচিকা। তার পর দিন অবার চলিতে আরপ্ত করিলান। পূর্বের মতই ব্রদ দেখা ষাইতে লাগিল, কিন্তু ঐ সঙ্গে সঞ্জে এই জ্ঞানপ্ত আসিতে লাগিল যে, উহা মরীচিকা, সতা ব্রদ নহে। এই জগংসম্বন্ধেও ভ্রূপ। আমরা প্রতিদিন, প্রতি মাস, প্রতি বংসর, এই জগমকতে প্রন্ন করিতেছি, কিন্তু মরীচিকা কিন্তু বিশ্বা বুঝিতে পারিতেছি না। একদিন এই মরীচিকা অদৃশ্য হইবে, কিন্তু উহা আবার আসিবে। শরীর প্রাক্তন কর্মের অধীন থাকিবে, সতরাং ঐ মরীচিকা ফিরিয়া আসিবে। মহদিন আমরা কর্ম ছাবা বন্ধ, তত্তদিন জগং আমাদের সম্মুখে আসিবে। নরনারী পশু উদ্বিদ্ধ আসক্তি, কর্ত্বব্য, সব আসিবে, কিন্তু উহার। পূদের স্থায় আমাদের উপর শক্তিবিস্তারে সমর্থ হইবে না। এই নব জ্ঞানের প্রভাবে কর্ম্মের শক্তি নাশ হইবে, উহার বিষদাত ভাঙ্গিয়া ঘাইবে। জগং আমাদের পক্ষে একেবারে প্রিবৃত্তিত হইয়া যাইবে, কারণ যেমন জগং দেখা যাইবে, তেমনি উহার সহিত্ত সত্য ও মরীচিকার প্রভেদের জ্ঞানও আসিবে।

তথন এই জগং আর সেই পূর্নের জগং থাকিবে না৷ তবে একটা বিপদ আছে। আমরা দেখিতে পাই, প্রতি দেশেই লোকে এই বেদাস্তদর্শনের মত গ্রহণ করিণা বলে, "আমি ধর্মাধর্মের অতীত, অমি বিধিনিষেধের অতীত, ম্বতরাং আমি যাহা ইচ্ছা তাহাই করিতে পারি।" এই দেশেই দেখিবে, অনেক অজ্ঞান বলিয়া থাকে, 'আমি বদ্ধ নহি, আমি স্বরং ঈশ্বরম্বরূপ; আমি যাহা ইছে!, তাথাই করিব। ইহা ঠিক নহে, যদিও ইহা সত্য যে, আত্মা ভৌতিক মান্সিক বা নৈতিক স্ক্রিকার নিয়নের অভীত। নিয়মের মধ্যে বন্ধন, নিয়মের বাহিরে মুক্তি। ইহাও সতা যে, মুক্তি আআরে জন্মগত ভভাব, উহা তাঁহার জনপ্রাপ্ত সন্ত্ব, আর আত্মার যথার্থ মৃক্তত্বভাব ভৌতিক আবেরণের মধা দিয়া মাজবের আপোতপ্রতী মমান মুক্ত শভাবকপে প্রতীত হইতেছে। তোমার জীবনের প্রতি মুহূর্তই ভূমি আপনাকে মুক্ত বলিয়া অনুভব করিতেছ। আমরা আপনাকে মুক্ত না অত্তব করিয়া এক মৃহুর্ত্ত ভীবিত থাকিতে পারি না, কথা কহিতে পারি না, কিন্তা খাসপ্রধাসও ফেলিতে পারি না। কিন্ত ষ্মাবার, অর চিন্তার ইহাও প্রমাণিত হয় যে, স্থামবা ব্রতুলা-মুক্ত নহি। তবে কোন্টী সভা 🤊 এই যে 'আমি মুক্ত' এই ধারণাটীই কি ভ্রমাত্মক 🤊 একদল বলেন, 'আমি মুক্ত-শ্বভাব' এই ধারণা ভ্রমাত্মক, আবার অপর গল বলেন, >६६ माप, ১७०१। 7 **के**रबाधन । 601 শোমি বজ্ঞাবাপন্ন' এই ধারণাই ভ্রমান্তক। তবে এই দিবিধ অনুভূতি কোথা হইতে আদিয়া থাকে ? মান্তব প্রকৃত পক্ষে মুক্ত, মান্তব পরমার্থতঃ যাহা, ভাগা মুক্ত বাতীত আর কিছু হইতে পারে না, কিন্তু যখনই তিনি মান্তার জগতে আদেন, যখনই তিনি নামন্ত্রপের মধ্যে পড়েন, তথনই তিনি বদ্ধ হইয়া পড়েন। 'বাধীন, ইজ্যা' ইং । বলাই ভূগ। ইচ্ছা কখন স্বাধীন হইতেই পারে না। কি করিয়া হইবে? বন্ধন প্রকৃত মান্তব বিনি. তিনি বদ্ধ হইয়া যান, তথনই তাঁগার ইচ্ছার উত্তর হয়, ভাগার পূর্কে নহে। মান্তবের ইচ্ছা বন্ধভাবাপন্ন, কিন্তু উহার মূল যাহা, ভাগা নিত্যকালের জন্ম মুক্ত। স্বত্যাং বন্ধনের অবস্থাতেও—এই মন্ত্রাজাবনেই হউক, দেব-জাবনেই হউক, স্বর্গ অবস্থান কালেই হউক, আর মর্কো অবস্থান কালেই হউক, আমাদের বিবিদ্তে অনিকার ক্ষমণ এই, মুক্তির স্বৃত্তি থাকিয়া যায়। আর জ্ঞাতসারে বা অজ্ঞাতসারে আমরা সকলেগ ঐ মুক্তির দিকেই চলিয়াছি। যখন মান্ত্র মুক্তিলাভ ক্রে, তথন সে নির্মের দারা কিন্তবে বন্ধ হইতে পারে ? জনতের কোন নির্মই ভাহাকে বন্ধ করিতে পারে না, কারণ এই বিশ্বজ্ঞাওই ভাহার।

তিনিই তথ্ন সমুদ্ধ বিশারকাণ্ড অংশপ। হয় বল, তিনিই সমুদ্ধ জগং, না হর বল, তাঁহার পক্ষে জগতের অভিছই নাই। তবে তাঁহার লিস, দেশ, ই গাদির কুদ্র কুদ্র ভাব কিরপে থাকিবে ? তিনি কিরপে বলিবেন, অনি পুরুষ, আমি স্ত্রী, অথবা আমি বালক 🕈 এওলি কি মিগা কণা নং ? তিনি জানিয়াছেন, সেওলি নিখ্যা। তথন তিনি এই গুলি পুক্ষের অধিকাৰ, এই গুলি স্ত্রীর অধিকার, কিরপে বলিবেন ? কাহারও কিছুই অধিকার নাই, कारावरे च उद्ध खाखिए नारे। शुक्य नारे, छो । नारे, आया निक्रीन, মিতা क्रम । व्यापि शुक्रव वा जो वला, अभवा व्यापि व्यप्तक दल्यवानी वला, मिथावार मात्र। मन्दर काउरे कामात (पण, मन्त्र काउरे आमात, कातन, ममूनव क्रनाट्ड बाता (वन आमि आपनाटक आदु उ कतिवाहि। সমুদর अप्तर द्यन व्यामात শ্রীর इইরাছে। কিন্তু আমরা দেখিতেছি, च्यान कार्या के कि तिहारवेब अनम श्री के अप कि विकास कार्या व অপ্ৰিত্ৰ কাৰ্য্য দকল করিয়া থাকে। আৰু বুদি আমরা ডাহাদিগকে জিজাসা করি, কেন ভাগার। এইরূপ করিতেছে, তাহারা উত্তর দিবে, 'এ ভোমাদের বৃথিবার ভ্রম। আমাদের ছারা কোন অভার কার্যা िम-- २व मध्या : **डेटबायन** । 48

হওরা অসম্ভব।' এই সকল লোককে পরীকা করিবার উপায় কি ? উপায় এই , --

যদিও সদসং উভন্নই আত্মার ২৩ প্রকাশমাত্র, তথাপি অস্চাবই আত্মার বাহা আবেরণ, আর 'দং' ভাব-মানুষের প্রক্ত মন্ত্রণ বে আয়া, তাঁহার অপেকাকত নিকটভম আবর্ণ। যতদিন না মাতৃষ 'অসং'এর শুর ভেদ করিতে পারিতেছেন, ত তদিন তিনি সতের ভারে পঁছছিতেই পারিবেন না, আরু যত্দিন নাতিনি সদসং উভয় স্তর ভেদ কবিতে পারিতেছেন, তত্দিন তিনি আয়ার নিকট পঁছছিতে পারিবেন না। আয়ার নিকট পঁছছিলে ওঁংহার কি অবশিষ্ট থাকে? অতি সামায় কর্ম ভূত জীবনের কার্য্যের অতি সামানা বেগ্ট অবশিষ্ট থাকে. কিন্তু এ বেগ- ভতকর্ষ্মের্ড বেগ। যত দিন না অস্ত্রের একেবারে রহিত হুট্রা বাইতেছে, যুত্দিন না পুর্ব অপ-বিত্রত। একেবারে দক্ষ হইয়া ঘাইতেছে, ততদিন কোন ব্যক্তির পক্ষে সভ্যকে প্রত্যক্ষ এবং উপলব্ধি করা অসম্ভব। স্ভরাং, যিনি স্থাত্মার নিকট পৌচিয়াতেন, যিনি সভাকে প্রভাক্ষ করিয়াছেন, তাঁহার কেবল ভত-জীবনের শুভ সংস্কার, শুভ বেগগুলি অবশিষ্ট থাকে। শরীরে বাস করিলেও এবং অনবরত কর্মা করিলেও তিনি কেবল সংকর্মা করেন: ভাঁহার মুখ সকলের প্রতি কেবল জাশার্কচন বর্ষণ করে, তাঁহার হস্ত কেবল সংকার্যাই করিয়া পাকে, তাঁহার মন কেবল সং চিন্তা করিতেই সমর্থ: তাহার উপস্থিতিই, তিনি যেখানেই থান না কেন, সর্ব্বেই মানবজাতির মহাকল্যাণকর: এরপ ব্যক্তি ছারা কোন অস্থ কর্ম কি সম্ভব ? ডোমা-দের মারণ রাখা উচিত, 'প্রতাক্ষারভৃতি' এবং 'গুধু মুখে বলার' ভিতর বিশ্বর তফাত। অজ্ঞান ব্যক্তিও নানা জ্ঞানের কথা কৃহিয়া থাকে। তেওে। পক্ষীও এইরপ বকিয়া থাকে। মুখে বলা এক, আর উপলব্ধি আর এক। দর্শন, মতামত, বিচার, শাস্ত্র, মন্দির, সম্প্রদার প্রভৃতি কিছু মন্দ নয়, কিছু এই প্রত্যকালুভূতি ধইলে ও-সৰ আর থাকে না। মানচিত্র অবভা উপকারী, কিন্তু মান্চিত্রে অকি ভ দেশ স্বয়ং প্রভাক্ষ করিয়া আদিরা, তার পর আবার সেই মানচিত্রের দিকে দৃষ্টিপাত ক্র, তখন তুমি কত প্রভেদ দেখিতে পাও। স্তরাং যাহারা সভ্য উপলব্ধি করিয়াছে, ভাহাদিগকে আর উহা বুঝিবার ভায়যুক্তি ভক্নিতক প্রভৃতির আতার লইতে হয় না। ভাহাদের পক্ষে উহা তাহাঁদের অন্তরাত্মার মর্ম্মে মর্মে প্রবিষ্ট ক্ইয়াছে। প্রত্যক্ষেত্রও ३६ माम्, ३७०१ [] **े**रचांश्य ।

প্রতাক্ষ ইহয়াছে। বেদাস্থাদীদের ভাষায় বলিতে গেলে বলিতে উহা যেন তাহার করামলকবৎ হইখাছে। প্রত্যক্ষ উপল্বিকারীরা ষ্মায়ুচিত্চিত্তে বলিতে পারেন, 'এই যে, স্বায়া রহিয়াছেন।' ভূমি তাঁছাদের সহিত যতই তর্ক কর না কেন, তাঁহাগা ভোষার কথায় হাসিবেন মাত্র, তাঁহারা উঠা আবোল তাবোল বাকা বলিয়া মনে করিবেন। শিভ যা তা বলুক না কেন, তাঁহালা তাহাতে কোন কথা কহেন না। উঁহোর। সভা উপলব্ধি করিয়া "ভরপুর" হইয়া আছেন। মনে কর, তুমি একটী দেশ দেখিয়া আসিয়াছ, আর একজন ব্যক্তি ভোমার নিকট আসিয়া এই তর্ক করিতে লাগিল যে, ঐ দেশের কখন অস্তিইই ছিল না; এইরূপ শে ক্রমাগত ভর্ক ক্রিয়া ঘাইতে পারে, কিন্তু তাহার প্রতি ভোমার মনের ভাব এইকপ হইবে যে, দে ব্যক্তি বাতুলালয়ের উপযুক্ত। এইরূপ যিনি ধর্মের প্রত্যক্ষ উপলব্ধি করিয়াছেন, তিনি বলেন, "জগতের কুদ্র কুদ্র ধর্মের কথা কেবল বালকের কথা মাত্র। প্রভ্যক্ষামূভতি ধর্মের সার-কথা।" ধর্ম উপনব্ধি করা যাইতে পারে। প্রশ্ন এই, ভূমি কি প্রস্তুত আছে 🛚 । ভোমার কি ধক্ষের আব্শুক আছে? যদ তুমি যগার্থ টেষ্টা কর, ভবে তোমার প্রত্যক্ষ উপলব্ধি হইবে, তথনই তুমি প্রকৃত পক্ষে ধার্মিক হইবে। যত্তিন না ভোমার এই উপলব্ধি হইছেছে, ভত্তিন ভোমাতে এবং নান্তিকে কোন প্রভেদ নাই। নাজিকেরা তবু অকপট, কিন্তু যে বলে 'আমি ধর্মবিশ্বাস করি', অথচ কখন উহ। প্রত্যক্ষ উপলব্ধি করিতে চেটা করে না, সে অকপট न (ह।

তার পরের প্রশ্ন এই — এই উপলব্ধির পরে কি হয় ? মনে কর, আমরা জগতের এই অবও ভাব (আমরাই বে, দেই একমাত্র অনস্ত পুরুষ, তাহা) উপলব্ধি করিলাম; মনে কর, আমরা জানিতে পারিলাম, আআই একমাত্র আছেন, আর তিনিই বিভিন্ন ভাবে প্রকাশ পাইতেছেন; এইরপ জানিতে পারিলে তার পর আমাদের কি হয় ? তাহা হইলে আমরা কি নিশ্চেষ্ট হইরা এক কোণে বিদিয়া মরিল্লা যাইব ? জগতে ইহা ছারা কি উপকার হইবে ? সেই প্রাচীন গুল্ল আবার ঘ্রিল্লা ফিরিল্লা! প্রথমতঃ, উহা ছারা জগতের উপকার হইবে কেন ? ইহার কি কোন মুক্তি আছে ? লোকের এই প্রশ্ন করিবার কি অধিকার আছে, 'ইহাতে জগতের কি উপকার হইবে ?' ইহার অর্থ কি ? ছোট ছেলে মিট জন্য ভাল বাসে।

মধ্যে যাহ। শ্রেয়ঃ, তাথা আনাকে বল, এই প্রকার অর্জুন জিলাদা করিলে পর ভগবান এইপ্রকার নির্ণয় করিয়াছেন যে, জ্ঞানী সংন্যাসীগণের মোকপ্রাপ্তি কেবল জান্যোগের দারাই হয়, কম্মযোগীগণের মোকপ্রাপ্তির প্রতি প্রথম কারণ কর্মাযোগ (ক্যাযোগবারা চিত্ত জি হইলে তাগার। জানলাভে স্নর্থ হঠিয়া মোকলাভ করিতে পারে), "নচ সংন্যানাদের সিদ্ধিং সম্পিল্ছতি" (কেবল সংন্যাদের দার্টি দিদ্ধি লাভ করিতে পাবে না) এই প্রকার ব্যক্তার দারাও ইচাই প্রতিশাদিত গ্রন্থাতে যে, জ্ঞানের স্কিত সন্তাদ্ধ সিদ্ধির কারণ এবং জ্ঞানের উদয় না ছওয়া প্যান্ত কম্মাণাগ্র কর্ত্ত । ইহার প্রকৃত বিবেক অব্ধরেণ করিতে অসমর্থ হইয়া৷ অর্জুন জানরহিত সংন্যাস শ্রেয়ঃ কিংবা কণ্ডধোগ শ্রেয়ঃ, हेशहे जानितात रेफ़ाय विलाउ एक एक, मन्नामिशानि । "मरनाम" अथार শাস্ত্রীয় কতক গুলি বিশেষ কংশ্বি অত্ঠান পরিত্যাগ,(ভাষ্টি করিবার উপদেশ দিতেছ, অথচ আবার সেই সকল করের মতুঠান যে অবপ্রকর্ব্য, তাগাও বলিতেছ, স্কুতরাং এই চইটার মধ্যে কোনটা শেরঃ (অর্থান্ট কম্ম শ্রেয়ঃ কিংবা ক্ষাপ্রিভাগে করা শ্লেরঃ (এইরপে সংশ্য হৃহতেছে ; ছইটা উপায়ের মধ্যে যাগা উংকৃষ্ট চর, ভাহারই সমুষ্ঠান কর্বা, অত্তব কম্মণ-ভাগ ও কম্বে'গ এই ছুইটার মধ্যে যাহা উৎক্রতের স্থাং যালার অন্তঠান কারণে আনার শ্রেষোণাত হয়, তাহাই ভূমি নিশ্চল করিবা, তোনার যাহা অ ভল্মিত, তাহা বল, কাবণ এই ছইটা উপায় এককালে একটা পুক্ষের অল্টেয় হইতে পারে না॥ ১॥

জ্ঞীভগৰার গাচ। – সংন্যাসঃ কর্মব্যোগণ্ড নিঃশ্রেনসকরাবৃত্তো।
তয়োস্ত কক্ষদন্যাসাথ ক্ষাব্যোগোণিশিষ্যতে ॥২॥

ভাষ্য।—সংন্যাসঃ কশ্মাযোগঃ চ ্ইতি ভিজে (যথপি নিঃশ্রেষ্মকরো তু (তথাপি) তয়েঃ মধ্যে সংন্যাধার কশ্মধোগো বিশিষ্তে ॥২॥

ম্লার্বাল।—সংন্যাস এবং কম্যোগে এই ছইটাই থোক্ষমাধন, কিন্তু এই ছইটার মধ্যে ক্মাযোগই সংখ্যাস হইতে উৎক্টেংর । ২ ॥

ভাষা।—স্থাভিপ্রাযমাচক্ষাণোনির্থায় (ই।ভগগালুবাচ) সংন্যাসঃ কল্মণাং পরিত্যাগঃ কর্মধোগণ্চ তেষামনুষ্ঠানং তাবু গাবপি নিঃশ্রেমকরে। নিঃশ্রেমণ মোকং কুর্মাতে জ্ঞানোংপত্তিছে তুজেন উভৌ যদ্যপি নিঃশ্রেমকরে। তথাপি তয়েস্থ নিঃশ্রেমদংহজেঃ কর্মদ্যাশ্যাং কেবলাং কর্মধ্যে,গোবিশিষ্যত ইতি কন্ম মোগং স্তৌতি।। ২।।

১**८३ मार्च, ১७**०१।]

ভাষা ছিল্প । – এই নের নিশ্চয় উংপল্ল কারবার জন্য নিজের অভিপ্রাপ্ত প্রকাশ করিয় ভাগনান্ বলিতেছেন যে, সংস্থাস (অর্থাং) করু গুলি বিহিত্ত কম্মের পরিতার এবং ক্ষাযোগ অবাং দেই কতকগুলি কম্মের অনুষ্ঠান, এই ছুইটা উপাসই নিঃশ্রোদকর, (অর্থাঃ) জানের উংপত্তির প্রতি কারণ, এই জন্ম নেক্ষের পরশ্বরার সাধন স্বরূপ হুইয়া থাকে, তথাপি মোক্ষের করিশ এই ছুঃ টীর মনো জানতীন ক্ষাসংনাস হুইতে ক্ষ্যোগ্র বিশিষ্ট অর্থাৎ উংক্রম্ভ এই বাক্ষের ছারা ক্ষাযোগ্র ভাতিকরা হুইতেছে মহা

জ্ঞেনঃ সনিভাগ°ন্যাসী যোন ছেটিন বাজ্জতি। নিছহিলংহি সভাবাছো স্বথং বন্ধায় প্রায়ুচ্যতে ॥৩॥

জন্ম দেশ (কর্মানানি ভাসন্তানা (ইতে) জেনঃ, যং ন দেখি ন কাজাভি, হি (যামান) নিছলিঃ হে মহাক্তো, স্থং (অকানামেন) বন্ধাং প্রমূচ্যতে ॥ ৩ । ম্লাকুবাদ — যাহার দেশ বা আকাজানাত, সে ব্যক্তি কর্মানানী ইইলেও তাছাকে নিত্যসংকাদী বলিয়াই জানিবে, কারণ হে মহাবাহা, যে বাক্তি জভিলার ও ছেয় প্রভৃতি দ্দুত হইতে বিমৃক্ত, সে খনায় সেই সংশারবন্ধন হইতে যুক্ত হইনা গাকে। ৩ ॥

ভাষা।—বল্পাদিত্যাই জেগ্ৰুটি জ্বেলা জাবলাং স কৰ্মবোগী নিত্যসংন্যা-সীতি যোন দেষ্ট কিঞ্জিল কাজ্জতি সুগজ্জৰে তংগাধনে চ এবন্ধিয়ো যং কল্পনি বৰ্জনানোহপি স নিত্যসংন্যাবাতি জ্ঞাতব্য ইভাৰ্যঃ। নিৰ্দ্যু ৰন্ধ্যজ্জিতোহি যন্ত্ৰাং মহাবাহো প্ৰথং বজাদনালাবেন প্ৰমৃচ্যুতে।। ৩।।

ভাষ্যান্থনাদ।—কেন এই প্রকার বলা হইল, তাহার করণ বলা যাইতেছে যে, জের ইভাাদি, জের (এই শক্তীর অর্থ) জ্ঞাতবাং অর্থাৎ) সেই কর্মযোগীকেও নিতাসন্ত্রাসী বলিয়া জানিবে (কাহাকে ভাহাই বলা যাইতেছে) যে ব্যক্তিছঃধ ও তাহার সাধনের উপায়ে ছেব করে না এবং সুই ও তাহার সাধনে মহার সাকাজ্ঞানাই, এই প্রকার ব্যক্তি কর্ম্মানুষ্ঠান করিলেও সে নিতাসংগ্রামী ইহা জানিবে। তে সহাবাহো, যে ব্যক্তি নির্মন্থ অর্থাৎ ছল্মাজিত, সেই স্থাধে (অর্থা,ৎ) অনামানে সংসালবন্ধ হইতে মৃক্তি লাভ করিতে সমর্থাহয়। তা

সাংখ্যযোগে পুণল্লা প্ৰবদ্ধি ন পণ্ডিতাঃ। একম্যান্থিতঃ সম্যুক্তহোকিলতে ফলমু॥॥॥।

জন্ম। — বলাঃ (এব) সাংখ্যেলগে পৃথগ্বদ্ভি ন প্ভিডাঃ। একমিপ উভয়োরাস্তিঃ সমাক্ ফলং নিক্তে । ৮।

মূলাজবাদ।— যাহার। অনভিজ্ঞ, তাহারাই সাংব্য ও যোগকে পূপক্ বিলিয়া থাকে, কিন্তু পণ্ডিতগণ বলেন না; এই সাংব্য ও যোগের মধ্যে যে কোন একটীরও অনুষ্ঠান কংবিলে সম্গ্রিক লাভ করিতে পারা যায়। ॥।।

ভাষ্য। — সংনাগিক এযোগয়োভিয়পুরুবান্ত কেরের। কলেহপি বিরোধো

মুক্তোনভূভয়োনি ইপ্রের্মক বন্ধনবৈ হিপ্রাপ্ত কন্দ্রতা । সাংখ্যমে গাবিতি সাংখ্যবোগৌ পূথগ্ বিক্রমকলো বালাঃ প্রবদন্তি ন পণ্ডিহার। পণ্ডিহাস্ত জ্ঞানিন

একং ফলম্বিক্রমিজ্জি। কপং একমপি সাংখ্যবোগতাঃ সম্যুগাস্থিতঃ

সমাগন্তি হবান্ ইভ্যাপ্ত। উভযোবিক্রতে ফলম্ভয়োস্তানের ছি নিংশ্রেম্বাসং

কলমতোন ফলে বিরোধোহিত। নজ সংন্যাগক আযোগনকেন প্রস্তান্ত সাংখ্যবোগশকরোঃ ফলৈকজং কথমিছাপ্রেক্তং ব্রীভি
বির্বেশ্যের যদাপ্যর্জুনেন

সংন্যাসং কর্মবোগঞ্জ কেবলন্ডিপ্রোভা প্রারঃ ক্রেভ্যান্তার বদপরিভ্যাগেন

স্থাভিপ্রেতং চ বিশেষং সংযোজ্য শক্ষান্তবব চাহ্যা প্রতিব্রনং দলে সাংখ্যবোগাবিতি। ভাবের সংন্যাসক মুবোগে জন্মত্বান সমবুর্জিয়ানি সংনুক্তী

সাংখ্যবোগশকরাতো ইতি ভগবতোম হমিতি না প্রস্কুত প্রিক্রান ৪ ।

ভাষাত্রিবাদ।—সংন্যাস ও কথাবোর এই তুইটা এককালে একই পুরুষের অন্তর্গের ইইতে পারে না, এই কারণ এই তুইটা বে ন পরম্পর বিক্রম, এই ক্রমণ এই তুইটা উপায়ের কলও পরস্পর বিক্রম হওয়া উচিত, এই তুইটা উপায়ের কলও পরস্পর বিক্রম হওয়া উচিত, এই তুইটা উপায়ের কলও পরস্পর বিক্রম হওয়া উচিত, এই তুইটা উপায়ের কল যে একই নোক্ষ হইবে, ইহা কর্মণ সন্তর্গের নাহে, এই প্রকার শক্ষা উপায়ত হইলো, তাহার নিশাকরণ করিবার জ্ঞা এই বলা যাইতেছে যে, সাংখ্যা ও যোগ পূথক, যোগাবিতি। অন্তিজ্ঞ ব্যক্তিগণই বলিয়া থাকে যে, সাংখ্যা ও যোগ পূথক, আর্থাই ইহালের কল পরস্পর বিক্রম, কিন্তু পণ্ডিভগণ এ প্রশার বলেন না, তাহারা এই উভর উপায় দ্বারা একই ফলকে প্রাপ্ত হইতে ইছো করেন। কেন (এমন হর তাহাই বলা মাইভেছে ম) সাংখ্যাও যোগা এই উভয়ের মধ্যো ক্যাক্ প্রকারে একটাও অস্টান করিলে, উভরের যাহা ক্যাক ভাছাই বাজ করিতে পারা যায়। সাংখ্যাও যোগা এই উভয়েরই ক্যা নাক্ষ একরপ। স্বতর্গাং এই উপায়্রমন্তর্গাক করিবে কারণার বিরোধ নাই। এইয়েল এই ১০ই মায়, ১০০৭। ই

থাকার আশ্রা ইইতে পরে যে, সংনাদ ছ কর্মবাগ শব্দের ধারা সাংখ্য ও খোগের প্রভাব করিয়া এই ছইটীর ফলের একতা একণে কেন অপ্রকৃত-ভাবে প্রতিপাদন করিতেছেন ? ইহার উত্তর এই ইইতেছে যে, এই প্রকার দোষ ইইবার সন্তাবনা নাই, কারণ যদাপি অর্জ্বন কেবল সংনাদ ও কর্মযোগের অভিপ্রায় করিয়া প্রশ্ন করিয়াছিলেন, ভগবান্ কিন্তু তাই। পরিত্যাগ না করিয়া তাহাতে নিজের অভিপ্রেত পদাথ বিশেষের সংযোজন প্রক শকান্তরের ধারা প্রতিপাদন করিয়া সাংগ্যালাবিত্যাদি বচনের ধারা প্রতিবচন দিয়াছেন। সেই সংস্থাস ও কন্মযোগ, জ্ঞান এবং জ্ঞানের উপার সমব্দ্রাদির সহিত মুক্ত ইইলে সাংখ্য ও যোগ শক্ষের বাচ্য ইইয়া থাকে ইহাই ভগবানের মত, মৃতরং এই স্থলে কোন প্রকার অপ্রাস্থিক বলা হয় নাই॥৪॥

> যং সাংখ্যাঃ আধাপ্যতে স্থানং ত:প্যাগৈবলি গমাতে। একং সাংখ্যাং চ যোগঞ্জ যঃ পশুতি সু পশুতি॥ ॥॥

জারা!— সাংবিষ্ণং স্থানং প্রাণাতে, তং বোলৈরণি গ্যাতে, সাংখাং যোগঞ্ একং যঃ শশুভি সু পশুভি ॥ ৫॥

মুলানুবাদ : — জ্ঞাননিষ্ঠ সংস্থাসীগণও ষে স্থান প্রাপ্ত হন, ফণাভিসন্ধান-বর্জিত কর্ম্যোগীগণও সেই স্থান প্রাপ্ত হইয়া পাকেন। সাংখ্য ও যোগ এই ছুইটা উপায়কে যে ব্যক্তি এক বলিয়া জানে, সেই যথার্থ বস্তু দর্শন করিয়া থাকে॥ ৫॥

ভাষা। এক ছাপি সমাগন্তীনাং কগন্ত থাং ফলং বিন্ত ইত্।চাতে বনিতি। যং সাংবৈগজনিনিছৈঃ সংখাদিভিঃ প্রাপাতে স্থানং মোক্ষাগাং, তল্যোগৈবপি জান প্রাপ্তাপায়বেন ঈশ্বরে সমর্গা কর্মাণি আল্লনঃ ফলমনভিদলার অন্তভিত্তি যে তে গোগিনঃ, তৈরপি প্রমাণজ্ঞানসংখ্যাপ্তিং বাবের গমতে ইতভিপ্রায়ঃ, জত একং সাংখাং গোগঞ্জ যং পণ্ডতি ফরেন ক্ষাংস সমাক্ শ্রুতি ইত্যুপঃ॥॥ ॥

ভাষাকুবাদ দেশ কটীরই সমাক্ প্রকারে অনুষ্ঠান করিলে, উভয়েরই ফল লাভ করে, ভাষা বলা খাইতেছে, যে যদিত্যাদি। সাংখ্য (অর্থাং) জ্ঞাননিষ্ঠ সংখ্যাদীগণ, যে মেক্ষ নামক স্থান প্রাপ্ত কইয়া থাকেন, ভাষা খোগের ঘারাও লব্ধ হয়। জ্ঞানপ্রাপ্তির উপায়, এই কারণ ঈশ্বরে কর্মের ক্ষর্মান করিয়া প্রথং নিজের ফলাভিস্কান না করিয়া, যাহারা কর্মাঞ্ঠান ভাগানি

করে, ভাহারাই যোগী, সেই যে গীগণ এই যোগের দারা পরমার্ধজ্ঞান ও সংখ্যাস লাভ করিয়া ক্রমে মোক্ষণ লাভ করিয়া থাকে। ইংগই অভিপ্রায়। এই কারণেই (বলা হইয়াছে বে,) সাংখ্য ও যোগ এই ছুইটাকে যে একই বিশিয়া জানে অর্থাং এই ছুইটীর একই ফ্ল, এই প্রকার ফ্লানে, সেই সমাক্ গুলবান্ হয়। ইংগই অর্থা ৫॥

সংক্রাসস্ত মহাবাহে। ত্রথমাপ্ত মুখোগত:। যোগমুক্তোমুনিপ্রস্থান চিরেণাদিগছাতি॥ ৬ ॥

আষয় । -- হৈ মহাবাহো, সংখ্যাসঃ অযোগতঃ (যোগং বিনা) তু (কেবলং) হংখনপ্তাঃ (ভবতি), যোগবুকো মুনিঃ ন চিরেণ (পরং। ব্রহ্ম অধিগচ্ছতি॥ ৬॥ মুশাল্বাদ। — হে মহাবাহো, যোগবাতিরেকে সংখ্যাসপ্রেম ধেবল হংখ-লাভের হেতু হইয়। থাকে। যোগবুকমুনি শীন্তই পরব্রেজের অরপে নিশ্চয় করিতে সমর্থ হয়॥ ৬॥

ভাষা।—এবং তহি যোগাং সংখ্যাস এব বিশিষ্যতে, কথং ভহি ইদম্কং
তরোস্ত কর্ম্মণ্ডাসাং কর্মণোগো বিশিষ্যতে ইতি। শৃণু তত্ত্বারণং; তথা
পৃষ্টং কেওলং কন্মনংখ্যাসং কর্মঘোগঞাভিপ্রেড্য তয়োব্যাতরঃ কঃ শ্রোন্
দেলুরুপং প্রতিবচনং মন্যোক্তং কর্মসংখ্যাসাৎ কন্মঘোগো বিশিষ্যত ইতি
ভানমনপেক্ষ্য। জ্ঞানাশেক্ষ্য সংখ্যাসঃ সাংখ্যমিতি মধ্য অভিপ্রেডঃ। পরমার্থ যোগণ্ড স্ এব। যন্ত কর্ম্মোগো বৈদিকঃ স্ তাদ্ধ্যাৎ যোগঃ সংখ্যাস
ইতি চোপচ্যাতে কথং তাদ্ধ্যমিত্যাচাতে ॥ ৬॥

ভাষাম্বাদ।— এই প্রকারই যদি হয় তাহা হইলে যোগ হইতে সংস্থানই ত উংকৃত্ত হইয়। উঠিল। কেন তবে বলা হয়য়াছে য়ে, "দেই উভয়ের মধ্যে কর্মনংস্থান হইতে কর্ময়োগই উংকৃত্ত ?" কেন এই প্রকার বলা হইয়াছে, তাহার কারেণ শুন। তুমি কেবল (অর্থাং) জ্ঞানরহিত কর্মনংস্থান এবং কর্ময়োগ এই ছইটীকে মনে করিয়া, তাহাদের মধ্যে কোন্টী উৎকৃত্ত তাহাই জিজ্ঞানা করিয়াছ, তাহারই অন্তর্মপ প্রতিবচনও আমি বলিয়াছি দে, কর্ময়ংস্থান হইতে কর্ময়োগ উংকৃত্ত। জ্ঞানকে অপেকা না করিয়াই, আমি সংস্থান হইতে কর্ময়োগের উৎকৃত্ত বর্ণন করিয়াছ। জ্ঞানের উদয় হইলে যে মংস্থান হয়, তাহাই সাংখ্যা, ইহাই আমার অভিপ্রেত। নেই সংস্থান-কেই পরমার্থ-বোগ ক্ত্রা ষায়। যে কর্ময়োগ বেদবিহিত, তাহাও সেই ১৫ই মান, ১৩০৭ ব

পরমার্থ-কর্মধোগ-প্রাপ্তির উপায়, এই জন্তই গাহাকেও কর্মধোগ ও সংস্থাস-শব্দের দ্বারা লক্ষণাবৃত্তির মাহাযো প্রতিপ দন করা গিরছে। কেন কর্মধোগ সংস্থাসপ্রাপ্তির কারণ, তাহা বলা ঘাইতেছে॥৬॥

ভাষা ৷— সংস্থাসস্ত পারমাথিকো তুঃখমাপ্রুম্যে গতো যেংগেন বিনা, বেংগমুক্তা বৈদিকেন কর্মবোগেন ঈগঃসমাপিত হপে কলনিরপেকেণ যুকো মুনিমাননাদীখরস্থরপক্ত মুনিত্র হ্লপংমার্থজানলাগণ হাও প্রকৃতঃ সংস্থানো ব্রক্ষোচাতে, "ক্যাস ইতি ব্রহ্মা", "ব্রহ্মাইপর" ইতি ক্রান্তেঃ ব্রহ্মপরমার্থ-সংস্থাসং পর্মাত্মজ্ঞাননিষ্ঠালকণং নচিরেণ ক্রিপ্রমার্ধিগছুতি প্রাপ্রোতি, ক্রেয়াক্তং কর্মায়েগের বিশিষ্ত ইতি ॥ ৬॥

ভাষাত্রাদ।—যোগ না হইলে পাংমাথিক সংস্থাস কেবল তুঃখপ্রাপ্তিরই কারণ ইইরা থাকে। যোগমুক্ত (অথাং) ফলাকাজ্ঞানজিজত, ঈশার-সমর্পিত, বেদবিহিত কল্মান্ত্রান রূপ যোগমাহ র আছে, সেই যোগমুক্ত তবং মুনি অর্থাং ঈশারর মননকর্তা যে বাজি, সে অভিনাত্র পরব্রহাকে প্রাপ্ত হইরাথিকে। আল্লেজানেরই হরপ সংস্থাস, এই কারণে এই ছানে প্রবন্ধনিকর দারে সংস্থাসই প্রতিপাদিত হইতেছে। আতেতেও উক্ত হইয়াছে যে, ছাস (অর্থাং) সংস্থাসই ব্রহ্মা এবং ব্রহ্মাই প্র (শক্ষের প্রতিপাল্য), এই কারণেই ব্রিয়াছি যে কর্মাযোগই কি নরহিত সংস্থাস হইতে) উংক্র । ৬ ॥

যোগবুকোবিভ্রমায়া বিজিতায়া জিতেন্দ্রিঃ। দর্শবৃত্যক চুলায়া কুদলপি ন বিপাতে॥ ৭॥

আৰা ।— (বঃ) যেগের জঃ িশুদারা বিদি গারা জিতে আরিঃ সকাভূতা-আন্তেলারা (সঃ) কুক্রিশি ন লিপ্যতে॥ ৭॥

মুশারুবাদ।—বে বাজি বোগনুজ, বিভদ্ধারা, বিজিভালা, ভিত্তিজার ও স্কারুভালা, সে কর্মের অঞ্চান করিয়াও শিপু হয় না॥৭॥

ভাষা। — যদা পুন: সন্গাদশন প্রাপাগাধেন বাগেন বুকো যোগবুকো বিভন্নায়া বিভন্ন কো বিজিলা লা বিজিতদেহো জিতে জিলা দক্ষিত সক্তায়ভূভারা সক্ষেধাং বন্ধাদীনাং ভ্রপ্যান্তানাং ভূলানামান্ত্র আন্না সমাক্ষী
ইত্যেশ:। স তেবৈবং বর্তনানো লোকসংগ্রাম কর্ম কুর্মনপিন লিপ্তে ন
কর্মতির্মাত ইত্যেশঃ । ৭॥

ভাষ্যাস্থাদ।—বেকালে এই (সাধক) স্মাগ্দর্শন প্রাপ্তির উপরি ৬২ উদ্বোধন। তিয়—২য় সংখ্যা; পুর্ম্বোক্ত যোগের অকুষ্ঠাতা (ইলাই যোগসুক্ত শদের অর্থ), (যে বাকি-) বিশুদ্ধায়া (অর্থাং) বিশুদ্ধসত্ব (যে ব ক্রি) বিজি গ্রা (অর্থাং) বশী কৃতদেহ এবং জিতে ক্রিয়, (যে বাকি) সক্তায়ভূতাত্মা (অথাং) এদ ছটতে স্তম্ব পর্যান্ত সকল ভূতের আমি.ই নাহার আহা হট্যাছে, অর্থাৎ <mark>যে</mark> বাক্তি সমাগ্ জ্ঞানবান, সেই বাক্তি এইক্প হ্ইয়াও কেবল লোকসং গ্ৰহের জেও কর্মা করিলেও লিপু হয় না, সংগাঁহ করা ছোরা বন েয় না।।৭॥

> रेमव किकिए करवांगीडि युट्छ। मर्क्का खड़िनर । প্তান শুগ্ৰ স্পুণ্ন জি ঘ্লশুন গছেন্ অপন্ খ্সন্॥ ৮॥ প্রলপন বিস্কেন গুজুন উল্লিখন নিনিধ্রপি। ই ক্রিয়াণী ক্রিয়ার্থেয় বর্তন্ত ইতি ধার্যন ॥ ৯॥

অহয়।—তত্ত্বিং যুক্তঃ পশ্চন শুগ্র জিহন অধান অপন খগন প্রালপন উল্লিখন নিমিধন অপি ইল্পিবাণি ইল্পিথাবুৰ্ততে ইতি ধাৰ্যন নৈৰ কিঞ্ছি করে।মি ইতি মহোত॥ ৮।৯॥

মূলাকুবাদ।—দর্শন, প্রবণ, স্পর্শ, দ্রাণ, ভোজন, গমন, স্বপ্ন, সাস, প্রলাপ, বিদর্গ, গ্রহণ, উদ্মেষ ও নিমেষ প্রভৃতি কান্য করিয়াও ভবজানী যুক্তব্যক্তি বিবেচনা করিয়া পাকে যে, ইন্দ্রিয় সকল (স্বভাবের বলে) ইন্দ্রিয়ার্থে প্রবৃত্ত হইতেছে, (আমার ইহাতে কোন বিকার নাই), স্থভরাং ইহাই ভাবিবে থে, আমি কিছুই করিতেছি না॥ ৮ ৯ ॥

ভাষ্য ৷ – ন চাদে পরমার্থতঃ করোতি, অতঃ নৈব কিঞ্চিং করোমীতি যুক্তঃ সমাধিতঃ সন মজেত চিত্তরেং। তব্বিদ্ আগ্রনো যাণাস্থাং তবং বেভি ইতি ভত্তবিং প্রমার্থনশী ইত্যর্থঃ। কলা কথং বা <mark>তত্ত্বমব্ধার্যন্ মস্তেত</mark> ই গুচাতে, মত্যেতেতি পু:র্বণ সম্বন্ধ:। যগৈবং তত্ত্বিদঃ সর্ব্বকাধ্যকরণ-চেষ্টাস্থ কর্মস্থ অক্টর্মার পশুতঃ সম্যুগ দশিনস্থ স্থাকর্মণ্যাস এবাধিকার: কর্মণোহভাবদর্শনাং। নহি মুগতৃঞারাং উদক্রমাপানায় প্রবৃত্ত উদকা-ভাৰজানেহপি ভবৈৰ পানপ্ৰয়োজনায় প্ৰবৰ্ত্তভো চাঠা

ভাষ্যামুংদি।--এই তত্ত্ত ব্যক্তি প্রমার্থতঃ কোন কার্যাই করে না, এই ■■ তথ্বিং (ভাগাং) প্রমার্থণশী স্মাহিতচেতা হুইয়া চিষ্ঠা করিবে ধ্ব, আমি কিছুই করি না, আন্থার ধাথান্তা বে ব্যক্তি জানে, ভাহাকেই তত্ত্ব-বিং ৰুলা যায়। কখন, কোন দমদে, আন্থায় তত্ত্ব অবধারণ পুর্বক এইভাবে ३६६ माण, ३७०१।] উৰোধন।

বিচার করিলে, তাহাই বলা যাইতেছে যে; এই শ্লোবেও মেন্ডেত এই ক্রিয়ার স্থিত সম্প্র আছে। যে ব্যক্তি এই প্রকার তত্ত্তিদ্ (অর্থাং) সকল প্রকার কার্যা ও করণের চেষ্টাতে য বাক্তি অক্যা ব্যক্তর স্থার স্থান করিয়া থাকে, দেই সম্যা দেশীর সক্ষক্ষ্মিন্যানেই অধিকার আছে, কারণ ভাহার কর্মের অন্তাব দর্শন হইয়াছে। যে ব্যক্তি ম্গত্তার জন্ত্রান্তিতে প্রত্ত হইয়াছে, তাহাব পবে ভাহাতে জনের অ্তাব জ্ঞান হইলে, তাহাতেই আবার তাহার পানাদি প্রয়োজনের জন্য প্রত্তি কথনও সন্তাপর নহে॥ ৮ ১॥

ব্ৰহ্মণ্যধায় কৰ্মাণি সঙ্গং ভাত্বা করে,তি যং। লিপাতে নুসু পাপেন প্রাণ্ডমিবাস্ক্রসা॥ ১০॥

জাষ্য ।—সং এন্ধানি সাধান সঙ্গ ত জ্বা কৰ্মাণি করোতি, সং জান্তসা পদ্মপত্র-মিৰ পাপেন ন ৰিপাতে ৪ ১০ ॥

মূলাকুবাদ।—যে ব্যক্তি ঈশবে নিক্ষেপ করিয়া সঙ্গতাগপূর্বক কর্মের অনুষ্ঠান করে, সে পাপে লিপ্ত হয় না, যেমন পশ্পত **জনে লিপ্ত** হয় না। ১০॥

ভাষা।— যস্ত প্নরতত্ত্বিং প্রবৃত্তক কর্মাণে বৃদ্ধাণি কাথার কাথার নিক্ষিপ্য, তদর্থং করোমীতি ভূতাইব স্থামার্থং সর্বাণি কর্মাণি মোক্ষেপি কলে সঙ্গং ত্যক্ত্বা কা তি যং সর্বান্ধি, লিপ্যতে ন স পাপৈন সম্বধ্যতে পদ্মপ্রমিব ক্ষম্বনা উদক্ষে। ১০।।

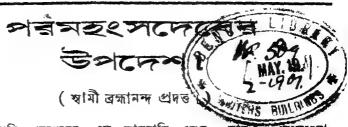
ভাষ্যামুবার।—বে ব্যক্তি তত্ত্তান লাভ করিতে পারে নাই, অথচ কর্মা বোগে প্রবৃত্ত, সে ব্যক্তি ব্রহ্মে (অর্থাং) ঈশবে নিকেপ করিয়া, মোকরপ কলেতেও সৃদ্ধ পরিত্যাগ পূর্বকি, সকল কর্মের অনুষ্ঠান করে, (ও) সে পাপের ধারা লিপ্ত হয় না, যেমন প্রথাত্ত জলের হারা লিপ্ত হয় না॥ ১০॥

> কারেন মনসা বৃদ্ধা কেবলৈরিন্দ্রিরেপি। যোগিনঃ কর্ম্ম কুর্বস্তি সঙ্গং ত্যক্তায়গুদ্ধয়ে ॥ ১১॥

অবর।—বোগিনঃ সকং ত্যক্র আঝগুজরে কারেন মনস। বৃদ্ধা। কেবলৈ-রিজিবৈরপি কর্ম কুর্মস্তি॥ >>॥

মূলাসুবাদ।—বোগিগণ আগস্তি পরিহার করিয়া চিত্তদ্ধির জন্ত, দেহ, মন,
বৃদ্ধি ও কেবণ ইপ্রিম স্কণের ঘারা কর্ম্মের অনুষ্ঠান করিয়া থাকে ॥ ১১॥

উদ্বেশ্য । (৩র—২য় সংখ্যা ;



- ১। আমি ছেলেদের এত ভালবাসি কেন জানি ছিলেবেলা তাদের মন দোল আনা নিজের কাছে থাকে, জ্রমে ভাগ হয়ে পড়ে। বে হলে আট আনা স্ত্রীর উপর যায়, ছেলে হলে আবার চার আনা তাদের প্রতি যায়, বাকী চার আনা মা, বাপ, মান সম্রম, বেশভ্যা ইত্যাদিতে চলে যায়; এই জ্বা ছেলেবেলার যারা ঈশ্বর লাভের চেটা করে, তারা সহজে তাঁকে লাভ করতে পারবে। বুড়োদের হওয়া বড় কঠিন।
- ২। যেমন টীয়া পাথার গলায় কাঁটী উঠলে আর পড়ে না, ছানা বেলায় শেখালে শীল্পড়ে, তেমনি বুড়ো হলে সহজে ঈর্বরে মন যায় না, ছেলে বেলায় তাদের মন অল্লেডেই স্থির হয়।
- ৩। যেমন কচি বাঁশ অভি সহজে নোয়ান যার, পাকা বাঁশ নোয়াতে গেলে ভেকে যায়, তেমনি ছেলেদের মন সহজে ঈশবে নিয়ে যাওয়া যায়; কিন্তু বুড়োদের মন ঈশবের দিকে টানতে গেলে ছেড়ে পালায়।
- ৪। এক সের ছধে এক ছটাক জল থাক্লে, সহজে অল জাল দিরে
 ক্ষীর করা যায়, কিন্তু একদের ছধে তিন পোয়া জল থাকলে সহজে ক্ষীর
 হয় না, অনেক কটে খড় পুড়িয়ে জাল দিতে হয়, তবে হয়; সেই রকম
 বালকের মনে বিষয় বাসনা খুব কম, এইজন্ত একটুতে ঈশবের দিকে যায়,
 কিন্তু বুড়োলের মনে বিষয় বাসনা গজ গজ করে, তাইতে তাদের মন সহজে
 তাঁর দিকে যায় না।
- ে। মার্বের মন বেন সরসের পুঁট্লী। সরসের পুঁট্লী একবার ছড়িয়ে গেলে যেমন কুড়ান ভার হরে ওঠে, তেমনি মাহুষের মন একবার সংসারে ছড়িরে গেলে, তথন স্থির করা বড় কঠিন হয়ে পড়ে। বালকের মন ছড়ায় নি, অলেতেই স্থির হয়, কিন্ত বুড়োদের বোল আনা মন সংসারে ছড়িয়ে রয়েছে, সংসার থেকে মন তুলে ঈশরে স্থির হওয়া বড় শক্ত।

প্রতি উপহার।

(এীযুক্ত গিরীশ চক্র ঘোষ।)

ক্রুম্পদে বিপদে মতি অটল যাহার,—
ধনমদে নহে মত্ত, সত্য তার মনুষ্তু,
তুষ্ট-কৃষ্ট ভাষে মনে, না জ্ঞে বিকার,—
কার্যা হেতু কার্যো রত, ষেই জন মহাত্রত,
কার্যোর বাসনা মাত্র কার্যো অধিকার—
ভুবন-তিলক,—জ্ম সার্থক তাহার!

ভাসমান এ সংদার রোদন-ধারায়,

যেই জন স্বার্থত্যাগী, পর তৃঃথে হয়ে ভাগী,

জনাথ বিধবা অফ যতনে ম্ছায়,—

ফুর্জন শাসনে বল, স্কুনের শান্তি স্থল,
বৃত্কু, তাপিত, ভীত—আঞ্রিত যথায় ?

পর-ভার-বাহী ভার তুলনা কোথায় ?

বাল্য প্রেম, বাল্যবন্ধ, বাল্য-সংস্কার—
কেই জন উচ্চাসনে, বাল্যদিন রাখি মনে,
বাল্য-বন্ধ মনে করে বাল্যক ব্যাভার,
সেইরূপ একাস্তর, নাহি কভু ভাবাস্তর,
নিরন্তর সরল নির্মান প্রেম ধার,—
প্রেম প্রেশ সুবাসিত ভ্রম-আগার!

স্থীর-স্জন-ব্রস্থ-নিয়ত-বেটিড,
বহি ভক রাজ্যভার, সদসদ্ স্থানিচার,
প্রজার মঙ্গল রত গতত বে চিড,—
প্রিয় পুত্র জননীর, সদেশ-বংসল ধীর,
জয় জয় রাজ্যেশর মহিমা-মণ্ডিত।
প্রীতি-পুল্কিড নট করে স্কভি-গীত ৸

পরিব্রাজক।

श्वामी विद्यकानमा ।]

[১৬ পৃষ্ঠার পর।

আজ ২৩শে অক্টোবর; কাল সন্ধার সময় পারিস হতে বিদায়। এ বংশর এ পারিদ সভ্য জগতের এক কেন্দ্র, এ বংশর মহাপ্রদর্শনী। নানা দিক দেশ সমাগত সজ্জন সঙ্গম। দেশ দেশাস্তরের মনীঘিগণ নি**জ নিজ** প্রতিভা প্রকাশে খাদেশের মহিমা বিস্তার কর্ছেন, আজ্ এ পারিসে। এ মহা কেন্দ্রের ভেরী-ধানি আজ যার নাম উচ্চারণ কর্বে, দে নাদ তরক সঙ্গে সঙ্গে তাঁর অংদেশকে দর্বজন সমকে গৌরবাধিত কর্বে। আর আমার জনাভূমি—এ জ্বান, ফরাণী, ইংরাজ, ইতালী প্রভৃতি বুধম ওলী-মণ্ডিত মহারাজ-ধানীতে ভূমি কোথায়, বঙ্গভূমি ? কে তোমার নাম নের ? কে ভোমার অন্তিত্ব বোষণা কৰে? সে বছ গৌৰবৰ্ণ প্ৰাতিভ মণ্ডলীর মধ্য হতে এক যুবা যশস্বা বীর বঙ্গভূমির, আমাদের মাভুভূমির, নাম ঘোষণা কর্লেন,—দে বীর জগংপ্রসিদ্ধ বৈজ্ঞানিক ডাক্তার জে, সি, বোস। একা যুবা বাঙ্গালী . 'মুগ্ধ কর্লেন, সে বিহ্যংস্ঞার মাভূভূমির মৃতপ্রায় শরীরে নবজীবন তরক স্ঞার কর্লে। সম্প্র বৈচাতিক মণ্ডলীর শীর্ষস্থানীয় আজে জলগীশ বস্থ —ভারতবাদী, বঙ্গবাদী ৷ ধ্রু বীর ৷ বস্তুজ 🗈 তাঁহার সতী, সাধ্বী, সর্ব্বিগ্র-সম্পল্লা গেহিনী যে দেশে যান, সেথা এই ভারতের মুখ উচ্ছল করেন—বাদাণীর গৌরব বর্জন করেন। ধরা দম্পতী!

আর মিঃ লেগেট প্রভূত অর্থবারে তাঁর পারিস্থ প্রাসাদে ভোজনাদি-বাপদেশে নিত্য নানা যশসী যশস্বিনী নর নারীর স্মাগম সিদ্ধ করেছেন— তারও আজ শেষ।

কবি, দার্শনিক, বৈজ্ঞানিক, নৈতিক, সামাজিক, গায়ক, গায়িকা, শিক্ষক, শিক্ষিয়ী, চিত্রকর, শিল্পী, ভাস্কর, বাদক—প্রভৃতি নানা জাতের গুণীগুণ-সমাবেশ, মিটর লেগেটের আতিথ্য সমাদর আকর্ষণে, তাঁর গৃহে। সে পর্বতে-নির্মর কথাচ্চটা, অগ্নিকুলিক্ষবং চতুর্দিক্সমূথিত ভাবনিকাশ, মোহিনী-সঙ্গীত, মনীবি-মনঃসংঘর্ষ-সমূথিত-চিন্তামন্ত্রপ্রবাহ, সকলকে দেশ কাল ভূলিরে মৃদ্ধ করে রাখ্ত,—তারও শেষ।

সকল জিনিসেরই অস্ত আছে। আর আজ আর একবার, পৃঞ্জীরুত-ভাবরূপ হির পৌলামিনা, এই অপূর্দ্ধ ভূম্বর্গ-স্মাবেশ পারিস্ এক্স্ছিবিজ্ঞন্, দেখে এলুম।

আজ ছ তিন দিন ধরে পারিসে ক্রমাগত বৃষ্টি হচ্ছে। ফ্রান্সের প্রতি
সদা বদর স্থ্যদেব আজ কদিন বিরূপ। নানাদিক্দেশাগত শিল্প শিল্পী, বিত্যা
ও বিহানের পশ্চাতে গুঢ়ভাবে প্রবাহিত ইন্তির বিলাসের ক্রোঁত দেখে, ত্বায়
স্থ্যের মুখ মেঘকলুষিত হয়েছে, অথবা কান্ঠ, বস্ত্র ও নানা রাগ রঞ্জিত এ
মায়া অমরাবভীর, আভ বিনাশ ভেবে, তিনি ছঃথে মেঘাবগুঠনে, মুখ
ঢাক্লেন।

আমরাও পালিরে বারি, একজিবিসন ভাঙ্গা এক বৃহৎ ব্যাপার। এই ভূম্বর্গ, নন্দনোপন পারিসের রাস্তা, এক হাটু কাদা চুণ বালিতে পূর্ণ হবেন। ছ একটা প্রধান ছাড়া, এরিবিজনের স্নস্ত বাড়ি ঘর দোরই, নাঠ, কুঠরো, ছেঁছা জ্যাভা, আর চুণকামের থেলা বইত নয়—যেমন সমস্ত সংসার। তা যথন ভাঙ্গতে থাকে, সে চুণের ওঁড়ো উড়ে দম মাট্কে দের,—ভাতা চোতার, বালি প্রভৃতিতে পথ ঘাট কদর্যা করে ভোলে, তার উপর বৃষ্টি হলেই সেবিরাট্ বাণ্ড।

হ ৪শে অক্টোবর সন্ধার সময় ট্রেন পারিস ছাড়লে, অধাকার রাতি; দেখাবার কিছুই নাই; আনি আর মতিয় বোয়া এক কানরায়। শীঘ্র শীঘ্র শয়ন করল্ম। নিদ্রা হতে উঠে দেখি,—আমবা ফরাসী সীমানা ছাড়িয়ে, জর্মান্ সামাজ্যে উপস্থিত। জন্মানি,পূর্দের্গ বিশেষ করে দেখা আছে, ভবে ফ্রান্সের পর জর্মানি—বড়ই প্রতিহন্দী ভাব। যাতোকতোহস্তশিগরং পতিরোষধীনাং—এক দিকে ভ্রন্স্পানী ক্রান্স প্রতিহিংসানলে পুড়ে পুড়ে আস্তে আস্তে থাক্ হয়ে যাছেছে। আর এক দিকে বে জ্রিকাত ন্তন, মহাবল জন্মানি মহাবেগে উনয়্মাধরাতিমূবে চলেছে। কৃষ্ণবেশ, অগেক্ষাকৃত থর্মকায়, শিল্পপ্রাণ, বিলাস-বিয়েম, অতি হ্রমতা ফরামীর শিল্প বিস্তাস, আর এক দিকে হির্ণাকেশ, দীর্ঘাকার, দিঙ্গালির স্থা-হস্তাবলেপ। পারিসের পর পাশ্চান্তা জগতে আর নল্মী নাই; সা সেই পারিসের নকল, অস্ততঃ চেষ্টা। কিন্তু ফ্রামীতে সে শিল্প ক্রমার স্থা দেক্ষিণ; জর্মাণে, ইংরাজে, আমেরিকে, সে অনুকরণ স্থা। ফরাসীর বল বিস্তাস্থ বেন রূপপূর্ণ; জর্মাণীর রূপবিকাশ-চেষ্টাও বিতীষণ। ফরামী প্রতিভার, মুখ্যওল ক্রোধাক হলেও স্থান রূপনান প্রতিভার মধ্র

হাস্ত-বিমাওত আননও যেন ভয়কর। ফরাসীর সভাতা সায়ুমর, কপ্রের মত, কস্রীর মত, এক মৃহ্র্ডে উড়ে ঘর দোর ভরিয়ে দেয়; জর্মণে সভাতা পেশীময়, সীবার মত, পারার মত ভারি, ষেথানে পড়ে আছে, ত পড়েই আছে। জর্মানের মাংদপেশী ক্রমাগত, অশ্রান্তভাবে ঠুক্ ঠাক্ হাতুড়ি আজন মার্তে পারে। ফরাদীর নরম শরীর, মেয়ে মাহুষের মত; কিন্ত যথন কেন্দ্রীভূত হয়ে আঘাত করে, সে কামারের এক ঘা; ভার বেগ সহু করা বড়ই কঠিন।

জন্মান ফরাসীর নকলে বড় বড় বাড়ি অট্টালিকা বনাচ্ছেন,--বুহং বৃহং মুর্ত্তি, জ্ববারোহী, রগী, দে প্রামাদের শিখরে স্থাপন কর্ছেন। কিন্তু, জ্বানের দোতলা বাড়ি দেখ নেও, জিজাদা কর্তে ইচ্ছা হয়,—এ বাড়ি কি মানুষের বাদের জক্ত, না হাতি উটের "তবেলা" ? আরে ফরাসীর পাঁচেতলা, হাতি দোঁড়ো রাধ্বার বাজ়ি দেখে ভাম হয় যে, এ বাজিতে বুঝি পরীতে বাস করবে।

আমেরিকা জর্মান প্রবাহে অনুপ্রাণিত, লক্ষ লক্ষ জন্মান্ প্রত্যেক সহরে। ভাষা ইংরাজি হলে কি হয়,—আমেরিকা আত্তে অত্তে জর্মাণিত হয়ে যাচ্চে। জ্মাণির প্রবল বংশনিস্তার, জ্মান্ বড়ই ক্টসহিষ্ণু। আজ জ্মাণি ইউ-রোপের আদেশ দাতা; আর সকলের উপর, অন্যান্ত থাতের অনেক আগে, জর্মাণি, প্রভ্যেক নর নারীকে, রাজনতের ভয় পেখিয়ে, বিভা নিথিরেছে। আৰু সে বুক্ষের ফল ভোজন হচ্ছে। জ্বাণির সৈন্ত, প্রতিষ্ঠার সর্ক্রেষ্ঠ ; জর্মাণি প্রাণপণ করেছে, যুদ্ধ পোতেও সর্ব্ধশ্রেষ্ঠ হতে; জর্মাণির পণ্য-নির্মাণ ইংরাজকেও পরাভূত করেছে। ইংরাজের উপনিবেশেও জন্মাণ-পূণ্য, জ্বান-মহ্যা, ধীরে ধীরে একাধিপত্য লাভ কর্ছে; জর্মাণির সম্রাটের আলেখে, সর্ক-ভাতি, চীনক্ষেত্ৰে, অবনক মন্তকে, জ্মান্ সেনাপতির অধীনতা স্বীকার করছেন।

সারাদিন ট্রে জর্মাণির মধা দিয়ে চল্লো; বিকাল বেলা জর্মান্ আধি-পত্যের প্রাচীন কেন্দ্র, এখন পর-রাজ্য, অষ্ট্রয়ার সীমানার উপস্থিত। এ যুরে:পে বেড়াবার কতক গুলি হা**লা**মা আছে। প্রত্যে**ক দেশেতেই, কত**ক **গুলি** জিনিসের উপর, বেজায় তত্ত্ব; অথবা কোনও কোনও পণ্য সরকারের এক চেটে, যেমন ভাষাক। আবার ক্ষ ও তুর্কিতে, ভোষার রাজার ছাড় পত্র না থাক্লে, একেবারে প্রবেশ নিষেধ ; ছাড় পত্ত অর্থাৎ পাশ পে:ট একান্ত আব-খক। তা ছাড়া, কৰ এবং তুর্কিতে, তোমার বই পত্র কাগ্রন্ধ সৰ কেড়ে নেবে; ভারপর, তারা পড়ে ভনে, ষদি বোঝে যে তোমার কাছে ভূর্কি বা রুষের রাজত্বের বা ধর্মের বিপক্ষে কোনও বই কাগল নাই, তা'হলে তা তথন ফিরিয়ে দেবে। নতুবা দে দব বই পত্র জপ্ত করে নেবে। অহ্য অহ্য দেশে এ পোড়া তামাকের হালামা বড়ই হালামা। দিলুক, পঁটাটরা, গাঁটেরি, দব খুলে দেখাতে হবে, তামাক প্রভৃতি আছে কি না। আর কন্স্টান্টিনোপণ আস্তে গেলে, ছটো বড়,জর্মাণি আর অষ্ট্রিয়া, এবং অনেক গুলো কুদে দেশ মধ্য দিয়ে আস্তে হয়:—কুদেগুলো পূর্বে তুরজের প্রগণা ছিল,এখন স্বাধীন কৃশ্চান রাজার। একত্র হয়ে, মুসলমানের হাত থেকে, যতগুলো পেরেছে, কৃশ্চান-পূর্ণ প্রগণা ছিনিয়ে নিয়েছে। এ কুদে পিণড়ের কামড়, ও ডেওদের চেয়ে অনেক স্বধিক।

২৫এ অক্টোবর সন্ধার পর ট্রেণ অষ্ট্রিয়ার রাজধানী ভিষেনা নগরীতে পে ভুল। অষ্ট্রি। ও কৃষিরায় রাজবংশীয় নর নারীকে আর্কভুকে ও আর্কে-ডচেদ্বরে। এ ট্রেণে ছজন আর্কভুকে ভিয়েনায় নাববেন; তাঁরা না নাববে অপান্ত যাত্রীর হারে নাববার অধিকার নাই। আমর। অপেকা করে বইলুম। নানাপ্রকার জরিবুটার উদ্দিপরা জনকভক সৈনিক পুরুষ এবং পর-লাগান টুপি মাথায় জনকতক দৈল আক্ ডুকেদেৰ জল অপেকা কর্ছিল। তাৰের বাবা পরিবেটিত হয়ে আর্কডু। কর্ম নেমে গেলেন। আমরাও বাঁচলুম—ভাডাতাড়ি নেমে, সিদ্কপত্র পাশ্করাবার উত্তোগ কর্তে লাগলুম ৷ যাত্রী অতি অল ; **সিস্ক** পত্র দেখিয়ে ছাড়্করাতে বড় দেরি লাগ্লো না। **পু**র্বে হতে এক হোটেল ঠিকানা করা ছিল; সে ছোটেলের লোক গাড়ী নিয়ে অপেকা কর-ছিল। আমরাও, যথানভব সময়ে, চোটেলে উপস্থিত হলুম। দে রাতে আর দেখা ভনাকি হবে; পরদিন প্রাতঃকালে সুহর দেখ্তে বেকলুম। সমস্ত (हाटिट्रेंग्टे এतर हेडेट्राट्यंत्र हेर्ग्य अ अर्थानि छाड़ा थ्यास मकत (म्ट्रमहे कतामी हाल। हिङ्ग्पित मङ छुवात था श्रा। প্রাতঃকালে ছুপ্রছরের মধ্যে; সারংকালে ৮টার মধ্যে। প্রভ্যুদে অর্থাং ৮ ৯টার সমর একটু কাফি পান করা। চায়ের চাল, ইংশ ও ও কৃদিয়া ছাড়া, অভত বড়ই কম । দিনের ভোক্ষনের ফরাসী নাম—"দেজুনে", অর্থাং উপধাসভঙ্গ, ইংরাজী ত্রেক্ফান্ট। সারং ভোজনের নাম—"দিনে", ইং "ডিনার"। চা-পানের ধুন ক্ষিয়াতে অতাম্ভ-বেজার ঠাণ্ডা, আর চীন স্লিকট। চীনের যা খুব উভ্ন চা, তার অধিকাংশ যাত্র, ক্রবে। ক্রবের চা-পান ও চীনের অন্তরূপ, অর্থাং ছ্রা মিশান নেই। ছধ মেশালে চা বা কাফি বিষের ভায় অপকারক। আগল চা-পায়ী জাতি চীনে, জাপানি, কৰ, মধ্য-আসিয়া-বাসী, বিনা ছথো চা পান করে; ভখং

আবার তুর্ক প্রভৃতি আদিম কাফি-পায়া জাতি বিনা হানে কাফি পান করে। তবে ক্ষিয়ায় তার মধ্যে এক টুকুলা পাতি নেবু এবং এক ডেলা চিনি চায়ের মধ্যে ফেলে দেয়। গরীবের। এক ডেলা চিনি মৃথের মধ্যে রেগে, তার উপর দিয়ে চাপান করে এবং এক জ্ের পান শেব হলে, অার একজনকে সে চিনির ডেলা বার্করে দেয়। সে ব্যক্তিও সে ডেলা মুথের মধ্যে রেখে পূর্ববং চা পান করে।

ভিয়েনা সহর পারিদের নকল ছোট সহর। তবে জটি য়ানরা হচ্ছে জাভিতে জন্মান। অষ্ট্রির বাদ্দা এতকাল প্রায় সমস্ত জন্মাণীব বাদ্দা ছিলেন। বর্ত্তমান সময়ে, প্রথবাজ ভিলহেলেথের দূরদ্শিতায়, মন্ত্রীবর বিষ্মার্কের অপুর্ববৃদ্ধিকৌণলে, আর সেনাপতি ফন্মণ্টকির যুদ্ধপ্রভিভায়, প্রুষরাক্ত অষ্টি,রা ছাড়া সমস্ত জন্মাণীর একাধিপতি বাদ্দা। হতনী হতবীর্ঘ অষ্ট্রিয়া কোনও মতে পূর্বকালের নাম গৌরব বক্ষ। কব্ছেন। অষ্ট্রীয় রাজবংশ — ভাপ্স্বর্গ বংশ, ইয়ুরোপের স্কাপেক্ষা প্রাচীন ও অভিজাত রাজবংশ ায়ে জর্মান্ রাজ্ঞ-কুল ইয়্বোপের প্রায় দর্বদেশেই সিংহাদনে অধিষ্ঠিত, যে জর্মাণীর ছোট ছোট ক্রদ রাজা, ইংলও ও কৃষিয়াতেও, মহাবল সাম্রাজ্যশীর্বে সিংহাসন স্থাপন কবেছে, সেই জর্মাণীর বাদ্দা এতকাল ছিল এই অষ্ট্রার রাজনংশ। সে মান, দে গৌরনের ইচ্ছা, সম্পূর্ণ অষ্টি শার রলেছে,—নাই শক্তি। তুর্ককে ইয়্বোপের আতুর বৃদ্ধ পুরুষ বলে; অষ্ট্রিয়াকে, আতৃরা বৃদ্ধা স্থ্রী বলা উচিত। অষ্ট্রিয়া কাাথলিক সম্প্রদায় ভূক্ত; দেদিন পর্যান্ত অষ্ট্রিয়ার সাত্রাজ্ঞার নাম ছিল---"পবিত রোম সাম্রাজ্য"। বর্তমান জর্মাণী প্রটেষ্টার্ত প্রবল। স্বায়ীয় সম্রাট্ চিরকাল পোপের দক্ষিণ হস্ত, অনুগত শিষা, বোমক সম্প্রদায়ের নেতা। এথন ইউরোপে ক্যার্থলিক বাদ্সা কেবল এক অষ্ট্রীয় স্মটে; কাথলিক সজ্অের বড় মেয়ে ফ্রান্স এখন প্রজাতর; স্পেন, পোর্ত্তগাল অধংপাতিত; ইটালি পোণের সিংহাসন মাত্র স্থাপনের স্থান দিয়েছে; পোপের এখর্য্য, वाका ममछ क्लाफ् निर्वरह ; हेडालीव वाका, आंत्र द्वारमव लाल, मूच प्रथा-দেখি নাই, বিশেষ শত্রুতা। রোম, পোপের রাজধানী, এখন ইতালীর क्रांबर्धानी; পোপের প্রাচীন প্রাদাদ দখল করে, রাজা বাস করছেন; পোপের প্রাচীন ইতালী রাজ্য এখন পোপের ভ্যাটিকান (Vatican) প্রাসাদের চতু:-সীমানায় আবদ্ধ। কিন্তু পোপের ধর্মসহদ্ধে প্রাধান্ত এখনও অনেক—দে ক্ষ্মতার বিশেষ সহায় অষ্ট্রো। অষ্ট্রিয়ার বিক্তে, বহুকালব্যাপী, ও পোপ-সহায়

অষ্ট্রিয়ার দাদত্ত্বে বিক্দে নব্য ইতাশীর অভ্যুখান। অষ্ট্রিয়া কাজেই বিপক্ষ, हे जानी चूरेर स विशक्त । भावशान (थरक रेशन एउत कूपतामर्ग नवीन रेखानी, महादेमकारन, त्र्राज-रम मः श्रह रक्षकत हरना। तम छाका दकाशात ? ঋণজালে জড়িত হয়ে, ইতালী উংসন্ন ধাবার দশায় পড়েছে; আবার কোথা হতে উৎপাৎ—আফ্রিকার রাজ্য বিস্তার কর্তে গেলো। হাব্সি বাদসার कारह ८६८त, इन्डें इन्डिंग इट्यान इट्य, वटन शर्ड्स्ट्या अ निरंक अधिनया मश्च-যুদ্ধে হারিয়ে অষ্ট্রিয়াকে বহুদূর হঠিবে দিলে। অষ্ট্রিয়া ধীরে ধীরে মরে যাচেছ, আর ইতালী নব জীবনের অপব্যবহারে তদ্ধং জালবদ্ধ হয়েছে।

অষ্ট্রার রাজবংশের এখনও ইযুরোশের সকল রাজবংশের অপেক্ষা জ্ঞমর। তাঁরামতি প্রাতীন, অতিবড়বংশ। এ বংশের বে থা বড়দেথে শুনে হয়। ক্যাথলিক না হয়ে, সে বংশের সঙ্গে বে থা হয়ই না। এই বড় বংশের ভাঁওতায় পড়ে, মহাবীর নেপলঅঁর অধংপতন !! কোথা হতে তাঁর মাথায় ঢুক্লো, যে বড় রাজবংশের মেয়ে বে করে, পুত্র পৌত্রাধিক্রমে এক মহাবংশ স্থাপন করবেন। যে বীর, "আপনি কোন্বংশে অবতীর্ণু", এ প্রশের উত্তরে বলেছিলেন যে, "আমি কারুর বংশের সন্তান নই—আমি মহাবংশের স্থাপক", অর্থাং আমা হতে মহীমায়িত বংশ চল্বে. আমি কোনও পূর্ব্বপুরুষের নাম নিয়ে বড় হতে জ্যাইনি, সেই বীরের 🗷 বংশ-মর্যাদারণ অন্ধকৃপে পতন হলো।

রাজ্ঞীজোদেফিন্কে পরিত্যাগ, যুদ্ধে পরাজয় করে অষ্ট্রিয়ার বাদ্দার ক্সা গ্রহণ, মহা সমারোহে অখ্লীন রাজকন্তা মারি লুইদের সহিত বোনাপার্টের বিবাহ, পুত্রজনা, সপ্তজাত শিশুকে রোমরান্ধো অভিষিক্ত করণ, ন্যাপোলয় র পতন, খন্তরের শত্রুতা, লাইপজিদ্, ওয়াটারলু, সেণ্টহেলেনা, রাজী মেরি শুইসের সপ্ত্র পিতৃগ্হে বাস, সামাত্র গৈনিকের সহিত বোনাপার্ট-সামাজ্ঞীর বিবাহ, একমাত্র পুত্র রোমরাজের মাতামহ গৃহে মৃত্যু, এ দব ইভিছাদ-প্ৰসিদ্ধ কথা।

ফ্রান্স এখন অপেক্ষাক্তত ভ্রমণ অবস্থায় পড়ে প্রাচীন গৌরব স্থরণ কর্ছে ,—আজকাল স্থাপল্অ সংক্রান্ত পুস্তক অনেক। সাদ্বিভৃতি নাট্যকার গত নেপোলঅঁ দছৰে অনেক নাটক লিথ্ছেন; মাদাম্ বারন্হার্ড, রেজাঁ। প্রভৃতি **অভিনেত্রী, কফেন**াঁ প্রভৃতি অভিনেতাগণ, দে দ্ব পুস্তক অভিনয় করে, প্রতি রাত্রে থিয়ের্টর ভরিত্বে ফেল্ছে। সম্প্রতি "লেগ্ল"' — "গরুড় শাবক" — নামক এক পুত্তক অভিনয় করে, মাদাম্ বাবন্হার্ড পারিদ নগরীতে মহা আকর্ষণ উপস্থিত করেছেন।

গরুড়-শাবক হচ্ছে বোনাপার্টের একমাত্র পুত্র, মাতামছ গৃহে ভিয়েনার शामाल এक तकम नजतनको । अञ्जीव वाष्मात मन्त्रो, ठावका (महातिक, বালকের মনে পিতার গৌরবকাছিনী খাতে একেবারে না স্থান পার. সে বিষয়ে সদা সচেষ্ট। কিন্তু ছজন পাঁচেজন বোনাপাটোঁর পুরাতন দৈনিক নানা কৌশলে সামবৌর্ণ প্রাদাদে অজ্ঞাতভাবে বালচের ভূতাত্তে গৃহীত হলো: ভাদের ইচ্ছাকোন ও র কমে বালককে ফ্রান্সে হাজির করে এবং সমবেত-ইয়ুরোপীয়-রাজ্ঞগণ-পুনঃ ছাপিত বুরুবঁ বংশকে তাড়িয়ে দিয়ে বোনাপার্ট বংশ স্থাপন করা। শিশু-মহাবীর পুত্র; পিতার রণ-গোরব-কাহিনী শুনে, দে হুপ্ত তেজ অতি শীঘ্রই জেগে উঠলো। চক্রাপ্তকারীদের সঙ্গে বালক সামবোর্ণ প্রাসাদ হতে একদিন প্রায়ন কব্লে; কিন্তু মেটারনিকের তীক্ষ-বুদ্ধি পূর্বে হতেই টের পেযেছিল; সে যাত্রা বন্ধ করে দিলে। বোনাপার্ট-প্ত্রকে দামনোর্ণ প্রাদাদে ফিরিয়ে আন্লে; --বদ্ধপক গর্ড-শিও ভগ্রহদরে অতি অল্পনেই প্রাণ ত্যাগ করলে।

এ সামবোর্ণ প্রামাদ সাধারণ প্রামাদ; তাবতা ঘর দোর খুব সাজান বটে, কোনও ঘর থালি চীনের কাজ, কোনও ঘর খালি হিলু হাতের কাজ, কোনও ঘর অক্ত দেশ, এই প্রকার, এবং প্রামাদত্ত উভান অভি মনোবম বটে; কৈছে যত লোক এ প্রামাদ দেণ্ডে যাছে, এথন সব ঐ বোনাপার্ট-পুত্র যে ঘরে গুতেন, যে ঘরে পড়তেন, যে ঘরে তাঁর মৃত্যু হয়েছিল, পেই সব দেখতে যাছে। অনেক আহালাক ফরাসী ফরাসিনী রক্ষী পুরুষকে জিজ্ঞাসা করছে, "এগল" র ঘর কোন্টা, কোন্ বিছানায় "এগ্ল" ভতেন !! মর্ আহামক্, এরা জানে বোনাপার্টের ছেলে। এদের মেয়ে জুলুম করে কেড়ে নিক্লেহরেছিল স্থক; সে ছুণা ় এদের আন্তর্থাধ না। নাতি, রাথতে হয়, নিরাশ্রম, রেথেছিল। তার ় রোমরাজ প্রভৃতি কোনও উপাধিই দিত না; থালি অষ্ট্রার নাতি, কাজেই ডুাক্, বস্। তাকে এখন ভোরা গরুড়-শিশু করে এক বই লিথেছিস্, আর, তার উপর নানা কলনা জুটিয়ে, মাদাম্ বারন্হার্ডের প্রতিভার, ি সে একটা খুব আংকর্ষণ হয়েছে: কিন্তু এ অঞ্জীয় রক্ষী সে নাম কি করে ্ স্থান্বে বল ? তার উপর সে বইয়ে লেখা হয়েছে যে, ক্যাপেলঅ-পুত্রকে

অষ্ট্রান্ বাদ্ধা মেটারনিক্ মন্ত্রীর পরামর্শে একরকম থেরেই ফেল্লেন। রক্ষী "এগল"'' "এগল"" ভনেও, মূখ হাঁড়ি কবে, গোঁজ গোঁজ করতে করতে, ঘর দোর দেখাতে লাগ্লো; কি কার, বন্ধিদ্ভাড়া বড়ই মুকিল। তার উপর, এ দৰ অষ্ট্ৰা প্রভৃষি দেশে দৈনিক বিভাগে বেতন নাই বল্লেই হলো, এক রক্ম পেট ভালায় থাক্তে হয়; খাবতা কয়েক বংসর পারে ঘরে ফিরে যাও। রখীর মুখ অক্কার হয়ে অদেশপ্রিয়তা প্রকাশ কর্লে, **হাত** কিন্তু আপনা হতেই ব্জিনের দিকে চল্লো। ফ্রাসীর দল। ্রক্ষার হাতকে রৌপ্য-সংযুক্ত করে, এগন্ত গল আর মেটারনিক্কে গাল দিতে দিতে ঘরে ফিরলো— রক্ষী লম্বা দেলাম করে দোর বন্ধ করলে। ম_{োমনে} সমগ্র ফরাদী জাতির বাগত পিতত্ত অবশুই করেছিল।

. ভিয়েনা সহরে দেখবার জিনিস্ মিউসিয়ম, বিশেষ বৈজ্ঞানি শিউ. সিয়ম: বিভাগীর বিশেষ উপকারক স্থান। নানা প্রকার ^{শা}ন লুপু জীবের অস্থ্যাদি সংগ্রহ অনেক। চিত্রশালিকায় ওলন্দাজ^{্পি}ত্রক্_{র দেত} চিত্রই অধিক। ওলন্যজি সম্প্রদায়ে, রূপ বাব্ কর্বার চে^উবড়ই _{বয়}ু জীব প্রকৃতির অবিকল অনুকরণ এ সম্প্রদায়ের প্রাধান্ত ^{নিকৃ}ষ্ট্রন শিল্পী বছর কতক ধরে এক ঝুড়ি মাচ্ এঁকেচে, নাহয়ত এক থান মাংস, না হয়ত এক প্লাস জল, সে মাছ, মাণস, প্লাসে জল, চমংকাৰ-জনক। কিন্তু দে ওললাজ-সম্প্রদাযের নেয়ে চেহারা যেন সর কু গ্রীগীর পালোয়ান !!

ভিষেনা সহরে জন্মান্ পাণ্ডিতা বুদ্ধিবল আছে, কিন্ত যৈ কারণে তুরী ধীরে ধীরে অবসন্ন হযে গেল, দেই কাবণ এণায়ও বর্ত্তমান, অর্থাং নানা বিভিন্ন জাতি ও ভাষার সমাবেশ। আসল অষ্টি,য়ার লোক জর্মান্-ভাষী ক্যাথলিক, ছঙ্গারির লোক, ডাতার বংশীয়, ভাষা আলাদা, আবার কতক এীক্ভাষী, এীক্-মতের ক্রিশ্চান। এ সকল ভিন্ন সম্প্রদায়কে একী ভূত করণের শক্তি আই ুরার নাই। কাজেই অষ্ট্রার অধঃপতন।

বর্তমানকাল ইয়ুরোপ থতে জাতীয়তার এক মহা তরক্ষের প্রাহ্রভাব। এক ভাষা, এক ধর্ম, এক জাতীয় সমন্ত লোকের একতা সমাবেশ। বেথার ঐ প্রকার একত্র সমাবেশ স্থাসিদ হচ্ছে, দেখাসই মহাবলের প্রাত্তাব হচ্ছে; যেথায় তা অসম্ভব, দেখারই নাশ। বর্ত্তথান অঞ্জীয় সম্রাটের মুত্র পর, অবভাই জর্মাণি অঞ্জীন সাত্রাজেরে জর্মান্তারী অংশটুকু উদরদাং করবার চেষ্ঠা কগ্রে, ক্ষ প্রভৃতি অবশ্রুই বাধা দেবে; মহা আহবের সম্ভব; বর্ত্তমান সম্রাট্ অভি বুদ্ধ—সে ছর্ব্যোগ আশু-সম্ভাবী। জম্মান্ স্মাট্ তুর্কির স্থলভানের অজেকাল সহায়; সে সময়ে যথন জম্মানি অষ্টিয়া-গ্রাদে মুখ ব্যাদান কর্বে, তথন রুষ-নৈরী তুর্ক রুষকে কতক মতক বাধা ত দেবে, কাজেই জম্মান্ সমাট্ ভূকের দহিত বিশেষ মিএতা দেখাছেন।

ভিরেনায় তিন দিন দিক্ করে দিলে। পারিসের পর ইয়ুরোপ দেখা, চর্ব্বচোষ্য খেয়ে তেঁকুলের চাট্নি টাকা। সেই কাপড় চোপড়, খাওয়া দাওয়া, সেই
সব এক ঢক্ষ, গুনিয়া শুদ্ধ সেই এক কিন্তু কালো জামা, সেই এক বিকট
টুপি। তার উপর ওপরে মেঘ, আর নীচে পিল্ পিল্ করছে এই কাল টুপি,
কাল জামার দল, লম্ যেন আটকে দেয়। ইয়ুরোপশুদ্ধ সেই এক পোষাক,
সেই এক চাল চলন্ হয়ে আন্ছে —প্রকৃতির নিষম ঐ, সবই মৃত্যুর চিহু। শুভ
শুভ বংসর কস্রভ করে, আমাদের আর্যারা আমাদের এমনি কাওয়াজ করিয়ে
দেছেন, যে আমরা এক চক্ষে দাঁত মাজি, মুগ ধূই, খাওয়া থাই, ইত্যাদি,
ইত্যাদি,—ফল, আমরা ক্রমে ক্রমে অল্পলি হয়ে গেছি, প্রাণ বেরিয়ে গেছে,
খালি যন্ত্রগুলি ঘূরে বেড়াঙিছ, য়য়ে না' বলে না, 'ই' বলে না, নিজের মাথা
ঘামায় না, যেনাল্য পিতরো ঘাতাঃ চলে য়ায়, ভার পর পচে মরে য়ায়। এদেবও
ভাই হবে,—কাল্ল কুটিলা গভিঃ, নন এক পোষাক, এক থাওয়া, এক ধাঁজে
কথা ক ওয়া, ইত্যাদি, ইত্যাদি, হতে হতে ক্রমে সব য়য়, ক্রমে সব য়েনান্থ
পিতরো যাতাঃ হবে, ভার পর পচে মরা!!

উপনিষদের বিষয়।

यां मिकितानना]

[৪৭ পৃষ্ঠার পর।

শাস্ত্র বলেন, প্রুতি অপৌক্ষেষ ও অনাদি। যদিও উপনিষদের রচয়িতা কোনও বিশেষ ঋষি-পুরুষের নাম পাওয়া যায় না, তাই বলিয়া বে মন্ত্রাজি শুরুর মুখ হইতে শিষ্যপরশ্পরা প্রথমে কেবল শুনিয়া আসিভেছেন, পরে লিপি-বন্ধমাত্র থাকিয়া এখন মুদ্রিত আকারে প্রকাশিত ইইভেছে, দে গুলিকে অপৌ-ক্রমের বা অনাদি বলা যুক্তিযুক্ত নয়। প্র ব্রহ্মা বিশ্বস্তা কর্ত্তা ব্রহ্মবিল্পাং অর্থকায় জ্যেষ্টপুত্রায় প্রাহ্',—বিশ্বক্তা ব্রহ্মা নিজের জ্যেষ্টপুত্র অর্থক্তের ব্রহ্মবিল্পা প্রদান করিলেন, এই মন্ত্র অবলম্বনে, শ্রুতি স্বয়ং স্টিকর্ত্তার মুখনির্গতা, এরপ অনুমান করা উচিত কি না, ভাহাও বিবেচনার বিষয়। ফল কথা, "শ্রুতি অপৌরুষেরও অনাদি", ইহার অর্থ—"শ্রুতিবিষয়ক জ্ঞান অনাদি"। মাধ্যানকর্মণক্তি অনাদি ভূতকালে বিদ্যান ছিল, চিরকাল রহিয়াছে, ও অনস্ত ভবিষয়ং কালে থাকিবে; নিউটন্ সেই শক্তির আবিষ্ঠা। নিউটন্ সেই শক্তি আবিষ্ঠা। নিউটন্ সেই শক্তি আবিষ্ঠা করিয়াছিলেন বলিয়া, আজ সকলে জানিতে পারিতেছে, মাধ্যাকর্মণ বলিয়া এক শক্তি। যদি অদ্যাপি ঐ শক্তিব আবিষ্ঠার নাহইত, তাহা হইলেও উহা বিদ্যান থাকিত, ইহা নিশ্চিত। তেমনি, চিংজগংস্থ সতা, জ্ঞান সমূহ অনাদি ভূত ও অনন্ত ভবিষয়ং কালে বর্ত্তমান; এই সনাতন জ্ঞানবাশির নাম বেদ; স্ক্তরাং বেদও অনাদি ও অনন্ত। ঋষিগণ সেই অনাদানস্ত বেদগংজ্ঞ জ্ঞানসমূহের ক্রিঃ, আবিষ্ঠা। উপনিম্ন সেই ঋষিদিগের ভ্রো। মন্ত্রান্থ ক্রিপ্রমুখনিঃস্বত ভাষা অব্যুত্ত অপৌরুষের নহে। সেভাষাশ্রিত যে জ্ঞান, ভাহাই অপৌরুষেয়।

অতি প্রাচীনকালে আ্যা ঋষ্ধিণ মুক্তি, ভগ্রান, আ্রা প্রাচৃতি প্রভাক করিলাবলিতেন, "এ ১ বৈতং"--এই দেই আ্রা; যেন করতলম্বিত আ্মলক-क्ल दर भिशास्क (मथारेट उन, "धरे (परे आया"। जातर उद ध क्रिंग रिन्तु-সম্বানের কি শ্বহিত্বাভ সহাব ৭ সহাব,—উপনিষ্পের আশা বাকা বলিতে-ছেন, "অভ্যেহপোবং", নচিকেতা ব্ৰহ্মপ্ৰাও হইখা বিদ্ৰুত হইখাছিলেন, অন্ত যে কেছ এই অধ্যালাবিদ্যা জানিবেন, তিনিও নচিকেতার ভাষ অমৃতত্ত পাইবেন। দেশকাল্যাক্তিনির্নিশেষে এই ব্রহ্মজ্ঞান সকলেরই পাইবার অধিকার। সাল্যের মধ্যে অনত শক্তি নিহিত, এ বিশ্বাস যেন উপনিষ্দের মূলমন্ত্র। উপনিষদ মানুষ্কে, "অসুভের পুত্র", বলিরা স্থোধন করেন, — বলেন, "তুমিই দেই পরমায়।", "এই নিখিল বিশ্ব তোমাতে জাত, তোমাতে প্রতিষ্ঠিত, কালে তোমাতেই লয়গত, তুমি ব্রহ্ম হইতে অভিন্"। হে পুরুষ ! ভোমার ভিতর বীর্ঘাস্থকপের অনস্ত বীর্ঘা ভোমার অজ্ঞাতসারে বিদ্যামান: আত্মার বিখাদ কর, নিঙের স্বরূপে বিখাদ কর, "আমি অনস্ত শক্তির আধার" — এই মন্ত্র দিনরাত জপ কর, রুণা ছর্বলভার অভিযান ফেলিয়া দেও, দেখিবে-মহাশক্তির আধার তুমি অজ্ঞানবশতঃ এত দিন আপ্নাকে চুর্বল ভাবিরা আসিতেছিলে, সিংহের কুমার তুমি নিজেকে শুগাল শিশু ভাবিরাছ। উপনিষদের ঐ বীজ্মন্ত্র ভূলিয়া যাওয়াতেই আমাদের এত অবন্তি। আমরা নিজেরে হর্জন কীটাণ্কীটাধম ভাবি, হইও ডাই। "ধলু ক্রুমনঃ পুরুষঃ",—
এই পুরুষ নিজেকে যা ভাবেন, হন তাই। ক্রমাগত বল, "মামি হর্জন, আমি
অধম, আমি পাপী", দেশের হর্জলতা তোমাকে আশ্রয় করিবে; বল,
"মামি বীর্যাময়, আমি অমৃতরূপ, আমি শুদ্ধ, অপাপবিদ্ধ," সব হর্জলতা ছুটিয়া
যাইবে, শতস্পার্জ্জনে অন্তর্নাহিত ভগবং-শক্তি জাগিয়া উঠিবে। এটা সত্যা,
ধ্বে সতা। ইহাই ধর্ম। অতীতকালে যদি দশজন ঋষি ভারতভূমি পবিদ্র
করিয়া থাকেন, বর্ত্তমানে সহস্র ঋষি আমানের মধ্য হইতে উঠিবেন, নিশ্চয়
উঠিবেন, এই দৃঢ় বিশ্বাস ধারণা কর, সত্যা, ব্লচর্য্য অবলম্বন করিয়া বীরদর্শে
তপত্যাক্ষেত্রে অগ্রসর হও, তুমিও ঋষিত্ব প্রাপ্ত হইটো। নহিলে হাজার কাঁদ,
হাজার আপনাকে দীনহীন ভাব, সার। জীবনটা মিছে কেঁদে কেটে যাবে।
আছই ত সব দীনহীন,—তার উপর আনার "আমি দীনহীন", ব'লে বাহাছরি
কি ? "নারমাত্মা বলহীনেন লভাঃ",—ত গল কখনই আয়াকে লাভ করিতে
পারে না। ভীরু, কাপুরুষ, দাসের মুক্তি কোণায়ণ্থ অর্জুন বীর ছিলেন
বলিয়াই, ভগবান গাহাকে গীতা উপদেশ করিলেন।

"তমেনৈকং জানথ আলানমন। বাচো বিনুঞ্গ", একমাত্র আলাকে জান. অত কথা পরিভাগ কর, "ন কর্মণা ন প্রজয়া ধনেন ভাগেনৈকে অমৃতত্ত্ মানতঃ", কর্মা, বিত্ত, পুত্রপৌত্র কিছুতেই অমৃতত্ব পাওয়া যায় না, ত্যাগই এক-মাত্র অমৃত্ত্বেব হেতু, "যেনাহং নাসূতা দ্যাং কিমহং তেন কুর্যাং", সমস্ত পৃথিবী বিভপুর্গা আমার হইলেও, জামি অমৃত হইব না, "ন বিভেন তপ্ণীয়ো মহযাঃ" বিত্তের দারা মাত্য কখনই তৃপ্তি লাভ করে না, —সংসাবের অনিত্যতা অভিধাান পূর্লক অরণ্যাশ্রী ঋষিগণ দিব্য পরমপ্রুষে মগ্গ হইতেন। উপনিষদের তীত্রবৈশাগ্যরূপ অগ্নিশিথার তীক্ষ জ্যোতিঃ সংসারী লোকের দৃষ্টি ঝল্সাইয়া দের; আশে পাশে দৃশ্রমান কতক গুলি ধ্মবেখা সে তীক্ষতার কোমলছ সাধন করে। বর্তুনান পুতিগন্ধময় ভারতজীবনের স্বান্থ্য পুনরানয়ন করিবার জন্ম ঐ ধুনবেথাগুলি একান্ত আব্ভাক। সংসার ছাড়িতে হটলে, সংসারী থাকিরাই, সংসার সংগ্রামে কার্য্য করিয়াই, সংদার ছাড়িনার বন্ধ অর্জন করিতে হইবে। তাই, কি করিয়া শাংসারিক কর্মে গৃথী ক্লতকার্য্য হইতে পারেন, তাহার উপায় উপনিষদ্—আত্মার দিক দিয়া—বলিতেছেন,—"এতদ্যোবাক্ষরং জ্বাছা যো যদিচ্ছতি তথ্য তৎ," আত্মার মনীম শক্তির গুঢ় রহস্ত অবগত হইয়া যিনি যা ইচ্ছা করেন, তিনি তাহাই পান। মুমুকু তুমি, নিজের আত্মার অনম্ভ শক্তিতে বিখাদ কর, মৃক্তি লাভ করিতে পারিবে। গৃহী তুমি, অর্থ উপার্জন করিতে অভিলাষী, ভামার ভি চরে অনস্ত শক্তি বিদ্যমান, অর্থোপার্জনরূপ উদ্দেশ্যে তাহা নিয়োজিত কর, তুমি অতুল ধনরাশির অধিকারী হইবে। পণ্ডিত তুমি মহাবিদ্যান্ হইতে ইচ্ছুক, ক্ষত্রিয় তুমি শত্রুকে পরাজর কবিতে চাও, আত্মার অনস্ত শক্তিতে বিখাদ করিয়া যে দিকে দে শক্তি চালাইবে, সেই দিকেই তুমি কৃতার্থ হইবে। পাশ্চাভ্যেরা আত্মার মহাশক্তি ভোগের দিকে প্রয়োগ করিয়া মহোহালাহে পৃথিবী উপভোগ করিতেছে; হীনবিখাদাত্ম আনাদের না ইহকাল, না পরকাল,—ইভোন্ইস্তভোত্রই হইয়া পড়িতেছি। যার আত্মায় বিখাদ নাই, ভাব ভগ্যানে বিখাদ মিথা কথা।

সকল দিনারই উল্ভিব এক দীমা আছে; দেই শীমায় উপনীত হইলে, নূহন আরে কিছু ভাবিধার করিবার থাকে না; ভার পর, সে বিদ্যাবিষয়ে অন্ত আবে যা কিছুর আলোচন। হয়, তংসমুদায়ই দেই সীমাব মধ্যে হইতে ধাকে। প্রথিবিদ্যা 🗷 ব্যায়নবিদ্যা জভজগতের ঘটনবিলী পর্যালোচনা ও তাহাদিগের বৈজানিক বাাথা বাহির করে। আজ পর্যান্ত, বৈজ্ঞানিক জগংকে বিশ্লিপ্ত করিলা ঠিক করিলাছেন, সমস্ত জগং চতুঃসপ্ততিসংখ্যক বিভিন্ন ভতের প্রস্প্র মিশ্রনে গঠিত এবং সমস্ত জগতের স্থিতিগতিকার্য্যাদি মাধ্যা-কর্ষণ-শক্তি, ভাড়িত-শক্তি, আলোক-শক্তি প্রভৃতি ক্তিপর বিভিন্নজাতীয় শক্তির হারা চালিত। বিজ্ঞানবিদ এখনও পদার্থবিদ্যা ও রসালনবিদ্যার চরম সীমাৰ উপস্থিত হন নাই। পদার্থবিদ্ ষণ্ন এমন একটা শক্তি আবিকার করিবেন, মাধ্যাবর্ষণাদি বিভিন্ন শক্তি সমূহ যে শক্তির সহিত অরুণতঃ এক, কেবল বিকাশকালে সেই শক্তির বিকার মাত্র, অবস্থান্তর মাত্র, রসায়নভত্তবিদ্ যথন এমন একটা ভূত বাহির করিবেন, অক্তাক্ত সমুদয় ভূত যে ভূতের সহিত স্বরূপতঃ এক, কেবল অবস্থা ভেদে দেই ভৃতের বিকার্মার, অবস্থান্তর মাত্র, তথন পদার্থবিদ্যার ও রুসায়নবিদ্যার শেষ উন্নতি সাধিত হইবে। ইহার পর, আরও উন্নতি আমরা ধারণা করিতে পারি না। তার পব, পদার্থবিদ্যা সেই এক শক্তির ও রদায়নবিদ্যা দেই এক ভুতের বিভিন্ন পরিণাম, বিভিন্ন বিকার, নানাবিণ অবন্ধা হইতে অবস্থান্তর প্রাপ্তি, ইত্যাদি লইয়া বিচার বিতর্কে ব্যাপত থাকিবে। অধ্যাক্তবিদ্যা সহক্ষেও ঐ এক নিয়ম। উপনিষদ প্রথমে নিথিল জগং বিশ্লেষণ করিয়া বলিলেন, এক দর্বব্যাপী জড়া প্রকৃতি, অনন্তদংখ্যক জীবাত্মাও এক দর্মনিষ্তা প্রমাত্মা, এই তিন প্রস্পর বিভিন্ন পৃথকু সতা

অনাদিকাল হইতে অনস্কাল বর্ত্তমান। এটা বৈতবাদ— অধ্যাত্মবিদ্যার প্রথম অবস্থা। বিতীয় অবস্থায়, উপনিষদ্ আবার বলিলেন, প্রাক্তি, জীবাত্মা ও পর-মাত্মা, এ তিন্টা বিভিন্ন সন্তা নয়। কেবল একমাত্র পরমাত্মাই আছেন, প্রকৃতি তাঁহার সুল্পরীর এবং জীবাঝা সমূহ তাঁহার স্ক্রেশরীর; তিনি প্রকৃতি ও জীবাত্মারূপ অশ্রীরের স্থারা,দুগুমান জগৎ ব্যাপিয়া, জগতের বাহিরেও অনস্ত পুর্ব্ধি বিদামান-"বহিশ্চ"। "যথোর্ণনাভি: সজতে গৃহতে চ'', "যথা স্থদীপ্তাং পাবকাদিক লিঙ্গাঃ", বেরূপ উর্ণনাভি নিজের শরীর হইতে তল্প বাহির করে, আবার গ্রহণ করে, যেরপ রুহৎ অগ্নি হইতে কুদ্র কুদ্র অগ্নিকণা বাহির হয়, সেইরূপ প্রনাত্মা হইতে জড়া প্রকৃতি এবং অন্তদংখ্যক জীবাত্মা নির্গত 🔳 তাঁহাতে পুনর্গত হয়। ইহা বিশিষ্টাবৈতবাদ—অধ্যায়বিত্যার দ্বিতীয় অবস্থা। অবশেষে বিশিষ্টাবৈ তবাদ মাজ্জিত করিয়া অবৈতবাদ। অনত্তর আবার শরীর कि ? जनस्थत जातात जाः न कि ? जनस्थत जातात 'निर्गठ', 'विर्गिठ' कि ? একমাত্র রস্থন দেশকালাভীত, কার্য্যকারণমন্বরের পার, অংশরহিত, সর্ব্ববাপী, সর্বস্থানে পুরভাবে বর্তমান, অ-মহিমার প্রতিষ্ঠিত আছেন। তিনি ছাড়া কিছুই নাই। প্রাকৃতি গীবায়া তাঁহোরই নামর পমাত। বিশ্বজাং দে অনম্ভ অগাধ মহামুনিধির তরঙ্গভঙ্গ-নে বিপুল সভারাজ্যের অপ্রময় অলীকতা। অধ্যামবিদ্যার শেষ আবিজিয়া স্বাপ্ত,--এক বই চুই নাই, আর উন্নতি অদন্তব। অতীতে বা হইরাছে, ভবিষ্যতে বা হগবে, সকলই এই মহান্ অসীম বুত্তের, উপনিষ্দের, মধ্যে আবদ্ধ। তাই, উপনিষ্দ্ হিন্দুর পর্ম আদরের, তাহার মাথার অমূল্যমণি, হিন্দুর প্রাণদর্কার।

নামরূপাতীত, অবাত্মনসোলোচর, দেশকালপার একত্ব ছাড়া, নামরূপাত্মক জগতের মধ্যেও আর এক একত্ব মাছে। "যদেবেহ তদমুত্র হতমুত্র তদ্বিহ। মূভো: স মৃত্যমাপ্রোতি য ইছ নানেব পশুতি ॥",—যা এখানে তা দেখানে, যা গেথানে তা এখানে, মৃত্যু হইতে মৃত্যুমুখে পতিত হন, যিনি এই এ জগতে নানাম্ব দর্শন করেন। প্রত্যেক ব্যক্তি অপর ব্যক্তির সহিত একত্ব-স্থত্তে গাঁথা। একের কল্যাণে অপরের কল্যাণ, একের সপ্তত অপরের । পরের ভাল করা, আর নিজের ভাল করা, একই কথা। পরের ফন্দ কর, ভোমার উপর দে অমঙ্গলের প্রতিঘাত, মাল ন। হয় কাল, নিশ্চয়ই আসিবে! তুমি, আমি, তিনি যে এক। অবোধ আমরা জগৎ থেকে নিজেকে পৃথক্ করিতে চেষ্টা করি, যা হ্বার নয় তা চাই; ফল, অংশেষ খমণা। দেবদেব হইতে নরকের কীট পর্যাস্ত তোমারই রূপ। "যো অতাং দেবতামুপাল্ডে গত্যোহসো অত্যোহহনন্মতি ন স বেদ', যে অত্য দেবতাকে উপাসনা করে, "দেবতা আমা হইতে ভিন্ন, আমি দেবতা ভিন্ন', এইরূপ মনে কবিয়া, সে অজ্ঞান। বহুর পশ্চাৎ এক, ও একের মধ্যে অনন্ত,—এই দৃষ্টির নাম জ্ঞান। যোগী দিবা ধাননেত্রে এক ইউদেবতার মধ্যে অনন্ত জগং ভাসমান দেখিয়া বিন্ময়াবিউচিত্তে বলেন, "পশুমি দেবাংন্তব দেব দেহে, সর্বাংন্তথা ভূতবিশেষসভ্যান্'; জ্ঞানী "অশ্রীরং শ্রীরেষ্, জনবঙ্গের অবস্থিতম্', পরিবর্তনের পশ্চাং অপবিবর্তন, অনিভার পশ্চাং নিতা, মিথারে পশ্চাং সত্য অন্তি-ভাতি-প্রিয় সতা প্রাণে প্রাণে অম্ভব করিয়া ভক্তি-প্রুল্ল স্থানে সকলকে আলিজন করেন।

ণেক সময়ে উপনিষ্ণের একত্ব-জ্নিত ভালবাসার ভাবে ভারতবর্ষ টলমল করিত; সে প্রীতি আর আমাদের লাই। সে উপনিষদ্-প্রচারিত বলবীর্য্যও ভারতবর্ষ হারাইয়া ফেলিয়াছে। তবে, তিরদিন কখন সমান বায় না, ছংথেরও অবসান আছে। আমরা ভবিষ্যতের গড় অন্ধকারের দিকে একটাও জ্যোতি-রেখা দেখিতে উদ্গ্রীব রহিলাম। (সমাপ্ত)।

পাঁচ কথা।

দেশ, লিখ্বে, একটু তলিয়ে বুঝে হ্নঝে লিখো; সমালোচনা ক'রবে—খুব
সম্বে ক'রে।। সমালোচনা অতি পবিত্র জিনিয়। পবিত্র কায় পবিত্র মনে,
পবিত্র গত দিয়ে, ক'রবে। সমালোচনা, বিচার প্রভৃতি অতি পবিত্র হ'য়ে
ক'রতে হয়; ঈয়রকে য়য়ণ ক'য়ে ক'য়তে হয়। ছেব হিংসা বলতঃ অমন ধায়া
কটু কাটবা বের ক'য়তে নেই। ছি, ছি! ভদ্রলোকের ছেলে, লেখাপড়া
লিখেছো, একটা কাগজের ভার ভূমি পেয়েছো—কোথার, ধীর হবে, নম
হবে, নিজের মর্যাদা রেখে কায় করবে, পরের মাজু রেখে কথা কইবে, পরের
যাতে মঙ্গল হয় তাই ক'য়বে; তা না হয়ে, কায়্ মঙ্গেরসা পাব—পেয়ে ছ
ফলম লিখে কায় সর্বনাশ ক'য়বা, এরপ ক'রে বেড়ালে কি বাপু নিজের
মঞ্চল হয়, না—লেশের হিত হয় । উচিত কথা ব'লবে—বলনা, খুব ব'লবে
বই কি; কিন্তু মিষ্টি ক'য়ে ব'লবে,—য়তে কায় হয়, য়াতে ফল হয়, হিতে
বিপরীত যাতে লা হয়, দলাদলি যাতে লা হয়।

মনে কর, তুমি তাড়িতের বিষয়ে কিছু গােষণা করিতেছ। শিশু তোমাকে জিল্পাসিতেছে, 'ইহাতে কি মিটি কেনা যায় ?' ভূমি বলিলে, 'না'। 'তবে ইহাতে কি উপকার হইবে ?' লোকে ও এইরূপে দাঁড়াইয়া বলে, 'ইহাতে জগতের কি উপকার হইবে ? ইহাতে কি আমাদেব টাকা হইবে ?' 'না'। 'তবে ইহাতে আর উপকার কি ?' মান্তব জগতের হিত করা অর্থে এইকপই বুঝিয়া থাকে। তথাপি ধর্মের এই প্রত্যকাগুড়ভিই জগতের সম্পূর্ণ উপক'র করিয়া থাকে। লোকের ভয় হয়, যথন সে এই জাজা লাভ করিবে, যথন দে উপলদ্ধি করিবে যে, সবই এক, তথ্ন প্রেমের প্রস্তাবণ শুকাইরা ফাইবে। জীবনের মূল্যবান যাহা কিছু সৈব চান্ত্রা যাইবে, এই জীবনে ও প্রজীবনে ভাষারা যাথ। কিছু ভালবাসিত, সবই ভাষাদের পক্ষে উড়িয়া যাইবে। লোকে এ বিষয় এগবার ভাবিয়া দেখে না যে, যে সকল ব্যক্তি তাঁহাদের নিজের সম্বন্ধে পুর অল্ল চিপ্তা ক্রিয়াছেন, তাঁখানাই জগতে সর্ক্র্রেষ্ঠ ক্র্মী ইইয়া গিয়া-ছেন। তখনই মালুষ মথার্থ ভাববাসে, মখন মালুষ দেখিতে পায়, তাহার ভালবাসার জিনিষ কোন মৃদ্র মত্য জীব নছে। তথ-ই মানুষ ষণার্থ ভাল-বাসিতে পাবে, যথন সে দেখিতে পান, তাহার ভালবাসার পাত্র-থানিকটা মৃতিকাপণ্ড নছে, সাং ভগবান। স্ত্রী সামীকে আছেও অধিক ভাল বাসিবেন, যদি তিনি ভাবেন, স্বামী পাক্ষাং ব্রহাপরপ। স্বামীও স্ত্রীকে অধিক ভাল-বাসিবেন, যদি তিনি জানিতে পাবেন, স্ত্রী স্বাং ব্রহ্মস্বরূপ। সেই মাতাও সন্তানগণকে বেশী ভাগ বাসিপেন, যিনি সন্তানগণকে ব্ৰহ্মক্ষরপ দেখেন। সেই বাকি তাঁহার মহা শতকেও প্রতি করিবেন, যিনি জানেন, ঐ শত্রু সাক্ষাং ত্রহারকণ। সেই বাতিই সাধু ব্যক্তি ক ভাল বাসিবেন, যিনি ভানেন সেই সাধু ব্যক্তি সালাং এলাপরপ। সেই লোকই আবার অতিশয় অসাধু ব্যক্তিকেও ভাল বাসিবেন, যিনি জানেন সেই অসাধৃত্য পুরুষেরও পশ্চাতে সেই প্রভুরতিয়াছেন। যাঁশার পক্ষে এই সূত্র আহং একেবারে মৃত হইয়া গিয়াছে. এবং তংস্থা ঈশ্বর অধিকার করিয়া বসিয়াছেন, সেই ব্যক্তি জগৎকে ইঙ্গিতে পরিচলেন কবিতে পাবেন। তাঁহার পক্ষে সম্দয় জগং সম্প্রিপে অন্ত আকার ধারণ করে। তুঃখকর ক্লেশকর যাহা কিছু, স্বই তাঁহার পক্ষে চলিয়া ষায়; সকল প্রকার গোলমাল হল্ড মিটিয়া যায়। জলং তথন তাঁহার পক্ষে কারাগারস্বরূপ না হইয়া (যেখানে আমরা প্রতিদিন এক টুক্রা রুটির জন্ত ঝাড়া মারামারি করি) উহা আমাদের জীড়ালেত্ররূপে পরিণত হইবে। ১লা ফান্তন, ১৩০৭।] উদ্বোধন। [0]

তথন,জগং অতি স্থানরভাবে পরিণত হইবে। এইরূপ ব্যক্তিরই কেবল বলি-বার অধিকার আছেংযে, 'এই জগং কি ফুন্দর!' তাঁহারই কেংল বলিবা অধিকার আছে যে, স্বই মঙ্গলম্বরূপ। এইরূপ প্রত্যক্ষ উপল্লি হই জগতের এই মহান হিত হটবে যে, জগতের এই সকল বিবাদ গওবোল -দুর ২ইয়া জগতে শান্তির রাজ্য হউবে— যদি জগতের সকল মানুষ আজ এই মহান সভোগ এক বিন্দুও উপলব্ধি করিতে পারে, তাহা হইলে ভাহার পক্ষে এই সমুদ্ধ জগতই আৰ এচ রূপ ধাৰণ করিবে, আর এই সৰ গণ্ডগোলের পরি-বর্দ্ধে শান্তির রাজত্ব আন্দরে। অসভাভাবে ভাতাভাত্তি করিয়া সকলকে ছাড়াইথা যাইবার প্রবৃত্তি জল্ম হইতে চলিখা ঘাইবে। উভার সঙ্গে সংস্কৃ मुक्त शकांत्र भगान्ति, मुक्त शकांत्र एवा, मुक्त श्रकांत्र श्रेशी एवः मुक्त প্রকার অংশভ চিরকালের জন্ম চলিয়া যায়। তপন দেবতারা এই জগতে বাস করিবেন। তথন এই জগঃই সর্গ হইরা ষাইবে, আরে ষথন দেবতায় দেবতায় খেনা, ধথন দেৰভাগ দেবভাগ কায়, যখন দেবভা দেবভাকে ভালবাসে, তথন আর অন্ত ভ কি থাকিতে গারে ? ঈশরের প্রতাক্ষ উপলব্ধির এই মহা স্কল । সমাজে ভোমরা যাহা কিছু দেখিতেছ, সবই তথন পরিবৃত্তি হইয়া অভুরূপ ধারণ করিবে। তথ্ন তোমরা মাতৃষ্কে আর ধারাপ ব্লিষা দেখিবে না: ইহাই প্রথম মহালাভ। তথন ভূমি আরে কোন অভায় কার্যাবারী দরিন্ত নরনারীর দি:ক ঘুণাপূর্বক দৃষ্টিপাত করি.ব না। হে মহিলাগণ, তোমরা আর, যে তঃখিনী কামিনী রাত্রিতে পথে ভ্রমণ করিয়া বেড়ায়, ঘৃণাপূর্কাক ভাহার দিকে দৃষ্টিপাত করিবে না, কারণ তুমি দেখানেও সাক্ষাং ঈশরকে দেখিবে তথ্ন তোমার আরু স্বী বা অপরকে শান্তি দিবার ভাব উদর ছইবে না। ঐ সাই চলিয়া যাইবে, তথন প্রেম এত প্রান্ত হইবে ষে, মনেব-**জাতিকে দংপথে পরিচালিত কবিতে আর চাবুকের প্রয়োজন হইবে না** :

যদি জগতের নরনা িগণের লক্ষভাগের এক ভাগও শুক চুপ করিরা বসিয়া থানিক ক্ষণের জন্ত বলেন, "ভোমরা সকলেই ঈগর। হে মানগণণ, হে পশু-গণ, হে সর্প্রকার জীবিত প্রাণী, ভোমরা সকলেই এক জীবন্ত ঈশবের প্রকাশ," ভাছা হইলে অর্জ্বভার মধ্যেই সমুদ্য জগং পরিবর্দ্ধিত হইরা যাইবে। তথন চ্ছুর্দ্ধিকে ঘুণার বীন্ধ প্রক্ষেপ না করিবা, ঈশ্যা ■ অসং চিস্তার প্রবাহ প্রক্ষেপ না করিবা, কর্মা করিবা সকল দেশের লোকই চিন্তা ক্রিবেন, সবই তিনি। যাহা কিছু দেখিতেছ বা অনুভব করিতেছ, সবই তিনি। ভোমার মধ্যে অনুভব না উল্লেখন।

षाकिल, তুমি অভত দেখিবে কিরপে? তোমার মধ্যে চোর না থাকিলে. ভূমি কেমন করিয়া চোর দেখিবে ? ভূমি নিজে খুনী নাহইলে, খুনী দেখিবে किकार १ भाषु इ.अ. खाहा इहेल अमाधु खांच क्यान अरक बरकवारत हिल्हा याहेर्य । এইরতেপ সমুদয় জগং পরি: উতি হইয়া য়াইবে। ইং।ই সমাজের মহৎ গাভ। মানুষের পকে ইহা মহং লাভ। এই সকল ভাব ভারতে প্রাচীন কালে অনেক মহাত্রা আধিকার ও কার্য্যে পরিণত করিয়াছিলেন। এই সকল আচার্যাগণের সন্ধীর্ণতা এবং দেশের পরাধীনতা প্রভৃতি নানাবিধ কারণে এই সকল চিন্তা চতুদ্দিকে প্রচার হুইতে পার নাই। তাহা না হুইলেও এগুলি খুব মহানতা; যেখানেই এগুনি তাহাদের প্রভাব বিভার করিতে পাইয়াছে, সেই খানেই মানুষ দেবভাবাপন্ন হইয়াছে। এইরূপ একজন দেব-প্রকৃতিক মানুষের দারা আমার সমুদর জীবনটা পরিবর্তিত হইরা গিণাছে; ইহার সম্বন্ধে আগামী রবিবার তোমাদের নিকট বলিব। একণে এই সকল ভাব সমদ্য জগতে প্রচারিত হইবার সময় আসিতেছে। মঠে আবদ্ধ না থাকিলা, কেবল পণ্ডিতদের পাঠের জন্ত দর্শনের পুত্তক সমূহে আবদ্ধ না থাকিয়া, কেবল কতকগুলি সম্প্রদায়ের এবং কতকগুলি পণ্ডিত ব্যক্তির এক-চেটিয়া অধিকার না ণাকিয়া, উহা সমুদর জগতে প্রচারিত হইবে, যাহাতে উহা সাধু পাপী, আবালবুদ্ধনৈতা, শিক্ষিত অশিক্ষিত সকলেরই সাধারণ সম্পত্তি হুইতে পারে। তথন এই সকল ভাব জগতের বাযুতে থেলা করিতে থাকিবে, আরু আমরা যে বায়ু খানপ্রধান দ্বাবা গ্রহণ করিতেছি, তাহার প্রত্যেক তালে डाल विनाद, 'उद्यम्म।' धरे व्यमः थाठ ऋष्यापूर्व मन्मन दक्षा छ, दाका উক্তারণকারী প্রত্যেক পদার্থের ভিতর দিয়া বলিবে, 'তত্ত্বমদি।'

মায়া ও ঈশ্বরধারণার ক্রেমবিকাণ।

আমরা দেখিয়াছি, অবৈত বেদান্তের একতম মূলভিত্তিস্বরূপ মায়াবাদ
আফুটভাবে সংহিতাতেও দেখিতে পাওয়া যায়, আর গুরুতপাক উবনিবদে যে
সকল ওত্ত খুব পরিক্ষুট ভাব ধারণ করিয়াছে, সংহিতাতে তাহার সকলগুলিই
আফুটভাবে কোন না কোন আকারে বভ্রমান দেখিতে পাওয়া যায়।
আপেনারা অনেকেই একলে মায়াবাদের তত্ত্ব সম্পূর্ণরূপে অবগত হইয়াছেন এবং
ব্রিতে পারিয়াছেন, অনেক সয়য় লোকে ভাত্তিবশতঃ মায়াকে ভ্রমা বলিয়া
১লা ফায়ন, ১৩০৭।] উলোধন।

ব্যাখ্যা করে, অতএব তাঁংবারা যখন জগংকে মায়া বলেন, তখন উগাকেও 'ল্রম' বলিয়া ব্যাপ্যা করিতে হয়। মারার 'ভ্রম' এই অর্থ বড় ঠিক নহে। সায়া, কোন বিশেষ মত নতে, উহা কেবল বিশ্বক্ষাণ্ডের স্বরূপ বর্ণনা মাত্র। এই ক মায়াকে বুঝিতে হইলে আমাদিগকে দেই সংহিতা প্র্যান্ত কাইতে হইবে, এবং ুর্ প্রথমে মারা সম্বান্ত কি ধারণা ছিল, ভাহা পর্যান্ত দেখিতে হুইবে। ছামরা দেখিয়াছি, লোকের দেবতার জ্ঞান কিরুপে আদিল। কিন্তু ব্রিতে হইবে, এই দেবতারা প্রথমে কেবল শক্তিশালী পুরুষ মতা ছিলেন। আপনারা অনেকে গ্রীক, হিক্র, পার্দী বা অপ্রাপর জাতির প্রাচীন শাস্ত্রে দেবতারা আমাদের দৃষ্টিতে যে দকল কার্য্য অতীব স্থানত, দেই দকল কার্য্য করিতেছেন, এইরূপ বর্ণনা দেখিলা ভীত হইলা থাকেন; কিন্ত আমরা সম্পূর্ণরূপে ভূলিয়া যাই যে, আগরা উন বিংশ শতাকীব লোক, আর এই সব দেবতা অনেক স্চল্র বর্ষ পূর্কের জীব; আর আমরা ইহাও ভুলিয়া যাই যে, ঐ স্কল দেবতার উবাসকেরা তাঁহাদের চরিত্রে কিছু অসঙ্গত দেখিতে পাইতেন না. বা তাঁহারা ভাঁহাদের দেবভাদের যে গপ বর্ণনা করিছেন, ভাহাতে ভাহারা কিছুমাত্র ভর পাইতেন না, কারণ, দেই দকণ দেবতার। তাঁহাদেরই মত ছিলেন। অ মাদের সার। জীবনে আমাদের এই শিক্ষা করিতে হটবে বে, প্রত্যেক ব্যক্তিকে তাহার নিজ নিজ আদশানুসারে বিচার করিতে হটবে, অপরের আদশানুসারে নয়। ভাষা না করিয়া আগরা আমাদের নিজ আদেশ ঘ'রা অপরের বিচাব করিয়া থাকি। এরপ করা উচিত নয়। আমাদের চতুঃপার্মবর্তী লোকসকলের স্থিত বাংহার করিবার সময় আমলা স্কানাই এই ভূ.ল পড়ি, আর আমার ধারণা,—অপরের সৃহিত আমাদের যাহা কিছু বিবাদ বিস্থাদ হয়, ভাহা কেবল এই এক কারণ হইতে হয় যে, আমরা অপবের দেবতাকে আমাদের নিজ দেবতা ছালা, অপরাপর আদর্শ আমাদের আদ্প দারা এবং অপরের অভিসন্ধি আমাদের নিজ অভিসন্ধি ছারা বিচার করিতে চেটা করিয়া থাকি ৷ বিশেষ বিশেষ অবস্থায় আমি হয়ত কোন বিশেষ কার্য্য করিতে পারি, আরু যথন আমি দেখি, আর এক জন লোক দেইরূপ কার্য্য কৰিছেছে, আমি মনে ক্রিয়া লই, ভাহারও সেই অভিস্কি: আমার মনে একথা একবারও উদয় হয় না দে, যদিও ফল সমান হটতে পারে, তথাপি ভিন্ন ভিন্ন সহজ্র কারণ সেই একই ফল প্রদাব করিতে পারে। আমি যে কারণে দেই কাগ্য করিতে প্রেরিত হইরা থাকি, তিনি দেই কার্য্য অন্ত অভিসন্ধিতে করিতে পারেন। উৰোধন। ির – ৩য় সংখ্যা : ₽8

স্থাতরাং ঐ সকল প্রাচীন ধর্ম বিচার করিবার সময়, আমরা যে ভাবে অপরের সময়ে বিচার করিয়া থাকি, সেরপভাবে যেন বিচারে অগ্রসর না হই, কিন্তু আমরা যেন সেই প্রাচীন কালের চিস্তাপ্রণালীর ভাবে আপনাদিকে ভাবিত করিয়া বিচার করি!

ওল্ড টেপ্টামেণ্টের নিষ্ঠুর জিফোভার বর্ণনায় অনেকে ভীত হইয়। থাকেন. কিন্তু ভীত হটপার কাবণ কি ? লে।কের টহা কলনা কবিবার কি অধিকার আছে যে. প্রাচীন যাছণীদিগের জিহোভা আজকালকার ঈশরের মত হইবেন গ আবোর ইহাও আমাদেব বিশ্বত হওয়া উচিত ন্য খে, আমাদের প্রে যাঁহারা আসিবেন, তাঁহারা, আমরা যে ভাবে প্রাচীনদের ধর্ম বা ঈশ্ববের ধারণায় হাস্ত করিয়া থাকি, আমাদেব ধর্ম বা ঈর্বরের ধারণায়ও সেই ভাবে হাস্ত করি-বেন। তাহা হইলেও এই সকল বিভিন্ন ঈশ্বর ধাবণা সোণার স্তায় এথিত, আর বেদান্তের উদ্দেশ্য এই স্ত্র আবিদ্ধার করা। একিঞ্চ বলিয়াছেন, ভির ভিন্ন মণি যেমন এক ফুত্রে গথিত, দেইরূপ এই সকল বিভিন্ন ভাবের ভিতরেও এক স্ত্র প্রবাহিত। আর আধুনিক ধারণাত্মানে মেগুলি যতই বীভংস, ভয়ানক বা ঘূণিত বলিগ্ৰা প্ৰতীয়মান হউক না কেন. বেদান্তের কর্ত্তবা ঐ সকল ধারণা এবং বর্তুমান ধারণা সকলের ভিতর এই সংযোগসূত্র আবিদার কর।। ভূতকালের অংস্থা লইয়া বিচার করিলে সে গুলি বেশ সঙ্গত দেখায়, আর বোধ হয়, আমাদের বর্তমান ধাবণা সকল হটতে অধিক বীভংস ছিল না। যথন আমরা সেই প্রাচীনকালের সমাজের অবতা, প্রাচীনকালের লোকের নৈতিক ভাব, যাহার ভিত্তর ঐ দেবভার ভাব বিকাশ পাইবার অবকাশ পাইয়াছিল. তাহা হইতে পৃথক্ করিলা সেই ভাবগুলিকে দেখিতে বাই, তথনই ভাহাদের বীভংমতা প্রকাশ হইয়া পড়ে। প্রাচীনকালের সমাজের অবস্থা এখন ত আর নাই! মেমন প্রাচীন মাত্রী বর্তমান তীক্ষুবৃদ্ধি মাল্দীতে পরিণ্ড হইম ছেন, যেমন প্রাচীন আর্ফোরা আধুনিক বুদ্ধিমান হিন্দুতে পরিণত হইয়াছেন, মেই-রূপ জিহোভার ক্রমোলতি হইয়াছে, দেবতাদেরও হইয়াছে। আম্রা ভুল করি এই যে, উপাদকের ত্রমোনতি স্বীকাব করিয়া থাকি, ঈথবের ক্রমোনতি ত্বীকার করি না। তাঁহার উপাসকদিগকে আমা উন্নতি করিতেছেন বলিয়া যেটুক্ প্রশংসাবাদ প্রদান করি, ঈথনকে ভাহাও দিতে নারাজ। কথাটা এই, তুমি আমি যেমন কোন বিশেষ ভাবের প্রকাশক বলিয়া ও ভাবের উন্নতির সংক্ষে তোমার আমার উলতি হইলাছে, দেইরপ দেবতারাও বিশেষ বিশেষ ३वा कांखन, ३७०१।] উদ্বোধন। 70

ভাবের ক্লোতক বলিয়া, ভাবের উন্নতির সঙ্গে সংগ দেবতারও উন্নতি হই-য়াছে। তোমাদের পক্ষে এইটা আংশচ্ব্য বোৰ ছইতে পারে যে, দেবতা বা দীরতের আবাৰ উন্নতি হয় কি 💡 এজপ্তাবে ধরিলে ইংগও ত ৰলা যায় যে, মীলুষেণ্ড কথন উল্লভি হল্প না। আমরা গরে দেখিব, এই মানুষের ভিতর ষে প্রত্যান্য রহিয়াছেন, তিনি অচল, অস্থিণ্যী, ভদ্ধ ও নিভান্ত যেমন এই মানুষ সেই প্রকৃত মানুষের ছারা মাত্র, তদ্রা প্রাদের স্বির্ধা ব কেবল আমানের মনের স্ট্রমাত্র – উহারা সেই প্রকৃত ঈর্বরের আংশিক প্রকাশ, আভাদনাত্র। ঐ সকল আংশিক প্রকাশের পশ্চানে প্রকৃত স্বর্ধর বহিয়াছেন, তিনি নিতাওদ্ধ, অপরিণামী। কিছু ঐ সকল আংশিক প্রকাশ সর্বাণাই পরি-ণামণীল—উহারা সেই পশ্চাতত সভাকে ক্রমশঃ ক্রমশঃ আরো প্রকাশ করি-তেছে: যখন উহারা সেই সভ্য অধিক প্রিমাণে প্রকাশ করে, তথন উহাকে উন্তিব ল, আর যথন উহা ঐ সভ্যের অধিকাংশ আরুত করিবা রাবে, তখন উহাকে অব তি বলে। এইরূপে যেমন আমাদের উল্লতি হয়, তেমনি দেবকারও উন্নতি হয়। মোটামুটী ধরিয়া গেলে, বেমন আমাদেব উন্নতি হয়, আমানের স্বরূপ যেমন প্রকাশ হয়, তেমনি দেবগণও তাঁহাদের স্বরূপ প্রকাশ ক্রিতে থাকেন।

একংশ আমনা মারাবাদ ব্ঝিতে সমর্থ হুট্র ভিগতের স্কল ধর্মুট এট এক প্রাম উত্থানিত করিষাছেন, জগতে এই অসামগ্রস্থা কেন ? জগতে এই অশুভ বেন্দ আমরা ধর্মভাবের প্রথম আর:জ্বর সময় এই প্রান্থ না, ভাহার কারণ আদিম মহুষোর পক্ষে জগৎ অসামঞ্জপুর্ণ বোধ হয় নাই। তাহার চত্ত দিকে কোন অসামঞ্জ ছিল না, কোন প্রকার মত্রিরোধ ছিল না, ভাল্মান্দর কোন প্রতিব্নিতা ছিল না। কেবল হাহাদের হৃদ্ধে ছইটা জিনিষের সংগ্রাম হুইত। একটা বলিত, এই কর, আর একটা ভাষা করিতে নিষেধ করিত। প্রাথমিক মনুষা ভাবেব দলে ছিলেন। তাঁহার মনে যাহা উদয় হইত, তাহাই ভিনি ক'রতেন। তিনি নিজের এই ভাব সম্বন্ধে বিচার করিবার বা উগকে সংখ্যা করিবার চেষ্টা মেটেই করিতেন না। এই সকল দেওভা সম্বন্ধেও एজে : ইটারাও উপস্থিত প্রবৃত্তির অধীন ছিলেন। ইন্দ্র আসিলেন, আর দৈত্যাবল ছিন্ন ভিন্ন করিয়া দিলেন। জিহোভা কাহার ও প্রতি সন্তই, কাহারও প্রতিবাকট; কেন—ভাহাকেই জানেনা, জিজ্ঞাসাও করে না। ইহার কারণ, তথন অনুসন্ধানের প্রবৃদ্ধিই লোকের জাগরুক হয় নাই, সুভবাং তিনি **উ**ष्टांशन । (०व-- ०व मरथा :

যাহা করেন, তাহাই ভাগ। তখন ভাগমন্দের কোন ধারণা নাই। আমরা যাহাকে মন্দ বলি, দেবতারা এমন অনেক কায় করিতেছেন; বেদে দেখিতে পাই, হলু ■ অঞাজ দেবতারা অনেক মন্দ কায় করিতেছেন, কিন্তু ইল্লের উপাসকদিগের দৃষ্টিতে পাপ বা অসং কার্য্য কিছু ছিল না, স্কুতরাং তাঁহারা সে সম্বন্ধে কোন প্রশ্ন করিতেন না।

নৈতিক ভাবের উন্নতির সহিত মান্থ্যের মনে এক যুদ্ধ বাধিল। মান্থ্যের ভিতরে যেন একটা নৃতন ইল্লিয়ের আবিভাব হইল। ভির ভির ভাষা, ভিন্ন ভির জাতি উঠাকে বিভিন্ন নামে অভিহিত করিয়াছেন; কেহ কেহ বলেন, উহা স্পারের বাণী, কেহ কেহ বলেন, উহা পূর্ব্ব শিক্ষার ফল; ষাহাই হটক, উহা প্রবৃত্তির দমনকালী শক্তিরপে কার্য্য করিগছিল। আমাদের মনের একটা প্রবৃত্তিতে বলে, এই কায় কর, আর একটা বলে, করিও না। আমাদের মনের একটা প্রবৃত্তিতে বলে, এই কায় কর, আর একটা বলে, করিও না। আমাদের মান্র ভিতরে কতক গলি প্রবৃত্তি আছে, দেগুল ইল্লিয়ের মান্য নিয়া বাহিরে যাইণার চেন্তা করিছেছে, আর তাহার পশ্চাতে, যতই ক্ষাণ হউক না কেন, আর একটা স্বর বলিভেছে, বাহিরে যাইও না। এই হুইটা বাপোরের সংস্কৃত্ত নাম—প্রবৃত্তি ও নির্তি। প্রবৃত্তিই আমাদের সকল কম্মের মূল। নির্ত্তি হুইতেই ধর্মের উদ্ধা। ধর্ম আরস্ত হয়, এই 'করিও না' হুইতে; আধ্যা-িয়াক তাও ঐ 'করিও না' হুইতেই আরস্ত হয়। যেগানে এই 'করিও না' নাই, সেথানে ধর্ম্মের আরস্তই হয় নাই, বুঝিতে হুইবে। এই 'করিও না'— এই নির্ভির ভাব আসিল। মান্থ্যের ধারণা ভাহাদের যুদ্ধনীল পাশবপ্রকৃত্তি দেবতাসত্তেও উন্নত হুইতে লাগিল।

একলে মান্ত্ৰের হৃদয়ে একটু ভালনাসা প্রবেশ করিল। অবশ্র খুন অন্ন
ভালনাসাই তাহ'দের হৃদয়ে অংসিয়াছিল, মার এথনপ্ত যে উহা বড় বেনী,
তাহা নহে। প্রথম উহা জাতিতে বছ ছিল; এই দেবগণ কেবল তাঁহাদের
সম্প্রদারকেই মাত্র ভাল বাসিতেন। প্রত্যেক দেবতাই জাতীয় দেবহামাএই
ছিলেন, কেবল সেই বিশেষ ভাতির রক্ষক মাত্রই ছিলেন। আর মনেক সময়
ঐ জাতির অক্ষেরা মাপনাদিগকে ঐ দেবতার বংশয়র বলিয়া বিবেচনা করিত,
যেমন ভিন্ন ভিন্ন দেশের বিভিন্ন বংশয়েরা আপনাদিগকে তাঁহাদের এক
সাধারণ গোঞ্জিপতির বংশয়র বলিয়া বিবেচনা করিয়া থাকে। প্রাচীন কালে
ক্তর্মতালি জাতি ছিল, এখনপ্ত আছে, য়ায়ারা আপনাদিগকে স্থা ও চল্লের
বংশয়র বলিয়া বিবেচনা করিত। প্রাচীন সংস্কৃত গ্রন্থ সকলে আপনারা স্থান্ত
সামান্তন, ১৯০৭। বিভালন ।

ধংশের বড় বড় বীর স্থাড় গণের কথা পাঠ কারখাছেন। ইহাবা প্রথমে চক্স স্থোঁর উপাদক ছিলেন; ক্রমশং আপনাদিগকে ঐ চক্রস্থাদেবের বংশবর বিশিয়া বিবেচনা করিতে লাগিলেন। স্কুলাং যখন এই জাতীর ভাব আদিতে লাগিল, তখন একটু ভালবাসা আদিল, পরস্পরের গুতি একটু কর্তব্যের ভাব আদিল, একটু দামাজিক শৃথা ার উংপত্তি হইল, আর অমনি এই ভাবও আনিতে লাগিল, আমবা পরস্পরের দোষ স্থাও ক্ষমা না করিয়া, কিরপে একতে বাস কবিতে পারি ? মাত্র্য্য কি করিয়া অন্ততঃ কোন না কোন সময়ে নিজ মনের প্রবৃত্তি সংয্য না বরিমা, জগরেয়— এমন কি, এক জনেরও সহিত্বাস করিতে পারে ? উহা অসন্তব। এইরণেই সংয্মের ভাবে আইদে। এই সংয্মের ভাবের উপর সমুদ্র দমাজ জাবিত, আর আনরা জানি, যে নর বা নারী এই স্থাবা ক্ষারণ মহান্ শিক্ষা না শিথিয়াছেন, তিনি অতি কটের জীবন যাপন করেন।

অত এব যথন এইরূপ ধর্মের ভাব আদিল, তথন মানুষের মান বিছু উচ্চতর, অপেক্ষাক্ত অধিক নীতিশঙ্গত একটু ভাবের আভাস আসিল। व्यक्तिन . দ . গ্র--- চঞ্চল, সন্ত্র পর্যণ, মত্রপায়ी. গোমাংমভুকু দেবগ্র-- মাহাদের দ্ম মাংশের গ্রে এবং তীব্র ফুবার আভতিতেই প্রম আনন্দ ছিল--ভাঁথ-দিগবে কেমন গোলমেলে ঠেকিতে লাগিল। কখন কখন ইলু হয় ত এত মদ্যপান কারতেছেন যে, তিনি মাটাতে পড়িয়া অবোরভাবে বকিতে আরম্ভ করিলেন! এরপ দেবভায় আর লোকের বিগাদ ভাপন অদন্তব হইল। তথন সকলেরই অভিনন্ধি অলেষিত—ভিজ্ঞানিত ২ইতে আবন্ধ হইয়াছিল— দেবতা,দরও কার্য্যের অভিস্থি জিজাসিত হুইছে আগিল। অমুক দেবতার অমুক কার্যোর হেওু কি ? কোন ৫০ ছুই পারিয়া গেল ন।। স্কুতরাং লোকে এই সকল বেৰেগ পরিভাগে করিল, অথব। ভাহরো দেশত র আরো উচ্ছতর ধারণা করিতে লাগিদ। ত হারা কেব তা দেই কাষাগুলির মধ্যে যে গুলি ভাল, যে গুলি তাহারা ব্কাতে পারিল, গেওলি দ্ব এব ত্রিভ করিল, আর যে গুলি বুঝি:ত পারিল না বা এ গুলি হাহাদে। ভাল বলিয়া বোধ ছইল না, সে গুলিকেও পুথক করিল; এই ভালগুলির সমষ্টিকে ভাহারা দেবদেব এই আখ্যা প্রদান করিল। তাঁংাদের উপায় দেবতা তখন সেবশুমার শক্তির পরিচায়ক রহি-লেন না, শক্তি হইতে আরও কিছু অধিক ভাঁধাদের পক্ষে আশ্রেষ্ঠ হইল। তিনি নীতিপরায়ণ দেবভা হইকেন; তিনি ম মুধকে ভালবাসিতে লাগিলেন, উদ্বোধন ৷ bb [৩য়---৬য় সংখ্যা ;

ভাষ্য ৷— কেবলং সন্তপ্ত দিমাত্ত কণমের তথ্য কর্মাণঃ খাই যক্ষাই কামেন মনসা বৃদ্ধান কেবলৈম মন্তব জিনিত রীশ্বারৈর কর্মা করেমিন মম ফলায় ইতি মম্ববৃদ্ধিশুরৈজি দৈরপি কেবলশকঃ কায়।দিভিরপি প্রত্যেকমভিসম্বধ্যতে সর্ক্রি।পারের মুম্বতাবর্জনায় যোগিনঃ কর্মিণঃ কর্মা কুর্বন্তি সৃত্ত তাজ্য কল-বিষয় মুয়া শুদ্ধিয়ে স্বত্ত দর্বের স্বত্ত দর্বের স্বত্ত দর্বের স্বত্ত দর্বের স্বত্ত দর্বের স্বত্ত দর্বের ইতার্থঃ। তক্ষাৎ তবৈর তব।ধিকারঃ॥ ১১॥

ভাষ্যান্বাদ।—তাথার কর্মের ফল কেবল চিন্তগুদ্ধিই হয়, যে হেতু দেহ মন বৃদ্ধিরারা এবং কেবল ইন্দ্রিয়নিচয়ের দারা যোগী (অর্থাৎ) কর্মিগণ সকল ব্যাপারেই মমতা বর্জন করিবার জন্ম সঙ্গ পরিত্যাগ করিয়া আত্মন্তবি (অর্থাং) চিন্তগুদ্ধির জন্ম কর্মের অন্থন্তান করিয়া থাকে। এই শোকে 'কেবল' এই শন্দ্রীর অর্থ মমত্ববৃদ্ধিশ্ন্তা (অর্থাং) মমতাবর্জিন্ত, আমি ঈশ্রার্থ কর্মা করিতেছি, ইহার ফল আমার লক্ষ্য নহে, এই প্রকার বৃদ্ধি দারা যে ইন্দ্রিয় পরিচালিত হয়, তাহাকেই 'কেবল ইন্দ্রিয়' বলা যায়। দেহাদি প্রত্যেক পদার্থের সহিত 'কেবল' শন্দের অন্থয় করিতে হইবে। সেই কারণে সেই কর্মেন্তেই তোমার অধিকার, এইজন্ম তুমি কর্ম্মই করে॥১১॥

যুক্তঃ কর্মা কণং ত্যক্ত্বা শান্তিমাপ্নোতি নৈষ্টিকীম্। অযুক্তঃ কামকারেণ ফলে সংক্তা নিবধাতে ॥ ১২ ॥

অবয় ।--- যুক্তঃ কর্মফলং ত্যক্ত্য নৈষ্টিকীং শান্তিমাপ্নে:তি, অযুক্তঃ কাম-কারেণ ফলে সক্তঃ নিবধ্যতে ॥ ১২ ॥

মূলাত্বাদ। — ঈশ্রার্থ কর্মাকক্তা কর্মাকলকে ঈশ্বরে পরিভ্যাণ করিয়া, নৈষ্টিকী শান্তি লাভ করিতে পারে। অযুক (অর্থাং ঈশ্বরার্থ কর্ম্মের অমুষ্ঠান যে না করে, সেই অযুক্ত) ব্যক্তি বামনা বশে ফলে স্কু হইয়া নিবন্ধ হইয়া গাকে॥ ১০॥

ভাষ্য।—যশ্যাচন যুক্ত ঈথরার বর্ণ্যাণি ন মম ফলার ইত্যেবং সমাহিতঃ
সন্ কর্মফলং ত্যক্ত্বা পরিভাজ। শাস্তিং মোক্ষাখাণে আপ্রোতি নৈটিকীং,
নিষ্ঠারাং ভবাং, সন্থভদিজ্ঞানপ্রাপ্তিস্ক্রিক্ম্মণ্ড্যাস্থ্রলনিষ্ঠাক্রমেণ ইতি
বাক্যাশেষঃ। যস্ত পুনরযুক্তোহসমণ্ড্ডঃ কামকারেণ করণং কারঃ কামস্থ
কারঃ কামকারঃ তেন কামকারেণ কামপ্রেরিডভারা ইতার্থঃ। মম ফলার
ইদং করে।মি কর্ম্ম ইড্যেবং ফলে সক্তো নিবধাতে, অভবং যুক্তোভ্রেরভারা। ১২॥

ভাষাস্থাদ।—(আরও) যে কারণে যুক্ত, (স্থাৎ) ঈশবের জন্মই কর্মা, আমার কবের জন্ম নহে, এই প্রকার নিশ্চয়বিশিষ্ট (কর্ম্মী) কর্মাফলকে পরি-ভাগা করিয়া, নৈটিকী (অর্থাৎ) জ্ঞাননিষ্ঠার কলস্বরূপ মোক্ষনামক শান্তিকে লাভ করিয়া থাকে, (অর্থাৎ) "কর্মাফ্রান করিতে করিতে ক্রমে চিত্ত দ্ধি, জ্ঞানপ্রাপ্তি, দর্শ্বকর্মগংনাস ক্র জ্ঞাননিষ্ঠা লাভ করিয়া," (পরে মোক্ষ্ লাভ করিয় পারে), এতদূর পর্যান্ত বাক্ষের শেষাংশ। যে ব্যক্তি কিন্ত অযুক্ত, (অর্থাৎ) অসমাহিত (যাহার ফলে কামনা আছে, ঈশবার্থ কর্মের অনুষ্ঠান নাই,তাহাকেই অসমাহিত বলা যায়), দে ব্যক্তি, কামকাব দ্বারা, (অর্থাৎ)"আমি ফল লাভেব জন্ম কার্য্য করিতেছি," এই বৃদ্ধিতে ক্লে আসক্ত হইয়া নিবদ্ধ হয়। কার শব্দের অর্থ করণ, কামের কবণ এই তাৎপর্য্যে কাম কার শব্দটী এই স্থানে প্রফুক্ত হইয়াছে মুকামকার দ্বারা এই প্রাকাব প্রদাগ করিলে বুঝা যায় যে কামের প্রেরণায়। এই কারণে ভূমি যুক্ত হও ইহাই অর্থা ১২ ৪

দর্শকর্মাণি মন্দা সংস্থাতে তুবং বশী। নবদারে পুরে দেহী নৈব কুর্পন্ন কার্যন্ধ ১৩ ।।

অস্বগ ।—-বলী (ক্তিন্তি জিংঃ) দেহী স্ক্কেশ্বাণি মন্সা সংগ্ৰহণ নৈৰ কুৰ্কন্, (নবা) কাবয়ন, নবদাৱে পূৱে স্থাং (যথাসাং তথা) আত্তে ॥ ১৩॥

ম্বাস্বাদ।—জিতেজির দেহী নিজে বোন প্রকাব কর্ম না করিরা, কিছা কাহার ও দাবা না করাইয়া, বিবেকবুদ্ধিদারা সকল প্রকার কর্মের অভিমান পরিহার পূর্কক নব্দার পুব স্থারপ এই দেহে সুথে বিজ্ঞান থাকে ॥ ১৩॥

ভাষা।—যন্ত পরমার্থদর্শী দ দর্বাণি কথাণি দর্বকর্মাণি সংস্কৃত্য পরিভ্যজ্য নিতাং নৈমিত্তি কং কামাং প্রতিধিদ্ধং চ দর্বকন্মাণি তানি মনসা বিবেকবৃদ্ধা কর্মাদাবকর্মদর্শনেন দংতাজোত্যর্গঃ। স্বাস্থে তিউতি স্থাং ত্যক্তবাঙ মনঃকাম-চেন্তে। নিরায়াদঃ প্রদর্গতিত্ব সাম্মনোহস্তত্র নির্ত্তবাস্থ্যবিধ্যাজন ইতি স্থেমাস্তে ইত্যালতে বন্ধী জিতেন্দ্রিই ইত্যর্থং ক কণমাস্তে ইত্যাহ নবদারে পুরে দপ্তশীর্ধণানি আত্মন উপলব্ধিদারাণি অর্দাণ্ ছে মৃত্যপুরীষ্বিদর্গার্থে তৈছা বিন্ধবিদ্ধারণ পুরে দপ্তশীর্ক পুরুষ্টিতে শরীরং পুরুষ্বি প্রমাইস্কেক্সামিকং তদর্গপ্রয়েজনৈশ্চেন্দ্রিমমনো-কৃষ্ণিবিশ্বরৈরনেকক্ষণবিজ্ঞানস্থোৎপদাকৈঃ পৌরৈহিবাধিন্তিওং তামিন্ নবদারে পুরুষ্বে দেহী দর্মং কর্ম সংস্কৃত্যান্তে ॥ ১৩ ॥

ভাষ্যাস্থ্ৰাদ ।—বে ব্যক্তি কিন্তু পরমার্থদর্শী, দে ব্যক্তি সকল কর্ম্ম পরিভ্যাগ ১০ উধ্যেধন। [.৩য়—৩য় সংখ্যা; ক্রিয়া (ক্ষর্থাৎ) নিতা নৈমিতিক কাম্য । প্রতিষিদ্ধ এই সর্বপ্রকার কশ্ব, মনঃ (ক্ষর্থাৎ) বিবেকরুদ্ধির বারা কর্মাদিতে অকর্মাদৃষ্টির সাহাযো পরিত্যাপ করিয়া, বশী, (ক্ষর্থাৎ) জিভেন্সির বাক্তি, স্থাধে অবস্থিতি করে, (ক্ষর্থাৎ) বাক্য মনঃ ও কারের চেষ্টা পরিহারপ্রবিক, বিনা আয়ানে, প্রসম্ভিতে, আত্মবাতিরিক্ত সকল বস্তুতে বাহ্ প্রেয়ান্ধন বুদ্ধির নির্ভি করিয়া অবস্থিতি করাকেই, প্রথের দহিত অবস্থান বলা যায়। কোথার, কি প্রকারে অবস্থিতি করে । তোহাই বলা হইতেছে) নবধারযুক্ত পুরে। আত্মার উপলব্ধির ধারশ্বকপ সাত্তী ছিল্ল শীর্ষে এবং মূল্ল ও পুরীষের পরিত্যাগের জন্ম নিম্নেহে তুইটী ছিল্ল, এই নয়টী ধারের সহিত যুক্ত শরীরকে পুর বলা যায়, কারণ ইহাও পুরের ন্যায়, প্রভূগানীয় এক আত্মার ভোগের সাধন; ইন্সিয় মন এবং বৃদ্ধির বিষয়, আত্মার ভোগসাধন, নানাজাতীয় ফল ও বিজ্ঞানের উৎপাদক—শক্ষপ্রশাদিক্ষপ পুরবাসিজনও এই দেহরূপ পুরে বাস করিয়া থাকে; সেই নব্ধারযুক্ত পুরে পুর্বোক্তি জিভেন্সিয় ব্যক্তি স্থিধ বাস করিয়া থাকে। ১৩ ।।

ভাষাাম্বাদ।—বিশেষ করিয়া বলিবার কি প্রয়োজন ? সংস্থাসী বা অসংক্রানী সকল দেহীই দেহেতেই অবস্থান করিয়া থাকে, স্ক্রাং জিতেল্লির তন্ত্বজ্ঞানী দেহেতে প্রথে থাকেন, এই প্রকারে বিশেষ করিয়া বলা নিপ্রয়োজন।
এই প্রকার শক্ষার সমাধান করিবার জ্লা বলা যাইতেছে যে, যে ব্যক্তি অল্জ (অর্থাৎ) দেহ ও ইল্লিয়নিচয়ে যাহার আত্মাভিমান আছে, সাধারণতঃ সে বিবেচনা করিয়া থাকে যে, আমি ভূমিতে বা আসনে আছি। যাহার দেহেতে আত্মজ্জান আছে, সে যেমন গৃহে আছি ইহা ভাবিয়া থাকে, সেইরূপ আমি দেহে আছি এই প্রকার ভাবিতে পারে না। যে বাক্তি কিছু দেহ ও ইল্লিয়াছি ১লা মান্তন. ২০০৭। } উল্লেখন।

হইতে আত্মাকে পৃথক বলিয়া জানিয়'ছে, তাহারই "আমি দেহেতে আছি" এই প্রকার প্রতীতি হইতে পারে। আত্মা ২ইতে ভিন্ন দেহাদির কর্মা, অবিল্যা-প্রভা-বেই আত্মাতে আরোপিত হইয়া থাকে, সেই সকল আরোপিত কর্মের সংস্থাস বিতার প্রভাবেই হইয়া থাকে। যাহার বিবেকজ্ঞান উৎপন্ন ইইয়াছে এবং ধে ব্যক্তি দর্বকর্মসংস্থাদী তাহার পক্ষেই এই নব্দারযুক্ত পুরন্ধরূপ দেহে গুহের ক্তায় স্থিতি প্রতিপন্ন হয়। যে কর্মা ফল দিতে আরপ্ত করিয়াছে তাহার অব-শিষ্টাংশ ও তাহার সহকারী সংস্কারেব অকুবৃত্তি অপরিহার্যা, এই কারণ এই দেহ থাকিতে থাকিতেই, ভাহার বিশেষ জ্ঞানের উৎপত্তি হইলেও সে দেহেতেই স্বথে অব্তিতি করে, এই প্রকার বিশেষ করিয়া নির্দ্ধে করা যুক্তিযুক্ত হইয়াছে। বিহান ও অবিদ্বানের জ্ঞানের পার্থকাকে অপেকা করিয়াই, এই প্রকার বিশেষ নির্দেশ করা হইয়াছে I ১৩ II

ভাষা — যক্তপি কার্যকেরণ ক্ত্রাণি অবিভাষা আত্মনি অধ্যাবোপিতানি সংগ্রদান্তে ইত্যুক্ত তথাপি আল্লামনানিত কর্ত্তং কার্ণিত্রঞ কানিতাশিক্ষাহ নৈবকুর্বন স্বয়ং ন কার্যাকরণানি ক্রিয়াস্থ প্রবর্ত্তরন। কিং যং তৎ কর্তৃত্বং কাররিভুত্ক দেহিন স্বায়সমবায়ি সং সংস্থাধার ভবতি যথা গচ্চতোগতির্গমন-ব্যাপারপরিত্যালে ন স্থাৎ তদ্ধ কিংব। স্বত এলাক্সনোনান্তি। অত্যোচ্যতে নাস্ত্যাত্মনঃ স্বতঃ কর্ত্ত্ই কারাধিত্রক উক্তংহি "ক্ষিকার্যোহ্যমূচ্যতে" শ্রীর-স্তোহপি কৌতের ন করোতি ন লিপাতে ইতি "ধ্যায়তীয় লেলায়তীব" ইতি 🛭 প্রতিঃ ॥ ১৩॥

ভাষ্যাত্বাদ।—যদি চ এই স্লে দামান্ততঃ বলা হইয়াছে যে, "কাৰ্য্য (দেহ) ও করণ (ইক্সিম্ব) প্রভৃতির ধর্ম অজ্ঞানের দারা আত্মাতে আরোপিত **চ্ট্রাথাকে** তাহার সংস্থাস করিয়া দেছে অব্স্থিত হয়। তথাপি আত্মার নিজকর্ত্ত্ব ও কার্মিত্ত্বও হইতে পারে ? এই প্রকার শঙ্কা করিয়া ভাহার উত্তর স্বরূপে বলা হইভেছে যে, আত্মা নিজেও কোন প্রকার কার্ণ্য না করিয়া অথবা দেহ বা ইন্দ্রিয় নিচয়কে কোন কার্য্যে প্রবর্ত্তিত না করিয়া এই দেহে স্ব্ৰে অবস্থিতি কং িয়া থাকেন। এইক্ৰে জিল্ডাদা হই তেছে যে যেমন কোন ব্যক্তি স্বয়ং গ্ৰমন করে এবং ভাহাব গ্ৰমনান্তকুলব্যাপারের নিবৃত্তি হটলে, সেই ব্যক্তির গমনের অভাব হয়, সেইরূপ আস্থার স্বভাবদিদ্ধ কর্ত্তম কিম্বা কার্য্যিত্য সংস্থাদের দারা নিবৃত হুইয়া থাকে, ই৽াই বুঝান হুইতেছে ? অথবা স্বতই আত্মাতে কর্ত্ব বা কার্মিত্ত নাই, ইহাই বুঝান হইতেছে ? ইহার উত্তর ा स्थाकार्थ 2 %

শ্বরূপে এই বলা ছইতেছে যে,আত্মার শ্বতঃ কর্তৃত্ব বা কার্য়িতৃত্ব নাই, কারণ এই গী হাশাল্রেই বলা ছইয়াছে যে, "অধিকার্য্যোহয়মূচ্যতে" (আত্মা অবিক বলিয়া শাল্রে নির্দ্ধিট ছইয়া থাকে), "শরীরস্থোহপি ন কোস্তেয় ন করেতি ন লিপ্যতে" (হে কৌস্তেয় আ্ আ শরীরস্থিত ছইলেও কিছু করে না এবং কোন প্রকার পাপপুণো লিপ্ত হয় না) এবং শ্রুতিতেও উক্ত ছইয়াছে যে "ধ্যায়তীব, লেয়গাতীব" (আ্ আ ধ্যাতা ও ক্রীড়াকর্তার লায় প্রতীত হয়) ॥ ১৩ ॥

ন কর্তিং ন কর্মাণি লোকস্ত স্কৃতি প্রভঃ। ন কর্মফলসংযোগং সভাবস্ত প্রবর্তে॥১৪।।

অষয়।—প্রভূ: (আয়া) লোক দ কর্তিং কর্মাণি বান স্কৃতি (তথা) কর্মিলসংযোগং ন স্কৃতি, স্থাবস্তু প্রকৃতি ॥ ১৩ ।

মূলাক্লবাদ।—প্রাভূ (আত্মা) শোকের কর্ভুত্ব কর্মনিচয় কিংবা কর্মফল-সংব্যক্তর কৃষ্টি করেন না, কিন্তু শ্বভাব নারা) ক্ষাং প্রাকৃত হইয়া গাকে। ১৪।।

ভাষা।—ন কর্জমিতি। ন কর্ত্ব সতঃ কুর্নিতি নাপি কর্মাণি রথঘট-প্রামাদাদীনি ঈপ্সিত্তমানি লোকস্থ স্কৃতি উৎপাদয়তি প্রভ্রাম্মা নাপি রথা-দিরতবতঃ তংকশেন সংযোগং ন কর্মফলসংযোগং। যদি কিঞ্চিদপি সভোন করোতি ন কাংয়তি চ দেখী কস্তহি কুর্নান কারয়ংশ্চ প্রবর্ত্ত ইত্যু-চাতে স্বভাবস্ত স্বোভাবঃ স্বভাবঃ অবিজ্ঞাদমণা প্রকৃতিম্যাল প্রবর্ত্তে দৈবী হীত্যাদিনা বৃষ্ণমাণা॥ ১৪॥

ভাষাামুবাদ।—ন কতৃত্বং ইত্যাদি (শোকের অর্থ) "প্রভূ" আত্মা স্বরং কোন প্রকারে কর্তৃত্ব করেন না এবং "তুমি কর্ম কর" ইত্যাদি প্রকারে প্রেরণা হার। কাহাকেও রথ ঘট বা প্রাসাদাদি নির্মাণ কাষ্যে প্রবৃত্তিত করেন না। কিংবা যে ব্যক্তি রণাদি কার্য্যের উৎপাদন করে, তাহার অভিলহিত কলের সম্বন্ধরূপ যে কল্মফল-যোগ ভাহাও করেন না। আত্মা যদি প্রং কিছুই না করেন এবং অপরের হারাও না করান, তাহা হইলে কে তবে করে বা করাইযা থাকে ? এই প্রকার জিজ্ঞাসার উত্তর স্বরূপে বলা যাইতেছে যে, স্বভাব (অর্থাং) অবিভারাক্ষিণী প্রাকৃতি মায়াই প্রেরত্ব হইয়া থাকে; দৈবীহেষা ইত্যাদি প্রোকে এই স্বভাবের পরিচয় দেওয়া যাইবে॥ ১৪॥

নাদতে কফাতিৎ পাপং । চৈব স্কৃতং প্রভূ:। অজ্ঞানেনাবৃতং জ্ঞানং তেন মুহান্তি জ্ঞাবং ॥ ১৫ ॥

আৰয়।—প্ৰাভূ: কস্তচিৎ পাপং ন সাদত্তে, (তথা কস্তচিৎ) সুকৃতং ■ হৈব (স্থাদত্তে) সজ্জানেন জ্ঞানং আবৃতং তেন জন্তবঃ মুহ্নি ॥১৫॥

মুলামুবাদ।— আত্মা কাহারও পাপ বা পুণা গ্রহণ করেন না; অজ্ঞা-নের দারা জ্ঞান আবুত ১ইয়াছে, সেই জন্ম প্রাণীস্কল মুগ্গ হয়॥ ১৫॥

ভাষা।—পরমার্থস্ত না দত্তে ন গৃহাতি ভক্ত হাপি কম্মতি পাপং নটেবাদত্তে স্কক্তং ভক্তৈঃ প্রযুক্তং বিভূঃ। কিম্বাং তর্হি ভক্তিঃ পূজাদিলক্ষণং
যাগদানগোমাদিকং চ স্কুক্তং প্রযুজাত ইত্যাহ অজ্ঞানেন আরুহং জ্ঞানং
বিবেকবিজ্ঞানং, তেন মুফ্সি করোমি কার্য়ামি ভোক্ষো ভোজ্যামি ইত্যেবং
মোহং গক্তি অবিবেকিনঃ সংসানিধাে জন্তবঃ ॥ ১৫ ॥

ভাষ্যাধ্বাদ।—প্রমার্গতঃ কিন্তু প্রভু (আয়া) কোন ভভেত্রও পাপ প্রাছণ করেন না অথবা ভক্তগণের প্রাদত্ত পুণাও গ্রহণ করেন না। (তিনি যদি প্রাছণ না করেন) তবে ভক্তগণ কেন পূজা বা জপ সোমাদিরূপপুণা উছাকে অর্পণ করে ? (ইছাব উত্তব এই যে) অজ্ঞানের দ্বারা (জীব-গণের) বিবেকবিজ্ঞান আবৃত হইয়া থাকে, এই কারণ অবিবেকী সংস্থী জীবগণ "আমি করিছেছি, আমি করাইছেছি, আমি ভোগ করি, আমি ভোগ করাইতেছি," ইত্যাদি প্রকার মোহ প্রাপ্ত হইয়া থাকে ॥১৫॥

> জ্ঞানেন তু তদজানং যেবাং নাশিত্যাত্মনঃ। তেবামাদিতাবজ্জানং প্রকাশয়তি তৎপরং॥ ১৬॥

শবয়।—যেষাং তু তদজ্ঞানং আত্মনঃ জ্ঞানেন নাশিতং, তেষাং জ্ঞানং শাদিত্যবং তংপরং প্রকাশয়তি॥ ১৬॥

মূলামুবাদ।—যাহাদের কিন্ত সেই অজ্ঞান, আত্মজ্ঞানের হারা নাশিত হইরাছে, তাহাদের আদিভেয়র ভাষ (নির্মাণ) জ্ঞান পরব্রহ্মের স্থারপ প্রকাশ করিয়া থাকে। ১৬॥

ভাষা।—জানেনেতি। জ্ঞানেন তৃ যেন অজ্ঞানেনার্তা মৃহৃত্তি জ্ঞাবঃ ভদজানং যেষাং জ্ঞানং বিবেকজ্ঞানেন তৃ আত্মবিষয়েণ নালিতমাত্মনা ভবতি তেষামাদিত্যবদ্ যথাআদিতাঃ সমস্তং রূপজাতং প্রকাশয়তি, তহজ্ জ্ঞানং জ্যেরং বহুসর্কং প্রকাশয়তি তৎপরং পর্মার্থতত্ম্॥ ১৬॥ ভাষাানুবাদ। — জ্ঞানেন ইত্যাদি শ্লোকের অর্থ। যে ক্ষজানের হারা আরুত হইরা প্রাণীসকল সোহ প্রাপ্ত হয় সেই ক্ষজ্ঞান, যাহাদের আঞ্বেষিয় বিবেক নিজ্ঞান দারা নাশিত হয়, আদিতা যে প্রকার সকলরপকে অবভাসিত করে, সেইরূপ তাহাদের সেই জ্ঞান ক্ষেয় বস্তু (অর্থাং) সেই পরমার্থত তা বন্ধকে সর্বন্ধ প্রবাশ কবিয়া থাকে॥ ১৬॥

ভদ্বুজণভদা আনভারিঠাভংপণারণাঃ। গছেঙাপুনরাবৃত্তিং জাননিধৃতিক্লয়াঃ॥ ১৭॥

আরয়।— তদ্বুদ্ধয়ঃ তদাখানঃ তলিজ;ঃ তৎপরারণাঃ জ্ঞাননিধৃতিকশাষাঃ অপুনরাবৃতিং গচ্জি ॥ ১৭ ॥

ম্লান্থবাদ। — যাহাদের বুদ্ধি পরমায়নিষ্থিনী, যাহারা পরব্রহ্মকেই আছা বিলিষা বুঝি গ্রেছ, যাহাদেব পরব্রহ্মই নিষ্ঠা, যাহাদেব পরব্রহ্মই পরাম্প এবং যাহাদের জ্ঞানের উদয়ে সকল প্রকার পাপ দৃব হইরাছে, ভাহারাই মোক্ষণাভ করিতে পারেন। ১৭॥

ভাষ্য — যংপরং জ্ঞানপ্রকাশিতং ! তুমিন গতা বুদ্ধির্থেষ্ তদ্বৃদ্ধরঃ তদায়ানঃ তদেব পরং ব্রহ্ম আয়া যেষাং তে তদায়ানঃ তদির পিরং আজি নিষ্ঠা অভিনিবেশস্তাংপর্যাং সকালে কর্মানি সংগ্রম ব্রহ্মণ্যের অবস্থানং থেষাং তে ভারিটাঃ তংপরায়ণাশ্চ তদেব পরময়নং গতিষেষ্যং ভবতি তে তৎপরায়ণাঃ কেবলায়রতয় ইত্যথঃ ৷ যেবাং জ্ঞানেন নাশিতমায়নোহজ্ঞানং তে গাহ্নজ্ঞাবংবিধা অপুনরাবৃত্তিং অপুনর্দেহসম্বর্ধ জ্ঞাননিবৃত্তিক লামা যথোকেনজানেন নির্দ্ধা নাশিতঃ কল্ময়ঃ পাপাদিসংসারকারণদোষো যেযাং তে জ্ঞাননিবৃতিক ক্রমা যুত্য হত্যথঃ ৷ ১৭ ॥

ভাষাত্বাদ ৷— যে প্রমত্ব জ্ঞানের দ্বারা প্রকাশিত হয়, তাথাকেই
যাথানের বৃদ্ধি অবলম্বন করে, তাথারাই "তদ্বৃদ্ধি" (এই শব্দের দ্বারা প্রভিগাদিত হয়), সেই প্রব্রহ্মই যাথানের আত্মা, তাথারাই "তদাত্মা" (এই
শব্দের দ্বারা প্রতিপাদিত থইতেছে), সেই প্রব্রহ্মই যাথাদের অবস্থান তাথারাই 'তলিও'', সেই প্রব্রহ্মই যাথাদের প্রম গতি তাথারাই "ত্থপ্রায়ণ" (অর্থাৎ) কেবল আত্মাতেই যাথাদের অনুরাগ, (তাথারাই এই
সক্ষ বিশেষণের দ্বারা প্রতিপাদিত হইতেছে), যাথাদের সেই আত্মার
সম্ভান জ্ঞানের দ্বারা নাশিত থইয়াছে, তাথারাই জ্ঞাননিধৃতিক্ষ্মই ছইয়া
১লাংক্রন, ১৩০৭।] উদ্বোধন।

(অর্থাৎ) পাপ প্রভৃতি সংগারকারণ দোষ সকল, জ্ঞানের দারা বিনাশিত করিয়া) "অপুনরাবৃত্তি" পুনর্কার দেহের সহিত অসম্বন্ধ (অর্থাৎ) মোক্ষ লাভ করিয়া থাকে, যাতগণই এই প্রকার লক্ষণসম্পন্ন ইহাই অর্থা ১৭॥

> বিক্সাবিনয়সম্পঞ্জ ব্রাহ্মণে গবি হস্তিনি। শুনিটেব শ্বপাকে চ প্ৰিভাঃ সমদর্শিনঃ॥ ১৮॥

সংঘ্য।—প্তিছাঃ বিত্যাবিনয়সম্পন্নে ব্ৰাহ্মণে গ্ৰি, হস্তিনি, শুনি খুপাকে চস্মদৰ্শিনঃ (ভ্ৰস্তি)॥ ১৮॥

মুলাত্বাদ।—-বাঁহাদের অায়তত্বজ্ঞান হইয়াছে, তাঁহার। বিভাগ ও বিনয়-যুক্ত বাহ্মণ, গো, হতী, কুরুর ও খগাক প্রভৃতি দক্ল জীবেই সমদৃষ্টিযুক্ত হইয়া থাকেন॥ ১৮॥

ভ্রা।— ষেষাং জ্ঞানেন নাশিত্যায়নোহজ্ঞানং তে পণ্ডিতাঃ কথং তত্ত্বং পশ্যন্তী কূচাতে বিভাবিনয়সম্পলে বিভা চ বিনয়শ্চ বিভাবিনয়ৌ বিনয় উপশমঃ তাভাং বিভাবিনয়াভাং সম্পল্পে বিভাবিনয়সম্পলা বিদান বিনী-ভেশ্চ যে। ব্রহ্মণস্তিমন্ বাদ্ধণে গবি হন্তিনি শুনি চৈব খপাকে চ পণ্ডিতাঃ সমদর্শিনঃ বিভাবিনয়সম্পানে উত্তমহারাবিত প্রাহ্মণে সাজিকে মধ্যমায়াং চ রাজভাং চ গবি সংস্থারহীনায়াং অত্তম্ভমেব কেবলভামসে হন্ত্যা-দৌচ সত্ত্বনি গুলৈঃ তকৈ সংস্থাবৈত্তথা রাজদৈওথা তামসৈশ্চ সংস্থাবৈত্তথা বাদ্ধিনঃ বিভাবিনয় কিলি ক্ষা বিভাগি বিভাবিন ক্ষা বিভাগি বিলি ক্ষা বিভাগি বিভাগি সম্পানির দিওবৈঃ

ভাষ্যাস্বাদ।— যাহাদের আত্মবিষয়ক অঞান, জ্ঞানের ছারা নাশিত
হয়, সেই সকল পণ্ডিতগণ কিরপ তত্ব দর্শন করিয়া থাকেন (তাহাই বলা
যাইতেছে বে), "নিজ্ঞাবিনয়সম্পর" বিজ্ঞা ও বিনয় (এই প্রকার তাৎপর্য্যে)
বিজ্ঞাবিনয় (শক্ষটী ব্যবহৃত হইয়াছে), সেই বিজ্ঞাবিনয় যাহার আছে,
সে বিজ্ঞাবিনয়সম্পার। এই স্থলে বিনয় শক্ষেব অর্থ উপশ্য, (অর্থাৎ) বিদ্বান্
ও বিনীত ব্রাহ্মণে, গরুতে, হাতীতে, কুরুরে এবং চপ্ডালে (সর্ব্বত্রত) পণ্ডিতগণ
সমদর্শী হইয়া থাকেন। ব্রাহ্মণ উত্তমসংস্থারয়ুক এ সম্বপ্রকৃতিসম্পার বারং একং একেবারে সংস্থারহীন এবং কেবল তমংপ্রকৃতিসম্পার হস্তিপ্রভৃতি এই সকল প্রকার জীবের মধ্যে অবস্থিত হইয়াও যাহা,
সম্বাদিশুণ ও ভজ্জনিত সংস্থার এবং রাজস ও ভামস সংস্থার ছারা
১৬ উর্বোধন। [গ্রহ—গ্রু সংখ্যা;

seर कासन ; वर्ष मत्था ; soon साम्

1259009

প্রাচ্য

श्वामी िदवकानमा।]

আমাদের দেশের চেরে ইউরোপে ও আমেরিকার মলম্তাদি তাানে বড়ই লজ্জা। আমরা ইচ্ছি নিরামিবভোজী — এক বাঁড়ি ঘাদ পাত আহার। আবার বেজার গরম দেশ, এক দমে লোটাভর জল থাওরা চাই। পশ্চিমী চাষা সেরভর্ছাভু থেলে; তার পর, পাতকোকে পাতকোই থালি করে ফেল্লে, জল থাওরার চোটে। গরমী কালে জামরা বাঁশ বার করে দিই, লোককে জল থাওয়াতে। কাজেই দে দব যার কোথা বল। দেশ বিষ্ঠান্ত্রময় না হয়ে যার কোথা? গরুর গোরোল, ঘোঁড়ার আন্তাবল, আর বাহ, নিসির পিঁজরার তুলনা কর দিকি।

কুকুর আর ছাগলের তুলনা কর দিকি ? পাশ্চাত্য দেশের আহার মাংসময়, কাজেই অল ; আর ঠাণ্ডা দেশ, জল ফল থাওয়া নাই বলেই হয়।
ভদ্রণোকের খুদে খুদে মাসে একটু মদ থাওয়া। ফরাসীরা ভলকে বলে,
ব্যালের রস ; তা কি খাণ্ডয়া চলে ? এক আমেরিকান জল থায় কিছুবেশী,
কারণ ওদের দেশ গ্রমী কালে ভরকর গ্রম, নিউইয়ক কলকেতার চেয়েও
গ্রম। আর জর্মান্রা বড্ড 'বিষর' পান করে, কিন্তু সে খাবার সঙ্গে নয় বড়।

ঠাণ্ডা দেশে দর্দি লাগ্বার সদাই সভাবনা; গরম দেশে থেতে বদে ঢক্ ঢক্ জল। এরা কাজেই না হেঁচে যায় বোথা, আরে আমরা চেঁকুর না তুলেই বা যাই কোথা। এখন দেখ নিয়ম—এ দেশে খেতে বদে যদি ঢেঁকুর ভুলেছ, ত দে বেআদবীর আর পার নাই। কিন্তু জ্মাল বার করে, তাতে ভড়্ ভড়্ করে সিক্নি ঝাড়, এদের ভার শোহর না। আমাদের ঢেঁকুর না তুল্লে নিমন্ত্রক খুসীই হন্ না; কিন্তু পাঁচজনের সঙ্গে খেতে খেতে ভড় ভড় করে সিক্নি ঝাড়াটা কেমন ?

ইংলতে, ভাষেরিকায় মলমূত্তের নামটি আন্বার যো নাই, মেয়েদের
সামনে। পাইখানায় যেতে হবে চুরি করে। পেট গরম হরেছে, বা
পেটের বোনও প্রকার জহুথের কথা মেয়েদের সাম্নে বলবার যো নাই।
অবভা বুড়ী টুড়ী আলাদী আলালা কথা। মেয়েরা মলমূল চেপে মরে বাবে,
কুইবুও প্রথমের সাম্নে নামটিও আন্বেনা।

খেলর সামি দেশে অত নয়। মেরেদের মলমূত্রের স্থান, তার আর একটা দোর প্রক্ষণের অনেক স্থানে এক দোন দর অলোদা। এরা এ দোর দিরে যাছে, ওরা এ দোর দিরে যাছে। রাজার ছ ধারে মাঝে মাঝে প্রপ্রাবের স্থান, তা খালি পিঠটা ঢাকা পড়ে মাত্র মেরেনা দেপছে, ভাষ লজ্জা নাই, আমাদের মত। অবশ্র মেরেরা অমন অনাবৃত স্থানে যায় না। জ্পান্দের আরও কন।

ইংবেজ আর আনেরি ান্রা কথা বার্ডারও বড় সাবধান, মেরেদের সাম্নে। সেঠাজ বল্বার পর্যন্ত যো নাই ফেরাসীয়া আমাদের মৃত মুখ শোলা : জলান কৃষ্পাল্ডি সকলেব সাম্নি খিডি করে।

কিন্ত প্রেম প্রণয়ের কথা অবাবে মার ছেনের, ভারে বোনে বাপে তা চলেছে। বাপ মেরের প্রাণীর ভরিষাং বরের) কথা নানা রকম ঠ টা করে মেরেকে জিজাদা কব্ছে। ফরাদীর মের ভার অবনভম্পী, ইংবেজের কেয়ে বীজানীলা, আর মার্কিনের মেরে চোট্পাট জ্বান দিছে। চুম্বন, আলিঙ্গনটা পর্যান্ত দোষাবহ নর, অশীল নর। মে স্ব কথা কওয়া চলে। আমাদেব দেশে প্রেম প্রণয়ের নাম গ্রুটী প্র্যান্ত গ্রুজনের শাম্নে হবার যেনাই।

এদের অনেক টাকা। অতি পরিদার এবং কেনা দোরত কাপড় না
পর্লে, দে ভোটলোক, ভাব সমাজে যাবার যো নাই। প্রত্যাহ দোপদস্ত
কামিজ কলার প্রেভৃতি ভ্রার ভিনবার বল্লাতে হবে ভজুলোক্কে।
পরীবরা অত সভ পাবে না। ওপরের কাপড়ে একটি দান, একটি কোঁচকা
থাক্লেট মুক্লি। নথের কোণে, হাতে, মুখে একটু ময়লা থাক্লেই
মুক্লি। গংনীতে প্রেট মর, আর যাই হক্, দন্তানা পরে বেন্ছেই হবে,
নইলে রাস্তায় হাত ময়লা হর এবং দে হাত কোন স্ত্রীলেকের হাতে
দিরে সন্তামণ করাটা অতি অভ্যতা। ভ্রসমাজে থুথুফেলা বা ক্লকুচো
করা বা দীতে খোঁটো ইত্যাদি কর্লে তংল্পং চণ্ডাল্ড প্রাপ্তি!!

ধর্ম এদের শক্তিপূজা, আদা বামাচ র রক্ষের; পঞ্চ ম্কারের শেষ অঙ্গগুলো বাদ্ দিয়ে। "বামে বামান দক্ষিণে পানপাত্রং— জন্রে গুলুং মুরীচ-সহিতঃ গুকরস্থোঞ্চমাংসং…কোলো ধর্মঃ প্রমগহনো যোগীনামপাগ্ন্যঃ।" প্রকাশ্র, মুর্ক্সাধারণ, শক্তিপূজা বামাচার, মাতৃভাবও যথেনী। প্রটেষ্টান্ট ইউরোপে নগন্ত—ধর্ম ও ক্যাথণিক। সে ধর্মে জিহোবা, বীও, তিম্রি, সব অন্ধর্মন, জেগে বসেছেন "মা"। শিশু-বীশু-কোলে 'মা'। লক্ষ খানে, লক্ষ রকমে, লক্ষ রপে, ভট্টালিকাল, বিরাট মন্দিরে, পথ প্রান্তে, পর্য কুটারে "মা" 'মা" ! বাদ্দা ভাক্ছে "মা", জঙ্গ বাহাছুর (Field-martial) সেনাপতি ভাক্ছে 'মা', ধ্বজা হত্তে দৈনিক ভাক্ছে "মা', পোতবংক্ষ নানিক ভাক্ছে "মা", জীব স্ত্র ধীবর ভাক্ছে "মা', রাস্তার কোণে ভিথারি ভাক্ছে 'মা''। "ধন্ত মেরি", ''ধন্ত মেরী'' দিন্রাত এ ধ্বনি উঠেছে।

আর মেয়ের পূজা। এশক্তি পূজা কেবল কাম নয়, কিন্তু যে শক্তি পূজা, কুমারী সধনা পূজা, আমাদের দেশে কাশী কালীঘাট প্রভৃতি তীর্থ-স্থানে হয়, বাস্থানিক, প্রভাক্ষ, করনা নয়—দেই শক্তি পূজা। ভবে আমা-দের পূজা ঐ তীর্থানেই, দেই ক্ষণমাত্র; এদের দিন, রাত, বারমাদ। আগে স্থালোকের আসন, আগে শক্তির বসন, ভূষণ, ভোজন, উচ্চ স্থান, আদের, থাতির। এ যে দে স্ত্রীলোকেন পূজো, চেনা অচেনার পূজো, ভদকুলের ত কথাই নাই, রূপদী যুবহার ত কথাই নাই। এ পূজোইউরোপে আরম্ভ করে মুরেরা, মুখলমান আর্মিশ্র মুরেরা, যথন ভারা স্পেন বিজয় করে, আটি শতান্ধি রাজহ কনে দেই দমর। ভাদের থেকেইউরোপে সভ্যতার উন্মেয়, শক্তিপূজার অভ্যনম। মূর ভূলে গেল, শক্তিহীন শ্রী-হীন হল। স্বান্তুত হয়ে আফ্রিকাব কোণে অসভ্যপ্রায় হয়ে বাস কর্তে লাগ্লো, আর দে শক্তির সঞ্চার হলো ইউরোপে; "মা" মুয়ল-মান্কে ছেড়ে উঠলেন কৃশ্চানের ঘরে।

(ফ্র"।স্----প!রি।)

এ ইয়্রোপ কি

 কালো, আন্কালো, হল্দে, লাল, এপিয়া, আফ্রিকা, আমেরিকার সমস্ত মামুষ এদের পদানত কেন

 এরা কেনই বা এ কলিমুগের একাধিপতি

এ ইয়ুরোপ বুঝ তে গেলে, পাশ্চাত্য ধর্মের আকর ফ্রান্স থেকে বুঝ তে হবে। পৃথিবীর আধিপতা ইয়ুরোপে, ইয়ুরোপের মহাকেন্দ্র পারি। পাশ্চাত্য সভাতা, রীতি, নীতি, আলোক আঁধার, ভাল মন্দ, সকলের শেষ পরিপুষ্ট ভাব এই থানে, এই পারি নগরীতে।

এ পারি এক মহাসমূত্র —মণি, মৃক্তা, প্রবাদ বর্গেষ্ট, আবার মকর কুতীর্থ

অনেক। এই ফ্রান্স ইয়ুবোপের কর্মাক্ষেত্র। সুন্দর দেশ — চীনের কতক অংশ ছাড়া, এমন দেশ আর কোথাও নাই। নাতিনীতোঞ, অতি উর্মরা, অতি বৃষ্টি নাই, অনাবৃষ্টিও নাই, সে নির্ম্মণ আকাশ, মিঠে বৌদু, ঘাদেব শোভা, ছোট ছোট পাহাড়, চিনার, বাঁজ প্রভৃতি গাছ, ভোট ছোট নদী, ছোট ছোট প্রস্তবন। দে জলে কণ, স্থলে মোহ, বায়তে উন্নততা, আংকাংশ আনেক। প্রকৃতি কুক্রে, মামুষ্ও সৌক্রিপ্রিয় আবাল্র্ড্রন্নিতা, ধনী দরিদ, ভাদের ঘব দোর, ক্ষেত ময়দান, .ঘাদ থেজে, দাজিয়ে গুলিয়ে ছবি থানি করে রাখ ছে। এক জাপান ছাডা, এ ভাব আমাব কোথাও নাই। পে ইক্রভ্বন অটু,লিকাপুঞ্জ, নন্দনকানন উন্থান, উপ্যন, মায় চাযার কেত. সকলেব মধ্যে একট রূপ, একট স্থাচ্চৰি দেখবার চেফী। এবং সফলও হয়েছে।

এই ফ্র'সে প্রাচীনকাল হতে গোল ওয়া (Gaulois), শেষক, ফ্র'া (Franks) প্রভৃতি জাতির সংঘর্ষ ভূমি: এই ফ্রা জাতি রোম সাম্রাক্ষের বিনাশের প্র ইউরোপে একাধিপতা লাভ করলে ; এদের বাদ্দা শাল মাঞ্ন ইয়ুরোপে কুশ্চান ধর্ম তলওযারের দাপটে চালিয়ে দিলেন, এই ফ্র' জাতি হতেই আসিয়া থণ্ডে ইয়ুনোপের প্রচার,—ভাই আজ্ঞ ইউবেপী আমাদের কাছে ফ্র"কি. ফেরিঙ্গি, প্লাকি, ফিলিঙ্গ, ইতাদি।

সভাতার আকর প্রাচীন গ্রীক ভূবে গেল, রাজচক্রবর্তী রোম বর্মর-আক্রমণ-ভরকে গুলিয়ে গেল, ইয়ুরোপের আলো নিবে গেল, এদিকে আর এক অতি বর্মরকাতির আদিয়াখণ্ডে প্রাছর্ভান হলো—আরব জাতি। মহাবেগে সে আরব-তরক পৃথিবী ছাইতে লাগুলো। মহাবল পারস্ত জারবের পদানত হলো, মুষলমান ধর্ম গ্রহণ কর্ত্তে হল, কিন্তু তার ফলে ১্যল্মান্ধর্ম আবে এক রূপ ধারণ কর্লে। সে আরবি ধর্ম আর পার-সীক সভাতা স্মিলিত হৰো।

আরবের তলওয়ারের দকে সকে পারভা সভাভা ছড়িয়ে পড়তে লাগ লো ৷* পে পারভ মভাতা প্রাচীন গ্রীম ■ ভারতবর্ণ নেওয়া। পূর্বা, পশ্চিম, জুদিক্ হতে মহাবলে মুধলমান তর্ত্ত **ইউরোপের উপর আ**ঘাত কর্লে, সঙ্গে সঙ্গে বর্ধর অন্ধ ইউরোপে জানালোক ছড়িয়ে পড় তে লাগ্লো। প্রাচীন গ্রীক্দের বিভা, বৃদ্ধি, শিল্প, ধর্ণরাক্রান্ত ইতাগীতে প্রবেশ কর্লে, ধরা-রাজধানী রোমের মৃতশরীরে व्यानम्भानं इटङ नागाला- एम म्मन क्रूटब्रम नगबीट थवलं क्रम धावन कताल. প্রাচীন ইতালী নব জীবনে বেঁচে উঠতে লাগলো,—এর নাম রনেসাঁদ্, Renaissance, নব জন। কিন্তু সে নব জন্ম হলো ইতালীর। ইউরোপের জন্মতা অংশের তথন প্রথম জন্ম। দে ক্লগেনী ষোড়শ শতান্ধিতে, যথন আক্রের, জাহাঁগির, সাজাহাঁ প্রভৃতি মোগল সমাট্ ভারতে মহাবল সামাজ্য তুলেছেন, সেই সময়, ইউরোপের জন্মহল।

ই গলী বুডো জাত, একবার সাভা শক্ষ দিয়ে আবার পাশ ফিরে শুলো।
সেমর নানা কারণে ভারতবর্ষও জেগে উঠিছিল কিছু, আকবর হতে
তিন পুরুষের রাজত্বে বিস্তা বৃদ্ধি শিরের আদর যথেই হয়েছিল, বিস্ত অতি বৃদ্ধ জাত, নানাকারণে আবার পাশ দিরে শুলো।

ইয়ুরোপে, ইতালীর পুনর্জন্ম গিরে লাগলো বলবান, অভিনব, নৃত্র আঁ। জাতিতে। চারিদিক্ হতে সভাতাব ধারা সব এসে ফুরেন্স নগরীতে একত্র হয়ে নৃত্রন কপ ধারণ করলে; কিন্তু ইতালী জাতিতে সে বীর্যা ধারণের শক্তি ছিল না, ভাবতের মত সে উল্লেখ ঐ থানেই শেষ হরে যেত, কিন্তু ইউরোপের সৌভাগ্য, এই নৃত্রন ফুণ জাতি আদরে সে ভেজ গ্রহণ কর্লে। নবীন-রক্ত, নবীন জাত সে তরক্তে মহাসাহসে নিজের তর্ণী ভাসিয়ে দিলে. সে জোতের বেগ ক্রমশই বাড়তে লাগলো, সে এক ধারা শত ধারা হয়ে বাড়তে লাগলো; ইউরোপের ভার আর জাতি লোল্প হয়ে থাল কেটে সে জল আপনার গাপনার দেশে নিয়ে গেল এবং ভাতে নিজেদের জীবনীশক্তি তেলে তার বেগ, তার বিস্তার বাড়াতে লাগ্লো, জাপান সে বহায় বেঁচে উঠলো, সে জল পান করে মত হয়ে উঠলো, জাপান সে বহায় বেঁচে উঠলো, সে জল পান করে মত হয়ে উঠলো; জাপান এসিয়ার নৃত্র জাত।

এই পারি নগরী দে ইউরোপী সভ্যতা-গঙ্গার গোমুখ। এ বিরাট্ রাজ-ধানী মর্ত্তের অমান্তি, সদানক্ষনগরী। এ ভোগ, এ বিলাস, এ আনন্দ, না লগুনে, না বর্লিনে, না আব কোথায়। লগুনে, নিউইনকে পন আছে; বর্লিনে বিছাবুদ্ধি যথেষ্ট, নেই সে ফরাসী মাটি, আর সন্দাপেক্ষা নেই সে ফরাসী মানুষ। ধন থাক্, বিভাবৃদ্ধি থাক্, প্রাকৃতিক সৌন্দাণ্ড থাক্—মাহ্য কোথার? এ অভুত ফ্রাসী চরিত্র প্রাচীন গ্রীক্ মারে জল্মছে যেন—সদা আনন্দ, সদা উৎসাহ, অতি ছেবলা, আবার প্রতি গগ্রীর, সকল কাজে উত্তেজনা, আবার বাধা পেলেই নিকংসাহ। কিছু সে নৈরাশ্র ফরাসী মুখে বেশীক্ষণ থাকে না, আবার ছেগে ওগ্রি।

এই পারি বিশ্ববিতালয় ইয়ুরোপের আদশ। ছনিয়ার বিজ্ঞান সভা এদের আক্ষাকোডেমির নকল: এই পারি ঔপনিবেশ সাম্রাজ্যের ওক, সকল ভাষাতেই যুদ্ধ শিলের সংজ্ঞা এখনও অধিকাংশ ফলাসী: এদের বচনার নকল, সকল ইয়ুবেপী ভাষায় : দর্শন, বিজ্ঞান শিল্পের এই পারি খনি, সকল জায়গায় এদের নকল।

এরাছছে দ্রুরে আরে দ্রু জাত যেন পাড়াগোঁয়ে: এরায় করে, ভা ৫০ বংসর, ২৫ বংসর পবে জন্মাণ ইংরেজ প্রভৃতি নকল করে, তা বিদ্যায় হক, বা শিল্পে হক, বা সমাজনীতিতেই হক। এই ফরাসী মভ্যতা স্কট্লাতে লাগ্লো, ষট্রাজা ইংলণ্ডেব রাজা হলেন, ফ্রাসী সভাতা ইংল ওকে জাগিয়ে ভুল্লে; – স্কটবাজ ইয়াট বংশের সময় ইংলত্তে ব্যাল সোপাইটি প্রভৃতির **→** ≥ 1

আর এই ফ্রান্স স্বাধীনতার আবাস। প্রজাশক্তি মহাবেগে এই পারি-ৰুপরী হতে ইয়ুবোপ ভোলপাড়ুকরে ফেলেছে, সেই দিন হতে ইয়ুবোপের মৃতন মূর্ত্তি হয়েছে। সে এগালিতে, লিবাত্তে ক্রাতের্পিতের, Egalite' liberte' fraternite ধ্বনি ফ্রান্স হতে চলে গেছে: ফ্রান্স অভভাব, অন্য উদ্দেশ্য সন্-করণ কর্ছে, কিছু ইয়ুরোপের অন্যাত জাত এখনও দেই ফরামী বিপ্রণ মক্স করছে।

একজন স্কটলাণ্ড দেশের প্রসিদ্ধ বৈজ্ঞ নিক পণ্ডিত আমায় সেদিন বললেন, যে পারি হচ্ছে পৃথিবীর কেন্দ্র যে দেশ যে পরিমাণে এই পারি নগরীৰ সঙ্গে নিজেদের বেংশ স্থাপন কর্তে সক্ষম হবে, সে জাত তত পরিমাণে উন্নতি লাভ কর্বে। কথাটা কিছু অভিরঞ্জিত সতা, কিন্তু এ কথাটাও সভা, যে যদি কারু কোনও নৃতন ভাব এ জগতকে দেবার থাকে, ত এই পাল্লি হচ্ছে সে প্রচারের স্থান। এই পারিতে যদি ধ্বনি ওঠে, ত ইউবোপ অবখাই প্রতিধ্বনি কর্বে। ভাম্বর, চিত্রকর, গাইয়ে, নর্ত্তকী এই মহানগরীতে প্রথম প্রতিষ্ঠা লাভ কর্তে পারলে, আর সবদেশে সহছেই প্রতিষ্ঠ হয়।

অামাদের দেশে এ পারি নগরীর বদ্নামট শুনতে পা ওয়া হায়,--এ পারি মহা কদর্য্য, বেশ্রাপূর্ণ, নরকরুও। অবশ্য এ কণা ইংব্রেছর।ই বলে থাকে, এবং অস্তুদেশের যে সর লোকের প্রসা আছে এবং জিহ্বোপত ছাড়া দিতীয় ভোগ শীরনে অসম্ভব, তারা অংশ্র বিলাসময় জিছেব প্রের উপকরণমর পারিই (१८४।

কিন্তু লণ্ডন, বর্লিন, ভিষেনা, নিউইয়ক্ত ঐ বারবনিত পূর্ণ, ভোগের উদ্যোগ-পূর্ণ; তবে ভফাং এই, সে অন্ত দেশের ইন্দ্রিয় চর্চ্চ। পশুনং; পাবিসের, সভ্য পারির ময়লা সোণার পাত নোড়া। বুনোশোরের পাঁকে লোঠা, **আর ময়ুরের** পেথম-ধরা নাচে বে ওফাং, অন্তান্ত সহরের পৈশাচেক ভোগ আর এ পারির বিলাসের সেই ভফাং।

ভোগ বিশাসের ইত্যা কোন্ জাতে নেই বল গুনইলে ছনিয়ার যার ছুপারমা হয়, সে অমনি পারিনগণী অভিমুখে ছোটে কেন গুলাজা বাদসারা ছুপি সাড়ে নাম ভাঁজিয়ে এ বিলাস-বিবর্তে আন করে পাবে হতে আসেন কেন গুইছে। স্কাদেশে, উদ্যোগের ক্রাট কোথাও কম দেখি না; ভবে এরা স্থাসন্ধ হয়েছে, ভোগ কর্তে জানে, বিলাদেব সপ্রে পৌছেছে।

তাও অনিকাংশ কদ্যা নাচ তামাসা বিদেশীর জন্ম; ফরাসী বৃদ্ধ সাবধান, বাজে প্রজ করে না। এই ঘোর বিলান, এই স্ব থোডেল, কাফে, যাতে এক বার থেলে স্ক্রিছ হতে হয়, এ স্ব বিদেশী আহং আক্ ধনীদের জন্ম। ফরাসীরা বৃদ্ধ স্মান্ত, আনব কায়দা বেজায়, থাতির খুব করে, প্যাসা গুলি স্ব বার ক্রেন্ন, আর মৃচ্কে মৃচ্কে ইাসে।

তা ছাড়া, আব এক ভাষ সা এই বা, আমেরিকা, জর্মান, ইংরেজ প্রভৃতির থোলা সমাজ, বিদেশী বাঁ। করে সব দেখ্তে শুন্ত পায়। ছ চার দিনের আলাপেই আমেরিক বাড়িতে দর্শদিন বাস করে।র নিমন্ত্রণ করে; জর্মাণ ডক্রেপ; ইংরেজ একটু বিললে। ফরাসী এ বিষধে বড় ভফাব, পরিবারের মধ্যে অভান্ত পরিচিত না হলে আর বাস করে নিমন্ত্রণ করে না। কিন্তু যথন বিদেশী ঐ প্রকার স্থাবিধা পায়, ফরাসী পরিবার দেখবার জান্বার অবকাশ পায়, তখন আর এক ধারণা হয়। বলি, মেছ গালার দেখে অনেক বিদেশী যে আমাদের জাতীয় চরিত্র সম্বন্ধে মতামত প্রকাশ করে—শেটা কেমন আহাম্মকি। তেম্নি এ পারি। অবিবাহিতা মেয়ে এদেশে অমাদের দেশের মত স্থামিতা, ডারা সমাজে প্রায় মিশতে পায় না। বের পার ভবে নিজের খামীর সঙ্গে সমাজে প্রায় মিশতে পায় না। বের পার ভবে নিজের খামীর সঙ্গে সমাজে মেশে। বে থা মায়ে বাপে দেয়, আমাদের মত। আর এরা আমাদিপ্রিয়, কোনও বড় সামাজিক ব্যাপার নর্ভকীর লাচ না হলে সম্পূর্ণ হয় না। বেমন আমাদের বে পুজো স্ক্রের নর্ভকীর আসমন। ইংরেজ ওলবাটা মুন, অন্ধকার দেশে বাস করে, সদা নিরানন্দ, ওদের মতে এ বড় জলীল, কিন্তু থিয়েটারে হলে আর দেখে নাই। এ হণাটার মতে এ বড় জলীল, কিন্তু থিয়েটারে হলে আর দেখে নাই। এ হণাটার মতে এ বড় জলীল, কিন্তু থিয়েটারে হলে আর দেখে নাই। এ হণাটার মতে এ বড় জলীল, কিন্তু থিয়েটারে হলে আর দেখে নাই। এ হণাটার

বলি যে এদের নাচটা আমাদের চথে আশ্লাল বটে, তবে এদের সয়ে গেছে। নেংটি নাচ সর্বাত্তে, ও গ্রাহ্তর মধ্যেই নয়। কিন্তু ইংরেজ আমেরিকা দেখ-তেও ছাড়বে না, আর ঘরে গিয়ে গাল্ দিতেও ছাড়বে না।

ক্রী সম্বন্ধী আবার পৃথিনীর সর্কদেশেই একরূপ, অর্থাং পুরুষ মান্সের অন্ত ক্রীসংসর্গে বড় দোব হয় না, কিন্তু দ্রীলোকের বেলাটায় মুছিল। তবে করাসী পুরুষ একটু খোলা, অন্ত দেশের ধনী লোকেরা যেমন। এ সম্বন্ধে বে পরোয়া তেম্ন। আর ইউবোপী পুরষ্যাধানণ ও বিষয়টা অত দোবের ভাবে না। অবিবাহিতের ও বিষয়ে পাশ্চাত্য দেশে ২ড় দোষের নয়; বরং বিত্যার্থী যুবক ও বিষয়ে একান্ত বিয়ত থাকলে, অনেক হলে তার মা বাণ দোধাবহ বিবেচনা করে। পাতে ছেলেটা "মেনি মুখো" হয়। পুক্ষের এক গুণ পাশ্চাত্য দেশে চাই—সাধ্দ; এদের "ভার্চ্চু" Virtue শক্ষ আব আমাদের "বীরম্ব" একই শক্ষ। ঐ শক্ষের ইতিহাসেই দেখ, এরা কাকে পুরুষের সভতা বলে। মেয়ে মান্সের প্রেক্ষ সতীত্ব অত্যাবশ্বক বটে।

এ সকল কথা বল্বার উদ্দেশ্য এই যে, প্রভাকে জাতির এক একটা নৈতিক জীবনোদেশ্য আছে, সেইখানটা হতে সে জাতির রীতি নীতি বিচার কর্তে হবে। তাদের চথে তাদের দেখতে হবে। আমাদের চোখে এদের দেখা, আর এদের চক্ষে আমাদের দেখা, এ চুই ভুল।

আমাদের উদ্দেশ্য এ বিষয়ে এদের ঠিক উপ্টা, আমাদের ব্যাচারী (বিজ্ঞী) শব্দ আর কামজ্যিত্ব এক। বিজ্ঞী আর কমেজিং একই কথা।

আমাদের উদ্দেশ্য থেকি। ব্রহ্ম হিনা তা কেমনে হয় বল ? এদের উদ্দেশ্য ভোগ, ব্রহ্ম হিনার আবশ্রক ভত নাই; তবে স্ত্রীকোকের সতীত্ব নাল হলে ছেলে পিলে জনায় না এবং সমগ্র জাতির ধ্বংশ। পুরুষ মানুষে দশ পণ্ডা বে করলে তত ক্ষতি নাই, বরং বংশ বৃদ্ধি খুব হয়। স্ত্রীলোকের একটা ছাড়া আরে একটা এক সংক্ষে চলে না—কল বন্যাত্ব। কাজেই সকল দেশে স্ত্রীলোকের সতীত্বের উপর বিশেষ আগ্রহ, পুরুষের বাড়ার ভাগ। প্রাকৃতিং বাজি ভূণানি নিগ্রহঃ কিং করিষ্যতি।

(ক্রমশ: i)

জীজীরাসকুষ্ণ-কথামৃত ! •

প্রথম পরিচেছদ।

[নরেক্র ও ভবন'থের মাষ্টারের সহিত মিগন।]

মান্ত্র তথন বরাহনগরে দিদির বাড়ীতে অবস্থিতি করিতেছিলেন। ঠাকুর রামক্রহাকে দর্শন করা অবধি সর্বাহ্ণণ তাঁচারই চিন্তা করেন। স্বান্থিই যেন দেই আনন্দমন্ত্র দেখিতেছেন ও তাঁহ'র সেই অমৃত্রমন্ত্রী কথা ওনিতেছেন। ভাবিতে লাগিলেন, এই দরিদ্র ব্রাহ্ণণ করিপে এই সব গভীর তর্ম অহস্বান করিলেন ও জানিলেন? আর এত সহকে এই সকল কথা বুমাইতে মান্তার এ পর্যান্ত কাহাকেও কখনও দেখেন নাই। কথন তাঁহার কাছে ঘাইবেন ও আবার তাঁহাকে দর্শন করিবেন, এই কথা রাত্র দিন ভাবিতেছেন। দেখিতে দেখিতে রবিবার আসিমা পড়িল। ব হান্ত্রমের নেপাল বাবুর সঙ্গে বেলা ৩টা ৪টার সমন্ত্র দ্বিণেখরের বাগানে আসিমা পভিলেন। দেখিলেন, সেই পূর্বপিরিচিত ঘরের মধ্যে ঠাকুর রামক্রম্ব ছোট তক্তপোষের উপর বসিন্না আছেন। ঘরে এক স্বর্ন গোকার মান্ত্রম্ব সঙ্গে কাহারও আবাণ হন্ন নাই। মান্তাব্র সভামবের এক পার্থে আসন করিছে আসিরাছেন। এখনও মান্তাবের সঙ্গে কাহারও আবাণ হন্ন নাই। মান্তাবিও সভামবের এক পার্থে আসন গ্রহণ করিলেন। দেখিলেন, ভক্তদের সঞ্চে সহাক্তবদনে ঠাকুর কথা কহিতেছেন।

একটি উনবিংশতিবর্ষবংশ্ব ছোকরাকে উদ্দেশ করিয়া ও তাঁছার দিকে তাকাইয়া অনেক কথা বেন কত আনন্দিত হইয়া বলিতেছিলেন। ছেকেটির নাম নরেক্র, কলেজে পড়েন ও সাধারণ আজসমাজে যাতায়াত করেন। কথাগুলি তেজঃপরিপূর্ণ; চকু চুটি সাতিশয় উজ্জ্বল। ভত্তের চেহারা।

মান্তার অনুমানে বুঝিলেন যে, কথাটি বিষয়াসক সংসারী ব্যক্তির সম্বন্ধে ছইতেছিল। যারা কেবল ঈশ্বর ঈশ্বর করে, ও ধর্ম ধর্ম করে, তাদের ঐ সকল ব্যক্তিরা নিলা করে। আব সংসারে কত ছট লোক আছে, তাদের সঙ্গে কিরূপ ব্যবহার করা উদিত, এই সব কথা হইতেছিল।

জীরামকৃষণ। (নরেক্রের প্রতি) নরেক্রণু তুই কি বলিদ ? সংসারী

মীরানকৃষ্কবামৃত (এম—ক্ষিত) প্রথম ভাগ ছাগা হইতেছে।

লোকেরা কত কি বলে। কিন্তু দ্যাখো, হাতী যথন চলে যায়, পেছনে কত ভানোগার কত রকম চীণকার করে। কিন্তু হাতী ফিরেও চাগুনা। ভোকে যদি কেউ নিদা করে, তুই কি মনে কর্বি ?

মাওত ন'র য়ণ।

নরেন্দ্র। আমি মনে করব কুকুর ঘেউ ঘেট কর্ছে।

জ্রামক্ষা (সহাস্যে) নারে, অতো দ্ নয়। ঈশ্র স্কৃত্তে আছেন, তবে ভাল লোকের সঞ্জে মথামাথি চলে, মন্দ লোকের কাছ থেকে তফাত্থাকতে হয়। বাঘের ভিতরও নারায়ণ আছেন; তা বলো বাঘকে আবিঞ্জন করা চলে না। বাঘ নারাধণকে দূর থেকে প্রণাম কবনে।

"একটা গল শোন। কোন এক ধনে একটি সাধু থাকেন। আনেক গুলি শিষা। তিনি এক দিন শিষ্যদের উপদেশ দিলেন যে, সক্ষতৃতে নাধায়ণ আছেন, এইটি জেনে স্কলকে নমস্বার করবে। একদিন একটি শিষ্য ধোমের জন্ম কাট আনতে বনের মধ্যে গিছলো। এমন সময়ে একটা রব উঠলো 'কে কোণায় আছে পালাও,—একটা পাগলা হাতী যাচেছ।' স্বাই পালিছে গেল, কিন্তু শিষ্টি পালাল না। সে জানে যে, হাতীও নারায়ণ, ভবে কেন পালাব ৷ এই বলে দাঁড়িয়ে রইল, আর নমস্বার করে ছবে স্তাত কর্তে কাগলো। এ দিকে মাত্ত চেঁচিয়ে বলচে, 'পালাও' 'পালাও'। শিষ্টাট ভবুও নড়লোনা। শেষে হাতীটা উ'ড়ে কবে ভূলে নিয়ে ভাকে এক ধারে ছুঁড়ে ফেলে দিয়ে চলে গেল। শিষ্য ক্ষতবিক্ষত হয়ে ও অচৈভন্ত হয়ে পড়ে রুইল। এই সংবাদ পেয়ে গুরু ও অভ্যান্ত শিষ্টেরা তাকে আশ্রমে ধরাধরি ক্ষে নিয়ে গেল। আর ঔষধ দিতে লাগলো। থানিকক্ষণ পরে চেতনা ∍লে ওকে বিজ্ঞাসা করা গেল, তুমি কেন হাতী আসছে উনেও চলে গেলে ना ? त्म वरता, अकरमव या व्यामात्र वरण मिहरणन या, नातास्परे भासूय कीव জন্ত স্ব হয়েছেন। তাই আমি হাতী নারায়ণ আস্ছে দেখে দেখান থেকে भटत यारे नारे। अक ज्थन व्यत्ननात्म, राजी नात्रायम आम्हित्यन वरहे, जा সতা; কিন্তু বাবা, মাহত নারায়ণ তো ডোমাধ বারণ করেছিলেন। যদি সবই নারারণ, ভবে তার কথা বিখাদ করলে না কেন ৷ মাছত নারায়ণের কথা ভানতে হয়।

শিক্ষে আছে আপো নারার: ভলল নারারণ, কিন্তু কোন ও জল ঠাকুর-দেবার চলে, আবার কোন জলে জাঁচান, বাদন মাজা, কাপড় কাচা, কেবল চলে; কিন্তু খাওয়া বা ঠাকুর সেবা চলে না। তেমনি সাধু, অসাধু, ভক্ত, 'মভক্ত, সকলেরি হৃদরে নারায়ণ আছেন; কিন্তু অসাধু অভক্ত হুই লোকের সঙ্গে ব্যবহার চলে ন'। মাধামাধি চলে না। কাহারও সঙ্গে কেবল মুখের আলাপ প্রয়ন্ত চলে, আবার কাহারও সঙ্গে তাও চলে না। এরপ লোকদের ক'ছ থেকে ভফাতে থাকতে হয়।"

একজন ভক্ত। মহাশয় ! যদি হুট লোক অনিট করতে আসে বা অনিট করে, তাহলে কি চুণ করে থাকা উচিত ?

গৃহস্ত ও তমোগুল।

জীরামক্রক্ষ। গোকের সঙ্গে বাস করতে পেলেই ছুষ্ট লোকের হাত থেকে আপনাকে রক্ষা করবার জন্ম একটু তমোগুণ দেখান দরকার। কিন্তু সে অনষ্টি করবে বলে, উল্টে তার অনিষ্ট করা উচিত নয়।

"এক মাঠে রাথালরা গয় চরাত। সেই মাঠে একটা ভরানক বিধাকা
সাপ ছিল। সকলেই সেই সাপের ভরে অভ্যন্ত সাবধানে থাকতো। এক
দিন একটা ব্রহ্মচারী সেই মাঠের পথ দিয়ে আসছিল। রাথালেরা দৌড়ে
এসে বল্লে, ঠাকুর মহাশয়! ও দিক দিয়ে যাবেন না।
দিকে একটা
ভয়ানক বিধাক্ত সাপ আছে। ব্রহ্মচারী বল্লেন, বাবা তা হউক, আমার
ভাতে ভয় নাই, আমি মন্ত জানি। এই কথা বলে ব্রহ্মচারী দেই দিকে চলে
গেল। রাথালেরা ভয়ে কেউ সঙ্গে গেল না। এ দিকে সাপটা ফণা ভূলে
দৌড়ে আসছে। কিন্তু কাছে না আসতে আসতে ব্রহ্মচারী ঘেই একটি মন্ত্র
পড়লেন, অমনি সাপটা কেঁচোর মতন পায়ের কাছে পড়ে রইল। ব্রহ্মচারী
বল্লেন, ওরে! ভূই কেন পরের হিংসা করে করে বেড়াস, আয় ভোকে মন্ত্র
দিব, এই মন্ত্র জপলে ভারে ভগবানে ভক্তি হবে, জার হিংসা প্রস্তুতি থাকবে
না। এই বলে সাপকে মন্ত্র দিলেন। সাপটা মন্ত্র পেয়ে গুয়ুকে প্রণাম
করলে, আর জিজ্ঞাসা করলে, ঠাকুর! কি করে সাধনা করব বলুন। গুয়ু
বল্লেন, এই মন্ত্র জপ করো, আর কাহারও হিংসা করো না। ব্রহ্মচারী যাবার
সময় বল্লেন, আমি জাবার আসবে।।

"এই রকমে কিছুদিন যায়। বাথালের। দেখে যে, সাপট ুআর কামড়াতে আদে না। ড্যালা মারে, তবুও রাগ হয় না, থেন কেঁচোর মতন হয়ে গেছে। একদিন এক জন রাথাল ভার কাছে গিয়ে লেজ ধরে পুর গুরুণাক দিয়ে সাপটাকে আছড়ে আছড়ে ফেলে দিল। সাপটার মুখ দিয়ে রক্ত উঠতে লাগণ, আবার সে অচেতন হরে পড়লো। নড়ে নাচড়ে না। রাথালরা মনে করণে যে গাপটা মরে গেছে। এই মনে করে তারা সব চলে গেল।

শ্বনেক রাত্রে সাপের চেতনা হলো। তথন দে আস্তে আতি অতিকত্তে তার গঠের ভিতর চলে গেল। শরীর চুর্ণ হয়ে গিছল। নড়বার শক্তিনাই। অনেক দিনের পর যথন অস্থিচর্ম্মনার হয়ে গেছে, তথন বাহিরে
আহারের চেষ্টায় রোজ রাত্রে এক একবাব চরতে আসতো। রাধানদের
ভয়ে দিনের বেলায় জাসত না। মন্ত্র লাভ্যা অব্ধি আর জীবহিংসা করে না।
নাট, পাতা, গাছ থেকে পড়ে গেছে, এমন ফল থেয়ে প্রাণধারণ করতো।

"প্রায় এক বংসরের পর ব্রহ্মচারী সেই পথে আবার এলেন। এসেই শাপের সন্ধান করলেন। রাখালেরা বল্লে, সে সাগট। মধে ধেছে। জন্মতারীর কিছ । কথা বিখাস হলো না। িনি জানেন, ও যে মন্ত্র নিয়েছে, তাহা সাধন না হলে দেহত্যাগ হবে 👊 । খুঁজে খুঁজে সেই দিকে তাঁর দেওয়া নাম ধরে, ডাকতে লাগলেন। সে গুরুদেবের আওয়াল গুনে গর্ত খেকে বেরিরে এলো, ও পুর ভক্তিভাবে প্রথম করলে। ব্রহ্মচারী জিজ্ঞাসা কর-লেন, তুই কেম্ন আছিদ ? সে বলে, আছে ভাল আছি। ব্ৰহ্মচারী বল্লেন, তবে ভুই এত রোগা হয়ে গেছিদ কেন ? দাপ বল্লে, ঠাকুব ় আপনি ज्यारमण करवरहन,-क शांद्र अहिंशा दकारता ना। जाहे भाजांने क्लांने খাই বলে বোধ হয় রোগা হয়ে গেছি। ওর সভ্তুণ হয়েছে কি না, তাই কারু উপর ক্রোধ নাই, সে একেবারেই ভুলেই গিছলো যে রাথালেরা তাকে মেরে ফেলবার জোগাড় করেছিল ৷ এক্ষচারী বরেন, শুধু না খাওয়ার দরুণ এরপ অবস্থা হয় না, অবশ্র আরো কোন কাবণ আছে; তুই ভেবে দেখ্। সাপটার তথ্ন মনে পড়লো যে রাখালেবা তাকে আছাড় মেরেছিল। তথন দে বল্লে, ঠাকুর এখন মনে পড়েছে বটে, রাখালেরা আমায় একদিন আছাড় মেরেছিল। তা তারা অভান, তারা তো জানে না যে আমার মনের কি व्यवसा। व्यामि (य कांशांक ९ कांगज़ाव ना वा कांनक्र व्यनिष्टे कत्राता ना, তা ভারা কেমন করে জানবে ? বন্ধচারী বলেন, ছি ৷ তুই এতো বোকা, তুই আপনাকে বক্ষা করতে জানিদ না; আনি ভোকে কামড়াইতেই বারণ করেছি, তোকে ভো ফোঁস করতে থারণ করি নাই ; তুই ফোঁস করে ভাদের ভয় দেখাস নাই কেন ?

"ভাই বলজি, ছুই লোকের কাছে ফোঁদ করতে হয়, তাদের ভয় দেখাতে

হয়, পাছে অনিষ্ট করে; কিন্তু ভাদের গাবে বিষ ঢালিতে; নাই, তাদের উন্টে অনিষ্ঠ করতে নাই।

ভিম প্রকৃতি।

''ঈশ্বরের স্বস্টিছে নানা রক্ম জীব, জস্তু,গাছ পালা, তৈই সব আছে। ভানে। য়াবের মধ্যে ভালও আছে : মন্দ্র আছে। বাছের মত হিংস্ত ভানোয়ারও আছে। গাছের মধ্যে অমৃতের ক্রায় ফল হয় এমন গাছও আছে, আবার বিষ ফল হয় এমন গাছও আছে। তেমনি মাত্যের মধ্যে ভালও আছে, মন্দ্র আছে, মাধু আছে, আনার অমাধুও আছে, সংগানী ভীবও আছে, আবার ভক্ত আছে ৷

Are all men equal?

''জীব চারি প্রকার ,---বদ্ধজীব, মুমুকুজীব, মুক্তজীব ও নিভাজীব। নিভা-জীব-বেমন নারদাদি। এঁরা দংসারে থাকেন, জীবের মল্লের জ্ঞ-জীবদিগকে শিক্ষা দিবার জন্ম।

''বদ্ধজীৰ বিষয়ে আগল্জ হয়ে থাকে, আৰু ভগৰানকে ভূলে থাকে—ভূলেও ভগবানের চিন্তা করে না।

''ন্নুক্জীব— ধারা মুক্ত হবার ইচ্ছা করে। কিন্তু তাদের মধ্যে কেউ মুক্ত হতে পারে, কেউ পারে না।

"মুক্তজীব- থারা সংসারে কামিনী কাঞ্চনে বন্ধ নন-- যেমন সাধু মহা-श्राजा; याँतनत मत्न विवसवृद्धि नार्ट, व्याज याँजा मर्कणा इतिभानभन्न हिन्छा করেন।

"বেমন জাল ফেলা হয়েচে পুকুবে। ছ'চারটা মাছ এমন সেয়ানা বে কথনও জালে পড়ে না-এরা নিত্যজীবের উপমান্থল। বিশ্ব অনেক মাছই জালে পড়ে। এদের মধ্যে কতকগুলি পালাবার চেষ্টা করে; এরা মুমুকুজীবের উপমান্থল। কিন্তু সব মাছেই পালাতে পারে না। ছ'চারটা धनाइ धनाइ करत काल (थरक नालिया यात्र - उथन (कालता वरन- के वकरी মস্ত মাছ পালিয়ে গেল। কিন্তু যারা জালে পড়েছে, অধিকাংশই পলাতেও পারে না। আর পালাবার চেটাও করে না। বরং জাল মুখে করে পুকুরের পাঁকের ভিতর গিয়ে চুপ করে মুখ ভাজাড়ে শুয়ে থাকে—মনে করে, "আর কোন ভয় নাই আর আমরা বেশ আছি।" কিন্তু জানে না যে জেলে হড় क्ष् करत रहेरन कांकात्र कुनरव । अताहे वक्षकीरवत केंश्याद्य ।

সংসারী লোক।

বজজীবেরা সংসারের কামিনী ও কাঞ্চনে বন্ধ হবেছে—হাত পা বাঁদা— আবার মনে করে যে ঐ সংসারের কামিনী ও কাঞ্চনেতেই তথ হবে, আর নির্ভয়ে থাকবে; কিন্ত জানে না যে এতেই মৃত্যু হবে। বন্ধজীব যথন মরে, তথন ভার পরিবার বলে, 'ভূমি তো চলে, আমার কি করে গেলে ?' আবার এমনি মায়া যে, প্রদীপটাতে বেশী সল্তে জললে বলে, 'তেল পুড়ে যাবে, সল্তে কমিয়ে দাও।' এ দিকে মৃত্যুশ্যায় শুয়ে রয়েছে।

"বদ্ধজাবেরা ঈশ্রচিন্তা করে না। যদি অবসর হয়, তা হলে হয় আবোল তাবোল ফালতো গল্ল করে. নয় মিছে কাজ কবে। জিজ্ঞানা করলে বলে, আমি চুপ করে থাকতে পারি না, তাই বেড়া বাধছি। হয় তো সমগ্র কাটে না দেখে তাস্থেল্তে কারন্ত করিল।"

দিতীর পরিচেছ্দ।

একজন ভক্ত। মহাশন্ত, এরপ সংসারী জীবের কি কোন উপাব নাই ? শ্রীবামকৃষ্ণ। অবশ্র উপায় আছে। মাথে মাথে সাধুসঙ্গ করতে হয়, আর মাথে মাথে নির্জ্জনে থেকে ঈগরচিন্তা করতে হয়। আর বিচর করতে হয়। তাঁর কাছে প্রার্থনা করতে হয়, 'আমাকে ভক্তি বিখাস দ'ও ।'

বিশ্বাদের বল।

"বিশাস হয়ে গেলেই হ'ল। বিধাপের চেলে আর জিনিস নাই।

(কেদারের প্রতি) "নিখাদের কত জোর তা তে! শুনেছ ? পুরাণে আছে রামচক্র যিনি দাক্ষাং পূর্বজ্ঞ নারায়ণ, তাঁর লক্ষায় যেতে দেতু বাঁধতে হ'ল। কিন্তু হত্মান রামন'মে বিখাদ করে লাফ দিয়ে সমুদ্রের পারে গিয়ে প্রদান তার আর সেতুর দরকার হয় নাই।

"বিভীষণ একটা পাতার রাম নাম নিখে, ঐ পাণটা একটা লোকের কাপড়ের খোঁটে বেঁধে দিছল। সে লোকটি সমুদ্রের পারে যাবে। বিভীষণ তাকে বলেন, তোমার ভর নাই, তুমি বিখাদ করে জলের ওপর দিয়ে চলে যাও; কিন্তু দেখো, যাই অবিখাদ করেব, অমনি জলে তুবে যাবে। লোকটি বেশ সমুদ্রের উপর দিয়ে চলে যাছিল। এমন সময়ে তার ভারি ইছে। হ'ল বে কাপড়ের খোঁটে কি বাধা আছে একবার আথে। খুলে দেথ যে কেবল রাম নাম লেখা রয়েছে। তথন দে ভাবলে, এ কি! তথু রাম নাম একটি শেখা রয়েছে। যাই অবিখাদ, অমনি তুবে গেল।

"যার ঈশ্বরের নিশ্বাস আছে, সে যদি মহাপাতক করে—গো, আহ্মণ, স্ত্রী হত্যা করে, তবুও ভগবানে এই বিশ্বাসের ব.ল সে সব ভারি ভারি পাপ থেকে উদ্ধার হতে পারে। সে যদি বলে, আরে আমি এমন কাল করবো না, ভার কিছুতেই ভয় হয় না।

মহাপাতক ও নামের মাহান্তা।

"এই বলিয়া ঠাকুণ রামকৃষ্ণ গান গাইতে লাগিলেন,—
"আমি হুগা হুগা বলে মা যদি মরি।
আথেরে এ দিনে, না ভাব কেমনে, জানা যাবে গো শঙ্করী॥
নাশি গো বান্ধা, হত্যা করি ক্রণ, স্বরাপান আদি বিনাশি নারী।
এ সব পাত্তক, না ভাবি তিলেক, ব্রহ্মপদ নিতে পারি॥

(司(司聖 1)

শ্রীসুক্ত নরেক্রের কথা পড়িন। ভক্তদের সম্বোধন করে **ঠাকুর** রামি**রুক্ষ** বলেন—

"এই ছেলেটিকে দেখছ, এখানে এক রকম। গুরস্ত ছেলে বাধার কাছে যথন বদে যেন জুজুটি; আনার চাঁদনীতে যথন থেলে তখন আরে এক মুর্তি। এরা নিতা সিদের থাক্। এরা সংখারে কখনও ধদ্ধ হয় না। একটু বংস হলেই চৈত্ত হয়, আর ভগবানের দিকে চলে যায়। এরা সংসারে আনে জীব শিক্ষার জন্ত। এদের সংসারের বস্ত কিছু ভাগ লাগে না—এরা কামিনী কাঞ্চনে কথনও আসক্ত হয় না।

"বেদে আছে হোমা পাথীর কথা। খুব উঁচু আকাশে দে পাথী থাকে।
কেই আকাশেতেই ডিম পাড়ে। ডিম পাড়্লেই ডিমটা পড়তে থাকে— কিন্তু
এত উক্ত যে অনেকদিন থেকে ডিম পড়তে থাকে। ডিম পড়তে পড়তে
ফুটে যায়। তখন ছানাটা পড়তে থাকে। পড়তে পড়তে তার চোক
ফোটে আ ডানা বেরোয়। চোখ ফুটশেই দেখ্তে পায় যে দে পড়ে যাছে, আর
মাটিতে লাগলে একেবারে চুরুমার হয়ে খাবে। তখন সে পাখী মার দিকে
একেবারে চোঁচা দৌড় দেয়, আর উঁচুতে উঠে যায়।

নত্তের উঠিয়া গেলেন। সভামধ্যে কেদার, প্রাণকৃষ্ট, মাটার ইত্যাদি অনেকে ছিলেন।

শ্রীরামরুক। (ভক্তদের প্রতি) খ্যাবো, নরেন্দ্র গাইতে বাজাতে পড়া

শুনার সব তাতেই ভাল। দেদিন কেদারের সঙ্গে তর্ক করছিল। কেদারের কথাগুলো কচ্কচ্করে কেটে দিতে লাগণ। (মাষ্টারের প্রতি) ইংরা-জিতে কি কোন তর্কের বই আছে ?

মাটার। ই। ইংরাজীতে Logie (কু।রশাস্ত্র) আছে।

শ্রীরামক্ষ। আছো, কি রক্ম একটু বল দেখি।

মাষ্টার এইবার মুদ্ধিলে পড়িলেন। বলিলেন-

"এক রকম আছে, সাধারণ সিদ্ধান্ত পেকে বিশেষ সিদ্ধান্তে পৌছান। যেমন,—

> সৰ মাসুৰ মৰে যাবে। পণ্ডিভেৱা মাসুৰ। অহত্ৰৰ প্ৰিচেৰা মতে যাবে ।

"আর এক রকম আছে, বিশেষ দৃষ্টান্ত বা ঘটনা দেবে সাধারণ দিদ্ধান্তে পৌছান; বেণন,—

এ কাকটা কালো;

■ কাকটা ক'লো;
(আবার) যত কাক দেগছি, সবই কালো;
অতএব দৰ কাকই কালো।

"কিন্তু এ রকমে সিদ্ধান্ত করণে ভূল হতে পারে; কেন না, হয় তো খুঁজতে খুঁজতে আর এক দেশে শাদা কাক দেখা গোল। আর এক দৃটান্ত—বেখানে বৃষ্টি, সেইখানে মেঘ ছিল বা আছে; অত এব এই সংগ্রণ সিদ্ধান্ত হ'ল, বে বেঘ বেকে বৃষ্টি হয়। আরো এক দৃটান্ত,—

এ মাসুষ্টীর ব্তিশ দাঁত আছে। ও মাসুষ্টীয় ব্তিশ দাঁত।

(আবার) যে কোন মাসুধ দেখছি ভারই ব্রিশ দাঁত আছে।

"অত্তর সব মান্ধরেরই বক্তিশ দাঁত আছে। এরণ সাধারণ সিদ্ধাত্তের কথা ইংরাজি ক্তায়শাক্তে আছে।

ঠাকুর রামকৃষ্ণ কথা ওলি শুনিলেন যাত্র। শুনিতে শুনিতেই অভয়নক ছইলেন। কাজে কাজেই আর এ থিয়ের বেণী প্রায়ক ছইল না। তিনি মান্ধবের হিত করিতে লাগিলেন। কিন্তু দেবতার ধারণা তথনও অক্ষ রহিল। তাঁধারা তাঁধার নীতিপরারণতা এবং শক্তিও বর্দ্ধিত করিলেন মাত্র। জগতের মধ্যে তিনি সর্বশ্রেষ্ঠ নীতিপরায়ণ পুরুষ এবং এ দরপে সর্বব-শক্তিমানও হইলেন।

কিন্তু জে:ড়। তাড়। দিয়া বেশী দিন চলে না। যেমন জগদ্রহন্তের সূক্ষা ফুসুল ব্যাখ্যা হইতে লাগিল, তেমনি ঐ রহন্ত বেন আরও রহন্তময় হইতে লাগিল। দেবতা বা ঈশ্বরের গুণ বেমন সম্প্রকান্তর শ্রেটী নিয়মে বন্ধিত হইতে লাগিল, সন্দেহও সেইক্লপ সমগুণিভান্তর শ্রেটী নিয়মে ব্রিতি হইতে লাগিল। যথন লোকের জিহেভো নামক নিষ্ঠুর ঈ্থারের ধারণা ছিল, তথন দেই ঈশবের সহিত জগতের সামঞ্জ বিধান করিতে যে বপ্ত পাইতে হইত, তাহা অপেক্ষা এখন যে ঈশ্বরের ধারণা উপস্থিত হটল, তাহার সহিত জগতেব সামঞ্জভদাধন কঠিন হইয়া পড়িল। স্কান্তিমান্ এবং প্রেমময় ঈশবের রাজ্যে একপ পৈশাচিক ঘটনা কেন ঘটে ? কেন সূথ অপেক্ষা ছঃখ এড বেশী ? সাধুভাব যত আছে, ভাহা অপেকা অসাধুভাব এত বেশী কেন ? আমরা কিছু খারাপ দেখিব না, বলিয়া চোক বুজিয়া থাকিতে পাবি, কিছ তাহাতে এই জগং যে একটা বীভংগ জগং, তাথার কিছু পরিবর্তন হয় না। থ্ব ভাল বলিলে বলিতে হয়, ট্যান্টালামের * নরকল্পরূপ, তাংগ হইতে উহা কোন অংশে উৎকৃষ্ট নহে। প্রবল প্রবৃত্তি সব বহিয়াছে, ইল্রিয় চরিতার্থ করি-বার প্রবল বাসনা, কিন্তু পূরণ করিবার উপায় নাই ! আমাদের ইচ্ছার বিরুদ্ধে আমাদের হৃদ্যে এক তৎুক্ক উঠিল—তাহাতে আমাদিগকে কোন কার্য্যে অগ্রানর করিল, আর আমরা এক পদ যাই অগ্রাসর হই, অমনি ধাকা আইসে। আমরা সকলেই যেন ট্যাণ্টালাদের মত এই জগতে ভীবন ধারণ করিতে এবং মরিছে যেন বিলিনির্বন্ধে অভিশপ্ত! ইন্দ্রিয়ের বারা সীমাবদ্ধ জগতের ভিতরে যতদূর উচ্চ আদর্শ হইতে পারে, সেই সকলের অতীত সব আদর্শ

[■] ঐকি দিবের মধ্যে একটা পোরাণিক পর আছে। ভাগতে বর্ণিত আছে যে, ট্যাকীলাস্
নামক এক রাজা পাতালে এক হুদে নিক্লিন্ত ইইয়ছিলেন। ঐ হুদের জল তাঁহার ওঠ
পর্যান্ত আদিত এবং বধনই ভিনি পিপাসা নিবারণ করিবার ■ জল পান করিতে উদ্যন্ত
হতৈলে, অমনিই জল সরিয়া বাইড। তাঁহার মাধার উপর নানাবিধ কল কুলিত এবং
বধনই তিনি সুধা নিবৃত্তি করিবার জনা ঐ ■ হাত দিয়া লইতে বাইভেন, অমনি উহা
পরিয়া ধাইড।

আমাদের মস্তিকে আদিতেছে, কিন্তু যদি আমরা দে ওলি কর্ম্যে পরিণত করিতে চেটা কবি, অমা দেখিতে পাহ্ব দে গুলিকে কখনই কার্যো পরি ণত করিতে পারা ধার না। ববং আমবা চতুর্দ্দিকস্ত স্রে'তে পেষ্তি হয়ে, চুৰ্ব বিচুৰ্ণ হইয়া প্ৰম্পুতে প্ৰিণ্ত হঠ। আলাৰ যদি আমি এই আদৰ্শের জন্মে চেষ্টা পরি ল্যাগ করিয়া কেবল সাং শ্রিক ভাবে গাকিতে চাই, তাহা ২২লেও আনেকে প্রজাবন যাপ্ন করিতে হয়, আর আনি অবনত হইয়া যাই। কোন দিকেই স্থা নাই। বাহার। এই জনতেই যেন্ন জনাইয়াছে, সেই রূপই থাকিতে চায়, ভাহাদেরও অদৃত্তে তুঃগ। যাহারা শাবার সভ্যের জ্ঞ-এই পাশ্ব জীবন হইতে কিছু উন্নত জীবনের জন্ম প্রাণ দিতে অগ্রাসৰ হয়, ভাহাদের আবা। মৃহত্র জ্ঞা অস্ত্র। ইহা বাস্তবিক ঘটনা; ইহার আর किছ वार्था नार्टे। इंटांत कान वार्था। इटेंट्ड शार्ट नां, किछ विमास বাহিরে যাইবাব পণ দেখাইয়া দেন। এই সকল বক্ততার সময় আমাকে धमन व्यानक कथा तनिए इहेरन, याशए नमरत मगर्य एहामहा खब्र शाहरत, কিন্তু আমি যাহা বলি, ভাতা আর্ণ বাখিও, উহা বেশ করিয়া হজম করিও, দিবারাত্র ঐ সহজে চিতা করিও। ভাগ হইলে উহা ভোমাব অন্তরে প্রবেশ ক্রিবে, উহা তোমাদিগকে উন্নত করিবে এবং তে'ম্যাদগকে সভা বুরিতে এবং সতো বাস করিতে সমর্থ কবিবে।

এই জগৃং যে ট্যাণ্ট:লাদের ন্বক্ষরপে, ইহা কোন মত বিশেষ নতে, ইহা বাস্তবিক সত্য কথা— আমরা এই জগংসক্ষে কিছু জানিতে পারি না, আবার আমবা জানি না, ভাগাও বলিতে পারি না। এই জগংশৃভালের অস্তিত্ব আছে, তাহাও আমি বলিতে পারি না, আবার যথন আম্রা উহার সম্বৰে চিন্তা করিতে যাই, তখন আমতা দেখিতে পাই, আমরা কিছুই জানি না। উহা মামার মন্তিকের সম্পূর্ণ ভ্রম হইতে পারে। আমি হয়ত কেবল শ্বপ্ন দেখিতেছি মাত্র। আমি অপ্ন দেখিতেছি, আমি ভোমার দঙ্গে কথা ক্রিছেছি, আবার তুমি আবার কণা শুনিভেছ। কেহই ইতার বিপরীত প্রমাণ করিতে পারেন না। 'আমার মন্তিদ' ইহাত একটা স্বপ্ন ইইতে পারে, আর বাওবিক ও ও কেই নিজের মন্তিফ কখন দেখে নাই। আমরা উচা কেবল মানিয়া লইভেছি মাত্র। সকল বিষয়েই এইরূপ। আমার নিঙের শরীরও আমি মানিয়া লইতেছি মাতা। আবার আমি জানি না, তাহাও ৰণিতে পারি না। জ্ঞান ও অজানের মধ্যে এই অবস্থান, এই রহস্তময় >>8 **केटबा**धन । िण्य--- हर्च मर्चााः

1

কুহেলিকা—এই সভা মিধাার মিশ্রণ— কোথায় মিশিয়াছে, কে জানে ? আমরা অপ্রের মধ্যে বিচরণ কবিছেছি, অর্জনিদ্রিভ, অর্জ জাগ্রভ—সারা জীবন এক কুছেলিকায় আক্র—ইহাই আমাদের গুভোকেরই দশা! সব ইান্দ্রিভানের ঐ দশা। সকল দর্শনের, সকল গর্লিভ বিজ্ঞানের, সকল প্রবার গর্বিভ মানবজ্ঞানেরও এই দশা—এই প্রিণাম। ইহাই ব্রহ্মাণ্ড।

ভূতই বল, আত্মাই বল, মনই বল, আরু যাহাই বল না কেন, যে কোন নামই উহাকে দাও না কেন, ঝাপাব এই একই—আমরা বলিতে পারি না. উহাদের অস্তিত্ব আছে, বলিতে পারি না বে, উহাদের অস্তিত্ব নাই। আমরা উহাদিগকে এক ও বলিতে পারি না, আবার বহুও বলিতে পারি না। এই আলো আঁধারের খেলা – নানানিধ তুর্ললতা – ত্রিভেয়, তুর্নিভাজা, কিন্ত তথাপি বহিয়াছে-বান্তবিক ব্যাপার অথচ বান্তবিক নহে, জাগ্রত ভাগার যেন নিজিত। ইহা প্রকৃত ঘটনা - ইহাকেই মারা বলে। আমরা এই মারাতে জনিয়াছি, আমরা ইহাতেই জীবিত রহিয়াছি, আমরা ইহাতেই চিন্তা করিতেছি, ইহাতেই **অ**প দেখিতেছি। **আমরা এই** মায়াতেই দার্শনিক, আমরা ইহাতেই সাধু, ভগু তাহাই **ন**হে, **আমরা** এই মায়াতেই কখন দানব কখন বা দেবতা হইতেছি। চিন্তার্থে আবোহণ করিয়া যতদূর যাও, তোমার ধারণাকে উচ্চ হইতে উচ্চতর কর, উহাকে অনন্ত অথবা যে কোন নাম দিতে ইচ্ছা হয়, দাণ, ঐ ধারণাও এই মারারই ভিতরে। ইহার বিপ্রীত হইতেই পারে না, **আর মানুষের সমস্ত জান** কেবল এই মায়ার সাধানণ ভাব আবিষ্কার করা, উহার প্রকৃত স্বরূপ জনা। এই মায়া নামরপেরই কার্যা। যে কোন বস্তুরই আরুতি আছে, যাহা কিছ ভোমার মনের মধ্যে কোন প্রকার ভাবের উদ্দীপনা করিয়া দেয়, ভাহাই মায়ার অন্তর্গত, কারণ, বেমন জন্মান দার্শনিকগণ বলেন, যাহা কিছু দেশকাল-নিমিত্তের অধীন, ভাহাই মায়ার অন্তর্গত।

একণে ফের সেই ঈশর-ধারণা-সম্বন্ধে কি হইল, ভাহার বিচার করা যাউক। পূর্দ্ধ সংসারের যে অবস্থা চিত্রিত হইগাছে, ভাহাতে আনারাসেই দেখিতে পাওরা যাইভেছে, পূর্ব্ধোক্ত ঈশ্বরধারণা—একজন ঈশ্বর আমাদিগকে অনস্তকাল ধরিয়া ভালবাগিতেছেন—ভালবাসা অবশু আমাদের ধারণামত—একজন অনস্ত সর্দ্ধাক্তিমান্ ■ নিঃসার্থ পুক্ষ এই জগং শাসন করিভেছেন, ভাহা হইভেই পারে না। এই দশুণ ঈশ্বরধারণার বিরুদ্ধে দাঁড়াইতে ক্রির ১৫ই ক্রেন, ১৬০৭।] উল্লেখন। ১২৫

সাহদের আনিশ্রক। তোমার জারপর দ্যামর ঈশ্বর কি? কৰি জিজাসিতে-ছেন. তিনি কি মনুষ্কপ বা প্রুক্ত ভাহার লক্ষ্ণ লক্ষ্য সভানের বিনাশ দেখিতে-হেন না ৪ কারণ, এমন কে অ ছে, বে এক মুহু র্ত্ত অপরকে না মারিয়া জীবন ধারণ করিতে গারে ? ভূমি কি সহত্র সহত্র জীবন সংহার না করিয়া একটী নিখানও আকর্ষণ করিতে পার ৭ তুমি জীবিত রহিয়াছ, লক্ষ লক্ষ জাব মারতেছে বলিয়া। তোমার জীবনের প্রতি মুহুর্ত্ত, প্রত্যেক নিঃখাদ যাহা তুমি গ্রহণ ক্রিছেছ, ভাষা সম্প্র শহল ব্যক্তির মুভাস্থরণ, আর ভোমার প্রতোক গভি লক লক্ষ ব্যক্তির মৃত্যুস্বরণ। কেন তাথারা মরিবে? এ স্থক্তে একটী অতি প্রাচীন মনোক্তিক কথা প্রচলিত আছে, - "উহারাত মতি নীচ জীব।" মনে কৰ যেন ভাহাট হইল-কিন্তু ইহা একটী অমীমাংসিত বিষয় কে বলেতে পারে, কীট মনুষা হইতে শ্রেঠ, কি মনুষা কাট হইতে শ্রেষ্ঠ ? কে প্রমাণ করিতে পারে, এটা ঠিব, কি ওটা ঠিক ? মানুষ গৃহ নিশ্রাণ করিতে পারে অবধবাষর আবিকার করিতে পারে, তবে মানুষ্ট শ্রেষ্ঠতর। এ কথা বলিলে ইহাও বলা যাইতে পারে, কীট গৃহ নির্মাণ করিতে পারে না বা যন্ত্র আবিষার করিতে পারে না বলিগাই শ্রেষ্ঠ। এ পক্ষেও বেমন যুক্তি নাই, ও পেকোও তদ্ৰপ নাই।

যাক সে কথা, উহারা ছাতি হীন জীব ধরিয়া লইলেও, তাহারা মরিবে কেন ? যদি তাহারা হীন জীব হয়, তাহাদেবই ত আরো বাঁচা বেশী দরকার। কেন তাহারা বাঁচিবে না ? তাহাদের জীবন ইন্দ্রিরেই বেশী আবদ্ধ, স্তরাং তাহারা তোমার আমার অপেকা সহস্রওণ স্থ ডঃথ বোধ করে। কুকুর ব্যান্ত থেকাপ ক্রিরে সহিত ভোজন করে, কোন্ মানব সেরপ ক্রিরে সহিত ভোজন করিতে পারে ? ইহার কারণ, আমাদের সমুদ্র কার্যাপ্রতি ইন্দ্রিরে মহে,—বৃদ্ধিতে— আছায়। কিন্তু কুক্বের ইন্দ্রিয়েতেই প্রাণ পড়িয়া রহিয়াছে, তাহারা ইন্দ্রির স্পের জন্ত উন্নত হয়, তাহারা এত আনক্রের সহিত ইন্দ্রিরেশ্ব তোগ করিবে, আমরা মহুষ্যেরা সেরপ করিতে পারি না, আর এই স্থাও ষ্বা থানি, ছঃথও তাহার সম্পরিমাণ।

য হথানি হথ, ভতথানি চ:ব। যদি মকুষ্টেরর প্রাণীরা এত ভীব্রভাবে হ্ব অক্তব করিয়া থাকে, তবে ইথাও সভা, তাহাদের ছঃখবোধও তেমনি ভীব— মানুষের অপেকা সহস্তাপে ভীব্রতর—তাহাদিগকে মরিতে হইবে! তাহা হইলে হইল এই, মানুষ মরিতে যত কফী অসুভব করিবে, অপর প্রাণী তাহার সংক্ শত গুণ ভোগ করিবে, তথাপি আমাদিগকে তাহা দের কটে গাঁবিয়া ভাহাদিগকে মারিতে হয়। ইহাই মারা; আর বদি আমরা মনে কনি, একজন সন্তণ ঈথর আছেন, যিনি ঠিক মানুষেরই মত, যিনি সব স্পষ্ট করিয়াছেন, ভাহা হইলে ঐ যে সকল ব্যাখ্যা মত প্রভৃতি, যাগতে বল, মান্দর মধ্য হুটতে ভাল হইগাছে, তাহা প্র্যাপ্ত হয় না। হউক না শত শত সহস্র সহস্র উপকার— মন্দের মধ্য দিয়া উচা কেন আসিবে হু এই সিক্ষান্ত অন্সারে তবে আমিও নিজ প্রেক্তিয়ের স্থের হল্ল অপ্রের গলা কাটিব। স্কুলরং ইহা কোন যুক্তি হইল না। কেন মান্দের মধ্য দিয়া ভাল হইবে হু এই প্রশ্নের উত্তর দিতে হইবে, বিল্প এই প্রশ্নের ত উত্তর দেওরা যায় না; ভারতীয় দর্শন ইহা স্বীকার করিতে বাধ্য হইয়াছিল।

বেদান্ত সকল প্রকার ধর্মসম্প্রদায়ের মধ্যে অধিকতর সাহসের সহিত সতা অবেষণে অগ্রসর হটয়াছেন। বেদান্ত মাঝখানে এক জাগগায় পিয়া তাঁধার অনুসন্ধান স্থাতি রাখেন নাই, আর তাঁহার পক্ষে অগ্রসর হইবার এক স্থবিধাও ছিল। বেদাস্তধর্মের বিকাশের সময় পুলোহিত সম্প্রদার সভ্যা-বেষিগণের মুখ বন্ধ করিয়া রাখিতে চেটা করেন নাই। ধর্মে সম্পূর্ণ স্বাধীনত। ছিল। তাঁহাদের সঞ্চার্কা ছিল-সামাজিক প্রণালীতে। এখানে (ইংলতে) সমাজ খুব স্বাধীন। ভারতে সামাজিক বিষয়ে স্বাধীনতা ছিল না, কিন্তু ধর্মাত সম্বন্ধে ছিল। এখানে লে'কে পোষাক যেরূপ পরুক না কেন. কিমা যাহা ইছো কক্ষক না কেন, কেহ বিছু বলে না বা আপত্তি করে না, কিন্তু চর্চ্চে একদিন যাওয়া বন্ধ হইলেই, নানা কণা উঠে। সভ্য চিন্তার সমন্ধ তাঁহাকে আগে হাজার বার ভাবিতে হয়, সমাজ কি বলে। অপর পক্ষে, ভারতবর্ষে যদি একজন অপর জাতির হাতে থাল, অমনি সমাজ ভাহাকে জাতিচ্যত করিতে অগ্রসর হইয়া থাকে। পূর্ব্ব পুরুষেরা বেরুপ পোষাক করিতেন, তাহা হইতে একটু পৃথক্রপ পোষাক করিলেই, বাস, ভাষার দর্বনাশ। আমি ভনিয়ছি, প্রথম রেলগাড়ী দেখিতে গিরাছিল বলিয়া একজন কাভিচাত হইয়াছিল। মানিয়া লইলাম, ইহা সত্য নহে, কিছ আমাদের সমাজের এই গতি। কিন্ধ আবার ধর্ম বিষয়ে দেখিতে পাই, নান্তিক, জড়বাদী, বৌদ্ধ, সবল রক্ষের ধর্মা, সবল রক্ষের মত, আন্তুত রকমের, ভয়ানক ভয়ানক মত লোকে প্রচার করিতেছে, শিকা ■ পাইতেছে,---এমন কি, দেবপূর্ণ মন্দিরের ছারদেশে আক্ষণেরা অভ্যাদিগণকেও দীড়াইরা ३४हे कांबन, ३५०१।] केटबाधम ।

তাঁহাদেরই দেবতার িন্দা করিতে দিতেছেন। ইহা তাঁহাদের—ধর্মে উদারভাব ও মহত্ত্বে পরিচায়কই বটে।

বুদ্ধ খুব বৃদ্ধ বংশে দেহরক্ষা করেন। আমার এবজন আমেরিকান বৈজ্ঞানিক বন্ধ বৃদ্ধদেনের জাবনী পড়িতে বড় ভাল বাসিতেন। তিনি বুদ্ধ-দেবের মৃত্যুটী ভালবাসিতেন না, কারণ বৃদ্ধদেব জুশে বিদ্ধ হন নাই। কি অমায়াক ধারণা। বড় শোক হইতে গোলেই পুন হইতে হইবে! ভারতে একপ ধারণা প্রচলিত ছিল না। বৃদ্ধদেব তাঁহাদের দেবতা, এনন কি, তাঁহাদের দেবদেব জগংশাসনকতা প্যান্ত অ্যীবার করিয়া তাঁহাদেরই দেশে অমণ করিতেছিলেন, তিনিই আবার বৃদ্ধদেশ সূত্যন্থে পতিত হন। তিনি ৮৫ বংগর বাচিয়াভিলেন, আর তিনি আজক দেশ তাঁহার ধর্মে আনিয়াছিলেন।

চার্বাদের। ভ্রানক ভ্রানক মত প্রচাব করিতেন—উনবিংশ শতাব্দিতেও লোকে এরপ ক্ষান্ত পোলা খাঁট জড়বাদ প্রচারে সামস করে না। এই চার্কাকগণ মান্দরে নিদ্দের নগবে নগরে প্রচার করিতেন—ধর্ম মিগাা—উহা পুরোহিতগণের স্বার্থ চিহিতার্থ করিবার উপায় সাত্র, বেদ ভণ্ড ধুর্ত নিশাচর দিগের রচনা—ঈশ্বরও নাই, আয়াও নাই। যদি আত্রা পাকেন, তবে স্থানি প্রত্রের প্রণায়রেও হইয়া কেন তিনি ফিরিয়া আনেন নাণ্ তাহাদের এই ধারণা ছিল যে, যাদ আত্রা থাকেন, তবে মৃত্যুর পাবও তাহার ভালবাসা প্রণার স্ব থাকে, তিনি ভাল থাইতে, ভাল পরিতে চান্। এইরপ ধারণাসক্ষম হুইলেও বেছই চালাকদিগের উপ কেন অভ্যাচার করে নাই।

আমরা ধ্যাবিষয়ে স্থানীনতা দিয় ছিলাম, ভাষার ফলস্কাণ এখনও ধর্মকাতে আমাদের মহাশক্তি বিরাজিত। তোমরা সামাজিক বিষয়ে সেই
স্থানীনতা নিয়াছ, ভাষান কল—তোমাদের অতি স্কল্ব সামাজিক প্রণালী।
আমরা সামাজিক উন্নতি বিষয়ে কিছু স্থানীনতা দিই নাই, স্থানাই আমাদের
সমাজ স্কীণ। তোমরা ধর্মমন্থকে স্থানীনতা দাও নাই, ধর্মবিষয়ে প্রচলিত
মতের ব তিক্রম করিলেই অমনি বন্দুক তরবারি বাজির হইত; ভাষার ফল,
ইউরোপীর ধর্মাভাব স্থানি। ভারতে সমাজের শুআল খুলিয়া দিতে হইবে, আর
ইউরোপে ধর্মের শুআল খুলিয়া লইতে হইবে। তলেই উন্নতি হইবে। যদি
আমরা এই আধ্যাত্মিক নৈতিক বা সামাজিক উন্নতির ভিতরে যে একত্ম
রহিয়ছে, ভাহা ধরিতে পারি, যদি জানিতে পারি, উহায়া একই পদার্থের
বিভিন্ন বিকাশমাত্র, ভবে ধর্ম্ম আমাদের সমাজের মধ্যে প্রবেশ করিবে, আমান
১১৮
উল্লেখন।

ভিলেশ্বন।

দের জীশনের প্রতি মৃহূর্বই ধর্মভাবে পূর্ণ গ্রহণে। ধর্ম মামাদের জীবনের প্রতি কার্যো প্রবেশ করিবে – ধর্ম বলিতে যাহা বিছু বুঝায়, সেই সমুদ্য আমাদের জীবনে তাহার প্রভাব নিস্তার করিবে। বেলাস্তের মালোকে ভোমরা বুঝিবে,সব নিজ্ঞান কেবল ধর্মেবই বিভিন্ন বিকাশমাত ; ভগতের আর সব জিনিষও ঐরপ।

তবে আমবা দেখিল,ম, প্রান্ত থাকাতেই হউরোপে এই সকল বিজ্ঞানের উংপত্তি ও শ্রীকৃতি হইরাছে, ভারে আনরা দেখিতে পাই, আন্চর্যাের বিষয়, সকল সমাজেই চইটী দল দেখিতে পাওয়া যার। এক দল সংহারক, আর এক দল সংগঠনকারা। মনে কর, সমাজে কোন দোষ আছে, অমনি এবদল উঠিয়া আমনি গালাগালি করিতে আরম্ভ কবিলেন। ইহারা অনেক সময় গোঁড়ামাত্র হইরা দাঁড়াের। সকল সমাজেই ইহাদিগকে দেখিতে পাইবে, আর স্ত্রীশো-কেরাই অধিকাংশ এই চাংকারে যোল দিয়া থাকে, কারণ তাহারা প্রভাবতই ভাবপ্রবেশ। যে কোন বাজি দাঁড়াইয়া কোন বিষয়ের বিজ্ঞানে বক্তা করে, তাহারই দলবুদ্ধি হইতে থাকে। ভাগা সহজ; একজন পাগল সহজে বাহা ইছা ভাগিতে পারে, কিন্তু তাহার পক্ষে কিছু গড়া কঠিন।

সকল দেশেই এইরূপ অম্ভিয়ারর প্রতিবাদা োন না কোন আকারে বর্ত্ত-মান দেখিতে পাওয়া যায়, আর ভাহার, মনে করে, কেবল মানাগালি, দিয়া, কেবল দোষ প্রকাশ কার্যা দিয়াই তাহারা কোককে ভালা করিবে। তাহাদের দিক্
ছইতে দেখিলে মনে হয় বটে, তাহারা কিছু উপকার করিওছে, কিন্তু বাস্তবিক
ভাহারা অধিক অনিউই করিনা থাকে। কোন জিন্ম ত আর এক দিনে
হয় না। সমাজ একদিনে নিশ্বিত হয় নাই, আর পরিবত্তন অর্থে—কারণ দ্র
করা। মনে কর, এখানে অনেক দেয়ে আছে, কেবল গালাগালি দিলে কিছু
হইবে না, কিন্তু মূলে গমন করিতে হয়বে। প্রথমে ঐ দোষের হেতু কি নিশম
কর, তার পর উহা দূর কর তাহা হইলে উহার ফণস্করপ দোষ আপনিই চলিয়া
যাইবে। চীংকারে কোন ফল ইইবে না, তাহাতে বয়ং অনিউই আনমন

অপর দলের— বাঁহাদের কথা বলা হইয়াছে— তাঁহাদের হৃদরে সহাত্ত্তিছিল। ওাঁহারা বুঝিতে পারিফাছিলেন যে দোষ নিবারণ করিতে হুইলে উহার কারণ পর্যান্ত গমন করিতে হুইবে। ইহাঁবই বড় বড় সাধুগণ। একটি কথা তোমাদের স্মরণ রাখা আবশুক যে, জগতের সকল শ্রেষ্ঠ আচার্যাণ্ডাই বলিয়া গিয়াছেন, আমরা নাশ করিতে আগি নাই, পুর্কে যাহা ছিল, কাশ্বন, ১৩০৭। বিশাসন, ১৩০৭।

তাহাকে সম্পূর্ণ করিতে আদিয়াছি। অনেক সময় আচার্যাগণের এইরূপ মহৎ উ.দশু না বুঝিয়া তাঁহারা সাধারণ লোকের মতে সায় দিয়া তাঁহাদের অফুপ-যুক্ত কার্যা করিয়াছেন, বলিয়া থাকে। এখনও অনেকে এইরূপ বলিয়া থাকে যে, ইইারা যাহা সভা বলিয়া ভাবিতেন, তাহা প্রকাশ করিয়া বলিতে সাংস ক্রিতেন না, ইহারা কতকটা বাপুরুষ ছিলেন। কিন্তু বাত্তিক ভাহা এই দকল একদেশদশীরা এই দকল মহাপুরুষগণের হৃদ্য়স্থ প্রেমের অন্ত শক্তি অতি অলই বুঝিতে পালে। তাঁহারা জগতত্ত জনগণকে তাঁহাদের সম্ভানস্বরূপ দেখিতেন। তঁহারট যথার্থ পিতা, তাঁহারট যথার্থ দেবতা, তাঁহা-দের প্রত্যেকে এই জন্ম অনস্থ সহাজুভুতি এবং ক্ষমা — তাঁহোরা স্কানা স্থ এবং ক্ষমা করিতে প্রস্তত। তাঁহারা জানিতেন, কি করিয়া মান্বস্মাজ সংগঠিত ছইবে; সুতরাং উটোরা অতি ধারভাবে, অত্যন্ত সহগুণের সহিত তাঁহাদের দ্ধীৰনী ঔষৰ প্রযোগ করিতে লাগিলেন। লোককে ভাঁহারা গালাগালি দেন নাই বা ভঃ দেখান নাই, কিন্তু অতি ধীরভাবে তাঁহাদিগকে এক এক পদ করিয়া পথ দেখাইয়া লইয়া গিয়াছেলেন। ইহারাই উপনিষদের লেথক। তাঁহারা সম্পূর্ণ জানিতেন, ঈথরের প্রাচীন ধারণা সকল উল্লত-নীতি-সঙ্গত ধারণার সহিত মেলে না। তাঁহারা সম্পূর্ণরূপে জানিতেন, ঐ সকল খণ্ডন-কারীদের ভিতরই অধিক সতা আছে; তাঁহারা সম্পূর্ণরূপে জানিতেন, বৌদ্ধ 🛢 নাজিকগণ যাহা প্রচার করিতেন, ভারার মধ্যে অনেক মহৎ মহৎ সত্য আছে, কিন্তু তাঁহারা ইহাও জানিতেন, যাহারা পূর্বনতের সহিত কোন সম্বন্ধ রকানা করিরা নৃতন মত স্থাপন কবিতে চাচে, যাহারা যে সূত্রে মালা গ্রন্থিত, ভাহাকে ছিল্ল করিতে চাহে, যাহারা শুক্তের উপর নুখন সমাজ গঠন করিতে চাহে, তাহারা সম্প্রপে অক্তকার্যা হইবে।

আমরা কংনই নৃতন কিছু নির্মাণ করিতে পারি না, আমরা কেবল প্রাতন বস্তর হান পরিবর্তন করিতে পারি মাত্র। বীজই রুক্ষরণে পরিণত হয়, শতরাং আমাদিগকে দৈর্য্যের সহিত শান্তভাবে লোকের সত্যান্তসন্ধানের জন্ত নিযুক্ত শতিকে পরিচালন করিতে হইবে, যে সভ্য পূর্ব্ব হইতেই জ্ঞাত, ভাহারই সম্পূর্ণভাব জানিতে হইবে। স্মতরাং ঐ প্রাচীন ঈর্বর্ধারণা বর্তমান কালের অনুপ্রকু বলিয়া একেবারে উড়াইয়া না দিয়া, ভাহারা উহার মধ্যে বাহা সভ্য আছে, ভাহার অ্যেষণ করিতে লাগিলেন, তাহার কল ক্রুদান্তন্দিন। ভাহারা প্রাচীন দেবভাসকল এবং জনতের শাস্তা এক ঈশরের ১২০

উল্লোধন। তিহারা প্রাচীন দেবভাসকল এবং জনতের শাস্তা এক ঈশরের

হইরাছে। কিরপে যথী বিভক্তির দারা নির্দিষ্ট হইল ? অর্থাৎ এই স্থান্ধ, বিভক্তি বিহীন নির্দেশ করা ষাইবে। যেমন রুগ উঃ রংলঃ এইরপ বিচ্ছেণ করিয়া "রুপোরোলঃ" সূত্র নিল্পাদিত হইয়াছে। এই স্থানে অর্থ হইবে যে রূপ ধারুর ঋকারের যথী বিভক্তিতে উঃ হইয়াছে। র্ ইহার ষ্ঠী বিভক্তিতে রঃ হইয়াছে। ল্ ইহার ষ্ঠী বিভক্তিতে লঃ হইয়াছে। ল্ ইহার ষ্ঠী বিভক্তিতে লঃ হইয়াছে। ক্ ইয়াছে। ল্ ইয়ার ষ্ঠী বিভক্তিতে লঃ হইয়াছে। ক্তরাং রূপ ধারুর ঋকারের স্থানে ৯ নার এবং র্ স্থানে ল্ হইবে; এইরপই যান অর্থ ইইল, তথন এই স্থানে ঋকারও ষ্ঠী বিভক্তি নির্দিষ্ট হওয়াতে. একদেশ বিকৃত হইলেও রূপান্তর হইবে না। অত্রব "রুপ্তিশিষ্ণ" এই স্থানেও '৯' প্রত হইবে।

ভাষামূল।—অথবা পুনরস্ত অবিশেষের। নতু চোকাং রাজ্ঞা ক চ রাজ-কীমন্ অলোপোন ইতি প্রাপ্তোতীতি। নৈব দোষা । বক্ষাত্যেত্ব শ্বাদীনাং সংপ্রদারণে নকারাস্তগ্রহণননকারাস্তগ্রতিবেবার্থমিতি। তৎপ্রক্রতমুক্তরত্রাম্বর্তিষ্তে। অলোপোনা নকারাস্তগ্রেতি।

বঙ্গাল্বাদ। — অথবা পুনঃ ষ্ট্রী বিভাক্ত বিশিষ্ট না হইয়া সাধারণক্রপেই হউক। যদি বল বে, সাধারণক্রপে (অবিশেষকরে) প্রয়োগ কবিলে, "রাজঃ ক চ," এই শুত্র দ্বারা রাজকীয়ম্ শক সিদ্ধ হইলে, অলোপোহনঃ ৬।৪।১৩৪। (কোনও শক্ষের অস্থিত অবয়্রবিশিষ্ট কোনও "নকাব" হইলে, সেই নকার যদি পর্কনাম (১) বিশিষ্ট সংজ্ঞা না হয়, আর তংপবে যদি অয়চ্ আদি বিশিষ্ট আদি (২) পরে থাকে, পুনঃ সেই ন কার যদি অন্ভাগের অস্তব্যুত্ত হয়, ভাহা হইলে, সেই নকারের পূর্বিবলী অকারের লোপ হয়) এই শুত্রানুসারে, রাজন্ শক্ষের লুপ্ত নকার প্রস্কৃত, রাজকীয় শক্ষের জিকারণ্ডিত অকারের লোপ হবব। সূত্রাং রাজকীয়' এই শুদ্ধ প্রহাগ না হইয়া রাজ্কীয় এই ক্ষেপ অশুক্ত প্রারাণ্ড ইবে।

এই হলে দোষ হইবে না। যে হেড় "শুরুবমঘোনামভদ্ধিতে" ।৬৪১৩৩। (তদ্ধিত ভিন্ন ভ (৩) সংজ্ঞা বিশিষ্ট, খন্, যুবন্, এবং মঘবন্ শব্দের

⁽১) সু ঔ যস্ অমৃ ঔ এই পঞ্ বিভক্তিব সর্বনাম সংজ্ঞা হর, ব্লীবলিক তিয়া অক্ষার।

⁽২) সুহইরাছে আদিতে বার (বে সকল বিভক্তির), তাহাকে স্থাদি বলে। पথা সু, তু, বস্, অনু, তুট, শন্ইত্যাদি।

⁽o) যকার আদিতে আছে এবং স্বর্থ আদিতে আছে, এমন কর্মনাম ভিন্ন থাকি বিভক্তি পরে থাকিলে ভাহার পূর্কস্থিত শব্দের ভ সংজ্ঞা হয়।

জন্ ভাগ পরে গাকেলে, সংপ্রানারণ ১) হইনা থাকে।) এই স্তের খান্ প্রেছিত শক্ষের সংপ্রানারণ প্রসাদে যে, (নকারান্ত শক্ষ হইকোও পুনঃ। নকারান্ত গ্রহণ করা হইয়াছে, ভাহা জনকারান্ত শক্ষের বারণের জন্তই হইনাছে, এইকাপ বলিতে হলবে। প্রাকৃতি গত সেই প্রে উত্রোজ্য অসুবৃত্তি করিতে হলবে। ভাহা হইলে 'ভালোগোহনঃ' এই স্থান্তের প্রহণ হলবে। প্রভাগ এই স্থান এইরাপ আর্থ হলবে যে, প্রভাগদৃতি নকারবিশিতি জন্ভাগেরই, জকার লোপ হয়। ভাহা হইলেই রাজকায় শক্ষের অন্তর্গত রাজন্শক্ষের ন্কার প্রভাগদৃতি নহে বলিয়া, এ স্থান জকারের লোপ হাবে না। রাজনীয় এইরাপ আন্তর্গ প্রানারও হলবে না।

ভাবংমুল:—ইহ তহিক্>৩পুণিণঃ। অনৃত ইতি প্রতিষ্ধেঃ প্রাপ্রোতি।
শ্বংপ্রতিষ্ণোক্ত: । রবতপ্রতিষ্ণোক্তিতংগিংতি। শুরোররবত ইতি
বক্ষ্যামি যগ্রবত ইছুলিতে। হোতু থাকারঃ গোড় ওকারঃ। অন ন প্রাপ্রোতি। শুরোররবতঃ হুক্তেতি বক্ষ্যামি। স্ এব স্মতেদেন > কারো-প্রদেশঃ প্রত্যুগ সংপ্রত্যাধ্যায়তে সৈহা মহতোবংশস্ত্রায়ানুক্ষ তে।

বঙ্গার্থাদ।—ভবে 'ক্৯২প্রশিখঃ' এইস্থলে, গুরোবন্তোহনস্থালাপ্রেকৈকস্প প্রাচান্।৮২৮৬ (দ্ব হইতে স্থোধন ক্রিলে সেই অ হত লাকা, যদি থাকার ভিন্ন অন্ত কোন স্বর্গ হল এবং সেই স্বর্গ বর্গ যদি পুল হয়, ভবে সেই স্বর্গ বর্গ যদি পুল হয়, ভবে সেই স্বর্গ বর্গ যদি পুল হয়, ভবে সেই স্বর্গ বিক্রে প্লুত হয়) এই স্ত্রাফ্লাবে, ঋকার পরে থাকিলে প্লুতের নিষেধ ভার বলিয়া, ঋকার স্থানে ৯ কার হওয়াতে, ৯ কার পরে থাকিলেও প্লুতের নিষেধ প্রাপ্ত ইটবে।

এই ছানে দেষে ঘটবে না। আমহা স্ত্রের রূপান্তর করিব। প্রত্যক্ষ্ঠ রকার বিশিষ্ট ঋকারের প্রত্ত নিষেধ হয়। •। য় কার বিশিষ্ট ঋকারের প্রত নিষেধ করিকেই য় কারের প্রত স্বর সিদ্ধ হইবে। এককার এইরূপ স্ত্র করিলে, সমস্ত ঋ কারের প্রত্ত নিষেধ না হইয়া যালাতে রকার প্রত্যক্ষ দৃঠ হয়, এই স্ব ঋ কারেরই নিষেধ প্রেপ্ত ইবে। অভএব ঋ কার স্থানে য় কার হইলেও, ৯ কারেতের কার প্রত্যক্ষ দৃষ্ঠ নহে বলিয়া প্রত নিষেধ হইবে না।

⁽১) 'অ'কার হানে ইকার, 'ব'কার ছানে উকাব, রকার ছামে ঋ, লকার ছানে ■ আন্দেশ হইলে, তাহাকে সংশ্রমারণ কহে।

যদির কার বিশিষ্ট ঋ কারের গুড় নিষেধ হয়, এই রূপট বলা যায়; তবে "হোড় ঋকার" সনি হইয়া হোড়ুকার দীর্ঘ ৠকার হইলে, ভাহারও বা কারেতে ৰ কারে, প্রত্যক্ষ দৃষ্ঠ হইতেছে বলিয়া প্লুড় নিষেধ হইবে, অথা-হোতৃত কার এই ছানে ৠনার গুড় হইবে না।

এই স্থলে নিষেধ প্রাপ্তি হইবে না। যেহেতু এক্তের এইরূপ স্তা করিব, যে গুণেরুগতঃ ছ্রন্থানিস্থাস্যাপ্যেকৈক্তা প্রচাম্। তাহা হইলে, কেবল ছুন্ন থাকারেই প্লুত নিষেধ গ্রাহ্য চইবে। 'গোড়তকার' এই ক্তের প্রতের নিষেধ প্রাপ্তি হইবে না। এইরূপ করিলে ৯ কার উপ্দেশ বিনাই কার্যা সিদ্ধিও হইবে।

এই প্রবারে পাণিনিক্ত স্ত্রের রূপাস্তর করিয়া প্রৃতি প্রভৃতিতে, ৯ কার উপাদশ বাতী ও প্রয়োগনিদ্ধি করিয়া, ৯ কারের প্রভ্যাধ্যান (খণ্ডন) করা; বেমন ছাতি বুলং বংশোপরিভিত লট্বা (পক্ষী বিশেষ বা ফল বিশেষ) কে কাতি কটে টানিয়া নামান হয়।

ভাষামূল।—এওঙ্ ঐউচ্ইতি। ইদং বিচার্যতে। ইমানি স্কাকরাণি তপরাণি গোপদিভারন্। এং ওং ঙ্। ঐং উং চ্ইতি। অভপরাণি বা যথাভাষনিতি। কণ্চাত্র বিশেষঃ।

স্কাক্ষরেষু ভপরোগদেশে ে তরণরে তিশিংগ্ন্। কাংক্রক্রেষু ভপরে বিশেশে তেওঁ-শংবালচাবণং কর্তিয়েয়।

বলার্বাণ।—এ ও জ্। ঐ উ চ্। এই ছলে এই বিচার করা যুইতেছে বে, এ ঐ ও ও এই সন্ধি ্১) অকর সন্হ তবারাস্ত বিশিক্তি, "এং, ওং, জ। ঐং উং চ্"। এইরূপ উপনিট হওয়া উচিত, অণবা সহকারাস্ত বিশিষ গ্রেষাক বিশানবং উপদেশ করা কর্ত্বাণ । যেমন গ্রেষ্ঠে ও ও ও ঐ ঔ চ্ আছে, সেই রূপই হইবে ?)

ইহাতে বিশেষ কি ? ভাবার্থঃ— যেদপ গ্রন্থে লিখিত **আছে সেইক্লপ** উল্লেখ করিবে কি দেয়ে হইবে এবং তকারান্ত বিশি**ষ্ট উ**চ্চারণ করিলে বিশেষ

কি লাভ হইবে ? বরং ত কার উচ্চারণ করিলেই 'ত'কার রূপ একটী বর্ণ অতি-রিক্ত উচ্চারণ জন্ম গৌরব হওরাতে দোষই হইবে। যদি সন্ধি অক্ষরেতে ত কারের উপদেশ করা যায়; তবে ভকার উচ্চারণন্ধপ একটা অতিরিক্ত কার্য্য ক্তিব্য হইবে। * নির্দ্ধ অক্ষরসমূহে, ত কারেব যদি উচ্চারণ করা যায়; তবে ত কারের অতিরিক্ত উচ্চারণ জন্ম গৌরব হওযাতে, উচ্চারণকারীর পক্ষেই দোষ হইবে।

ভাষামূল।—গুৰুগাদিষুজিবিঃ। গুৰুগাদিষুজাশ্ৰাগ্ৰেণিবিধগতি। গেও-ভাত নৌওৱাত ইত্যতানীত চ অচ উত্তবস্থানো ছে ভবত ইতি দিৰ্বচনং ন আপোতি। ইছ প্ৰভাৱৈ ভ্ৰতিকামন উদভে ভাৰ্ব প্ৰস্ব ইতি অচী ি ভব্তাগামা ন প্ৰাপ্ৰোতি।

বঙ্গান্ত্ৰাণ।—তাংপ্ৰ্যাৰ্থঃ—শ স্ত্ৰেক্তিকেক মতে যদি, কোনাও অৰ্জ্ন আ নিশিষ্টি হৰ্ণও উচোৰণ না কলিলে কাৰ্য্য নিজি হয়, ভাণা হললৈ তাঁহারা কিছুতেই খেই বৰ্ণ উচ্চাৱণ কলেন না। শাস্ত্ৰকাৱপণ কোনাও সূত্ৰ করিতে গিয়া খদি অৰ্জ্নাত্ৰাও লাখন কৱিতে পাৱেন, ভাহা হইলো, পূত্ৰ উংস্বের আন্ধ্ৰ আনন্দ অক্তৰ করেন। একাপ অব্সার যদি ত বার উচ্চাৱণ ভিন্নও কাৰ্য্য শিক্ষি হয়, তাহা হইলে "এং ওং ও্" এইকাপ সূত্ৰ কৰা একাস্কুই অসঙ্গত।

এতভিন্ন ভকার উচ্চারণে দোধান্তরও প্রদর্শিত হইতেছে।

ৰ: বিবিংথ । — সদি অক্ষরে ভকার উচ্চাংশ করিলে, পুত এভিতি কার্যে আচ্ (স্বা) বিধান কর করা বর্বা। *।

যদি 'এওঙ' 'ঐ ঔ চ্'ইচাদেন মধ্যে, তকার উচ্চারণ করা যায়, (১) তবে প্রত প্রস্তুতি কার্যা করিবার সময়, অচ্ (স্বর) নিমিত্ত বিধান সিদ্ধ হইবে না। যথা গোওৱাত নোওৱাত এই স্থলে অনচিচ। ৮। ৪। ৪৭। অচ্ প্রভ্যা-হারের পরস্থিত বর্ প্রত্যাহারাস্ত বর্ণের হিন্ত হয় এই বলিয়া, গোও এবং নোও এই প্লুত অচের (স্বরের) প্রে বর্ প্রত্যাহারাত্র্মতি তকারের হিন্ত হইবে না। যেহেতু দীর্ম ওকারেরই ভবারাস্থ পাঠ করাতে অচ্ত্য ধর্ম প্রাপ্তি হইয়াছে।

⁽১) তপরস্কোলনা সাগতাত কার পরে আছে যার এমন দে বর্ণ অথবা ত কারের পরছিত যে বর্ণ, সেই বর্ণের মুকালোট দাজা হব। বেমন আই ইং উং এই দকল ছলে ত কার পরে থাকাতে কেবল একমান্তা উচ্চারণের কালের সমান হুস্থ অকার, হুস্থ ইকার এবং হুস্থ উকারেরই গ্রহণ হইবে। দীর্ঘ আকার ঈকার আদির গ্রহণ হইবে না। সেইরপা এই বলেও যদি এং ওং ভ্। ঐং ওং চ এই স্থলে দীর্ঘ একার ওকার উকার উকার ভিন্ন প্রত্ত একারাদির গ্রহণ হটবে না। স্তরাং অচ্ দংক্রা মধ্যে প্লুত একার ওকার প্রকার উকার উকার উকার ভিন্ন প্রত্ত একার প্রকার প্রকার উকার উকার উকারেরও গ্রহণ হটবে না।

পুত ও চার কি ঔকারের অচ্ছ প্রাপ্তি হয় নাই। আরে প্রতাতি ত্তিতিকাখন, উদতে তাঁ পগর এইছলে (উমোহ সাদচি উম্প্রিভাম্। ৮ । ০ । ০২ । জ্বের পরে বে উম্প্রভাহার, সেই উম্প্রভাহারা স্থাতি বর্পরে আছে যার, এমন যে পদ, সেই পদের পর অচ্থাতি লে, উমুই আগম হয়)। এই স্তাহসারে অচ্পারে আজিলে, যে জ্মুট আগম প্রাপ্তি হইয়া পাকে, তাথা হইবেনা। যে হেতু পুত একার কি পুত ওকার অচ্পার অচ্প্রভাহার মধ্যে গৃহীত হয় নাই।

ভাষামূল।—গ্ৰুসংজ্ঞা চ। *। প্ৰুত সংজ্ঞা চ ন সিধাতি। ঐততিকায়ন।
ঔওপগৰ। উপালোজ্ প্ৰদীৰ্ঘপুত সংজ্ঞা ভৰতীতি প্ৰুত্সংজ্ঞান প্ৰাপ্লোতি।
বিশাল্ধাদ।—এওঙ্৷ ঐতিচ্ এছলে এও প্ৰভৃতি তকাৰান্ত ভিন্ন পাঠ
করিলে, একারাদিৰ প্লুত সংজ্ঞাও ১ইবে না। *।

তকার রহিত এওঙ্ ঐউচ্পাঠ করিলে, তাহাদের প্রুত সংজ্ঞাও সিদ্ধ ইবৈ না। যেমন 'ঐওতিকালেন', 'উও পগ্ন' এই হবে উকালোজ্যুক্ব-দীর্ঘপ্র ১।২।২৭। (উ উ উও, ইহাদের উক্তারণ কালেব তাম কাল যার, তাহাদের ব্যক্তিম দ্রন্দ দীর্ঘপ্র সংজ্ঞা ২য়) এই স্থানুদারে ঐকাবের এবং ঔকালের প্রুত সংজ্ঞা ২য়) এই স্থানুদারে ঐকাবের এবং ঔকালের প্রুত সংজ্ঞা হউবে না।

ভাষামূল:—সন্ত ভইনত প্রাণি। অতপব এ চ ইগ্ছ্সাদেশে *। যতা-তপরাণি এচ ইগ্ছ্সাদেশইতি বজব মৃ। কিম্ প্রোজনম্। এচোছ্সাদেশ-শাসনেম্ধ একারোহ্দ্ ওকারে বা মা ভূদিতি।

বসাত্রাদ।—-যদি ভকারাস্ত বিশিষ্ঠ এ ৩৬ ্ঐ-ঔচ্ স্ত্র করাতে, এত দোষই ঘটে; তবে তকারাস্ত রহিতেই সূত্র করা যাউক্।

যদি তকার রহিতই 'এওড়্'এওচ্' হত কৰা যায়, তবে 'এচইন্ ছত্বাদেশে' এই স্তে 'ইক্' প্রভাগারের গ্রহণ করিতে ছইবে। *।

গদি তকার রহিত হাত্র করা বায় তবে এচইগ্রস্থাদেশে ১।১।৪৮। (এচ্প্রত্যাহারের স্থানে, হ্রস্থাদেশে কর্ত্র্য হইবে। হইবে) এই হতে ইকু আদেশ করা কর্ত্র্য হইবে।

কেন 'ইক্ আদেশ করা কত্বা হটবে ?

व्ययङ्ग (>) मांगाल। निवलन, कुच व्याप्तमं कतिरत, हेवात डेकातानि मा

⁽১) প্রবল্প ছাই প্রকার। আভান্তর এবং বাফ। আভান্তর প্রবাদ্ধ চারি প্রকার বধা;—ব্যাদ্ধা;—পৃষ্ট, ইবং স্পৃষ্ট, বিরুদ্ধ ও সংর্জ। বাফ প্রবাদ্ধ এরার প্রকার বধা;—বিবাহ, ১৫ই ক.স্কুন, ১৩০৭:] উদ্বোধন। ১২৫

ছইয়া, অর্দ্ধনাত্রাবিশিষ্ট একার অর্দ্ধনাত্রাবিশিষ্ট ওকারাস্ত ১ইতে পারে। পুতরাং এচ্ প্রত্যাহারস্থলে হ্রম্ব আদেশ বিধান করিলে, অর্দ্ধ একার বা অর্দ্ধ ওকার বিশিষ্ট বর্ণ না হউক, এই হ্রম্ম তকারাস্ত স্ত্র বিধান করা ক্রিয়া।

ভাষামূল।—নত্ন চ দ্রাপি তপরালি তেনাপোত্রজকাস্। ইমানৈচৌ সমাহারবলৌ মাত্রান্রজ মাত্রেবর্ণোবর্গলৈ ভয়োজ্লাদেশশাসনেষু বদা-চিদ্বর্গাং জাং ক্লাচিদিবর্ণোবর্ণো মা ক্লাচিদ্বর্গং ভূদি ভ।

বসালুবাদ।— কেবল মাজ ত ফারান্ত স্থানা করিলেই যে এটা দোষ ঘটিবে তাগা নহে। কিন্তু থালার মতে, ত কারাত্তিনিটি স্থা করা যাইবে, তাগার মতেও "ছ্রম্ম আদেশ কর্ত্তবা হইলে, এচ্ প্রত্যাগার স্থানে ইক্ প্রত্যাগার র বর্তি হইবে," এইরূপ বলিতে হইবে। থেকেলু এই যে এ ও ইহারা সমাহার বর্ণ কোরা ইকার সমাহাত অগ্নি এক শ্রীকৃত হইয়া এ, ম, উ এক এবিক্ত হইয়া ও হুবাতে, ইহারো সমাহাব বর্ণ ১ ওলাতে, ইহালের স্থানে এক আবিক্ত হইয়া ও হুবাতে, ইহারো সমাহাব বর্ণ ১ ওলাতে, ইহালের স্থানে এক আবিক্ত হুইয়া ও ক্রমাতে, ইহারো সমাহাব বর্ণ ১ ওলাতে, ইহালের স্থানে এক আবিক্ত হুইয়া ও বর্ণ হুবার ব্যক্তিরে আবেল হুবার ব্যক্তিরার আছে, তথন শ্রহানের স্থানে হুম্ম আছে, তথন শ্রহানের প্রাত্তি হুম্ম আছে, তথন শ্রহানের স্থানে হুম্ম আছে, তথন শ্রহানের স্থানের স্থানির স্থানের স্থানের স্থানির স্থানের স্থানের স্থানির স্থানির স্থানির স্থানির স্থানির স্থানির স্থানির স্থানির স্থানের স্থানির স্থানির

এও হ্. এ ওচ্ এই সূত্রে যদি তকালাত বিনিই এব ওব এব ওব পাঠ না কলা যায়, ভবে ইহাদের (একালাদির) ছাল বিধান কে লাগ কলিছে যে, একালাদির ছাল হয় আদেশ প্রাপ্ত ইইলে, হুল একালাদি প্রাপ্ত ইইলে না গ এব, ওব, ইছালা ভকালাত বিশিষ্ট পাঠ হইলেই, ভকালাত বিশিষ্ট বর্গ, দেই বর্গের সমান কালিক বর্গকে প্রহণ বরে বলিয়া, এব, এব প্রহণে হুই মাজা কলে বিশিষ্ট একার ওকাতে এই এইণ ইবনে। ছুল একার বা ওকারের-ব্রহণ ইবনে না ৪ এই জনাই ভকারাত বিশিষ্ট স্ক্রেক্রা কর্ত্বা।

উদ্বোধন। (এয় – এর্ সংখা,;

ছেইবে। কথনও, কেবল ঐকার থানে ইকার, জাণবা ঔকার স্থানে উকারই প্রাপ্ত হইবে না। কিন্ত ঐ ঔ গানে আ হওণা কথনও কঠেব্য নছে। অতএব ঐ উ প্রানে জ্লাস আদেশ কবিলে, কখনও হুস্ম 'আ' নাছন, এই জ্লাও 'ইক্' প্রত্যাহাতই (ইউ), হুস্ম আন্দেশ কালে, গ্রহণ করা কর্ব্য।

ভাষামূল।—প্রত্যাধারতে এতং। ঐচান্টেরিরভূরস্থাদিতি। **মনি** প্রত্যাধানপকঃ ইদখপি প্রত্যাধারতে। দির্দেশুঃ দন্তানথাদিতি। নমুটেঙঃ সন্থানতরাবর্দ্ধ একারোগ্র্দ্ধ ওকারঃ। ন লৌ তঃ। যদি হি তৌ স্থাভাং ভাবেবাম্মূপদিশেং। নার চ ভোগেশুনদাগানাং দাণ্ডামুগ্রিরাণাম্বীরা অর্দ্ধিমেকার্মর্দ্ধিশিং। নার চ ভোগেশুনদাগানাং দাণ্ডামুগ্রিরাণাম্বীরা অর্দ্ধিমেকার্মর্দ্ধিশিংকারং চানীকতে। স্থাতে এ অহত্যতে। সংক্রেয়া ও অন্তিভঃ স্থন্। শুক্রং তে এ সন্ত্রপ্রতং তোন সন্থাদিতি। পারিষদক্তিরেষা ত্র ভবতাম্। নৈবতি লোকে নাগ্রিন্দ্রির একারোদির ভকারেরাদিও।

বঙ্গারিবাদ। — 'ঐ'ঔ' স্থানে সুস্থ আদেশ করিলে, 'অ'কার সভাবতঃই প্রতিনির্ভি ছ্টলে। সেহে মু ঐ উচ্চারলে, উত্তরাংশই (ই এবং উ) বিশেষ কলে উচ্চারিত হইরা থাকে। পূর্লিশে 'অ' কারের সেই রূপ বিশেষ উচারল হল না। এই জন্তই ঐ উত্থানে হুব হুইয়া অকার প্রাপ্তি হওয়া অসন্তব বলিয়া, ইল্ পাত্যাখান করা সাইতেছে। হে তকারান্ত স্তকারী ব্যক্তি, বিদি প্রত্যাধান পক্ষই অবলম্বন করিলে, তবে তকারান্তরহিত স্তকারী আমরাও, ভোমার উপায়েতেই 'ইক্' আনেশ প্রত্যাখান করিব। যদি বল বে, ঐ উত্থানে হুব আন্দেশ করিব। হুইলেও, এ ও স্থানে কি হুইবে ৪

এতহত্তরে আমরা ইহাই বলিব যে, একার এবং ওবার হানে, যখন কেবল মাত্র তালু এবং ওঠ হানই দিদ্ধ আছে, তথন একার স্থানে ছুস্থ আদেশ হইলে ইকার, এবং ওকার স্থানে দ্রুস্থ আদেশ হইলে উকারই হইবে। যেহেছু একার এবং ইকারের তালুস্থান; ওকার এবং উকারের ওইস্থান। ১)

⁽২) ঐ কার এবং ও ক'নের যথাক্রনে কণ্ঠ ভালু এবং কণ্ঠ ওঠ ছান মানিলেও ভাষাকার পভপ্পনি একার এবং ওকারের কণ্ঠ ভালু এবং কণ্ঠ ভালু জীকার করেন মা। বরং একাবের ভালু এবং ওকারের কেবলমাত্র ওঠ ছানই থীকার করেন। স্বত্যাং একার ওকার ছানে ছব আদেশ হইলে ইকার উকারই হইলে। যেহেত্ ভালু বা ওঠছান বিশিষ্ট একার বা ওকার ছানে, ভাহার সমস্থান বিশিষ্ট ইকার বা উকার মা হইলা অকার হওৱা কোনওক্রণে সম্ভবশর হইতে পারে মা।

যদি কোনও প্রায়ক ক্রমে ভাষার সদৃশত্ম বর্ণই আদেশ হয়,ভবে অপেক্ষাকৃত সদৃশতর স্থান প্রধুক্ত অর্দ্ধনাত্রাবিশিষ্ট একার অর্দ্ধনাত্রাবিশিষ্ট ওকারই আদেশ হওয়া উচিত।

ভাহা হইবে নাঃ বেহেতু অন্ধ মাতা বিশিক্ত একার বা ওকার বলিয়া কোনও বর্ণই নাই।

খণি এইরূপ কোনও বণ থাকা সম্ভব হয়, ভাষা হইলে সেই বর্ণও পুনরায় উপদেশ করা কর্ত্তব্য।

যদি বল ওং ! অর্জ একার বা ও কার উপদেশের কোনও প্রয়েজন নাই;
বেহেতু "সাতান্তিরাণায়ণীয়" (১) গণ অর্জ মাতা বিশিষ্ট একার ও 'ওকার পাঠ করিয়া থাকেন; যেমনঃ— 'ফ্জাতে এ অর্ফ্রতে। অংল্যো ও অদৃতিঃ স্থতম্। শুক্রং তে এ অন্যত্তত্ত্ব এ অন্তি," সাম্বেদের এই সমস্ত প্রয়োগ স্থলে, অর্জ একার এবং ওকার পাঠ করা হেতুই জানা যাইবে যে,
আর্জ একার এবং অর্জ ওকার শক্ষ শাস্তে প্রসিক্ষই রহিয়াছে। স্থতরাং অর্জ এবা আ উপদেশের বেনারও প্রয়োজন নাই।

সামবেদের শাখা বিশেষে এই কপ পাঠ হেতু, বলা যাইতে পারে না যে, আর্দ্ধ এ কার বা ও কারের পাঠ আবগুকই হইবে। অথবা শব্দ শান্তে প্রিদিদ্ধই আছে; কেননা ইংা কেবল মাত্র দেই শাখা অধ্যয়ন শীল বাজিগণের, সভাতে পাঠ করেবার জন্তই, অর্দ্ধ 'এ' বা 'ও' পাঠ করা ইং দাবে । কিন্তু ইহা কোনও রূপ বৌকেক ব্যবহারে বা শান্তে অথবা অন্ত কোনও বেদে উদ্ধাপ অর্দ্ধ একার বা ওকার বিশিষ্ট কোনও বর্ণ নাই। স্কুত্বাং বেদ বিশেষেৰ শাখা বিশেষ পাঠকারীগণের কেবল মাত্র সভাতেই পাঠ করিবার জন্ত বে, অর্দ্ধ এবার বা একার পাঠ হইয়া থাকে, ভাষা কখনও শান্তে প্রবৃত্তিত করা ষাইতে পারে না।

ভাষাস্ত্র --একাদেশে দীর্ঘাহ্ণম্ । 🖷

একাদেশ দীর্ঘ গ্রহণং কর্ত্র গৃষ্। আনু শুণোদীর্থে বৃদ্ধিরে চিদীর্ঘ ইতি।
কিং প্রবেদ্ধিন্য আন্তর্গতি প্রেমাত চতুর্যা ত্রাণাং স্থানিনাং তিমাতাচতুমাতা আদেশামান্ত্রনিতি। খট্য ইক্তং ঘট্টেল্ডঃ। ঘট্য উদকন্ ঘট্যাক্স্যা
ধট্য ক্রমা ঘট্যা ঘট্য উল্থিটে লো। ঘট্য এলকা ঘট্য ক্রমা। ঘট্য ওদনঃ
ঘট্যাদনঃ। খট্য ঐতিকায়নঃ ঘট্যাতকায়নঃ। ঘট্য ঔপগবং ঘট্যাপাৰ ইতি।

⁽⁾⁾ माय (वरमद भाषा विरम्य।

প্রাচ্য ও পাশ্চাত্য । মিন্ত্রণ স্থামী বিবেকানন্দ।] [১০৪ পৃষ্ঠার পর 1

যাক্, মোদ্দা এমন সহর আর এ ভূমণ্ডলে নাই। পূর্বকালে এ সহর ছিল আর একরপ, ঠিক আমাদের কানীর বাঙ্গালীটোলার মত। আঁকা বাঁকা গলি রাস্তা, মাঝে মাঝে ছটো বাড়ি এক করা থিলান, দেলের গায়ে পাতকো, ইত্যাদি। এবারকার এক্ঝিবিষনে একটা ছোট পুরাণ পারি তৈরি করে দেশিয়েছে। দে পারি কোথায় গেছে, ক্রমিক বদ্লেছে, এক একবার লড়াই বিজাহ হয়েছে, কতক অংশ ভেক্সে চুয়মার হয়ে গেছে, আবার পরিকার নৃতক্ষরদা পারি দেই স্থানে উঠেছে।

বর্তমান পারি অধিকাংশই ভৃতীয় ভাপোলে মঁর তৈরি। ভৃ-ভাপেলে अ বেবে কেটে জুলুম করে বাদ্দা হলেন। ফরাদী দেই প্রথম বিপ্লব হওয়া श्वविध मञ्ज हेनमन ; कार्ट्स वान्त्रा, क्षेत्रार्वित धूनी वाधवात स्त्र, আর পারি-নগরীর সতত চঞ্চল গরীব লোকদের কাজ দিয়ে খুসী করবার জন্তু, ক্রমাগত রাস্তা ঘাট তোরণ থিয়েটার প্রভৃতি গড়তে লাগলেন। অবশ্য পারির সমস্ত পুবাতন মন্দির তোরণ স্তম্ভ প্রভৃতি রৈল। রাস্তা ঘাট সব নৃতন হয়ে গেল। পুরাণ সহর পনার পাঁটেল সব ভেঞে বুলভারের অভাদা হতে লাগ্ল এবং তাঁ হতেই এ সহরের সর্কোত্তম রাস্তা, পৃথিবীতে অদিতীয় শাঁজেণিজে রাস্তা তৈরি হল। এ রাস্তা এত বড় চঙড়া, যে মধ্যথানে, এবং ছুপাশ দিয়ে বাগান চলেছে এবং এক স্থানে অতি বৃহৎ গোলাকার হয়ে मैं। फ़िरग्रटक - जात नाम क्षाम प ना कन्कर्प, Place de la concorde. এই প্লাস্ দলা কনকর্দের চারি দিকে প্রায় স্মান্তরালে ফ্রানের প্রত্যেক জেলার এক এক ঘান্ত্রিক নারীমূর্ত্তি। তার মধ্যে একটি মূর্ত্তি হচ্ছে স্ট্রাস্ বুর্গ-নামক জেশার। ঐ জেলা এখন ডইচ্ (জর্মান্) রা ১৮৭২ সালের লড়াইয়ের পর रूट क्ट निरम् । किन प्र कृथ क्या प्रम जान वाम वाम ना, तम पूर्ति निन् রাত প্রেভোদিই ফুল মালার ঢাকা। যে রক্ষের মালা লোকে আফ্রীর স্বলনের গোরের উপর দিয়ে আদে, সেই রকম বৃহৎ বৃহৎ মালা দিন রাত দে মুর্জির উপর কেউ না কেউ দিয়ে যাছে।

দিলির চাঁদনিচৌক কতক অংশে এই প্লাস্দ লা কন্কর্দের মৃত এককালে ছিল বলে বোধ হয়। স্থানে স্থানে জয়তক্ত, বিজয় ভোরণ, আর বিরাট নর-

নারী দিংলীদি ভার্গ্য মৃতি। মহাবীর প্রথম স্থাপোশেল র স্মারক এক সূত্্হ ধা কি বিজয়ক্ত छ। তার গারে ভাপোলেঅ র সময়ের যুদ্ধ বিজয় ছবি छ। উপরে তাঁর মূর্ক্তি। আর একস্থানে প্রাচীন হুর্গ বান্তিল (Bastille) ধ্বংসের স্মারক চিহ্ন। তথন রাজাদের একাধিপতা ছিল, যাকে তাকে যথন তথন জেলে পুরে দিত। বিচার না, কিছু না, রাজা এক হকুম লিখে দিতেন; তার নাম লেটর দ কাাশে - মানে রাজমূদাকি চ লিপি। তার পর, সে ব্যক্তির আরে কি करत्र कि ना, लाधी कि निर्फाधी, छात्र कात किकानाभुका तमहे, धकवादत निर्दे পুর্লে সেই বান্তিলে; — দেখান থেকে বড় কেউ আর বেকত না। রাল্লাদের অব্যদ্দিনীরা কারুর উপর চট্লে, রাজার কাছ থেকে ঐ শীণটা করিয়ে নিয়ে সে ব্যক্তিকে বাস্তিলে ঠেলে দিত। পরে যথন দেশ শুদ্ধ লোক এ সব অতা।-চারে কেপে উঠলো, ব্যক্তিগত স্বাধীনতা, দ্ব স্মান, ছোট বড় কিছুই নয়, -- এ ধর্ম উঠাল, পারির লোক উন্মন্ত হয়ে রাজারণীকে আক্রমণ করলে, সে সমর প্রথমেই এ মাহুষের উপর মাতুষের অভ্যাচারের যোর নিদর্শন এ বান্তিল ভূমিদাং কর্বে, দে স্থানটার এক রাভধ্বে নাচ গান আমোদ কর্বে। তার পর, রাজা পাণিয়ে যাজিলেন, তাঁকে ধরে ফেল্লে, রাজার খণ্ডর অটি যার বাদশ জামায়ের সাহায়ে সৈত্ত পাঠাক্তেন শুনে প্রজারা ক্রোধে অব্ধ হয়ে রাজারাণীকে মেরে ফেল্লে, দেশগুদ্ধ লোক স্বাধীনতা সাম্যের নামে মেতে উঠ্লো, ফ্রান প্রজাতল হল, অভিজাত ব্যক্তির মধ্যে বাকে ধর্তে পার্বে ভাকেই মেরে কেল্লে, কেউ কেউ উপাধি টুপাধি ছেড়ে প্রজার দলে মিসে পেল। ভুধু তাই নয়, বল্লে, "হুনিয়া ভদ্ধ লোক তোমরা ওঠ, রাজা ফালা অত্যাচারী স্ব মেরে ফেল, স্ব প্রজা স্বাধীন হক্, স্কলে সমান হক্ "তখন ইউবোপ ওছ রাজারা ভরে অন্থির হয়ে উঠ্লো-এ অভিন পাছে নিজেদের **নেশে লাগে, পাছে নিজেদের সিংহাদন গড়িথে পড়ে যায়; ডাই ভাকে নেবা**-ৰার জন্য 📲 পরিকর করে চারিদিক থেকে ফ্রাঁস আক্রমণ কর্বে। এদিকে অজাতত্ত্বের কর্তৃপক্ষেরা "লা পাত্রি আ দাঁজে" "জনাভূমি বিপদে", এই বোষণা করে দিলে; সে বোষণা আগুনের মত দেশমর ছড়িয়ে পড়ল। ছেলে বুড়ো, মেরে মন্দে "মার্সাইএ" মহা গীত গাইতে পাইতে, উৎসাহপূর্ণ ফ্রাসের মহাগীত পাইতে গাইতে, দলে দলে জীৰ্ণবসন, সে শীতে নগ্ৰপদ, অভ্যন্তান ফ্রামী প্রজা-কৌল বিরাট সমগ্র ইউরোপী চমুর সম্মুখীন হল, বড় ছোট ধনী পরিছে সূব বন্দুক ৰাছে বেকল-পরিজাণার বিনাশার চ হুত্ব হাং বেকল। সমগ্র ইউরোপ

দে বেগ সঞ্জরতে পার্লে ন।। ফরাসী জাতির অত্যে দৈন্দের ক্ষকে দাঁডিরে এক বীর,—তাঁর অঙ্গুলি হেলনে ধরা কাপতে লাগল, তিনিই নাপেতে ম

স্বাধীনতা, সামা, ভ্রাতৃত্ব, বল্পুকের নগামুবে, তলওয়ারের ধারে, ইউরোপের श्वश्विष्ठात श्रादार्थ करिया मिरन, दिन तन्ना ककार्छ। छत्र श्राह्म छात्र श्राह्म স্থাপোলেঅ ফ্রান মহারাজ্যকে দুঢ়বল সাব্যব করবার জন্ম বাদ্সা হলেন। ভার পর তাঁর কার্যা শেষ হল, ছেলে হলনা বলে সুথ ছঃথের দঙ্গিনী ভাগ্য-লকী রাজী জোদেফিনকে ত্যাগ কর্লেন, অষ্ট্রয়ার বাদ্ধার মেয়ে বে করলেন ৷ জোদেফিনের সঙ্গে সংখ সে ভাগ্য ফির্লো, রুষ জয় কর্তে গিয়ে বরফে তাঁর ফোজ মারা গেল। ইউরোপ বাগ পেরে, তাঁকে ^{লো}র করে সিংহাসন ভ্যাগ করিয়ে একটা দ্বীপে পাঠিয়ে দিলে, পুরাণ রাজার অথবাণর এক-জনকৈ তক্তে বসালে।

মরা সিঞ্জি সে দ্বীপ থেকে পালিয়ে আবার ফ্রানে হাজির হল, ফ্রান 🖜 लाक चावात उंदिक माथाय करत नित्न, ताका भागान ; विन्ह चमुछ ८७८ इरह, আর যুড়লো না---আবার ইউরোপ গুদ্দ পড়ে, তাঁকে হারিয়ে দিলে। ভাপো-त्नम हेश्त्रकत्मत्र अक कार्शाक छित्रे भारत्वाग्य रत्नम । हेश्त्रकद! छात्क সেণ্ট হেলেন। নামক দূর একটা দ্বীপে বন্দী রাখ্লে আমরণ। আবার প্রাণ রাজা এল, তাঁর ভাইপো বাজা হল। আবার ফ্রানের লোক কেপে উঠ লো. রাজা কাজা ডাড়িয়ে দিলে, আবার প্রজাতন্ত্র হল। মহাবীর ন্যাপোণেঅস্ত্র এক ভাইপে। এ সময় ক্রমে ফ্রাঁসের প্রীতিপাত্র হলেন, ক্রমে একদিন ষড়যন্ত্র করে নিজেকে বাদ্যা ঘোষণা কর্লেন। তিনি ছিলেন তৃতীয় স্থাপোলে । দিন কতক তাঁর পুর প্রতাপ হল। কিন্তু জ্বাণ যুদ্ধে হেরে, তাঁরে সিংহাদন গেন, আবার ফ্রান প্রজাতর হল। সেই অবধি প্রজাতর চলেছে।

যে পরিণাম-বাদ ভারতের প্রায় সক্র দম্প্রদায়ের মৃণভিত্তি, এখন দে পরিণাম-বাদ ইউবোপী বহিবিজ্ঞানে প্রবেশ করেছে। ভারত ছাড়া অক্সঞ न कन दमरभंत धर्णा छिल এই या, धनियाणा नव हेक्ता हेक्ता, आनामा आनामा। ঈশর একজন আলাদা, প্রস্তৃতি একটা আলাদা, মাহুষ একটা আলাদা, ঐ রকম পশু, পক্ষী, কীট, পতক, গাছ, পালা, মাটি, পাথর, ধাড় প্রভৃতি দ্ব आगामा आगामा। जनगन् के तकम आनामा आगामा करत शक्षे करत्रहरू।

क्लान मात्म कि ना वहन्न मध्या এक (एका । य अत्या जानाना, उकार बरन-व्यापाउए। ताथ हरम्ब, कारणन गरधा केना (मथा।- य ममरबा कहे

ঐক্য মাতৃষ দেখ্তে পায়, দেই সম্ব্রটাকে "নিম্ম" বলে ; এরি নাম প্রাক্ত-िक नियम।

পুর্বের বলেছি যে, আমাদের বিজ্ঞা বুদ্ধি চিন্তা সমস্ত আধ্যাত্মিক, সমস্ত বিকাশ ধর্মে। তার পাশ্চাত্যে ঐ সমস্য বিকাশ বাইরে, শরীরে, সমাজে। ভারত-ৰৰ্ষে চিন্তাশীৰ মনীষীৱা ক্ৰমে বুঝতে পাএলেন যে, ও আগাদা ভাৰটা ভূগ ও সব আলাদার মধ্যে সমুক্ষ ব্যেছে, মাটি, পাথর, গাছ, পালা, জন্তু, মামুষ, দেবতা, এমন কি ঈশর সংং, এর মধ্যে উন্যারণেছে, অবৈতবাদী এব চরম শীমাণ পৌছুলেন, বলেন বে, সমস্তই সেই একের নিকাশ। বাস্তবিক এই অধ্যায় অধিভূত জগৎ এক, তার নাম "একা"; আর ঐ যে আলাদা আলাদা বেধি হচে 📑 ভুল, ওব নাম দিলেন "মায়া", "অনিত্যা" অর্থাং স্কল্ঞান। এই হলো জানের চরম-সীমা।

ভারতবর্ষের কথা ছেড়ে দাও, বিদেশে যদি একথাটা এখন কেট বুঝতে না পারে, ত তাকে আর পণ্ডিত কি করে বলি। মোদা এদের অধিকাংশ প্রিতই এটা এখন ব্যেতে, এদের রক্ষ দিয়ে, জড় বিজ্ঞানেব ভেতর দিয়ে। তা সে এক কেমন করে বহু হল, এ কথা আমরাও বুঝি না, এবাও বোঝে না । আমরাও দিলাক্ত করে দিলেছি যে, ওখান্টা বুদ্ধির অতীত। এগাও তাই করেছে। তবে সেই এক কি কি রকম হয়েছে, কি কি রকম জাতিত্ব ব্যক্তিত্ব পাচেছ, এটা বোঝা যায় এবং এইটাব খোজের নান বিজ্ঞান Science।

कारकरे अथन अप्रमान आग्र महत्वरे श्रीत्रामवाही, Evolutionist र्यमन (इ वे कारनाशांत चल्ल चल्ल व्छ कारनाशांत करक, वड़ कारनाशांत कथन কথন ছোট হছে, লে:প পাছে। তেন্নি মান্য যে এ৫টা হুসভা অব÷ স্থায় হুমু করে জন্ম পোলে, এ কণা আর কেট বড় বিশ্বাস কর্চেছ না। বিশেষ এদের বাপু দাদা, কাল না পবত, বর্দার ছিল, তা থেকে অল দিনে এই কাও। কাজেই এরা বল্ডে যে, সমস্ত মাতুষ ক্রমে ক্রমে অসভ্য অবস্থা থেকে উঠেছে এবং উঠ্ছে। আদিন মাতৃষ ক'ঠ পাপরের যন্ত্র দিরে কাজ চালাত, চাম্ভা বা পাতা পরে দিন কাণতে, পাগডের ওকার বা পানির বাদার মত কুঁড়ে বরে ওজ্বান্ করত। এব নিগশন সর্বাদেশের মাটির নীচে পাওয়া য'ক্ছে এবং কোনও কোনও খলে সে অবস্থার মান্ত্র বয়ং বর্ত্তগান। ক্রমে মান্ত্র ধাতু ব্যবহার কর্তে শিপ্লে, দে নরম বাতু টিন আর তানা। তাকে মিশিয়ে বঞ্জত্ব অন্ত্রসম্ভ্র কর্তে নিশ্বে। প্রচোন, গ্রীক, বাবিল, মিশরীরাও অনেক দিন

পর্যান্ত লোহার ব্যবহার জান্ত না, যথন তারা অপেক্ষাকৃত সভ্য হয়েছিল, বই পত্র পর্যান্ত লিখ ভো, মোণা কপো ব্যবহার করত, তথন পর্যান্ত। আমে-রিকা মহাদ্বীপের আদিম নিবাসিদের মধ্যে মেক্সিকো পেরু মান্না প্রভৃতি জাতি অপেকাকৃত স্থপভ্য ছিল, প্রকাণ্ড প্রকাণ্ড মন্দির নির্মাণ কর্ত, সোণা রপোর খুব ব্যবহার ছিল (এমন কি ঐ সোণা রুপোর লোভেই স্পানি লোকেরা ভাদের ধ্বংম সাধন কর্লে)। কিন্তু দে সমস্ত কাজ চক্মকি পাথরের অস্ত ছার। অনেক পরিশ্রমে করতো, লোহার নাম গন্ধও জানতো না।

আদিম অবস্থায় মাতৃৰ ভীৱ ধনুক বা জালাদি উপাত্মে জন্ত জানোয়ার মাছ মেরে খেত, ক্রমে চাষ বাস শিখ্লে, পভ পালন করতে শিখ্লে। বনের জানোয়ারকে বশে এনে নিজের বাজ করাতে লাগ্লো। অথবা সময়মত আহারের জন্ম জানোয়ার পাল্তে লাগলো। গরু, ঘোড়া, শ্কর, হাতি, উট, ভেড়া, ছাগল, মুবলি প্রভৃতি পক্ষী মামুষের গৃহপালিত হতে লাগ্লো। এর মধ্যে कूकूत इराइटन महित्यद आक्तिंग वस् ।

আবার চাষ বাস আরম্ভ হলো। যে ফল মূল শাক সব্জি ধান চাল মানুষে থায়, তার বুনো অবস্থা আর এক রক্ষ। এ মানুষের যত্নে বুনো কল, বুনো ঘাস নানা প্রকার স্থগাত বৃহৎ ও উপাদেয় চালে পরিণত হলো। প্রকৃতিতে আপনা আপনি দিন রাত অদল বদল ত হড়েই। নানাজাতের রুক্ষ ল্ডা পত পকী শরীরদংসর্গে দেশ-কাল-পরিবর্তনে নবীন নবীন জাতির সৃষ্টি হচ্ছে। কিন্তু মাত্রৰ সৃষ্টির পূর্বা পর্যান্ত প্রভৃতি ধীরে ধীরে তরু লভা জীব জান্ত বদলা-চ্ছিলেন। মাত্রৰ জন্মে অবধি সে হুড় মুড় করে বদ্লে দিতে লাগ্লো। স্বীস্ট করে একদেশের গাছ পালা জীব জন্ধ অন্ত দেশে মানুষ নিয়ে যেতে লাগ্লো, তাদের পরস্পর মিশ্রণে নানাপ্রকার অভিনব জীব জন্তুর, গাছ পালার জাত মানুষের ছ'রা স্প্ট হতে লাগলো।

জাদিন অবস্থায় বিবাহ থাকে না, ক্রমে ক্রমে যৌন দম্বন্ধ উপস্থিত হলো। প্রথম বৈবাহিক সম্বন্ধ সর্বাদ্যের উপর ছিল। বাপের বড় ঠিকানা থাক্তোনা। মামের নামে ছেলে পুলের নাম হত। মেয়েদের হাতে সমস্ত ধন থাক্তো, ছেলে মানুষ করবার জন্ম। ক্রমে ধন প্র পুরুষের হাতে গেল, মেরেরাও পুরুষের হাতে গেল। পুরুষ বলে, 'বেমন এ ধন ধান্ত আমার, আমি চাষ বাস করে বা লুঠ তথাজ করে উপার্জ্জন করেছি, এতে যদি কেউ ভাগ वनाम, उ आगि विद्याच कत्रत्या," (एम्बि नद्व, "এ म्यान कामान, "এट उ

ষদি কেউ হস্তার্পণ করে, ত বিরোধ হবে।" বস্তমান বিবাহের স্ত্রপাত হলো।
মের মান্ত্রর, পুরুষের চাট বাটি গোলাম প্রভৃতি অধিকারের সার হলো।
প্রাচীন বীতি—এক দলের পুরুষ অন্য দলে বে কর্ত। সে বিবাহও অবরদন্তি মেরে ছিনিয়ে এনে। ক্রমে সে কাড়াকাড়ি বদলে গেল, স্মেছার বিবাহ
চল্লো; কিন্তু সবল বিষয়ের কিঞিং কিঞিং আভাস থাকে। এখনও প্রায়
সর্পদেশে বরকে একটা নকল আক্রমণ করে। বাঙ্গালাদেশে, ইউরোপে,
চাল দিয়ে বরকে আঘাত করে,পশ্চিমাঞ্চলে কনের আল্লীয় মেয়েরা বর্ষাত্রীদের
গালি গালাজ করে ইন্যাদি।

সমাজ স্ট হতে লাগ্ল। দেশভেদে সমাজের স্টে। সমুজের ধারে যারা বাস কর্তো, তারা অধিকাংশই মাছ ধরে জীবিকা কর্তো; যারা সমতল জমীতে, তাদের চাস্বান, গারা পার্কত্য দেশে, তারা ভেড়া চরাত। যারা মকমানদেশে, তারা ছাগল, উঠ, চরাতে লাগ্ল। কতকদল জললের মধ্যে বাস করে, শীকার করে থেতে লাগ্লা। যারা সমতল দেশ পেলে, চাস্বাস্ শিথ্লে, ভারা পেটের দায়ে অনেকটা নিশ্চিত্ত হয়ে, চিন্তা করবার অবকাশ পেলে, তারা অধিকত্র সভ্য হতে লাগ্ল। কিন্তু সভ্যতার সঙ্গে শরীর ত্র্বল হতে লাগ্ল। কিন্তু বালা হাওমার বাস করে, মাংস প্রধান আহার, তাদের, আর বারা ঘরের মধ্যে বাস করে, শত্রপ্রধান আহার কলে, অনেক পার্থক্য হতে লাগ্লা। শীকারী বা পশুপাল বা মংল্লাইবী, আহারের অনাটন হলেই, ডাকাং বা বোধেটে হয়ে সমতলবামীদের লুট্ভে আরম্ভ কর্লে। সমতলবাসীরা আল্বরকার জন্তা, অনপ্রেল সন্ধিবিট হতে লাগ্লো, ছোট ছোট রাজ্যের স্ট হতে লাগ্লো।

দেব ভাবা ধান চাল খার, স্থসভা অবস্থা, গ্রাম, নগর, উত্তানে বাস, পরিধান বোন। কাপড়; আর অফ্রনের পাহাড়, শর্কত, মরুভূমি বা সম্প্র তটে বাস, আহার বস্তু জানোয়ার, বস্তু ফর মূল, পরিধান ছাল; আর বুনো জিনিস্ বা ভেড়া ছাগল গরু দেব ভাবের কাছে থেকে বিনিময়ে যা ধান চাল। দেবতার শরীর শ্রম সহিতে পারে না, জ্বল। অফ্রেরর শরীর উপবাস কুচ্ছু কৃষ্ট সংনে বিশক্ষণ পট়।

অহারের আগবাভাব হলেই, দল বেঁধে পাছাড় হতে, সমুদ্র কুল হতে, আম নগর লুঠতে এলো। কখনও বাধন ধানের লোভে দেবতাদের আক্রমণ কর্তে লাগ্লো। দেবতারা বহজন একএ না হতে পার্লেই অহারের হাতে মৃত্যু। আর দেবতার বুদ্ধি প্রবল হয়ে, নানা প্রকার যন্ত্র নিম্নাণ কর্তে লাগ্লো। ব্রহ্মান্ত্র, গরুড়ান্ত্র, বৈঞ্চনান্ত্র, বৈশান্ত্র সব দেবভাদের; অহুরের সাধারণ ক্স, কিন্তু পারে বিষ্ম বল। বারস্থার অস্থর দেবভাদের হাবিষে দের, কিন্তু অস্থ্র সভা হতে জানে না, চাগবাস কর্তে পারে না, বুদ্ধি চালতে জানে না। বিজয়ী অস্থর যদি বিজিত দেবতাদের স্বর্গে রাজ্য কর্তে চায়, ত সে কিছু দিনের মধ্যে দেবভাদের বৃদ্ধি কৌশলে দেবভাদের দাস হয়ে পড়ে থাকে । নতুবা অহর লুট করে সরে আপনার স্থানে যায়। দেবভারা যথন একতিত হয়ে, স্প্রদের ভাঙায়, তথন, হয় ভাদের সমূদ্র মধ্যে ভাড়ায়, না হয় পাহাড়ে, না হয় ক্রপে তাড়িয়ে দেয়। ক্রমে ছ দিকেই দল বাড়তে লাগ্লো, লক লক দেবতা একত হতে লাগ্লো, লক লক অহর একত হতে লাগ্লো। মহা সংঘর্ষ, মেশা মিশি, জেতা জিতি, চল তে লাগ্লো। এ সব রকমের মাছ্য মিলে मित्न वर्तमान मगोझ, वर्तमान अथा मकरलद रुष्टि इत्ड लांग्रा। नाना द्रकम मूछन ভাবের সৃষ্টি হতে লাগ্লো, নানা বিভার আলোচনা চল্লো। এক দল লোক ভোগোপযোগী বস্তু তৈয়ার করতে লাগ্ল-হাত দিয়ে বা বৃদ্ধি করে। একদল সেই সব ভোগা দ্বা রক্ষা কর্তে লাগ্লো। সকলে মিলে महे नव खरा विभिन्न कर्ह कार्गा । जात मास्थान् एथरक वक नव अञान्, এ জারগার জিনিবটা ও জারগার নিরে যাবার বেতন স্বরূপ, সমস্ত জিনিযের অধিকাংশ আজ্মাং করতে শিধ্লে। এক জন চাদ কর্লে, এক জন পাरात्रा मिला, এक अन वर्ष निरम्न (शन, जात এक अन किन ला। त्व ठाम करन সে পেলে ভক্ত; বে পাহারা দিলে, সে জুলুম্ করে কত ফটা আগ ভাগ নিলে: अधिकाः म निरम वायमामात्र, रव वरत्र निरत्न श्रम । रव किन्दा, रम अ मकरणत्र দাম দিবে মলো। পাহারাওয়ালার নাম হলো রাজা,মুটের নাম হলো সওদাগর। এ 🖫 দল কাজ কর্লে না--ফাঁকি দিয়ে মুড়োমার্তে লাগ্লো। যে জিনিয देखित कर्छ लाग्न, तम तमर्छे शंख निरम श खनवान् छाक्रब नाग्रना ।

ক্রমে এই সকল ভাব প্যাচাপেচি, মহা গেরোর উপর গেরো, তা গেরো হয়ে, বর্ত্তমান মহা জটিল সমাজ উপস্থিত হলেন। কিন্তু ছিট্ মরে না। বে গুলো পূর্ব জ্যে ভেড়া চরাত, মাছ ধরে থেত, সে গুলো সভ্য জ্যে বংঘটে, ডাকাত্ শুভ্তি হতে লাগ্লো। বন্ নাই, বে সে শীকার করে; কাছে পাহাড় পর্বতিও নাই, বে ভেড়া চরায়; জ্যের দ্রুণ শীকার বা ভেড়া চরাণ বা মাছ্ ধরা কোনটারই স্থ্রিধা পাছ না—সে কাজেই ডাকাতি করে, চুরি করে, সে যায় কোপা । কেনে প্রাতঃ সারণীয়াদের কালের মেয়ে, এ জন্ম ত জার এক সঙ্গে আনক বর বে কর্তে পায় না, কাজেই হয় বেশা। ইত্যাদি রক্মে নানা চঙ্গের, নানা ভাবের, নানা সভা অসভা দেবতা অসুর জন্মের নাম্য একত হয়ে হয়েছে সমাজ। কাজেই সকল সমাজে এই নানারপে ভরবান্ বিরাজ কর্জেন। সাধু নারায়ণ, ডাকাত্ নারায়ণ, ইত্যাদি। আবার যে সমাজে যে দলে সংখ্যায় অধিক, সে সমাজের চরিত্র সেই পরিমাণে দৈবী বা আসুরী হতে লাগ্লো।

জনুধীপের তামাম্ সভ্যতা—সমতল ক্ষেত্রে, বড় বড় নদীর উপর, অতি উর্বর ভূমিতে উংপর—ইয়ংচিকিয়ং, গলা, সিন্ধু, ইউফ্টেট্গ্তীর। এ সকল সভ্যতারই আদু ভিত্তি চাস্ বাস্। এ সকল সভ্যতাই দেবতা-প্রধান। নার ইউরোপের সকল সভ্যতাই প্রায় পাহাড়ে, না হয় সমূদ্ময় দেশে জন্মছে ভাকাৎ আরু ব্রেটে এ সভ্যতার ভিত্তি, এতে অসুর ভাব অধিক। (ক্রমশঃ)



শ্রিজন্দ চক্রবর্তী।

এ জীবন সম্ভার কিবা হল সমাধান্,
জন্মবিধি এ চিন্তার তীব্রহ্নাণ্ডক প্রাণ।
সদীম মানব মতি, অদীম অনস্তে গতি,
সান্তে কেন অনস্তের প্রতিচ্ছারা বিভ্যমান্,
স্থান কেন হংখাভাস, অজ্ঞানে কেন বা জ্ঞান্ ?
জন্ম সনে মৃত্যু কেন, হাসিতে কানার স্থার,
আলোতে আঁধার কেন, স্থারে নরক ভর ?
উত্থানে পতন কেন, যৌবনে বার্দ্ধির পূন,
এ ছল্ম তরঙ্গাধাতে ত্রিভ্বন বিচলিত;
দেশকাশনিমিত্তা-চক্রে সবি নিম্পেষিত।
এ দান্ধণ চিন্তাভারে হতাশ্বাস জীবকুল,
হাদর তেলিয়ে তাই উঠিছে বিলাপ রোল।
শান্তি কি নাহিক তবে, আসিতে ষাইতে হবে,—

এ ভাবে কি বার বার, কলেব পুতুল প্রার গ তবে কি দে মুক্তিবাদ নিশার স্থপন হায় 🕫 না--না--ভন, আধাধবি সত্তরে আভ্যান: "চই ভেবে জীব। তুমি কেন ক্লেশে ভ্রিয়মাণ্ ং একি ভব স্বহান, অবিভীয় প্রাণ্যান, चिक्रभी बनोक जाना (मथाहेट्छ हमःकात, কিছুমাত্র ভেদ নাই সে তত্ত্বে ভোনাতে আর া ত সভো একান্ত নিঠ বেই জন ধ্যা মাকে. জনম মাণ তথে স্থ তার গুচিয়াছে। 6িন্তাশুভা নিবভ্য, भाकतिराशं मन' तर् বৈতদুপ্ত তার কাচে মজ-মরিটাকা-মা অধিদান কুল সম জগৎ প্রতীত হয়। ন; লভিল এ সত্য যে মানব শ্রীর ধরি, বুথা তাব ধর্ম্ম কর্ম্ম, --জীবস্ত দে আছে মরি। इडेक (माख्यानी, ভজুক বা দেবতাদি, অথবা কক্ক কর্মাষ্ঠ ইচ্ছামনে লয়: গোহহমিতি জ্ঞান বিনে কদাচ না মুক্তি হয়

প্রীক্রাসকুষ্ণ-কথায়ত। [%]

তৃতীয় পরিচ্ছেদ। (নরেন্দ্র ও ভবনাথের যাক্টারের সহিত মিলন) [গমাধিমন্দিরে।]

এম——।]

[১১২ **প**ৃষ্ঠার পর।

সভাতসং হইল। ভজেরা এদিক্ ওদিক পাইচারি করিতে লাগিলেন। মাষ্টা-রও পঞ্চবটী ইত্যাদি স্থানে বেড়াইতে লাগিলেন। তথন বেলা আলাজ টো। কিয়ংক্ষণ পরে মাষ্টার ঠাকুর রাখক্তফের ছরের দিকে আসিয়া দেখিলেন, মরের

এবন ভান ছাপা ১ইভেছে।

উত্তরদিকের ছোট বারান্ডার মধ্যে অভ্ত ব্যাপার ২ই তেছে। ঠাকুর রামকৃষ্ণ স্থির হইরা দাঁড়াইরা রহিয়ছেন। নাজের আদিয়া গান শুনিতে লাগিলেন। গান শুনিয়া আদুই ইইরা রহিলেন। ঠাকুরেব গান ছাছা এমন মধুর গান থিনি কথ্যও শুনেন নাই। ১ঠাং ঠ কুরেব দিকে দুটিপাত করিয়া আনুক ইইয়া রহিলেন। ঠাকুরেব দিকে দুটিপাত করিয়া আনুক ইইয়া রহিলেন। দেবিলেন, ঠাকুর দাঁড়ইয়া িশ্লেন, চাক্ষর পাতা পড়িতেছে না। নিয়াস প্রথাম স্থিতে কি না ব্যিছে। জিল্পান বরাতে এক জন ভক্ত বিলেন, এর নাম স্মানি। নাটাব এরপ ক্ষমও দেখেন নই, শুনেন নাই। অবাক্ হইয়া তিনি ভাবিতে লাগিলেন, 'ভগবানকে চিন্তা করিয়া মানুষ কি এত বাহুজানশ্ল হয়? না জনি বত দুব বিখাস ভক্তি থাকিলে এরপ হয়! গানাটী এই—

'চিত্র মন নান্স হরি চিত্রন নিরজ্ন। (িব!) অনুপন ভ:ভি, নোংন মুবতি, ভক্ত-হৃদ্য়-রঞ্জন। নবর গে রঞ্জি, কে:টা শশী বিনিশিষ ; (কিবা) বিজ্লী চম্কে, দে রূপ-আশোকে, পুলকে শিহরে জীনন।''

গানের এই চরণটি গাহিবার স্থয় ঠাকুর রামক্ষ নিংবিতে লাগিলেন।
দেহ রোমাঞ্চিত হইতে লাগিল। চকু হইতে আনলাঞা বিগলিও হইতে
লাগিল। মাঝে মাঝে যেন কি দেখিরা হাসিতে লাগিলেন। না জানি
কোটী শ্নী বিনিলিভ' কি অপ্রপম রূপ দর্শন করিভেছিলেন। এরই
নাম কি ভগবানের চিনায়রূপ-দর্শন ? কত সাধন করিলে, কত ভণভার
কলে, কতথানি ভক্তি বিভাগের যেশে এরপ ঈশ্বর্দশনি হয় ?

আবার গান চলিতে লাগিল,—

"হ্র্টিক কমলাননে ভজ তার চরণ,

(मथ भाष गत्न, (श्रम नश्तन, जाशकार्थ शिश्ववर्णन।"

আবোর সেই ভ্রনমেংছন হাজ— শরীর মেইরুপ নিঃস্পান ও স্থিমিত শোচন, কিং কি যেন অপ্রপ রূপ দর্শন করিতেছিলেন; আর সেই অপ্র রূপ রূপ দর্শন করিয়া বেন মহানক্ষে ভাগিতেছিলেন।

এইবারে গানের শেষ ছইল। নরেক্র গাইলেন→

"চিদ্যনন্দরসে, ভক্তিযোগাদেশে, হও রে চিরমগন। (চিদ্যনন্দরসে, হায়রে) ((अश्वानमद्राम्)

সমানির ও প্রেমান দের এই অভুত ছবি হার্মধো গ্রহণ করিয়া মাটার शुरुष्ट প্রভাগ । করিছে । লাগিলেন। মাঝে মাঝে ছাইয়মধো থেই জনবোদ্ধকানী মধুৰ সঙ্গীতের জুট উঠিতে লাগিল,—

প্রেমানক রুসে হও রে চিরমগ্র।

(হরিপ্রেমে মত্ত হরে)

্চতুর্থ পরিচ্ছেদ।

महत्रस- उत्नाथानि एक त्रत्र ग्राप्त वानमा

তাহার পরদিন ও ছুটি ছিল। বেলা ৩ টার সময় মাষ্টার আবার আনিয়া উপতিত। ঠাকুর রামকৃষ্ণ সেই পূর্বপরিচিত ঘরে ব্যিয়া আছেন। মেজের মাছর পাতা। মেগানে নরেক্র, ভবনাথ, আরও ছই এক জন বসিধা আছেন। কয়টিই ছোকরা; ১৯, ২০ বংদর বয়স। ঠাকুর সহাত্তবদন্ ছেট তক্তপোষের উপর বসিলা আছেন, আর ছেকেরাদের সহিত আনলের কথাবার্তা কহিছেছেন।

মান্তার ঘবে প্রবেশ করিতেছেন দেখিয়াই ঠাকুর উত্তরাভ করিয়া ছোকরা-দের বলিয়া উঠিলেন, 'ঐ বে আবার ওদেছে। —বলিয়াই হাত। নাষ্টার আসিরা ভূমিষ্ঠ হুইয়া প্রণাম করিয়া বিধিলেন। তাগে হাতভাড় করিয়া দাঁড়াইয়া প্রণাম করি:তন—ইংবাজিপড়া লোকেয়া বেমন করে। কিন্ত আজ তিনি ভূমিষ্ঠ হইলে প্রধান কবিতে শিখিয়াছেন। তিনি আসন গ্রহণ করিলে, ঠাকুর রাংক্ষা বেন হাসিতেছিলেন, তাহাই নারেল্রানি ততাদের বুঝাইল দিলেন। িনি বলিলেন,—

"লাধ একটা ময়ু^তকে বেলা চারটার সলয় আফিন খাইয়ে দিছি**ল**া ভার পর দিন ঠিক চাওটার সময় দেই ময়ুবটা এসে উপস্থিত—আফিমের নেশা লেগেছিল—মৌতাত ধবেছিল—ভাই আবার ঠিক নমরে আহিম থেতে এগেছে।" (হাস্তা)

মাষ্টার মান মনে ভাবিতে লাগিলেম, ইনি ত ঠিকই কথা বলিতেছেন। বাড়ীতে যাই, কিন্তু দিকানিশি ইতার দিকে মন পড়িয়। পাকে--কখন দেখিব, কথন দেখিব। এখানে কে খেন টেনে জানলে। চনে করবে ছত্য জাহগার যাবার যো নাই, এখানে আস্তেই হবে। এইরূপ ভাবিতেছেন, ঠাকুর এ বিকে ্ ছোকরাওলির সহিত অনেক ফ্টিনাটি ক্রিতে লাগলেন, যেন ভারা 🖚

বয়স্ক। হাসির লংবী উঠিতে লাগিল, যেন আনন্দের হাট ব্যিয়াছে। মাষ্টার অবাক্ হইয়া এই হছ,ত চরিত্র দেখিতে লাগিলেন। ভাবিতে লাগি-লেন, ইহারই কি পুলদিনে সমাধি ও অদুইপূর্ব্ব প্রেমানন্দ দেখিয়াছিলাম ? দেই বাত্তিই কি আজ প্রাকৃত লোবের ভাগ ব্যবহার কবিতেছেন ? ইনিই কি আমার প্রথমনিনে উপাদেশ দিবার সময় তিওজার কবেছিলেন? ইনিই কি আমায় 'ভূমি কি জ্ঞানী' বলেছিলেন ৷ ইনিই কি সাবার শিরাকার ছুইই সতা বলেছিলেন 📍 ইনিই জি আমাণ দ্বিষ্তিকেন যে, জীবর্ট স্ত্যু আবি মংসারেণ মনতাই অনিত্য ? ইনিই জি আনা। সামারে দাসীর মভ থাকিতে বলিং।ছিলেন ?

ঠাকুৰ রামক্লণ আনন্দ করিলেছেন ও মাঠালকে এক একধার দেখিতে-ছেন। দেখিলেন, তিনি অবাক্ হইয়া ব্যিয়া আছেন। তথন বাম্লালকে সংখাধন কৰিয়া বলিলোন, 'জাষ্, এর একটু উমের ধেশী কি না, ভাই একটু গন্তীব। এরা এতা হাসি খুনী কংছে, কিন্তু এ চপ করে বসে আছে।" মা**টারের বয়স** তথন ২০/২৬ হটবে :

'বিসাকেলতক'।

কথা কহিছে কহিছে প্ৰমূভক হলুনানের কথা উঠিল। হলুনানের পট একথানি মরের দেরালে ছিল। ঠাক্র বিদ্লেন, 'দেখ, হওমানের কি ভাব! ধন, মান, দেহস্তুথ, কিছুই চায় না, কেংল ভগৰানকে চায়! যথন ফটিক-তম্ভ পেকে ব্ৰহান্ত বিলে প্ৰাপ্তপ্ত, সংখ্যা সংকাদনী অনেক প্ৰক্যা ফল নিয়ে শোভ দেনতে লাগন। ভাকলে, ফলের লোভে নেমে এমে অস্তটা যদি কেশে দেয়; কিন্তু হলুদান ভূমবার ছেলে ন্য। । । । । । । । । । ।

> আমাৰ কি মালের অভাব, পেরেছি যে ফল জনম নফল, भाक्ष-करवात तक नाम कार्रसः ট্রাম-কল্লেজন মলে ব্যে কৌ— ম্পন যে দল বালা মেট ফল প্রাপু হট, करतत कथा करें (दभी (डा) 'उ कल आहक मरें. যাব ভোমাদের প্রভিফল যে দিয়ে।

পুনঃ সমাধি।

গান গাইতে গাইতেই আবার সেই সমাধি। অবস্থা আবার নিঃম্পান দেহ,

ন্তিমিত লোচন, দেহ স্থির, বসিয়া আছেন—ফটোগ্রাফে ষেরপ ছবি দেখা যায়। ভক্তেরা, যাহারা এইমাত্র এত ছামি খুদি কবিতেছিল, সকলেই একদৃষ্টি হইয়া দেই অভ্ত অবভা নিরীক্ষণ করিতে লাগিলেন। সমাধি-অবভা মান্তার এই দ্বিতীয়বার দর্শন করিলেন।

জনেক ক্ষণ পরে ঐ অবস্থার পনিবর্তন ইইতে লাগিল। দেহ শিথিক হইল, মুখ সহাস্ত হইল, ইজিএগৰ আনার নিজের নিজের কার্য করিতে ফিরিতে আগিল। ঠাকুর চক্ষের কোন দিয়া আনন্দাঞ বিস্ভান করিতে ক্রিতে বাগি বান এই নাম উক্তারণ কনিতে লাগিলেন।

মাঠার ভাবিতে লাগিলেন, এই মহাপুক্ষই কি ছেলেদের সঙ্গে ফচকমি করিছেছিলেন। তথ্য ঠিক যেন পাঁচ বছবের বালক।

ঠাকুর পূর্বিপ্রকৃতিস্থ হটয় আবার প্রাকৃত লোকের তায় বাবহার করিতে লাগিলেন। মান্টারকে ও নবেন্দ্রকে সায়াধন করিয়া বলেন,— "ভোমধা চ'জনে ইংরাদীতে কথা কও ও তর্ক বিচার করো, আমি জনবো।" মান্টার ও নরেন্দ্র উভয়ে এই কথা শুনিয়া হাসিতে লাগিলেন। ছ' জনে কিছু কিছু আলাপ করিতে লাগিলেন,কিন্তু বাঙ্গালাতে। ঠাকুরের সামনে মান্টাবের তর্ক বিচার খার মান্তব নয়—তাঁব তর্কের ঘর ঠাকুরের কৃপার এক রক্ষ বন্ধ হইয়া গিয়াছে। অতএব তিনি আর কিরপে তর্ক বিচার করিবেন ? ঠাকুর আর একবার জিদ করিলেন, কিন্তু ইংরাদীতে তর্ক করা আর হইল না।

পঞ্চন পরিচ্ছেদ। (অন্তরঙ্গ সঙ্গে)

পাঁচটা বাজিয়াছে। ভক্ত কয়ট যে য়ার বাড়ীতে চলিয়া গোলেন। কেবল মাষ্টার ও নরেল রহিলেন। নবেল গাড়ুলইয়া ইাসপুক্রে ও ঝাউতশার দিকে মুখ ধুইতে গোলেন। মাষ্টারও ঠ কুর বাড়ীর এ দিক ও দিক পায়চারি করিতে লাগিলেন। কিয়মকণ পরে কুঠার কছে দিয়া ইাসপুক্রের দিকে আসিতে লাগিলেন। কেথকেল পরে কুঠার কছে দিয়া ইাসপুক্রের দিকে আসিতে লাগিলেন। দেখিলেন, পুকুরের দক্ষিণ দিকের সিঁড়ির চাভালের উপর ঠাকুর রামকৃষ্ণ দাঁড়াইয়া রহিয়াছেন, আর নরেল্র গাড়ু হাতে করিয়া মুখ ধুইয়া দাঁড়াইয়া আছেন। ঠাকুর বলিতেছেন, "দেখু আর একটু বেশী বেশী মাদ্বি। সবে নৃতন আসছিদ্ কি না। প্রথম আলাপের পর নৃতন সকলেই ঘন ঘন আসে, য়েমন নৃতন—পতি। কেয়ন আসবি তোণু নবেল্র বলিলেন, বিটা চেঙা করবো।" আবার সকলেই কুঠার পথ দিয়া ঠাকুরের

ঘরে আসিতে লাগিলেন। কুঠীর কাছে মান্টাইকে ঠকুর বাধ্যান, "দুর্থ চাধার। হাটে গরু কিনতে ধার। তালা ভাল গরু মন্দ গরু বেশ চেমে। আলের নীচে হতে দিয়ে দেখে। কোনও গরু ল্যান্ডে হাত দিলে ভয়ে পড়ে; মে গরু কেনেনা। কিন্তু যে গরু লাভের হাত দিলে ভিড়িং নাভং করে লাফিনে উঠে. শেই গরুকেই পছল করে। এই বে নবেলুকে দেখছো, এ সেই গরুর জাত। ভিত্রে খুণ ডেজ আছে।" ই বলিয়া ঠকুর আদিতে লাগিলেনা। শ্লাবার কেউ কেউ শেকে আছে বেন চিড়ের ফলার, আটি নাই, জার নাই, ভাগেভাং করছে।"

স্ব্যা হইল। ঠাকুর ছবে বৃদ্ধা ঈশ্রচিন্তা করিতে লাগিলেন ও মান্তাবকে বলিলেন, "ভূমি নঙেন্দ্র সংক আলাপ করণে য'ও। আমায় বলবে কি রক্ষ ছেলে।"

মাষ্টাৰ, অনেক ক্ষণ পরে যথন আরতি হইরা পেল, চাঁদনির কাছে বেড়া-ইতে বেড়াইতে নরেল্রকে দেখিতে গাইলেন। পরস্পর আলাপ হইতে লাগিল। নরেল্র বলিলেন, আনি সাবারণ্রাক্ষ্যাজের। কলেজে পড়ি-ভেছি, ইডাংদি।

রাত হইরাছে— মান্টার এইবার বিদায় গ্রহণ করিবেন, কিন্তু যাইতে আর গারিতেছেন না। ভাই নরেক্রের নিকট হইতে চলিরা আসিয়া ঠাকুর রাসক্ষকে খুঁজিতে লাগিলেন। ভাঁহার গান ভনিয়া হাদ্য মন মুগ্ধ হইরাছে। আবার বড় সাব যে, ভাঁর মুখের গান ভনিতে পান। খুঁজিতে খুঁজিতে দেখিলেন, মা কালীর মনিবের সন্মুখ নাট্যনিদ্রমধ্যে এবাকী ঠাকুর পাদ্চারণ ক্রিভেছেন। যাব মনিবের মার ছুই পার্যে আলো জলিতেছিল। বুহুং নাট্যনিদ্বে একটি আলো জনিতেছিল। আলো আজ্ববার মি আভ হুইংল যের সহুগু, নেইরপ দ্বাইতেছিল।

মারার সমুচিতভাবে ঠাকুরকে জিল্লাস। করিলেন, "মাজ আর কি গান হবে ?" ঠাকুব শিলেন, "না, আজ আর গান হবে না।" এই বলিয়া কি যেন মনে পড়ক, অমনই বলিনেন, তিবে এক কর্ম করে।। আমি বলরমের মাছা কলিকালায় যাব, তুমি বেও, সেয়ানে গান হবে।" মাটার বলিলেন, "যে আজে।"

শ্রীরানয়ম নাটারের দলে (নাট মন্দিরে বেড়াইতে বেডাইতে)। "আছো, তোমার একটা কথা জিজ্ঞানা করি, আনাকে ভোমার কি বোধ হয় ?" মাটার চুপ করিশা রহিলেন। তখন ঠাকুর বলিলেন, "তোমার কি বোধ হয় গ আনার কয় মানা জ্ঞান হয়েছে ?"

মাঠার। আনোএ কথা ব্ঝিতে পারিতেছি না। তবে এরপ জ্ঞান বা ভক্তিবা খোদ কথন কোণাও দেখি নাই।

এরপ কথাবৈর্তার পর মাটার প্রণাম করিয়া বিদার গ্রহণ করিলেন। সদং ফটক পর্যান্ত আধার কি মনে পড়িল, অমনই ফিরিগেন। আহার নাট্যনির্টাকুর রাষক্ষের ক∤ছে সংনিয়া উপস্থিত।

🖺র মরুফা (মাষ্টা:বর প্রতি)। আবার যে কিরে এলে 📍

মাষ্টার। আলেজ বড়মালুবের বাডী—বেশে দেবে কি না; তাই সেখানে যাব না ভাবছি। এইখানে এসেই আপানার সঙ্গে দেখা করব।

মাষ্টার যে আজা বলিয়া আবার প্রণান করিয়া বিদার গ্রহণ করিলেন।

গ্রীরাসকুষ্ণসহে। সব।

প্রেরিত পত্র।

याज छ।

মাজাজ মহোংশব অতি সমাণেহৈ সম্পন্ন হইনা গিরাছে। তিথিপূজার দিন, সমস্ত দিন ধরিয়া পূজা হয়; পরে রাতি বারটার সময় হোম সমাপন করিয়া কর্মা করা হয়। সে দিবল প্রায় তিন শত ভদ্রগোক প্রসাদ গ্রহণ করিয়াছিলেন। রবিবার মহোংসবের দিন পঞ্চাশ মনেরও অধিক চাল রন্ধন করা হয় বেশ্ছল শহম্মেরও অধিক কংলালি প্রসাদ পায়। অপরাস্থের সময় এত অধিক নিড় হইয়াছিল যে আর ব্যিয়া খাওয়ানো স্থিধা হইল না। তথন ভাত, ডাল, কড্ছু প্রভৃতি এলসঙ্গে মাথিয়া ভাল ভাল করিয়া দেওয়া হউতে লাগিল। মাডাজের অনেক ভদ্রগোক সকলে হউতে স্বায়া প্রায় প্রবিশেষ করিয়া ক্লান্ত হইনা পডিয়াছিলেন। এদিকে ভদ্রগোকদের জন্ত প্রত্ত করা হইনা পডিয়াছিলেন। এদিকে ভদ্রগোকদের জন্ত প্রত্ত করা হইনাছিল। প্রায় হংল করিয়া ক্লান্ত হীবিত্র একটি বিমানের মধ্যে বিরাজ করিতেছিলেন। নানাবির কুম্বনালায় ও কদলী বৃক্ষে স্ব্যুক্ত হইয়া বিনানটি পর্ম রমণীয় হইনাছিল। ভারাই সমুধ্য স্ক্রীরন হইতে লাগিল। সন্ধ্রিনের শামি প্রায়াছিল। পরে অপরাজ্য চারিটার পর্ম মহালা আয়োহাম স্বামী,

(ধনৈক পরমত্যাগী,) তামিল ভাষায় ভক্তি সম্বন্ধে প্রায় দেও ঘণ্টাকাল বক্তৃতা করিয়া সকলকে সাভিশ্য প্রীতি দিয়াছিলেন। পরে প্রীপ্রিমহংস মহারাজ্য কিনের জন্ম অবভীণ হইখাছেন, সেই সম্বন্ধে স্থামী রামক্ষণানন্দ কিছু বলিয়াছিলেন। তাহার পর Mr. Drew রামক্ষণ নিসনের উপর বিশেষ সহাত্ত্রতি প্রকাশ কনিয়া কিছু কল বক্তৃতা করিষাছিলেন। পরে এখানকার হাই-কোর্টেব প্রাসিদ্ধ উকিল ভাযুক্ত স্থানব্রাম স্থায়ার কিছুক্ষণ বক্তৃতা করিলোন। তিনি বলিলেন যে যদিও ভারত্বর্য অভ্যাসকল বিদ্যাে পালাংপদ হইছে পারে, কিন্তু ধর্ম সম্বন্ধে ইহা যে জগতেন শিক্ষক, তাহাতে অনুমাত্র সন্দেহ নাই। হিন্দুবর্ম সাক্ষতেনিক এবং সভাতন। তাহার পরে গৃহত্যনী মহাত্মা বিলিগিরি সাঙ্গোর সকলকে ধনবাদ দিয়া সভাব কাণ্যা শেষ করিলেন।

চেন্দ টীয়া।

বিগত ১১শে ফাল্লন, মঙ্গলাবার, ১০০৭, যশোহরের অন্তর্গত চেকটীয়া ধর্মাশ্রমে মুঠ্বান্কি রামক্তেভাৎসব সম্পন্ন হইগাছে। ঐ উপ্লক্ষে তথার কীর্ত্তন বজুতা ও প্রসাদ বিতরণ ইইয়াছিল। প্রায় ৪০০ লোক স্মাগত ইইয়াছিলেন।

পাঁচকথা।

"চোর" "চোর'— আমি, আমার কয়েকটী বন্ধু ও একজন হিন্দুলনী চাকর উত্তরপশ্চিমাঞ্চলে বেড়বার কালে এক রাত অংগলায় কোনও ভদ্রলোকের বাড়িতে অতিথি হয়েছিলাম। গ্রম কাল ; রাত প্রায় ১টা ; স্থামি এক ঘরে ভবে আছি ও পাশেব ঘরে আমার বরু ক্যজন এবং বারাভায় হিন্দুতানী চাকরটা শুইয়া আছে। গ্রমে আমার ঘুম্হ'ছে না; আব স্কলেই নিদ্রিত। এক বুডো কুলী, আমাৰ ঘরে এক খানা টানা পাথা ছিল, সে খানা আত্তে শান্তে ট:ন্ছে। বুড়ো মালুষ, পাথা টান্তে টান্তে, ঘুমের থোরে এব বারে ছুমুকরে বারাভার উপর পড়ে গেছে। ধেই ছুমুকরে পড়ে গেল, আর বাড়ির মধ্যে এক মহা কোলাচৰ উঠলো। বাঁহারা ঘুমুচ্ছিলেন, উচ্চের মধ্যে একজন, "চোর, চোর'' বলে চেঁচিয়ে উঠ্লেন। অম্নি আর একজন আরও উচৈচঃস্বরে "(চার, চোর" বলে চীংকারে যেপ দিলেন। হিলুস্থানী চাকরটা একেবারে বিছানা থেকে লাফ দিয়ে উঠে, লাঠী ঘোরাতে ঘোরাতে বাড়ির চার্ দিকে "চোর, চোন" বলে চকর দিতে শাগ্লা। আমি ভাড়াভাড়ি উঠে বোঝাতে বেলাম, "ওকে, ভয় নেই, পাছাভিয়ালা পড়ে বেছে।" পাছাভিয়ালা বল্ডে লাপলো, "ব্যৰু, ভয় নেই, ভয় কেই, আমি, আমি ?" কে কার কথা শোনে ? "চোর, চোর"—মহা তলুতুল উঠ লো। শেষে, আলো জেলে, হিন্দুখানী চাকর-টাকে কাণ ধরে বস:ই, ভবে সব ঠাওা হয়। ভগবান সমবে যত তর্ক বিচার বাক্ বিতপ্তা দরাদলি হয়, দে সবও কি অন্ধ্ৰাতে এই বক্ষ "চোর टाइ" व'एव (हैंडान ना कि १

ভাব হইতেও উচ্চতর ভাবসকল আবিকার করিতে লাগিলেন - উহাকেই নিগুলি পূর্ণবৃদ্ধ বলে—এই নিগুলিবক্ষের ধারণায়, তাঁচারা জনতের মধ্যে এক অথও সভা দেখিতে পাইয়াছিলেন।

ধিনি এই বহুত্ব জগতে সেই এক অধ্প্রস্ক্রণকে দেখিতে পান, দিনি এই মরজগতে দেই এক অন্ত জীবন দেখিতে পান, বিনি এই জড়তা ও অজ্ঞানপূর্ণ জগতে সেই একস্বরূপকে দেখিতে পান, তাঁহারই শাখতী শান্তি, আব কংহারও নহে, আব কাহারও নহে।

নাহা। ও সুক্তি।

কৰি বলেন, "আমরা জগতে প্রবেশ করিবার সময় আমাদের পশ্চাদেশে খন হির্ম্য জলদজাল লইনা প্রবেশ করি।" কিন্তু সত্য কথা বলিতে গেলে, জামরা সকলেই একপ মহিনা-মণ্ডিত হইরা সংসাবে প্রবেশ করি না; আমাদের অনেকেই কুড়াটিকার কালিমা পশ্চাতে টানিয়া জগতে প্রবেশ করি; ইহাতে কোন সন্দেহ নাই। আমবা, আমাদের মধ্যে সকলেই, যেন সুদ্ধান্ধত্রে যুদ্ধের জন্ত প্রেরিত হইয়াছি। কাঁদিয়া আমাদিগকে এই জগতে প্রবেশ করিতে হইবে— যথাসাধা চেষ্টা করিয়া আমাদিগকে এই জগতে প্রবেশ করিতে ছইবে— যথাসাধা চেষ্টা করিয়া আমাদিগকে এই জগতে প্রবেশ করিতে ছইবে— সমুদ্রের মধ্যে পশ্চাতে কোন চিহ্ন পর্যান্ত না রাণিয়া পথ করিয়া লইতে ছইবে— সমুদ্রের মধ্যে পশ্চাতে কোন চিহ্ন পর্যান্ত না রাণিয়া পথ করিয়া লইতে ছইবে— সমুদ্রের মধ্যে পশ্চাতে কান চিহ্ন পর্যান্ত আমিরা আমাদিগকে এই ক্ষেত্র হইতে অশ্যারিত করিয়া দের—জন্মী বা পরাজিত কিছু নিশ্চয় নাই—ইহাই মায়া।

বালকের হৃদরে আশা বলবতী। বালকের বিকারিত নয়নসমক্ষে সমুদয়ই
যেন একটা সোনার ছবি বলিয়া প্রতিভাত হয়; সে ভাবে, আমার ধাহা ইচ্ছা,
তাহাই হইবেঃ কিন্তু ঘাই সে অগ্রসর হয়, অমনি প্রতি পদবিক্ষেপে প্রকৃতি
বজ্ঞানীর স্বরূপে তাহার গতিরোধ করিয়া দগুয়মান হয়ঃ বার বার
এই প্রাচীর ভঙ্গ করিবার উদ্দেশে সে বেগে ভতুপরি উৎপত্তিত হইতে পারে।
সারা জীবন যেমন সে অগ্রসর হয়, অমনিই তাহার আদর্শ থেন তাহার সর্মাণুশ
হইতে সরিয়া সরিয়া য়ায়— শেষে মৃত্যু আসিয়া হয়ত নিস্তার; ইহাই মায়া।
সলা হৈজ, ১৩০৭। টিলে, ১৩০৭।

বৈজ্ঞানিক উঠিলেন—মহা জ্ঞানপিপাস। তাঁহার পক্ষে এমন কিছুই নাই, যাহা তিনি না ত্যাগ করিতে পারেন, কোন চেঠাতেই তাঁহাকে নিক্ৎসাহ করিতে পারে না। তিনি ক্রমাগত অগ্রসর হইয়া, প্রকৃতির একটীর পর একটী শুপ্ততক্ত্ব আনিক্ষার করিতেছেন—প্রকৃতি অস্তত্ত্ব হুইতে পর্যান্ত রহন্ত উদ্যাটন করিতেছেন—কিন্তু ইহার উদ্দেশ্য কি १ এ সব করিবার উদ্দেশ্য কি १ আমরা এই বৈজ্ঞানিত্বের গৌরব কবিব কেন १ কেন তিনি যশোলাভ করিবেন १ প্রকৃতি কি, মানুষ বছনুর জানিতে পারে, তদ,পক্ষা অনন্ত গুণে অধিক জানিতে পারেন না १ তাহা ইইলেও তিনি কি জড়া নহেন १ জড়ের অনুক্রবণ গৌরব কি १ প্রকৃতি, বে কোন পরিমাণের হুউক না কেন, বজ্ঞ, যত দুর ইচ্ছা দূরে নিক্ষেপ করিতে পারেন। যদি কোন মানুষ ভাহার শতাংশর একাংশ করিতে পারে, তবে আমরা ভাহাকে একেখারে ভাকাশে ছুবিয়া দিই। কিন্তু ইহার করেণ কি ৪ প্রকৃতির অনুকরণ—মৃত্যুর অনুকরণ—জাড্যের অনুকরণ—আচেত্রনর অনুকরণের জন্ত কেন তাহার প্রশংশ। করিব ৪

মাধ্যাকর্ষণ শক্তি অতি বৃহত্তম প্রদার্থক পর্যান্ত খণ্ড বিখণ্ড করিয়া ফেলিডে পারে, তথাপি উলা জড়শক্তি। কড়ের অত্যকসংগ কি ফল ? তথাপি আম্বা মারা ভীবন কেবল উহার জন্তই চেটা করিতেছি; ইহাই মায়া।

ই ক্রিরগণ ম মুদকে টানিরা বাহিরে লইরা যার। যেগানে কোন ক্রমে স্থ পাওয়া যার না, মান্ধরে দেখানে স্থের অংল্ফণ করিতেছে। অনস্ত যুগ ধরিয়া আমরা সকলেই এই উপদেশ পাইতেছি— এ মব রুগা; কিন্তু আমরা শিথিতে পারি না। নিজে না ঠেকিলে শিথাও অসন্তব। ঠেকিতে হইবে—হয়ত ভীত্র আঘাত পাইব। ভাহাতেই কি অমেরা শিথিব ? না, ভথনও নহে। পতঙ্গ যেমন পুন: পুনঃ অলি অভিমুখে ধ্বিমান হয়, আমরাও তেমনি পুনঃ পুনঃ বিষয় সমূহের নিকে বেগে যাইতেছি— যদি বিছু স্থ পাই। কিরিয়া ফিরিয়া আবার ন্তন উৎসাহে যাইতেছি। এইরপেই আমরা অগ্রসর হই। শেধে প্রারিত ও ভগ্রহত্পদ হইয়া অবশেষে মরিয়া যাই—ইহাই মায়া।

আমানের বৃদ্ধিস্থতি সম্বন্ধেও তজ্ঞপ। আমর: জগতের রহস্তমীমাংসার চেটা করিতেছি—আমরা এই জিজ্ঞাসা, এই অনুসন্ধান প্রার্থতিকে বন্ধ করিয়া রাখিতে পারি না; কিন্তু আমাদিগের ইহা জানিয়া রাখা উচিত, জান লব্বা বস্তা নহে— করেক পদ অগ্রসর হইলেই, অনাদি অনস্ত কালের প্রচীর আসিয়া মধ্যে ব্যবধানস্বরূপে দ্রায়মান হয়, আমরা উহা ১৯৯ শুট্রোধন। তিব্—৫ম সংখ্যাং শুজন করিতে পারি না। কয়েক পদ অগ্রসর হইলেই, অসীস দেশের ব্যবধান আসিরা উপস্থিত হয়—উহাকে অভিক্রম করা যার না; সম্দর্মই অনভিক্রমণীর ভাবে কার্য্যকারণরপ প্রাচীরে সীমাবদ্ধ। আমরা উহাদিগকে ছাড়াইয়া যাইতে পারি না। তগাপি আমরা চেটা করিয়া পাকি। চেটা আমাদিপকে করিতেই হয়—ইহাই মায়া।

প্রতি নিখাদে, স্থানরের প্রতি আঘাতে, আমাদের প্রত্যেক গতিতে আমরা বিবেচনা করি, আমরা স্থানীন, আবার দেই মৃহত্তিই আমরা দেখিতে পাই, আমরা স্থানীন নই। ক্রীভ্লাস—প্রকৃতির জীত্লাস আমরা—শ্রার, মন, সুর্ব চিন্তা এবং সকল ভাবেই প্রকৃতির ক্রীভ্লাস আমরা। ইহাই মায়া।

এমন জননাই নাই, যিন তাঁহার সন্তানকে অনুত শিশু—মহাপুর্য বণিরা বিশাস না করেন। তিনি সেই ছেলেটাকে লাইয়াই মাতিয়া থাকেন—সেই ছেলেটার উপর তাঁহার সমুদ্র প্রাণ্টা পড়িয়া থাকে। ছেলেটা বড় হইল—হরত মহা মাতাল, পশুলুলা হইয়া উঠিল—জননার প্রতি অসম্বহার করিতে লাগিল। যতই এই হসপ্রহার বাড়িতে থাকে, মায়ের ভালবাসাও ওত বাড়িতে থাকে। জগং উহাকে মায়ের নিঃলার্থ ভালবাসা বলিরা খুব প্রশংসা করে—তাহাদের অপেও মনে উদ্র হয় না যে, সেই জননা জন্মবিধি একটী জ্যাহাসাত্র—তিনি না ভালবাসিয়া থাকিতে পারেন না। সহস্রার তাঁহার ইছে।হয়, তিনি উহা তাগে করিবেন, কিন্তু তিনি পারেন না। তিনি ক্রকণ্ডলি পুল্পরাণি উহার উপর চড়াইয়া, উহাকেই আশ্চর্যা ভালবাস। বলিয়া ব্যাথ্যা করেন। ইহাই মায়া।

জগতে আমরা সকলেই এইরপ। নারদও একদিন শ্রীকৃষ্ণকে বলিলেন, 'প্রভু, ভোমার মারা কিরপ, ভাষা দেখাও।' করেক দিন গত হইলে ক্লফ্ট নারদকে সঙ্গে লইরা একটা অরণ্যে শইয়া গোলন—অনেক দূর গিয়া, ক্লফ্ট বলিলেন, 'নারদ, আমি বড় ভৃষ্ণার্ভ, একটু জল আনিয়া দিতে পার ং' নারদ বলিলেন, 'প্রভু, কিছুক্ষণ অপেক্ষা করন, আমি জল লইয়া আসিতেছি।' এই বলিয়া নারদ চলিয়া গোলেন। ঐ স্থান হইতে কিয়দ্দুরে একটা আম ছিল; নারদ সেই প্রামে জলের অম্পান্ধানে প্রবেশ করিলেন। তিনি একটা বারে গিয়া ঘা মারিলেন, ঘার উন্মৃক্ত হইল, একটা পরমা স্থানারী কলা তাঁহার সমুখে আসিলেন। তাঁহাকে দেখিয়াই নারদ সমুদ্য ভূলিয়া গোলেন। তাঁহার প্রভু যে তাঁহার জন্ম অপেক্ষা করিলেছেন, তিনি যে তৃষ্ণার্ভ, হয়ত ভৃষ্ণায় তাঁহার প্রভু বা টিলে, ১৩০৭।

প্রাণবিধ্যোগ হইবার উপক্রম হইয়াছে, নারদ এ সমুদ্ধ ভুলিয়া গেলেন। তিনি স্ব ভুলিয়া দেই ক্ঞাটীর স্হিত কুণাধার্তা কহিতে লাগিলেন — ক্রমে পরস্পাবের প্রতি পরস্পারের এণ্যের সঞ্চার হইল। তখন নারদ সেই কন্তার পিতার নিকট ঐ কন্তার জন্ত প্রার্থনা করিলেন-বিবাহ ২ইনা গেল-তাঁহারা সেই গ্রামে বাস করিতে লাগিলেন-ক্রমে ঠাহাদের সন্তান্সন্ততি হইল। এইরপে দ্বাদশবর্ষ অভিবাহিত হইল। তাঁহার খশুবের মৃত্যু হইল--তিনি খণ্ডরের সম্পত্তির উত্তরাধিকারী হইলেন এবং পুল্কলত্র ভূমি পশু সম্পত্তি গৃহ প্রাভৃতি লইয়া বেশ সুখে সচ্চান্দ ক:ট:ইতে লাগিলেন। অন্ততঃ তাহার বোধ হইতে লাগিল, তিনি বেশ স্থাপে সজ্জে আছেন। এই সময় মেই দেশে বন্তা খাগিল। একদিন রাতিকালে নদী বেলা অভিক্রম করিয়া উভয় কুল প্রাবিভ কবিল, আর সমুদ্র গ্রামটীই জলমগ্ন হইল। আনেক বাড়ী পড়িতে লাগিল—মানুষ পভ সৰ ভাষিয়া থিয়া ছুবিয়া যাইতে লাগিল— স্রোতের বেগে স্বই ভাসিধা ঘাইতে লাগিল। নারদকে প্রায়ন করিতে ২ইন। এক হাতে তিনি স্ত্রাকে ধরিলেন, অপর হস্তদাবা গুটটা ছেলেকে ধরিলেন, আর একটা ছেলেকে কাঁথে গ্রায়া এই ভ্রম্কর নদ্যা হাটির। পার ২ইবার চেষ্টা ক্রিতে वाशित्वन ।

কিঃদুব **ম**গ্সর হইলেই তরস্কের বেগ অতান্ত হাধিক বোধ হইল। নারদ মক্দ শিশুটাকে কোন ক্রমে রাখিতে পারিলেন না; সে পড়িয়া গিয়া তর**সে** ভাসিয়া গেল। নিবাশায় জুংখে নারদ চাংকার কবিয়া উঠিলেন। তাহাকে রক্ষা করিতে গিল; আর একজন—যাহার হাত ধ্রিয়াছিলেন, সে হাত ফলকাইয়া ডুবিয়া গেল। অবশেষে ভাঁহাৰ পত্নী, যাহাকে তিনি ভাঁহাৰ যত শক্তি ছিল, সমুদ্য প্রয়োগ করিলা ধবিলাছিলেন, তরংখর বেলে ভাগাকেও হাত ছিনাইয়া লইল, আর তিনি কূলে নিঞ্চিপ্ত ২ইয়া মুভিকার গড়াগড়ি দিতে লাগিলেন ও জতি কাতর স্বরে িলাপ করিতে লাগিখেন। এমন মময়ে কে যেন তাঁহার পৃষ্ঠদেশে মৃত্ আঘাত করিল; কে যেন ব্লিল, 'বংস, কই, জল কই ? তুমি জল আনিতে গিয়াছিলে, আমি ভোমাৰ হন্ত অংশেষা করিতেছি। ভূমি আব ঘটো হইল গিয়াছ। আব ঘটা । নার্দের মনে দাদশ ৰৰ্ঘ অতিকাৰ হইয়াছিল, আগার আগাধ ঘণ্টার মধ্যে এই সম্ভ দুঞা তাহার মনের ভিতর দিয়া চলিয়াছিল—ইহাই মায়। কোন না কোনরূপে আমরা এই নায়ার ভিতর রহিয়াছি। এ ব্যাপার বুঝা বড় কঠিন-বিষয়টীও বড় জটিল। ইহার केटवायन । िय - ७म नः था : 386

ভাৎপর্য্য কি ? ভাংপর্য এই—বঁটাপার বড় ভরানক—সকল দেশেই মহাপুরুষগণ এই তব্ব প্রচার করিয়াছেন, সকল দেশের লোকেই এই তব্ব শিকা পাইয়াছে, কিন্তু খুব অল্প লোকেই ইহা বিখাদ করিয়াছে; ভাহার কবেণ এই, নিজে না ভূটিলে, নিজে না ঠেকিলে আমরা ইহা বিখাদ করিছে পারি না। বাস্তবিক বলিতে গেলে—সমুদ্রই বুথা—সমুদ্রই মিথ্যা।

সার্বনংহারক কাল আদিয়া সকলকেই গ্রাস করেন, কিছু আর অবশিষ্ট রাথেন না। তিনি পাপকে গ্রাস করেন, পাপীকে গ্রাস করেন, রাজাকে প্রজাকে, স্থানর কুংসিৎ সকলকেই গ্রাস করেন, কাহাকেও ছাড়েন না। সবই সেই এক চরম গতি বিনাশের দিকে অগসর হইতেছে। আমাদের জ্ঞান, শিল্প, বিজ্ঞান, সবই এই এক অনিবার্গ্য গতি মৃত্যুব দিকে অগ্রসর হইতেছে। কেহই ঐ তরঙ্গের গতিরোধে সমর্থ নহে, কেহই ঐ বিনাশাভিম্থী গতিকে এক মুহুর্ত্তের জন্মও রোধ করিয়া রাখিতে পারে না। আমরা উহাকে ভুলিয়া থাকিবার চেপ্তা করিছে পারি, যেমন কোন দেশে মহামারী উপস্থিত হইলে মল্পান নৃত্য এবং অন্তান্ত রুগা চেন্টা করিয়া লোকে সমুদর ভুলিতে চেপ্তা করিয়া পক্ষাণাতগ্রস্তের ন্যায় গতিশক্তিরহিত হইয়া থাকে। আমরাও এই রূপে এই মৃত্যুচিস্তাকে ভুলিবার জন্ম অতি করিয়া গেকে। আমরাও এই রূপে এই মৃত্যুচিস্তাকে ভুলিবার জন্ম অতি কর্প্তাক করিছেছ, কিন্তু ভাহাতে উহার নির্তি হয় না।

লোকের সন্মুথে ছটী পথ আছে। তন্মধ্যে একটী পথ সকলেই জানেন—
ভাহা এই:— ''জগতে ছংথ আছে, কন্ট আছে, সব সভা, কিন্তু ও সম্বন্ধে মোটেই
ভাবিও না। 'যাবজ্জীবেং স্থথ জীবেং ঋণং কন্তা ঘৃতং পিবেং।' ছংথ
আছে বটে, ওদিকে নজর দিও না। যা একটু আঘটু স্থথ পাও, ভাহা ভোগ
করিয়া লও, এই সংগারচিত্রের ছার্যাময় অংশের দিকে লক্ষ্য করিও না— কেবল
আলোকময় অংশের দিকেই লক্ষ্য করিও।" এই মতে কিছু সত্য আছে বটে,
কিন্তু ইহাতে ভ্যানক বিপদাশস্কাও আছে। ইহার মধ্যে সভ্য এইটুকু যে,
ইহাতে আমাদিগকে কার্য্যে প্রবৃত্ত রাখে, আশা এবং এইরূপ একটা প্রত্যক্ষ
আদর্শ আমাদের কার্য্যে প্রবৃত্ত রাখে, আশা এবং এইরূপ একটা প্রত্যক্ষ
আদর্শ আমাদের কার্য্যে প্রবৃত্ত ও উংসাহিত করে বটে, কিন্তু উহাতে এই
এক বিপদ্ আছে যে, শেষে হতাশ হইয়া সব চেন্টা ছাড়িয়া দিতে হয়।
যাহারা বলেন, " সংসারকে যেমন দেখিছেছ, তেমনই গ্রহণ করে; মত
দূর স্বচ্ছন্দে থাকিতে পার থাক, ছঃথকন্ট সমুদ্য় আসিলেও তাহাতে সন্তুই
১লা হৈত্ত, ১৯০৭। বিভাগ বিভাগ বি

থাক, অঘাত পাইলে বল-উহারা আঘাত নহে, পুপারুষ্টি, দাসংখ পরিচালিত হইলেও বল আমি মুক্ত, আমি স্বাধীন, অপরের নিবট এবং নিজের নিকট জেমাগত মিপ্যা কথা বল, কারণ সংসারে পাকিবার - জীবনধারণ ক্রিবার ইহাই একমাত্র উপান," ভালাদিপের বাধ্য হইলা অবশেষে ইহা করিতে হয়। ইহাকেই পাকা সাংসারিক জ্ঞান বলে, আর এই উনবিংশ শতান্দীতে এই জ্ঞান যত সাধারণ, কোন কালে উহা এত সাধারণ ছিল না; ভাহার কারণ এই, লোক এখন বেমন তীব্ৰ আঘাত পাহয়া থাকে, কোন কালে এত ভীব আঘাত পাইত না. প্ৰতিমন্তি ভাও কথন এত অধিক ও তাঁব ছিল না, মাতুষ একণে ভাষার অপর ভাতার প্রতি যত নিঠ্ব, তত কথন ছিল না, আর এই জন্ত ত্রা একংশ এই দান্তনা প্রদত্ত হইয়। থাকে। বর্ত্তমানকালে এই উপদেশই অধিক পরিমাণে প্রত হইলা থাকে, কিন্তু এই উপদেশে কোন ফল হয় না, কোন কালেই হয় না। গলিত শাকে আহার কতকগুলি ফুল চাপা দিনা রাখা যায় না-ভাগন্তব বেশী দিন চলে না; এক দিন ফুলগুলি উঠিরা যাইবে, তথন সেই সব পূর্পাপেকা বীভংস রূপে প্রতিভাত হইবে। আমাদের সমুদ্য জীবনও এই প্রকার। আন্রা আমাদের পুরাতন পঢ়া বা দোণার কাপড়ে মুড়িয়া রাখিবার চেষ্টা করিতে পারি, কিন্তু এক দিন আসিবে, যথন নেই দোণার কাপড় গরিয়া পড়িবে, আর দেই ক্ষত অতি বীভৎসভাবে নয়ন मगत्क श्रकां भित्र इटेरत । उरव कि किछू जामा नारे १ थ कथा नडा ख, আমগ্র সকলেই মালার দাস, আমরা সকলেই মালার জন্মগ্রহণ করিয়াছি, মায়াতেই আমরা জীবিত।

তবে কি কোন উপায় নাই, কোন আনা নাই । আনমা যে সকলেই অতি ছর্মণাপর, এই জগং যে বাস্তবিক একটা করোগার, আনাদের পূর্ব হইতে প্রাপ্ত মহিমার ছটাও যে একটা কারাগৃহমাত্র, আনাদের বৃদ্ধি এবং মনও যে বারাপ্তরূপ, তাহা শত শত যুগ ধরিয়া লোকে জ্ঞাত আছে। মাহুৰ যাহাই বলুক না কেন, এমন লোকই নাই, যিনি কোন না কোন সময়ে ইহা প্রাপে আলে অকুতব না করিয়াছেন। বুলেরা এটা আরো তীব্রভাবে অকুতব করিয়া থাকে, কারণ, ভাহাদের সারা জীবনের সঞ্চিত্ত অভিজ্ঞতা রহিয়াছে; প্রকৃতির নিগা ভাষা তাহাদিগকে বড় অধিক ঠকাইতে পারে না। এই বন্ধন অভিক্রমের উপায় কি ? এই বন্ধনগুলিকে অভিত্রম বরিবার কি কোন উপায় নাই ? আমরা দেখিতেছি, এই ভয়ঙ্কর ব্যাপার—এই বন্ধন ১৫০

আমাদের সমূথে পশ্চাতে সর্পত্ত থাকিলেও, এই হুঃথ কটের মধ্যেই, এই লগতেই, যেথানে জীবন ও মৃত্যু একার্থক, এখানেও এক মহাবাণী সকল মুগে, সকল দেশে, সকল ব্যক্তির হৃদরাভ্যস্তরে দিয়া যেন উত্থিত হইতেছে, ''দৈনী হেলা গুণমন্ত্রী মন মারা হ্রত্যায়া। মানেব যে প্রপদ্যস্তে মারামেতাং ভরন্তি (ড।'' ''আমার এই দৈবগুণমন্ত্রী মারা অতি কটে অভিক্রম করেন।'' ''হে পরিপ্রান্ত হু ভারাক্রান্ত লোকগণ, আইম, আমি ভোমাদিগকে অপ্রান্ত্র দিব।" এই বাণীই আমাদিগকে ক্রমাগত সমূথে অগ্রদর করিতেছে। মানুষ ইহা শুনিরাছে, এবং অনম্ভ বুগ ইহা শুনিভেছে। যথন মানুষের সবই যায় যায় হইয়াছে বোধ হয়, যথন আশা ভঙ্গ হইতে গাকে, যথন মানুষের নিজ বলের প্রতি বিশ্বাস নই হইয়া যায়, যথন সমুদ্যুই যেন তাঁহার আঙ্গুল গলিয়া পলাইতে থাকে এবং জীবন একটা ভগ্নস্তপে প্রিণত হয় মাত্র, তথনই দে এই বাণী শুনিতে পায়—আর ইহাই ধর্ম।

खादा हरेलाहे इहेन, এक निरक এहे अ अवर्गी, এहे आभा श्रम बांका रह, **बरे न**न्नबरे कि हुई नव, नगूनबरे बाया, हेटा छेललेकि कत, कि छ मायात वाहिता शहिताद भथ आहि। अभव मित्क, आधारमव भारमातिक व्यक्तिगन वरणन, "ধর্ম দর্শন এ সব বাজে জিনিষ লইয়া মাথা বকাইও না। জগতে বাস কর; এই জগৎ বোর অভ্তস্থ বটে, কিন্তু যতদূব পার, ইহার সন্থাবহার করিয়া লও " সাদা কথায় ইহার অর্থ এই, তণ্ডভাবে দিবা রাত্র প্রভারণাপূর্ণ **জীবন যাপন কর—তোমার ফত** গুলি যতদূর পাব ঢাকিয়া রাথ। তালির উপর তালি দাও, শেষে আদত জিনিষ্টীই ষেন নষ্ঠ হইয়া যায়, আর তুমি কেবল अक्री তानित्र छेनव তानि रहेग्रा थां । हेश्रांकहे बत्त — मार्माविक कीरन। ষাহারা:এইরূপ জোড়াভাড়া তালি লইগা সম্ভন্ত, তাহারা কখন ধর্মলাভ করিতে পারিবে না। বখন জীখনেব বর্তমান অবস্থায় ভয়ানক আশান্তি উপস্থিত হয়, যথন নিজের জীবনের উপরও আর মমতা থাকে না, ধখন এইরূপ তালি দেওয়ার উপর ভয়ানক ঘুণা উপস্থিত হয়, যথন মিখা। ও প্রব্যুনার উপর ভয়ানক বিতৃষ্ণা অন্মায়, তখনই খামের আরেন্ত হয়। সেই কেবল প্রকৃত ধার্মিক হইবার যোগা হইতে পারে, যে বুদ্ধদেব প্রোধিবক্তের নিমে দাঁড়াইয়া দৃঢ়স্বরে যাহা বলিয়াছিলেন, ডাহা বলিতে পারে, যখন এই সাংসারিকভার ভাব তাঁহার নিক্ট ও আবিভাবে হইয়াছিল, তিনি বুঝিতে পারিতেছেন, এ সম্পায়ই ३ना देश्य, १८०१। **উ**रषाथम ।

ভূল, অথচ কোন পথ বাহির পারিতেছেন না। একবার তাঁহার প্রলো-ভন আদিল,—সত্যের জন্ম অনুসন্ধান পরিত্যাগ কর,সংসারে ফিবিয়া গিয়া প্রাচীন প্রতারণাপূর্ণ জীবন যাপন কর, সকল জিনিষকে তাহার ভুল নাম দিয়া ডাক, নিজের নিকট এবং দকলের নিকট দিনরাত মিথ্যা বলিতে থাক,—এইরূপ প্রলোভন তাঁহার নিকট একবার আসিরাছিল, কিন্তু সেই মহাবীর অতুল বিক্রমে তংক্ষণাং উহা জয় কবিয়া ফেলিলেন, তিনি বলিলেন, "অজ্ঞানভাবে কেবল খাইয়া পরিয়া জীবনযাপনাপেকা মৃত্যুও শ্রেষঃ, পরাজিত হইয়া জীবনযাপনা-পেকা যুদ্ধকেতে মরা শ্রেয়ঃ।" ইহাই ধন্মের ভিত্তি। যথন মাথুয এই ভিত্তির উপর দগুর্মান হয়, তথন সে সভালাভ করিবার পথে চলিয়াছে, সে ঈশ্ব লাভ করিবার পথে চলিয়াছে, বুঝিতে হইবে। ধার্মিক হইবার জন্ত প্রথমেই এই দুঢ় প্রতিভা কাবেশ্রক। আমি নিজের পথ নিজে করিয়া লইব। সভা ভানিব, অথবা এই চেষ্টাম জীবন সমপণ করিব। কারণ, এ দিকে ত কিছুই নাই, শৃত্য, দিবারাত্রি অন্তর্হিত হইতেছে। অত্যকাব স্থানর আশাপূর্ণ তরুণ পুরুষ কল্যকার বৃদ্ধ। আশা আনন্দ তুথ এ সকল মুকুলসমূহের ভাগে কল্যকার শিশিরপাতেই নঠ হটবে। এত এই দিকের কথা; অপর দিকে, জয়ের এলোভন রহিয়াছে—ভীবনের সমুদয় অভভ জয় করিবার সভাবনা রহিয়াছে। এমন কি, জীবন এবং জগতের উপব পর্যান্ত জনী হইবার আশা রহিয়াছে। এই উপায়েই মাতুষ নিজ পদের উপর তর দিয়া লাড়াইতে পারে। সতএব যাহারা এই জয়লাভের জন্ম সভ্যের জন্ম ধর্মের জন্ম চেটা করিতেছে, ভাহারাই সত্য পথে রহিয়াছে, আর কেদস্কল ইহাই প্রচার করেন। "নিরাশ হইও ন! : পথ বড় কঠিন—বেন ক্রধারের স্তায় দুর্গম ; ভাছা হইলেও নিরাশ হইও না; উঠ, জাগ এবং তোমার চরম আদর্শে উপনীত হও।"

বিভিন্ন ধর্মসমূহ, তাহারা যে আকারেই মানুযের নিকট আহক ন্য কেন, সকলেরই এই এক মূল ভিত্তি। সকল ধর্মই জগৎ হইতে বাহিরে যাইবার—মুক্তির—উপদেশ দিতেছে। এই ধর্মসকল সংসার ও ধর্মের সামগুল্ত সাধন করিতে আইসে না, বরং ধর্মকে নিজ আদর্শে দৃঢ়প্রতিষ্ঠিত করিতে আইসে, সংসারের সঙ্গে মিলিয়া নিশিয়া ঐ আদর্শকে ভোট করিয়া কেলে না। প্রত্যেক ধর্মই ইহা প্রচার করিতেছেন, আর বেদাস্তের কর্ত্তর —বিভিন্ন ধর্ম ভাব সকলের সামগুল্পসাধন, যেমন এই মাত্র আমরা দেখিলাম, এই মৃক্তিতত্বে জগতের উচ্চতম ও নিম্নত্য সকল ধর্মের মধ্যে সামগ্রন্থ রহিয়াছে। আমরা ১৫২

একেবারে স্পৃষ্ট নছে, সেই সম এক অবিক্রিয় ব্রহ্মকেই দর্শন করাই যাহাদের স্বভাব, ভাহারাই সমদশী পণ্ডিত ॥ ১৮ ॥

> ইহৈব তৈজিভঃ সূর্গো ঘেষাং সাম্যে স্থিতং মনঃ। নির্দ্ধোষ্ণ হি সমং ব্রহ্ম তত্মান ক্ষনি তে স্থিতাঃ॥ ১৯॥

আগর :— যেবাং মনঃ সাম্যে স্থিতং তৈরিহৈব সর্গোজিতঃ হি (ষ্মাং) ব্রহ্ম সমং নির্দোষ্ণ ক্রমাণ কে ব্রহ্মণি স্থিতাঃ ॥ ১৯ ॥

ম্লামুবাদ।—বাহাদের মনঃ সাম্যে অবস্থিত, ভাহারা এই লোকেই জয় জয় করিতে সমর্থ হইরাছে, যে কারণ নির্দোষ একাই সম, এই কারণ ভাহারা একতেই অবস্থিত॥ ১৯॥

ভাষ্য।—নরভোজ্যায়াস্তে দোষবন্তঃ "সমাসমাভাাং বিষমসমে পূজাতঃ" ইতি খুতেঃ, নতে দোষবন্তঃ কথং ইতিব জাবিদ্ভিরেব তৈঃ সমদশিভিঃ পণ্ডিতৈজিতোবশীক্ষতঃ সর্বঃ জন্ম বেষাং লাম্যে সর্বভ্তেষ্ ব্রহ্মণি সমভাবে ছিতং নিশ্চলীভূতং মনোহতঃকরণং। নির্দেষিং যক্তপি দোষবন্ধ্য শ্বপাকাদির্ মূলৈন্তদোষবদিব বিভাব্যতে, তথাপি তদোবৈরশপৃত্তমিতি নির্দেষং দোষবর্জিতং হি যন্মাং নাপি শ্বগুণভেদভিন্নং নিত্ত বিভাবিত ভক্ত বক্ষয়তি চত্তবান্ ইচ্ছাদীনাং ক্রেব্রধ্যতং অনাদিরারিগুণিরাচে। নাপাস্ত্যাবিশেষ। আত্মনো ভেদকাঃ সন্তি প্রতিশরীরং তেবং প্রমাণাক্ষপত্তেরতঃ সমং ব্রহ্ম একঞ্চ তত্মাদুদ্ধণোব তে স্থিতান্তমার দোষগন্ধমান্তমণি তান্ স্পৃশতি দেইদিসংখাতান্তমলশনভিমানাভাবাং দেইদিসংখাতান্তমলশনভিমানবদ্ বিষম্বত্ম তৎ স্তম্ সমাসমাভ্যাং বিষমসমে পূজাত ইতি পূজাবিষয়ত্ব-বিশেষণাহ্ম দ্গুতে চ ব্রহ্মবিং ষ্জুকবিচ্ছতুর্কেদিনিছিতি পূজাদানাদে গুণবিশেষসভ্তমঃ কারুবাহ বন্ধ গুণবিভামির ব্রহ্মণি তে স্থিতা ইতি যুক্তম্ কর্মবিষয়ত্ব মাসমাভ্যাং ইত্যাদি ইনং তু স্ক্রেক্মান্ত্রাদিবিষয়ং প্রস্তেং স্ক্রেক্মানি মন্ত্রা হিত্যারতা আ অধ্যায়পরিসমাপ্তেঃ ৪ ১ ৪

ভাষাানুবাদ।—একশে এই প্রকার শহা হইতেছে খে চপ্তান প্রস্কৃতির অরভাজন করিতে নাই, স্থতরাং তাহারা দলোব। উংকৃতি ও অপকৃতি ব্যক্তিকে যথাক্রমে অপকৃতি ও উংকৃতি পূজা করিলে (পাপ হয়), এই প্রকার স্মৃতি (প্রমাণ দারা ইহা জানা বায় বে ঐ সকল অপকৃতি ব্যক্তিকে ও উংকৃতি ব্যক্তিকে একরাপ জ্ঞান করা উচিত নহে) ইহার উপর, এই বলা >শা হৈলে, ১৩০৭।] উলোধন। [8] :>৫০

ষাইতেছে যে, ভাহাবা (ব্ৰহ্মত ব্যক্তির নিকট) দেখেয়ুক্ত নহে কেন 🕈 (তাহাই শ্লোকের দারা বলা হইতেছে) সেই সকল সমদশী পণ্ডিতগণ বাহিয়া থাকিতে থাকিতেই দর্গ (অথাং)জনাকে বশীক্ষত করিয়া থাকেন, যাঁহাদের মন (অর্থাং) ভাস্তঃকরণ সাম্যো (অর্থাং) দকল প্রাণীতেই সমভাবে অবস্থিত ব্ৰহ্মতেই ভিড (অৰ্থাং) নিশ্চল হট্যা থাকে; যে কাৰণ ত্রন্ধ নিজোষ ও সম, যতাপি দোষগুকু ঋপাকাদিতে (স্থিত বলিয়া) মৃত্গণ দেই খপাকাদির দোষে এক্সকেও দোষবুক্তের ভাষ বোধ করিয়া থাকে, ভাহা ১ইলেও প্রকৃত পক্ষে ব্রহ্ম নির্দ্ধেষ, অর্গাং সকল প্রকার দোষ-বৰ্জিত, যে কারণ চৈত্ত নিগুণ এবং নিগুণ্যনিবদ্ধনই উহা স্থগত গুণবিশেষবশতঃ বিভিন্ন হচতে পারে না ভগবানও বলিবেন যে, ইচ্ছো-শুভৃতি গুণ ক্ষেত্রের ধর্ম, আ্যার অনাদিম ও নিত্পির নিবন্ধন (প্রমাত্মা বিকারী নহেন) ইত্যাদি। এবং প্রত্যেক নিত্য দ্রব্যে বিভাষান বৈশেষিক মত সিদ্ধ বিশেষনামক বস্তর দারাও আত্মার ভেদ সাধিত হইতে পারে না, কারণ প্রতিশরীবভেদে আত্মগত ভাদৃশ বিশেষ বস্তুর স্বীকারে কোন প্রমাণ পাওয়া যায় না। এইজাত একা সম এবং এক, এই জাত তাহার! ব্রক্ষেতেই স্থিত, প্রতরাং (পর্মার্থ দৃষ্টিতে) তাহাদের অপুনাত্রও দোনের স্পূর্ণ হুইতে পারে না ৷ কারণ ভাহ!দের দেহাদিসজ্বাতে আয়দর্শনজনিত অভিমান নিবৃত্ত হইয়াছে। "সম এবং অসম ব্যক্তির বিষম ও সমভাবে পূজা করিলে প্রাত্যবায় হয়", এই প্রকার ধন্মশাস্ত্রের বিষয় দেহাদিশজ্বাতে আলাভিমান-শালী জীব। সেই প্রকার জীবের পক্ষেই ব্রহ্মবিদ, ষড়ঞ্গবিদ, চতুর্বেদিবিদ ইত্যাদি পাত্ৰগত গুণ ভেদে পূজা ও দানাদিতে বিশেষ বিধানও দেখিতে পাওয়া যায়: কিন্তু স্ক্রগতের কারণ একা স্ক্রিকার গুণ ও দোষ হইতে বিনিশ্বক, এই কারণে ভাহারা ত্রন্ধেতেই অবস্থিত, এইরূপ যাহা বলা হই-রাছে, তাহা বুক্তিযুক্তই হইলছে। "সমাসমাভাং" ইত্যাদি ধর্মণান্তের বিয়-কর্মী জীব। সকাকর্মাণি সংস্থান ইতাদি শ্লোক হইতে আরম্ভ করিয়া এই অধাায়ের পরিসমাপ্তি পর্যান্ত ঘাহা কিছু বলা হইরাছে, তাহা সর্কাক্রমান্তা-দীর বিষয়েই প্রকৃত আছে। ১৯॥

> ন প্রজ্যোৎ পিয়ং গ্রাপ্য নোধিজেং প্রাপ্য চাপ্রিয়ন্। স্থিয়বুদ্ধিরসংস্চো বন্ধবিদ্ বন্ধনি স্থিতঃ॥২৪॥

অবয়।—স্থিবুদ্ধি: অস্থাড়: এক্ষণি স্থিত: এক্ষবিদ্ প্রিঞ্ প্রাপান প্রস্থ-ষ্যেং (তথা) অপ্রিবং প্রাপ্য ন উদ্বিজেং চ॥ ২০॥

মুলালুবাৰ !--ব্ৰহ্মক বাক্তি, ভিৰবুদ্ধি স্মোহশূত এবং স্ক্ৰি। ব্ৰহ্মদৰ্শৰ তৎপর (চইরে), দে প্রিয়বস্ত লাভ করিলে ছাই হইবে না এবং অপ্রিয় প্রাপ্তিতে উदिय इटेरव ना॥ २०॥

ভাষ্য।-- राष्ट्रार निर्फारः मगः उत्र जाजा जाजा उत्र न श्रक्तार न श्रह्म কুর্গ্যাং প্রিয়মিষ্টং প্রাণ্য লক্ষ্য নোছিজেং প্রাপ্যেৰ চাপ্রিলং অনিষ্টং লকা দেহনাতা মদৰ্শিনং হি প্রিয়াপ্রিয়প্রাণ্ডী হর্ষবিষাদস্থানে। ন কেবলা-ত্মদর্শিনস্তন্য প্রিয়াপ্রিয়প্রাপ্যসন্তবাং। কিঞ্চ দর্বভূতেষু একঃ দলে। নির্দেষ আয়া ইতি ভিরা নির্কিচিকিৎস। বুদির্যক্ত সভিংবৃদ্ধিঃ অসমৃঢ়ঃ সংমাহ-বৰ্জিত শ্চ স্থাং যথোক্ত ব্ৰহ্মনিদ্ ব্ৰহ্মনি স্থিতোহকৰ্মকং সৰ্ব্বকৰ্মসংস্থাসীত্যৰ্থ:॥২০॥

ভাষ্যামুবাদ। –বে কারণ ব্রহ্ম নির্দ্ধেষ সম এবং স্বাস্থা, সেই কারণে প্রির (অর্থাং) ইট লাভ করিয়া প্রস্তু হইবে না এবং অপ্রির (অর্থাৎ) অনিউ লাভ করিয়া উদ্বিগ্ন হইবে না। যাহারা শরীরেতেই আত্মাভিমানী, তাহাদেরই প্রিয় বা অথিয় বস্তব প্রাপ্তি হর্ষ বা বিষাদের কারণ হয়। এক্ষই আত্মা, এই প্রকার জ্ঞান যাহার হইয়াছে, ভাহার প্রিয় বা অপ্রিয় প্রাপ্তির সম্ভাবনা নাই। আরও দকল প্রাণিতেই এক ও দম আত্মা কোন প্রকার দোষদংস্ট নহে, এই প্রকার স্থিব (অর্থাং) সংশারহীন বৃদ্ধি যাধার হইয়াছে, তাগকেই স্থিরবৃদ্ধি বলা বায়। স্থিববৃদ্ধি 🖫 সম্মোহবজ্জিত হইবে। (এবং) যথোক্ত ব্রহ্মস্বরূপকে জানিয়া ব্রহ্মস্থিত (**অর্থাৎ) ''একর্ম্ম**-কৃৎ'' সর্বকশ্বসংস্থাসী (হইবে), ইহাই অর্থ ॥ २० ॥

> वाक्रण्याधिमकाञ्चा विकालाञ्चित यः स्था স ব্রহ্মযোগযুক্তাত্রা সুধ্যক্ষ্মশ্রতে ॥ ২১॥

অষয় ৷ — আত্মনি বং স্থাং (বউতে, তং) অক্ষয়ং সূথাং বাহস্পানের অসকাত্মা বন্ধযোগযুক্ত। স্থা স (যে গী) অপুতে॥ ২১॥

মূলাক্রাণ।—আবাতেই যে সুথ বিভামান রহিয়া**ছে** সেই অকর সুধ তাহারই হইয়া থাকে, যে বাক্তির অন্তঃকরণ বাহ্যবিষয়দমূহে আদক্ত নঞ এবং ত্রন্মবিষয়ক সনাধিতে যাহার অন্তঃকরণ সর্ব্বদা যুক্ত থাকে॥ ২১ ॥

ভাষ্য।—কিঞ্চ ব্ৰহ্মণি স্থিতঃ বাহাস্পশেষু বাহাস্তে স্পৰ্শাস্ত বাহস্পশাঃ, >गा देहब, २७०१।] छेखांथन। > t &

শুগুতে ইতি শর্শাঃ শব্দাদেয়ে বিষয়ান্তেষ্ বাহুম্পর্শেষ্ আসক্ত আত্মা অন্তঃ-করণং যন্ত সোহয়ং অসকায়া বিষয়েষ্ প্রীতিবর্জিতঃ সন্ বিন্দৃতি বভতে আত্মনি যৎ স্থং ভিদিনতীতে তেওঁ। স বক্ষয়োগযুকায়া ব্রহ্মণি যোগঃ সমাধিঃ ব্রহ্মযোগতেন ব্রহ্মযোগেন যুক্তঃ স্মাহিতন্তবিষন্ব্যাপ্ত আত্মান্তঃকরণং যন্ত স ব্রহ্মযোগযুক্তায়া স্থমক্ষয়ম শুতে ব্যাপ্রাতি। তথাদাহ্যবিষয়-প্রীতঃ ক্ষণিকায়। ইন্দ্রিয়াণি নিবর্ত্রেদান্ত্রক্ষয়স্থার্থীত্যর্থঃ ॥ ২১ ॥

ভাষামুবাদ।—আরও ব্রহ্মতে অবস্থিত (হুইতে হুইলে কি হুইতে হুইলে কাহিরের শক্ষিনিজ্ঞান বিষয়নিচয়ে অস্ক্রামা, যাহার আত্মা (অর্থাৎ) অন্তঃক্রণ অনান্দক সেই অসক্রামা অর্থাং বিষয়ে প্রীতিবজ্ঞিত হুইলে, আত্মাতে যে স্থুপ (আছে), ভাহাই লাভ বরিয়া থাকে। সেই প্রপ্রামার্ক্রামা অক্রয় স্থুপ লাভ করিনা থাকে, ব্রহ্ম বোগ (অর্থাৎ) সমাধি (এই অর্থে) ব্রহ্ম বোগ (এই শক্ষী বাবহার হুইয়াছে), মাহার আ্রা (অর্থাৎ) অন্তঃক্রণ সেই ব্রহ্মযোগতে মুক্র (অর্থাৎ) ব্যাপ্ত আছে, সেই ব্রহ্মযোগ্রহামা । সেই কারণে আত্মাব অক্রয় মুখ বে কামনা করে, সে ক্ষণিক বাছবিষয়াও ইন্থাতি হুইতে ইন্দিয় স্কলকে নিবৃত্ত করিবে ইহাই অর্থ ॥২১ ॥

বে হি সংস্পৰ্শজা ভোগা ছঃখবোন্ধ এব তে। আছি স্তৰ্পতঃ কৌতেয়ে ন ভেষু রমতে বুধঃ॥ ২২॥

অবর।—হে কৌতের। যে ভেলাঃ সংস্প্রাঃ তে ছংখ্যানর এব (ভথা) আফতব্যুঃ, ভেরুবুধঃ ন রম্ভেশ ২২ ল

মুলাহ্বাদ।— (এই কারণেও বাহ্যবিষ্থীতি হইতে মনকে নির্ব করিবে কারণ) বিষয়েব সহিত ইন্দ্রিয়ের সংস্পাজনিত যে স্থভাগ সকল হর, তাহা হঃথের কারণ হইয়া থাকে। হে কোস্তেচ, ঐ সবল ভোগ আদি ও অন্তর্ক, পণ্ডিত বাজি ঐ সকল বাহ্যবিষ্টোগে প্রিভিলাভ করে লা। ২২॥

ভাষ্য।—ইতশ্চ নিবর্ত্তরেৎ যে হি যত্ত্বাং সংস্পর্শজ। বিষয়েক্সি: সংস্পর্শজা জাতা ভাগাভূকরঃ ছঃথযোনর এব অবিতাক্তত্তাং। দৃশুস্তে হি আধ্যাথ্রিকাদীনি ছঃখানি তন্নিমিত্তাত্যেব। যথেহ লোকে তথা পরলোকেইপি গনাত
এব শকাং। ন সংসারে স্থত্তগক্ষমাত্রসগান্তীতি বৃদ্ধা বিষয়মূগত্ফিকারা ইক্সিয়ানি নিবর্ত্তিরং। তক্বলং ছঃথযোনর আত্তিবস্তশ্চ আদি১৫৬ উল্লোধন। তিয়—ধন সংখ্যা;

বিষয়ে ক্রিক্সংবোগে। ভোগানামস্তশ্চ ত্রিয়োগ এবাত আল্লস্তবস্তোহনিত্যা-মধ্যক্ষণভাবিতাদিতার্থ:। কৌস্তেয়, ন তেমু রমতে বুধ: ভোগেয়ু বিবেকী অবগত-প্রমার্থতাত্বাস্ত্যাস্থানামের বিষণেয়ু রতিদু খাতে যথ। পশুপ্রাভূতীনামু॥ ২২॥

ভাষ্যানুবাদ।—এই কারণেও নির্ত্ত করিবে, কারণ বিষয় ও ইন্সিকের পরম্পর সংযোগ হইতে উৎপন্ন যে সকল ভোগ (অর্থাৎ) ভূক্তি, তাহারা ছঃখকারণ, কারণ ঐ সকলই জ্ঞানের কার্য্য। দেখিতেও পাওয়া যায়, আধ্যাত্মিক প্রভৃতি ছঃখ তাহার নিমিত্ত হইরা থাকে। যেমন এই লোকে, সেই প্রকারে শাস্তপ্রমাণ বলে পরলোকেও হইরা থাকে, ইহা বুঝিতে পারা যায়। এই সংসালে প্রথের লেশমাত্তও নাই, ইহা বুঝিয়া বিষয়মূগভৃষ্ণা হইতে ইন্সিয় সকলকে নির্ত্ত কবি, তাহারা কেবল যে ছঃখযোনি তাহাই নহে, ভাহাদের আদি ও জ্ঞ আছে; বিষয়ের সহিত্ত ইন্সিয়ের সংযোগই ভোগের আদি এবং ভাহার বিয়োগই ভোগের জ্ঞার; ক্তরাং সকল ভোগই আনিতা, কারণ ভোগ আদিতেও নাই, পরেও থাকে না, কেবল মধ্যেই খাকে। হে কৌস্ডেম, বুধ (অর্থাং) বিবেকী সেই ভোগসমূহে প্রীতি লাভ করে না, কারণ সে ভোগের অসারতা বুঝিয়াছে এবং নিত্য ব্রম্বেশ্ব প্রসারতা প্রানিতে পারিয়াছে। পশুপন্দী প্রভৃতির ত্যায় যাহারা জত্যন্ত মূচ, ভাহাদেরই বিষয়সমূহে প্রীতি দেখিতে পাওয়া যায়॥ ২২॥

শক্রোতীহৈব ষঃ সোঢ়ুং প্রাক্শরীরবিমোক্ষণাং। কামক্রোধোন্তবং বেগং স যুক্তঃ স স্থানী নরঃ॥ ২০॥

অন্তর।—ইতৈব শরীববিমোজণাং প্রাক্ কামক্রোধোন্তবং বেগং সেচচুং যং শক্রোতি সানবং যুক্তঃ স্থনী (চ)॥২৩॥

মূলালুবাদ।—এই লোকেই মরণের পূর্বেক কাম ও ক্রোধের বেকা ধারণ করিতে যে সমর্থ হয়, সেই মলুয়াই যুক্ত এবং দেই স্থী॥ ২৩॥

ভাষ্য।— অয়ং চ শ্রেয়োমার্গ প্রতিপক্ষী কট্ডমোদে; ষঃ সর্বানর্থপ্রাপ্তিহেতুত্ নিবার্যান্দেতি তৎপরিহারে ষত্রাধিকাং কর্ত্তরামিত্যাহন্তরান্। শর্রোতি
উৎসহতে ইইংব জীবলেব ষঃ সোঢ়ং প্রসহিত্ৎ প্রাক্ পূর্বং শরীরবিমোক্ষণাদামরণাৎ। মরণসীমাকরণং জীবভোহ্যপ্রভাবী হি কামক্রোধন্তবোবেগোহনস্তনিমিন্তবান্ হি সইতি যাবন্মরণং তাবল বিশ্রন্তনীয় ইত্যর্থঃ। কাম ইন্দ্রিরগোচরপ্রাপ্তে ইটে বিব্রে শ্রেমাণে স্বর্যামাণে বান্নুভূতে স্থাহেতৌ যা গর্দি১লা হৈত্র, ১৩০৭ ৷] উল্লেখন। ১৭৭

স্থা সকান: । ক্রোধণ্ট আয়নঃ প্রতিক্লেষ্ ছঃখহেত্রু দৃশ্যাণেষ্
শার্থামাণেষ্ বা যেছিবং সক্রোধা তৌ কানকোরে উন্তরো ষত কান-ক্রোধোন্তরো বেগঃ রোনাপনস্তানে নানিলিকে ইলঃকরণ প্রক্ষোভরপঃ কামোন্তরো বেগঃ । গাত্রপ্রক্ষাপ্রক্ষেদাদেটো চপুটরক্তনে ত্রাদিলিকঃ কোধোন্তরো বেগঃ তং কানক্রোধোন্তরং বেগং য উৎসহতে প্রসহতে সোচ্ছ প্রস্থিতং স্যুক্তো যোগী সুখী চেছ লোকে নরঃ ॥২৩॥

ভাষাান্ত্রাদ।—এইটীই নোক্ষমার্গের প্রতিপক্ষ এবং অত্যস্তক্ষেশসাধ্য দোব এবং ইছাই সকল অনর্থপ্রাপ্তির হেতু, এই জক্ত ইহার নিবারণ করা উচিত এবং ইহার পরিহার করিবার জক্ত বিশেষ যত্ন করিতে হইবে, ইহাই বলিতেছেন ভগবান।

এই লোকেই (অর্থাং) জীবিত অবস্থার যে বাক্তি মরণের পূর্ববিগাল পর্যান্ত কামক্রোধোড়ন্বেগ সহন করিতে সমর্থ হণ; মবণ পর্যান্ত সীমা ▼রিবার তাংপর্যা এই যে কাম ও ক্রোধ হইতে উংপন্ন বেগ, জীবিতবাকির পলে অব্জান্তাবী, করেণ তাহার নিমিত্ত অনন্ত। সুতবাং আমুহণ উহাকে বিশ্বাস করিবে না। অভিলয়িত সুধবরবস্ত ইন্দ্রিয়ের সহিত মিশিত হইলে অথবা শ্রুত হইলে কিংবা পুর্বের অন্তভ্ত ছিল বলিয়া কোন কারণ বশতঃ মূরণ-পথে উপ্তিত হইলে, তাহার উপর যে গদ্ধি অর্থাং তৃষ্ণা ইয়, তাহারই নাম কাম। দে সকল বস্ত তুঃগহেতু, স্কুতরাং আয়ার প্রতি-কুল, দেই সকল বস্তুৰ দৰ্শন ভাৰণ বা স্মুৱণ হইলে যে ছেষ উংপন্ন হয়, তাহাকেই ক্রোধ বলা যায়। সেই কাম ও ক্রোধ হইতে যে বেগ উৎপন্ন **হয়, তাহাকে** বামক্রোধোন্তব বেগ বলা যায়। শরীরে রোমাঞ্জ্ঠনেত ও শ্র্র্টবদ্ন প্রভৃতি চিচ্ছের দারা অন্তঃকরণের যে চাঞ্চলাকে বাহিরের লোকে অহমান করিয়া থাকে, ভাহারই নাম কামোন্তব বেগ। শরীরে কম্প, প্রস্থেদ, অধারী টের দংশন, আরক্ত নেত্র প্রভৃতি চিক্সের দ্বারা অন্তঃকরণের যে চাঞ্চলা অনুমিত হয়, ভাহাকে ক্রোধোন্তব বেগ কহা যায়। বে ব্যক্তি বেই কাম এবং ক্রেংধ হইতে উৎপন্ন বেগকে সহন কবিতে সমর্থ হয়, সেই যুক্ত (অর্থাৎ) **মোগী এবং ইহলোকে** সেই মনুষ্ট স্থাৰী ॥ ২৩ ॥

> যোক্তঃস্থোন্তরারামস্তণান্তর্জ্যোতিরের যঃ। সুযোগী ব্রহ্মনির্বাণং ব্রহ্মভূতে।ছবিগ্রন্থতি॥ ২৪॥

অখ্য।—্যঃ অস্তঃস্থঃ অস্তরারাসঃ তথা যং অস্ত.জি:তিঃ এব সংযোগী বিশাস্তঃ (সন্) বিশানিকাণিং অধিগচছতি॥ ২৪॥

শ্লাকুবাদ।—বে অন্তঃক্রথ, যাহার অন্তরাস্মাতেই ক্রীড়া এবং **অন্তরাস্মাই** যাথার নিকট জ্যোতিঃ স্বরূপে প্রকাশমান, সেই যোগী এক্সবরূপ হই । (এই জাবনেই) ব্রহানির্বাণ লাভ করিরা থাকে॥ ২৪॥

ভাষা।—কণং ভূতশ্চ ব্রহ্মণিষ্টিতো ব্রহ্ম প্রাপ্তেরিতাচ। থৈক:ইখঃ
আন্তর্গান্থনি স্থাং যথ দোহস্তস্থা তথা আন্ত:র্বান্থনি আরাম আক্রীড়া যথ
সোহস্তরারামস্তবৈশাস্তরায়ের জ্যোতিঃ প্রকাশোষ্ঠ সোহস্তরান্তিরের ষস্ত্র্পশঃ
স যোগী ব্রহ্মনির্দাণিং ব্রহ্মণি নিক্তিং মোক্ষমিই জীব্রের ব্রহ্মভূতঃ স্ক্রধিগভঙ্জি
প্রাপ্রেতি। ২৪॥

ভাষাানুবাদ।— কি প্রকার হইলে ব্রেক্সতে স্থিত হইয়া ব্রহ্ম প্রাপ্ত হইতে পারে ? (তাহাই বলা যাইতেছে) যে "অন্তঃ ক্র্ম্ম" (অন্তঃ শুল্ফর অর্থ আয়া) আত্মতেই যাহার অথ, তাহাকেই অন্তঃ ক্র্থ বলা যায়, যে ব্যক্তি "অন্তরারাম" আত্মতেই যাহার আরাম (অথা২) আফ্রীড়া মেই অন্তরারাম, এইরূপ বে অন্তর্জাতিঃ, আত্মাই যাহার জ্যোতিঃ (অর্থা২ স্কাদা) প্রকাশ,সেই অন্তর্জাতিঃ। এই প্রকার লক্ষণসম্পন্ন যে যোগী সে ব্রহ্মনির্কাণ (অথা২) ব্রহ্মেতেই 'নির্ভি' মোক্ষ, এই লোকেহ বাঁচিয়া থাকিতে থাকিতে ব্রক্ষের স্ক্রণ প্রাপ্ত হইয়া থাকে। ২০॥

শভতে বেদ্ধানিক পিন্ধান কীপ কৰাবাঃ। ছিলবৈধাযতাত্মানঃ স্কভিত্ত হিতে রতাঃ॥ ২৫॥

ক্ষমন । — ক্লীণকল্মবাঃ ছিন্নবৈধা যভাগ্রানঃ স্কৃত্ত**হিতে মতা ঋষ**ঃঃ **এক্ষ** নির্বাণং ল্ভক্তে ॥ ২৫ ॥

মূলামুণাদ।—বিগতপাপ সংশ্বশৃত সমাহিতচেত। এবং সর্বাতৃত্তি নিয়ত খিষিগণ ব্ৰহ্মনিবাণ লাভ করিয়া থাকেন ॥ ২৫ ॥

ভাষ্য। - কিঞ্চ ব্ৰদ্ধনিৰ্ধাণং মোক্ষমুৰয়ঃ সমাগ্দশিনঃ সংস্থাসিনঃ কীপকল্মাঃ কীণপাপাদিদোষা ভিল্লবিধা ভিল্লসংশ্যা যতা আন্ন: সংযতে জিয়াঃ স্থভূতিহিতে ল্লাঃ সন্ধ্য' ভূতঃনাং হিতে আনুক্লো ক্লাঃ অহিংলকা ইতার্থ: য়ঽয়

ভাষাতিবাদ ৷ — আরও "ঋষি" সমাগ্দর্শ শীল সংন্তাসী, "কীণকবাৰ" পাণাদিদোয়তীন, "ছিন্ন দৈশ" সংশ্রশ্ল, "ৰ ছাত্মা" সংযতে ক্রিয় ও সর্বাভূতের লা হৈত্র, ১৩০৭ ৷] উদোধন ৷

মঙ্গল প্রায়ণ (অর্থাং) অহিংসক ব্যক্তিগণ "ব্রহ্মনির্ব্বাণ" মোক্ষ লাভ করিয়! থাকেন। ২৫।

্বামক্রোধবিযুক্তানাং যতীনাং যতচে তসাম্।

অভিতো ব্রহ্মনির্কাণং বর্ততে বিদিতাশ্বন:ম্॥ ২৬॥

সময়।—বিদিতাত্মনাং কামক্রোধবিযুক্তানাং যতচেতসাং যতীনাং সভিতঃ ব্রহ্মনির্বাণং বর্ত্তে ॥ ২৬ ॥

মূলাকুবাদ।—যাহারা সমাগ্দশী, যাহাদের কাম ও জ্রোধ নাই এবং যাহারা সংযতচেতা সেই যতিগাণর উভযত (অর্থাং দেহপাতের পূর্বের ও পরে) মোক ছইয়া থাকে ॥ ২৬ ॥

ভাষা।—কিঞ্চামবিযুকানাং কামণ্ড ক্রোধণ্ড কামক্রোধ্যে তাভ্যাং বিযুক্তানাং যতীনাং সংস্থাসিনাং যতচেত্যাং সংয্তান্তঃকরণানাং অভিত উভরতো জীবভাং মৃতানাঞ্চ ব্রহ্মনিকাণং মোক্ষোবর্ততে বিদিতায়নাম্ বিদিতোজ্ঞাত আত্মা ধেষাং তে বিদিতায়ানত্তেষামু বিদিতায়ানাং সম্যাগ্রদিনিমিতার্থঃ। ২৬।।

ভাষ্যাক্রাদ — স্মারও, যাহারা কাম ও ক্রোণ এই উভয় বর্জিত, যাহারা রতি (অর্থাৎ) সংস্থাসী, যাহারা ষতচেতা (অর্থাৎ) সংযতাস্তঃকরণ এবং যাহারা শুমাস্থতস্বজ্ঞ সমাগ্দশনশীল, তাহাদের জীবিতাবস্থায় এবং মৃত্যুর পরে উভয়তঃ ব্রহ্মনির্বাণ (অর্থাৎ) মোক আছেই।। ২৬।।

> ম্পর্শান্ কৃষা বহিবাছাংশক্টেশ্ডবান্তরে ক্রারাঃ। প্রাণাপানৌ সমৌ কৃষা নাসাভান্তবচারিণোঁ॥ ২৭॥ বতেজিগ্রমনোবৃদ্ধিমুনিমে কিপরারণঃ। বিগতেচছান্তয়কোধো যঃ সদা মুক্ত এব সং॥ ২৮॥

আৰা । — যা ম্নি: মোকপরারণঃ (সন্) বাহ্যান্ স্পর্ণান্ বহিঃ ক্তা (তথা) ভবাঃ অন্তরে চকুঃ (কৃতা) চ নাসাজ্যস্তরচারিলো প্রাণোপণে চ সমৌ কৃতা সদা

বতে জিলমননাবৃদ্ধিঃ বিগতেচছা ভয়কোধঃ (স্থাৎ) স মুক্ত এব ॥ ২০—২৮॥

মূলামুবাদ। যে মূনি মোকপরায়ণ হইয়া বাফ্বিষয়নিচয়কে মনের মধ্যে প্রেশ করিতে দিবে না এবং ক্রবয়ের মধ্যে চক্ষ্য সমিবিষ্ট করিয়া নাসাভ্যন্তর চারি প্রাণ ও অপান বায়ুকে, সমভাবাপর করিবে এবং ইক্রিয় নন ও বুরিকে

তিবোধন। তির—৫ম সংখ্যা;

শুকদেৰ-চরিত। ৪,১৭2

(ডাক্তার শশীভূষণ ঘোষ, এম, বি, ।) >- 494

শান্তালোচনা সম্বন্ধে প্রীপ্রীরামকৃষ্ণনেবের একটী ক্ষর উপদেশ আছে।
তিনি বলিতেন, "তৃষ্ণা পাইরা থাকে. পুকনিণীর নীতের পাঁকে থোলাইও না,
উপর উপর জল পান কর, ভ্ষা নিবারণ হইবে। শান্তের নর্ম গ্রহণ কর,
তোমার ধর্ম-পিপাদা নির্ভি হইবে, কিন্তু শাস্তের বাব্যার্থ লইরা বিচার করিতে
গেলে বুলি কল্মিত হইরা ঘাইবে, ভ্ষা নিউবে না'। তিনি আরও বলিতেন,
'খোদা পরিত্যাগ করিয়া শুরু চাল পুতিনে গছ হয় না, ধান পোতা আবশুক।
বিচার করিলে অনেক জিনিব আনাদেশ নিকট অসার বলিয়া বোদ হইকে
পারে, কিন্তু সেই অসার কলনা পরিত্যাগ করিমা, সত্যমাত্র বাছিয়া লইতে
চেন্তা কর, সত্যের জীবনীশক্তি বিলুপ্ত হইবে'। যনগাজোর সহিত অরণ্য মধ্যে
সাবিত্রীর কথোপক্ষন কবিকলনা বোধ হইতে পাবে, কিন্তু সাবিত্রীজীবনের
সেই ঘটনা অবিশ্বান্ত ও অসত্য বিবেচনা কর, সতীত্ধের্মের অপ্রতিহতশক্তি,
সতীপ্রতিয়ার অপ্র জলম্ভ চিত্র তার দেখিতে পাইবে নাব্যান্ত্রির আবিভিনে বিল্পি
করিয়া ধরিত্রীর আবিভিনে বিল্পি হইবে পতিভক্তির অধিত্রির আর্মিন আর্মিনির্মির
চিরারাধ্য পবিত্র দেবীমূর্জি জন্মীহীন হইয়া গড়িবের্ম

িনারাধ্য পবিত্র দেবীমূর্জি জন্মীহীন হইয়া গড়িবের্ম

িনারাধ্য পবিত্র দেবীমূর্জি জন্মীহীন হইয়া গড়িবের্ম

িনারাধ্য পবিত্র দেবীমূর্জি জন্মীহীন হইয়া গড়িবের্ম

সাবিত্রীর প্রাহির বিল্পি হিয়া হার্মির প্রাহার্মির প্রাহার্মির প্রিত্রির দেবীমূর্জি জন্মীহীন হইয়া গড়িবের্ম

প্রীপ্রামক্কদেবের সেই উপদেশ শিরোধার্য কি এছা তাহার প্রিক্তিক্র প্রণামপূর্কক আমরা অদ্য সংসারবৈনাগ্যের প্রতি আলোচনা করিব।

শ্রীন্ত্রামক্ষণের তাঁহার অমৃত্যারী সরলবাঝ্যাংঘোজনার শুক্দেবকে 'নিদালি ধই,' বা 'প্রাত্তে ভোলা মাথমে'র সহিত তুলনা করিতেন। যথন ধই কৃটিতে থাকে, তথন যে গুলি ছিটবাইয়া বাহিরে পড়ে, তাহাদের গায়ে দার লাগে না। ধাহারা বাল্যকাল হইতে ব্রহ্মচর্যা অবলম্বন করিয়া মাধ্নভজ্জন করেন, তাঁহাদের মন শ্বভাবতঃই নির্মাল থাকে, সংসারের ময়লা স্পর্ল করিতে পারে না। বেলাতে মাথম তুলিলে ভাল মাথম উঠে না, অধিক বয়সের সাধরে স্মধ্ব পবিত্র জীবন হয় না। আমরা গুক্দেবের জীবন অনেক প্রাণাদিকে দেখিতে পাই, কিন্তু 'নিদালি থই' বা 'প্রাতে তোলা মাথমে'র তুলা সেই জীবন মহাভারতে যেক্সে প্রতিফলিত হইয়াছে, সেরপ আর কোথাও পাই না। মহাঃ

অব্বত্র ক্রান। পূর্বপের সমন্ধ ও সরল ; অভাত প্রাণে মহাভারতের অনেক শৌক গ্ৰতি হইলা ও তুই এ ফটা অসম্বন্ধ ঘটনা এখিত করিয়া ওকটাৰ চ विविध इंग्रीट्या थ कानव प्रांचका महाहाद्वरद्व स्मिलिक वर्षमा अग्रमद्रव করিয়া প্রিত্র ওক-চরিত অনুশীননে প্রবৃত্ত হুইব।

লোন সংখ্য সভবি বেৰুৱাল দিখ্যালম্বীৰ মন্ত্ৰীতৰ ৰষ্টিভ প্ৰাচ্ছে পৰ্বতে প্রবাভেত্যর কটোর ৩০অ। করিয়াছেলেন। ধ্রতে তিনি পৃথাী, জল, অগ্নি, বামু ও আদাশ সদৃশ ধৈৰ্ম, শালা পুত্ৰ লাভ ক্রিতে পারেন, এই অভি-লাষে মরভাভারী হইছা একশত বংসর দেবসিদ্ধগর্কপিরালোকপালগণ-দেখিত দেৱদের উমাপতি মহাদেবের আরাধনা করেন। সেই আমরণ-চেষ্ট যোগগুল তেজস্বান দৈবাগনের তেজেঘোরা ভ্টামপ্তল বহিনিথাসদৃশ প্রজ্ঞতিত দৃষ্ট হইবাছিল। ভালার ভক্তি ও তপ্তার প্রদন্ত হইয়া কুসুমম্মী মনোহারিণী মালার ভূষিতাক নংক্ষর আবিভূতি হুল্রা কহিলেন—"হে বৈপায়ন, অগ্নি, বায়ু, আকাশ যেনন স্বতঃ ওদ্ধ, তে মার স্থমহান্ পুত্র মেইরূপ ওদ্ধ হইবে। ভোমার পুল ব্রন্ধভাবভাবী, ব্রন্ধলিং র্বাপি গ্রিভ হইবে, ব্রন্ধকে আশ্রের বরিয়া থাকিবে এবং নিজ তেজে দারা ত্রিনোক আবরণ কবিবে।"

স্তাবতীনক্ষন দেবদেবের সেই বর পাইলা অভিশ্র আন্কিত হইলেন। **একদিন হোমার্থ অগ**্রাংপাদনের অভিলাবা হইয়া অরণীযুগ**ল গ্রহণ পূর্বক** মহন ব্রিতেহেন এমন সময়ে ঘতাটানালী জ্যাকা অপারী তাঁহার নয়ন পথে প্রিতা হইল। মহানুনি বেদ্যাণ বৈধ্যসহক।রে স্বীয় মনকে নিয়মিত করিতে প্রথান পাইতে লাগিলেন। অগ্নংপাদনার্থ মলোনিধেনপূর্বক হৃদয়ত্বরের সংবরণ ব্রিতে উন্নত ≥ইবে, অংণামধ্যে তাঁহার তেলের অংশ প্রবিষ্ঠ হুইল। অপরী মুভাটী বেদবা।মকে তদবস্থ অবশোধন ক্রিয়া ভীতচিত্তে গুকপক্ষিণী ক্সপ ধা<ণ করিয়া তথা ২ইতে প্রস্থান করিলেন। এন্দ্রিব্যাস অবিশক্ষিত চিত্তে পূর্ববং অংশীমণন করিতে লাগিণেন। হক্তকাইসমুংপরপ্রজ্বলিত হতাশ-নের স্থ্যার সেই অরণীনণ্য হইতে ওকদেব অকীয় তেজে আবিভূতি হইলেন। তাঁহার জনাসময়ে অন্থানীক হইতে দও ও কুফাজিন পতিত হইমাছিল, স্বয়ং গলাদেবী অবিভূতি৷ ইইল জাত বালকের শরীরাভ্যন্তর দৌও ও পরিস্কৃত করিমাছিলেন। পুত্রের জন্ম সময়ে ব্যাস শুকরূপ অপ্ররী দর্শন করিমাছিলেন শ্লিরা পুত্রের নাম ভক রাখিলেন। মহাদেব সেই মুনিপুত্রের উপনয়নসংস্কার निर्साह करत्रन, धरंश रापवताक देख कमधन ७ रापतिन छातान करत्रन। बाराबिन

সস্তব নিশালদেহ দৈবশকিপরিচালিত ভ≠দেব সেই ভানেই ব্রভচারী ও সম;-হিত হইয়া বৃষ্ঠি করিতে লাগিলেন। খান্তর দেবগুরু বুহস্পতিকে উপাধ্যার ক্লপে বরণ্ করিষা নিখিল বেদ ও ইতিহাসাদি অধ্যয়নপূর্ব্বক গুরুদক্ষিণাপ্রদানান্তর গুরুকুল হইতে প্রিনির্ভ হইলেন। এক্ষদর্শী ওকদেবের মতি কোনরপেই গাহ হামুলক অলোডায়ে অনুরক্ত হয় লাই। নেকট উহির এবমাত্র আরা নীয় বস্তু ছিল। এখন একচর্য। আত্রা করিয়া মোলপথের পনিক হই-বেন্, কি গাৰ্হত্য জীবন অবশস্থন ক্ষরিয়া প্রাক্ষণোচিত নিতালৈ হৈতিকাদি কর্মো বুর্মাপুত থাকিবেন, এই চিন্তা তাধার মনোমদে। উদিত হইল। শান্তি-অভিনাধী कुकराव शिलांत निकृष्ठे साक्ष्यमं अधायत अबु व इरेन्ना त्यांग ७ कि नत्थाक শাসুশিক্ষার অফুবক্ত হটলেন। ত্রগার্যি ধেদব্যাস তাঁহাকে তক্ষ্মীন্ত জান করিয়া কহিলেন--"তুমি নিখিলাধিপতি আনার বহুনান রাজ্যি ভনকের নিকট পুমন কর, তিনিই ভোমাকে নিখিল মোক্ষণান্তার্থ কহিবেন।" [এই মিথিলাধ-পতি রাজবিজনক কে ? ভারতের পৌরাধিক হতিহাসে আমরা জনক নামে অনেক রাজ্যি দেখিতে পাই। ত্রেভাগ্রেগ যেজনক ধল্লভাল্পণ বরিয়া সীতাদেখী শ্রীরামচন্দ্রকে প্রদান কবেন এবং দ্বাপাল্লের শেষভাগে গুরুবপে ভগগান শুকাদেব-কে ভ্রহ্মন্তান উপদেশ বরেন, এ উভর বশনই এক ব্যক্তি নহেন। এই মিলিলা রাজবংশে অনেকানেক নরপতি রাজবি হনক নাম অভিহিত হুইয়া-ছেন, ইহা পুথাৰ পাঠে অবগত হওয়া যালা ই হালা মবলেই ছীব্দা জ ও বিদেহ জনক বলিয়া কথিত হুইং। ছন। জান ও বিজ্ঞান্য জন ও জীবলুকের দুটাতহল রূপে "ভনকাদ্য়ে" ভারতীয় নান্দ্রান উলিখিত ष्टेगाष्ट्रन । अथन (विषयाम निद्विभाञ्च ४ हेगा ८३ अन्न छ। त्वद छेशाप्त व নিমিত্ত একজন প্রতিষ্কের নিকট নিজপুত্রকে প্রেরণ করিলেন কেন্ ৪ তাল্পা-গণর শাস্ত্রেক্তা, আচার্য্য ও উপদেষ্টা। ত্রাহ্মণ উপদেটা পরিত্যাগ করেয়া ভক্দের কঠিন ব্রহ্মজ্ঞানের উপদেশের নিমিত ক্ষ্রিয়ের আশ্রা কেন এছণ করি-বেন १ এ ছলে স্বামী বিবেকানন্দ শাস্ত্রাদি পর্যালোচনা করিয়া এই মত প্রকাশ ক্রিয়াছেন যে বৈদিক সময় হইতেই প্রবৃত্তি ও নিসৃত্তি মার্গাবলধী হুই বিজোধী দল কলতে প্রব্রত দেখিতে পাওয়া যায়। যাগধজাদিবৈধিকক শর্মণর ব্রাহ্মণরা কভিপর ক্ষত্রির রাজন্তুগণ সাহায্যে আপনাদিগের প্রভুত্ব ও স্বার্ণরিশ্বণে দুচুত্রত ॥ অপরদিকে জ্ঞানমার্গাবলখী ও উপনিবদ্-নিঠ অধিকাংশ রাজভাবর্গ কর্মকাণ্ডের ষ্মারতা 🏿 জ্ঞানের যোক্ষণভূত প্রতিশাদনার্থ বন্ধপ্রিকর। উপনিষ্থ প.ঠে

অবগত হওগা যাব যে, অবিতনয় ক্ষত্তিরের নিকট ব্রহ্মজ্ঞানাভিলাষী হইয়া দণ্ডারমান এবং প্রাণে একবাক্যে বর্ণিত ২ইভেছে, ব্রহ্মজ্ঞানের নিমিত্ত স্পৃথিধি ব্রের্যাসপুত্র ভগবান শুক্দের রাচ্ধি জনবের ধারস্থ।

তিই কলেকটা কথা অবল বানিও — ১। গমনকালে নিজ দেবপ্রভ¹ প্রদর্শন করিও না এবা অ্বালেনা হইও না, নিজ সরলভাবে গনন করিও, কার 'ণ শক্তি-প্রদানিভিন্ম ও অ্বালেমন মোক পথের কটক। ২। নিশ্ম অনু: ইনিং ইইও না, ভাল্ ইইলে নিম্যে আসক্ত ইইবে"। সিকল যোগশাল্লে অলৌটিক শক্তি প্রদর্শন নোকপথের কটক বলিয়া লিখিত আছে। যিনি এই শঙ্টিশ্বাভেই সম্ভই থাকেন, তিনি মোকপথ ইইতে ভাই হন। পরসহংসদেব শক্তি-প্রদর্শন অত্যন্ত মুলা করিছেন; অনন্ত শক্তি তাহাব ভিতর, কিন্তু তিনি ইহা চিন্ন-পোনন করিনা গিবাছেন। তুলাফালিত বহি নিকটন্থ কোন কোন ভাল্যবান্কে চকিতের জার নিজ স্বরূপ জানাইরাছেন, কিন্তু গরক্ষণেই আবার মোহাছের করিলা নিয়াছেন। তিনি বলিতেন, হাতি মরিল আর হাতি বাঁচিল, তোর কি পু সাধারণ মহেয় এই অন্যোক্তিক শক্তি দুর্শনেই আরুই হয়। একজন কোন অলোকিক শক্তি নিজ আয়ন্ত করিয়া লোক মুল্ল করিছে পারেন, কিন্তু আধ্যাত্মিক বিষয়ে তিনি শক্তিনিস মান্ত নহায় অলোকাও কুপ্লীন। । ৩। "রাজর্থির নিকট নিজ মহরের নিমিত অহ্নার কণ্ডি না। ভাহার ন্নীভূত হইবে; তাহা হইলে নেই মোক্তশান্তিনশারেন তোহার সকল সংগ্র অপনোচন করিবেন।"

ভকদেব অন্তর্গীক পথে গমন করিতে সমর্থ হুইলেও পদব্রজে গমন করিতে লাগিলেন। সম্প্রিশালী নগর, রম্বীয় উত্তান, বিচিত্ররজরাজি ভুচ্ছ করিয়া দেখিয়াও দাদিলেন। করিতে দাদিলেন। করিতে আরোর সহিত দাদিলেন। করে প্রেল্ডির আরোর সার্লির দারদেশে দার্থাল কর্ত্ক বিদিত হুইলা রাজপ্রে প্রেশি পূর্কর জন্ম নাজ্ঞানিকেতনে উপস্থিত হুইলেন। রাজপ্রাসাদ প্রেশে লাক্ত্র প্রেশি পূর্কর জন্ম নাজনিকেতনে উপস্থিত হুইলেন। রাজপ্রাসাদ প্রেশে লাক্ত্র প্রেশি গ্রেশি করিব। আত্রাস্থাও, প্রশ্রাত, কুনা ও পিলানাক্রিই ব্যাস্থাভ নিজ্ঞাধ হুইয়া আত্রপতাবে দণ্ডার্নান রহিলেন। কিছুক্ত্ব অতীত হুইলে রূপানিই জনৈক দারপাল ভারাত্রপে সম্ভান ভ্রদ্রের প্রথম প্রকোঠে প্রবেশ করাইয়া দিল। ছায়াত্রপে সম্ভান ভ্রদ্রের প্রথম প্রকোঠে প্রেশে করাইয়া দিল।

রহিলেন। মুহূর্ত্ত পরে রাজমন্ত্রী কুভাঞ্জলিপুটে আগমন পূর্বক তাঁহাকে রাজভব-নের দ্বিতীয় প্রকোষ্ঠে লইয়া গেলেন। তথায় রমণীয়জলাশয়দমন্বিত, পুল্পিত-পাদপশোভিত স্থবিত্তীর্ণ প্রমোদননে প্রবেশ করাইয়া আসনপ্রদানার্থ রমণী-গণের প্রতি আদেশপূর্দকে তথা হইতে নিজ্ঞান্ত হইলেন। দেই রমণীগণ मकरनरे घठाकरवना, शिव्रप्तर्भना, रुचावकाववधाविनी, कांक्रनज्यना, आनाभ-কুশলা, নৃতাগীতনিপুণা, স্মিতপূর্বভাষিণী, অপারাষ্ট্রশন্পশালিনী ও ভাবজা। প্রাশং দংখ্যক তরুণী বারনারী ভকদেবকে পাতার্থ প্রদানপ্রক পূজা করিয়া স্থাত্ন আইদান দারা তাঁহার তুপি সাধন কবিয়া পরে সেই রমণীয় প্রমোদবন হাছ ক্রীড়াও গান করতঃ দর্শন করাইতে লাগিল। ৩ কবু দ্বি সন্দেহশূর যতে ক্রিয় ভকদেব তাছাতে জ্টু বা কুপিত হইলেন না। রাত্রি উপস্থিত হইলে সেই বার-যোষিতাগণ তাঁহাকে দেবযোগ্য রত্নভূষিত দিব্যশ্যা ও আসন গুলান করিল। তিনি মোক্ষবিষয় চিদ্রা করিতে করিতে ধ্যানমগ্র হইলেন। ধৈর্য্য হইতে অবিচ্যুত ভকদেব এইকপে দিন্যামিনী যাপন করিতে লাগিলেন।

অনন্তর নৃপতি জনক, পুরোহিত মন্ত্রী ও অন্তঃপুরবাদীজনগণপুরঃদর खक्पूरल्य निक्ट छ। नी ठ इरेश छ। दाराह यथाविह्छ पूछा कविरनन। শুকদেব কহিলেন, "মহারাজ আপুনার মঙ্গল হউক : পিতা আমাকে কহিয়াছেন. 'জনক নামে বিখ্যাত বিদেহরাজ আমার যজমান ; তিনি মোক্ষধর্মবিদ্যে অভিজ্ঞ। যদি তোমার অন্তঃকরণে মোলধর্মবিষয়ে কোন সংশয় থাকে, তাঁহার নিকট গমন কর। তিনি প্রবৃত্তি ও নিবৃত্তি বিষয়ে তোমাব সকল সংশয় ছেলন ত্রিবেন।' আমি আপনার নিকট এই কথা জিজাদা করিতে আদিয়াছি-ইহলোকে ভ্রাক্ষণের কর্ত্তন্য কি এবং কি প্রকারে ভাষা প্রাপ্ত হওরা যায়।" জনক বণিলেন "ব্রাহ্মণ উপনয়নের পর বেদপ্রায়ণ হইবেন, তপ্ভা গুরু-শুশ্রা ও বেলাচ্য্য দারা অস্মাশ্স হট্যা গৃহে প্রভ্যাগমন পূর্বক গাইস্তাধর্ম অবশ্বনপূর্ব্যক স্থদারনিরত হইয়া বাস করিবেন। পরে পুত্র পৌত্র উৎ-পাদনাস্তর পূর্বহুত অগ্রির অর্চনা করিয়া অতিথিপ্রির হইয়া বনমধ্যে আশ্রমে বসতি করিবেন: পরে অরণ্যমধ্যে আত্মাকে অগ্নিসরপ করিয়া সুখত:খ-বির্হিত এবং বিরক্তচিত হইয়া সন্নাসাশ্রমে অবস্থিতি করিবেন।" শুক্রেব কহিলেন, "সুধত্বংথবিহীন অন্তঃকরণে যদি জ্ঞান ও বিজ্ঞান উৎপন্ন হয়, তবে কি গাইস্থাপ্রতি আশ্রমতায়ে অবশুই যাস করিতে হইবে ?'' জনক বলিলেন "জ্ঞান ও বিজ্ঞান বংতিরেকে মোকলাভ হয় না; গুরু উপদেশ ব্যতিরেকে জ্ঞান-

লাভ হয় না ৷ সংসারে বছবার জন্মপরিগ্রহপূর্বকে শোধিত বৃদ্ধি ধারা চিত্তগুদ্ধি नास करितन, श्रांभ कासारमधे स्माकनान हहरत भारत। उ.कार्या-कासामधे যাঁহোর চিত্ত জি হয়, তাঁহার অসপর আশ্রনত্তে প্রয়েজন কি? রাজ্য ও তান্য দেষে মকলকে নিয়তই পরিতাপি করিবে। সান্তিকপুথ আশ্রাপুর্রত অপুপ্রি আপনাকে আনলোকন করিবে। দর্মভূতে আয়াকে এবং আয়াতে দর্মভূত দর্শন বরতঃ জল মধো হংসাদির ভারে নিলিপ্ত থাকিবে। অভ বাজি হাঁহা হইতে ভীত নহেন এবং যিনি অক্ত হইতে ভীত নহেন, বাঁহার ইচ্ছা হেব নাই, তিনিই ব্ৰহ্মভাব লাভ কৰেন। যিনি কৰ্ম্ম বাক্য ও মনের হার। গীবের প্রতি পাপ মভি-আবাৰ নাকরেন, তিনিই ব্হন্নভাব লাভ কবেন। হে মহাখন, তোমাতে এই সমুদয় ভার অবলোকন করিতেছি। ভূমি বিবলাভিলার পরিভাগে করিলাছ। আমার অপেকা তোমার সমধিক বিজ্ঞান, উৎকৃষ্ট গতি ও পর্য ঐথ্যা হট্রাছে। তোমার বিজ্ঞান উং°ল হটলেও বালচভাব, সংশয় ও অবি-মোক জক্ত ভরবশতঃ দে গতি অবগত হইতে সমর্থ হও নাই। মাদুশ ব্যক্তি কর্তৃক সংশয়চেছদ হইলে, ভুলি বিশুদ্ধ ব্যবহাৰ হার৷ হ্রনয়প্রন্থি মোচনপূর্ণক পরমগতি প্রাপ্ত হুইবে। ব্রাহ্মণ, ডোনার বিজ্ঞান জন্মিনাছে, বৃদ্ধি স্থির হইছাছে, বিষয় বাসন। পরিত্যাগ ক্রিয়াছ। কিন্তু ব্যব্ধায় ব্যতিবেকে মেই প্ৰমপদ প্ৰাপ্ত হইবে না। তুখ তঃখে ভোমাৰ বিশেষ নাই, বু'দ্ধ বিষয়শোলুপ নতে, নৃত্যুগীতাদি দর্শন প্রবংশ ওংস্ক্র ও অনুরাগ নতে। বন্ধাণের প্রাত অব্যাহ্ম নাই। ভারজনক বিষয়ে ভার নাই। পাষাণ কাঞ্চনে সমদশী হট্যাছ। ইহলোকে ব্রাহ্মণের যাহা প্রথোজন এবং মোকস্বর্প, ভাগতেই ভূমি বিভামান র্হিয়াছ।" বিশুরবৃদ্ধি শুকদেব জনকের এই কথা প্রবণপুর্বক আয়নিশ্চয় कतिया भाष्ठ । अत्रोतावनश्ची इहेशा विवर्तनावत छेएएटम अप्यान कतियान। পিতার রুম্ণীয় আশ্রাম উপনীত হইয়া প্রাত্তিতে জনকরাজের সহিত ক্থোপক্থন পিতৃস্মীপে নিবেদন ক্রিলেন। সেই স্থানে অক্সাক্ত শিবাবেটিত পিতা বৈপায়নের নিক্ট বেদ, ইতিহাস ও প্রাণাদি শাস্ত্রাফুশীলনে ব্যাপ্ত হইয়। কালাভিপাত করিতে লাগিলেন। অনশ্বর বেদব্যাস অপরাপর শিষ্য সকলকে বেদপ্রচ'রার্থ আক্রা দিয়া আকাশগলায় অবগাহনার্থ প্রস্থান করিলেন।

ইত্যবসত্ত্র দেশর্থি নারদ সিদ্ধচারণসেথিত হিমাণত্তে উপনীত হইয়া সেই পবিত্র ব্যাস্প্রেরে গ্রনপূর্বক শুক্লেবের সহিত সাক্ষাৎ করিলেন। শুক্লেব দেবর্বি নারদকে যথোপযুক্ত পূঞা করিয়া জিঞাসা করিবেন, "ইহলোকে হিডকর কি"?

নার্দ বলিলেন, "বিত্যার সমান চকুনাই। সভ্যের তুল্য ত তপ্তা নাই। রাগের স্কৃশ ছঃধ নাই, ভ্যানের তুনা হ্রখ নাই। পাপকর্ম হইতে সভত निदृष्टिहे शूराभीताचा । त्य मञ्चालम लाज कतिका दियतागुक हम, तम मुक्ष ; त्य মুগ্ধ, সে ইহলোকে 🖪 পরলোকে হঃখভাগী হয়। বিষয়সঙ্গ হঃখমোচনে সমর্থ নহে, ভাগা ছ:থে ই লখণ। যিনি কল্যাণ কামনা করেন, তিনি দর্বপ্রথ দ্ব কাম ও ক্রোধের নিগ্রন্থ করিবেন। অনুশংশভাবিহ প্রমবর্গ্ম, ক্ষমা প্রমবল, আত্ম-জ্ঞান প্রম্ফান। স্ত্যু অপেকা শ্রেষ্ঠ আরে কিছুই নাই। বাহা ভূছগণের অন্তান্ত হিত্তকর, তাং।ই স্তাঃ বিনি নিজ ব্নীভূত হক্তির স্কল **বরে। ইক্তির** িষয় ভোগ করেন, যিনি দ্বাবিব্য়ে অসম, শান্তচিত্ত, নিবিক্ষর, ও স্নাটিছ হন, দেহাদির সহিত তণাফ্রারহিত ভাবে বর্ত্তমান থাকেন, তিনি অচিরধান মধ্যে পরম শ্রেমঃ প্রাপ্ত হন। এই সংদারে মৃত্যু, জরা ও ৫৯খ ছারা জীব নতত পী.ড়ত ১ইতেছে, আহত বিষয়ে হিডজ, অনি শিচত বস্ততে গ্ৰুপজ্ঞান, অনুৰ্থ বিষয়ে অথক হইরাছে। কোষ্বার কীটের ভার মান্ব আমাজ ভব্ত দারা বেটিত আপনাকে জানিতে পারে না। এই সংসার-পরিগ্রহে कি আয়োজন ? সরোবরের প্রাণ্বে নিম্ম বভাগজ যেমন বিশাণ হয়, তদ্বং স্ত্রী পুত্র কুটুম্পণে আন্ত জাব অবসর হইর। থাকে। বিশাল আলে থারা আকৃত মৎভ সকল স্থান উদ্ভ হইলে বেরূপ ছঃখিত হয়, সেহ জালে স্মারুট জীবগণ তচ্দ্রণ ছঃ।থত বিলোকন কর। কুটুর, পুত্র, পুত্রী, শরীর, সঞ্চিত্ত ধন, প্রলোকে পমন করিলে কিছুই থাকিবে না। স্থ কাম স্কুকত ও ছফুত কর্মনাত স্থায়ী হইবে। নমুদর পরিত্যাগ করিয়া অথশ হইয়া যখন ভোনাকে গ্রন করিতে হইবে, তথন पूर्वि दक्त अनः व आगक रहेश निक्ष व्यात्राक्त अनुष्ठीत वित्रज द्रविशक। বিশাধিবিহান, আগ্রনশুল, পাথেগবজ্জিত অলৈশিক অন্ধবাছ্র তুর্ম भार्त कृषि এकाको कि व्यकारद गमन कतिरव १ धर्म ও अधर्म शतिकान कत्र, সতাও অন্ত পরিহার কর, সত্যান্ত উভয় পরিহার করিয়া যদ্বারা ত্যাপ ষ্পরিতেছ, তাহাকেও ভাগি কর। সঙ্গলামত। হেতু ধর্ম পরিহার কর এবং অবিধানিবদ্ধন অধর্ম বর্জন কর, বৃদ্ধির ছার। সত্য 🔳 অনৃত পরিত্যাগ করু, এবং পরমার্থ-নিশ্চর-নিবন্ধন বৃদ্ধিকে পরিত্যাগ কর। অন্তিমাংস্শোণিত-কর্ম ও তুর্গক্ষমূত্রপুরীষপূর্ণ জরাশে।কসমাবিষ্ট রোগায়তন এই জানত্য ভূতাবাস শরীরের মমতা ভ্যাগ কর।

"বিষয় সমুদ্য অতীত ভইলে তাহাছের বে সমস্ত ওণ ছিল, ভাহা চিত্তা

কবিবে না। যে ব্যক্তি তাহাতে সমাদর করে, সে স্নেহ্বন্ধ হইতে বিমৃক্ত হয় না। যে বিবয়ে অনুরাগ জানিবে, তাহাতে দোষদর্শী হইবে। হুঃখের বিষয় চিস্তানা করাই হুঃখ বিনাশের মহোষধ; হুঃখ চিন্তা করিলে হুঃখ দূর হয় না, বরঞ্চ অতিশার বর্জিত হয়। প্রজ্ঞানারা মানস হুঃখ ও ঔষবদারা দৈহিক হুঃখ দূর করিবে; বিজ্ঞানের ইহাই সামর্থা। রূপ, যৌবন, জীবন, ধনস্ঞ্যা, আরোগ্যা, প্রিয়সহ্বাস, এই সমুদ্র অনিত্য, অত্এব পণ্ডিত বাক্তি তাহাতে আকাজ্ঞা করিবেন না। ইক্তিয়ের বিষয় সমুদ্র মোহবশতঃ স্নেহ প্রকাশই মরণ তুল্য অপ্রিয়।

"যে মানব হৃথ ছংখ উভন্নই পরিত্যাগ করেন, তিনি নির্বিশন্ধ হৃথস্থাপ বিশ্বান করে করিছে সমর্থ হন। পিপাসার অন্ত নাই; তৃষ্টিই পরম মুখ; অতএব পণ্ডিভেরা ইইলোকে সন্তোষকেই পরম ধন বলিয়া বিবেচনা করেন। সমনশীল বন্ধদ নিমেব মাত্র অবস্থান করে না; স্বকীয় শরীরই আনিত্য। অতএব
নিতা বিষয়ের অঞ্শীলন কর। মনুষ্য কামভোগে তৃপ্ত হইয়া বিষয় সঞ্চয় করিতে থাকিলে, ব্যাত্র বেমন মুগাদিকে লইয়া যায়, তক্রপ মৃত্যু তাঁহাকে গ্রহণ
পূর্বাক গমন করে। যাহাতে ছংখ বিমোচন হয়, তাহার উপায় অবলোকন
করে। আশোক হইয়া কায়ায়ন্ত কর। মনুষ্য মুক্ত হইলেই ছংখহান হয়।
বিনি আয়াতে অমুরক্ত হইয়া নিরপেক্ষ ও নির্লোভ ভাবে আসীন রহেন এবং
আয়াকে সহায় করিয়া বিচরণ করেন, তিনিই স্বখী হন।"

শংসিলেন। তিনি তাবিলেন, প্রদারাদি প্রতিপাগনে মহান্ কেপ, অতএব রেশ লাই, অথচ মহে রতি হয়, এমন নিত্য স্থান কি অংছে ? অনন্তর ধর্মের পরালরক শুক্ত কলে মুহু ইকাল আপনি আপনার উপায় নিশ্চয়ে প্রবৃত্ত হইয়া নিঃপ্রের সম্বন্ধনী প্রমগতি নির্পয় করিলেন, "আমি বে প্রকারে বোনিম্মর সারের প্রত্যাবৃত্ত না হই, সর্প্রোপনি-বিনিশ্বৃত্ত হইয়া কিরপে পেই পরম ধামে গমন করিব, বে স্থানে গমন করিবে প্রমায় প্রভাগ্রত হইতে না হয়। সর্প্রশার আত্মা পরিত্যাগ করিয়া আমি দেই প্রমভাব আক্ষেত্রক। করিতেছি, বে স্থানে আমার আত্মা শান্তি লাভ করিবে এবং আমি অক্ষর অব্যয় পার্যত ভাবে অব্যান করিছে সমর্থ ছইব। যোগ ব্যতিরেকে কেছ দেই চরম গতি প্রাপ্ত হততে পারে না। অভএব যোগাবল্যনকরতঃ এই কলেবর পরিহার পূর্বক বায়

বাস করিব। আমি সূর্য্যমণ্ডলে প্রবেশ করিব, সংশয় নাই। প্লুষিপ্রেয় সৃহিত ত্মরগণ আমার যোগবল অবলখন করন।"

অনস্তর শুকদের দেবর্ধি নারদের অনুজা লাভ করিয়া নহাতুত্ব ক্লফ-বৈপায়নকে অভিবাদন পূৰ্বাক আপনার অভিলয়িত বিষয় জিজ্ঞানা করিলেন। বাাসদের শুকের দেই কথা শুনিয়া প্রীত হইয়া বলিলেন, "হে পুত্র, ভূমি এক্ষণে ভাবংকাল অবস্থান কর, যাবং ভোমাকে দেখিয়া আমার নয়ন্ত্র প্রীত হয়। শুক্রেব নিরপেক নিঃলেহ ও মুক্তসংশ্র হইরা মোক্ষের বিষয় নিরত চিতা করিতে মনঃ সমাধান করিলেন। তিনি পিতাকে পরিত্যাগ পূর্মক সিদ্ধগুত্রনিদেবিত বিপুল কৈলাস শৈলের উপরিভাগে গ্রাম করিতে আগিলেন। শৈশশিখরে আরোহণ পূর্মক নিজন ভূগবিবজিত সমতল প্রদেশে উপ্রেশন করিবেন। তথার প্রফানজ্যাতশার বা উৎকটন্শন্যোশা বিষয় কিছুই ছিল ন।। তিনি তথন স্ব সঙ্গ হইতে বিনিঃগত আছোকে দশ্ন ক্রিয়া স্ক্সংশ্র-বিমুক্ত হইলেন। মোক্ষপথ প্রাপ্তির নিমিত্ত যোগাবক্তন করিয়া নারদকে সংখাধন কবিয়া কহিলেল, "হে তপোধন আমি পথ নিরীক্ষণ করিলাম; আপনরে স্বস্তি ২উক। আপনার প্রদানে আনি অভিক্ষিত স্থানে গুমুন করিব।" भःभारत निद्राशंक दोलकवर पिश्रातंभवाची छशवान लाग्यञ्च छकरानव हेश ক্রিয়া ইত্ততঃ আকাশনার্গে বিচরণ ক্রিতে লাগিলেন ৷ রম্বীয়-কুল্পমিত-ভক্ষকানন্দ্ৰন্তিমন্দাকিনীব্লিলাৰগাহিনী বিব্দুনা জ্বীড়ারতা উইংশী ■ অভান্ত অপারীগণ নিতাপ্ত উংকুলন্ত্রন ও সম্রাস্ত চিত্ত হইলা সহসা ভাঁহাকে আবাশ পথে গমন করিতে দেখিয়া নিরতিশার বিশ্বরাবিষ্ট হইল। ভাহারা বলিতে লাগিল, "এ কোনু দেবতা উংকৃষ্টগ িত অংলম্বনপূৰ্দাক নিম্পৃহ ও নিশ্চিত বিমুক্তের লাার এ স্থানে আগমন করিতেছেন। কি আশ্চমাণ বেদাভ্যামরত বাহ্মণের কি জ্ঞানসমাধান হইয়াছে 📍 ইনি পিতৃভক্ত দৃঢ়তপন্ধী ও পিতার প্রিয়তম পুত্র। ষ্টত এব দেই অনন্যচিত্ত পিতাকর্তৃক 🗇 প্রকারে বিসর্জ্যিত হইয়াছেন।'' পংৰ धर्षञ ७ कराव चश्वती किरशत वांका खदन शृक्ति ग्रकन विक, अखतीकगडन, শৈলবন, মহারলাগ্য মেদিনীতল, সরোধর ও সরিৎ সকল অবলোকন করিলেন। চ্ছুৰ্দিক হইতে দেহতালা স্বল্মান কুতাঞ্জিপুটে বৈপায়ন-তন্মকে দুৰ্শন করিতে লাগিলেন। তিনি তৎকালে দেই দেবতা দকলকে এই কথা বলিলেন বে, পিতা যদি শুক বলিয়া আংবান বরতঃ আমার অনুগ্রন বরেন, তবে আপ্নারা স্কলেই স্মাহিত থাকিয়া তাঁহাকে এত্যুত্র প্রদান করিবেন।

ভকদেবের বাক্য প্রবণ করিয়া দিক্দরিৎ শৈলনিচয় চতুর্দিক্ হইতে এই প্রভাৱর প্রদান করিল, 'হে বিপ্রধর! আপনি ঘাহা আজ্ঞা করিলেন, আমরা তাহা খীকার করিলান। মহর্ষি আপনার কথা জিভাসা করিলে আমরা সকলেই তাঁহাকে প্রভ্যান্তর প্রদান করিব।'

ব্রম্থি ৬ক সত্ত্রণ ছারা লিঙ্গদেহণ হাক্তম ও বাসনামর রজো গুল পরি-ভ্যাগ করতঃ সম্বুল্পকেও প্রিত্যাগ করিলেন। অন্তর প্রজ্ঞালত বিধুম পাবকের ছাম নিত্য নিও ণ লিক্বর্জিত পররক্ষে প্রতিষ্ঠিত হুইলেন। সেই মহাপুরুমের উপর্য সমরে অ্থতের হুড়াগ্যহুচক উরাপাত দিগ্রাহ ও ভূমিকপ্র প্রভৃতি হইতে শ্রেষ্টা সহস্রাত্ত প্রকাশিত হইলেন না। পাৎক এজ্ঞালত ब्राहरतम् सा । इ.स. मही ७ माध्य राजन कृत रहेन ।

পুল্লেহ্দ্দটিত ব্যাদ্দের ভবদেংকে ওক্রান্ত আনিয়া পুজের পশ্চাৎ অমুদরণ করতঃ উচৈচঃখারে হা পুত্র হা পুত্র যালিয়া জন্দন করিয়া উঠিলেন। ভথন স্কলিত, স্কভিন্প ও স্কলিয়া ওকদেব ভাৰৰ জন্মান্ত সম্ভ বস্ত হাতে হাপুর এই শক্ষ উচ্চারণ করতঃ প্রহাত্তর প্রদান করিলেন। অন্তর মলাকিনী তীরে যে সম্দর অংপারীগণ জাড়া করিতেছিল, ভাহারা সেই মুনিসভ্রতে অবলোকন করিয়া অভিশয় ভাত ও লাজিত হইল ৷ কেহ কেই তলমধ্যে বিলীন বহিল, কেই বা ওমলতাদির অন্তবালে লুকায়িত হুইল, কেই বা সত্তর ইইছা পরিধের বন্ত গ্রহণ বরিল। তদ্দর্শনে মহর্ষি নিজপুত্তার মুক্তা ও আপ্নার স্কুডা জানিয়া প্রীত ও শক্জিত হটলেন। ইতাবসরে দেৰগদ্ধবিপত্তিরত ভগবান শক্ষর তাঁথার শলুখে আবিভূতি হুইলা পুত্র-শোকসভপ্ত বৈপারন্তক মাস্তনাপূর্দ্ধক বলিবেন, "ভূমি পূর্নের জানাব নিকট আকাশাদি সদৃশ হদ্দসত্ত্বীধানান পুত্র প্রার্থন। করিয়াছিলে। তোনার তাদৃশ লকণ্যম্পন পুত্র জন্মগ্রহণ করিছা তপন্তা ছালা দ্যন্তিত হইরাছিল এবং आमात अवारम बक्क (३८८) में ब करी १ देव। रम्बगर्गत व कुल्यांचा नदमन्ति প্রাপ্ত হট রাছে। অভএব তুমি তাহার নিমিত্ত কেন অমুশোচন করিতেছ ? যাবংকাল পর্যান্ত পর্কাত সকল কর্ত্যান থাকিবে, যে পর্যান্ত সাগর সমুদ্র বিজ্ঞ মান থাকিকে, তাবংকাণ পুত্রের সহিত তোমার কীর্ত্তি প্রতিধ্বনিরূপে অক্ষয় ছইবে। বে মহামুনে ! ভূমি আমার প্রসাদে ইংলোকে শর্বভোভাবে অনুপারিনী শ্বপুত্ৰের সদৃশী ছায়া দেখিতে পাইবে।" মহামুনি দ্বিপায়ন ভগবান্ ক্তকর্ত্ব অসুনীত হইরা পুত্তের ছায়। দর্শন করত: পর্মহর্ষে প্রতীাবৃত্ত হইলেন।

যিনি ভক্তিপরায়ণ হইয়া এই মোক্ষ ধর্ম সমন্তিত পবিত্র ইতিহাস ধারণা করেন, তিনি পরম পদ লাভে সমর্থ হন।

ষ্বভুা।

(बी महक्रम ठक्त वर्जी, वि व ।)

কোণা যাও জভপদে পথিক প্রবীণ, ছিন্নকন্তু, জঠর জ্ঞালায় তমু ক্ষীণ ?

বুঝি অর্থ অৱেষণে, চলিয়াছ কুল মনে,

যাও,—যাও, – সন্মুথেতে গভীর গহন 🔒

মৃত্য অই সমুধে ভীষণ!

কুবেরের প্রতিনিধি কে ভূমি রাজন্, আসমুদ্র ফিভিতল করিছ শাসন ?

ধনবল, জনবল,

মরকাত হর্মাত্র,

পেয়ে সুণে আছে বুঝি 💡 কর কি স্মাবণ —

মৃত্যু অই সন্মুখে ভীষণ 🕊

ছঙ্কারি চলিছ রণে কেও বীরবর, পদভরে ধরভিল কাঁপে থর থর।

ভীম অসি প্রহরণে, ব্রিছ অরাতিগণে,

া বাধানে জনন

দিনিজয়ী বলি ভোষা বাধানে ভূবন;

মৃত্যু অই সম্পুথে ভীষণ!

নাব-জাত শিশু তুমি প্রভাতের তারা, আনস্ত হথের উৎস,—মূথে হাসিভরা,

নাহি কণটভা ভাূন, পুণালোকে জােভিমান, নিবিবে খাঁধারে ওই মুবর্ণ বরণ,—

মৃত্যু অই সমূথে ভীষণ।

কক আশা ধুবা তুমি সন্মুখে তোমার, বহু শ্রম বিজ্ঞালাভে, ফুল পরিবার,

কত্ত্বর্ণ ক্ত মান, লভিতে ভোমার প্রাণ,

উংগাও উতলা; লমে কর কি স্বরণ—— মৃত্যু সাই স্মাুপে ভীষণ 🏴

রূপ-গৌরবিণী তুমি স্থবোমল-কায়া, কটাকে জগৎ মুগ্ধ—মূর্ত্তিমতী মালা;

ভালবিগ অলকায়, টিন্দ্রিমা স্তিমিত প্রায়,

জভদে বিগোল তব আব্রন্ধ ভূবন ;—

মৃত্যু অই সমুখে ভীষণ !

স্থিনবুদ্ধি বৈজ্ঞানিক তুমি অভিমানী. প্ৰস্তুত ক্ৰীড়নক,—হেন অনুমানি; বায়ু বহ্নি ব্যোম জলে, স্বাগ্ৰা ভূমণ্ডলে, প্ৰকৃতি নিয়ম লজ্মি গড়িছ নৃত্ন।

মৃত্য অই সম্মুখে ভীষণ!

নিংমানো দার্শনিক তর্কচ্জামনি,
 বাফ্মিতায়, প্রতিভায় স্কস্তিতা ধরণী।
 প্রার গভীর দৃষ্টি,
 তন্ন তর করি স্ষ্টি,
 উদ্ভাবিলে কত তর জগদ'নোলন।

মৃত্যু অই সম্মেখ ভীষণ ।

প্রেমিক স্কেবি কেচে উধাও পরাণ, প্রকৃতির উরে বিদি তুলিছ স্থতান, স্কুর্দিক নবর্মে, প্রকৃতির ভাবাবেশে, নানা রঙ্গ ভঙ্গে কব বিশি বিলোড়ন,— মুন্যু জই দুর্গে জীধাণ "

কে এ কঠোর-কবিনি, মানি ভ্যাণীধন, ভূচ্চ মৃক্তি, লক্ষ জন্ম, কারুণ্য-কাতর, দ্বিতে নরের দুখ, কর্মভ্যাগ-প্রায়ুখ ৭ মৃত্যুঞ্জয় তুমি ? সমুধ্যতে, হে কণ্ট,*—

মৃত্যু অই সন্মুথে ভীৰণ ্

হে বীট, পতস্প, বুক্ষ, স্থাবৰ, জন্ম,
চন্দ্ৰ, সূৰ্য্য, গ্ৰহ, তাৰা—কোথায় গমন ?
ভক্ষা আদি দেবগণ, কবিতেছ কি চিন্তন ?—
নেহার কালের আচে বিকট ব্যাদন।
মুক্তা কই সম্মুখে ভীষণ !

কে জাই ব্যাধে গুলু হিমাচল শিবে,
"জন্ম মৃত্যু ধীন আমি"—কংহ দন্তভার,
মুধে শান্তি সর্লতা, প্রিপূর্ণ অমিয়তা,
তেয়াগের প্রতিমৃঠি, নিভীক জ্বয়,

শান্তিরদে আঘ্রতত্মর।

অনেকে মুক্তি আমত না কলিং।, জনমুতা ভয় না করিয়া, মনে করেন ও বলেন,
"আমনা মহাভাগানী, আমনা ভগতের মজানের কাল লাক জনালাহন কৰিব; আমরা মুক্তি
ছুতে করি।" বে মহাপুরুষ মুক্তি প্রভাক্ষ করিয়াছেন ও ইচ্ছা করিলে মুক্ত হইছে পারেন,
কেবল ভাঁছারই এরপ বলা গাছে। অনাের পাক্ষে এরপ বলা হাঁগির কথা।

আর---না!

(:;

"वावा खोवन" व्यत्नक शिक्षारह्म, व्यत्नक खिनम्रेरहम, व्यत्नक एकविष्टकेख করিয়াছেন, অনেক সাধন-ভজন ও করিয়াছেন; কিন্তু কিছু সিদ্ধান্ত করিতে পারিতেছেন না। ঘোর অশান্তি; কিছুতেই বিখাস হয় না, কিছুই তাঁর ভাল লাগে না। কাহার ও সঙ্গে কথা কন না, সর্বদাই গভীর চিন্তাশাল। নিভা পর্যান্ত যান না; এমন কি খাওয়া দাওয়া পর্যান্তও, নাই বলিলেই হয়। অব্হা, তিনি যে অতান্ত সতাপ্রিয়, ভাহার স্ক্রে নাই। এমন তাঁর অবস্থা হইগাছে যে, আর তিনি কোনও শোনা-কথায় বিখাস করিতে. কোনও মতেই পারেন না। সভার জন্ম জীবন যথার্থই উংস্ক্ করিয়াছেন। সভা বিনা তার জীবন যায়-যায়। বলেন— একট গ্রন্থিও যদি কেহ খুলিয়া দেয় ত, আমার সব গ্রন্থি আপনা হইতেই খুলিয়া যায় ! আহা , দেখিলে খুবই হঃধ হইত বটে, কিন্তু কি করিব বলুন, বাহাজীবন কাহারও কথায় বিশ্বাস স্থাপন করিতে পারিতেছিলেন না -- এমন তাঁর অবস্থা (বা আবস্থা।) হইয়া-ছিল। পাঁচ জন সাধু শান্তের কথা, মান্তের কথা, দর্শনের কথা, এমন কি---সিদ্ধগুরুর কথাতে পর্যায়ও তাঁর মন প্রবোধ মানছিল না। তাঁহার অসাতির প্রধান কারণ - তিনি পুন জ্লে বিখাস করিতে পারিতেছিলেন না : দেহত্যাগের পর মন বা আত্মার অভিতর যে থাকে, তা বিশ্বাস করিতে পারিতেছিলেন না। मर्त्तनारे विनाटन- कीरवर भरवान (भूनर्कन-अवृति) यनि ना भाविन, আর ধর্ম কর্ম, সংসার বা সন্ন্যাসের, আবস্থাক কি 📍 বুণা জীবনের ভার বহন করার, বা অনিত্য দেহের হথ হু:খাদি ভোগ করায়, আর কোনও প্রয়োজন নাই; আত্মহত্যাই শ্রেন্ঃ।

নিজল এবং চেষ্টার অতীত বিবেচনার, আমরা অ'র কেই তাঁহাকে হড় একটা কিছু বলিভাম না। জানি— তিনি ষধন মথার্থ সভ্য-পিপাস্থ, দ্বীশ্বর তাঁহাকে রক্ষা করিবেনই; জান-চক্ষু তিনি ফুটাইরা দিবেনই। আলোক দেখাইবার তিনিই একমাত্র মালিক। বাবাজীবন, জীবন একেবারে উৎসর্গ করিয়া, নিজেই যংপ্রোনাস্তি চেষ্টা করিতেছিলেন কিসে তাঁর বিশাস হয়।

একদা তিনি শুনিলেন—কোথার রাম-রাজার দেশ (—না, কি বলে, তাই)
মাছে, সেধার নাকি বাঁদরে বড় অতিথি-দেবা করে; পথে থেকে অতিথি-

গণকে ডাকিয়া শইয়া ষাইয়া, নাকি নানা প্রকার ফল মূশ ছারা অতিথি-সংকার করে; পথ হারাইয়া গেলে, পথ দেখাইয়া দেয়; ইত্যাদি ইত্যাদি। বাবাজীবন অমনি দেই দেশে ছুটিলেন—"যদি নিদেন এটাও স্ত্যি হয়, তাহা হ'লেও অনেকটা শাস্ত্রাদির কথা মান্তে পারি"।

ममञ्ज पुरत्र किरत रमश्रमन-मरेक्व मिर्था।

তিনিলেন—চন্দ্রনাথে এক "সহস্রধারা" আছে, সেথানে নাকি "বোম্ বোম্" করিলেই জল পড়ে। সেথানে অমনি ছুটিলেন। সেথানেও দেখিলেন—"তৈথবচ"। শুনিলেন কোথান কিনি মেদ্মেরিজ্ম্'এর বারা ক্লেয়াঃ জয়েঃ জ ভূত নামান প্রভৃতি নানাপ্রকার আশ্চর্যা আশ্চর্যা ব্যাপার করাইতে পারেন। বাবাজীবন সেথানেও ছুটিলেন। নিজেই সেসমেরাইজ জ্ হইতে চাহিলেন। ভাকোর বারু অনেক চেষ্টা করিলেন, তাঁহাকে কোন মতেই করিতে পারিলেন না; শুধু তাঁকে নয়, তিন দিন ধরিয়া আর কাহাকেও ভালরপ মেসমেরাইজড্ করিতে পারিলেন না।—এই ত সব ব্যাপার!

ভার পর, ভৈরণী চক্র, পিশাচচক্র, প্লয়াঞেট চক্র, প্রভৃতি নানাপ্রকার রঙ্-বেরঙের চক্রাচক্রে ঘুরিলেন; কিছুতেই কিছু হইল না।

ত্বলৈষে, ঘটনাব্শতঃ হঠাং, তারকেঘরে এসে উপস্থিত। সেথানে বাঁহারা "হতো" দিয়ে পড়ে আছেন, তাঁহাদিগকে বিশেষ পর্যাবেক্ষণ করিতে লাগিলেন। একজন ভীষণ অমুশ্লের বোগী হপ্প পাইলেন—"অমুক স্থানে অমুকের বাটীতে অমুক—তোমার গত জনোর বাপ; তুমি তাঁর নিকট বিশেষ অপরাধী; যাও, তাঁর প্রসাদ খাওগে; তিনি তোমার উপর সম্ভই হইলেই, তুমি রোগমুক্ত হইবে"। বাবাজীবন এই সমস্ত শুনিয়াই ত আর কোথায় আছেন!—অমনি তাঁর সঙ্গ লইলেন। সঙ্গে দাইয়া নিজে চাকুষ দেখিলেন—তাঁর প্রসাদ খাইয়া তিনি বেশ সারিয়া যাইলেন। বাবাজীবন ঠাপা হইলেন। বিশাস ক্রিলেন—হাঁ৷ পুনজ্ল আছে; হাা ঠাকুর দেবতাও আছে বটে।

ব'লব কি নশাই। ছ'দিন ষেতে না ষেতে, বাবাজীবন আৰার সেই রকম শক্তীরত্ব প্রাপ্ত হ'লেন। বলেন, "ও—কিসে কি হ'ল—ভাল বোঝা গেল না। নিজের হ'ত ত বরং কিছু বুঝ্তে পারভূম''। (এত বে, তারকেখনে তাঁর বিখাস হয়েছিল, সব যেন বানের জলে ভেসে গেল!)

যাক; তার পর মাস কতক যায়, এমন সময়, বাবাজীবনের, হস্তে ও পায়ু-দেশে, ছ জাহগায় ছই ভয়ানক বিক্ষোটক হয়। কোনও ঔষধেই কিছু বাগ মানিতেছে না; জত্যন্ত কট পাইতেছেন। বাবাজীবন না পারেন থেতে, না পারেন শুতে, না পারেন চলিতে; ছর্দশার সীমা নাই! (বাবাজীবন এ ধারে লোক বড় ভাল ছিলেন; বড়ই সান্ধিক প্রকৃতি; ঠিক সাধুর মতনই ছিলেন)। তিনি এক দিন বঁড় ভাব্তে ভাব্তে হঠাং ঘুমিরে পড়ে'ছেন, এমন সময় স্থা পান - জমুক জেলার অমুক গ্রামে সিংহ্বাহিনীর 'মাড়োর'' (মিদেরের) একটু মাটী আনিয়া দাও ত দেরে যায়। বাবাজীবন বল্লেন, উঁ তা হচ্ছে না; চের ঠকেছি, আর ঠক্ছি না; এখানে যদি, ঠাকুর, এনে দাও ত হ'তে পারে। ঠাকুর বল্লেন — আচ্ছা, তা'ই হবে; কাল সকলে বেলা উঠে ভোর কাছেই পাবি। সকালে উঠে বাবাজীবন পভা্ই দেখেন পাশে কাগজে মোড়া একটু মাটী রিছয়াছে। কি করিবেন, যন্ত্রণার চোটে সেই মাটা, একটু একটু, হুঁ জায়গায় লাগাইয়া দিলেন। বিকাল বেলা দেখেন— আজেক কমিয়া গেছে। তার পরদিন প্রাতে, ফের আর একটু মাটি দিলেন। তৃতীয় দিবসে যন্ত্রণা আর কিছুই রহিল না। এইরূপ, গেণ দিনে একেবারে শুকাইয়া গেল। বাবাজীবনের হাব্যে আবার, বিখাসের সঞ্চার হাইল। সিংহ্বাহিনীর পূজাও কিছু পাঠাইয়া দিলেন।

কের, মাস ছুই যেতে না মেতে, মশাই ! আবার— ধে বাবাজীবন সে'ই বাবাজীবন। যে অশান্তি, সে'ই অশান্তি!! বলেন যে, ও—চাক্ত্ম কিছু না দেখ্লে বিশ্বাস রীতিমত হয় না।

"কি দেখতে চাও"

——"আমি আর কিছু বিশেষ দেখতে চাই না; কেন্দা বিদে একটা ভূত দেখতে প্ই ত, পুনর্জনোর উপরে একে বিখাদ হ'বে বায়"।

——"তা বোরো; আরও দিন কতক ঘুরে দিবে দেখ"।

যেখানে শোনেন হড় বড় ভৈরব, বড় বড় বজানৈতা, বড় বড় তৃত-প্রেতের জায়গা, দেইখানেই, শান-মঙ্গলবাৰ, আমানতা, প্রভৃতি যোগ দেখে, সমন্ত রাত্রি একা জেগে ব'দে থাবেন — কথন্ ভৃত-প্রেত আসবে, দেখবেন। (আশ্চগ্য,মশাই ৷ অনেকে অনেক দেখতে চায় বটে, কিন্তু আমাদের বাবাজীবনের মত দেখতে চা'বার জিনিব আর কখন কেউ শুনেছেন কি ? ভাই, না হর, দেবতাটা আস্টা দেখতে চাও বাপু; তা নয়; কিনা—ভৃত! বাবাঃ—যা দেখলে দাঁত-কপাটী যায়, যা দেখলে লোকে পালায়, যা দেখতে লোকে ঘুণা করে!)।

যাক; এইরান, তিন চার মাস ভীষণ ভীষণ স্থানে 'হেত্যে" দিয়ে বেড়া-বার পর, একদিন বাসায় এসে বাবাজীবন একা এক ঘরে শুইয়ে আছেন। চিন্তা করতে করতে ঘুমিয়ে পড়েছেন। এমন সময় স্বপ্ন দেখছেন:—এক প্রকাণ্ড ভালা বাড়িতে গেছেন। অত বড় বাড়িতে জন-প্রাণিও নাই; কেবল ধুলাে আর জঞ্জাল। বেলা তথন ১২টা। তিনি একা এ-ঘর সে ঘর ঘুরে ফিল্লে দেখছেন: কোথাও কিছুই পাছেনে না। এমন সময়, এক ভালা সিঁড়ির চাতালের নীচে, বুঝালেন, একটা যেন অন্ধকার ঘর আছে। কোনও রকম ক'রে সেই ঘরটার বাবার পথ আনিজার করিলেন। তারপর, মশাই। বেয়ে দেখেন দেখানে—ভয়ানক ব্যাপার!! ঘরের ভিতরে দেয়ালেব কোলে মন্ত একটা বেনী। ঘরটা খুব বড়। বেদার স্মুথে অনেক জার্গা ঘরের ভিতর প'ড়ে আছে। বেণীর উপর পা ঝালাইয়া একটা প্রীলাক ব'লে আছেন:

রঙ — খামবর্ণ; মারুষের মতনই ভাল চেহারা; মাথায় কাপড় নাই; আলু-লারিত ঘন কেশজালে পূর্গদেশ পূর্ণ; পরিধানে এক খানি কল্ডা পেড়ে সাড়ি; মত্তক, মুখম ওলা, হত্তবয়, ও চরণ যুগল ভিন্ন, সমুদ্র অক্সই বস্তে উত্তম আচ্ছো-দিত, (মাধার দিন্দুর, বা হত্তে গহনা প্রভৃতি ছিল কিনা-বাবাজীবন ভাল কৰিয়া দেখেন নাই); নয়নে বা জ যুগলে অথবা ওষ্ঠ প্ৰেদেশে কিছু মাত্ৰও ভয়ের কারণ ছিল না-মূর্তির সব্বএই ("অতিম্বন্দর" না হউক) মুন্দর বলিতে হইবে বৈ কি। পাঠক মহাশয়, মৃদ্ধিতে ত কিছুমাত্র ভয়ানক দেখি-লেন না, কিন্ত (বলিতে গা শিচবিয়া উঠিতেছে) কীতিতে — অতীব ভয়ানক! নুসিংহ মূর্ত্তির ভারে উক্লেশে একটা মালুষকে শোরাইয়া হুই হাত দিয়া তাগকে খাইতেছিলেন। মানুষ্টী ঈষং জীবস্ত, কিন্তু মন্ত্রমুদ্ধপ্রায়; নজিবার ক্ষমতা নাই। থাইতেছিলেনও যে কিছুমাত্র ভয়ানক রকমে (নৃসিংহের মত), তা নয়। মাত্রটী স্ত্রী কি পুরুষ, তা তত বাবাজীবন বুবাতে পাবেন নাই। পার্চেই আর একটী, নিচু ফিন্ত রুং: ধা; সেই ঘরের ভিতর একটু উঁকি মেরে দেশেন যে, কেৰল মৃতদেহ আৰু কলাল। মৃতদেহগুলির মধ্যে কেহ কেহ আর্ক্ডিকিত। ফিরিয়াই দেখেন—বেদীর উপর 'মা' আর নাই। কেথায় যে মা গেলেন, কেমন করিয়া গেলেন, কিছুই বুঝিতে পারিলেন না।

যা হ'ক, এধারে, বাণাজীবন আমার, নিতান্ত বালকের স্থায় ভরিয়া উঠি-লেন। নিজের কালার চোটে নিজেরই নিজ। ভাঞ্চিরা গেল। জাগরিত হইরা নিজেকে দেখিলেন—কিপুথাগ। কোন মতেই নিজেব মনকে প্রবোধ দিতে পারিতেছেন না৷ আলো জালিলেন; হাত মুথ ধুটলেন; মাথায়, বুকে ও পায়ে জল দিলেন ; কিছু:তই কিছু 'বাগ' মানিতেছে না। পাইথানার चांहेरनन ; এ জिनिय (मथ्, (म-जिनिय (मथ् क'रत, नानां श्रकांटर मनरक अरवाध দিতে চেষ্টা করিলেন, বিছুতেই শান্তি হইল না। মনে করিলেন— যাঃ, বুঝি স্বই গেল; এ'র চে'ও যে, বিছু সত্য না পেয়েছিলুম, সে ছিল ভাল; শেষকালে কেপে গেলুম গ । সভা অনুসন্ধান করিতে এসে কপালে শেষকালে, এই বটিল !! বুকের ভিতর মাথার ভিতর যেন স্ক্রণাই কি করতে লাগ্ল, অতায় যন্ত্রণাও ভর ভিতরে যেন অনবরত হইতে লাগ্ল, কিন্তু কি যন্ত্রণা বা কিনের ভন্ত কিছুই ব্'ঝতে পারি:তন না ; কেবলই থুব চাংকার ক'রে উঠতে ইচ্ছা হুইত। এইরূপ কিপ্তাও ভীত অবস্থায় তাঁর তিন চারি দিন অতিবাহিত হুইল। পরে এবটু প্রকৃতিত্ব হইয়া, বাবাজীবন বেশ বুঝিলেন—ভাগ্যেশ, ভয়ত্বর ভয়ত্বর ভূত দেখা দেন নি। এই একটা শাস্ত মেয়ে-ভূতের চেহারা, এক কণমাত্র- । मनदात क्य, त्मियारे এरे, ना कानि जात्मत्र निक मृद्धि त्मियत जामात्र कि হটত। খুব ওরুবল, তাই রকে। খুব বুঝেছি, হাড়ে হাড়ে বুঝেছি – ওরু যাব'লে গেছেন-সৰ সতা; শাস্ত্ৰ হা বল্ছেন-সৰ সত্যি; সাধুমহামাণণ যা বলেন-স্বস্চা; যে যা বলে, প্রায় সম্প্রই স্ত্যা। বাবাঃ-"আর না"! ८ हत्र ६'रयरह ; र्वे कृत घयन तुसार्यन, तुसर्या। या मात्र कृष्ण मिखरक "यात्र ना !''

ষাহাকে অভ্যন্ত স্থানিত কুসংস্থার বলি, আবার যাহা সর্ব্লোচ্চ দর্শন, সকল গুলিরই এই এক সাধারণ ভিত্তি যে, ভাহারা সকলেই ঐ এক প্রকার সন্ধট হইতে নিস্তারের পথ দেখাইয়া দের, এবং এই সকল ধর্ম্মের অবিকাংশগুলিতেই জনতের বহিঃস্থ কোন প্রক্ষের, যিলি নিজে প্রকৃতির নিয়মদারা বন্ধ নন, এক কথায় যিনি স্বয়ং মুক্ত, তাঁহার সাহায়ে এই মুক্তিলাভ করিতে হয়। এই মুক্ত পুরুষের স্বন্ধান স্থানের নানা গোলঘোগ ও মতভেদ সত্তেও, তিনি ব্রহ্ম, সপ্তণ বা নিগুণ, মানুষের আয় তিনি জ্ঞানসম্পন্ন কি না, তিনি পুরুষ স্ত্রী বা ক্লীব, এইরূপ অনস্ত বিচার সত্তেও, বিভিন্ন মতের অতি প্রবল বিরোধসত্তেও, আমরা উহাদের সকলগুলির মধ্যেই একডের স্বর্গ স্ত্র গিয়াছে দেখিতে পাই; স্কুত্রাং ঐ সকল বিভিন্নতা বা বিরোধ আমাদের ভীতি উৎপাদন করে না। আর এই বেদান্ত দর্শনে এই স্থান স্কুত্র হায়ছে, আমাদের দর্শনসমক্ষে একটু একটু করিছা প্রকাশিত হইয়াছে, আর ইহার প্রথম সোপান এই যে, আমরা সকলেই বিভিন্ন পথ দারা এই এক মুক্তির দিকে অগ্রসর হইতেছি; সকল ধর্মের এই সাধারণ ভাব।

আমাদের প্রথহঃথ, বিপদ্কট দকল অবস্থার মধ্যেই আমরা এই আশ্চর্ষ্ वार्गापात्र मिथि शाहे एवं, श्रामता धीरत धीरत मक्टलहें स्मेह मुक्तित मिटक অগ্রদর হইতেছি। প্রশ্ন হইল, এই জগং বাস্থবিক কি ৮ কোথা হইতে ইহার উংপত্তি, কোথাটুই বা ইহা যায় ? আর ইহার উত্তর প্রদত্ত হইল, মুক্তিতে ইহার উৎপত্তি, মৃক্তিতে বিশ্রাম, এবং অবশেধে মৃক্তিতে ইহার লয়। এই বে মুক্তির ভাব, আমরা যে বাস্তবিক মুক্ত, এই আশ্চর্যা ভাব ছাড়িয়া আমরা এক মুহূর্ত্ত চলিতে পারি না, এই ভাব বাতীত তোমার সকল কার্য্য, এমন কি, তোমার জীবন পর্যান্ত রুখা। প্রতি মুহুর্ত্তে প্রকৃতি আমানিগকে দাস বলিয়া প্রতিপর করিতেছেন, কিন্তু তাহার সঙ্গে স্থেই এই অপর ভাবও আমাদের মনে উদর হইতেছে যে, তথাপি আমি মুক্ত। প্রতি মুহুর্ত্তে যেন আমরা মান্না খারা আহত হইয়া বদ্ধ বলিয়া প্রতিপন্ন হইতেছি, কিছ দেই মুহুর্ত্তেই, দেই আবাতের সঙ্গে সঙ্গেই, আমরা বদ্ধ এই ভাবের সঙ্গে সঙ্গেই আর এক ভার আসিতেছে যে, আমরা মুক্ত। ভিতরে কিছু যেন আমাদিগকে বলিয়া দিতেছে যে, আমরা মুক্ত। কিন্তু এই মুক্তিকে প্রাণে প্রাণে উপলব্ধি করিতে, আমাদের মুক্ত শ্বভাবকে প্রকাশ করিতে যে সকল বাধা উপস্থিত হয়, তাহাও একরূপ অনতিক্রেমণীর। তথাপি ভিতরে, আমাদের অন্তরের অন্তন্তনে উহা যেন >६ई टेडव, २७०१।] छेरशासन । [8] 399 সকল বলিভেছে, আমি মুক্ত, আমি মুক্ত। আর যদি ভূমি জণভের বিভিন্ন ধর্ম সকল আলোচনা করিয়া দেখ, তবে ভূমি বুঝিবে, তাহাদের সকল গুলিভেই কোন না কোনরূপে এই ভাব প্রকাশিত হইয়াছে। শুধু ধর্ম নয়—ধর্ম শক্ষাণিক আগনার। অত্যন্ত সন্ধাণ লথে গ্রহণ করিবেন না, সমাজের সমূদর জীবনটা কেবল এই এক মুক্ত ভাবেব অভিবাক্তিমাত্র। সকল সামাজিক গতিই সেই এক মুক্তভাবের অভিবাক্তিমাত্র। যেন সকলেই, জাতুক বা না জামুক, সেই শ্বর শুনিমাছে—যে শ্বর বলিভেছে, "পরিশ্রান্ত ও ভারাক্রান্ত সকলে আমার নিকট আইল।" একরপ ভাষাব বা একরপ ভঙ্গীতে উহা প্রকাশিত না হইতে পারে, কিন্ত মুক্তির জন্ত আহ্বানকারী সেই বাণী কোন না কোনরূপে আম দের সহিত বর্তমান রহিয়াছে। আমান এখানে যে জ্মিয়াছি, ভাহাও ঐ বাণীর কাবণে, আমাদের প্রভাক গভিই উহার জন্ত। আমবা জানি বা না জানি, আমবা সকলেই মুক্তির দিকে চলিয়াছি, আমবা জ্ঞাত-সারে বা অজ্ঞাতসারে সেই বাণীর অনুসরণ করিভেছি। যেমন সেই মোহন বংশীবাদক বংশীধ্বনি লারা প্রামের বালকগণকে আক্র্যনণ করিছেছিলন, আমবাও তেমনি না জানিয়াই সেই মোহন বংশীব অনুসরণ করিভেছি।

আমরা নীতিপরায়ণ কেন ? না, আমাদিগকে অবশ্রাই সেই বাণীর অনুসরণ করিতে হয়। কেবল জীণাত্র। নহেন, কিন্তু সেই নিম্নতম জড়প্রমাণ্ হইতে উচতেম মানব প্র্যান্ত সকলেই সেই স্থর শুনিরাছেন, আর ঐ বরে পা ঢালিয়া দিবার জন্ম চলিয়াছেন। আব এই চেষ্টায় পরপোরে মিশ্রিত হইতেছে, এ উহাকে ঠেলিয়া দিতেছে — প্রতিদ্দিতা, আনন্দ, চেটা, স্থা, জীবন মৃত্যা সব আসিতেছে 🗈 আর এই বিশ্রকাণ্ড ঐ সাণীতে উপস্থিত হইবার জন্য উনাত চেষ্টার ফল বই আর কিছুই নয়। আমরা ইহাই করিয়া চলি: ছি। ইহ,ই ব্যক্ত প্রকৃতি। এই বাণী শুনিতে পাইলে কি হয় ? তথন আমাদের সন্মুখন্ত দুশু পরিবর্ত্তিত ছইতে থাকে। যথনই ভূমি ঐ স্বর জানিতে পার, বুঝিতে পার উহা কি. তথন তোমার সন্মুখন্থ সমুদ্য দৃশুই পরিবর্তিত হইয়া যায়। এই জনং, যাহা পুর্বে মায়ার বীভংস যুদ্ধক্ষেত্র ছিল, তাহা আর কিছুতে, অপেকারুত সৌন্দর্য্য-পূর্ণ স্থন্দরতর কিছুতে পরিণত হইয়া যায়। প্রকৃতিকে অভিসম্পাত করিবার তথন আর আমাদের কিছু প্রয়োজন থাকে না, জগং অতি বীভংস অথবা এ সমুদর্ভ রুণা, ইহা বলিবারও আমাদের প্রয়োজন থাকে না, আমাদের কাঁদিবার অথবা বিলাপ করিবারও কোন প্রয়োজন থাকে না। যথনই তুমি केटबाधम् । [०व--७ मश्था ; ٦96

ঐ স্বর জানিতে পার, তখনই ভূমি বুঝিতে পার, এই সকল চেষ্টা, এই সকল যুদ্ধ, প্রতিদ্বন্ধিতা, এই গোলনাল, এই নিষ্ঠুরতা এই সকল কুদ্র স্থাদির প্রয়োজন কি। তথন বুঝিতে পারা যায় যে, উহারা প্রকৃতিব খভাববশতই ঘটিয়া থাকে--আমরা জ্ঞাত্যারে ব। অজ্ঞাত্যারে সেই অরের দিকে অগ্রসর ছইভেছি বলিয়াই এই গুলি ঘটিয়া থাকে। অতএব সমুদর মানবজীবন, সমুদর প্রকৃতি কেবল সেই মুক্তভাব অভিবাক্ত করিতে ঠেষ্টা করিতেছে মাত্র, সূর্য্যপ্ত সেই দিকে চলিয়াছে, পৃথিবী ও ভজ্জা সূর্যোর চতুদ্দিকে ভ্রমণ করিভেছে, চন্দ্রভ তাই পৃথিনীর চতুর্দ্ধিকে ঘুরিয়া বেড়াইতেছে। সেই স্থানে উপস্থিত হইবার জন্য সকল গ্রহ ভ্রমণ করিতেছে এবং প্রমন্ত বহিতেছে। সেই মুক্তির **ছ**ত বছ ভীত্র নিনাদ করিতেছে, মৃত্যুও তাহারই জন্ম চতুর্দিকে ঘুরিয়া বেড়াইতেছে। मकल्लाहे (महे: नित्क य:हेदात जन्न (हेश क्त्रि: उद्या माधुः । सह नित्क চলিয়াছেন, তিনি না গিয়া থাকিতে পারেন না, তাঁহার পক্ষে উহা কিছ প্রশংসার কথা নহে। পাণীও তদ্রপ। খুব দানশীল ব্যক্তি সেই স্থর লক্ষ্য করিয়া সরপভাবে চলিয়াছেন, তিনি না গিয়া থাকিতে পারেন না; আবার ভয়ানক রূপণ বাক্তিও সেই দিকে লক্ষ্য করিয়া চলিয়াছেন। যিনি মহা সং-কর্মনীল, তিনিও সেই বানী ভনিয়াছেন, তিনি সেই সংকর্ম না করিয়া থাকিতে পারেন না। আবার ভয়ানক অলম ব্যক্তিও তজ্ঞপ। এক জনের অপর ব্যক্তি অপেকা অধিক পদস্থালন হইতে পারে, আরে যে বাক্তির খুব বেশী পদস্থালন হয়, ভাছাকে আমরা তুর্বলি বলি, আর বাহার পদস্থালন অল হয়, তাঁহাকে আমরা সংবাল। ভাল মল এই ছুইটী ছুইটী বিভিন্ন বস্তু নহে, উহারা একট জিনিষ; উহাদের মধ্যে ভেদ প্রকারগত নহে, পরিমাণ গত।

এক্ষণে দেখুন, যদি এই মুক্তভাবরূপ শক্তি ব'ত্তবিক সমুদয় জগতে কার্য্য করিতে থাকে, তবে আনাদের বিশেষ আলোচ্য বিষয় ধর্মে প্ররোগ করিলে দেখিতে পাই, সমুদয় ধর্মই ঐ একভাব দারাই নিঃমিত হইয়াছে। খুব নিয়তল ধ্যাঞ্জনির কথা ধরুন; সেই সকল ধর্মে হছত কোন মৃত পূর্ব্বপুরুষ অথবা ভয়ানক নিষ্ঠুর দেবগণ উপাসিত হন; এই দেবতা বা মৃত পূর্ব্বপুরুষের মোটামুটি ভাবটা কি? ভাবটা এই যে, ইহারা প্রকৃতি হইতে উয়ভ, এই মালা দারা বদ্ধ নন। অবশ্য তাহাদের প্রকৃতির ধারণা খুব সামাক্ত। তাহারা কেবল আকর্ষণ ও বিপ্রকর্ষণ শক্তি দয়ের সহিত পবিচিত। উপাসক—একজন অজ্ঞ রাজি, খুব স্থল ধারণা, তিনি গৃহের দেওয়াল অতিক্রম করিয়া যাইতে পারেন না, ১৫ই টেলে, ১৬০৭] উলোধম।

অথবা শৃংস্তা উড়িতে পাবেন না, স্তরাং তাঁহার সমস্ত ক্ষমতার ধারণা। এই চুকু বে, এই সকল বাধা অভিক্রেম করা বানা করা, স্তরাং তিনি যে দেবগণের উপাসনা করেন, তাঁহারা দেয়াল ভেদ করিয়া অথবা আকাশের মধ্যে দিয়া চলিয়া যাইতে পারেন, অথবা নিজরপ পরিবর্ত্তন করিতে পারেন। দার্শনিক ভাবে ইহার অর্থ কি ? অর্থ এই যে, এখানেও সেই মুক্তির ভাব রহিয়াছে, তাঁহার দেবতার ধারণা পরিজ্ঞাত প্রকৃতির ধারণা হইতে উন্নত। আবার বাহারা ভদপেকা উন্নত দেবতার উপাসক, তাঁহাদের সম্বন্ধেও সেই একই মুক্তির অপরবিধ ধারণা। যেমন প্রকৃতি সম্বন্ধে আমাদের ধারণা উন্নত হইতে থাকে, তেমনি প্রকৃতির প্রভ্ আম্বার ধারণাও উন্নত হইতে থাকে, তেমনি প্রকৃতির প্রভ্ আম্বার ধারণাও উন্নত হইতে থাকে; অবশেষে আমারা একেশ্বরণাদে উপানত হই। এই সাম্যা—এই প্রকৃতি রহিয়াছেন, আর এই মারার প্রভু একজন রহিয়াছেন—ইহাই আমাদের আশার ফল।

যেথানে প্রথম এই একেশ্রবাদস্চক ভাবের আরম্ভ, সেইখানে বেদাস্তেরও জারন্ত। বেদান্ত ইহা হটতেও গভীরতর তত্তালকান করিতে চান। বেদান্ত বলেন, এই মান্ত্রাপ্রপঞ্চের পশ্চাতে যে এক আত্মা রহিয়াছেন, যিনি মায়ার প্রভু, অথচ বিনি মারার অধীন নন, তিনি বে আমাদিগকে তাঁহার দিকে আকর্ষণ করিতেছেন এবং আমরাও যে সকলে তাঁহারট দিকে ক্রমাগত চলিতেছি, এই ধারণা সভা বটে, কিন্তু এখনও যেন ধারণা স্পষ্ট হয় নাই, এখনও যেন এই দর্শন অম্পষ্ট ও অক্ট- যদিও উঠা স্পষ্টতর যুক্তির বিরোধী নছে। ধেমন আপনাদের তবগীতিতে আছে, 'আমার ঈশর তোমার অতি নিকটে', বেদাস্তীর পক্ষেত্ত এই স্তুতি খাটিবে, ভিনি কেবল একটী শব্দ গরিবর্তন কবিয়া বলিবেন, 'আমার ঈশ্বর অংমাব অতি নিকটে।' আমাদের চরম পথ যে আমাদের অনেক দরে, প্রকৃতির অতীত প্রদেশে, আমরা যে তাহার নিকট ক্রমশঃ অগ্রসর হইতেছি, এই ডফাত তলাত ভাবকে ক্রমণঃ আমাদের নিকটবর্ত্তী করিতে হইবে, অবশ্য আদর্শের পবিত্রত। ও উচ্চতা বজায় রাখিয়া ইহা করিতে ছইবে। যেন ঐ আদর্শ ক্রমশঃ আমাদের নিকট হইতে নিকটতর হইতে থাকে — অবশেষে সেই স্বর্গন্থ উপর যেন প্রেকৃতিস্থ ঈশ্বররূপে উপলব্ধ হন, শেষে যেন প্রকৃতিতে এবং সেই ঈশংরে কোন প্রভেদ থাকে না, তিনিই যেন এই দেহমন্দ্রিরের অধিষ্ঠাত্রী দেবতারূপে, অবশেষে এই দেহমন্দির ক্সপেই পরিজ্ঞাত হন, তাঁহাকেই যেন খেষে জীবাত্মা ও মাহুষ বলিয়া পরিঞাত হওয়া যায়। এই থানেই বেদান্তের শেষ কথা। যাঁহাকে ঋষিগণ উদ্বোধন । ि धत्र- ७ हे मर्था ; 250

বিভিন্ন স্থানে অধ্যেষণ করিতেছিলেন, তাঁহাকে এতক্ষণে জানা গেল। বলেন, তুমি যে বাণী শুনিয়াছিলে, তাহা সভ্য, তবে তুমি উহা শুনিয়া ঠিক পথে পরিচালিত হও নাই। যে মুক্তির মহা আদর্শ ভূমি অনুভব করিয়াছিলে. ভাছা সভ্য বটে, কিন্তু ভূমি উহা বাহিরে অবেষণ করিতে গিয়া ভুগ করিয়াছ। ঐ ভাবকে তোমার খুব নিকটে নিকটে গইয়া আইস, যত দিন না তুমি জানিতে পার যে, ঐ মুক্তি, ঐ স্বাধীনতা তোমারই ভিতরে, উহা তোমার আত্মার অন্তরাআ্রিকাণ। এই মুক্তি ব্যাব্রই তোমার অরুপই ছিল, এবং মায়া ভোমাকে কথনই আক্রমণ করে নাই। এই প্রকৃতি কথনই তোমার উপর শক্তি বিস্তার করিতে সমর্থ ছিল না। বালককে ভয় দেখাইলে যেরূপ হয়, সেইরূপ ভূমিও স্বগ্ন দেখিতেছিলে যে, প্রকৃতি তোমাকে নাচাইতেছেন, স্বার উহা হইতে মুক্ত হওয়াই তোমার লক্ষা। তুপু ইহা বুদ্ধিপূর্বক জানা নথে, প্রত্যক্ষ করা, অপরোক্ষ করা--- আমর। এই ওগংকে বতদুর স্পষ্টভাবে দেখি-তেছি, তদপেকা স্পষ্ট ভাবে উহা উপণান্ধি করা। তথনই আমরা মুক্ত হইব, তথনই সকল গোলমাল চুকিয়া যাইবে, তৎনই হৃদ্যের চঞ্চতা সকল স্থির হইয়া ঘাইবে, তথনই সমূদ্য বক্তা সংল হইয়া যাইবে, তথনই এই বছড্ডান্তি চলিয়া যাইবে, তথনই এই ৫ ফুতি, এই মায়া, এখনকার মত ভয়ানক, ব্যব-মাদকর স্থানা ২ইয়া অতি ফুন্দর্রপে প্রতিভাত হইবে, আরু এই জ্বাং এখন বেমন কারাগার প্রতীয়মান হইতেছে, তাহা না হইরা জীড়াক্ষেত্র স্বরূপ প্রতিভাত হইবে, তথন বিপদ বিশৃত্বলা, এমন কি, আমরা যে সকল যন্ত্রণা ভোগ করি, ভাহারাও এক্সভাবে পরিণত ২ইবে-ভাহারা তথন তাহাদের প্রকৃত স্বরূপে প্রচিভাত হইবে— স্বল বস্তুর প্রাত্ত, স্কল বস্তুর সারস্ত্রা खन्न जिनिहें मां हा देशा ति शाहिन (क्या याहेर्द, आत विकास भावा याहेर्द যে. তিনিই আমার প্রকৃত অন্তরাত্মাস্তরূপ।

国郊の町かに1

অধৈত বেণান্তের এই বিষয়টী ধারণা করা অতি কঠিন যে, অনস্ত ব্রহ্ম যিনি, তিনি স্পীম হইলেন কিরপে। এই প্রশ্ন মানুষ চিরকালই জিজ্ঞাসা করিবে, কিন্তু সারাজীবন এই প্রশ্নের অনুধান করিয়াও মানুষের অন্তর হুইতে এই প্রশ্ন বিদ্রিত হুইবে না—অনস্ত অসীম ঘিনি, তিনি স্পীম হুইলেন কিরপে ? ১০ই চৈত্র, ১৩০৭।] উলোধন। ১৮১

অমি একণে এই প্রশ্নটা লইয়া আলোচনা করিব। ভাল করিয়া বুঝাইবার জ্ঞ আমি নিম্লিখিত চিত্রের সাহাণ্য গ্রহণ করিব।

এই চিত্রে (ক) রহ্ম, (খ) জগং। বহ্ম জগং হইয়াছেন। (季) ব্ৰস্ক (51) দেশ নিমিত্ত

জগৎ

(智)

জগং অর্থে শুধু জড়জগং নহে, সৃশ্ব জগৎ আধ্যা-আিক জগতও তাহার মঙ্গে দকে ব্ঝিতে হইবে— স্বৰ্গ, নৱক, এক বথায়, যাহা কিছু আছে, জগৎ অর্থে তৎসমুদর বৃঝিতে হইবে। মন এক প্রকার প্রবিণামের নাম, শরীর আর এক প্রকার পরিণামের नाम-हेलापि, हेलापि; এই मन नहेश जन्दा এই একা (ক) জগং (খ) হইয়াছেন--দেশ-कालनिभिटलत (१) मधा विशा आंत्रिता, अटेबल-

বাদের এই মূল কথা। দেশকালনিমিত্তরূপ আদর্শের মধ্য দিয়া ত্রন্ধকে আমবা দেখিতেছি, আর নীচের দিক হইতে দেখিলে এই ব্রহ্ম অগজাপে দৃষ্ট হন। ইহা হইতে বেশ বোধ হইতেছে, যেথানে ব্ৰহ্ম, সেখানে দেশকাল-নিমিত্ত নাই। কাল তথায় থাকিতে পারে না, কারণ, তথায় মনও নাই, চিন্তাও নাই। দেশ তথার থাকিতে পারে না, কারণ তথার কোন পরিণাম নাই। •পতি এবং নিমিত্ত বা কার্য্যকারণভাবও তথার থাকিতে পারে না, যথায় একগাত্ত সভা বিরাজমান। এইটা বুঝা এবং বিশেষরূপ ধারণা করা আমাদের আব্রাক যে, যাহাকে আমরা কার্য্যকারণভাব বলি,ভাহা ব্রহ্ম প্রপঞ্চরপে অবনভভাবাপন্ন ছইবার পর (যদি আমরা এইরূপ ভাষা প্রয়োগ করিতে পারি) আরম্ভ হয়। তাহার পুর্বেনহে; আর আমাদের ইচ্ছা বাসনা প্রভৃতি যাহা কিছু, সব তার-পর হইতে আরম্ভ হয়। আমার বরাবর এই ধারণা যে, শোপেনহাওয়ার (Schopenhauer) বেণাস্ত ব্ঝিতে এই জারগার ভ্রমে পড়িয়াছেন—তিনি धरे 'रेम्हा' (करे नर्कन्त कित्रांद्रिन। जिन अल्लाब प्राप्त ५ रेम्हा' (क वगारेट होन। किस भूर्वकादक कथन 'हेक्हा' विषया वर्षना करा गारेट পারে না, কারণ, ইচ্ছা জ্বংপ্রপঞ্চের অন্তর্গত 🛢 পরিণামণীল, কিন্তু ব্রেছ ('গ' এর অর্থাং দেশকালনিমিত্তের উপরে) কোনরূপ গতি নাই, কোনরূপ পরিণান নাই। ঐ (গ) এর নিমেই গতি---বাছ বা আন্তর সর্ব্বপ্রকার গতির আরম্ভ ; এই আন্তরিক গতিকেই চিন্তা বলে। অতএব, (গ) এর উপরে কোনরূপ ইচ্ছা থাকিতে পারে না, স্থতরাং 'ইচ্ছা' জগতের কারণ िण्य- ७४ मर्था ; के दाधम । 265

হইতে পারে না। আরে। নিকটে অধিরা পর্যাবেকণ কর: শরীরের সকল গতি ইচ্ছাপ্রকুল নহে। স্বামি এই চেয়ারখানি নাড়িলাম। ইচ্ছা অবশ্য উহা নাড়াইবার কারণ, ঐ ইচ্ছাই পৈশিক শক্তিরূপে পরি-ণত হইয়াছে। এ কথা ঠিক বটে। কিন্তু যে শক্তি চেয়ারখানি নাডাইবার কারণ, তাইটে আবার হৃদ্ধ ফুন্ফুদ্দেও সঞ্চালিত করিতেছে, কিন্তু 'ইচ্ছা' রূপে নহে। এই ছই শক্তিই এক ধরিয়া লইলেও যথন উহা জ্ঞানের ভূমিতে আরোহণ করে, তথনই উহাকে 'ইচ্চা'বলা যায়,কিন্ত ঐ ভূমি আরোহণ করিবার भूत्र्व खेशादक हेक्डा विनात खेशांदक जून नाम (मध्या हरेन, विनाद हरेदा। ইংাডেই শোপেনহাওরারের দর্শনে বিশেষ গোলযোগ হইরাছে। বরং এথানে 'প্রাক্তা এ সন্থিং' শব্দবয় ব্যবহার করিলে ভাল হয়। এই শব্দ ছুইটী মনের স্ক্রিকার অবস্থার স্থকে ব্যবহৃত হইতে পারে। প্রভা ও স্থিৎ ঠিক জ্ঞানের অবস্থা বা জ্ঞানের পূর্ব্ধাবস্থা নহে, বরং উহারা এক প্রকার পরি-ণাম্মাত্র বলা যাইতে পারে। যাহা হউক, স্থামরা কোন বিষয়ের কারণ কেন গিজ্ঞানা করি, তাহা এইবার বুঝা যাইবে। একটা প্রত্তর পড়িল, আমরা অমনি প্রশ্ন করিলাম, উহার পতনের কারণ কি ? এই প্রশ্নের ক্যায্যতা ব। সম্ভবনীয়তা এই অনুমান বা ধারণার উপর নির্ভর করিতেছে যে, যাহা কিছু ঘটে ভাহারই পুর্বে—প্রগ্রেক গতিরই পুর্বেক আর কিছু ঘটিয়াছে। এই বিষয়টী দখনে আপনাদিগকে খুব স্পষ্ট ধারণা করিতে অমুরোধ করিতেচি, কারণ, ষধনই জামরা জিজ্ঞাসা করি, এই ঘটনা কেন ঘটিল, তথনই আমরা মানিয়া লইতেছি বে, সব জিনিষরই, সব ঘটনারই, একটা 'কেন' থাকিবে, অধাৎ উহা ঘটবার পূর্বে আর কিছু উহার পূর্ববর্ত্তী থাকিবে। এই পূর্ববর্তিতা ও পরিবর্ত্তিতাকেই নিমিত্ত বা 'কার্য্যকারণভাব' বলে, আর বাহা কিছু আমরা দেখি, শুনি, অনুভব করি, সংক্ষেপে জগতের সমুদরই, একবার কাবণ, আবার কার্যা হইতেছে। একটা ন্ধিনিষ তাহার পরবর্তীর কারণ হইতেছে, কিন্ত স্মাবার উহাই তাহার পূর্ববত্তী কোন কিছুর কার্যা। ইহাকেই কার্য্যকারণের নিয়ম বলে, ইহাই আমাদের ছির বিখাস। আমাদের বিখাস, জগতের প্রত্যেক প্রমাণুই অপ্র সমুদ্র বস্তর সহিত, তাহা বাহাই হউক না কেন, তাহার সহিত সম্বর আছে। আমাদের এই ধারণা কিরূপে আদিল, এই নইয়া ভয়ানক वानाज्याम रहेश शिवाटह। इंडेटवाटन अटनक अक्षतीमी (Intuitive) দার্শনিক আছেন, তাঁথাদের বিখাদ, ইহা মানবজাতির অভাবগত ধারণা, আবার >4·₹ (50. >0091] **क्टिब**श्चम । SHO

অনেকের ধারণা, ইহা ভূয়োদর্শনলক, কিন্তু এই প্রশ্নের এখনও মীমাংসা হয় নাই। বেদাস্ত ইহার কি মীমাংশা করেন, আমরা পরে দেখিব। অতএব স্মানদের প্রথম ইহা বুঝা উচিত যে, 'কেন'এই প্রশ্নটী এই ধারণার উপর নির্ভন্ন করিতেছে যে, উহার পূর্কাবর্তী কিছু আছে, এবং উহার পরে আংগ কিছু ঘটিবে। এই প্রশ্নে আর এক বিশ্বাস অন্তর্নিহিত রহিয়াছে যে, জগতের কোন পদার্থই স্থতন্ত নহে, স্বল পদার্থেরই উপর উহার বহিঃছ অপর কোন পদার্থ কার্য্য করিতে পারে। জগতের সকল বস্তুই এইরূপ পরস্পর সাপেক্ষ— একটী অপ্রতীর অধীন - কেছই স্বতন্ত্র নহে। যথন অমরা বলি, 'ব্রেরর উপর কোন শক্তি কার্যা করিল ?' তথন আসর। এই ভূল করিতেছি—এক্ষকে জগতের সামিশ কোন বস্তুব ক্রায় বোধ করিতেছি। এই প্রশ্ন করিতে গেলেই আমাদিগকে অনুমান করিতে হইবে যে, দেই অন্ত অপর কিছুর অধীন— দেই নিরপেক ব্রহ্মসভাও অপর কিছুর হার। বন। অর্থাং বেহ্ম' বা 'নিরপেক দ্তা' শব্দটীকে আমুরা জগতের স্থায় মনে করিতেছি। পূর্বেরাক্ত রেখার উপরে ত আরু দেশকালনিমিত্ত নাই, কারণ উহা একমেবাধিতীয়ং, মনের অভীত। ষাহা কেবল নিজের অভিত্রে নিজে প্রকাশিত, যাহা একমাত্র একমেবাহিতীয়ং, ভাহার কোন কারণ থাকিতে পারে না। যাহা মুক্তবভাব—বতন্ত্র, তাহার (कान कावन थाकिएड भारत ना, कावन, छाहा इटेरन छिनि मुक्क इटेरनन ना, বন্ধ হইয়া গেলেন। যাধার ভিতর মাপেক্ষিকতা আছে, তাহা কথন মুক্ত-च्छार হইতে পারে না। অভএব তোমরা দেখিতেছ, অনন্ত দান্ত কেন হইল, এই প্রশ্নই ভ্রমান্ত্রক—উহা স্ববিরোধী। এই সব কুলা বিচার ছাড়িয়া দিয়া সাদাসিদে ভাবেও আমরা এ বিষয় বুঝাইতে পারি। মনে কর, আমর। বুমিলান, ত্রন্ধ কিরুপে জগৎ হইলেন, অনস্ত কিরুপে সাস্ত হইলেন, তাহা হইলে बन्न कि बन्नारे शाकिरवन--- जनस्र कि जनस्र रे शाकिरवन १ जारा रहेला ■ जनस्र সাস্তই হইরা গেলেন। মোটামৃটি আমরা জ্ঞান বলিতে কি বুঝি ? যে কোন বিষয় আমাদের মনের বিষয়ীভূত হয়, অর্থাৎ মনের দারা সীমাবদ্ধ হয়, তাহাই আমর: জানিতে পারি, আর যথন উহা আমাদের মনের বাহিরে থাকে অর্থাৎ মনের বিষয়ীভূত নাহয়, তথন আমরা উহা জানিতে পারি না। এক্সলে স্পর্ক प्तिथा याहेरछएह, यनि त्महे व्यन्छ बन्न मत्नन हाता मीमावक बहेर गन. छाहा **हहेरण** তিনি আর অনস্ত রহিলেন না; তিনি দদীন হইয়া গেলেন। মনের দারা যাহা কিছু দীমাবদ, দবই দণীম। অতএব, সেই 'ব্ৰহ্মকে জান।' এ কথা আবার िय - ७ मरथा। >F8 केटबारन ।

তত্তর্হি দীর্ঘ এহণং কর্ত্বাম। ন কর্ত্বাম। উপরিক্টাল্যোগবিভাগঃ করিষ্যতে। অকঃ সবর্বে একোভবভি। ততো দীর্ঘ:। দীর্ঘন্ত সভবভি। যঃ একঃ পূর্বো-প্রদোরিত্যেবং নির্দিষ্ট ইতি।

বঙ্গাছবাদ।—একটা মাত্র বর্ণ আদেশে, দীর্ঘ গ্রহণ কর্তব্য। *। যবি
তকারান্তরহিত এওড়া ঐত। সত্র করা বায়, তবে, "কোনও বর্ণ হলে একটা মাত্র
বর্ণ আদেশ করিতে হইলে, সেটা দার্ঘ বর্ণ হয়, এইরূপ আদেশ করিতে হইবে"।
আদ্ গুণঃ ৬١১.৮৭। (অবর্ণের পরে অচ্ প্রাচাহার স্থিতবর্ণ অর্থাং অরবর্ণ থাকিলে,
উভয়ে মিলিয়া গুণরূপ একটা আদেশ হয়। বেমনঃ—উপেক্র) হৃদ্ধি রেচি ৬১১৮৮
(অবর্ণের পরে এচ্ প্রত্যাহারস্থিত বর্ণ অর্থাং এ ঐ ও ও থাকিলে, উভয়বর্ণ
মিলিয়া বৃদ্ধি রূপ এক আদেশ হয়। বেমনঃ—গঙ্গোবং) এই স্ক্রমে উভয়ে
মিলিয়া ব্য এক বর্ণ আদেশ করা হইয়াছে, সে স্থানে দীর্ঘরূপ একাদেশ কয়া
অব্যাই কর্ত্রব্য হইবে।

कि श्राष्ट्राकत्म मीर्घ श्रद्य कतिए इरेटव ?

অন্তরতমতা (১) প্রযুক্ত তিন নাত্রা বা চারি মাত্রা মিলিড বর্ণের স্থানে, বেন তিন মাত্রা চারি মাত্রা বিশিষ্ট কোনও বণ আদেন না হয়, এই জন্মই উভগ্ন বর্ণ মিলিয়া একাছেল বিধান করিতে হইলে, সেই একাদেশ দীর্থরাপ একাদেশই इरेग्रा थात्क, এरेक्नभ दलिए इरेरव ; न जूना थुड़ा नरका आकारत छूरे माजा थाकार ७ वर रेखमरल र रेकारत वक्सा वा बाकार ७, रायान काकात वर ইকার মিলিয়া একার আদেশ হওয়াতে, খটেকু আদেশ হইয়াছে; সেই একারে তিনি মাতাবিশিষ্ট একার শ্রবণ হইবে। এইরপ খটু। উদক্ষ্ খটো দক্ষ্। ঘটা ঈশা এই উভয় শব্দের আকার এবং ঈকার প্রত্যেকেই হুই মাতা বিশিষ্ট হওয়াতে, উভয়ে নিলিয়া চারি মাত্রাবিশিষ্ট ঘটেশা, এইরূপ একারবিশিষ্ট শব্দ শ্রবণ হইবে। এবং খটা শন্দের ছই মাঞা বিশিষ্ট আকারের সহিত, উঢ়া শব্দের ছুই মাত্রা বিশিক্ট উকার মিলিত হইয়া চারি মাত্রা বিশিপ্ত থটে ট্রা भक्त इटेरता थेहे। भरमत इटे माला विभिष्टे आकारतत महिल, धनका भरमत्र ছই মাতা বিশিষ্ট একার মিলিত হইষা, চারি মাতা বিশিষ্ট একার যুক্ত খটৈ-ৰকা' এইরূপ শব্দ হইবে। এইরূপ থটা শব্দের ছই মাত্রা বিশিষ্ট আকারের সহিত, মুথাক্রমে দুই মাতা বিশিষ্ট ওদন শব্দ মিলিত হইয়া, চারি মাতা বিশিষ্ট থটোনন, ঐতিকায়ন শব্দের তৃই মাতা বিশিষ্ট ঐকার মিলিত ২ইগা, চারি মাত্রা সম্পন্ন ঐকার বিশিক্ত খটেটু ডিকায়ন, ঔপগব শব্দের ছুই মাতা বিশিষ্ট >४६ देख, २००१।] **७८९१५न** । [8]

উকার নিশিত হইয়া, চারি মাজা সম্পন্ন ঔকার বিশিত, খটোপদাৰ পদ সম্পন্ন হইবে। এই সকল স্থলে, আকারের সহিত ই, উ, এ, ঐ, ও, ও প্রভৃতি বর্ণ মিশিত হইয়া এ, ঐ, ও, ও প্রভৃতি একাদেশ হওয়াতে, সেই আদিই একারাদি বর্ণ চারি মাতা বিশিত হয় বলিয়া, চারি মাতা বিশিত বর্ণ শাস্তে ব্যবহার না ধাকাতে, "এক আদেশ করিতে ২ইলো, ছই মাতা বিশিত বর্ণই হইয়া থা.ক", এই মারা বিশিত বর্ণ করিলা।

যদি এইকণ্ট ক্রিতে হয়, ভালা ছউলে পানিনি-কর্তৃক প্রণীত স্থাত্র অথবা কাল্যায়ন কল বার্ষিকে, দীর্ঘ শক্ষ বিধান কলা কর্তৃতা ?

তালা কর্মনা নহে। নেংকু ইলা, উপরোজ প্রে যোল বিভাগ করিলেই প্রেমের মিন্ধ হইবে। সেনে, ''অকঃ স্বর্গে দীর্ঘা'' ৬০১৮০১। এই স্ত্রেক দুই ভাগ করিয়া এক ভাগে 'অকঃ দার্গে', অপর ভাগে 'দীর্ঘ', এইরূপ করিতে স্কারে। তালা হুইলে, এইরূপ অর্থ হুইবে যে, 'অকঃ স্বর্গে' অর্থাং অক্ প্রভাগের বিশিষ্ট বর্গের (জ, ই, উ, ঝ, ৯র) পরে, স্বর্গ (১) আচ্ প্রভাগেরা-স্কার্ণিত বর্গ থাকিলে কোনও একটা নাত্র আবদেশ হয়। অপরাংশে দীর্ঘ এই শক্ষ রাখিলে, ইভাই অর্থ হুইবে যে, পুর্ব শক্ষ এবং প্রশক্ষের উভার বর্গ মিলিয়া একটী মাত্র আবদেশ, যেগানেই হুইবে, সেখানে সেই আবদেশ দীর্ঘই হুইবে।

"লকঃ স্বর্ণে দীর্ঘন্ন" এই হুত্রে দোল বিভাগ করিয়া, যখন এইরপ অর্থই হইল যে, পূর্দ্ধ ও পরের হানে একটা মার বর্ণ জাদেশ হুইলে, সেই আলিষ্ট বর্ণটা দীর্ঘন্ন হুইলে, ভগন থটা শন্দের আকারের সহিত ইক্র শন্দের ইকারে, যগন আকার এবং ইকারে মিলিজ হুইরা, একার রূপ এক আদেশই হুইয়াছে, তথন সেই একার ক্রনও দীর্ঘ অর্থাং ছুই মাজা বিশিষ্ট না হুইরা, আকারের ছুই মাজা ও ইকারের এক মাজা মিলিভ হুইগাছে বলিয়া, তিন মাজাবিশিষ্ট একার হুইতে পারিবে না। এইরপ খটে লকা, খটে পুগার এই স্কল্মান্তেও ইকারে এবং ওকার ৪, কিছুতেই ছুই মাজাবিশিষ্ট দীর্ঘ না হুইয়া, চারি মাজা হুইতে পারিবে না।

ভাষ্যমূল।—ইগালি তর্থি প্রাপ্নোতি। পাজং বিদ্ধং পচন্তীতি। বৈধা লোকঃ। ইহ তাবংপভ্মতি অমোক ইলীয়তা সিদ্ধং দোগমেবং সিদ্ধে সতি মং পর্বাহণং করোতি তত্তৈতংপ্রয়োজনং ষণাজাতীয়কঃ পূর্বস্তথাজাতীয়ক উভযোগ্যামান্তি।

বসান্ত্রাদ। — যদি পূর্বপবের স্থানে একটী মাত্র আদেশ হইলে, সেই আদেশটা দীর্ঘই হয়; তবে পশৃং, বিদ্ধং, পচস্তি, এই সকল স্থলেও পূর্বপরের স্থানে এক আদেশ হওয়াতে, সেই আদেশটা দিংঘা হইবে। যেমন পশৃং (১) ইত্যাদি। এথানে পশু শদের দিতীয়ার এক বচনে পশ্ম এইরূপ হওয়া অসংগত।

াই তলে দোৰ হইতে পারে না। কেননা পশু শব্দেৰ স্থাল 'জমি' এইরূপ প্র করিলেই, পূর্দান্তী স্থাতর হইতে, 'পূল' এই শব্দের জারুত্তি আনিয়া, এইরূপ আই ইবৈ যে, 'অম্' বিভক্তি পরে পাকিলে, পূর্লরেপ এক জাদেশ হয়; স্থতরাং এইকপেই যথন 'প্রুন্য' এই প্র দিন্ধ হয়, তথন যে 'জমি পূর্দ্য' এই প্রেতি পরে গালির গুলিই ওইল করা হট্মাছে, ভ'হার ইহাই উদ্দেশ্য যে, পূর্দ্রাতী শব্দ স্থাল গির্মি যেই জাতীয়ই হউক না কেন. উত্যা শব্দ মিলিয়া সেই জাতীয়ই পূর্দ্রেপ এক আদেশ হইবে। এই উদ্দেশ্যেই যথন 'মিমি পূর্দ্য' এই প্রেত্তি পূর্দ্রিপ্রহণ করা হইরাছে, তথন এই জলেগ্রুট যথন 'মিমি পূর্দ্য' এই প্রেত্তি পূর্দ্রিপ্রহণ করা হইরাছে, তথন এই জলেগ্রুট যথন 'মিমি পূর্দ্য' এই ক্রেডিল কালে কেলে মান দীর্ঘই আদেশ হইবে না। স্থারাং পশুন্ শব্দে উকার হইরা যায় যে, পশ্ন এইকপ অশুন প্রেরাগ হইবে বলিয়া ভার ছিল, তাহাও থাকিবে না এবং কোনও দোষও ঘটিনে না।

ভাষামূল।— বিদ্ধাতি। পূর্ব ইত্যেবাত্মর্ত্তে। অথবা আচার্য্য প্রবৃত্তিতাপিয়তি নানেন সংগ্রামারণ্ড দার্যন্ত শান্তি।

বঙ্গালুবাদ।—বিদ্ধম্ এই স্থাত্ত পূর্নাশক্ষের অনুত্রন্তি করিতে হইবে।

ভাংপর্যার্থ :—গ্রহিজ্ঞাব্য়ি ব্যথি বৃষ্টি বিজ্ঞি বৃশ্চিতি পূচ্ছতি ভূজ্জাইনাং ক্তিটিচ ৬।১।১৬। (এই সকল ধাতুর পরে ককার ইৎ এবং নকার ইৎ প্রত্যে হইলো সংপ্রসারণ হয়), সুভ্রাং 'ব্যধ্'ধাতুব উক্তর ৬ প্রভায় কিলো,

⁽১) অমি পূর্ব: ।৬।১।১১১ অক্ প্রত্যাহারত্বর্গের, জম্ স্থারি অচ্ অর্থাৎ
স্বর্ব থাকিলে, পূর্বরেপ এক আদেশ হয়। বেমন:—'বাম' শব্দের দ্বিটারা বিভক্তিত
অম্ প্রত্যার যোগ ক্রিলে, রামশন্দের অকার এবং অম্ প্রত্যারের অকার উভরে মিলিভ হইরা
পূর্বরূপ এক আদেশ চুইলে, রামমৃ হইরা থাকে।

বা'এর যকারের স্থানে সংপ্রসারণ হইয়া, হ্রস্থ ইকার আদেশ হইল। আছএব বিদ্ধমৃ এই পদও সিদ্ধ হইনে। কিন্তু এছলে ইহাও বলা কর্ত্তা যে, বাধ্ ধাতুর যকারের হানে সংপ্রসারণ হইয়া ইকার হইলে, সেই ইকার যাহাতে পূর্ব বর্ণই হয়; এই জন্ম 'পূন' এই শব্দের অন্ত্র্যু করিতে হউবে। নতুবা বিদ্ধং এই শব্দেতে হ্রস্থ ইকার হউবে না। যেহেতু উভয় বর্ণ মিলিত হইয়া একাদেশ হউলো, সেই এক আদেশ দার্গ্য ইইয়া থাকে, ইহা পূনে বলা হইয়াছে।

অথবা ইহাতে জাতাগ্য পাণিনিরই অভিপ্রায় জানা যাইতেছে যে, এই স্থান "সং প্রসারণ্ড" ৬।৩।১৯। (সংপ্রসারণের দীর্ঘ হয়, শেষ পদ হইলো); এই স্ত্রাভিপ্রায়ায়নারে দীর্ঘ হইবে না। যদি সংপ্রসারণের সর্ক্রেই দীর্ঘ প্রান্তি প্রান্তি প্রায়ায়নারে দীর্ঘ হইবে না। যদি সংপ্রসারণের সর্ক্রেই দীর্ঘ প্রান্তি হইত; তবে জার 'হলঃ' ৬।৪।২। (হলের পর দে মংপ্রসারণ, তাহার দীর্ঘ হয়) এই স্ত্রদান। দার্ঘ বিধান কবিবাব প্রয়োজন ছিল না। গাণিনিও আচার্য্য 'সংপ্রসারণ্ড' স্ত্রের দারায় সংপ্রসারণের দীর্ঘ বিধান কবিয়াও পুনরায় 'হলঃ' স্ত্রের দারায়, হলের অর্থাৎ বাজনের পরবর্তী সংপ্রসারণের দীর্ঘবিধান কবিয়াছেন; তথ্ন এতদ্বারা ইহাই জানা যাইতেছে পূর্ববর্তী স্থা সর্ক্রি গ্রহণীয় নহে।

ভাষ্যমূল।—পচনী গ্রতোগুণে পরইতীরতাসিদ্ধং সোর্মেবং সিদ্ধে স্তি যজ্জপ গ্রহণং করে।তি তত্তিতং প্রয়োজনম্ যথা জাতীয়কং পরস্য রূপং তথা জাতীয়কমূভয়োর্যগাস্যাদিতি।

বঙ্গান্থবাদ।—পচন্তি এইত্লে, 'পচ্' ধাহুর পরে, 'ঝি' হানে আদেশ করিয়া 'অতোজনে' ৬। ১। ৯৭। পেদান্ত ভিন্ন অকারের পরে ওণ নিমিষ্ট বর্ণ অর্থাৎ একার ওকারাদি থাকিলে, পর বর্ণের স্বরূপ একাদেশ হয়), এই সূত্রান্ত্রসারে পচন্তি এই পদ সিদ্ধ হইল। এই স্থলে, ''গুণ পরে থাকিলে একাদেশ হয়'', এই রূপ বলিলেই যথন প্রেমাগ সিদ্ধ হয়, তথন যে আবার পর কপ একাদেশ হয়, এইরূপ বলা হইয়াছে, তাহার ইহাই প্রয়োজন যে, পরস্থিতবর্ণ যে জাতীয় রূপ বিশিষ্ট হইয়াছে, পূর্ব্বাপর উভয় বর্ণই সেই জাতীয় রূপ বিশিষ্ট যাহাতে হইতে পারে।

ভাষান্স। — ইহ তহি থটুর্শ্যো মালর্শ্য ইতি দীর্ঘবচনাদকারো ন। অনাস্তর্থাদেবারৌকারৌ ন। তত্ত কো দোষ:। বিগৃহীত্সা শ্রবণং প্রথক্ষ্যেত। ন ক্রমো বরং যত্র ক্রিয়মাণে দোষ: তত্ত কর্ত্তবামিতি কিং তহি। যত্ত ক্রিয়মাণে ন দোষ: তত্ত কর্ত্তবামিতি কিং তহি। যত্ত ক্রিয়মাণে ন দোষ: তত্ত কর্ত্তবামিতি।

বশাস্বাদ।—যদি পূর্বাপর স্থানে একাদেশ ছইলে, তাহা দীর্ঘই হয়; তবে ঘটা + ঋশ, মালা + ঋশ্য এ স্থলে ঝকারের গুণ অব্ হইলে, খটা শব্দের দীর্ঘ আকারের পরে, অর্শ্য শব্দের হ্রম্ব অকার থাকাছে,পূর্ন্যাপর স্থানে 'অ'কার রূপ একাদেশ হইবে না। স্তরাং খটার্শ্য মালর্শ্য প্রভৃতি পদও সিদ্ধ হইবে না। যদি বল যে, অকার না হইয়া একার অথবা ওকার হইবে, তাহাও ইইবে না। যেহেতু আকারের সহিত একার বা ওকারের স্থান বা প্রবত্বের কোনও রূপ আন্তর্যাত্ব (সাম্যন্ধ) নাই। খটা বা মালা শব্দের আকারের পরে, অর্শ্য শব্দের অকার থাকিলে কোনও রূপ স্ক্ষি নাই বা হইল, তাহাতে কি দেবে হইবে প

যাহা শাস্ত্রে কথনও এখন করা হয় নাল, তাহাই শুনা বাইবে। অর্থাৎ খটার্শ্য প্রভৃতি অশাস্ত্রীয় শক ব্যবহৃত হইবে।

তাহা হইবে না। যে হেতু আমরা ইহা বলিভেছি না যে, যেখানে পূর্ব্বাপর ভানে দীর্ঘরণ একাদেশ করিলে, অসঙ্গত হইবে, সে থানেও দীর্ঘাদেশ করিতেই হইবে। তবে কি না, আমরা ইহাই মাত্র বলিতেছি যে, যেখানে পূর্ব্বাপর ভানে দীর্ঘ গ্রহণ করিলে দোব হঠবে না, সে থানেই দীর্ঘগ্রহণ করিলে ছেইবে।

ভাষামূল।—ক চ ক্রিয়মাণে ন দোষঃ। সংজ্ঞাবিধোঁ। বৃদ্ধিরাদৈজ্ দীর্ঘঃ, অদেঙ্ গুণো দীর্ঘইতি। তত্তইি দীর্ঘগ্রহণং কর্ত্বাম্। ন কর্ত্বাম্। কম্মাদেবান্তর্যগ্রিমাত্রচকুমাত্রালাং স্থানিনাং ত্রিমাত্রাচতুমাত্রা আদেশা ন ভবন্তি। তপরে গুণবৃদ্ধী। নমু চলঃ পরো যন্মাং দোয়ংতপরঃ। প্লারেবিভীতৈ্ব স্থাং। যবঃ স্তবঃ। কন্তহি দকারঃ। কিং দকারে প্রয়োজনম্। অধ কিং ত কারে। যন্ত্রসন্দেহার্যন্তকারঃ দকারোপি। অথ মুধ্র্যার্থন্তকারঃ দকারোপীতি।

বঙ্গামুবাদ।—পূর্বাপর স্থানে একাদেশ করিলে, কোথার দোষ হইবে
না ? সংজ্ঞা বিধানে দোষ হইবে না। যেমন, 'র্দ্ধিরালৈচ্' ১।১।১।
এই স্ত্রে দীর্ঘ গ্রহণ করা কর্ত্রা। তাহা হইলে আকার ঐকার এবং ওকার
এই সকল রুদ্ধি সংজ্ঞক বর্ণ সমূহ ছই মাত্রাবিশিষ্ট দীর্ঘ বর্ণই হইবে। তিন
মাত্রা অথবা চারি মাত্রা হইবে না। এইক্লপ গুণসংজ্ঞা বিধানেও দীর্ঘ গ্রহণ
করা কর্ত্রা। বেমনঃ—'আদেও গুণঃ' ১।১।২। এই স্ত্রে দীর্ঘগ্রহণ করিতে
হইবে। তাহা হইলে দেখানেই গুণ সংজ্ঞা প্রাপ্তি হইবে, সেখানেই পূর্কা।
পরের স্থানে দীর্ঘর্কপ একাদেশ হইবে। তাহা হইলেই একার এবং ওকারে
ছই মাত্রা বিশিষ্ট দীর্ঘ বর্ণ ভিন্ন তিন মাত্রা কি চারি মাত্রা বিশিষ্ট বর্ণ হইবে না।
১৫ই কৈন্ত্র, ১৩০৭।

যদি এইরূপই হয়; তবে রুদ্ধিরাদৈচ্ এড়তি সংজ্ঞাবিধায়ক স্কে দীর্ধ শক প্রযোগ করা কর্ত্তবা ? তাহা হইলেও 'দীর্ঘ' নামক এত বৃহৎ একটী শক্ষ, স্কে প্রবেশ করাইতে হইবে বলিয়া, স্কে বৃহৎ হওয়াতে দোষও ■ হইবে ?

সংজ্ঞা বিধানে দীর্ঘশক প্রয়োগের প্রয়োজন নাই। বদি দীর্ঘ শক প্রয়োগই করা না হয়, তাহা হইলে কেনই বা 'খট্বা উদক' প্রভৃতি শক্ষের হুই মাত্রা বিশিষ্ট আকার ও এক মাত্রা বিশিষ্ট ইকার প্রভৃতি মিলিভ হইয়া, তিন মাত্রা চারি মাত্রা বিশিষ্ট বর্ণের স্থানে ভিন মাত্রা চারি মাত্রা বিশিষ্ট একার ওকার প্রভৃতি আদেশ হইবে না ?

ভাষা হইবে না। কেন না, 'ভপরস্থংকালফ' (১) এই স্ত্রে যে কেবল
ত কার পরে আছে যাহার তাহার সমকাল বিশিষ্ট বর্ণেরই সংজ্ঞা হইবে, এরপা
নহে। বরং ত কার পরে আছে যাহাব, তাহার ও সংজ্ঞা প্রাপ্ত হইবে। তাহা
হইলেই 'বৃদ্ধিরালৈচ' স্ত্রে, ছই মাত্রা বিশিষ্ট আকারের পরে যে ত কার,
ভাহার পরে ঐচ্ গ্রহণ হওয়াতে, ঐকার ঔকারেরও ছই মাত্রাই হইবে।
কেন না আত্ ঐচ্ এই স্থলে ত কারের পরে যথন ঐচ্ গ্রহণ
হইয়াছে এবং ত কারের পূর্বের যথন ছই মাত্রাবিশিষ্ট আকার রহিয়াছে,
তখন ত কারের পরে ঐকার ঔকার থাকাতে, তাহাদেরও আকারের সম কাল
বিশিষ্ট ছই মাত্রা সম্পান বর্ণই হইবে। স্কুতরাং সংজ্ঞা বিধানে দীর্ঘণক উল্লেখ
না করিলেও স্বতঃসিরুই দীর্ঘ হইবে।

যদি তকারের পরস্থিত বর্ণেরও ত কার প্রযুক্ত কার্যাই হন, তবে 'ৠদোরপ' তাতাবে। (ৠ বর্ণ অস্তে আছে এবং উবর্ণ অস্তে আছে যে ধাতুর, তাহার উত্তর অপ্ প্রতায় হয়) এই স্ত্রেও ৠং, উ (২) এই স্থলে 'উ' ত কারের পরে আছে বলিয়া ক্রে উকারেরই মাত্র গ্রহণ হইবে। তাহা হইলে যু ধাতৃ এবং স্ত ধাতু এই ক্রেগান্ত ধাতুর উত্তর অপ্ প্রতায় করিয়া যদিও যবঃ স্তবঃ প্রয়োগ দিদ্দ হইবে বটে; কিন্তু লুধাতু এবং পূ ধাতু, এই দীর্ঘান্ত ধাতুর উত্তর, 'অপ্' প্রতায় করিয়া লবঃ পবঃ পবঃ পদ দিদ্দ হইবে না।

এইরাপ প্রয়োগ নিদ্ধ হইবে। যেহেতু 'ৠদোরপ্', এই স্তে ঋং উ অপ্

⁽১) এই স্ত্রের ব্যাখ্যা পুর্বের দ্রষ্টব্য।

⁽২) ৠং + উ ৠছ। বজীর দি বচনে ওদ্ প্রতায় করিয়া ৠলোঃ পদ নিশ্ব হইরাছে। শ্বদোঃ অপ্ ৠদোরপ্।

এইরপে ত কার বিশিষ্ট ঋকার নহে। এই স্থানে ঋণ্ উঃ অপ্ এইরূপে স্থি বিচ্চেদ করিতে হইবে। হতরাং ত কারের পরে উ কার না হওয়তে, উকারের সমকাল বিশিষ্ট কেবল মাত্র হাই উকারেরই গ্রহণ হইবে না। বরং উকারের সাণ হার দীর্ঘার প্রস্তি সকল প্রকার উকারেরই গ্রহণ হইবে। তাহা হইলেই, দার্ঘা উকার বিশিষ্ট লুধাতু এবং পূধাতুর উত্তর অপ্ প্রত্য়ে করিরা, 'লবং' 'পবং' প্রোগ নিজ হইবে। এইরূপ প্রয়োগ নিজ করিবার জ্ঞা, ইহাই বলিতে হইবে যে, 'ঝানোরপ্' হুতে 'ভ'কার নাই।

তবে কি ? 'দ'কার।

म काद्रित श्रद्धांजन कि १

দকারের প্রয়োজন না থাকিলে, ভোমার 'ভ'কার করিবারই বা প্রয়োজন কি পূ বদি 'গ্লারপ্'ক্ষে গ্লারের পরে তকার না করা যায়, ভাষা হইলে ধাকারে উকারে নিলিত ষ্টা বিভক্তিতে ওঃ হইলে 'রোরপ' এইরপ ক্ত হইবে। তথন সন্দেহ হইবে যে ঝাকারের সহিত উকার নিলিত না হইয়া, র কারের সহিত্র উকার িলিত হইতে পারে। এই সন্দেহ নিবারণের জন্মই খাকারের অত্যে ত কার পাঠ করা হইয়াছে।

ষ্দি সন্দেহ নিবারণের জন্মই তকার পাঠ হইয়া থাকে, তবে আমার দ কারও সন্দেহ নিবারণের জন্মই পাঠ হইয়াছে।

যদি বলা, যে ভোমার মুখের ফুখের জন্য, ত কার পাঠ করিয়াছ ; তবে সামিও বলিব যে, সামার মুখের ফুখের জন্ম আমি দকার পাঠ করিয়াছি।

ভাষ্যমূল।—ইদং বিচাগ্তে। য এতেরু বর্ণেরু বর্ণেকদেশা বর্ণাস্তরসমানাক্তর এতের্মান্যবথহণেন গ্রহণং স্যাঘা ■ বেতি। কুতঃ পুনরিরং
বিচারণা। ইহ হি সম্দায়। অপ্যাপদিখাতে অবয়বা অপি। অভ্যক্তরশচ সম্খারে আংকবঃ। তদ্ধধা। বৃক্ষপ্রচলন্ সহাব্যবৈঃ প্রচলতি। তত্ত সম্দারস্থাব্যবভাব্যব্গব্যব্

বলাল্বাদ।—এক্ষণে এই বিচার করা যাইতেছে যে, (আ ঋ » এ ঐ ও ও)
বর্ণকলের একদেশে যে বর্ণস্তেরের কুল্য আকৃতি সমূহ আছে, তাহা বর্ণপ্রহণে
গৃহীত হইবে কি না? যেমন ;—একার, এই বর্ণে অকার এবং ইকার
যিশিত হইরা রহিয়াছে। স্ক্রাং এক্ষণে ইহাই বিচার্য্য যে, কেবল মাত্র 'ঐ'
এই বর্ণটী প্রহণ করিলে, ভাহার একাদেশ (একাংশ) অকার এবং ইকার
প্রহণ হইবে কি মা? কেনই বা এইরূপ বিচার করা ঘাইতেছে?

এরপ বিচারের প্রয়োজন এই যে, এই স্থলে কি (আ ৠ ঐ ইত্যাদি) বর্ণের সর্বাংশই একত্রে উপদেশ করা হইয়াছে; না অবয়ব সমূহ ভিন্ন ভিন্ন উপদেশ করা হইয়াছে ?

সম্বায় বর্ণেরই অভ্যন্তরে অবয়বর্ণ অবস্থান করিতেছে, যথা: — আকারে অ+ অ এই ছইটী অকার। ঋ কারে এক অংশ শ্বর বর্ণ, অপরাংশ র বং ব্যঞ্জন বর্ণ। ৯ কারে একংশ শ্বর্বর্ণ, অপরাংশ ল বৈং ব্যঞ্জন বর্ণ। একারে অ+ই, ওকারে অ+ই প্রভৃতি প্রয়ত্ম ভেদে অবস্থান করিতেছে। এই সক্ষ বর্ণে, অহা বর্ণের ত্লা বর্ণাংশ সমূহ ধর্ত্তমান থাকিলেও সেই অংশ সমূহ, যথন মূল বর্ণ সমূহেরই অবয়ব বিশেষ; তথন মূল আকারাদিরূপ বর্ণ এহণ করিলে ভদংশ রূপে বর্ত্তমান হ্রম্ম অকারাদিও প্রহণ হইবে। যেমন, বৃক্ষ কম্পিত হইলো ভাহার শাখা প্রশাখাদি অবয়ব সমূহের সহিতই কম্পিত হইলা থাকে, সেইরূপ এই স্থানেও বর্ণের সমূদায় অক্ষ ছিত্ব যে পৃথকু পৃথক অবয়ব, তাহাদেরও বর্ণের স্ক্রাবয়ব গ্রহণে গহীত হহবে কিনা, অথবা গ্রহণ করা হইবে না, এই স্থলে ইহাই বিচার করা যাইতেছে।

ভাষ্যমূল।—কশ্চাত্র বিশেষঃ। বলৈকদেশা বর্ণগ্রহণেন চেৎস্ক্যক্ষরে সমানাক্ষরাবধিপ্রতিষেধঃ
। বলৈকদেশা বর্ণগ্রহণেন চেৎস্ক্যক্ষরে সমানাক্ষরাপ্রয়ো
বিবিঃ প্রাপ্রোতি স্প্রতিষেধঃ। অথে ইক্র। বাষো উদক্ষ্। "অকঃ স্বণে দাঘ"
ইতি দীর্ঘত্বং প্রাপ্রোতি।

বঙ্গান্থবাদ।—এইরূপ বিচারের দারা এমন বিশেষ কি কল লাভ ইইবে ?
ববের একদেশও যাদ বর্ণ গ্রহণেহ গৃহী গ্রহণ, তবে মিলি গ্রহরে তুল্যাক্ষর
নিমিত্ত বে বিধি, তাহার নিষেব প্রাপ্ত ইহবে। *।

় বর্ণের একাংশও যদি বর্ণগ্রংণেই গ্রংণায় হয়, তাংশ হইলে (এ । ঐ ঔ প্রভৃতি) সংযুক্তাক্ষরে, ভুল্যাক্ষর নিমিত্ত যে বিধি প্রপ্রে হওয়। উত্তত, ভাহার নিষেধ করা কন্তব্য হইবে।

তাৎপথ্যাথঃ — অ কারের পরে অ কার, ইকারের পরে ইকার প্রভৃতি
সমান সমান বর্ণ পরে থাকিলে উভয়ে মিলিয়া দীর্ঘ হয়, য়েমনঃ—লক্ষ্মী + দিশ =
শক্ষ্মীশ, ছয়ি + ইচ্ছ = হয়ীক্র হত্যাদি। এইরূপ সির্দ্ধি অক্ষরে একার বা ওকাকের পরে, য় কার বা উ কার খাকেলেও উভয়ে মিলিয়া দার্য একাদেশ ইইবে।
বেহেত্ একারের শেষাংশে ই কার রহিয়াছে এবং ওকারের শেষাংশে উ কার
রহিয়াছে। স্বতরাং উভয় ই কার এবং উভয় উকার এক্ত মিলিত হইয়া
১৯২ উদ্বোধন। [৩য়—৬ৡ সংখ্যা;

13 633

आठा के अध्योत्।।

স্বামী বিবেকাননা।] (b JUN 19) = ১৩৩ পৃথার পর।

বর্তমান কালে যতদ্র কেন্সেরে, জন্দীপের মন্ত্রাগৃও আরবের মরভূমি অন্তর্গের প্রধান আড্ডা। ঐ স্থান্ত এক্ষা হারে, পশুপাল, মৃগয়াজীবী, অন্তর্কুল, সভা দেবভাদের ভাড়া দিয়ে, গ্রিনীমীয় ছড়িয়ে দিয়েছে।

ইন্ধুরোপ খণ্ডের আদিম নিবাসী এক জাত অবকা ছিল। তারা পর্বত-গহববে বাস কর্তো; যারা ওব মধ্যে একটু বৃদ্ধিমান, তারা অল্প গভীর তলাওয়ের জলে থোঁটা পুতে, মাচনে বেঁধে, সেই মাচানের উপর ঘর দোর নির্মাণ করে বাস কর্তো। চক্মিক পাথরের তীর, বর্ষার ফলা, চক্মিকির ছুরি ওপর ৬ দিবে সমস্ত কাজ চালাত।

ক্রমে জসুরীপের নরস্রোত ইউরোপের উপর পড়তে লাগলো। কোথাও কোথাও অপেক্ষাকৃত সভা জাতের অভানয় হলো; রুব-দেশান্তর্গত কোনও জাতির ভাষা, ভারতের দক্ষিণি ভাষা অনুক্প।

কিন্তু এ সকল জাত বর্ষার, অতি বর্ষার আস্থার রইল। এসিফা মিনিক হতে একদল স্থাসভা মার্ষ্ দরিকেট দ্বীপপুঞ্জ উদর হান, ইউরোপের সানিকেট স্থান অধিকার কব্লে, নিজেদের বুদ্ধি স্থার প্রাচীন মিস্বের সাহায়ে এক অপূর্বা সভাতা স্ঠি বির্লে; তাদের আমরা বলি যাবন, ইয়ুরোপীরা বলে গ্রীকৃ।

পরে ইতালিতে রোমক নামক অন্ত এক বর্দার জাতি, ইটু শ্কান্ নামক এক সভা জাতিকে পরাভূত করে, তাদের বুদ্ধি নিলা সংগ্রহ করে নিজেরা সভা হলো। ক্রেনে রোমকেরা চারিদিক্ অধিকার কর্লে; ইয়ুবোপ থভের দক্ষিণ পশ্চিম ভাগের ঘাবতীয় অসভা মাতৃষ তাদের প্রজা হলো। কেবল উত্তরভাগে বন জঙ্গলে বন্ধর জাতিরা স্থানীন রইল। কাল বশে রোম ঐপর্যা-বিলাস-পরতায় তুরুল হতে লাগ্লো; সেই সময় আবার জসুদ্দিপ অস্তরগহিনী ইউ-রোপের উপর নিক্ষেপ কর্লে। অস্তর তাজনায় উত্তর-ইউরোপী বর্ধর রোম-সামাজ্যের উপর নিক্ষেপ কর্লে। অস্তর তাজনায় উত্তর-ইউরোপী বর্ধর রোম-সামাজ্যের উপর পজ্লো। রোম উৎসল্ল হয়ে গেল। জমুদ্দিপর তাজার, ইউরোপের বর্ধর আর ইউরোপের ধ্বং গাবশিপ্ত গোমক, এীক মিলে এক অভিনব জাতির স্টে হলো; এ সময় য়াহণাজাতি রোমের দারা বিজিত ও বিভাড়িত হয়ে, ইয়ুরোপমর, ছড়িরে পজ্লো, সঙ্গে সঙ্গে ভাগের নৃতন ধর্ম ক্রানীও ছঙ্রে পাড়্লো। এই সব বিভিন্ন জাত, মত, পথ, নানাপ্রকারের

শহর কুল, মহামারার মুচিতে, দিধারাত্র যুক্ত, মারকাটের আভনে, দীলৈ মিশতে শাগ্লো; ডা ছডেই এই ইয়ুরোপী জাতের স্তি।

হিছর কাল রঙ্গ থেকে, উত্তরে হলের মত মাদা রঙ্গা, কাল কটা লাল বা পাদা চুল, কাল চোখা, কটা চোখা, নীল চোখা, দিবি। হিঁছর মত নাক মুখ চোখা, বা ঝাঁতা মুখ চীনে রাম, এই সকল আকৃতি বিশিষ্ট এক বর্ষার, অতি মুর্বর ইউরোপী জাতির স্পুট হয়ে গেল। বিছু কাল তারা আপনা আপনি মার ফাট কর্তে লগেলো; উত্তরের গুলো বংঘটে রপে বাগে পেলেই অপেকার্যুত্ত সভাগুণোর উংসাদন কর্তে লাগ্লো। মাঝখান থেকে, ক্লটান ধর্মের হুই শুরু, ইতালীর পোপ (ফ্রাসী, ইতালী ভাষার বলে পাপ,) আর পদিচমে ক্টোন্টিনোপ্লসের পাটি রার্ক, এরা এই জন্ত প্রায় বর্ষার্বাহিনীর উপর, তাদের রাজা রাণী সকলের উপর কর্জান্তি চালাতে লাগ্লো।

ে এদিকে আরব মকভূমে মুখনমানি ধর্মের উদর হলো, বছপশুপ্রার আরব এক মহাপুরুষের প্রেরণাবলে আদম্য ভেজে, আনাহত বলে, পৃথিনীর উপর আঘাত কর্লে। পশ্চিম পূর্ক ছ প্রান্ত হতে সে তরজ ইউরোপে প্রবেশ কর্লে। সে স্থোভারত ও প্রাচীন গ্রীসের বিভাবুদ্ধি ইয়ুরোপে প্রবেশ কর্তে লাগুলোঃ

জনুরীপের মাঝধান হতে দেলমূল ভাভার নামক অহর জাতি মুবলমান ধর্ম প্রধণ করে, আদিয়া মাইনর প্রভৃতি স্থান দখল করে ক্রেল্। আরাবরা ভারতবর্ষ ক্ষাের অনেক চেটা করেও সফল হয় নাই। মুবলমান অভ্যাদর সমস্ত পৃথিনী বিদ্যা করেও ভারতবর্ষের কাছে কুন্তিত হরে গেল। সিন্ধুদেশ একবার আক্রমণ করেছিল মাত্র, কিন্ধ রাধ্তে পারেনি; ভার পর থেকে আর উভ্যম হয়ে নাই।

ক্ষেক শতাব্দির পর বধন তুর্ক প্রভৃতি তাতার কাতি বৌদ্ধর্ম ছেড়ে ম্বলমান হলো, তখন এই তুর্কিরা সমভাবে হিন্দু, পালী, আগাব, সকলকে দাস করে কেল্লে। ভারতবর্ষের সমন্ত মুবলমান বিজেতার মধ্যে একলণও আরবি বা পালী মর, সব তুর্কাদি তাতার। রাজপ্তানার সমন্ত আগত্তক মুবলমানের নাম তুর্ক—তাই সত্যা, ঐতিহাসিক। রাজপ্তানার চারণ যে গাইলেন, "তুরু-প্র্কা বিচি জোর", ভাই ঠিক। কুতৃব্ উদ্দীন হতে মোগল বাদ্দাই পর্যান্ত, আর ভাতার; যে জাত ভির্কতী, সেই জাত; কেবল তথেছেন মুবলমান, আর ছিল্পার্থী বে ক্রে বদ্লেহেন, চাকানুখ। ও েই প্রাচীন অন্তর বংশ। আলও

কাবুল, পারস্ক, কারবা, কন্টাণ্টিনোপলে নিংধাননে বলে রাজত কর্চেন, সেই অনুর ভাতার । গান্ধারি, কারনী, আরাব নেই তুরুজের গোলামী কর্চেন। বিরাট্ চীন সামাজ্যও সেই তাতার মাঞ্র পদতলে, তবে সে মাঞ্ছ নিজের ধর্ম ছাড়ে নি, ম্বলমান ধ্রনি, মহালামার চেলা। এ অনুর জাত কমিন্ কালে বিপ্রাবৃদ্ধির চর্চা করে না, জানে মাত্র গড়াই।ও রক্ত না মিদ্লে, যুদ্ধবীঘা বড় ধ্র না। উত্তর ইযুরোপ, বিশেষ ক্ষের প্রবল যুদ্ধবীঘা সেই ভাতার। ক্ষর তিন হিস্তে তাতার রক্ত। দেবাহারের লড়াই এখনও চল্বে অনেক কাল । দেবতা অনুর ক্যা বে করে, অনুর দেবক্স, ছিনিয়ে নের,—এই রক্ষ ক্রেব প্রবাধি চুটী জাতের স্পাই হয়।

ভাভাররা আরবি খলিফার নিংহাসন কেড়ে নিলে, ক্লুন্চানদের মহাতীর্থ জিকদালম্ প্রভৃতি স্থান লখল করে ক্লুন্দের তীর্থযাত্রা বন্ধ করে দিলে, অনেক ক্লুন্ মেরে ফেল্লে। কুল্টান্ ধর্মের গুরুরা কেপে উঠলো; ইউরোপ্রম্ম ভালের দব বর্কর চেলা; রাজা প্রজাকে কেপিরে ভুল্লে, —পালে পালে ইউরোপ্রম্ম বর্কর জিক্যালম্ উন্ধারের জন্ম আসিয়া মাইনরে চল্লো। কন্তক নিজেরাই কাটীকাটি করে মলো, কতক রোগে মলো, বাকি মুখলমানে মার্তে লাগ্লো। সে খোর বর্লর ক্লেপে উঠেছে,—মুখলমানের। বত মারে, ভত আসে। সে বুনোর গোঁ। আল্নাদের দলকেই লুঠ্ছে, থাবার না পেলে মুখলমান ধরেই থেরে কেল্লে। ইংরেজ রাজা রিচার্ড মুখলমান মাংসে বিলেষ খুনি ছিলেন, প্রাণিকি আছে।

বুনো মাসুষ, আর সভা মাসবের লড়ারে যা হয়, তাই হল,—জিয়সালম্
প্রভৃতি অধিকার করা হলো না। কিন্তু ইউনোপ সভা হতে লাগলো। সে
চামড়া পরা, আম মাংস থেকো বুনো, ইংরেজ, ফরাগী, জর্মান্ প্রভৃতি এসিরার
সভাতা শিধ্তে লাগ্লো, ইতালি প্রভৃতি স্থানের নাগা ফৌজ দার্শনিক মত
শিথ্তে লাগ্লো; একদল ক্রনান নাগা (Knights templars) খোর অবৈত্ত
বেদান্তী হয়ে উঠ্লো, শেষ তারা ক্রনানীকে ঠাট্টা কর্তে লাগ্লো; এবং
ভাদের ধনও অনেক সংগৃহীত হয়েছিল; তথন পোপের ত্ক্মে, ধর্ম ক্রনার
ভানে, ইউরোপী রাজারা ভাদের নিপাত করে ধন লুটে নিলে।

এদিকে মুর নামক মুখলমান জাতি স্পান দেশে অতি স্থসতা রাষ্ট্য স্থাপন কল্লে, নানাবিভার চর্চা কর্লে, ইউলোপে প্রথম ইউনিভার্নিটি রলো; ইডালি, ফ্রান্স, স্থানুর ইংল্প হতে বিভার্থী বিভা শিখ্ডে একো; রাজা রাজড়ার ছেলেরা যুক্ষিতা, আচার, কাষদা, দভাতা শিখ্তে এলো। বাড়ি ঘর দোর মনির সব নৃতন চকে বন্তে লাগ্লো।

কিন্তু সমগ্র ইউরোগ হয়ে দাঁড়াল এক মহা সেনা-নিবাস—সে ভাব এখনও। মুমলমানেরা এ০টা দেশ জয় করে, রাজা আপনার এক বড় টুক্রা বেখে, বাকি সেনাপভিদেব বেটে দিতেন। তারা খাজনা দিত না, কিন্তু রাজার আবশ্যক হলেই এত গুলি সৈতা দিতে হলে। এই বক্ষে সদা প্রস্তুত কৌজের অনেক হাসামানা রেখে, আবশ্যক কালে হাজির প্রবল ফৌজ প্রস্তুত রইল। আজিও রাজপুতানায় সে ভাব কভক আছে;— এটা ম্যলমানেরা এদেশে আনে। ইযুরোপীরা মুযলমানের এ ভাব নিলে। বিন্তু মুমলমান্দের ছিল রাজা, সামন্ত-চক্র কৌজ ও বাকি প্রজা। ইউরোপে রাজা সামন্ত্রক আর বাকি সব প্রজাকে করে ফেললে একরণম গোলাম। প্রভাবে মানুষ কোনও সামন্তের অবিকৃত মানুষ হয়ে, ভবে ভীবিত রইল—ভকুম মাত্রেই প্রস্তুত হয়ে সুদ্ধ যাত্রায় হাজির হতে হবে।

ইউরোপি দভাতা নামক বস্ত্রের এই সব হলো উপকরণ। এব ভাত হচ্ছে —এক নাতিনীভোষ্ণ পাহাজি সমুদ্রভটময় প্রদেশ; এর তুলো হচ্ছে—সর্বদা যুদ্ধপ্রির, বলিঠ, নানাজাতের মিশ্রণে এক মহা পিচুড়ী জাত। এর টানা হচ্ছে—যুদ্ধ। আয়েবকার জন্ত, ধন্দকার জন্ত সুদ্ধ; যে ভলওমার চালাতে পারে, সে হয় বড়; যে ভলওমার না ধরতে পারে, সে সাধীনতা বিসর্জ্জন দিয়ে, কোনও বীরের তলওমারের ছারায় বাদ করে, জীবন ধারণ করে। এর পোড়েন—বাণিজ্য। এ সভ্যতার উপায় তল্বার, সহায় বীরত্ব, উদ্দেশ্ত ইহ পারলোকিক ভোগ।

আমাদের কথাটা কি ? আর্যারা শান্তিপ্রিয়, চাস বাস কবে, শন্তাদি উংপদ্ম করে, শান্তিতে স্ত্রী পরিবার পালন কর্ত্তে পেলেই খুসী। তাতে ইপি ছাড়বার অবকাশ যথেই; কাজেই চিন্তানীলভার, সভ্য হবার অবকাশ অধিক। আমাদের জনক রাজা স্বহন্তে লাঙ্গল চালাচ্ছেন এবং সে কালের সর্বশ্রেষ্ঠ আত্ম-বিংও তিনি। থামি, মুনি, যোগীর অভ্যুদর—গোড়া থেকে; তাঁরা প্রথম হতেই জেনেছেন, যে সংসারটা গোকা, লড়াই কর, আর লুঠই কর; ভোগ বলে যা খুজছ, তা আছে শান্তিতে, শান্তি আছেন শারীরিক ভোগ বিসর্জনে; ভোগ আছে মনঃশীলভায়, বুদ্ধিচর্চায়, শরীরচর্চায় নাই। জন্মল আবাদ করা তাঁদের কাজ।

তার পর, প্রথমে দে পরিস্কৃত ভূনিতে নির্মিত হল যক্তবেদী, উঠ্লো সে নির্মাল আকাশে যজের ধুম, দে বায়তে বেদমন্ত প্রতিধ্বনিত হতে লাগ্লো, গবাদি পশু নিঃশঙ্কে চর্তে লাগ্লো। বিক্তা, ধর্মোর, পায়ের নীচে, তলওয়ার রইল। তার এক মাত্র কাজ ধর্ম রক্ষা করা, মাঃষ ও গবাদি পশুর পরিত্রাণ করা, বীরের নাম আপত্রাত্রা, ক্ষতির।

লাসংশ, ভলওয়ার, সকলারে অধিপতি ৎক্ষক রইলোন ধর্ম। তিনি রাজার রোজা, জগৎ নিজিভি হলেও তিনি নিদা জাগরক। ধর্মের আশ্রেমে সকলা রইল সাধীন।

ঐ যে ইয়ুনোপী পণ্ডিত বল্ভেন যে, আর্যোরা কোথা হতে উড়ে এসে ভারতের বুনোদের মেরে কেটে জনী ছিলিয়ে নিয়ে বাস কর্তেন, ও সব আহামকের কথা। আমাদের পণ্ডিতরাও দেগ্ছি সে গোরে গোঁ—আবার ঐ সব বিরপ মিথাা ছেলে পুলেদের শিখান ২চছে, এ অতি অতার।

আমি মুর্থ মানুষ, যা বুঝি তাই নিয়েই পারিস সভায় বিশেষ প্রতিবাদ করেছি। বিদেশী এবং খাদেশী পণ্ডিতদের জিজ্ঞাসা কর্ছি। সময় পেশেশ আরও সংশয় ওঠানার অংশা আছে। এ কথা ভোমাদেরও বলি—তোমরা পণ্ডিত মনিষ্যি, পুথি পাতদুগ খুঁজে দেখ।

ইউরোপীরা যে দেশে বাগ পান, আদিম মামুবকে নাশ করে নিজেরা স্থে বাস করেন, অভএব আর্ঘ্যরাও ভাই করেছে!! ওরা হা-ঘরে, হা অন্ন হা অন্ন করে, কাকে লুঠবে মার বে বলে ঘুরে বেড়ায়—আর্ঘ্যরাও ভাই করেছে!! বলি এর প্রমাণটা কোথায়—আন্দাজ ৪ খরে ভোমার আন্দাজ রাধগে।

কোন্ বেদে, কোন্ ক্সক্তে, কোথায় দেখ্টো যে আর্থারা কোন্ বিদেশ থেকে এ দেশে এসেছে ? কোথায় পাছে যে তাঁরা বুনোদের মেরে কেটে ফেলেছেন ? থানকা আহাম্মকির দরকারটা কি ? আর রামায়ণ পড়া ত হয় নি,
—থামকা এক বৃহৎ গল্প রামায়ণের উপর কেন বানাছে ?

রামায়ণ কি না আয়াদের দক্ষিণি বুনো বিজয় !! বটে—রামচক্র আর্যা রাজা স্পভা, লড়ছেন কার সঞ্জে ? লক্ষার রবেণ রাজার সঙ্গে। সে রাবণ, রামায়ণ পড়ে দেখ, ছিলেন রামচক্রের দেখের চেয়ে সভাতার বড় বই কম নয়। লক্ষার সভাতা অযোধ্যার চেয়ে বেশী ছিল বরং, কম ত নয়ই। তার পর বানরাদি দক্ষিণি লোক বিজিত হলো কোথায় ? তারা হলো সব জীরামচক্রের বন্ধু মিত্র। কোন শুহকের, কোন বালের রাজ্য, রামচক্র ছিনিয়ে নিলেন—ভা ব্ল না ? হতে পারে ¶ এক যারগার আর্য্য আর বুনোদের যুদ্ধ হয়েছে, হতে পারে হু একটা ধূর্ত্ত মুনি রাক্ষসদের জলপের মধ্যে ধূনি জালিয়ে বসেছিল। মটকা মেরে চোথ বুজিরে বসেছে, কথন রাক্ষসে চিশ চেনা হাড় গোড় ছেঁছে। বেমন হাড়গোড় কেলা, অমনি নাকি কালা ধরে রাজাদের কাছে গমন। রাজা লোহার ভামা পরা, লোহার অস্ত্রশস্ত্র নিয়ে ঘেঁড়ো চড়ে এলেন ৢ বুনো হাড় পাথর ঠেলা নিয়ে কভককণ লড়বে ? রাজারা মেরে ধরে চলে গেল। এ হঙে পারে; কিছ এতেও বুনোদের জলল কেড়ে নিসেছে, কোগার পাছে ?

আতি বিশাল নদ নদী পূর্ণ, ইফপ্রধান,স্নতল খেতা—আর্থাসভাতার তাঁত। আর্থাপ্রধান, নানাপ্রকার স্থালা, অর্থভা, অস্থা মান্ধ —এ ব্দ্রের তুলো; এর টানা হচ্ছে—ব্যাশ্রমানার। এর পোড়েন — প্রাকৃতিক ছন্দু, সংঘর্ষ নিবারণ।

ভূমি ইউরোপী, কোন্ নেশকে কবে ভাল কবেছ ? অপেক্ষাক্কত অবনত জাতিকে তোলবার তোমার শক্তি কোথায় ? যেগানে চর্লল জাতি পেছেছ, তাদের সমূলে উৎসাদন কবেছ; তাদের ভ্যাতি তোমরা বাস করছ, তারা একেবারে বিন্তী হয়ে গেছে। তোম দের আমে রক র ইতিহাস কি ? তোমা- দের অস্ট্রেলিয়া, নিউজিলও, পানিফিক্ বীপপুঞ্জ, তোলদের আফিকা?

কোথা সে সকল বুনো জাত আজ ? একেবারে নিপাত, বল্ল পশুবং ভাদের তোমরা মেরে ফেলেছ;— যেখানে তোমাদের শক্তি নাই, সেখা মাত্র অক্ত জাত জীবিত।

আর ভারতবর্ষ তা কমিন্ কালেও করেন নাই। আর্যারা অতি সরাল ছিলেন, তাঁদের অথও সমুদ্রবং বিশাল হাদরে, অমানব-প্রতিভা-সম্পার মাধার, ও সব অপাততঃ রম্ণীর পাশবপ্রণানী কোনও কালেও ছান পার নাই। ছাদেশী আহামক। যদি আর্যারা বুনোদের মেরে ধরে বাস করত, তা হলে এ বর্ণাশ্রমের স্ষ্টি কি হত ৭

ই ইরেংপের উদ্দেশ্ত — গকলকে নাশ করে, আগরা বেঁচে থাক্বো। আগ্রাদের উদ্দেশ্ত — সকলকে আমাদের সমান কর্বো, আগ্রাদের চেয়ে বড় করবো। ইউ-রোপের, সভ্যতার উপায় — তলওয়ার; আর্থ্যের উপায় — বর্ণ বিভাগ। শিক্ষা, সভ্যতার ভারতম্যে, সভ্যতা শিথবার সোপান, বর্ণবিভাগ। ইউরেংপে বলবানের জন্ম, হর্কলের মৃত্যু; ভারতবর্ষের প্রভ্যেক সামাজিক নিরম হ্র্কলকে । কর্বার জন্ম।

দেৱাদূন।

(श्रेमत्रकम् ठक्कवर्टी, वि. व ।)

হিলুরা বলেন, হিমালয় দেবগণের লীলাভূমি; বৈজ্ঞানিক বলেন, প্রাক্তির স্থাজিত রক্ষভূমি; অবগ্রাষ্থাদী বলেন, ধোগীগণের ধোগভূমি; এবং ভূবিজ্ঞা

উত্তিপ্বিজ্ঞাবিং পণ্ডিভগণ ইহাকে অনস্তর্গ্লাধার, অনস্ত ফলভূল প্রস্থা স্থর্মা
উল্লান বলিয়া নির্দ্দেশ কবেন। ফলতঃ ইহাদের বিভিন্ন উচ্ছিগুলির কোনটাই
অসক্ষত বলিয়া বিবেচিত হয় না। ২০ কত মহাক্বি ইহার শোভা বর্ণনে
পরাস্ত মানিয়াছেন। কুমারসম্ভবের সেই "হিমালয়ো নাম নগাধিরাজঃ" প্রভৃতির
বর্ণনা পড়িয়া আরে গামিয়াম্পহাস্থিতাম্' হইবার ইচ্ছা হয় না। তবে উদ্বোধন
সম্পাদক মহাশ্রের আলেশাল্সারে হিমাচলের বিস্তৃত ও স্থর্মা দেরাদ্ন
উপত্যকার বিষয় কিঞ্ছিং লিপিব্দ্ধ করিছেছি। পাঠকবর্গের ভূপ্তি হইবে কি
না বলিতে পারি না।

হিমাচলের উপত্যকাগুলির মধ্যে দেরাদুন একটা প্রধান উপত্যকা। ইহার নৈদর্গিক শোভা ও ঐতিহাসিক ইতিবৃত্ত অনেক চিম্বাণীলের দৃষ্টি আকর্ষণ করিয়াছে। এই উপত্যকার উত্তব-পশ্চিম দিকে যমুনা এবং দক্ষিণ-পূর্ব্ব দিকে ভাগির্থী প্রবাহিত৷ ইইতেছেন ৷ ইহার উত্তর-পূর্ব্ব দিকে হিমাচণ (মৈড্রী) দক্ষিণ ও পশ্চিম্দিকে শিবালীক প্রতিমানা শোভা পাইতেছে। এই উপত্যকার रिवर्षा शांध ६६ ९ अञ् ५६ म. हेल १हेर्त । अमूख अम इन इहेर्ड अ ञ्चान २०२० ফিট উচ্চ। দেরাজুনর ৫ মাইল 🖷 ফণ পুরের আর একটা পর্বান্ত আছে: ভাগার নাম নোমালা ; ইহা শিবলৌক পর্নতেরই অংশঃ চতুর্দ্ধিক পর্বভব্যুত্-পরিবেটিত দেরাদৃনকে প্রকৃতির হর্ভেত্র হুর্গ বণিশেও অভ্যক্তি হয় নাঃ পুরে সমতল প্রদেশ হইতে দেরাদুনে আসিবার ছইটা সিরিগছট ছিব। ব্যুনা মণীয় े মাইল পূর্বে টিম্লাপ।শ 😑 পঙ্গাবম্নার অন্তর্মন্ত ভূতাপের ঠিক মধায়ৰে খীরি বা মোংনপাশ। অধুনা হরিষার হইতে দেরা পর্যন্ত তেলওয়ে লাইন বসিয়াছে; স্তরাং একণে দকলে দেই পথেই এখানে বাভায়াভ করে: পশ্চিম দেরাতে বেশী জঙ্গল বা জলাভূমি নাই, কিন্তু পূর্ব্ব দেরতে অনেক क्लाकृषि ও दक्त बाह्य ; • मिटक हाशीवाला जिल जिल्ल बाह्य है । अमे विक कारक । मकनश्रमिक नगत्म श्रिशूर्व अदश् मारमित्रश विरम्द सम्बद्धि ।

মোহনপাশের মধ্য দিয়া রাজপুর (দেরা হইতে ৭ মাইল উত্তর-পূর্ক;
মৈশুরী পাহাড়ে চড়িবার রাস্তা) পর্যান্ত একটা পানা রাস্তা সমতল এনেশ
হইতে দেরার মধ্য দিয়া চলিয়া গিয়াছে। দেরা হইতে ২০ মাইল দ্রস্থ যমুনা
তীরবন্তী রাজঘাট পর্যান্ত আর একটা কাঁচা রাস্তা গিয়াছে; ইহাকে চক্রাদা
রোভ বলে; কারণ যমুনার অপর পারস্থিত শৈলনিধাস চক্রাধা এই রাস্তায়
যাওয়া যায়। দেরার পূলদিকে দেরা হইতে হরিদ্বার পর্যান্ত আর একটা রাস্তা
আছে; ইহার দৈর্ঘ্য এ১ মাইল। অধুনা ঐ রাস্তায় প্রায় লোক চলে না।
রেলওয়ে হইয়া সাধারণের চলা ফিরা করিবার স্থবিধা হইয়াছে। হরিদ্বার
হইতে দেরা প্যান্ত ৩২ মাইল রেলওয়ে বিদ্যাছে।

দেরাদ্নের জল হাওরা অভিশয় স্বাস্থ্যকর। উপত্যকায় প্রবেশ করিলে বেগণ হয় যেন বঙ্গদেশে প্রবেশ করিলাম। স্থানে স্থানে ধান্তক্ষেত্র, ইক্কেত্রও কদলীর বাগান ইহার অপূর্বর উপরভাশক্তির পরিচয় দিতেছে। বর্ধা ভিন্ন অন্ত সময় ইহার জল হাওয়া অতিশয় পরিষ্কার ও স্বাস্থাকর হয়। শীতকালে সময় সময় এখানেও বরফ পড়ে। গড়পড়তা ভাপের পরিমাণে ০৭° হইতে ১০১° ডিপ্রি। এখানে শাল, তুন্ (পেরেঁ।), শিশু ও পাহনগাছ বহল পরিমাণে দৃষ্ট হয়। নেশপাতি, ট্রবেরা, জান, আম, চা, রিয়া ও নানবিধ স্থান্ধি ধান্তের চাষ হয়। নিকটবত্তী শিবালীক পরতে হন্তী, ব্যাঘ্র, ভল্লক, হারনা, চিতাহারণ, চতুংশৃক্হরিণ, বহুবুকুর ও শক্কারী একপ্রকারের হরিণ (Barking Deer) পাওয়া যায়। দেরাদ্নে ইংরে-জর মেলিটারা কেন্টনমেন্ট হওয়া অবধি উহাদের ঘংশ অংসপ্রায় হইবাছে। এখানে মহাগের মাছ পাওয়া যায়; প্রায় কই মাছের মত, থেতে খুণ স্ক্রাছ।

এ স্থান হইতে মৈগুরীর দৃশ্য অভীব মনোহর। মেগুরীর সাদা সাদা বাড়ীগুলি মকভূমে ইতন্ত ভঃিক্ষিপ্ত অভিখণ্ডের আর প্রতাধনান হয়। অনেক দমধে মেগুরা পাহাড়ের দিয়দেশ নেঘে ঢাকিরা থাকে; কিন্তু ইপরে হিমগুল ধোধবলি খেন দেবলোকের চিত্র উপস্থিত করে। মেগুরা সমূদ্র সমতল হইতে প্রায় ও০০০ হাজার ফিট উচ্চ; দেরানুন হইতে ১২ মাহল দ্রে। প্রথল বর্ধারস্ত বিধায়ে আমি নৈগুরী উঠিতে পারে নাই; স্কুতরাং তথাবার বিশেষ ব্রভাষ্ট লিখিতে পারিলাম না। তবে গুনিতে পাইলাম, বাযুন্থল মেখুলু থাকিলে মেগুরীর হাইলেও হইতে হিমালবের চি নীংবারাকুত পরিষ্ঠশেশব ও কেদারনাথ দেশন করা যায়।

· দেরাদ্নে দেখিবার হুটী কুলর দৃশু **আছে**। একটী সহস্থারা—ইহা রাজ-পুরের পূর্ম্বদিকে অবস্থিত। একটা গিরিপৃষ্ঠ বহিয়া যেন অজস্র রুষ্টপাত হই-তেছে; জল কোথা হইতে আগে, সহস্রধারার নিমে গেলে তাহ। বুঝা যায় না। উপরের কোন বারণা অন্তঃসলিলা হইয়া বোধ হর সহস্র ধারায় আশিয়া বিন্দু বিন্দু বৃষ্টিরূপে পরিণত হইয়াছে। স্থস্থারার নিকটে, অনেক গাছ পাতা কির্মণে পাথরে পরিণত হয়, তাহা দেখা যায়। অনেক পর্য্যটক এথানে প্রস্থাভত (Petrified) গাছ পাতা সংগ্রহ করিয়া থাকেন। দেরাদুনের উত্তরণশ্চিমে প্রায়

মাইল দূরে টপ্কেশ্ব নামক একটা গিরিগুহা আছে। দেখানে একটা শিবলিঙ্গ স্থাপিত আছেন। উপ্টপ্শব্দে পূর্বের ঐ শিবের মাথাম জল (কেহ কেহ বৰেন ছগ্গ) পড়িত বলিয়া উহার নাম টপ্কেশ্বর ত্রইয়াছে — এরপ জনশ্রতি। কলিকাতার দানশীল জমিদার এীযুক্ত বাবু কালীক্ষ ঠাকুর মহোদয় (যিনি দেরাতে রাজানাহেব বলিয়া পরিচিত) বহ অর্থব্যুর করিয়া যাত্রিগণের যাতায়াতের রাস্তা বান্ধাইরা দিয়াছেন। এ স্থানটা যোগীদিগের তপস্থার উৎকৃষ্ট স্থান বলিয়া মনে হয়।

দেরাদুনের পূর্কাপর ইতিবৃত বড়ই অদৃত। ইহা কেদার থণ্ডের মধ্যে অবস্থিত। শিবালীক পর্বতে শিবালয় নামেরই অপত্রংশ হইবে। এ স্থান ভূতভাবন ভূতনাণের আদি লীলাভূমি বলিয়া হিন্দুরা নির্দেশ করিয়া থাকেন। কেহ বলেন এ স্থানেই দেবাস্থর যুদ্ধ হয়; গত শতাকীতে সমতলনিবাসী ও পার্বতাবামীদের মধ্যে বে দকল যুদ্ধ হইরা গিয়াছে, অভি প্রাচীন সময়ে যে সেরপ বা তলপেকা ভীষণ চর যুদ্ধ না হইয়াছিল, কে জানে? সে দকল যুদ্ধ-বিগ্ৰহই জুনুর দেশবাদিগণের নিবট দেবাত্ম যুদ্ধ বলিয়া পরিচিত কি না বলা যায় না। দ্রোণাচার্য্য এ স্থানে তপতার জন্ত আদিয়ছিলেন; একটা গুছা এখনও "দ্রোণাশ্রম" বলিয়া অভিহিত হয়। দেরাদূনের নাম জোণাচার্যোর নামের সহিত সংশ্লিষ্ট কিনা, বিবেচনার বিষয়। ক্ষিত আছে পঞ্চপাগুবগ্র এই উপত্যকা পথেই মহাপ্রস্থানে গিলছিলেন। বালখিলা মুনিগণের ছিতীয় ইক্স ষ্টির সংকল, এই স্থানেই উপস্থিত হইয়াছিল বলিয়া জনক্রতি আছে। থৰ্কাকৃতি গুৰ্থাগণ বাল্থিলামূনিগণেরই রূপান্তরিত বংশধর কিনা সুধীগণ विद्वहना कक्रन।

প্রায় १००।৮०० বৎসর পূর্বের দের।দূন গরোয়াল রাজার অধীন ছিল। অন্নশংখ্যক বেঞ্জারা আদিয়া এখানে প্রথম উপনিবেশ স্থাপন করে। সুমুদ্ধে সমধ্যে মুগলমানেরা এছান অধিকার করিতে প্রথাস পাইরাছিলেন। ১০৭৯
নীপ্রাক্তে অব্যান্ ইরাছিম ও মাস অবরোধের পব দেরা দধল করেন। ১৭৫৭
নীপ্তান্দে সাহারণপুরের গবর্ণর নাজীবুদ্দোসা পুনরায় এ স্থান অধিকার করেন।
শিক সেনাপতি ভাগল সিং ১৭৮৩ প্রীপ্তান্দে এ স্থান অধিকার করিয়া লুপ্তন
করিয়াছিলেন। ১৭৮৬ খ্রীপ্তান্দে রোহিলাধিনায়ক গোলাম কাদের এ দেশ
অম করিয়া ভয়ানক অত্যাচার করেন। এইরপ সাম্মিক আক্রেমণের অধীন
ছইলেও, বিজেভারা কেহই এখানে অবস্থান করেন নাই। লুঠ পাট করিয়া
চলিয়া যাইতেন। অথবা কাহাকেও রাজপ্রতিনিধি পদে স্থানন করিয়া
রাখিতেন। কিন্তু গবর্ণরেরা সর্কানই গরোয়ালের প্রাথান্ম ও ব্যাতা অলাধিক
স্বীকার করিত। ১৮০০ খ্রীটান্দে নেপাল হইতে রণবীর সিংহের নির্বাসনের
পর গুর্ধা সন্দার গুমর সিং ১৮০৩ গ্রীপ্তান্দে দেরাদ্ন অধিকার করেন।
তদব্ধি ১৮১৪ খ্রীপ্তান্দ পর্যান্ত ইহা নেপালের অধীন ছিল। লর্ড ময়রার শাসনকালে ১৮১৪ খ্রীকে ইংরেজের সহিত নেপালীদের যে যুদ্ধ হয়, সেই য়ুদ্ধের
স্বিক্তির ১৮১৫ খ্রীকে দেরাদ্ন ইংরেজের অধীনে আদিয়াছে।

যে যুদ্ধে দের'দূন ইংরেজদিগের হস্তগত হয়, সে যুদ্ধের বুতান্ত অলাধিক সকলেই বিদিত আছেন। কিন্তু ভাহার ত্একটী ঘটনা এথানে তিপিবদ্ধ করা প্রবেজনীয় মনে করিতেছি। গুর্থ: দৈল ইংরেজদিগের ২টী পোলিস ষ্টেশন আক্রমণ করিয়া সমস্ত আফিসারদিগকে ব্য করেন। লউ ময়বা নেপাল-দর্বারে এ বিষয় জানাইলে নেপাল গ্ৰণ্মেণ্ট তাহাতে কর্ণশত না করিলা বরং ভর্পনা-স্চক উত্তর প্রদান করেন। স্তরাং যুদ্ধ অনিবার্য্য হইয়া উঠে। দেরাদূনের ত। মাইল উত্তরপূর্বে কালেরা নামক গুর্থাদের একটা জীর্ণ চুর্গ ছিল। ইংরেজ জেনারল জিলিস্পি ৩৫০০ দৈতা লইয়া ঐ ছুর্গ আক্রমণ করেন। ওমরসিংহের ভাকৃপুল মহাধীর বলভন্ত সিং অত্যন্ত্রসংখ্যক (৩০০। ৪০০) সৈন্ত লইয়া তথাস অব্রিতি করিতেছিলেন। ইংরেজের। ২ম বার হারিলা দেরানুনে আসেন। আনেক দৈত ও জিলিদ্পি হত হন। ১ মাস পরে পুনরায় বছ সৈত সমাবেশ করিয়া ইংরেদ্ধেরা বল ভদ্রসিংকে আক্রেমণ করেন; দেবারেও ইংরেদ্ধের বছ সৈঞ হত 🛮 আহত হয়। বলভদ্র সিং অবশেষে হুর্গ পরিভাগে করিতে বাধ্য হন। ষ্থন বলভদ্ৰ বাহির হইলেন, তথন দেখা গেল, মাত্র ৭০ জন দৈত ভাহার সঙ্গে আছে৷ এই ৭০ জন সৈতা আগণ্য ইংরেজ সৈতাব্যহ ভেদ করিয়া "লস্তগরে" নির্কিলে ফিলে গিরাছিলেন ঃ নেজর লাড্লো ৪০০ দৈত শইরাঞ ভাহার পশ্চাদাবন করিয়াও কিছু করিছে পারেন নাই। তৎপর কালেকা

হুৰ্গ ইংরেজ ভূমিশাৎ করিয়া ফেলেন। বলভন্দ সিংএর বীরত্ব কাহিনী হিমাচলের গভীর গহররে এখনও প্রতিধ্বনিত হয়। কালেকার নাম এখন "নালাপানী"। বীরের মর্যাদাকারী সহ্লয় ইংরেজগণ কালেয়া ফোর্টের সম্পুর্বে হুইটি
মহুমেন্ট নির্মাণ করিয়াছেন। একটি জেনারেল জিলিস্পি ও ২য়টি বলভন্দ
সিংহের। বলভন্দ সিংএর মনুমেন্টের গায় এরপ লিখিত আছে। "This
is inscribed as ■ tribute of respect for our Gallant Adversary
Bulbudder, commander of the Fort and his brave Goorkhas,
who were afterwards while in the Service of Ranjit Singh
shot down in their ranks to the last man by Afghan Artillery".

দেরাদুনের প্রধান কীর্ত্তি গুরুদ্বারের শিথ মন্দির। ইহার ইতিহাস দেরাদুনের ইতিহাসের সহিত সন্মিলিত। গুরু নান্কের বংশোদ্ভব হরগোবিন্দ রায়ের পৌত্র, হররায়ের পুত্র গুরু রাম রায় ১৬৯৯ এটিাজে দেরাদূনে আগমন করেন। দারা শেকোকে হর রায় সাহায়। করার, তিনি গ্রীয় পুত্র গুরু রাম রাধকে আরং-জীবের নিকটে প্রতিভূম্বরূপে রাখিতে বাধ্য হন। এই গুরু রাম রায়ের জন্ম সম্বন্ধে সন্দেহ থাকায়, হরগোবিদের ২য় পুত্র তেগ বাহাত্ব শির্থদিগের ১ম গুরু হন। এই গুরু রাম রায়কেই তেগ বাহাতরের প্রাণদণ্ডের কারণ বলিয়া অনেকে অফুনান করেন। তেগ বাহাদুরের মৃত্যুর পর অমিততেলা গুরু গোনিন্দের প্রতি-প্রতিহলিত চাল হত্যা ওজার মান রায় সারাজীবের সাহায়ে। গ্রোয়ালের অধিপতি ফতেগাহার নিকট আগমন করত দেরাদনে বাস ও মন্দির তুলিংক্তি আদেশ পান। ফতেসাহা ঐ মন্দিরের ও গুরু রাম রায়ের সঙ্গতদিগের ভরণ পোষণার্থ অনেক গুলি গ্রাম দেন। একণে গুরুষাবের মহান্ত মহারাজের বিত্তর আরু: বড় জ্মীদার বলিরা পরিচিত। উক্ত গুরুরামরাবের স্থক্তে অনেক অন্তুক গ্র প্রচলিত আছে। িনি শাকি ইচ্চার মরিতে ও বাঁচিতে পারিতেন। ভিন দিন ব্যাপী সমাধির পর তাহার দেহপাত হয়; মুত্যুকালে স্ত্রী সম্মুখে ছিলেন। গুরুরামের গদি ও বিছানা এখনও মন্দির মধ্যে স্বাস্থ্র রক্ষিত আছে। চেলা দিগের মধ্য হইতে একজন করিয়া মহাস্থ নির্দিষ্ট হয়। গুরুষায়ে একটি মনো-হর পুক্ষরিণী আছে। ভাষতে হাজার হাজার লাল মাছ খেলিয়া বেড়ায়। প্রতি বৎসরের ১লা চৈত্র গুরুত্বারে সঙ্গুত (মেলা) হয়। ১০ দিন পর্যান্ত থাকে। দে সমর পঞ্জাব হইতে বিস্তর সাধুর ধমাগম হর ৷ ৩ই চৈত্র এক প্রকাশ্ত নিশান

উঠান হয়। এবং বহু সাধু সল্লাদীকে ভাঙারা দেওয়া হয়। দেরাদ্নে এইটি দেখিবার ম্থান বটে।

দেরাদ্ন উত্তরপশ্চিম প্রদেশের লেফ্টনেন্ট গবর্ণরের অধীন। এম্থান হইছে প্রাবের সীমানেশ নিকটবর্তী। গবর্ণনেন্টের কুল ভিন্ন আমেরিক। মিশনের একটী স্কুল বালিকাবিদ্যালার ও অনাগাশ্রম আছে। অধিবাসী মাত্রই হিন্দু ও শৈব। মুসলমান্ প্রায় নাই; ৩।৪টি মস্জিদ্ মাত্র আছে। ত্রাহ্মরা এখানে ছু একবার ধর্মপ্রচারে আসিয়াছিলেন; কিন্তু বিশেষ কল হয় নাই। ইহা হিন্দু ধর্ম প্রচারের স্থল বটে। ওক্রারের উদাসাগ্র নানকপন্থী।

দেরাদুনের মিলিটারী কেন্টননেন্ট হিনাচণের উত্তর পশ্চিম রক্ষার অন্যতর প্রধান সেনানিবাস। ইহাতে সনস্তই গুর্থা সৈতা। একটা সৈতকে জিজাসা করাস সে বলিল, তারা ৭ হইতে ১৫ নাহিয়ানা পর্যান্ত পাইরা থাকে। বন্দুক ও সন্ধিন ভিন্ন সকলের সন্ধেই কাত্রী (a kind of dagger) খাকে। ইহারা হতুই ক্ট সহিছু; পার্লি সুমুদ্ধে অসীনশক্তি প্রকাশ করিরা থাকে। এসানে কুগ হয় না; মিং সোর ১১০০০, হাজার টাকা থবচ করিয়া কাছারীর নিক্ট ২২৫ কিট্ গভীর একটি কুপ থন্ন করাইরা ছিবেন। হিমাল্যের উপরের শ্রেণার জল কেনাল করিয়া দেরালুনে আনা হট্যাছে। তল্বারা সকলের মানাহার নির্কাহিত হয়।

কাবুলের ভূতপূর্ক আমীর ইয়াঁকুব্থা এখানেই ইংরাজের নছরবলী হইয়া কাল কাটাইতৈছেন। ইংরেজেরা ইংধাকে উংক্ট বাড়ী বাগান দিয়াছেন। একদিন বেড়াইবার কালে আমি সেই ভেঙ্কঃপুঞ্জি আমাহকে দেখিয়াছিলাম। বড়লাট্ সাহেবের বিভিগার্ড এখানেই থাকে।

উদ্বোধন সম্পাদক মহাশয়ের আদেশ মত পাঠকগণের অবগণির নিমিত্ত দেরাদুনের ইতিহাস কথঞিং লিপিবন্ধ করিনাম। জি, আর, সি, উইলিয়মের ইতিহাসে দেরাদূনের বিস্তৃত ইতিবৃত্ত লিখিত আছে। ইতি—

মক্তিক ও শিক্ষা।

(স্বামী ওদানন্দ)

আমেরিকার আজকাল সকল বিষয়েরই উন্নতি দেখা যাইতেছে। এক্ষণে আমেরিকার ক্ষর্যত কলস্বিয়া ডিঞ্জীক্টে মানুবের মন্তিক্ষের ক্রমবিকাশ ও শিক্ষার সহিত উহার সম্বন্ধ লইয়া আলোচনা হইতেছে। ডাক্তার জনটোন সাহেব ছেলেদের মস্তিকের উন্নতি সম্বন্ধ বিশেষ পরীক্ষা করিয়া কতকগুলি সিদ্ধান্তে উপনীত হইয়াছেন। তিনি বলেন, আট বংসর বয়সে মস্তিক উহার পূর্ণ ওজন প্রাপ্ত হয়। জন্মের সময় মস্তিকের ওজন থাকে—আলাজ আধ সের। প্রথম বংর খুব জ্বতগতিতে বাড়িতে থাকে—এক বছরের শেষে ওজনে প্রায় র পোয়া হয়। চারি বংসরে ওজন হয় প্রায় দেড় সের। ঐ সময় ইইতেই উহার বাড় খুব অল হয়। আট বংসরে সম্পূর্ণতা প্রাপ্ত হইয়া বার বছরের পর আর বাড়ে না। ২৪ বংসরের পর আবার ধীরে ধীরে ওজনে কমিতে থাকে।

ডাক্তার জনটোন বলেন, মনের উন্নতির সঙ্গে মন্তিকের উন্নতির বিশেষ সম্বন্ধ থাকার দক্ষন, আট বংসর বয়সের বমে লেখা পড়া আরম্ভ করা ঠিক নহে। আর পড়া শুনা প্রথম আরম্ভেব সময় বেশী পীড়াপীড়ি করা ভাল নয়। ছেলে 'এঁচড়ে পাকা' হইলে খারাপই হয়, ভাল হয় না।

বেটা ছেলের মস্তিক জন্মের সময় মেয়ের মস্তিক্ষের চেয়ে বেশী ভারী হয়।
আর পূর্ণ বয়স্ক লোকের অপেক্ষা বালকের মস্তিক্ষে জল বেশী থাকে। জন্মের
সময় ছেলের মস্তিক্ষে শতকরা ৮৯ ভাগ জল থাকে, আর পূর্ণবয়স্ক লোকের
৭১ ভাগ জল গাকে। মন্তিক্ষের মণ্যস্ত cell গুলি ক্রেমশঃ ৪৫০ গুণ, কোন
কোনটা আবার ১০০০০ গুণ বাড়িয়া যায়; আবার cell গুলি যে, শুধুপরিমানে বাড়ে, তাহা নয়, ভাহাদের সংখ্যান্ত বাড়িতে থাকে।

ভাকার জন্টোন এখনও ঠিক করিয়া বলিতে পারেন নাই বটে যে, কয় ঘটা ছেলেদের পড়া দেওয়া উচিত, প্রতিধন্তিতা ভাহাদের উন্নতির অথবা অবনতির সাধক; কিন্ত ইংগ নিশ্চয় হইয়াছে যে, সচরাচর ব্যরূপ স্থলে শিকা দেওয়া হয়, তাহাতে ছেলেদের যতটা মন্তিক চালনা আবশ্রক, তাহার অধিক হইয়া থাকে।

অনুসদান দারা বিশেষরূপে দ্রীকৃত হট্য়াছে যে, অনেক ছাত্রেরই এইরূপ অনিধ্নিত শিক্ষা করিতে গিয়া শরীরটা একেবারে মাটি ইইয়াছে। ডাকার জনপ্রেন বলেন, চক্ ও সায়ুবোগই কুলের ছেলেদের বিশেষ ব্যারাম। আর অনিদ্রা, বুক ধড় ফড় করা এবং অস্তান্ত স্বায়বীয় রোগও স্কুল হইতে উৎপন্ন হয়। যত পড়িবার ঘণ্টা বাড়ান হয়, আর ছেলেরা যত ক্লাসে উঠে, ততই এই সব বেশী আরম্ভ হয়। স্কুটডেনে এই সম্বদ্ধে একবার অনুস্থান হয়।

ভাহাতে স্থির হয় যে, নীচু ক্লাদে শতকরা 💶 জন চোথে কম সেখে, আর 🕏 চু ক্লাদে শতকরা ৩৭ জনের চোধের দৃষ্টি কম।

পরীকা করিয়া আরো দেখা গিয়াছে, অনিদ্রা, ঘুমের সময় বকা এবং নিজাবস্তায় বেড়ান, স্কুলের ছেলেদের মধ্যে যত দেখা যার, অক্ত স্থলে তত দেখা यात्र ना। नखरनत्र आपियक विज्ञानत्र मकरन এই विवर्शत अनूमसान इत्र । তাহাতে খির হয়, তথাকার শতকরা ৩৮ জন ছেলের রাত্রে ঘুষ হয় না। বালিকাদের অপেক্ষা বালকদের আবার বেশী। একটি স্কুলে ৩৮১ জন বালক ছিল। তার মধ্যে ১১৯ জন ঘুমের সময় বকে, আর ২৮ জন ঘুমস্ত অবস্থার বেড়াইরা বেড়ার। শিক্ষকেরা বলেন, ছেলেদের বাপ প্রায়ই অভিযোগ করেন যে, তাঁহাদের ছেলেরা রাত্রে পড়ার সময় বকে, আর অহতেই বেশী গোল বাঁধার। প্রসিয়াতে ১৮৮৩ হটতে ১৮৮৮ পর্যান্ত পাঁচ বছরের ভিতর প্রার ক্মবেশ ২৮৯ জন লোক আত্মহত্যা করিয়াছিল: ইছার মধ্যে ১২১ জন পরীক্ষার ভয়, ক্লাসে উঠিতে না পারা, শান্তির ভয় 🖷 অভাত্ত কারণে।

ডাক্তার জনটোন বলেন, নেশী বৃদ্ধিমান ছেলের শরীর সচরাচর খাবাপ ছইয়াথাকে। ইহারা রোগাক্রাস্থ হইলে প্রায় বাঁচে না। অস্বাভাবিক বুদ্ধি দেখিলে বাপ মায়ের খুব আনন্দ হয় বটে, কিন্তু উহা স্বায়ুকেন্দ্রগুলির অস্বাভা-বিক অবস্থার চিহ্ন মাত্র। ভাহাব প্রমাণস্বরূপ ভিনি বলিভেছেন, নিগ্রো বালক সাহেব-বালককে প্রথম অবস্থায় খুব ছাড়াইরা যায়। শেষে কিন্ত আর মোটেই উন্নতি ক্রিতে পারে না। শরীর যতই ভাশ হর, ততই উহার উন্নতি ধীরে ধীরে হয়, ইগাই জীব স্ষ্টির একটা নিরম।

মন্তিকের উন্নতির দঙ্গে সঙ্গে মন্তিকের খুলিও ঠিক পরিমাণ অনুসারে বাড়িতে थारक। यनि नवजाल निकत थुनि थवा बाह्य ১०, एटव २२म मारत छेटा হয় ১৫, আর ১৪ বংসবে হয় ২০। আধা বয়স হইলে খুলির স্থুলতা ত্রমশঃ কমিতে থাকে। বুড়ো লোকের মাথার খুলি খুব পাতলা ও ভঙ্গপ্রবণ।

ছেলেদের মন্তিফ ও শিক্ষা সম্বক্ষে খুব আধুনিক উন্নত্ত মত প্রকাশ করা গেল। এক্ষণে আমাদের দেখের প্রাচীন মত ও বর্ত্তমান কালের শিকাদম্বন্ধে ছুই কথা বলিয়া প্রবন্ধ শেষ করিব। এই বিষয় যোগ্য ব্যক্তিগণের নীতিমত আলোচনার বিষয়, কারণ Child is the father of the man.

আমরা প্রাচীন স্থতিতে দেখিতে পাই, গর্ভাইমে ব্রাহ্মণের উপনয়নের সর্মপ্রথম কাল । উপনয়ন বাতীত বিজের পাঠ আরম্ভ হুইত না। স্থতরাং

দেখা যাইতেছে,সাত বংসরের কমে শিক্ষা কিছুতেই আরম্ভ হইত মা। ক্ষতিপ্লের, বৈশ্যের আরো বিলম্বে। আর এক কথা বলি। তথন ব্রন্মচর্যের উপর একটা বিশেষ ঝোঁক ছিল। তাহাই ছিল শরীর ভাল থাকিবার এক প্রধান কারণ। এখন দেই দিকে দৃষ্টি ও সেই বিষয়ের শিক্ষা একেবারে উঠিয়া গিরাছে। ছেলেকে কতকণ্ডলা জিনিষ গিলানকে যদি শিক্ষা বলে, এখন হইতেছে ভাহাই। ধর্ম আর শরীরের দিকে ত দৃষ্টিই নাই। আমেরা ধেমন, আমাদের চেলেরাও ভদ্রপ হইভেছে। এখন চেষ্টা কেবল কোন মতে ২া৫ টাকা উপার্ক্তন করিয়া অনুসংস্থান করা। কাবে কাবেই তাহার উপায়স্থরূপ লেখা পড়া না শিখিলে হইবে কি ? আমগা বলি, পুস্তক পড়া ক্মাইয়া Kindergarten system क्रमन: क्रमन: श्रादन क्रवाहेत जान इस नाकि ? वहेरदर কাঁট কতকগুণি সম্ভন করিয়া লাভ কি ? বই একটা উদ্দেশ্য সাধনের জন্ত। সেই উদ্দেশ্য হইতেছে—শরীর মন ও ধর্মে উন্নত একটা স্বাঙ্গাল্যুন্দর জীব ছওয়া। তা কই হইতেছে। এ সহদ্ধে অনেক কথা বলিগার আছে। আলোচনাও বথেষ্ট হইতেছে। কিন্তু অধিক পরিমাণে কার্য্যে পরিণত হইতেছে না কেন ? তাহার প্রধান কারণ বোধ হয় অন্তিন্তা। এই 'অর' সমস্তা যদি কেছ পুরণ করিতে পারেন, তবেই বোধ হয়, 'শিকা' সমভাও একদিন পুর্ণ इटेटन ।

নুতন বৎ সর।

(ত্রীহরিদাস দত।)

সংসার নাটক গেহে নববেশ ধরি,
আইল হে নববর্ষ প্রফুল অন্তরে;
নব প্রথ ভোগ আশে আহা মরি মরি,
স্বার মানস যেন আনন্দে বিহরে।
কি এনেচ্চ, হে বৎসর, আমাদের তরে?
ভোমার রাজতে বল কি ভ্ঞাবে নরে?
পাইবে রাজত্ব ভূমি নিধিল জগতে;
অসংখ্য অসংখ্য প্রেজা ভোমার অধীন:

সাবধান, হে রাজন্, যেন তোমা হতে, দীন প্রজাদের মুখ না হয় মণিন।

বসন্তের স্থাীতল মলয় পবন,
স্থোভনা প্রকৃতির ভূষণ স্থান্ব,
চাহি না আমরা, তাতে কিবা প্রয়োজন ?
শোভ্ক সরসে পদ্ম, গগনে ভাস্থর,
শরতের শণী পানে চাহিব না আর,
হবে না উহাতে মোণের আশার স্থার।

চাহি না এ সবে মোরা, নাহি চাহি ধনে,—
আশার উন্মত্ত হয়ে কিবা প্রয়োজন ?
কিবা কাজ তার, যার তরে অকারণে
অবিরল হইতেছে শোণিত বর্ষণ।
বর্ষে বর্ষে হইতেছি মোরা জর জন্ন,
তোমার উপর এবে করিফু নির্ভর।

ধরিয়া সুন্দর বেশ এস শুভক্ষণে,
জগতের সিংহাসনে কর আরোহণ ;
ধরি শান্তিদণ্ড সবে রাথহ শাসনে,
আর যেন নাহি সহে এ ক্ষুদ্র জীবন
সংসার অত্থ জালা অশান্তি যাতনা।
"শান্তির রাজত্ব" তুমি করাও ঘোষণা।

হে নব বংসর, তোমা করি এ মিনতি,
আছি বড় আশা করে, তোমার শাসনে
পাইব হে শান্তিস্থপ, যাবে এ ছুর্গতি,
বিজয় পতাকা তব শোভিবে গগনে,
হাসিবে সংসার তব শাসনের গুণে,—
আর না দহিব মোরা অসুখ আগুনে।

चिंदिदाधी। এই জञ्चे दे थे दे थे दे वे उन्हें ब पर्याच रय नारे; काबन, यि हेरा व উত্তর হয়, তাহা হইলে তিনি অসীন রহিলেন না: जेचत 'জাত' হইলে তাঁহার আর দবার থাকে না—িভান আমাদেরই মত একজন—এই ১েয়ার খানার মত একটা জিনিধ হইলা পেলেন। তাঁহাকে জানা যায় না, তিনি সর্বাধী মজের। তবে অবৈতবাদী বলেন, তিনি গুরু 'জেয়' হইতেও আরে। বিছু বেশী। এই কথাটা আবার বুবিতে হইবে। তোমরা বেন অজ্ঞেরবাদীদের মত ঈশার আন্তের মনে ক্রিয়া বাড়ীতে ঘাইও না। মনে কর এই চেলারখানি বুহিয়াছে, উথাকে আমি জানিতেছি। আবার আকাণের বহির্দেশে কি গাছে. দেখানে কোন লোকের ব্যতি আছে কি না, এ বিষয় হয়ত একেবারে আজের : কিন্তু ঈবর পূর্নোক্ত পঢ়াব গুলির ভার জ্ঞাতও নন, অজ্ঞেরত নন। ঈবর বরং যাহাকে 'জ্ঞাত' বলা হইতেছে, তাহা হইতেও আরো কিছু বেশী – ঈরর অভাত ও অভ্তেম বলিলে ইহাই বুঝায়, কিন্তু যে মুর্যে কেহ কেহ কোন কোন প্রস্থাক অভ্যাত বা অভ্যেষ্ বলেন, সে অর্থেন্ধে। ইপার ভাতে হইতে আরে। কিছু অধিক। এই চেয়ার মানাদের জাত; বাস্তবিক উহা মেই পূর্ণ জ্ঞানের একটা নির্দিষ্ট পরিমাণ মাত্র। কিন্তু ঈশ্বর তাথা হইতেও আনাদের অধিক ভ্যাত,কারণ তাঁথাকে অত্যে জানিয়া—তঁ.হারই ভিতর দিয়া—তবে আ্যাদিগকে চেয়ারের জ্ঞানলাভ করিতে হয়। িনি সাখিংস্থরপ, সকল জ্ঞানের তিনি অন্ত সাক্ষিপরপ। যাহা বিছু আমরা জানি, সবই অত্যে তাঁথেকে তানিয়া— তাঁহারই ভিতর দিয়া—তবে জানিতে হয়। তিনিই আনাদের আআর সারসভা বরুপ। ভিনিই প্রকৃত আমি--সেই 'আমিই' আমাদের এই 'কামি'র সারসভাস্থারপ ; আমরা সেই 'আমি'র ভিতর দিয়া বাতীত কিছুই জানিতে পারি না, স্থতরাং সমুদর্হ আমাদিগকে এক্ষের ভিতর দিয়া জানিতে ছইবে। অতএব এই চেয়ারখানিকে জানিতে ২ইলে ইহাকে ব্ৰন্ধের মধ্য দিয়া ভবে জানিতে ছইবে। অতএব ব্রহ্ম, চেয়ার অংশকা আমাদের নিক্টবর্ত্তী ছইলেন, কিন্তু তথাপি তিনি আমাদের হইতে অনেক উচ্চে রহিলেন। জ্ঞাতও নছেন, অজ্ঞাতও নহেন, কিন্তু উভা হইতেই অনস্কঞ্জে উচ্চ। তিনি তোমার আখ্রার্থ। কে এজগতে এক মুহূর্ত্ত জীবন ধারণ করিতে পারিত, কে ■ অংগতে এক নুষ্ঠিও খাস্থখাস্কার্য নির্কাহ করিতে পারিত, যদি সেই আনন্দ্রস্কল ইহার প্রতি প্রমাণুতে বিরাজ্যান না থাকিতেন ? কারণ, তাঁহারই শক্তিতে আমরা খাদ প্রধাদকার্য্য নির্মাহ করিতেছি এবং তাঁহারই অস্তিত্তে वा देवनाव, ५००४।] छेटपाधन : [0]

আনাদেরও অভিতঃ। তিনি যে এক জায়গায় দাঁড়াইয়া আমার রক্তন্ঞালন ক্রিতেছেন, তাহা নছে। তাৎপ্র্য এই যে, তিনিই সমুদ্যের স্ভাহরূপ-তিনিই আমার আত্মার আত্মা। তুমি কোনরূপেই বলিতে পার না যে, তুরি তাঁহাকে জান — উহাতে তাঁহাকে অত্যন্ত নামাইর। ফেলা হয়। তুমি শাফাইয়া নিজের ভিতর হইতে বাহির হইনা আনিতে পার না, স্কুতরাং ভূমি তাঁহাকে জানিতেও পার না। জ্ঞান বলিতে 'বিষয়ীক্রণ'—(Objectification) জিনিষকে বাহিরে আনিয়া বিষয়ের নাায় (জের বস্তর ভার) প্রত্যক্ষীকরণ-বুঝার। উদাহরণস্কাপ দেখ, অবণকার্য্যে ভোললা অনেক জিনিয়নে 'বিষ্ট্রী-ক্বত' ক্রিভেছ—যেন তোমাদের নিজেদের স্বরূপ হইতে বাহিরে প্রক্ষেপ করিতেছ। সমুদর স্মৃতি-যাহা কিছু জামি দেখিয়াছি এবং যাহা কিছু আমি জানি, সবই আমার মনে অবস্থিত। ঐ সকল বস্তুর ছাপ বা ছবি যেন আমার অভবে রহিয়াছে। যথনই আমি উহাদের বিষয় চিন্তা করিতে ইচ্ছা করি, উহাদিগকে জানিতে যাই, তখন প্রথমেই ঐ গুলিকে যেন বাহিরে প্রক্রেপ করিতে হয়। ঈশ্বরস্থকে এরপ করা অসম্ভব : কারণ, তিনি আমাদের আত্মার আত্মা অরুপ, আমরা তাঁথাকে বাহিরে প্রক্রেপ করিতে পারি না। ছান্দোগ্য উপনিষদে আছে,

'দ য এষোহণিমৈতদাত্মানিদং দৰ্মং তংসতাং স আল্লা তত্ত্বস্থা শেতকেতে।' ইংার অর্থ এই, ' সেই স্কাংরপ জগংকারণ জগতত্ত স্কল বস্তুৰ আহাা, তিনিই সতাম্বরণ, হে খেতকেতা, তুমিই তাহাই।' এই 'তম্বম্দি' বাক্য বেদান্তের মধ্যে অতিশয় পবিত্তম বাক্য-মহাবাক্য-বিলয়া কথিত হয়, আর ঐ পুর্বো-দুড বাকাংশ দারা তত্মসির প্রফুত অর্থ কি, তাহাও বুঝা গেল। 'ভূমিই দেই'— ঈথরকে এত্যাতীত অনা বোন ভাষায় তুমি বর্ণনা করিতে পার না। ভগবানকে পিতা মাতা ভ্রাতা বা প্রিয় বন্ধু বলিলে তাঁহাকে 'বিষয়ী-কুত্র' ক্রিছে হয়—তাঁহাকে বাহিরে আনিয়া দেখিতে হয়—তাহা ত ক্থন হইতে পারে না। তিনিই দকল বিষয়ের অনন্ত বিষয়ী। যেমন আমি চেরারখানি দেখিতেছি, আমি চেয়ারখানির দ্রষ্টা—আমি উহার বিষয়ী। তজ্ঞপ ঈশ্বর আমার আয়ার নিত্যদ্রষ্টা--নিত্যজ্ঞাতা--নিত্য বিষয়ী। কিরূপে তুমি তাহাকে তোমার আত্মার অন্তরাত্মাকে—সকল বস্তর সারস্তাকে 'বিষয়ীকুত' করিবে—বাহিরে আনিয়া দেখিবে ? অতএব আমি তোমাদের নিকট পুনরার বলিতেছি, ঈশ্বর ফেরও নহেন, অভ্যেগত নহেন, তিনি জ্যের অজ্যে হইতে **উ**द्धांथन । [७ म-- १ म मर्था ; 2).

খনস্থণ উচ্চে—তিনি আমাদের সহিত অভেদ, আর ধাহা আমার সহিত এক, তাহা কখন আমার জেল বা অভ্নের হইতে পারে না, যেসন ভোমার আআা, আমার আআা জেষও নহে, অভ্নেরও নহে। তুমি ভোমার আআাকে জানিতে পার না, তুমি উহাকে নাড়িতে চাঙিতে পার না, অপবা উহাকে বিষয়' করিয়া উহাকে দৃষ্টিগোচর করিতে পার না, কারণ তুমি নিজেই তাহাই, তুমি ভোমাকে উহা ইইতে পৃথক্ করিতে পার না। আবার উহাকে অজ্যেরও বলিতে পার না কারণ অভ্নের বলিতে গেলে অগ্রে উহাকে 'বিষয়ী-করিতে হইবে—ভাহাত করা যায় না। আর তুমি নিজে যেমন ভোমার নিকট পরিচিত—জ্ঞাত, আর কোন্ বস্ক তদপেক্ষা ভোমার অধিক জ্ঞাত দিয়ে অর্থে ঈশ্বর জ্ঞাতও নহেন, অভ্নেরও নহেন, তদপেক্ষা অন্যন্ত গ্রেণ উচ্চি; তক্রপ আমাদের আ্যাও আমাদের জ্ঞানের কেন্দ্র ক্রপের।

অতএব আমরা দেখিতেছি, প্রথম, এই প্রমাই স্থাবরোধী, স্থার দি হীয়তঃ. আমরা দেখিতে পাই, অবৈতবাদে ঈখনের ধারণা এই-একত্ব- সূত্রাং আমরা তাঁহাকে 'বিষয়ীকৃত' করিতে পারি না, কাবণ, জাতসারেই হউক আর অঞ্জাতদারেই হউক, আমর। দর্মাদাই তাঁহাতে দল্পীবিত এবং তাঁহাতেই থাকিয়া সমুদ্য কার্য্যকলাপ করিতেছি। আমরা বংহা কিছু করিতেছি সবই সর্মদাই তাঁহারই মধ্য দিয়া করিতেছি। এক্ষণে প্রশ্ন এই, দেশকালনিমিত্ত কি 🕈 অবৈভবাদের অর্থই এই, একটা মাত্র বস্তু আছে, হুইটা নাই। একণে আবার এই এক মত বলা হইল যে, সেই অনস্ত ব্রহ্ম দেশকালনিমিত্তের আব্রণের দ্বারা নানারণে প্রকাশ পাইতেছেন। অতএব এক্ষণে বোদ হইতেছে, ছইটী বস্তু আছে,—দেই অন্ত ব্ৰহ্ম একটী ব্ৰহ্ম, আরু মায়া অর্থাৎ দেশবালনিমিত্তের সমৃষ্টি আর এক বস্ত। আপাততঃ ছুইটা বস্ত আছে, ইহাই যেন স্থিমীছান্ত বলিয়া বোধ হয় ৷ অদৈতবাদী ইহার উত্তরে বলেন, বাস্তবিক ইহাতে এই হয় না। তুটা বস্তু থাকিতে হইলে একোর ভার—গাহার উপর কোন নিমিত্ত কাঁথা করিতে পারে না — এরপ ছইটী স্বতন্ত বস্তু থাকা আবশ্রক। প্রথমতঃ, দেশকালনিমিতের স্বতন্ত্র অন্তিত্ব আছে, বলা যাইতে পারে না। কাল আমাদের মনের প্রতি পরিবর্ত্তনের সহিত পরিবর্ত্তিত হইতেছে, স্থতরাং উহা একটা শ্বতন্ত্র অভিত্ব নতে। কখন কখন স্বপ্নে দেখা যার, আমি যেন অনেক বৎসর জীবন ধারণ করিয়াছি-- কখন কখন আবার এক মুহূর্ত্তের মধ্যে লোকে করেক মাদ অভীত হইল, বোধ কার্য়াছে। অতএব দেখা গেল, কাল ভোমার মনের ১লা বৈশাথ, ১৩০৮:] **केटबाधन**ः 232 অবভার উপর সম্পূর্ণ নির্ভির করিতেছে। বিতীয়ত:, কালের জ্ঞান সময়ে সময়ে একেবারে উভিয়া যায়, জাবার অথর সময়ে আদিয়া থাকে। দেশ স্থদ্ধেও এইরূপ। আমরা দেশের স্করপ জানিতে পারি না। তপাপি উহার নির্দিষ্ট লক্ষণ করা অন্তব হুই:লও, উহা রহিয়াছে, উহা আবার কোন পদার্থ ছইতে পুথক হইয়া থাকিতে পালে না। নিমিত্ত বা কার্য্যকারণভাব সম্বন্ধেও এইরপ। এই দেশকাল্নিমিটের ভিতর এই একটা বিশেষ্ম দেখিতেছি বে. উহারা অন্তান্ত বস্ত ২ইতে পুণক ভাবে অবস্থান কবিতে পারে না। শোমরা 'গুল্ধ দেশের' বিষয় ভাষিতে চেঠা কর, যাহাতে কোন বর্ণ নাই, ষাহার সীমা নাই, চতুর্দ্দিকস্থ কোন বস্তর সহিত ঘাহার কোন সংশ্রব নাই। তুমি উহার বিষয় চিন্তা করিতেই পারিবে না। তোমাকে দেশের বিষয় চিন্তা করিভে ছইলে তুইটা সীমার মধ্যন্তিত অথবা তিন্টা বস্তুর মধ্যে অবস্থিত দেশের বিষয় চিন্তা করিতে হইবে। তবেই দেশের অতিত অন্ত বস্তর উপর নির্ভর করিতেছে। কাল সহজেও তজ্রপ: ৩% 'দেশ' সম্বন্ধে ভূমি কোন ধারণা করিতে পার না; দেশের ধারণা করিতে ১ইলে ভোমাকে একটা পূর্বাৎতী আর একটী পরবর্তী ঘটনা লইতে হইবে এবং কালের ধাবেণ ছারা ঐ ছইটীকে শোগ করিতে ছইবে। বেমন দেশ বহিঃছ ছুইটা বল্পব উপর নির্ভর করিতেছে. ভদ্রণ কালও ছুইটী ঘটনার উপর নির্ভৱ করিতেছে। আর এই 'নিমিত্ত' বা 'কার্যাকারণ ভাবের' ধারণ এই দেশ কাল এবং আর বাহা কিছু, সাংলের উপুর নির্ভর করিতেছে। এই 'দেশকালনিমিড' সকল গুলিরই ভিতর বিশেষত্ব এই যে, উহাদের স্বতন্ত সভা নাই। এই চেলারখানা বা ঐ দেলালটার বেরপ অন্তিত আছে, উহাদেৰ ভাষাও নাই। এ বেন দকল বস্তরই পশ্চাদেশস্থ ছায়াম্বরণ, তুমি কোন মতে উহাকে ধরিতে পার না। উহাদের ত কোন সত্তা নাই: -সামর। দেখিলাম, উহাদের বাস্তবিক অত্তিত্ব নাই। খুব জোর না হর ছায়া কিন্ত উহা যে কিছুই নয়, তাহাও বলিতে পারা যায় না; কারণ, উহারই ভিতর দিয়া জগতের প্রকাশ হইতেছে—এ বেন তিনগুণের এক স্বীতাবিক নিশ্রণস্করণ—নানারপ প্রস্ব করিতেতে। অত্তব আমরা দেখিলাম এই দেশকালনিমিত্তের সমষ্টির অভিত্তও নাই এবং উহারা একেবারে অসং ও (অভিত্রশুস্ত) নহে। এ খেন ছায়ার ক্রায় স্কল বস্তকে ঘেরিয়া রহিয়াছে। বিতীয়তঃ, উহারা আবার এক সময়ে একেবারে অন্তর্হিত হইয়া বার: উলা-হরণস্বরূপ সমূদ্রের ভরঙ্গ সম্বন্ধে চিন্তা কর। তরঙ্গ অবশুই সমূদ্রের সহিত 272 केटबाधन ! िड-- १म मरथा : অতেদ, তথাপি আমরা উহাকে তরক বলিয়া সমুদ্র ইতত পুথকুরূপে জানি-ভেছি। এই বিভিন্নভার কারণ কি १-নামরূপ। নাম অর্থাৎ সেই বস্তমন্থন্ধে আমাদের মনে যে একটা ধারণা বহিয়াছে: আরু, রূপ অর্থাং আকার। আবার তরঙ্গকে সমুদ্র হইতে পৃথক্রপে কি আমরা চিন্তা করিতে পারি ? কথনই না। खेश मकल मगदबरे के मगूरलुव धातुनाव खेलत किर्डत कविटट छ। यनि के তরক চলিয়া যাম, ভবে রূপও অন্তর্হিত ছইল, কিন্তু ঐ রূপটী যে একেবারে ভ্ৰমায়ক ছিল, তাহা নহে। যতদিন ঐ ত জ ছিল, তত দিন ঐ রপটী ছিল এবং ভোমাকে বাবা ১ইয়া ঐ রূপ দেখিতে ১ইত। ইহাই মারা। অতএব এই সন্দয় জগৎ যেন সেই অক্ষেব এক বিশেষ রূপ। একাই সেই সমুদ্র এবং ভূমি আমি সুর্ব্য তার। সুত্র সেই সমুদ্রে ভিন্ন তির তরক্ষমাত্র। তরক্ষণুলিকে সমুদ্র হইতে পৃথকু করে কে ?-- ঐ রূপ ভারে, ঐ রূপ--কেবল দেশকালনিমিত্ত ঐ দেশকালনিমিত্ত আবার সম্পূর্ণরূপে ঐ ভংক্লের উপর নির্ভর করিতেছে। তরক্ত থাই চলিয়া যায়, অথনি ভাহারাও অন্তর্হিত হয়। জীবাল্লা বধনই এই মারা পরিভ্যাগ করে, তথনি ভাষার পক্ষে উলা অন্তর্হিত হইয়া বায়, সে মুক্ত হইরা বার। আমাদের সমুদ্র চেটাই এই দেশকালনিমিত্তের উপর নির্ভর হইতে আপনাকে রক্ষা করা। উহারা সর্বদাই আমাদের পক্ষে বাধা দিতেছে, আর আমরা স্কাদ্টি উহাদের কবল হইতে আপনাদিপকে মুক্ত করিতে চেষ্টা করিতেছি। পণ্ডিতেরা 'ক্রমবিকাশবাদ' (Theory of Evolution) কাহাকে বলেন ৭ উহার ভিতর ছুইটা ব্যাপার আছে। একটা এই বে, এক ভগানক অন্তর্নিহিত গুঢ়শক্তি আপনাকে প্রকাশ করিতে চেষ্টা করিতেছে, আর বহিঃস্থ অনেক ঘটনাবলি উহাতে বাধা দিতেছে – চতুর্দ্দিকত্ব অবস্থাপুঞ্জ উথাকে প্রকাশিত হইতে দিবে না। স্করাং এই অবস্থাপুঞ্জের সহিত সংগ্রামের জন্ম ঐ শক্তি নব নব কলেবর ধারণ করিতেছেন। একটা কুদ্রতম কীটাণু, এই উন্নত হইবার চেষ্টার আর একটা শরীর ধারণ করেএবং কভকগুলি বাধাকে জনু করিয়া থাকে, এইরূপে ভিন্ন ভিন্ন শরীর ধারণ করিয়া অবশেষে মনুষ্যরূপে পরিণত হর। এক্ষণে যদি এই তত্ত্তীকে উহার স্বাভাবিক চর্ম সিদ্ধান্তে লইরা ধা ওয়া বাল, তবে অবশ্র স্বীকার করিতে হইবে বে, এমন দমর আদিবে, বখন, (य मिक्क की होन्द्र जिटाद क्रीफा क्रिए क्रिक अवः यादा व्यटम्बर मन्याकरम् পরিণত হইরাছিল, তাহা সমস্ত বাধা অতিক্রম করিবে, বহিঃস্থ ঘটনাপুঞ্জ আর छेश्टक कान बाधा पिछ शांतिक ना। अहे छक्ति पार्निक छावांत्र अकानिक ১মা বৈশ্বি ১৩-৭। ী केटबाधम । 370

হইবে এইরপ বলিতে হইবে:—প্রত্যেক কার্য্যের হুইটী করিয়া জংশ আছে, একটী বিষয়ী, অপরটী বিষয়। একজন আমাকে তিরস্কার করিল, আমি আপননাকে অস্থী বোধ করিলান —এথানেও এই হুইটী ব্যাপার রহিয়াছে। আর জামার সারাজীবনের চেন্তা কি ? না, নিজের মনকে এভদূর সবল করা, যাহাতে বাহিরের অবস্থান্তলির উপর আমি আধিগতা করিতে পারিব, অর্থাৎ সে আমাকে তিরস্কার করিলেও আমি কিছু কন্ত অস্ত্তব করিব না। এই-রূপেই আমরা প্রকৃতিকে জয় কবিবার চেন্তা করিতেছি। নীতির অর্থ কি ? 'নিজে'কে দৃঢ় করা—উহাকে ক্রমশঃ সর্বপ্রকার অবস্থা সহাইয়া লওয়া, যেমন তোমাদের বিজ্ঞান বলেন যে, মনুষ্যশরীর কালে সর্ব্বাবহাসহনক্ষম হয়, আর যদি বিজ্ঞানের এক্যা দত্য হয়, তবে আমাদের দর্শনের এই দিলান্ত, (অর্থাৎ এমন এক সয়য় আদিবে, যথন আয়য়া স্ব্রপ্রকার অবস্থা জয় করিতে পারিব), অকাট্য যুক্তির উপর স্থাপিত হইল, বলিতে হুইবে; কারণ, প্রস্তুতি সগীম।

এই একটী কথা আবার বুরিতে হইবে-প্রকৃতি স্বীম। 'প্রকৃতি স্বীম' কি করিয়া জানিলে? দর্শনের ছারা উহা জানা যায়। প্রকৃতি সেই খনতেরই গীমাবদ্ধভাবমাত্র, খতএব উহা সগীম। খতএব এমন এক সময় আদিবে, যথন আমরা বাহিরের অবহা গুলিকে জয় করিতে পারিব। উহা-দিগকে জন করিবার উপায় কি ? আমরা বাগুবিক পক্ষে বাহিরের বিষয়গুলিতে কোন পরিবর্ত্তন উৎপাদন করিয়া উহাদিগকে জয় করিতে পারি না। কুত্রকায় মংস্তাী তাহার জলন্ত শত্রুগণ হুইতে আবারকায় ইচ্চুক। দে কি করিয়া উহা সাধন করে ? অকাশে উড়িয়া--পক্ষী হইয়া। মংখ্যটী লল বা বায়ুতে কোন পরিবর্তন সাধন করিল না-পরিবর্তন যাহা কিছু হইল, তাহা তাহার নিজের ভিতরে। পরিবর্তন স্কাদাই 'নিজের ভিতরেই হইয়া থাকে। এইরূপে আমরা দেখিতে পাই, সমুদর ক্রমবিকাশ ব্যাপারটাতে পরিবর্ত্তন 'নিজে'র ভিতর হইয়া হইয়া প্রকৃতির জয় হইতেছে। এই তত্ত্বী ধর্ম এবং নীতিতে প্রয়োগ কর-দেখিবে, এথানেও 'অভভল্প 'নিজে'র ভিতরে পরিবর্তনের দারাই সাধিত হইতেছে। স্বই নিজের উপর নির্ভর করে, এই 'নিজেটী'র উপর ঝোঁক দেওয়াই অবৈভবাদের প্রকৃত দৃঢ় ভূমি। 'অভভ হঃগ' এ সকল क्या वनाहे जून, कात्रव विश्वितात छेशामित कान अधिय नारे। ब्लासित কারণসমূহ পুনঃ পুনঃ ঘটিলেও ঐ সকল ঘটনায় স্থিরভাবে থাকা যদি আমার भछाम इरेश यात्र, छाटा इरेटार्ट आगात कथनरे क्वांपत्र छेटाक रहेटव िष्य- १म मेर भार : **दे**(शंध्य । .2 >8

न। এইরূপে লোকে আমাকে যতই घूगा कक्क, यमि (म मकल আমি গায়ে না মাথি, তাহা হইলে আমারও তাহার প্রতি মুণার উদ্রেক हरेर ना। এইরপেই 'অভভলয়' করিতে হয়—'নিজে'র উন্তিসাধন করিয়া। অত এব তোমরা দেখিতেছ, অবৈতবাদই একমাত্র ধর্ম, ধাহা আধুনিক বৈজ্ঞা-নি গগণের দিরাস্তসমূহের সহিত ভৌতিক 🖷 আবাাত্মিক উভয় দিকেই ৬ 🕻 মেলে, তাহা নয়, বরং ঐ ষকল দিদ্ধান্ত হইতেও উচ্চতর দিদ্ধান্ত সমূহ ছাপন करत, बात এই जनारे बाधूनिक रेक्डानिकगरणत थारण रेश पूर लागिएएছ। তাঁহারা দেখিতেছেন, প্রাচীন বৈতবাদাঝক ধর্মসমূহ তাঁহাদের পক্ষে পর্যাপ্ত নহে, উহাতে তাঁহাদের জ্ঞানের কুণা মিটিভেছে না। কিন্ত এই অবৈতবাদে তাহাদের জ্ঞানের কুধা মিটিভেছে। তথু প্রাণের বিশাস থাকিলে মাতুষের চলিবে না, এমন বিখাদও থাকা চাই, যাহাতে তাহার জ্ঞানবৃত্তি চরিতার্থ হয়। যদি মানুষকে যাহা দেখিবে, তাহাই বিখাস করিতে বলা হয়, তবে সে শীঘ্ৰই वाक्रमामारा याहेरव । = * *। এই तथ काक्षविधान अधु आरमितिकारक नरह, স্কল দেশেই আছে,আমাদের দেশে এই অধ্বিধাসের প্রবল রাজত্ব। অবৈতবাদ কথন সাধারণ লোকের মধ্যে প্রচারিত হইতে দেওয়। হয় নাই। সন্মুসীর।ই অরণ্যে উহার সাধনা করিতেন, সেই জন্ত বেদান্তের এক নাম হইয়াছিল 'আরণাক'। অবশেষে ভগবৎ কুপার বুদ্ধদেব আসিরা আপামর সাধাংবের ভিতর উহা প্রচার করিলেন, তথন সমস্ত জাতি বৌদ্ধর্শে জাগিয়া উঠিল। অনেক দিন পরে আবার যখন নাতিকের৷ সমুদয় জাতিকে একেবারে ধ্বংশ করিয়া ফেলিল, তথ্ন জ্ঞানীরা একমাত্র এই ধর্মকেই ভারতের এই নাস্তিকতাল্কার মোচনের একমাত্র উপায় দেখিলেন। হইবার উহা ভারতকে নাস্তিকতা হইতে রক্ষা করিয়াছিল। প্রথম বৃদ্ধদেবের আবির্ভাবের ঠিক পূবের নান্তিকতা অতি থাবল হট্যাছিল-- ইয়ুরোপ আমেরিকার পরিভ্তমগুলীর মধ্যে এখন যেরূপ নাম্ভিকতা, দেরপ নাশ্তিকতা নহে; উহা হইতে মনেক জ্বস্তা নাশ্তিকতা। আমি এক প্রকারের নান্তিক, কারণ, আমার বিশ্বাস—একমাত্র পদার্থেরই অন্তিত্ত আছে। আধুনিক শৈজ্ঞানিক নান্তিকও তাই বলেন, তবে তিনি উহাকে 'জড' আখ্যা প্রদান করেন, আমি উহাকে 'এক্ষ' বলি। এই 'জড়বাদী' নান্তিক বলেন, এই 'জড়' হইতেই মানুষের আশা ভরদা ধর্ম দবই আদিয়াছে ৷ আমি বলি, ব্রহ্ম হইতে সমুদায় হইগ্রাছে। আমি এরূপ নাস্তিকতার কথা বলিভেছি না আমি চার্লাকের মতের কথা বলিতেছি—খাও দাও মজা উড়াও; ঈশ্বর আয়া अमा देवमाथ, ५७०१] **उ**ट्यांथम । 274

বা স্বৰ্গ কিছুই নাই; ধৰ্ম কতকগুলি ধুৰ্ত হুষ্ট পুরোহিতের কল্পনাত্র —'বাৰজ্জী-বেং স্থং জীবেং ঋণং ক্বরা ঘ্রুং পিবেং।' এইরূপ নাস্তিক্তা বৃদ্ধদেবের ভাবিভাবের পূর্বে এত বিস্তৃত হইয়াছিল যে, উহার এক নাম 'লোকায়ত দর্শন'। এইরূপ অবস্থায় বুরুদেব আ্ফিয়া সাধারণের মধ্যে বেদান্ত প্রচার করিয়া ভারতবর্ষকে বৃক্ষা করিলেন। বৃদ্ধদেবের তিরোভাবের সংস্থ বর্ষ পরে আবার ঠিক এইরপ ব্যাপার ঘটিল। আচণ্ডালে ৌর হইতে লাগিল। নানা-বিধ বিভিন্ন জাতি বৌদ্ধ হইতে লাগিল। আনেকে অভি নীচ জাতি হইলেও বৌদ্ধর্ম গ্রহণ করিয়া থেশ সদাচারপরায়ণ হইল । ইহাদের কিন্তু নানাপ্রবার কুসংস্কার ছিল – নানা প্রকার ছিটা, ফোঁটা, মল্ল তল্প ভূতদেবতার বিশ্বাস ছিল। বৌদ্ধশা প্রভাবে ঐ গুলি দিনকতক চাপা থাকিল বটে, কিন্তু সেগুলি আবার প্রকাশ হইয়া পড়িল। অবশেষে ভারতে বৌদ্ধর্ম্ম নানা প্রকার বিষয়ের থিচুড়ি হইয়া দাঁড়াইল। তথন আবার নাত্তিকভার মেঘে ভারতগগন আচ্চন্ন হইল-সন্ত্রাস্ত লোকে যথেচ্ছাচারী ও সাধারণ লোকে কুসংস্কারাচ্ছন ছইল। এমন সময়ে শঙ্করাচার্য্য উঠিয়া বেদান্তের পুনক্লাপন করিলেন। ভিনি উহাকে একটা যুক্তিদঙ্গত বিচারপূর্ণ দর্শনরূপে প্রচার করিলেন। উপনিষদে বিচারভাগ বড় অক্ট। বুরুদেব উপনিবদের নীভিভাগের দিকে খুব ঝোঁক ৰিয়াছিলেন, শব্ধাচাৰ্য্য ইহার জ্ঞানভাগের দিকে বেশী ঝোঁক দিলেন। ভদ্বারা উপনিষ্টের সিদ্ধান্ত গুলি যুক্তিবিচারের দারা প্রমাণিত 🍙 প্রণাশীবদ্ধ ক্রপে লোক সমকে স্থাপিত হইয়াছে। ইউরোপেও আককাল ঠিক সেই অবস্থ। উপস্থিত। এই নাত্তিকগণের মুক্তির জ্ঞ-তাহারা যাহাতে বিখাদ করে ভজ্জন্য ভোমরা জগৎ জুড়িরা প্রার্থন। করিছে পার,কিন্ত ভাহারা বিখাস করিবে না । ভাছারা যুক্তি চার । স্থতরাং ইউরোপের মৃক্তি এফণে এই বিচারপৃত ধর্ম-অংবতবাদের উপর নির্ভন করিতেছে; আর একমাত্র এহ অবৈতবাদ, এই নিগুণ ব্রক্ষের ভাবই প্তিতদিগের উপর প্রভাব বিস্তার করিতে সমর্থ। যথনই ধর্ম नुष : देशांत छेत्रक्रम हम, এवः अशर्त्यात अञ्चल्यान इत्र, उपनहे हेश व्यानिया थारकः। এই अञ्चे दे छेत्राण चारमिक कात्र हैश खाराण नाज कतित्रा पृष्मृत हरेटाइ । व्यानीन डेशनियम् धनि चां छेक्क कर्ष्यिशूर्ग ; এই मकन উपनि-यहरू। बिशंग कवि ছिलान। छोहात। প্রচারও করিছেন না, অথবা দার্শনিক विठाय । करिएलन ना, व्यथवा निश्चित्त्वन । काशीत्म स्वया-छे म इटेस्ड সম্বীতের ফোলারা বহিত। তার পর বৃদ্ধান্ধে আমরা দেখি-ছবল, অনত 2>0 **উ**ट्यांथन । िय-१म मः भा

Gir.

অনশ্রই দীর্ঘ ঈকার ও দীর্ঘ উকাব হইবে। কিন্ত ইহা শামে অবাবহার্য্য বিলিয়া পুনরায় ভাষার নিষেধ বিধান করিতে হইবে। নভুবা 'গঙ্গে ইন্দ্র', ''বায়া উদকম্' এই সকল স্থলে একারের শেবাংশে ইকার এবং ওকারেব শেবাংশে উকার থাকাতে ''অকঃ সবর্ণে দীর্ঘঃ'' ৬১১০১। (অক্ প্রত্যা- হারাস্তর্গত বর্ণ অর্থাং অ ই উ ঝ ৯ ইহানের পরে, স্থান অচ্ অর্থাং অ ই উ ঝ ৯ থাকিলে, উভয়ে মিলিয়া দীর্ঘ একাদেশ হয়) এই স্থ্রান্ম্পারে, দীর্ঘত্ব প্রান্তিব। অর্থাং গঙ্গেন্দ্রন্দ্র, এইস্থলে 'গঙ্গা ইন্দ্র' এইরপ সঙ্গত প্রয়োগ না হইরা, ''গঙ্গেন্দ্র'' এইরপ অসকত প্রয়োগ হইতে থাকিবে।

ভাষামূল।—হুত্মবিধিপ্রতিষেধঃ*। দীর্ঘে হ্রত্মশ্রমো বিধিঃ প্রাপ্নোতি দ প্রতিষেধঃ। আলুয়।প্রলুয় বিপ্রতুল পিতি ক্বতি তুল্ ভারতীতি তুল্ প্রাপ্রোতি। নৈম দোষঃ। আচার্যাপ্রবৃত্তিজ্ঞাপরতি ন দীর্ঘে হুবাশ্রমো বিধিভবিতি। যদরং দীর্ঘাছে একং শান্তি। নৈতদন্তি জ্ঞাপকম্। অন্তি হুন্তালতক্ত বচনে প্রয়োলন্দ। কিম্। পদাস্তাদ্বিতি বিভাষাং বক্ষামীতি।

বঙ্গালুবাদ। — এক্ষণে ইহাতে অহা দোষও দেখান হইতেছে। দীর্ঘ কার্য্যে ত্রস্ব বিধি নিষিদ্ধ হইবে। *।

দীর্ঘ কার্য্য কর্ত্রা হইলে, যে দকল স্থানে হ্রম্ম নিমিত্ত বিধি প্রাপ্ত হয়, দেই সকল বিধি নিষেধ করিতে হইবে। যথা:—আ+ল্+ক্যপ্=আল্ম। প্রদি দীর্ঘাদেশ কালে হ্রম্ম নিমিত্ত বিধি নিষেধ করা না হইত; তবে এখানেও "হ্রম্ম পিতি ক্রতি তুক্" ভাসাও । (পকার ইৎ প্রতায় ও ককার ইৎ প্রতায় পরে থাকিলে, হ্রমের পরে তুক্ আগম হয়) এই স্ক্রাম্মারে এই স্থলেও তুক্ আগম হইত। তাহা হইলে বিশুদ্ধ 'প্রান্থ' প্রয়োগ না হইয়া, 'আল্তা' প্রান্তা' প্রভৃতি অশুদ্ধ প্রয়োগ হইতে থাকিত।

তাৎপর্যার্থ : - যদি দীর্ঘ উকার গ্রহণে, তদংশবন্তী হ্রস্ম উকারেরও উ+উ=উ হওয়াতে, উর শেষাংশও উ হওয়াতে) গ্রহণ হইত, তবে লূ ধাতুর উকারে, হ্রস্ম উ থাকাতে, হ্রস্ম উকারাম্ভ ধাতুর উক্তরও তুক্ আগম হইয়ঃ থাকে, সেরপ দীর্ঘ উকারাম্ভ ধাতুর উত্তরও তুক্ আগম হইয়ঃ অসমত প্রয়োগ হইবে।

এই স্থলে দোষ হইবে না ় কেন না এরপ অভিপ্রায় আচার্য্য পাণিনিই জানাইয়াছেন যে, দীর্য নিমিত্তক কার্য্য কর্ত্তব্য হইলে, হ্রস্থ নিমিত্তক বিধি প্রাপ্তি ১লা বৈশাধ, ১৩০৮। উদ্বোধন। [■] ২১৭ হয় না। বেহেতু তিনি "দার্ঘাহ" ভাসাবের (দীর্ঘের পরে ছ থাকিলে, তুক্ আগম হয়) এই সুত্রে 'দীর্ঘের পরে ছ থাকিলে, তুক্ আগম হয়," এইরপ বিধান করিয়াছেন। যদি হ্রমগ্রহণে দীর্ঘেরও গ্রহণ হইত, তবে "হ্রমগ্র পিতি কিতি তুক্" এই স্ত্রের দারায় সর্বরে তুক্ আদেশ প্রাপ্ত হইত। "দীর্ঘাহ" এই স্ত্রের দারায় আর দীর্ঘের পরে ছ থাকিলে, তুক্ আদেশ বিবার প্রয়োজন হইত না।

এ স্থলে ইহা জাপক হইতে পারে না। কেননা এ স্থলে ছে চ ৬।১।৭০। (ইসের পরে ■ থাকিলে তুক্ আগম হয়) এই ক্রে অনুবৃত্তি আসিয়াই কার্যা নির্দ্ধাহ হইবে। স্থতরাংই পুনঃ 'দীর্ঘাৎ' এই ক্র ক্রিবাব অন্ত প্রায়োজন আছে।

किरमङ थारबाजन?

পদান্তাধা ৬।১।৭৬। (পদান্ত দীর্ঘ:তেনি পবে ছ থাকিলে, বিকরে ডুক্ আগেমহয়) এই স্থারিদারে "পদান্ত দীর্ঘের পবে ■ থাকিলে, বিকরে ডুক্ আগেমহয়', এইরূপ বলা ইইবে। এবং সেই ভর্নই এথানে 'দীর্ঘাং' এই সূত্র করা হইয়াছে।

ভাষামুব।—বভাই যোগবিভাগং করোতি ইঙরণা হি দার্ঘাংপদাস্থাদেত্যেব রবাং। ইহ তহি গট্বাভিঃ মালাভিঃ। অতাে ভিদ্ঐামিতৈাসভাবঃ প্রাপ্রোতি। তপরকর্বসাম্থ্যান ভবিষ্যতি। ইহ তহি ষাত্য বাতা অতাে লােব। আজি-ধাহুকে ইভাকারলােপঃ প্রাপ্রোতি। নতু চাত্রাপি তপরকর্ব সাম্থাাদেব ন ভবিষ্যতি। অভিহন্তভাবরকর্বে প্রোজন্ম। কিম্। সক্তা লােপা মা ভ্লিতি। অথ ক্রিম্মাণেহপি ভপরে প্রশ্ন লােপে ক্রতে প্রশ্ন ক্রান্ন ভবিতি। পরশোপ্ত স্থানিব্রাবাদ্সিদ্ধান্ত।

বঙ্গাস্বাদ।—তবে যদি এই স্ত্রে যোগ বিভাগ করা যায়, ভাহ; ছইলে, কি দোষ হইবে ?

ভাষা হছলে, অন্ত প্রকার আর্থ হটবে। 'দৌর্ঘাৎ পদাস্তাদা" (দীর্ঘার পরেত তুকু আলম হইবেটা, পদাস্ত দীর্ঘার পরেও বিবল্পে তুকু আলম হইবে।) ভাগা ধইলে দিদ্ধান্ত স্থান এইরূপ অইরূপ অইরূপ ক্রাণম হয় এবং পদাস্ত দীর্ঘার পরে বিকল্পে তুক্ আলম হইবে" এইরূপ বশিতে হইবে।

এখানেও তবে, ধট়্া

মালা; শক্ষের উত্তর, ভূ নীরার বছবচনে ভিন্ প্রতার
২>৮

উদ্বোধন।

[৩র— ৭ম সংখ্যা ;

করিখা অকারাস্ত শব্দের উত্তর "অতোভিস্ঐদ্" ৭:১।৯। (অকারাস্ত অঙ্কের পরস্থিত ভিদ্ ছানে উদ্ আদেশ হয়) এই স্ত্রাস্থ্যরে উদ্ আদেশ প্রাপ্ত হইবে। কেননা, খটা শব্দের আকাবের অন্তর্বর্তী হই অকার থাকাতে, অকার প্রযুক্ত যে কার্য্য হইয়া থাকে, আকার প্রযুক্ত দেই কার্য্য হইবে। অতএব 'থট্যভিঃ' এইরূপ সঙ্গত প্রয়োগ না হইয়া থটিয়া এইরূপ অসঙ্গত প্রয়োগ হইবে।

এরপ অনসত প্রয়োগ হটবে না। যেহেতু 'অভোভিস্ঐস্' এই স্বেত ত কার পরে আছে এমন যে অকার, তংপরস্থিত ভিস্ হানে ঐদ্ আদেশ হয়। স্তরাং কেবলমাত্র হ্র অকারের পনেই ঐদ্ হইবে, দীর্ঘ আকারের পরে ঐস হইবে না। তাহা ইইবেই ২টা শক্তেব পরে ঐস্ হইরা যে অভঙ্গ প্রয়োগ হওয়ার সভব ছিল, তাহা ইইবে না।

এই স্থানে দোব না হইলেও যাতা বাতা এইস্থ:ল "অতালোপ আর্দ্ধি পুকে" ভাষারভা (আর্দ্ধিতুক উপদেশ কালে যে অকানান্ত শব্দ, ভাষার অকারের লোপ হয, আর্দ্ধিনুক (১)পরে থাকিলে) এই পুতামুদ্ধরে আকারের লোপ হারে।

যদি বল যে, এইস্থলেও 'অভোলোপ' হুল, আকারের পবে ভ ধাব থাকাতে, কেবল মাত হুস আকারেরই লোপ ইইনে, আকারের লোপ ইইবে না; কিন্তু ভাষা ঠিক নছে, কেননা এ স্থলে ভকাশন্ত শেল প্রায়োগ কবিবার অসু উদ্দেশ্য আছে।

কি সেই উদ্দেশ ?

সর্বাংখের লোপ যাহাতে না হয় তথাং যাতা, বাত। এই শব্দব্যের এক একটা অব্যারের নধ্যে যে তুই তুইটা ক্ষকার আছে, সেই ক্ষকারের লোপ না হইয়া কেবলমাত্র, অত্যে হিত একটা ক্ষকারেরই যাহাতে লোপ হয়, ইহাই উদ্দেশ্য। অতএব, এত্থানে তকার পরে, থাকিলেও প্রের ক্ষকারের লোপ করিয়া, পূর্ব অকাব মাত্রেইই কেন শোপ হয় না ?

পরের অকার শোপ হইলেও "ভানিবস্তাব" (যে বর্ণের স্থানে যে বর্ণ আদেশ হয়, সেই বর্ণ ভাছার স্থানির (১) ধর্ম প্রাপ্ত হয়) প্রযুক্ত পুনরায

⁽১) ভিপ্তমৃ ঝি এছিলি ভিডত প্রকায় সমূহ এবং শকার ইৎ বিশিষ্ট প্রভাষ সমূহকে সাক্রিধাড়ক বলে। ভঙ্জিম অফাফি প্রায়সমূহকে অধিনিডিক সংকাবলৈ।

শকারত্ব ধর্মই প্রাপ্ত হইবে। অথবা "অসিদ্ধবদ্বাভাং ৬।৪.২২। (মষ্ঠ অধ্যায়ের চতুর্থ পাদের এই ছাবিংশতি হক হইতে আরম্ভ করিরা এই অধ্যায় সমাপ্তি পর্যন্ত, সমান আশ্রম প্রযুক্ত কোন ও কার্য্য প্রাপ্তি হইলে, ভাহা পর-হত্বের দৃষ্টিতে পূর্ব্ব হুত অসিদ্ধ হয়) স্থারাং পূর্বের প্রতি পর হৃত্র অসিদ্ধ হয় বিশিয়, এই ভালেও লোপ বিধায়ক শাস্ত্র পরে বিধান করাতে লোপ ইইবে না। ভাষ্যমূল।—এবং তই্যাচার্য্য প্রক্তিজ্ঞাপিয়তি ন আকারত্বস্তাকারত্ব লোপো ভব-

ভাষ্যমূল।—এবং তর্হাচার্য্য প্রবৃত্তিজ্ঞাপিয়তি ন আকারস্থা

বঙ্গাসুনাদ।—এই প্রকারে আচার্য্য পানিনির অভিপায়ই জানা যাইতেছে যে, আনারস্থিত অকারের লোপ হয় না। যেহেতু তিনি "আতোহমুপসর্গে কঃ" তারতা (উপদর্গ ভিন্ন কলা উপপদে থাকিলে, আবারান্ত ধাতুর ক প্রত্যেয়ই হয়, অন্প্রত্যে হয় না।) এই স্বেন্যে অ প্রত্যে না করিয়া ক কার লোপ বিশিষ্ট প্রত্যে করিয়াছেন, তাহা কেবল আবারস্থিত অকারের শোপ হয় না, ইহাই জানাইবার জ্ঞা

ইহাতে কি প্রকারে আচার্গ্যের এইরূপ অভিপ্রায় জ্ঞাপিত হইতেছে গু

এই স্থলে তা প্রত্যানের ঘারায় কমাসিদি হইলেও যথন প্নরায় ক কার
ইৎ (লোপ) বিশিষ্ট প্রতায় করা ১ইয়াছে, তথন তাহাতে ইংাই জানা
ঘাইতেছে যে, "আতোলোণ ইণি চ" ৬ ৪৮৬৪। (পর্বর্ণ আদিতে আছে এমন
যে, আর্দ্ধাতুক সংজ্ঞক গকার ইৎ ককার ইং একার ইং ধাতু তাহাদের এবং
ইট্ প্রত্যাহারাস্তর্গত বর্ণস্ত্তের পরে যে আকার, তাহার লোপ হয়) এই
স্ত্রে, ক কাব লোপবিশিষ্ট প্রত্যেয় করিবার ইহাই প্রয়োজন যে, যেন আকারের
লোপ হইতে পারে। যদি আকারাভান্তরন্থিত আকারের লোপই হইত, তাহা
হইলে এই স্ত্রে ককার ইংবিশিষ্ট প্রভায় করা অনর্থক হইও। কেনই বা
স্ত্রে ককার ইংবিশিষ্ট প্রভায় করা বার্থ হইবে ? আকারের শেষ অংশ
অকারের লোপ করিলেও তা পদ নিদ্ধা হইবেই। যেমন—"গাং দদাতি ইতি
গোদঃ কম্বাং দদাতি ইতি কম্বান", এই স্থানে, যে দকার থাকিবে, তাহার
হংও

ষ্মকারের সহিত, ক প্রত্যন্তের ষ্মকারের প্ররূপ (১) করিয়া, গোদঃ ক্ষণদঃ রূপ সিদ্ধ হইবে।

পুনঃ যদি ফেলা সেই হইল, গ্ৰেণ্ড স্তুতো ককার ইংবিশিও প্রায়ো করা নিজিশ্য হৈইল ?

ভাষ্যনুক।—পশুতি হাচার্য্যো নাকারস্থাকারস্থা কোপঃ স্থাদিতি। অতঃ ককারমন্ত্রন্ধনং করোতি। নৈভদন্তিজ্ঞাপক্ষ্। উত্তরার্থমেতংস্থাৎ তুক্দ-শোকষোঃ পরিমূজাপঞ্লোতিতি। যত্তি গাপোষ্টগিত্যনস্থার্থং ককারমন্ত্রন্ধং করোতি।

বঙ্গামুবাদ। —পাণিনি ইহা দেখিয়াছিলেন এবং এই জন্থই আকার্যিত অকাবের ঘাহাতে লোপ না হয়, তল্পিমিন্ত এই স্থান্ত ককার অমুসন্ধ (শোপ) বিশিষ্ট প্রতায় করিয়াছেন।

ইছা কখনও ককার অম্বন্ধের ভলপক হইতে পারে না। এই স্থাপি ককার অম্বন্ধ বিশিষ্ঠ প্রভায় করিবার অম্ব প্রয়োজন আছে। ঘাহাতে পরবর্তী "তুল্পশোক্রোঃ পরিমূজাপল্লো" তাহার। তুল্ল এবং শোক এই ছই কর্মপদ উপপদে (পূর্বাপদে) আছে যাহার; এমন যে পরিপূর্বাক মূল্ ধাতু, এবং অপ্ পূর্বাক হৃদ্ ধাতু ইহাদের উত্তর ক প্রভায় হয়] এই স্বে ককার ইং প্রমূজ অকারের লোপ হইয়া থাকে; এই ফল দেখাইবার জন্মাই পূর্বাক্ত ককারাম্বন্ধ বিশিষ্ট প্রভায় করা প্রয়োজন; অম্বর্ণা "পরিমূজ" এইরূপ প্রয়োগ না হইয়া, 'পরিমার্জ' এইরূপ প্রয়োগ না হইয়া, 'পরিমার্জ' এইরূপ প্রয়োগ না হইয়া, 'পরিমার্জ' এইরূপ প্রয়োগ না হইয়া,

এই সকল এইকপ হইলেও "গাপোপ্তক্" তাহাচ (উপদর্গ পুর্বে না থাকিলে, অথচ কর্মাণদ পূর্বে না থাকিলে, অথচ কর্মাণদ পূর্বে না থাকিলে, অথচ কর্মাণদ পূর্বে থাকিলে, গাধা ছু এবং পা ধাতুর উত্তর টক্ প্রভার হয়। যথা সামং গাছতি ইতি সামগঃ) এই স্ত্রে ককার অন্বর্ধবিশিষ্ট প্রভায় করিবার, আকার লোপ ভিন্ন অন্তর্কান উল্লেখ নাই; স্ভবাং এই অন্ত্যোপায় স্থলে অন্ত অর্থ না হন, এই অন্তেই ককার অন্বর্কাবিশিষ্ট প্রভায় করিয়াছেন। এবং ইহাতেই আচার্যাের অভিপারও এইকাপ কানা যাইতেছে।

ভাষ্যমূল।--একবর্ণবন্ধ । একবর্ণবন্ধ দীর্ঘো ভ তীতি বক্তবাম। কিং

⁽১) পূর্ব এবং পরের স্থানে যে একটীমাত্র আদেশ, ভাহাকে পরক্ষণ বলে।
আভোগুণে ছালার (পদান্ত ভিন্ন অকারের পরে গুণবিশিষ্ট কোনও বর্ণ থাকিলে অর্থাৎ
অ, এ, ও থাকিলে, পারক্ষণ একাদেশ অর্থাং প্রদাপর স্থানে অ, এ অথবা ও হইয়া থাকে।
১লা বৈশ্বি ১৩০৮।] উদ্বোধন।
২২১

প্রয়োজনম্। বাচা ভবতীতি দ্বান্ধ লক্ষণঃ ইন্মা ভূদিতি। ইন্চ বাচো
নিমিত্রং তক্ত নিমিত্রং সংখোগোংপাতাবিতামুবর্ত্তমানে গো দ্বাচ ইতি দ্বান্ধলক্ষণো যথা ভূদিতি। অত্যাপি গোণোগ্রহণং জ্ঞাপকং দীর্ঘাদ্ দ্বান্ধ্যাপ্রান্ধিন ভবতীতি। অন্ধং ভূদকোয়ামো প্রিহারঃ।

বঙ্গাস্থবাদ। -- দার্ঘশন্দ একবণ বিশিষ্ট ছইবে। *

"দীৰ্ঘ বৰ্ণ সমুহ একবৰ্ণ বিশিষ্ট হয়" এইরূপ বালতে হুইবে।

কেন এক্লপ বলিতে হইবে ? ভাবার্গ : — আ + আ এই ছই বর্ণ মিলিয়াই যথন দীর্ঘ আ এবং ই + ই এই ছই বর্ণ মিলিয়া যথন দার্ঘ ঈ প্রভৃতি বর্ণ হইয়াছে, তখন দীর্ঘ বর্ণকে এবটা বর্ণ কেন বলিতে হইবে ?

ধদি দীর্ঘ বর্ণও ছুইটা স্থাবরণ বিশিষ্টা ভাষণ; তবে 'বোচা তারতি'' (বাক্য প্রয়োগ ছারা পার হইডেছে) এই স্থলে বাক্ শক্ষের উত্তর 'ঠন্' প্রতায় হইবে না। যেহেডু 'নৌষাচ্ঠন' ৪-৪া৭ (নৌশক্ষের উত্তর এবং ছাই স্থার বর্ণ বিশিষ্ট শক্ষের উত্তর 'ঠন্' প্রতায় হয়, যথা বাহ্ ভাাং তারতি ইতি বাহ্ক) এই স্জান্মারে, বাক্শক্ষের আকারের ছাই স্থান বিশেষ্ট বেলিতে, বাক্শক্ষের আকারের ছাই স্থান বিশিষ্ট বর্ণই জন্মার ইবে। এইরাপ অস্কৃত প্রয়োগ না হয়, এই জন্মার দীর্ঘ বর্ণকে ছাই বা তাতোধিক বর্ণ না ব্যায়া এব স্থার বিশিষ্ট বর্ণই ব্লিতে হাইবে।

অথবা ''গোল্যটোংসংখ্যা পরিমাণাশ্বদেশ্যং'' ৫০০ ৩৯ (গো শদের উদ্ভর সংখ্যা ও পরিমাণ ভিন্ন ছই স্বর্ণিবিশিষ্ট শব্দের উত্তর, আখাদিগণের উত্তর: নিমিত্ত, সংযোগ ব। উপ, অবগ্ৰসমান হইলে, 'মহ' প্ৰত্যয় হয়। যথাঃ---গব্যঃ যশশু ইত্যাদি) এই হ্যামুগারে, 'বাক' এই শব্দের স্থানে, ও বাক্যের যে নিমিন্ত এবং তরিমিত্ত যে সংযোগ, উৎপাং, পশ্চাং বর্তমান থাকিলে, 'বাক' শদের আহাকারে ছই স্বর্ণ লক্ষণ মানিয়া যং প্রভায় হটবে। আর এই সূত্রস্বায়, লো শব্দ এবং নৌ শব্দ গ্রহণ করাতে, ইহাও নিজাপিত ছইতেছে যে, দীর্ঘ বর্ণে ছই শ্বরবর্ণ লক্ষণ নিমিত্ত বিধি হয় ন।। যদি দীর্ঘ গ্রহণে, ছই শারবর্ণেরই গ্রহণ হইত; তবে পুর্মোক্ত স্ত্রদয়ে, ছই শারবর্ণেরই গ্রহণ হইত , তবে পূর্বোক্ত হ্রদ্রে, ছই স্বরণরে উত্তর ঠন'ও 'ষং' প্রত্যাদ कत्रारुहे, त्या भरमत्र मीर्घवर्य एकारत ध्वः त्यो गरमत मीर्घ वर्ग छेकारत इहे স্বরবর্ণ থাকাতেই প্রয়োগ দিদ্ধি ইইত। স্থতান্তরে গে। এবং নৌ শব্দ প্রয়োগ করিবার কোন্ত প্রয়োজন হইত না। অভতার স্ত্তেতে যথন কেবল ছই সর-বর্ণবিশিষ্ট খনের উত্তর ঠন ও ষং প্রভায় না করিয়া, গো এবং নৌশক গ্রহণ ियू--१म मःशाः; **উ**ट्यांथन । **२२**२

করা হইয়াছে, তথন তাহাতে ইহাই জানা যাইতেছে যে, দীর্ঘ বর্ণে ছই স্থান্ত বিশিষ্ট বিধি প্রাপ্ত হয় না। এবং এই প্রকারে সকল প্রকার শঙ্কারই পরিহার ইটতেছে।

ভাষ্যসূত্র — নাব্যপর্কস্থাবরবস্থা তলিবির্যথা তবের্যু । নাব্যপর্কস্থা-ব্যবাশ্রমে বিধি ভবিতি যথা জবে।য়ু। তল্পা। জবের্যু সপ্তদশ সামিধেলে। ভবস্থীতি ন সপ্তদশার্জিমাত্রং কাট্মগ্রাবভ্যাধীয়তে।

বঞ্জাকুবাদ।— অভিন অন্যবের ভিন্ন বুদ্ধি হয় না, বেমন জ্বাদিতেশ। বেমন কোনও ভিন্ন ভিন্ন জব্য সমূহে একও বুদ্ধি হয় না, সেইরূপ একটা মাত্র অভিন অব্যব বিশিষ্ট বর্নে, ভিন্ন ভিন্ন অব্যব প্রবৃত্ত বিধি প্রাপ্ত হার্বে না। ভাষার দৃষ্টাস্ত এই সে, যজের ভিন্ন জব্য জব্য সকলের মধ্যে ১৭টা সামধেনীর (১) প্রয়োজন হয়। সেই হলে এক এক অর্বি বিশিষ্ট সত্তর্তী সামধেনী প্রয়োগনা করিয়া একেব।রে সভের অর্কিবিশিষ্ট একটা সামধেনী ক্লাপি অন্নিজে আছেতি দেওয়া হয়-না।

ভাষ্মৃশ।—বিষম উপ্রাসঃ। প্রহাচ্যং তৈব হি তংকর্ম চোপ্ততে।
অসংভবশ্চামৌ বৈলাং চ। যথা তহি স্পুদশ প্রাদেশমাত্রীরাখ্যাঃ স্মিধোভাাদ্ধীতেতি ন সপ্তদশ প্রাদেশমাত্রং কান্ত্রসাধারভ্যাধীরতে। অর্ত্তাশি প্রতিপ্রশবং শৈত ১২ক্স চোল্ডাতে। তুলাশ্যাসংভবেষ্ট্রো বেদ্যাং চ।

বঙ্গান্থবাদ।—এই দৃষ্টান্ত এই হলে অভুগান্ধপে প্রয়োগ করা হইতেছে।
এখানে ইহা কদাপি ভুলা দৃষ্টান্ত হইতে পারে না। যেহেতু যজক্ষে যে
সপ্তদশ সামধেনীর দারা আহুতির ব্যবস্থা বেদে আছে, সেই স্থলে এইরূপও
বিধান আছে যে, এক একটা মন্ত্রপাঠ পুকাক এক একটা সামধেনী আগ্নিতে
প্রথাগ কারতে হইবে। যদি একেবারে সপ্তদশ অর্রজ্পার্মিত সামধেনী
আগ্নিতে আছুতি দেওয়া যান, তাহা হইলে বেদেতে যে প্রতি মন্ত্র পাড়য়া এক
এক মর্বজিপরিনিত প্রত্যেকটা সামধেনা প্রয়োগের ব্যবস্থা আছে, সেই বাবস্থা
রক্ষিত হয় না। বিশেষতঃ আহাত প্রদানের যোগ্য ক্ষুত্র অব্যব বিশিষ্ট আক খানে কান্ত আহ্তি দেওয়াও একান্ত
অসন্তব।

ভাল, তবে স্প্রদশ অরত্নিবিশিষ্ট একটা কান্ঠ একেবারে অগ্নি:ত প্রয়োগ করা অনস্তব বলিয়া, এই দুটাস্ত না হয় অনক্ষ এই হংল ; কিন্তু যে স্থানে ''সতের প্রাদেশমাত্র অশ্বর্থ শাখা দারা সমিধ আধান (আছতি প্রদান) করিবে'' এইরূপ ২০০ উদ্বোধন। (গ্রন্থ ন্ম সংখ্যা; বেদে বিধান আছে, এই স্থলে ত আছতি প্রদান ক্ষুদ্র কঠি বলিয়া আছতি প্রদান অসম্ভব না হইলেও সম্বদশ প্রাদেশপরিমিত একথানি কার্চ অগ্নিতে আভৃতি প্রদান করে না।

रेशा कुला मुक्षे छ इरेन ना। धरे खला धक धक छै थान दिकातन করিয়া, এক এক প্রাদেশ পরিমিত এক একটী অখণ শাখা আছতি প্রদানের বাবস্থা আছে। সুতরাং একবারে সপ্তদশ প্রাদেশ বিশিষ্ঠ একটী অখথ শাণা আত্তি প্রদান করিলে, বেদের দেই ব্যবস্থাও স্থরক্ষিত হইবে না। আর এই হলে কাঠ অপেকারত কুদ্র ২ইলেও অতি কুদ্রাব্যব বিশিষ্ট অগ্নিকুণ্ডে বা বেদীতে, সতের প্রাদেশপরিমিত একটা কান্ত আছতি প্রদান কবা, প্রক্ষাক্ত মাত্র অবভ্রি ফায়, তুলা অনভাবই হইবে। কিন্তু বর্ণসমূহে ভিন্ন ভিন্ন व्यनस्य शस्क कार्या कता (मन्ना व्यनष्टर नदर। धरे क्यारे धरे पृष्टीस छुला হইতে পারে না।

ভাষামূল। – যথা তহি হৈলং ন বিক্রেডব্যাং মাংসং ন বিক্রেডব্যমিতি বাপবুক্তং চন ক্রিীয়তে। অবাপবুক্তং গাবঃ সর্যপাত বিক্রীয়ত্তে। তথা লোমনথং স্পৃষ্ট্ । লৌচং কর্দ্রবাবিতি বাপবুক্তং স্পৃষ্ট্ । নিয়োগতঃ কর্দ্রবান্। অবাপবুক্তে কামচারঃ যত্ত তহি ব্যপবর্গোন্তি। ক চ ব্যপবর্গোন্তি। সদ্ধ্যকরেষু। मकाकरतम् नित्रञ्जाः •। यन्जावर्गः नित्रञ्जतः उमग्रभानवर्गाणुशीवर्गानवर्ग বিবৃতভবে তে অভাভ্যামিবণোবর্ণাভ্যাম।

বঙ্গানুবাদ :-- এন্থানে অনঙ্গত হইলেও, দৃষ্টান্তান্তর গ্রহণ করা ঘাইতেছে। বেমন "ভ্রাহ্মণের তৈল বিক্রয় করা কর্ত্তব্য নতে, মাংস বিক্রয় করা কর্ত্তব্য নতে" भारत रायात अहेक्य वावश बारक, त्रयात हैशहे कानिए बहेरन रय, जितनत সারাংশ এবং মাংদের যে খণ্ডদমূহ, তাহাই বিক্রয় করিতে নিযে। করা হই-রাছে: কিন্তু মধণ্ড গো বা অপিট সর্বণ বিক্রেয় করিয়াই থাকে। অথবা যেমন, যেখানে লোম নথ স্পর্ণ করিলে, হন্তাদি প্রকালন ব্যবস্থা আহে, দেখানে ছিন্ন গোম, থণ্ড নথ স্পর্শ করিলে, হস্তাদি প্রকালন করা, শান্তের বিধান অফু-সারেই কর্তব্য । কিন্তু অভিন্ন লোম অখণ্ড নথ স্পূর্ণ করিয়া হত্ত প্রকালন করা ना कता निष्कत रेव्हाधीन। अलबार रेराए रेशरे अमानित स्टेरलह रा, বর্ণগ্রহণে বর্ণের একদেশ প্রহণ হইতে পারে না।

আ ঈ উ প্রভৃতি স্থলে না হয়, বর্ণের একদেশ গ্রহণ নাই হইল, ষেধানে अलाहेक्टल वर्षत्र अवन, इत्र, रमशान कि इहेरव ?

একত্ব ও বহুত্ব।

(শরচক্র চক্রবর্তী।)

শনানাদের মধ্যে একত্ব অনুভব করাই জ্ঞানের উৎকর্ষ অনুসা। এ জ্ঞান্ধ বিশিষ্ঠ বিচার দিল্ল জ্ঞান বৃথিতে হইবে। যেমন এক খণ্ড মূহিকা বিচার করিয়া মৃতিকানিক্ষিত ঘটশরাবাদিকে মৃতিকা হইতে অভেন মনে করা। ঘট শরাবাদি নানামে মুজদ একত্ব জ্ঞান বিচারবিদ্ধ জ্ঞান। এই বিচারবিদ্ধ জ্ঞানে আমাদিগকে আপাভবিক্ষন্ধ ব্যথবৈষ্টোর মধ্যে সাম্যভাবের ছামা আনিয়া দেয়। বিচার গণালীতে এই রূপ একত্ব জ্ঞানলাভ গবোক জ্ঞান। প্রভাক্ষ বা অপরোক্ষ জ্ঞানে মৃতিকার অস্তিত ভিন্ন মৃদ্ বা ঘটশ্বাবাদি বলিশা পৃথক্ কোন জ্ঞান খাকে না।

জাগতিক জান মাত্রই হৈত্যংঘাতোংগন বা বছজনসাপেকী। তুলনা ভিন্ন থাজিক বা আন্তরিক জগতের বল্পজান জনিতে পাবে না। যেথানে তুলনা সেগানেই দৈতকলনা। নচুবা তুলনা কবিবে কাহার সহিত ? অতএব যেখানে বাহিক বা আন্তরিক ভাব (ldeas), মেখানেই দৈতভাব। আলো আছে, তাই জাবাৰ জান। তুব আঁছি তাই ছংগ জান। অথবা আঁখার আছে, তাই আলো জান। তুব আঁছি তাই সুখজনা। এই দকভাব নীজানুর জানে আনাদিকাল প্রেহমান। দক্ষণা যদি আনাদিকাল প্রেহমান। দক্ষণা যদি আনাদিকাল করিবে প্রিহি আক্রমান করিবে প্রিহি । লাভ করিতে পারে ই ইলাই এ প্রেমের আলোচা বিকান।

পুর্দ্ধিশিত মতিকা ও ঘটাদি দৃষ্টান্ত অংশুই বলিতে হইবে যে, নামরুপাদি উপাধিবশতঃ মৃতিকা ও ঘটাদি বিভিন্ন হইলেও প্রক্রতপক্ষে উভয়ই এক পদার্থ। ঘটশাবাদি ভান্ধিয়া জুপাকার কর; দেখিবে "মৃতিকেত্যের সভাম্"। এইরপ যাহাকে ভূমি দ্বন্ধভাবপিল মনে করিতেছ স্কল বিচারে ভালা একেরই বিভিন্ন পরিণাম মাত্র প্রতীত হইবে। সুন্দৃষ্টিতে আলো আনাবে নিভান্ত বিদ্দ্ধ প্রতীয়মান হইলেও বিচারমিদ্ধ জ্ঞানে ভালা একই পদার্থ। এক ক্ষলে আনো-শর্মাণ্র প্রিম্পান্দনাভাব; মৃত্যু পূর্ণপরিষ্ণান্দন। তীর আলোকগোলকে দৃষ্টিশাত করিলা অন্ধার দেখিতে পাইবে; অন্ধর্মানে অন্ধর্মান ভ্রাক্তিকান ত স্বভামিদ্ধ। কলে এইই দাড়াইতেছে। ক্রেণ্ জাবিধা দেখ ভারেরাজ্যে নিশ্বেক্ষ সন্থা ও অস্থা একই গাড়াইতেছে। ক্রেণ্ জাবিধা দেখ

আবৃশ্র আপে কিক হঃথের ভুগনার। নে স্থ পদার্থকে বুদ্ধির অনুবীকণ যত্ত্রে शुक्रीको विश्वा (मन, जाहारण अनल इःरथत की छान् (मधिरण शाहरव। इःर्थल -(मक्कप बनेष्ठे स्थकी होत् मृहे इहेरव। स्वताः कन वथन এकहे किस्टिइट्ड, তথন সুথ ছঃখকে আর বিভিন্ন বলিয়া মনে কর কেন ? উপকারের সীকৈ সক্ষেত্র অপকারের বাঁজ অভুরিত; আবার অপকারের মঙ্গে সঙ্গেই পরো-পকারের অযুত উৎসা উলুক হইতেছে। ভালতে মন্দেন বীজ মন্দে ভালর বীজ সমপ্রিয়াণে উক্ত হইতেছে। স্বরাং ভাল সন্দ বা তথ জংখের নির্দোষ সংজ্ঞাহইতে পারে কি ৭ সরল রেখাকে বাড়াইয়া দেও; ক্রমে বক্র হটয়া আদিবে; বক্র রেখাতে আবার অনম্ভ দরল রেখার সমষ্টি দেখিতে পাইবে। ভবে আর সরল ও বজা বেখার ভিন্নতা কোণার ? ভালবাসা ও বিন্নহে সমস্থপ; একথা ভূসভোগী প্রেমিড ও বিরহীর অভিনত। স্থার্গ নাক হীতি, নাকে আবার ধর্গলাভেভা সমভাবে মনের শান্তি িন্ত কবিতেতে। অতি নিমু ও অত্যাচ দেশ বিভিন্ন দিক্ হুইতে এক পদার্থ নয় কি? পূর্ণ শক্তির বিকাশে নিপ্দতা মানয়ন করে, আবার নিপ্দেনাত্য পূর্ণনজির বিকাশভূমি। জীরামক্ষণদেও বলিভেন, এক দাণেরই চল ও অচগছাৰ ম্যাশক্তি ও ত্রেকের ভাব প্রকাশ করে। পূর্ব স্থাতি নেনিভাবের পরিচারক; প্রকারের মৌন ভাব বাচালভার উন্নেষ্ক। জত্পদার্থ matter) এবং মন (mind) একেবই স্থুৰ ও সূক্ষাবস্থা বলিষা নিদিও হইয়াছে। এণটা পদার্থের মাত্র প্রান্তবয় দেখিণা ভাহাকে হুই মনে করা ত অজতার পরিচয় দেওণা মাত্র। তড়িদলু-আৰিত কোন লৌহদতের ছই প্রাক্তে পঞ্চিটিব্ (positive) এবং নেপেটব্ (negative) ত ডিছেক্তি দেখিয়া লৌহণগুকে ছুই মনে করা নিবুদ্ধিতার চিতু। পণ্ডিত বলিতেছেন, একেট্ছ এক নহাশকি দ্বিশ: ক্ষুত্তি হট্যা positive 🖷 negative আখা গ্ৰাপ্ত হইতেছে।

এইরপ জগতের যে কোন দশভাব কেন বিলেষণ করিয়। দেখনা, দেখিতে পাইবে, একই সন্ধা বিভিন্নরূপে ক্রিত হইতেছে। শৈতা ও উঞ্চার নিংশেষ-ক্রণ একই অনস্থার পরিচায়ক। অব্যস্ত শৈত্য এবং অত্যস্ত **তাপে জল** ফুটিয়া উঠে; ইহা প্রতাক্ষ্মিদ্ধ ও বিজ্ঞাননি,সাধিত তব। অত্যস্তাভাব পূর্ব-ভাবের উদ্ভাবক বলিয়া প্রতিপন্ন হইতেছে, আপাতসতা জীবজগুদাদি জ্ঞানীর চক্ষে ইন্দ্রজালবং অলীক; জানীর জগদিন্দ্রজাল জ্ঞান অক্টের উপচাস্থাপদ বিষয়। কাহারো মতে 💵 কাহারও মতে মৃত্যু ভাবী স্থপদোশান বলিয়া

বৰ্ণিত দৃষ্ট হয়। কেছ ক্ৰমোন্নতি (Evolution) কেছ বা ক্ৰমাৰনতি (Involution) মতে এক ঘূর্ণিত চক্রেই অবস্থান করিয়া ভিন্ন ভিন্ন দিকের বর্ণনা করিতেছে মাত্র। অত্যন্ত তাপ ভাবী জলধারা বর্ষণের এবং অত্যন্ত বর্ষণ ভাবীতীক্ষতাপজোতক প্ৰতিপন্ন হইতেছে। ত্তিমিত ৰায়ুমণ্ডলে প্ৰবল ঋড়ের পূর্ব্যভাগ এবং প্রবশ কড়ে বায়ুমগুলের ভাবী নিশানতা স্চিত হয়। অত্যক্ত হংগতুর্দশা ভাবীস্থপ্র্যোদ্যের এবং মত্যন্ত স্থপলাত ভাবী তুংগতুর্দশার স্পষ্ট প্রিচায়ক। বুক্ষ পূর্ণতা প্রাপ্ত হইয়া বীজে, এবং বীজ আবার বুক্ষে প্রিণ্ড। জনো মৃত্যু এবং মৃত্যুতে ভাবী জন্মনীজ প্রোথিত রহিলছে। পূর্ণস্বাস্থানান্ মৃত্যুপণে অগ্রসর; চিনরোগী পূর্ণস্বাস্থ্য লাভে পুনর্জীবিত। ভানী মানবে মহা অন্ততার চিহ্ন এবং অজ্ঞানী পশুণকী কীট পতঙ্গকে অনস্ত জ্ঞানের প্রত্যক্ষ প্রমাণ প্রাপ্ত হওয়া যাইতেছে। কথনো বা ধর্ম্মে অধর্মের, অধর্মে আবার ধর্মের ভাবী বীজ নিহিত দৃষ্ট হইতেছে। বর্তমান উন্নতি ও দিগোদ্রাণী সভ্যতালোকে মৃত্যুর ছায়া এবং অনুমত অসভা অন্ধকারে ভাবী জীবনী চিচ্চ পরিলক্ষিত হইতেছে। বৈজ্ঞানিক কল-যন্তাদি সৃষ্টি করিয়া জগতের স্থপ সুবিধ। বৃদ্ধির সঙ্গে সংস্থা অবশু জাবী বিপদাশকার সংশ্রমণা বিভার করিতেছেন; পকান্তরে বিপদাশকা দুরীকরণমানদে মানব নানা পন্থা আবিকার করিতেছে। তুর্ভিকে স্থৃতিক এবং স্থৃতিকে তুর্ভিক স্টুনা করিতেছে। দেশ বিশেষে কতিপর ক্রেড্পতির অভ্যুত্থান স্বদেশবাসী অপব সাধারণের দীনদ্রিভ্তা হচনা করি-তেছে: আবার ইতর সাধারণের নৈকৎনাহ ও দৈয় ভাবী ক্রোড়পতির অভ্যত্মন প্রকাশ করিতেছে। ধর্মানি ধর্মণস্থাপক মহাপুরুষগণের আগ-মন বিজ্ঞাপক। পকাতবে দেশবিশেষে মহাপুরুষ সংস্কারকগণের আগমন ধর্মনামধারী তত্তদেশবাদিগণের উচ্ছেদসাধক। রাজকার্য্যে উদাসীন বিলাস-পরতন্ত্র নরপতি প্রজাবিদ্রোহানলে নিজ শোণিত দানে কর্ত্তব্য অপালনক্ষপ মহাপাপের প্রায়ন্তিত করিতেছেন; প্রজাতন্ত্রমতের বিজয় হৃদুভি ঘোষণা আবার রাজার অকর্মণ্যতা 😑 অপারগতা স্চনা করিতেছে। সর্বদেশে নৌবল 🔳 দৈলবৃদ্ধি ভাবী কুরুক্ষেত্রের যবনিকা উত্তোলন করিতেছে 🛮 আবার मश्युष्कत आद्याक्तान त्नीवन ७ रेमज्ञवन वृक्ति . श्टेरण्डा त्राकात ताका-বচুদেশকে একত্রিত করিয়া স্বতন্ত্র স্বতন্ত্র কুদ্রবাজ্যের ভাবী সংস্থাপনা স্বচনা ক্রিতেছে; আবার বছধাবিচিন্ন কুত্র কুত্র রাজ্যাদি ভাবী সাম্রাজ্য সংস্থাপক দিখিজমীর রাজ্য শিপাসা বলবতী করিতেছে। অত্যক্ত অবসাদ অতি উদ্দী-

পনার কারণ হইয়া দাঁড়াইতেছে। অভান্ত কামকাঞ্চনাসক্রির অবংশ্টেক বিষমঙ্গলকে ঈশ্বর লাভ করিতে দেখা যাইতেছে; আবার স্টিস্থিতিলয়ে সিদ্ধ-কর বিখামিত্রকে মেনকার রুমণোনত হইবা আরুবিশ্বত দৃষ্ট হইতেছে। তরদের প্রবলাচ্চাদ গভীর পতনের এবং গভীর পতন আবার ভাবী অভাু-থানের হুচনা করিতেছে। কথনো বা বৈরাগ্য ভ্রমী ভোগাস্তির ও বহুভোগাস্তিক বৈরাগ্যের স্থচনা করিতেছে। এইরূপ একভাবই ছুইরূপে ক্রিত হইয়া জগতের বিচিত্রতা উৎপাদন করিয়াছে।

একই বস্তু বা ভাব দর্শনে বিভিন্ন মানব আবার বিভিন্ন ভাবে। অনুপ্রাণিত। একই স্থ্রীকে কেহ জননী কেহ প্রণারিনী কেহ আবার নিরয়রাপিনী দর্শন করিতেছে। এক মানবই সমন বিশেবে কখন পিতা কখন পুত্র, কখন ভাতা কথন বা মাতৃলরূপে অভিহিত হইতেছে। ঘোর পুটিগন্ধ পরিপূর্ণ মহাশাশানে কেহ কালের বিষ্ট বাাদান দশন করিয়া তাহা মহাত্রিনীক্ষা ও অপরিত্র মনে কভিতেছে; কেছ আংগার দর্ম্যনপরিত্যক্তাবস্থায় এক মাত্র আশ্রহদাত। জীবস্তবৈবাগ্যভূমি শ্রশানকে মহাপ্রিত্র মনে করিতেছে। একই শক্তিতে কাহারো শুক্তিজ্ঞান কাহারো বা রম্বতন্ত্রম উপস্থিত হুইতেছে। একই জল বারি, পাণি, ওয়াটার নাম ধারণ করিয়াছে। একই কাল জন্ম মৃত্যুদ্ধপে অবস্থান করিতেছে। একই ভাবপ্রবণতা প্রেম প্রীতি, সৌহার্দ্ধ ভক্তি, দেষ, ঈর্ষারূপে ক্রিভ হইতেছে। একই দেব ৩৩ কোটী দেবতারূপে, একই বায়ু পানাপানাণিক্লপে, একই তেজ অগ্নি বিহাৎ সুর্যাদি রূপে স্ফারিত হইয়া জগতের বিচিত্রতা উৎপাদন করিতেছে। একই দেব সর্বভৃতে গুঢ় অবস্থান করিতেছেন। একই গতি (motion) শক্ত, আলো, বিদ্যুৎ ও আকর্ষণ শক্তিরূপে প্রকাশ পাইতেছে। এই সকলের ভিত্তিভূমি একই আয়া এইরূপে বৃহ্ধা বৰ্ণিত হইতেছেন।

এই জগতের যে কোন বিষয় কেন পরিক্ষা করিয়া দেখ না, দেখিবে একই পদার্থ ক্রিয়ার পর প্রতিক্রিয়াতে,এবং প্রতিক্রিয়ার পর পুনঃ ক্রিয়াতে পরিণত ছইয়া হৈ তাভাদে জীনকে প্রভারিত করিতেছে। মূলে একণদার্থই যেন হৈত ও বহুতে পরিণত হইয়া জীবভান্তি উৎপাদন করিভেছে, কিন্তু শ্রুতি এই বছত্ত্বের মধ্য দিয়া একাত্বাহ্মভব করিয়া বলিতেছেন "নেহ নানান্তি কিঞ্ন"। যথনই অলীক নানাত্তে জীবকে বিকিপ্তচিত করিতেছে আর্য্য ঋষি তথনই বলিতেছেন "নেহনানান্তি কিঞ্চন"। এই একম প্রথমতঃ বিচার প্রণালীতে বুদ্ধিস্থ কবিতে হইবে। পরে আজাম্বান্তব করিয়া পর্যজ্ঞান পর্মআনিন্দে পরিম্ম হইয়ে। এই একস্বানুভূতিই জ্ঞান ও তপস্থার চর্ম ফল। এই একস্বই অনুভ্যুক্তিকেই জীব বলিতে পারে,—

> "প্রত্যাে করসং পূর্ণননন্তং সর্কাতােমুখ্য। একনেবাছয়ং ব্রহ্ম নেহ ন নাস্তি কিঞ্চন॥"

শ্বাসী বিবেকানক ঢাকা)

উদোধনের পাঠকগণ শুনিরা স্থাী হইবেন যে, স্থামী বিবেকানন্দ তাঁহার কয়েকজন সন্নাদী শিষা সমভিবাহারে বিগত ১৮ই মার্চ ঢাকা যাত্রা করিয়া তংপরদিন তথার পোঁছিয়াছিলেন। নার্রায়ণনঞ্জে গোয়ালন্দের ষ্টামার পেঁছিবানাত্র ঢাকানিবাদী কতকশুলি ভদ্রশ্যেক আসিয়া তাঁহাকে অভ্যর্থনা করিলেন। ঢাকায় অপরাছে ট্রেণ পৌছিবামাত্র শুনীর বিখ্যাত উকীল বাবু ঈশ্বরচন্দ্র ঘোষ ও গগনচন্দ্র ঘোষ মহাশান্ত্র সমগ্র চাকাবাদীর নামে স্থামীজিকে অভ্যর্থনা করিয়া ভ্তপুর্য জনিদার ত্যাহিনীয়োহন দাস মহাশ্যের বাটীতে লইয়া গেলেন। ষ্টেশনে অনেক ভদ্রশোক ও ছাত্রাদি আসিয়াছিলেন। তাঁহারা সকলে আনন্দে 'জয় রামকৃঞ্চদেবকা জয়' ধ্বনিতে গগন পরিপুরিত করিতে লাগিলেন। ছাত্রগণ স্থামীজির গাড়ীর সঙ্গেল সম্বেত হইয়াছিলেন। তাঁহারা স্থামীজির সন্দর্শনে আপনাদিগকে কৃত্যার্থনার বেধি করিতে লাগিলেন।

স্বামীজির নিবট, সদা সকাদাই ভদ্রলোকথণ তাঁহার উপদেশাস্ত পান করিতে আসিতে শাগিলেন। অপরাহে তিন দিন প্রায় ঘই তিন ঘণ্টা ধরিয়া জান, ভক্তি, বিশ্বাস, তাাগ, বিবেক, বৈরাগ্য কর্ম প্রভৃতি নানাবিধ আধ্যাত্মিক বিষয়ে আলোচনা হয়। প্রায় শতাবিধি লোকের সমাগম হইত। সকলেই তাঁহার বিধাসভক্তি ও ভেজঃপূর্ণ উপদেশাবদী প্রবণ করিয়া বিশেষ তৃপ্ত হইয়া-ছিলেন। গত বুধাইমী উপলক্ষে ব্রহ্মপ্রস্থানের মান্সে স্থামীজি সশিষ্যে নৌকাযোগে লাঙ্গলব্ধি নামক স্থানে ধাত্রা করেন। নারায়ণগল্পের নিকট শীতলাক্ষ নম্বার দৃশ্য বড় মনোহর। তথা হইতে ধলেখনীতে পড়িয়া পরে ব্রহ্ম-পুরে প্রবেশ করিতে হয়। এই স্থানে ব্রহ্মপুত্র খুব সকল শ্বনা যার নাকি ভগবান্

পরত্তরাম এই তীর্ঘে স্থান করিয়া মাতৃহত্যা পাপ হইতে উদ্ধার পাইয়াছিলেন। তাই দলেদলে এথানে আবালবুদ্ধবনিতা পাপক্ষাের জন্ত আগমন করিয়া থাকে। এই মেশার খুব জনতা হইয়াছিল। যাত্রিগণের নৌকা হইতে অবিরাম আনন্দ-স্চক হলুধ্বনি উথিত হইতেছে—কোলাও হরিনামের মধুরধ্বনি কর্ণকুর্র পবিত্র করিতেছে। সানান্তে সামীলি ত্রহ্মপুত্র হইতে ধলেম্বরী —তথা হইতে বডি গঙ্গায় প্রবেশ করিয়া ঢাকানগরে পুনঃ প্রবেশ করিলেন। ঢাকাবাদিগণের অত্যন্ত অনুরোধে স্বামীজি গত কলা এথানকার জগরাথকলেলগুহে প্রায় ত্ই সহল্র শ্রোতার সমক্ষে 'আমি কি শিথিগাছি ?' এই সম্বন্ধে ইংরাজি ভাষায় প্রায় এক ঘটাকাল বক্তা প্রদান করেন। এখানকার বিখ্যাত উকীল রমাকান্ত নন্দী মহাশার সভাপতি হই রাছিলেন। বক্ত তার সাব মর্দ্র এই— আমি নানা দেশ বিদেশ ভ্রমণ করিরাছি — কিন্ত আমি কথন নিজের জমভূমি বাঙ্গালাদেশের স্বিশেষ দুর্শন করি নাই। জানিতাম না, এদেশের জলে স্থলে সর্ব্বিত্র এত সৌন্দর্যা। কিন্তু নানাবেশ ভ্রমণ করিয়। আমার এই লাভ হইয়াছে যে, আমি ইহার সৌন্দর্যা বিশেষরাপে উপল্ফি করিতে পারিতেছি। এইরপই, আমি প্রথমে ধর্মের জন্ত নানা সম্প্রদায়—বৈদেশিক-ভাববহুল বৃহ্বিধ সম্প্রদায়ে ভ্রমণ করিতেছিলাম, অপরের হারে ভিক্ষা করিতে ছিলাম—জানিতাম না যে, আমার দেশের ধর্মে, আমার জাতীয় ধ্র্মে এত সৌদর্য্য আছে। আজকাল একদল আছেন, তাহার। ধর্মের ভিতর বৈদেশিক ভাব চালাইবার বিশেষ পক্ষপাতী — ই হারা 'গৌতুলিকতা' বলিয়া একটা কথা त्रहना कतिशास्त्रन, हे शांता वरलन, शिन्धर्य गण्डा नश्, वांतन छेशा (ली डिलिक। পৌতলিকতা কি, উহা ভাল কি মন্দ, ভাহা কেছ অনুসন্ধান করেন না, কেবল ঐ শব্দেরই প্রভাবে তাঁহারা হিন্দুধর্মকে ভুল ব্লিতে সাহদ করেন। আর এক मन कार्ट्यन, ठाँहात्र। हाँ हि हिक्तिकत शर्यात्र देवळानिक गांशा वाहित करतन। তাঁহারা কোন দিন ভগবানকেই তড়িতের পরিণামবিশেষ বলিয়া ঝাখা করিবেন! যাহা হউক, মা ই হাদিগকেও আশীর্ঝাদ করুন। তিনিই ভিন্ন ভিন্ন প্রকৃতির ধারা আপন কার্য্য সাধন করিয়া লইতেছেন। ইংগাঁদের অভিরিক্ত দল-প্রাচীন সম্প্রদার-বাঁহারা বলেন-স্থামি তোমার অভ শত বুঝি না-द्विएक हाहिश्वना, व्यामि हाहे अश्वन्यक व्यामि हाहे व्याचारक-हाहे कांपरक ছাড়িয়া স্থ হঃথকে ছাড়িয়া ইহার অতীত প্রদেশে বাইতে—বাহারা বলেন— বিখাদ সূহকারে গলালানে মৃত্তি হয়-শাঁহারা বলেন, শিব রাম প্রভৃতি ধাঁহার

প্রতিই হউক না কেন, ঈথর বুদ্ধি করিয়া উপাদনা করিলে মুক্তি হইরা থাকে। আমি এই প্রাচীন সম্প্রদায়ভুক্ত। আজকালকার এক मञ्जानीय वालन, केश्रत ও मश्मात अक मान्त्र कत्र । हेर्गातन-मन्य अक নহে। বাঁহা রাম জাঁহা কাম নহি, বাঁহা কাম ভাঁহা রব, রজনী কবি গো.না নহি এক ঠাম। যেথানে ভগবান সেখানে কথন সংগাব থাকিতে পারে না। অন্ধলার ও আলোক কখন এক সঙ্গে থাকিতে পারে ? এই জন্ত ইং বৈ৷ বলেন, সদি ভগবান পাইতে চাও, কামকাঞ্চন ত্যাল করিতে হইবে ৷ এই সংসারটাত ভুগা, শুক্ত বিছট -- নয় - ইংকে না ছাড়িলে কিছুতেই তাঁহাকে পাইবে না। যদি ভাহা लो भात. उदर शीकाद कह रण, आणि इस्त्रेण, दिख छ। विविधा आपर्नटक निम করিও না। মডাতে গোনার পাত মুড়িয়া ঢাকিও না। এই জন্ম ইহাঁদের মতে এই ধর লাভ কৰিতে হ'লে, ঈধর লাভ করিতে ছইলে ভাবের মরে চুরী প্রথম হাড়িতে হটবে। আমি কি শিখিয়াছি ? এট প্রাচীন স্প্রাদায়ের নিষ্ট আমি কি শিখিয়াছি ? শিথিয়াছি—হল ভং এয়নেটবভং দেবায়গ্রহ-হৈতুকং মনুষ্য বং মুমুক্ষ মহাপুক্ষদং আৰু । প্ৰথম চাই – মনুষ্য – মানুষ জন্ম —ইহাতেই মুক্তিলাভের বিশেষ স্থবিধা --ভার পর চাই---মুমুক্তা - আমাদের সম্প্রধার ও ব্যক্তি ভেদে সাধন প্রণাধী তির ভিন্ন-অধিকার বিভিন্ন ব্যক্তির ভিন্ন ভিন্ন-কিজ নোটামুটি এই বলা বাইতৈ পারে বে, মুমুকুতা ব্যতীত ঈশ্নের—উপল্লি অসম্ভব। মুমুশুতা কি 📍 মোক্ষের জন্ত — এই মুখ ডঃখ হইতে বাহির হইবার জন্ত প্রবল মাগ্রহ—এই সংসারে প্রবল ঘুণা — যথন ভগণানের জন্ম এই তীত্র ব্যাকুণতা হইবে, তথনই জানিবে, তুমি ঈশব-লা, ভর অধিকাণী হইরাছ। তার পর চাই মলাপুরস্বসং শ্রুং-- ওরুণার। গুরুপনম্পর;ক্রুমে যে শক্তি আসিয়ছে, তাহারই সহিত আপনার সংযোগ সংস্থাপন। ভদাতীত মৃনুষ্তা থাকিলেও কিছু ১ইবে না অর্থাৎ তে মার তাক-করণ আবশ্রক । কাহাকে গুরু করিব ? শ্রোত্রিগোহরুজিনোহ*বা*মহতো যো বন্ধবিত্যঃ ।' যিনি শাস্ত্রের স্থারহয় জানেন—'পুঁথি পড়্কে তুতি ভয়ো পণ্ডিত ন ভাষা কোই—এক মকর প্রেম্দে গড়ে ওই পণ্ডিত হোই।' শুধু পতিওত হইলে চলিবে না! আজকাল যে সে গুরু হইতে চাহে। ভিক্ক ও লক। মূদ্রা দান করিকে চার। 'ভর্জিনঃ'—বিনি নিজ্ঞাপ—'অকামহত'— যাহার (ক্বল জীবের হিত বাতীত আর কোন অভিস্তি নাই-বিনি অহেতুক-

দ্যাদিল্ল, থিনি কোন লাভের উদ্দেশে অথবা নাম বা যশের জন্ম উপ্রেশি না দেন—আর থিনি প্রক্ষকে বিশেষ করিয়া জানেন—খিনি তাঁহাকে প্রভাক্ষকরিয়াছেন—থিনি করতলামলকবং করিয়াছেন। তিনিই শুরু—তাঁহারই সহিত আধাান্ত্রিক যোগ স্থাপিত হইলে তবে ইশ্বর লাভ—ঈশ্বর প্রক্রেক স্থান হইবে। তার পর চাই অভ্যাস। ব্যাকুলই হও, আর গুরুই লাভ কর, জভ্যাস না করিলে, সাধন না করিলে কথন উপলব্ধি হইতে পারে না। এই কয়টী যথন দৃত হইবে, তথনই প্রভাক্ষ হইবে। তাই বলি, হে হিলুগণ—হে আর্য্যসন্তানগণ—তামেরা এই আদর্শ কথন বিশ্বত হইও না যে, হিলুর লক্ষ্য উই সংসারের বাহিরের যাওয়া—শুধু এই জগংকে তাগি করিতে হইবে, তাহা নয়, স্বর্গকেও ভ্যাণ করিতে হইবে, নক্ষত্যাপ করিতে হইবে, শুধু তাহা নয়,ভালকেও ভ্যাপ করিতে হইবে – এই সকলেব অতীত প্রদেশে যাইতে হইবে।

ত>শে মার্ফ স্বামীজি পোকস কলেজের নিস্তৃত পোলা ময়দানে প্রায় তিন সহস্র শ্রোতার সমক্ষে 'আমরা বে ধর্মে জন্মিয়াছি' (The Religion we are born in) সম্বন্ধে প্রায় হই ঘণ্ট। কালব্যাপী এক বক্তৃতা করেন। এই বক্তৃতাও ইংরাজী ভাষায়ই হইয়াছিল। শ্রোত্পণ মন্ত্রমুর্কের স্থায় নিস্তব্ধ ছিলেন। ইংরারও সার মর্মানিমে স্ক্লিভ হইল।

প্রাচীনকালে স্থানাদের দেশে আব্যায়িক ভাবের স্বভিশয় উন্নতি ইইয়াছিল। স্বামাদিগকে সাজ দেই প্রাচীন কার্ম্বনী স্ববণ করিতে ইইবে। প্রাচীনকালের গৌরবের চিন্তার এক বিগদাশকা এই যে, আমরা স্বার নৃত্র কিছু করিতে চাই না—কেবল সেই প্রাচীন গৌরব স্ববণে ও কীর্ত্তনে কালাতিপাত করি। প্রাচীনকালে মনেক ঋষি মহর্ষি ছিলেন—তাঁহারা সভ্যের সাক্ষাকার করিয়াছিলেন। কিন্তু প্রাচীনকাল স্বরণে প্রকৃত উপকার লাভ করিতে ইইলে আপনাদিগকেও ঋষি করিতে ইইবে— ওপু তাহাই নহে— স্বামার বিশ্বাস, আমরা স্বারও উক্ততর ঋষি ইইব। স্বভীতকালে স্বামাদের খুব উন্নতি ইইয়াছিল— স্বামি তাহা স্বরণ করিয়া গানিত। বর্ত্তমানকালের স্বনত স্বব্দা দেখিয়াও স্বামি স্বানন্দিত, স্বার ভবিষ্যতে গাহা হইবে, তাহা ভাবিয়াও আমি আশান্বিত। কারণ স্বামি জানি, বীজের বাজন্বতাব নটি ইইয়া তবে বৃক্ষ স্কুত। সেইরপ বর্ত্তমান অবস্থার স্বানত ভাবের ভিতর ভবিষ্যৎ মহন্ত্বাব নিহিত রহিয়াছে।

আমরা যে ধর্মে জনিয়াছি, ভাহার ভিতরে সাধারণ ভাব কি কি ?, ত্থাপা-

ততঃ দেখিতে পাই, নানা বিরোধ। নতস্থ্যক কেছ অবৈত্বাদী, কেছ বিশিষ্টা-বৈত্বাদী, কেছ বা বৈত্বাদী। কেছ অবতার মানেন, মৃত্তিপূলা মানেন, কেছ বা নিরাকারবাদী। আবার আচার সহকে ত নানা বিভিন্নতা দেখিতে পাই। জাটেরা, মৃগলমান বা গ্রীশ্চান পর্যান্ত বিবাহ করিলেও, জাতিচ্যুত হয় না। তাহারা অবাবে সকল দেবননিরে প্রবেশ করিতে পারে। পঞ্জাবের অনেক প্রামে ছেহিলু, শুক্রভক্ষণ না করে, সে মৃগলমান বলিয়া বিবেচিত হয়। নেপালে ভ্রান্ধ্য, চারিবর্গেই বিবাহ করিতে পারেন, আবার বালালা দেশে আন্ধ্যান্ধর অবান্তর বিভাগের ভিতরও বিবাহ হইবার বো নাই। এইরূপ নানা বিভিন্নতা দেখিতে পাই। কিন্তু চিলুদের মধ্যে এই একটা বিষয়ে একজ দেখিতে পাই যে, কোন হিলু গোগাংস ভক্ষণ করে না।

এইরপ আমাদের ধর্মের ভিতরেও এক মহান সামগ্রন্থ আছে। প্রথমতঃ--শান্তের কথা লইরা একটু খালোচনা করা থাক। বে সকল ধর্ম এভদূব উন্ত হইয়াছিল যে তাহাদের ভিতর একথানি বা বহ শাস্ত্রের উংপত্তি হইরাছিল, সেই সকল ধর্ম নানাবিধ অভ্যাচার সত্ত্বে এতদিন টিকিয়া রহিগ্রহে। গ্রীক ধর্মে নানাবিধ গৌলগ্য থাকিলেও শাস্ত্র অভাবে উহা লোপ থাইয়া গেল কিন্তু মাত্দীধর্ম ওল্ডটেষ্টামেন্টের বলে এখনও অকুর প্রতাপ। হিন্দুধর্ম ও তল্প। উহার শান্ত্র 'বেদ' জগতের দর্ববিলাচীন গ্রন্থ। উগার এইটা ভাগ-কর্মকাও ও জ্ঞানকাণ্ড। ভারতের সৌভাগ্যই ২উক ছভাগাই হউক, কর্ম্মকাণ্ড এখন লোপ পাইরাছে। দাক্ষিণালো কতকগুলি ব্রাহ্মণ মধ্যে মধ্যে ছাগ্রধ করিয়া ৰজ্ঞ করিয়া থাকে, আর বিবাহ প্রাদ্ধাদির মত্ত্বে মধ্যে মধ্যে পাওয়া যায়। এখন আর উহা পুন: প্রভিত্তিত করিবার উপায় নাই। কুমারিল্ল ভট্ট একবার চেষ্টা করিয়াছিলেন, কিন্তু তিনি তাহাতে অকুওকার্য্য হন। ভার পর বেদের জ্ঞানকাও-ষাহার নাম উপনিষদ্-বেদান্ত। উহাকেই শ্রিকিশির বলিয়া থাকে। আচার্য্যগণ শ্রুতি উদ্ভূত যেখানে করিতেছেন, সেই খানেই এই উপনিষদ্ উদ্ধৃত করিতেছেন্। এই বেদায়ের ধর্মই এক্ষণে ভারতেৰ ধর্ম। কোন সম্প্রদায় নিজের গৌরব স্থাপন করিতে হইলে তাঁং!-निगरक (वनाटक व निहारे निटंड रहा। कि-देव व्यक्ति, कि व्यदेव वर्गानी मकन्दकहे—हेहात्र (माहाहे पिट्ड इया देवक्षव आर्थन ये अमार्थ कतिएंड পোপাল ভাপনী উপনিষদ্ উদ্ভ করিয়া খাকেন। নিজের মনোমত বচনাবলী ना भारित (कह (कह--छेशनिवह इहना भर्धा क दिया जन। धकरण (यम-

সহকে হিন্দুদিগের মত এই যে,উহা কোন পুস্তক বিশেষ বা কাহার রচনা নছে। फेटा नेश्रातत अगल जानिशीन-कथन वाक दत्र, कथन वा अवाक थात्क সারমাচার্য্য এক স্থলে বলিয়াছেন 'যো বেদেভ্যোহ্যিলং জগং নির্মান্দ্রিন বেদজানের প্রভাবে সমুদ্ধ জ্বাৎ স্টি করেন। বেদের রচমিতা কেহ কখন **ए**ए स्थित नार्ट छ छ और छेट। कन्नना कन्ना छ भन छ व । श्वायित्रण दक्तान की भनग প্রত্যক্ষ করিরাছিলেন্– গুরি কর্থাৎ দুল্লা, মহন্তুরা! ভাষারা—অনানিকাল ছইতে হিত বেদ সাক্ষ্য ক্রমাছিলের হ'ব। এই প্রবিগণ কে ? বাংডাগ্র**ন** বলেন, --বিনি ব্যাবিহিত সাক্ষাৎফ্র জ্বা--লিনি নেত্ ত্তিলেও প্রবি হইতে পারেন। তাই প্রাচীন কালে খেডাপুত্র বার্ষ্ট, ধাবর চনম বাাস, দাদীপুত্র নারদ এড়েতি সকলেই ঝ্রিগ্য জ প্র ইট্রাহিলেন। প্রকৃত উপাধে এই ধর্মের সামাৎকার আভ হইলে আর কোন ভেন থাকে না। পুর্ন্নোক ব্যক্তি-গণ যদি ঋষি হইয়া থাকেন—ভবে আধুনিক কালের কুলান ত্রান্ত্রান্ত্রামরা আরও কভ উচ্চ ঋষি হইতে পার। সেই ঋষিরলাভের চেটা কর—লগং ভোমার নিকট আপনা আপনিই নত হইবে ৷ এই বেনই আনাদের এক মাত্র প্রমাণ-আর ইহাতে সকলেবই অধিকার। যথেমাং বাচং কল্যাণীমাবদানি জনেতা:। বন্ধবাদভোভাং শুলাম চার্যায় চ সাম চারণায়।—শুরুমজুর্বেদ, মাধ্যন্দিনীয়া শাখা, ২৬ অধ্যায়, ২ মন্ত্র। এই বেদ হইতে এমন কোন প্রমাণ দেখাইতে পার যে, ইহাতে স্কলের অধিকার নাই ? পুরাণ ৰলিতেতে, বেদের অমৃক শাখাধ অমৃক জাতির অধিকার অমৃক অংশ সত্য অমুক অংশ কলিয়ুগের অগ্ন। কিন্তু বেদ ত এ বর্থা বলিতেছেন না। ভূত্য কি কথন প্রভুকে আজ্ঞ। করিতে পারে; স্থতি পুরাণ তথ্র এ সকল ওলিই তঙটুকু প্রাক, ৰতটুকু বেদের সহিত মেলে। না মিলিলে— অগ্রাহা; কিন্ত এখন আমরা পুরাণকে বেনের অপেকা শ্রেষ্ঠ আসন দিরাছি। বেনের চটাত বাদালা দেশ ছইতে শোণই পাইয়াছে। আমি সেই দিন শীল্ল দেখিতে চাই বৰ্থন প্ৰত্যেক ৰাটীতে শালগ্ৰাম শিশাৰ সহিত বেদও পুঞ্জিত হইবে। আবালয়ক্ষবনিতা বেদের পুরা করিবে। বেগদপ্রদ্ধে পাশ্চাত্য পণ্ডিতদিগের মতে আমার কোন আস্থা नारें। जाराबा त्वाम कान आक वरे निर्वत्र कवित्तिहरू, कान चाराब छेहा वमगारेश गर्जा वर्ष शिष्टारेश बारेटल्ट । बारा र्फेक, अकल श्रालित कथा পুর্বেই বলিয়াছি, পুরাণের বতটুকু বেদের সহিত মিলে, তভটুকুই গ্রাছ। পুরা-त्पत्र चार्त्य वर्षा त्मिर्ड शृहे, याहा त्वत्मत्र महिल नित्म मा, वर्षा भूतात्म

লিণিত আছে, কেহ দশ সহত্র কেহ বা বিশ সহত্র বর্ষ জীবিত রহিয়াছেন, কিছ বেদে দেখিতে পাই—শতার্বৈ পুরুষঃ—এখানে বেদের কথাই প্রান্থ। ভাষা হইলেও পুরাণে অনেক স্থলর স্থলর যোগ ভিজ্ঞ জ্ঞান কর্মের কথা দেখিতে পাই,দে গুলি অবশ্র লইতে হইবে। তার পর তব্র। তব্র শক্রের প্রকৃত অর্থ শাল্প, ধেনন কাণিল তন্ত্র। কিন্তু এখানে তব্র শক্ষ সন্ধাণ অর্থে ব্যবহৃত। বৌদ্ধর্মানকাশী রাজগণের শাসনে বৈদিক যাগ্যক্ত সব লোপ পাইলে কেহ আরে রাজভবে হিংলা করিতে পারিল না। কিন্তু অবশেষে বৌদ্ধদেরই ভিতরে এই যাগ্যক্তের ভাল ভাল অংশগুলি গোপনে অমুঠিত হইতে লাগিল—তাহা হইতেই তল্পের উৎপত্তি। তন্ত্রে বামাচার প্রভৃতি কতকগুলি থারাণ জিনিষ থাকিলেও লোকে উহা যতদ্র গারাণ ভাবে তাহা নহে। বাস্তবিক বেদের ব্রাহ্মণ-ভাগই সমস্ত একটু পরিবিত্তিত হইয়া তন্ত্রের মধ্যে বর্ত্তমান। আল কালকাব সম্পান্ন উপাসনা পূজাপদ্ধতি কর্ম্মকাণ্ড তন্ত্রমতেই অনুষ্ঠিত হইয়া থাকে। একণে ধর্ম্মত স্থদ্ধে একটু জালোচনা করা যাউক।

ধ্যমতেও বিভিন্ন সম্প্রদায়ের বিরোধ সংস্থা কৃতক্তল ঐক্য **স্বাচ্ছে**। প্রথমতঃ - তিন্তী বিষয় -- তিন্তী অভিত্ব -- প্রায় সকলেই স্থীকার করেন। দিখর, আত্মা ও জগং। স্বিধার অর্থাৎ যিনি জগংকে অনস্কাল স্থান পালন ■ লয় করিতেছেন। সাংখ্যগণ ব্যতীত আর সক্লেই ইহা श्रीকার করেন। আত্মা,—অসংখ্য জীবাত্মাগণ বারবাব শরীর পরিগ্রহ করিয়া জলমুভ্যুচকে ভ্রাম্য-মান: ইহাকে সংসারবাদ বলে—চলিত কথায় পুনর্জন্মবাদ। আর. এই জানাদি অনম্ভ জগং। এই তিনকে কেহ কেহ এক, কেহ বা পৃথক প্রভৃতি নানারণ মানিলেও এই তিন্টা সকলেই বিশ্বাস করেন। এখানে একটু বক্তব্য এই যে, আত্মাকে হিন্দুরা চিরকাল মন হইতে প্থক বলিরা জানিতেন। পাশ্চাতোরা কিন্ত মনের উপর আর উঠিতে পাবেন নাই। পাশ্চাত্যগণ এগৎকে আনন্দপূর্ণ সম্ভোগ করিবার জিনিষ বলিয়া জানে—আর প্রাচ্যগণের জন্ম ইইতে ধারণা— সংসার ছঃখপুর্ণ – উহা কিচুই নয়। এইজন্ম পাশ্চাভ্যেরা – প্রণালীবল্প কর্মে বিশেষ পটু, প্রাচ্যেরা ভদ্রপ অন্তর্জগতের ক্ষরেষণে অভিশর সাহনী। যাহা इडेक-- अक्रा हिल्रुसर्म्मत बात जु अन ही कथा नहेश चारनाहना करा सार । হিন্দদের মধ্যে অবভারবাদ প্রচলিত। বেদে আমরা কেবল মংশ্র-অবতারের কথা দেখিতে পাই। যাহা হউক এই অবতারবাদের তাৎপর্য্য-মনুষাপুজা-মনুষ্ট্যের ভিতর ট্রার সাক্ষাৎই প্রকৃতই ঈর্থর সাক্ষাৎ। হিন্দুগণ প্রকৃতি হইতে

প্রকৃতির ঈর্বরে ধান না-মহুষ্য হইতে মনুষ্যের ঈশ্বরে গ্রমন করিরা থাকেন। ভারপর মৃত্তিপুত্রা—শাস্ত্রোক্ত পঞ্চ উপাসদেবতা ব্যতীত সকল দেবতাই এক একটা পদের নাম মাত্র-কিন্তু এই পঞ্চ উপাত্তদেবতা কেবল দেই এক ভগ-ৰানের নাম মাত্র। এই মুর্ত্তিপূজা আমাদের সকল শাক্তেই অধ্যাধম বলিয়া বর্ণিত হইগ্লান্তে—কিন্তু তা বণিয়া অস্তের নহে। এই মৃত্তিপূজার ভিতরে নানাবিধ কুংদিৎ ভাব প্রবেশ করিয়া থাকিলেও আমি নিলা করি না। যদি দেই মৃত্তিপুত্র ব্রাক্ষণের পদ্ধুলি আনি না পাইতাম, তবে আনি কোথায় থাকিতান! যে সকল সংকারক মূর্ত্তিপুজার নিলা করিয়া গাংকন, তাঁহাদিগকে আদি বলি, ভাই, ভূমি বদি নিরাকার উপাননার যোগ্য হইয়া থাক, তাহা কর. কিন্তু অপ্তকে গালি দাও কেন্তু সংখার কেবল পুলাতন বাজিব জীবসংসার মাত্র। জীর্ণ সংস্কার হইয়া নেনে আব উতার প্রযোজন কি ? কিছু সংস্কারক-দল এক স্বতন্ত্র মন্তামার গঠন করিতে চান। তাঁতার। মহৎ কার্যা করিয়াছের। তাঁহাদের মস্তকে ভগবানের জানীর্নাদ পতিত হউক। কিন্তু ভোমহা আপনা-দিগ্রকে পুণকু করিতে চাও কেন ৪ হিন্দু নাম লইতে লক্জিত হাও কেন ৪ আনা দের জাতীয় অর্থবানে সাময়। সকলে আবোহণ করিয়াছি—হয়ত উহাতে একট ছিদ্র হইয়াছে। আইন সকলে মিলিয়া উহা বন্ধ করিতে চেষ্টা করি. না পারি-একসঙ্গে ডুবিয়া মরি। আর ব্রাহ্মণগণকেও বলি, তোমরা হুথা অভিমান আর রাখিও না—শার্মতে তোমাদের ব্রাহ্মণ্ড আর নাই—কারণ ভোমরা এতবাল মেস্ফ রাজ্যে বাম করিতেছে। যদি ভোমরা নিজেদের ক্থান্ন নিজেরা বিখাস কর, তবে সেই প্রাচীন কুমারিল্লভট্ট যিনি বৌদ্ধগণকে সংহার করিবার অভিপ্রায়ে প্রথমে বৌদ্ধের শিষ্য হইয়াছিলেন, শেষে তাহা-দিগকে হত্যা করার প্রায়ণ্ডিত জ্বল ত্যানলে প্রবেশ করেন, সেইরপ তোমরঃ স্কলে মিলিয়া ত্যানলে এবেশ কর; তাহ। না পার, আপনাদের হর্মলতঃ খীকার করিরা সর্বাদারণকে তাহাদের প্রভূত অধিকার দাও।

অৰ্থ ৷

(और्तिनाम पछ।)

ছংথের জীবন, করিতে বহন,
করি আগমন হেথার হার।
সম্পদ্রিহীন, হরে যাগি দিন,
প্রের অধীন নাহিক উপার।

বাল্য করি জন্ন, কৈশোর উদয়, পরে পূর্ণপ্রায় যৌবন এই। কোথা বাল্য কাল, স্থপদ মুণাল, স্থভাবনির্মল সমন্ত্র সেই॥

মনের বেদন, না ছিল বধন, এখন বেমন ইয়েছে হার। না ছিল বিশাল, সংসাবের জাল, গিয়েছিল কাল অনিল প্রার ॥

যবে চিস্তান্দ, হয় নি প্রাবদ,
করেনি বিকল মনের ছার।
আহা সেই কালে, ক্রীড়া কুত্হলে,
পরেছিম্ম গলে স্থের হার॥

সে হৃথ সময়, প্রবিলে হৃদর,
বিদানিত হয় হৃঃথের স্থোরে।
কালের কবলে, গিয়েছে সে চলে,
কোবন অনলে ফেলিয়ে ধারে!

বৌবন সমন্ত্র, স্থাপ্তাল কর্ত্ত মম বিষমন্ত্র হইল কেন ? সকলি আকাশ, হরেছে প্রকাশ, মরীচিকা বাস পরেছি বেন !!

বাতনা অশেব, ধরি ভীম বেশ,
ত্বদেশ বিদেশ যেথানে বাই।
সেইথানে হার, ঘেরেরে আমার,
কি বিষম দায় উপায় ন;ই!!

এত অভিমান, করেছি নির্মাণ, রাধিবার স্থান নাহিক আর। হতাশ অনলে, স্থা মন জলে, পরিয়াহি গলে সাজের হার॥

শ্বণা অপমান, যেন ধরণান, করিছে নিশান ক্লয়োপরি। ভাবিয়া না পাই, কাহারে স্থাই, কোনধানে যাই কিরণ করি॥

নাহি হেন জন, মনের বেদন, বলে করি মন কতক থালি। হইরাছে ভারি, বহিবাবে নারি, মাই বলিহারি হংখের ডালি॥

অনৰ্থ আশাৰ, ধন পিপাসার, ভাষতেছি হায় কতই স্থান। বিহান সম্বল, নাহি অমুখল, এমাকী কেবল আছিলে প্ৰাণ॥ পর-অনুপর, করিয়া নির্ভর, আশাবায়ু সহ বেড়িয়ে হায়। স্ফুচিত মন, হায় অত্কণ, থাকিতে জীবন মরার প্রায়॥

राष्ट्र कट करन, शक्य वहरन, ব্যথা দেয় মনে সহিতে নারি। কেহ পরিহাস, করে পরকাশ, যাই যাঁর পাশ বদন ভারি॥

ক্ষমতা বিহীন, বাপিতেভে দিন, আমাতে বিশিন উচিত হয়। সংসারে আমার, কিবা অধিকার, সদাই বিকার-বাভাস বয়॥

ওছে বুধা ধন, ভোষার কারণ, এত জালাতন इटेरा मति। ভোমারই ভবে, সবে মুণা করে, অভিমান ভবে রোদন করি ॥

ভোমারই ভরে, वहन ना गरत्र. विश्व अश्रदत काठा है मिन। नना हिन्दा ४ दत्र, ভোমারই তবে. त्वर करत मार मानम अधीन ॥

ভোমারই ভরে. সহাস্ত অধরে, আলাপ না করে আছ্টার মোর। ভোমারই ভরে. लिय (मधाखरत्र. আপমার ঘরে আপনি চোর॥

ভোমার কারণ, মলিন বদন,

इराइ इंट्र धन निक्ष्य सम ।

ভোমার কারণ, হার হুমরুন,

করে বরিষণ বরিষা সম।।

ভোমার কারণ, বিজন গ্রন,

চাহে মন মন বাসিতে ভাল।

তোমার কারণ, বছ বিলোকন,

করিয়ে এমন কাটাই কাল।

তোমার আবার, করি হায় হায়,

সদাই অপার ভাবি ছে মনে।

তোমার ভালার, স্ব শুস্ত পার,

সহবাদ হায় চিম্বার সনে ॥

হর জমুমান, থাকিতে এ প্রাণ, ভোমার সন্ধান নাহি পাইব। জভএব ধন, শুনহে বচন, করিলাম পণ নাহি সেবিব॥

আর মম মন, তোমার স্বরণ, লবে না হে ধন পণ করিল। তব প্রিরতম, লহে এ অধম, তোমা হ'তে বহু দ্বে রহিল ॥ নহাগ্রণ-তিনি ধর্মকে সর্বানাধারণের উপযোগী করিয়া প্রচার করিলেন। শহরাচার্য্য উহাকে জ্ঞানের প্রথম আলোকে উদ্লাসিত করিলেন-তাঁংার অসাধারণ ধীশক্তি। আমরা একণে চাই-এই প্রথর স্কান্তর্যোর সহিত বুদ্ধদেবের এই অন্তুত হৃদয়-এই অনুত প্রেম ও দ্যা সম্মিলিত হউক। খুব উচ্চ দার্শনিক ভাবও উগতে থাকুক, খুব বুকিপুণ হউক, আবার নকে নলে যেন উহাতে উক্ত হানৱ-প্রাথন প্রেম । ৪ ন্যার যোগ থাকে। তবেই मिनिकाश्वनत्यात्र इटेरव, जात्वेटे विकान 🍵 धर्ष शत्रकारत (कार्णाकृति कविरव। ইহাই ভবিষাতের ধর্ম হইবে, আর গদি আমরা উহা ঠিক করিয়া তুলিতে পারি, ভাহা इंटेरन िश्हत बना यहिएल शारव, छेश मदल ममग्र अवर मर्काक्षकात অবস্থার উপ্যোগী হইবে। বাদ আপ্নারা বাড়ী পিয়া মনে কিঞিং চিতা করিরা দেখেন, তবে দেখিবেন, স্কল বিভ্রানেরই কিছু ন। কিছু ক্রটি স্থাছে। কিন্তু আপনারা নিশ্চর জানিবেন, এই আধুনিক বিজ্ঞানকে এই এক পথেই चामित्व इटेल- इटेल कि-- এখনই धाम छेशांक चानिया शिव्हाहि। ব্ধন কোন প্রধান বিজ্ঞানাচার্য্য ব্লেন, সাই সেই এক শক্তির বিকাশ, তথ্য কি আপনাদের মনে হয় না যে, তিনি সেই উপনিবছক একেবই মহিমা কীৰ্ষন করিতেছেন 🕈

'অগ্নিগথৈকো ভ্ৰনম্ অবিটোর পম্রপন্ প্রতিরশো বভ্র।

একস্তথা স্ক্রিভাস্তরাক্স রূপন্রপম্ অভিরশো বহিশ্চ।'

'ষেমন এক অয়ি জগতে প্রবিষ্ট হইয়া নানারপে প্রকাশিত হইতেছেন,
ভদ্রেপ সেই এক প্রক্ষা সর্কান্ত্তের অন্তরায়া নানারপে প্রকাশিত হইতেছেন,
আবার তিনি জগতের বাহিরেও আছেন।' বিজ্ঞানের পতি কি আপনারা
ব্রিতেছেন নাং হিন্দুজাতি মনস্তরের আলোচনা করিতে করিতে ধর্ণনের
ভিতর দিয়া মগ্রনর হইয়াছিপেন। ইউবোপীর জাতি বাহু প্রকৃতির আলোচনা করিতে করিতে অগ্রন্থ হইয়াছিলেন। একণে ইটায়া এক স্থানে
পঁত্ছিতেছেন। মনস্তরের ভির দিয়া আময়া দেই এক অনম্ব সামভৌদিক
সভায় পঁত্ছিতেছি—ছিনি সকল বস্তর মন্তরায়া অরূপ, যিনি সকলের সার
সকল বন্ধর সভাবরূপ, বিনি নিভামুক্ত, নিভামন্ময় ও নিভাসভাগরূপ।
বাহবিজ্ঞানের ধারাও আময়া এই এক তব্দে পঁত্রিতিছি। এই স্বাপ্তরেপ্রকৃ
সেই একেরই বিকাস—স্বপতে বাহা কিছু আছে,উহা সেই সকলের সম্প্রিকৃত্রণ।
১৫ই বৈশাধ, ১৩০৮।
উল্লেখন।

আার সমূদয় মহুযাজাতির গতি বন্ধনের দিকে নর, মুক্তির দিকে। মানুব নীতি-প্রায়ণ হুইবে কেন ? কারণ, নীভিই মুক্তির এবং ছনীতি বন্ধনের পথ।

অবৈতবাদের আর একটা বিশেষত্ব এই যে, গোড়া ইইতেও উহা অপর ধর্মের বা অপর মতের উপর আঘাত করে না, প্রত্যুত উহাদিগকে আপন আদর্শে প্রছিবার পথস্বরূপে গ্রহণ করিয়া থাকে। ইহা অবৈতবাদের আর এক মহন্ত্ব-ইহা প্রচার করা মহা সাহসের কার্য্য যে,

> 'ন বুদ্ধিভেদং জনয়েদজ্ঞানাং কর্মান ক্ষনাং যোজয়েৎ সক্ষকাশীনি বিদ্ধান্যুক্তঃ সমাচিয়ন্।'

'প্রানী, অজ্ঞ অতএব কমে আসক্ত বাকি দিগের বুদ্ধিভেদ জনাইবেন না; বিদান্ব্যক্তি নিজে যুক্ত থাকিয়া তাহাদিগকে সকল প্রকার কর্মে নিয়োগ করিবেন।'

অবৈতবাদ ইহাই বলেন-- কাহারও মতি বিচলিত করিও না.কিন্তু সকলকেই উক্ত হইতে উক্ততন্ত্র পথে যাইতে সাহায্য কর। অবৈত্রাদ যে ঈশ্বর প্রচার করেন. তিনি সকল জগতের সমষ্টিস্বরূপ: এই মত ধদি সত্য হয়, তবে উহা অবশ্রষ্ট দকল মতকে উহার বিশাল উদরে গ্রহণ করিবে। দর্বসাণারণের উপযোগী সার্ক্তেমিক ধর্মকে কেবল খণ্ডভাবে গ্রহণ করিলে চলিবে না,উহার স্ক্রিবের সমষ্টি ইওয়া আবশুন। অন্ত কোন মতে এই সমষ্টির ভাব তত ম্প্রিরপে নাই। তাহা হৃইলেও, তাহারা গকলেই সেই সমষ্টিকে প্রাপ্ত হটবার জন্ম চেষ্টা করিভেছে। খণ্ডের অভিও কেবল এই জন্ম যে, উহা সর্বনাই সমষ্টি হইবার জন্ম (চষ্টা করিভেছে। অবৈতব।দের স্হিত এই জন্মই ভারতের বিভিন্ন সম্প্রদায়ের প্রথম হইতে কোন বিরোধ ছিল না। ভারতে আজকাল আনেক দ্বৈত্বাদী রহিষাচেন—তাঁথাদের সংখ্যাও মতাধিক: ইহার কারণ, অবিক্তি লোকের মনে সভাণতই বৈত্বাদের উদয় হয়। বৈত্বাদীর। ৰলিয়া থাকেন, ইং। জগতের খুব স্ব। ভাবিক ব্যাপ্যা--কিন্ত এই দ্বৈতবাদিদিগের সহিত অংহতগাদীর কোন বিবাদ নাই। ছৈত্বাদী বলেন, ঈশ্বর জগতের বাহিরে কোথাও সর্গে বা অপর কোন ছানে অবস্থিত—অবৈতবাদী বলেন. জগতের ঈশ্বর তাঁহার নিজেরেই অন্তরাত্মাশ্বরূপ, তাঁথাকে দূরবর্ত্তী বলা কেবল জাঁহার নিন্দা করা মাত্র। তাঁহাকে স্বর্গে বা অপর কোন দূরবর্তী স্থানে অব-স্থিত কি করিয়া বল ? তাঁথা হইতে পৃথগ্ভাব—ইহা ম:ন করাও যে ভয়ানক! আমরাই আমাদের নিজেদের সর্বাপেকা নিকটবর্ত্তী । 'তুমিই তিনি', এই উদ্বোধন। 282 [७३- ४ मः भा :

কথা বাতীত আর কিরূপে কোন ভাষায় এই সন্নিহিওছ প্রকাশ করা ঘাইতে পারে ? যেমন হৈতবাদী অহৈ ত্রাদীর কথায় ভয় পান ও উহাকে ভগবিদ্যা বণেন, অহৈতবাদীও তজ্ঞা হৈতবাদীর কথায় ভয় পাইয়া থাকেন। মাহুষ কি করিয়া তাঁহাকে নিজের জ্ঞের বস্তুর আয় জ্ঞান করিতে সাহস করে ? ভাহা হইণেও তিনি জানেন, ধর্মজগতে উহাত স্থান কোথায়— তিনি জানেন, তাঁহার দিক হইতে তিনি ঠিক দেখিতেছেন, স্মত্যাং হৈত্বাদীয় সহিত তাঁহার কে:ন বিবাদ নাই। যথন তিনি সমষ্টিভাবে না দেখিয়া বাষ্টিভাবে দেখিতেছেন, তথন তাঁহাকে অবশ্রুই বহু দেখিতে হইবে! ব্যক্তিশাবের দিক্ হুইতে দেখিছে গেলে তাহাকে অবশ্যই ভগবানকে বাহিরে দেখিতে হইবে। তাহা না হইমা যাইতেই পারে না। তাঁহাদিগকে তাঁহাদের মতে থাকিতে দাও। তাহা হইলেও অবৈতবাদী জানেন, বৈতবাদীদের মতে অসম্পূর্ণতা শাহাই থাকুক না কেন, তাঁহার। সকলেই সেই এক চরম লক্ষে চলিরাছেন। এ২খানে দৈত-বাদীর সহিত তাঁহার সম্পূর্ণ প্রভেদ। পুণিবীর সকল দ্বৈতবাদীই স্বভাবত:ই এমন একজন স্বগুণ ঈশ্বরে বিশ্বাদ করেন, যিনি একজন উচ্চশক্তি সম্পন্ন মহুষ্য মাত্র, আর যেমন মানুষের কতকগুলি প্রিয়পাত্র থাকে, কতকগুলি অপিয় থাকে, বৈতবাদীর ঈশ্বরেরও তাহা আছে। তিনি কোন কারণ ব্যতিরেকেই কাহারও প্রতি সম্বষ্ট, আবার কাচারও প্রতি বা বিরক্ত। আপনারা দেখিবেন, সকল জাতিতেই এমন কতকগুলি লোক আছেন, যাহারা বলেন,আমরা ঈশ্বরের অন্তরঙ্গ প্রিয়পাত্র,আর কেহ নহেন: যদি অনুতপ্ত হৃদয়ে আমাদের শরণাগত হও,তবেই আনাদের ঈশ্বর ভোমার কুপা করিবেন। আবার কভকগুলি দৈতবাদী আছেন, তাঁহাদের মত আরো ভয়ানক। তাঁহারা বলেন, ঈশ্বর বাঁহাদের প্রতি সদ্ধ, যাঁহারা তাঁহার মন্তর্প তাঁহার। পূর্ব্ব হইতেই নিদিষ্ট আছেন - আর কেহ যদি মাথা কুটিয়া মনে, তথাপি উহার মধ্যে প্রবেশ করিতে পারিবে না। আপ-নারা বৈত্বাদাল্লক এমন কোন ধর্ম দেখান, যাহার ভিতর এই সম্বীর্ণতা নাই। এই জন্মই এই সকল ধর্মা চিরকালই পরস্পাবের সহিত যুদ্ধ করিবে, করিতেছেও। আবার এই দ্বৈত্বাদের ধর্ম স্কল সময়েই লোক্মিয় হয়, তাহার কারণ, অশিক্ষিত্দিগের ভাব সকল সময়েই লোকপ্রিয় হইয়া থাকে। হৈত্বাদী ভাবেন, এক জন দওধারী ঈশ্বর না থাকিলে কোন প্রকার নাতিই দাঁড়াইতে পারে না। মনে কর একটা ঘোড়া—ছেকড়া গাড়ীর ঘোড়া বক্তৃতা দিতে আরম্ভ করিল। সে বলিবে, লণ্ডনের লোক বড় থারাপ, কারণ, প্রত্যন্ত seह दिनाथ, seebl] खेरबायम । 289

ভাঞাদিগকে চাবুক মারা হয় না। সে নিজে চাবুক থাইতে 🖦 🖫 হইয়াছে: সে ইহা অংশকা আৰু অধিক কি বুঝিবে ? বাশুবিক কিছ চাবুকে লোককে আরোও থাবাপ করিয়া ভোলে। গাচ চিন্তার অক্ষম সাধারণ লোক সকল সকল দেশেই ছৈতবাদী হইয়া থাকে। গরীব বেচারারঃ চিরকাণ অভ্যাচারিত হইর। আসিতেছে। স্নতগ্নং তাহাদের মুক্তির ধারণা---শান্তি হটতে অব্যাহতি পাওয়া। অপ্র পকে, আনবা ইহাও লানি, সকল (मर्भात्रहे हिन्ता भी मरा भूकवगण अहे नि खंग अस्तत कांव गरेश कांग्र कतिहारक्रि । 📣ই ভাবেই অনুপ্রাণিত হইরাই ঈশা বলিয়াছেন, 'আমি 🗷 আমার ণিতা এক।' এইরপ ব্যক্তিই শক্ষ লক্ষ ব্যক্তির ভিতরে শক্তিস্কারে সুমর্থ। এই শক্তি সহজ্র শহর বৎসর ধরিয়া মানবগণের প্রাণে শুভ পরিত্রাণপ্রদ শক্তি-সঞ্জার করিরা থাকে। আমিরা আবার ইহাও জানি, মেট মহাপুরুষ্ঠ আবৈত-খাদী ছিলেন ব্লিয়া অপ্রের প্রতিও দ্রাণীল ছিলেন। তিনি সাধার্ণকে 'আমানের অর্গত পিতা' এ কথাও শিক। দিয়াছেন। সাধারণ লোকে, খাহারা স্থাপ ক্লীব্র হইতে আর কোন উচ্চতর ভাবে ধারণা কবিতে পারে না, ভাহা-দিগকে ভিনি ভাষাদের স্থর্গন্ত পিভার নিকট প্রার্থনা কবিতে শিখাইলেন : কিন্তু ইহাত বলিলেন, বধন সময় আসিবে, তথন তোমরা জানিবে, 'আমি তোমা-' দি:গ্রে, ভোমবা আমাকে, যাধাতে তোমরা সকলেই সেই পিতার সহিত 🖟 একীভূত ছ্ইন্তে পার, কারণ, আমি ও আমার পিতা অতেদ'। বুরুদেব দেবতা -ক্রমার প্রভৃতি বড় গ্রাহ্ম করিছেন না। সাধারণ লোকে তাঁহাকে না**তি**ক আধ্যা দিয়াছিল, কিছ তিনি একটী সামাত ছাগের জত প্রাণ পর্যান্ত ভ্যাপ ক্রিতে প্রত্ত ছিলেন। এই বুদ্ধদেশ মহয় জাতির পক্ষে দর্কোচ্চ যে নীতি প্রহণীয় হইতে পারে, তাহা প্রচার করিয়াছিলেন। যেগানেই কোন প্রকার নীতিবিধান দেখিবে, সেখানেই দেখিবে, তাঁহার প্রভাব, তাঁহার আলোক। জনতের এই সকল উত্তহনয় বাজিগণকে তুমি সন্ধীর্ণ গণ্ডীর ভিতরে আবিদ্ধ কবিরা রাখিতে পার না, বিশেষতঃ এফণে মুখ্যজাতির ইতিহাসে এমন un সমন্ন আদিলাছে—শতবর্ষ পূর্বেল বাহা কেহ অপ্রেও ভাবে নাই, এমন সকৰ জানের উন্নতি ক্ইরাছে, এমন কি পঞাশং পুর্বে যাহা কেছ স্থাপুও ভাবে নাই, এমন সকল বৈজ্ঞানিক জ্ঞানের স্রোভ প্রবাহিত হই গাছে। এ সময়ে কি আর, লোককে এর প দলীণ ভাবে আবদ্ধ করিয়া রাধা যার ? লোকে পশুভূল্য চিম্বাধীন লড়পদার্থে পরিণত না হইলে **উ**ट्यांथन । िवय-अन मरवार्षः 388

ইহা অন্তব। এবন আহতক, উচ্চত্য জানের সহিত উচ্চত্য হ্লয়—অনস্থ জানের সহিত আনন্ত প্রেমের যোগ। বেলারবাদী, স্তরাং, বলেন, সেই অনন্ত সন্তার সহিত একীভূত হওয়াই একমাত্র ধর্মা; আর তিনি ভগবানের গুণকেবল এই করেকটী বলেন,—অনন্ত সন্তা, অনন্ত জান ও অনন্ত আনন্দ, আরি তিনি বলেন, এই তিনই এক। জান ও আনন্দ বাতীত সন্তা কথন থাকিতে পারে না। তানও আনন্দ বা প্রেম বাতীত এবং আনন্দও কথনও জ্ঞান ব্যতীত থাকিতে পারে না। আমরা চাই এই সন্মিলন—এই অনন্ত স্তা, জ্ঞান ও আনন্দের মিলন। আমরা চাই সর্বাকীন উন্নতি—স্তা, জ্ঞান ও আনন্দের চলমোর তিক এক দেশী উন্নতি নহে। আমরা চাই সকল বিষয়ের সম্ভাবে উন্নতি। বুদ্দানের তার মতান্ ক্লমের সহিত মহা জ্ঞানের বোগ হওয়া সন্তব। আধা করি, আনরা সকলেই সেই এক লক্ষ্যে প্রিছিতে প্রান্পনে চেটা করিব।

ভাগ্ৰ

বহিৰ্জ্জগৎ।

হুলর কুষ্মরাশি চহুর্দিকে স্থবাস বিভরিতেছে, প্রভাভারণ অতি মুলার লোহিতবর্গ ধরিয়া উঠিতেছে। প্রকৃতি নানা মুলার বর্গ ধরিয়া লোভিতেছে। জগর ক্ষাঞ্জই স্থলর, মারুষ পৃথিবীতে আসিষা অবধি এই সৌলার্গ্য ভুরিতেছে। শৈলমালা পত্তীরভাবব্যঞ্জক ও ভয়োজীপক, প্রবল ধরবাহিনী সমুদ্রাভিম্বানিনী প্রোভরিনী, পদচিলহীন মরুদেশ, অনন্ত অসীম সাগর, ভারকারাজিন্যতিত গগন—এ সকলই গভ্তীরভাবপূর্ণ ও ভয়োজীপক। প্রকৃতিশব্দব্যঞ্জিত সমুদ্র অভ্যিত্ব সম্প্রিই স্থৃতিপ্রভাবপূর্ণ ও ভয়োজীপক। প্রকৃতিশব্দব্যঞ্জিত সমুদ্র অভ্যিত্ব সম্প্রিই স্থৃতিপ্রভাবপূর্ণ ও ভয়োজীপক। প্রকৃতিশব্দব্যঞ্জিত সমুদ্র অভ্যিত্ব সম্প্রিই স্থৃতিপ্রভাবিপূর্ণ ও ভয়ালীপক। প্রকৃতিশব্দব্যঞ্জিত সমুদ্র অভ্যিত্ব সম্প্রিই স্থৃতিপ্রভাবিপূর্ণ ও আভাব বিস্তারিতেছে, আর ক্রিভেছে। উহা মানবাচ্চার উপর ক্রমাগত প্রভাব বিস্তারিভেছে, আর ক্রিভেছে। উহা মানবাহ্যর উপর ক্রমাগত এই প্রান্ন উঠিতেছে, উহা কি এবং কোথা হইতে । অভিযানিত গাতীন ভাগেও এই প্রান্ন জিজাসিত দেখিতে পাই। কোগা হইতে ইয়া আসিল । যথন অভিযানিত কিছুই ছিল না, তম ভমে আবৃত ছিল, তথন কে এই জগৎ ক্রেল। কেমন ক্রিয়াই বা

স্ক্রিন ? কে এই রহস্ম জানেন ? বর্জমান সময় পর্যান্ত এই হেল চলিয়া আদিয়াছে। লক্ষ্ণ করার ইহার উত্তরের চেটা হইয়াছে, কিন্তু আবার লক্ষ্ণ করার উহার উত্তরের চেটা হইয়াছে, কিন্তু আবার লক্ষ্ণ করার উহার উত্তর দিতে হইবে। ঐ প্রত্যেক উত্তরই মে ভ্রমপূর্ণ, তাহা নহে। প্রত্যেক উত্তরেই কিছু না কিছু সভ্য আছে—কালের আবর্তনের সঙ্গে সংগ্রহ করিবে। আমি ভারতের প্রাচীন দার্শনিকগণের নিকট ঐ প্রশ্নের যে উত্তর সংগ্রহ করিয়াছি, বর্তমান মানব জ্ঞানের সহিত মিলাইয়া ভাহা আগনাদের সমক্ষে হাপনে চেটা করিব।

আমলা দেখিতে পাই, এই প্রাচীনতম প্রশ্নের কতকগুলি বিষয় পূর্ব হইতেই জাত ছিল। প্রথম এই,—যখন অতি নাতি কিছুই ছিল না, তখন এই জগৎ ছিল না- এই গ্রহ জ্যোতিষ্কণণ, আমাণের জননী ধরণী, সাগর, মহাসাগর, নদী, শৈশমালা, নগর, গ্রাম, মানবজাতি, ইতরপ্রাণী, উভিদ্ বিহল্পম, এই অসমত বছগা সৃষ্টি, এমন এক সময়ে ছিল, যথন ইহা ছিল না। আমরা কি এ বিষয়ে নিঃসন্দির্র ় কি করিখা এই সিদ্ধান্ত প্রাপ্ত হত্তয়। গেল, ভাহা মামরা ব্ঝিতে চেটা করিব। মাত্র্য আপন চভূদিকে দেখে কি ? একটী কুদ্র উদ্ভিদ্ লও। মাত্র্য দেবে, উদ্ভিদ্টী ধীরে ধীরে মটোঠোলিয়া উঠিতে থাকে, শেষে বাড়িতে বাড়িতে অবশেষে হয়ত একটা প্রকাণ্ড বুক্ষ হইয়া দাঁড়ায়, আবার মরিয়া যার—রাধিয়া যায় কেবল বীল। উহা বুরিয়া একটা বৃত্ত সম্পূরণ করে। বীল হইতে উহা আইনে, বুক হইয়া দাঁড়ায়, অবশেষে বীজে উহার পুনঃ পরিণাম। একটা পাথীকে দেখ,কেমন উহা ডিম্ব হইতে জন্মায়, স্থলর পিক্রিপ ধরে, কিছুদ্নি বাচিয়া থাকে, পরে আবার সরিয়া যায়, রাথিয়া যায় কেবল অপের কতকগুলি ডিম্ব—ভবিষ্যৎ পশিকুলের বীজ। ডির্যাগ্জাতি সম্বন্ধেও এইরপ, মামুষ সম্বন্ধেও তাহাই। প্রত্যেক পদার্থেরই যেন, কতকগুল বীজ, কতকগুলি মূল উপাদান, কতকগুলি স্কু আকার হইতে আরম্ভ, উহারা স্থূলাৎ পূলতর হইতে থাকে, কিছুকালের জন্ত ঐরণে চলে, পুনরায় ঐ স্ক্র-ক্ষপে চলিয়া পিয়া উহাদের লয়। বৃষ্টির ফে"টোটি, যাহার ভিতরে এক্ষণে মুন্দর স্থাকিরণ থেলিভেছে, বাভাবে অনেক দূর চলিয়া গিয়া পাথাড়ে পৌছে, সেথানে উহা বঃফে পরিণত হয়, আবার জল হয়, আবার শত শত মাইল ঘুরিরা উহার উংপত্তিভান সমুদ্রে পঁহছে। আমাণের চতুর্দিকত প্রাকৃতির সকল বস্তু সম্বদ্ধেই এইরূপ; আর আমরা জানি, বর্ত্তমানবালে হিমশিলা ও নদীদমূহ, বড় বড় পর্বতসমূহের উপর কার্য্য করিতেছে; উহারা ধীরে 284 উধোধন। িত্র—৮ম সংখ্যা: অপচ নিশ্চিত ভাষাদিগকে অভঁড়াইতেছে, অভ্নেইরা বালি করিতেছে, সেই বালি আবার সমুদ্রে বহিয়া চলিতেছে—সমুদ্রতলে স্তরে স্করে জমিতেছে,পরিশেষে আবার পাহাড়ের ক্রার শক্ত হইতেছে, ভবিষাতে আবার ফাঁপিয়া উঠিয়া ভবিষ্যাভংশীয়দের পর্বত হইবে বলিয়া। আবার উহা পিষ্ট হইয়া অভা হইবে—এইরূপ চলিবে। বালি হতে উঠে এই প্রক্ত গুলি বালিতে গিশা আবার মিশায়। বড় বড় জ্যোভিন্তগণ সম্বন্ধে ভাষাই; আমাদের এই পৃথিবী নীহারময় পদার্থ বিশেষ হইতে আদিয়াছে—ক্রমশঃ শীতণ হইতে শীতলতর হইয়াছে, পরে এই আমাদের নিশাবভূমিরপা এই বিশেষাক্রতিবিশিল্লী ধর্মী রচিয়াছে। ভবিষাতে উহা, আবার শীতণ হইতে শীতলতর হইরা নই হইবে, বঙা থঙা হইবে, ওড়াইবে, শেষে সেই মূল নীহারনর ক্রেরণে ঘাইবে। প্রতিদিন আমাদের সমুদ্ধ ইহা ঘটিতেছে। অবণাতীত সময় হইতেই ইহা হইতেছে। ইহাই মানবের সমগ্র ইতিহাস, ইহাই জীবনের সমগ্র ইতিহাস।

যদি ইং। সত্য হয় যে, প্রকৃতি তাঁধার সবল কার্যোই সম্প্রণালীক (Unifrom), যদি ইলা সভ্য হয়, এবং এ পর্যান্ত কোন মনুষ্যক্রানই ইং। খণ্ডন করে নাই বে, একটা কুদ্ৰ বালুকণা যে প্ৰণাণী ও যে নিছমে স্ফট, প্ৰকাণ্ড প্ৰকাণ্ড ত্ব্য, তারা, এমন কি, সমুদর জগদু কাও তৃত্তিও সেই একই প্রণালী, একই নিষম, যদি ইহা সত্য হয় যে, একটা প্রমাণু যে কৌশলে নির্দ্মিত, সমুদ্র জ্পৎও সেই কৌশলে নিৰ্মিত, যদি ইহা সত্য হয় যে, একই নিয়ম সমুদ্য অগতে প্রতিষ্ঠিত, তবে, বেমন বেদে আগে হইতেই বলা হইয়াছে—"একখণ্ড মৃত্তিকাকে জানিয়া আমরা জগর স্বাপ্তের সমুদ্র মৃতিকা সধকেই জানিতে পারি।" একটী कू प छिछित् नहेबा उरांत्र काव नहित्र व लाहना कि तिल आमता क्राव्यकार खत স্বরূপ জানিতে পারি। একটা বালু গণার গতি পর্যাবেক্ষণে, সমুদর জগতের त्रम बानिष्ठ भाता याद्य। धक्का धहे जब धहे कार्काए बाहोहेस। দেখিতেছি, প্রথমতঃ যে, সকলই আদি ও অন্তে প্রায় সদৃশ। পর্বত উঠে वानि इहेरज, यात्र व्यावात वानिरंज ; मनी इत्र वाला १हेरज, यात्र व्यावात वार्षण । উদ্ভিদ্জীবন আসে বাজ श्टेटल, यात्र आवात वीटल ; मानवलावन आम महस्र-জীবাণু হইতে, যায় আবার জাবাণুতে। নক্ষরপুঞ্জ, নদী, গ্রহ, উপগ্রহ নীহারময় অবস্থা হইতে আদিহাছে, যায় আবার দেই নীহারময় অবস্থায়। ইহাতে মামরা শিথি কি দু শিথি এই যে, ব্যক্ত স্থাৎ স্থুণ অবস্থা-কার্যা, ऽदहे देवनाय, ५७०४।] केटवाधन ।

স্ক্রভাব--- উহার কারণ। সর্বাদশিনজনক স্থারূপ মৃহ্ধি কপিল স্থানেক দিন প্রামাণ করিয়াছেন, 'নাশঃ কারণলয়ঃ।'

বদি এই টেবিলটীর নাশ হয়, উহা কেবল কারণ রূপে বাইবে—সেই স্ক্র-ম্বপ ও পরমাণুতে ঘাইবে, যাহারা মিলিয়া এই টেবিলনামক পদার্ঘটী করিয়া-ছিল। মাতৃষ যথন মতে, তথন যে সকল ভূতে তাহার দেহ নির্দ্ধিত, তাহাতে ভাহার পুনরার্ত্তি। এই পৃথিরীর ধ্বংস হইলে, বে ভূতসমষ্টি উহাকে এই আকার দিয়াছিল,তাছাতে পুনগাবর্তন কারবে। ইহাকেই নাশ বলে-কারণলয়। মুত্রাং আমরা শিথিলাম, কার্য্য কারণের সহিত অভেদ, ভিন্ন নহে, উহা কেবল আর এক রূপধারিমাত। যে উপদানগুলিতে ঐ টেবিলের উৎপত্তি, তাহারা কারণ, আর টেবিলটা কার্য্য, আর ঐ সকল কারণগুলিই এখানে বর্ত্তমান। এই পেলাদ্টী একটা কার্য্য-উহার কতক্তলি কারণ ছিল, দেই কারণগুলি এই কার্য্যেতে এখনই বর্ত্তমান দেখিতেছি। গেলাস নামক কতকটা জিনিষ স্মার তৎসলে গঠনকারীর হস্তম্ব শক্তি --এই ছইটাই কারণ, নিমিত্ত 🎟 উপাদান। এই তুইটা কারণ নিশিয়া গেলাস নামক এই আকারটা হইরাছে। ঐ তুই কারণই বর্ত্তমান। যে শক্তিটা কোন যান্ত্রর চাকার ছিল, তাহা সংহতিশক্তিরণে বর্তমান—তাহা না থাকিলে গেলাদের ঐ ক্ষুদ্র স্মৃদ্র খণ্ডগুলি দ্ব খনিয়া পড়িবে এবং ঐ গেলাসরপ উপাদানটাও বর্তমান। গেলাসটা কেবল ঐ एक काরग-শুলির আর এক রবে পরিণতি এবং যদি এই গেলান্টী ভাঙ্গিরা ফেলা হর. ভবে যে শক্তিটী সংখ্তিরূপে উহাতে বর্ত্তমান ছিল, ভাহা ফিরিয়া পুনঃ নিজ উপাদানে নিশিবে, আর গেলামের কুল বতত্তি আবার পুরুদ্ধে ধরিবে ও **(महेक्राल्डे शिकिटन, यडांगन ना श्रनता**श नव कल स्ट्रा।

অতথ্য আমরা পাইলাম, কার্যা কথন কার্ণ ইইতে ভিন্ন নহে।
উহা দেই কারণের পুনংবিভিন্ন মাত্র। তারপর আনরা শিশিলাম,
এই কুদ্র বিশেষ বিশেষ রূপ সকল, বাহাদিগকে আমরা উদ্ভিদ্ বা তির্যাগ্রাভি
মামান্য বলি, তাহা অনস্তকাল ধরিয়া উঠিয়া পড়িয়া পুরিয়া ফিরিয়া আদিতেছে। বীজারুক্ষ প্রদিশ। বুক্ষ আবার বীজা হয়, আবার উহা আর এক
রুক্ষ্ হয়—আবার অন্ত বীজা হয়, আবার আর এক বুক্ষ হয়—এইরূপ চলিতেছে,
ইংার শেষ নাই। জলবিন্দু পাহাড়ের গা গড়াইয়া সমুদ্রে বায়, আবার বালা
ইংরা উঠে—পাহাড়ে বায়, আবার নদীতে ফিরিয়া আবে। উঠিতেছে, পড়িতেতিছ—যুগ্রুক্র চলিতেছে। সমুদ্র জীবন সমুদ্রেই এইরূপ—সমুদ্র অবিষ
২৪৮

সংবৃত করিয়া সর্বাদা ইফ্রাভয় ■ ক্রোণ পরিত্যালা করিতে পারিবে সেই মুনি মুক্ত হইয়াই আংছে (ইহা জানিবে)।। ২৭—২৮।।

ভাষা।—সমাগ্দর্শননিষ্ঠানাং সংস্থাসিনাং স্প্রোন্তিককা কর্ম্যোগ শেচখন রাপিত সর্ক্ষভাবেন ঈথরে ব্রুলি আনায় ক্রিয়নাগঃ সত্ত্বন্ধ জ্ঞানপ্রাপ্তি সর্ক্ কর্মসংস্থাসক্রমেন মোক্ষায়েতি ভগবান পাদ পদেহব্রীদ্ ব্যাতি চ অথেদানীং ধানিযোগং স্মাগ্দর্শনিসান্তর্বং বিভরেন বক্ষ্যামীতি ভক্ত স্ত্রেশনীয়ান্ ক্যোকামুপদিশতি আ। স্পর্ণান শক্ষাদীন্ কৃত্বা বহির্বাহ্যান্ শ্রোক্রাদিয়ারেণ অন্তর্ক্ষী প্রবেশিতাঃ শক্ষাদ্যোবিষ্যান্তান্চিন্তয়তো বাহ্যা বহিরেব কৃত্বা ভবন্তি। তানেবং বৃহিঃকৃত্বা চক্ষ্টিত্ব অন্তরে ক্রবঃ ক্রেয়ন্থ্যাতে। তথা প্রোণাপান্য ন্যান্ডান্তর্চারিণো স্থো ক্রেয়া ২৭॥

ভাষাকুবাদ।—নমাগ্দর্শননির্গ সংখ্যাসাগণের সন্তঃ মুক্তি উক্ত হরীয়াছে, জীশ্বর ব্রহ্মে সর্বভাবে (ফল) সমর্পনি সহকাবে ক্রিয়ামাণ কর্মাযাগ, ক্রেমে সন্থ ইন্ধি জ্ঞানপ্রাপ্তি ও সর্বা কর্ম্ম সংল্ঞাস দারা মোক্ষের কারণ হর, এই কথা ভগবান্ পদে পদে বলিয়াছেন ও বলিবেন। অনন্তর এইক্রে স্মাগ্দর্শনের অন্তরক্ষাধন ধ্যানযোগ, বিস্তরতঃ বলিব এই ভাবিবা ভগবান্ ধ্যানযোগের স্ত্র্নীয় কতকগুলি শ্লোকের উপদেশ ক্রিভেছেন।

প্রপণি প্রথাৎ) শব্দদি বাহ্ বিষয়কে বাহিবে কবিয়া (ইহার ভাংপর্য্য এই যে) শ্রোত্রপ্রভৃতি ইন্দ্রিয় দারা বৃদ্ধির মধ্যে বাহ্যশক্ষাদি বিষয় প্রবেশিত ছইলেও ঐ সকল বিষয়ের চিন্তা না করাই বাহ্যশক্ষাদি বিষয়কে বাহিরে করা হয়) সেই শক্ষাদি বিষয়কে বাহিরে রাখিয়া ও চক্ষু দ্র দ্বেরে মধ্যে স্ক্লিবেশিত করিয়া (এখানে কথা এই পদ্নীর অনুষদ্ধ করিতে ছইবে) এবং প্রাণ ও অপান নামক বায়ুর্যকে নামাভ্যন্তর্বারী ও সমান করিয়া ৪২৭॥

ভাষ্য।—যতে ক্রিয় ইতি যতে ক্রিয়মনোবৃদ্ধির্যতানি সংবহানি ই ক্রিয়াণি মনোবৃদ্ধিত যথ স যতে ক্রিয় মনোবৃদ্ধিমনিনালুনিঃ সংস্থাসী মোকপরায়ণঃ এবং দেহসংস্থানো মোক্ষপরায়ণো মোক্ষএব পরময়নং পরাগতির্বস্ত সোহয়ং মোক্ষপরায়ণো মনির্ভবেৎ বিগতে চ্ছোভয়ক্রোধ ইচ্ছা চ ভয়ং চ ক্রেমেণচ ইচ্ছাভয় ক্রোধা বিগতা যক্ষাৎ স বিগতে চ্ছাভয়ক্রোধঃ। য এবং বর্ত্তে সদা সংস্থাসী মুক্ত এব সন তাম্ম বোক্ষোহস্ত কালা জান্তা মানি

ভাষ্যান্থবাদ।—যতে স্তিন্ই চাবি (প্রোকের অর্থ) "যতে প্রিন্ধ মনোবুদ্ধিই ক্রিয়ে, মন, ও বুদ্ধি যাহার যত (অর্থাং) সংযত সেই যতে জিল্লমনোবুদ্ধি ১৫ই বৈশাধ, ১৩০৮।] উদ্বোধন। [৪] ২৪৯

"মুনি' (আত্মার) মনন করা নিবন্ধন সংখ্যাসীই মুনি (শব্দের ছারা অভিহিত হয়) "মোক্ষপরায়ণ" যাহার দেহের স্থিতি এই প্রকার এবং মোক্ষই যাহার পরম অয়ন (অর্থাং) পরাগতি সেই মোক্ষপরায়ণ মুনি হইবে। বিগতেছাভয়-ক্রোধ" ইচ্ছা ভয় এবং ক্রোধ এই তিন্টা যাহার অপগত হইয়াছে সেই বিগতেছাভয়ক্রেলাধ যে সংখ্যাসী সর্বাদা এই প্রকারে অবস্থান করিতে পারে, সেই বাজি মুক্তই হইয়া আছে (জানিবে) তাহার পক্ষে অভ্ত মোক্ষ কর্ত্তব্য (বালিয়া উপদিষ্ট) স্থতিত পারে না ॥ ২৮॥

ভোকারং যজ্ঞতপদাং দর্কলোকমধ্যেম্। শ্বস্থাক সংক্রিচানাং জ্ঞাত। মাং শাস্তিমৃচ্ছি ॥ ২৯॥

আহর।—যজতপদাং ভোক্তারং সর্কভূতানাং স্কলং সর্বলোকমহেশবং মাং জ্ঞাত্বা (স সংগ্রাদী) শান্তিন্ত্তি॥ ২৯॥

ম্লাফুবাদ।—আমি, যজ্ঞ ও তপ্যা সমূহের ভোক্তা সকল ভূতের স্থহদ্ এবং সর্বলোকের মহেশ্বর আমাকে জানিয়াই (পূর্কোক সংখ্যাসী) শান্তি লাভ করিয়া থাকে ॥ ২৯॥

ভাষ্য ৷—এবং সমাহিত্চিত্তেন কিং বিজেয় মিতাচাতে ভোক্তারং যজ্ঞানাং তপদাঞ্চ কর্ত্রপেণ দেবতারপেণ চ সর্বলোকনহেশ্বং মর্কেষাং লোকানাং মহান্তমীশ্বং সর্বলোকনহেশ্বং স্থলদং সর্বভূতানাং সর্ব্যাণিনাং প্রত্যুপকার নিবপেকত্যোপকারিণং সর্বভূতানাং জদয়েশ্বরং সর্বকশ্বন্দলাধ্যক্ষং সর্বপ্রত্যুথ-সাক্ষিণং মাং নারায়ণং জ্ঞাজা শাস্তিং সর্বসংসাবোপরতিং ঋচ্চতি প্রাপ্রোতি ॥২৮॥

ইতি শ্রীনীভাশান্ধর ভাষো প্রকৃতিপর্ভোনাম পঞ্চমাইধ্যারঃ।

ভাষাানুবাদ ৷— এই প্রকার সমাহিত চিত্ত হইয়া কি জানিতে হইবে ডাহাই বলা যাইতেছে দে, বিজ্ঞ এবং তপোনিচয়ের কর্তা ও দেবতারপে ডোহা ''সর্বলোকমহেশর'' অগাং সকল লোকেব মহান্ ঈবর, এবং সর্বভ্তের (অবাং) সকল প্রাণীর স্মৃত্দ্ (অগাং) প্রভ্যুপকারের অপেকা নাই অথচ স্কাল উপকাগনিবত, সকল প্রাণীর হৃদ্দেশ্ব সকলের বুদ্রির সালী ও সকল কর্মাকলের অধ্যক্ষ নারামণস্বরপ আমাকে জানিয়া শান্তি (অর্থাৎ) সকল প্রকার সংস্থিরে নিবৃত্তি (মোক্ষ) প্রাপ্ত হয়॥২৯॥

ইতি শ্রীগীতা শাহরভাষাাত্রবাদে প্রকৃতিগর্ভনামক পঞ্চম অধ্যায়।

অথ মটোপ্যায়ঃ ৷



শ্রীভগবাসুবাচ। অনাশ্রিতঃ কর্মফলং কার্য্যং কর্ম্ম করোতি যঃ। স সল্লাসী চ যোগী চ ন নির্গ্নিন্ত ক্রিয়ঃ ॥ ১॥

অবয়।—যঃ কর্মকলমনাপ্রিতঃ (সন্) কার্যাং কর্ম করোতি স সন্নাসী চ যোগী চ (বিজ্ঞেরঃ) ন নির্মিঃ ন (বা) অজিরঃ (এব সর্যাসী যোগী ব ভব্তি) ॥ ১॥

মূলাত্রবাদ। -- কর্মাফলের বাসনা পরিত্যাগ করিয়া যে ব্যক্তি কর্ত্তব্য কর্মের: অমুষ্ঠান করে দে সন্ন্যাসী ও ধোগী (বলিবা উক্ত হয়) যে ব্যক্তি অগ্নি পরিত্যাপ করিয়াছে বা ক্রিয়া পরিত্যাগ করিয়াছে দেই যে সর্যাসী বা যোগী হইবে তাহা নহে।। >।।

ভাষ্য ৷—অতীতানন্তরাধ্যায়াতে ধ্যান্যোগভ সম্যুগ্দশ্নং প্রভান্তরকভ স্ত্রভাঃ শ্লোকাঃ-স্পর্ণান কৃষা বহিরিভাগের উপদিষ্টাঃ তেষাং বৃতিভানীয়েছিয়ং ষ্ঠোহধ্যার আরভ্যতে। তত্ত্র ধ্যানযোগশু বহিরসং কর্ম ইতি যাবদ্যানযোগা-বোহণাসমর্থঃ তাবৎগৃহন্থেন অধিক্ততেন কর্ত্তন্যং কর্ম্মেত্যত স্তংস্তাতি॥ ১॥

ভাষাাত্রাদ ৷-- অব্যবহিত অতীত অধ্যামের শেষে 'স্পাশান কুছা বহিঃ'' ইত্যাদি খোক উপদিপ্ত হইয়াছে, ''ধানযোগ, আল্লভত্তজানের অন্তরঙ্গ উপায়' এই বিষয়ের উপদেশে ঐ কয়টা শ্লোক স্ত্রস্থানীয় (অর্থাৎ ধ্যান্যোগের বিষয়ে যাহা কিছু সারভূত তাহা অতি সংক্ষেপে এই কয়্টী শ্লোকে বলা হইয়াছে) সেই কর্মী শ্লোকেরই বিশ্ব ব্যাখ্যার জন্মই এই ষষ্ঠ অধ্যায়ের আরম্ভ করা হটতেছে। সেই প্রদক্ষে (ইহাও দেখিতে হইবে যে) কর্ম ধানেংক্রের বহিরঙ্গ সাধন, এই কারণ অধিকারী গৃহত্ব যে পর্যান্ত ধ্যানধােগে আরোহণ করিতে অসমর্থ হইবে, দে পর্যান্ত ভাহার কর্মাই কর্ত্তব্য এই নিমিত্ত (একণে) (ভগ্রান) কর্ম্মের প্রশংসা করিতেছেন॥ >॥

ভাষা।—नय किमर्थः धानिर्यागाद्राह्णगीमाकत्रणः यावजा अञ्चर्छत (भव বিহিতণ কর্ম যাবজ্জীবং? ন আরুরুক্ষোমুনের্যোগং কর্ম কারণ মৃচ্যতে ইতি বিশেষণাৎ আরুচ্ন্ত চ শমেনৈব সংবন্ধক: পাৎ। আরুক্কে আরুচ্ন চ শমঃ কর্ম চোভয়ং কর্ম্মব্যাত্মবাভিপ্রেভং চেৎ স্থাৎ তদা আকর্মদো বারচন্ত্রেভি শম কর্মী বিষয়ভেদেন বিশেষণং বিভাগকরণং চানর্থকং স্থাৎ ॥ ১॥

ভাষামুখান।—এই প্রকার শস্কা হইতে পারে বে, ধ্যানবারে আরোহণই কর্মানুষ্ঠানের সীমা, এই প্রকার নির্দেশ করা নির্পক্ত, কারণ ব্যক্তিমাত্রেরই যাবজ্ঞীবন বিহিত কর্ম করিতেই হইবে। এপ্রকার শঙ্কা ঠিক নহে, কারণ ধ্যানব্যাগ আরোহণ করিতে অভিনামী সাধকের গজ্ঞে, বিহিত কর্মই ধ্যানযোগ প্রাপ্তির উপায় এই প্রকার বাক্যের ছারা ধ্যানযোগে আরোহণেচছু ব্যক্তির পক্ষেই বিশেষভাবে কন্মের সম্বন্ধ প্রতিপাদিত হইরাছে এবং ধ্যানযোগার চ্ব্যক্তির পক্ষে শম (অথাৎ কর্মনিস্তি)র সম্বন্ধ প্রদর্শিত হইগছে। যদি বোগারোহণেচছু ও যোগারু এই উভয়েরই অবিশেষে কর্ম্মও সন্ধ্যাম এই হইটী উপায়ই কর্ত্ব্যারূপে অভিপ্রেভ হইত, তাহা হইলে, কর্ম্ম ও সন্ধ্যাসরূপ বিষর ভেদে যোগারোহণেচছু ও যোগারুচ এই শক্ষের দ্বারা ছই প্রকার সাধকের বিশেষণ ও বিভাগ করা অন্যর্কি হইত ॥ ১ ॥

ভাষ্য।—তত্রাশ্রমিণাং কশ্চিত্যোগ মারক্ষ্ভ্রত্যার্ক্ত্রক কশ্চিদ্রে নাক্ষ-কৃষ্ণরোন চারকা ভানপেক্ষ্য জারক্ষণো রারক্ত চেভি বিশেষণং বিভাগকরণং চ উপপগ্রতে এবেতি চেমন তত্তিব ইতি বচনাম পুন্রোগগ্রহণান্ত যোগারক্ত্রতাতি যু আমীৎ পূর্বং যোগমারক্ষ্ স্তত্তিবাক্ত্য শন্তব কর্ত্তব্যং কারক্ষ যোগকলং প্রত্যুচ্যতে। জতো ন যাবজ্ঞীনং কর্ত্তব্যক্ত্যাপ্তিঃ ক্ষতিদ্রি কর্মণঃ, যোগবিত্তইবচনান্ত। গৃহস্ত্রত চেম ক্ষিণো যোগো বিহিতঃ যঠেহধ্যায়ে স যোগবিত্তবিচনান্ত। গৃহস্ত্রত চেম ক্ষিণো যোগো বিহিতঃ যঠেহধ্যায়ে স যোগবিত্তবিচনান্ত। গ্রস্ত্রত চেম ক্ষিণো হোগো বিহিতঃ মঠেহধ্যায়ে স যোগবিত্তবিচনান্ত। গ্রস্ত্রত চেম ক্ষিণো বোলো বিহিতঃ মঠেহধ্যায়ে স যোগবিত্তবিচনান্ত। গ্রস্ত্রত বেম বানাম্যাতি ইতি তক্ষ্য নাশাক্ষামুণপদ্ম। ভাবে অবশ্রুং হি কৃতং কর্ম্ম বানাম্যাতি বিত্তিং বা মোক্ষ্য নিত্যন্ত্রাদনারত্যত্তে সংক্ষণ আর্ভত এব॥ ১॥

ভাষাত্বাদ।—এই ব্যবহার কেতে আশ্রমধর্মানলম্বিগণের মধ্যে কেহ বোগারোহণে অভিলাধী হয়, কেহ বা বোগারু হয়, শাবার অনেক এমনও আছে; যাহারা যোগারোহণ কবিতে চাহে না এবং যোগারুত্ব নহে, এই প্রকার যে সকল আশ্রমী ভাহাদিনকে পৃথক করিবার জন্তই যোগারোহণেচ্ছু এবং যোগারুত এই বিশেষণ হয় ও বিভাগকরণ উপপর হাতে পারে, এই প্রকার কয়না করাও উচিত নহে, কারণ ঐ শোকে "তত্তৈব" (অর্থান ভাগারই) এই প্রকার নিজেশ হইয়াছে এবং "যোগারুত্ত" এই বিশেষণের মধ্যে প্নর্কার যোগ এই শক্ষার গ্রহণ করাও হইয়াছে (ইহা ছারা ইহাই বুরিতে পারা যার যে, আরক্ষক্ষো মুনের্যোগমিতাদি শ্লোকের হারা ইহাই প্রতিপানিত হইতেছে যে) যে ব্যক্তি পূর্কে যোগারেছণাভিলাধী হয়, নেই ব্যক্তিই যোগারু ছইলে ভাহার পক্ষেশম (সন্ত্যাসই) যোগফল (মোক্ষ) লাভের প্রতি কর্ত্তব্য কারণ বলিয়া উক্ত ছইতেছে। এই কারণে কোন কর্ম্মেরই যাবজ্জীবন কর্ত্তব্য শাস্ত্রের দারা প্রাপ্ত হইতে পারে না; যোগজ্ঞ বিষয়ে যাহা কিছু বলা ছইয়াছে, ভাহা দারাও এই শিদ্ধান্তই দৃটীকৃত হয়, কারণ (পূর্দ্ধপক্ষী-দিগের মভামুমারে) যদি ধর্চ অব্যায়ে গৃহস্থ অবচ কর্মীর পক্ষে ধ্যানযোগ বিহিত ছইয়া থাকে, ভাহা ছইলে সেই কর্মী গৃহস্থ ধ্যানযোগ হইতে ভ্রন্ত ইলও নিজ গৃহস্থান্ত্রন বিহিত ধর্মের গতি (অর্থাং) ফল নিশ্রেই প্রাপ্ত ছইলেও নিজ গৃহস্থান্ত্রন বিহিত ধর্মের গতি (অর্থাং) ফল নিশ্রেই প্রাপ্ত ছইলে, স্কতরাং ভাহার নাশের আশস্ত্রা একেনারে অনুপ্রপন্ন হইয়া পড়ে, কারণ মোক্ষরেশ কর্ম নিত্য এইজন্ত কর্মের দারা আরভ্য না হইলেও কাম্য বা নিত্য কর্ম্ম সম্যক্ অনুষ্ঠিত হইলে ভাহারা নিজ নিজ বিহিত ফল (সমরে) অব্রাহ্র প্রেনান করিবে (স্কতরাং ভোমাদের মতে নিভাকর্ম্মনিরত ব্যক্তি যোগারাট্ হইয়া, পরে যোগজ্ঞ হইলে ভাহার একেবারে বিনাশের আশস্কা কি প্রকারে হইতে পারে?)॥ ১ ॥

ভাষা।—নিতাস্ত চ কর্মণো বেদাববৃদ্ধথাং কলেন ভবিতবামিতাবোচাই অন্তথা বেদস্তানর্থকাপ্রসিকাদিতি ন চ কক্ষণি সতি উভয়বিজ্ঞ ইবচনমর্থবং বিজ্ঞংশকারণাত্বপপ্তেঃ। কর্মাক্তমীশ্বরেসংস্তান্তভাতঃ কর্ত্তরি কর্মাকলং নারভত্ত ইতি চের ক্রিবরে সন্ন্যাস্তাধিকতর্ফলহেভূছোপপ্তেঃ। মোক্ষারৈবেতি চেৎ স্বকর্মণাং কৃতানা মীশ্বরে স্তামো মোক্ষারেবে ন ফলাস্তরায় যোগসহিতো যোগাচ্চ বিজ্ঞ ইত্যতস্তং প্রতিনাশাশস্বাযুক্ত বেতি চের একাকী যভচিত্তাত্মা নির্শীরপরিগ্রহঃ ব্রন্টারিবতে হিত্ত ইতি কর্ম্সংস্থাস বিধানাৎ॥১॥

ভাষ্যান্থবাদ।—নিত্যকর্ম, বেদরূপ প্রমাণের দার। বে।ধিত হইরাছে, এই কারণ ভাহার ফল অবশুই ইইবে ইহা আমরা বলিয়াছি ভাহা না হইলে বেদ নির্থক হইয়া পড়ে। কর্ম্মের অন্প্র্যান হইতেছে এইরপ অবস্থায় উভয় (কর্ম্ম ও ধ্যানবোগ) হইতে বিভ্রন্থ হইবার কারণ দেখিতে পাওয়া যায় না। যদি বল ঈশ্বরে ফল অর্পণ করিয়া অনুষ্ঠিত হয় বলিয়া, কর্ম্ম অনুষ্ঠাতার ফল উৎপাদন করিতে পারে না, ভাহাও ঠিক নহে, কারণ ঈশ্বরে ফল অর্পণ করিয়া কর্মের অনুষ্ঠান করিবে কর্ম্মের অধিকতর ফলই হইয়া থাকে। যদি বলা যায়, ঈশ্বরে কর্ম্মেরাাদ মোক্ষেরই কারণ (অর্থা:) ধ্যান্যোগের সহিত্ত ঈশ্বরে কর্ম্ম সর্যাস কেবল মোক্ষেরই কারণ হয়, তাহা অন্ত কোন ফলের উৎপাদক হয় না, এরণ হইলে ঐ ধ্যান যোগাকঢ় হাকি (কোন কারণে) যদি যোগভ্রন্থ হয়, তাহা হইলে ১৫ই বৈশার্থ ১৩০৮।] উল্লোধন।

বিন্ত ইইবার আশকা যুক্তিসিদ্ধ ইইনা পড়ে (কারণ যোগন্ত হৈওরার তাহার মোক্ষ ইইন ন। এবং যোগ সহক্বত কর্ম মোক্ষব্যতিরিক্ত জন্ত কোন ফলেরও জনক ইইতে পারিল না। এই জন্ত সে কর্মফলও পাইল না, মোক্ষও পাইল না এই ভাবিয়াই অগ্রে আর্জুন তাহার বিনাশ শকা করিয়াছেন এই প্রকার করনা করিলে সকলেই যাবজ্জীবন বিহিত কর্ম করিতে ইইবে এই সিদ্ধান্তটীই যুক্তিযুক্ত ইতৈ পারে) তাহাও ঠিক নহে 'একাকী যতবিভালা নিরাশীরপরিগ্রহং" ও 'ব্রেক্সর্হাত্রতেন্থিতঃ' ইত্যাদি শ্লোকে যোগারত ব্যক্তির পক্ষে বিহিত কর্ম্মেরও সন্মাস বিহিত ইইরাছে ।। ১॥

ভাষা।—ন চাত্রধানকালে স্ত্রীসহায় খাশক। যেন একাকিছং বিধীয়তে নচ
গৃহস্ত নিরাশীরপরিগ্রহ ইত্যাদি বচনমন্ত্রলং। উভয়বিজ্ঞ প্রশামপুপত্তেশুচ। আনাশ্রিত ইত্যানেন কর্মিণ্রবস্ন্যাদিছং চোক্রং প্রতিষিদ্ধং চ নির্পের ক্রিস্তুত্ত
চ সন্মাদিছং যোগিষ্প্রেতি চেৎ ন ধ্যান্যোগং প্রতি বহিরক্ত সভঃ কর্মণঃ
ফলাকাজ্ঞা সন্মাসন্তর্ভিপরছাং। ন কেবলং নির্পির ক্রিয়এব সন্মাদী যোগীচ
কিন্তুহি! কর্মী অপি কর্মকলাসক্ষংসন্নাত্ত কর্মযোগমন্তি উন্ সহত্তর্ভাইং স
সন্মাদী ভ যোগী চ ভবতীতি ভূষতে। ন চৈকেন বাকোন কর্মফলাসন্সন্মাদ
ভিতিশ্রহাশ্রমপ্রতিষ্কাণতিহাস্যোগশাল্রের্ প্রাদ্ধং সন্মাদিছং যোগিষ্প্র
প্রাদিনঃ শ্রুতিপুরাণেতিহাস্যোগশাল্রের্ প্রাদ্ধং সন্মাদিছং যোগিষ্প্র

ভাষ্যাত্বাদ। তইপ্রকার সিকান্ত সাধু নহে (কারণ ঐ বচনে যে একাফি-তের বিধান করা ইইরাছে, তাহা গৃহস্তের পক্ষে বিহিত হইতে পারে না) ধান-বাগ কালে গৃহস্তের স্ত্রীসমাগমসন্তাবনা প্রসক্ত নহে সংরাং তাহার নিরাকরণ করিবার জন্য যে ঐ বাক্যে গৃহস্তের একাফিছ বিধান হইবার সন্তাবনা কি পূ নিরাশীঃ অপরিগ্রহ এই ছইটী বিশেষণও গৃহস্তের পক্ষে অনুকৃণ হইতেছে না। এবং তাহার পক্ষে উভয় বিভ্রন্তক্ষের শক্ষাও উক্তরূপে উপপন্ন হইতে পারেনা কারণ ধ্যান যোগসহক্ত বিহিতকর্ম্মের অনুষ্ঠান মোক্ষবাতিরিক্ত অন্য কোন ফলের কারণ হয় না, এই প্রকার কর্মনার অনুষ্ঠান মোক্ষবাতিরিক্ত অন্য কোন ফলের কারণ হয় না, এইপ্রকার কর্মনার অনুষ্ঠান কোন প্রমাণ দেখিতে পাওরা যার না,বদি বল অন্ত্রিত ত্রাদি শ্লোকের দারা কর্মপ্রায়ণ গৃহস্থেরই সন্যাদিত্ব ব্রায়ি উক্ত হইয়াছে এবং নির্যা এবং শান্তান্ত্রমান কর্ম্মন্যাসকারীর সন্মানিত্ব ও যোগিত্ব,প্রতিষিদ্ধ হইয়াছে,তাহাও ঠিক নহে কারণ ঐ বচনটার দারা ধ্যানবোণের বহিরক্ত সাধন কর্ম্মের ফলাকাজ্ঞা পরিত্যাগই প্রশংসিত হইয়াছে, হব্র

কেবল নির্ধি ও অক্রিয়ই যে স্থাসী ও বোগী তাহা নহে, কিন্তু কর্ম্মফলের আসল পরিতাগে পূর্বক সত্ত্বভিদ্ধির জনাই যে ব্যক্তি কর্মানুষ্ঠান করে, তাহাকেও সন্ন্যাসী ও বোগী বলিয়া জানিতে ছইবে, এই প্রকার প্রতিপাদন করিয়া তাদ্শ কর্মী ও গৃহত্বের স্তুতিই বরা ইইয়াছে। একটী বাক্য একবার প্রযুক্ত হইয়া, কর্মকলাসল পরিত্যাগের স্তৃতি ও সন্ন্যাসাশ্রম পরিগ্রহের নিষেধ এই বিবিধ অর্থ, ম্গুপং প্রতিপাদন করিতে পারে না। ভগবান, নির্ধি এবং অক্রির পর্মার্থিসন্যাসীর, ক্রতি স্থাতি পুরাণ ও ইতিহাসে বিহিত এবং স্কলোকে প্রসিদ্ধ সন্মানিস্থ ভ বোগিজের প্রতিষেধ, করিতেছেন ইলা সন্তব্দর নলে এই প্রকার নিষেধ করিলে তাহা তাঁহার নিজের বচনের সহিত্ই বিক্লদ্ধ হইয়া পড়ে।। ১।।

ভাষা।— সর্কাকর্মাণি মনদা সংস্থা নৈব কুর্কান্ ন কারয়য়াত্তে মৌনী সন্তটো দেন কেন চিদনিকেতঃ স্থিরমতি বিহায় কামান যং সর্কান্ পুমাংশ্চরতি নিপ্তৃঃ সর্কারস্থপরিত।গগীতি চ তত্র তত্র স্বরচন।নি দর্শিত।নি তৈবিক্রংধাত চতুর্ধাশ্রম প্রতিবেধঃ। তত্মাল্নে। যোগমাক্রকক্ষোঃ প্রতিপন্নপার্হ স্থাত্ম অগ্নিহোত্রাদি, ফলনিরপেক মন্ত্রীধমানং ধ্যান্যোগা রোহণ সাধ্নত্বং সন্তুদ্ধিদ্বারেণ প্রতিপ্রতিত ইতি স সন্নাগী যোগীচেতি স্কুরতে। ১।

ভাষ্যাম্বাদ।—"দর্শকর্মাণি মন্দা দংনাত নৈ কুর্ন্ন্ন কার্ময়ান্তে"
দকল কর্মেরই মনের দারা দংন্যাদ করিয়াও নিজে কোন প্রকার কর্মের আরম্ভ না করিয়া বা কাহার দার। না করাইয়া অবস্থান করিবে; "মৌনী দন্তঃ টো খেন কেনচিৎ" (মৌনীও যে কোন বস্তুতেই দন্তঃ) "অনিকেতঃ স্থিরমতিঃ" আবাদ্হীন ও ছিরমতি "বিহার কামান্যং দর্বান্পুনাংশ্চরতি নিস্পৃহং" (যে পুরুষ দকল কাম পরিত্যাগ পূর্বক নিস্পৃহ হইয়া বিচরণ করে) দর্বারম্ভপরিত্যান্দী. (সকলপ্রকার আরম্ভের পরিত্যাগকারী) ইত্যাদি প্রকারের যে দকল বচন ভগবান্ নির্দেশ করিয়াছেন, তাহার দহিত সংনাাদ আশ্রমের প্রতিষেধ বিরুদ্ধ হইয়া পড়ে এইজন্ত দর্বকর্মদন্ত্যাদ গীতার প্রতিপাত্ত নহে এই কণা বলা যাইতে পারেনা) মেই কারণে (ইহাও প্রতিপন্ন হইতেছে যে) যে ব্যক্তি গৃহস্থাপ্রম স্থাকার করিয়াছে, অওচ ধ্যানযোগে আরোহণ করিতে অভিদাবী দ্রমননীল তাহার পক্ষে ফলাকাজ্জা পরিহার পূর্বক জ্বিহোত্তাদি, কর্মের অনুষ্ঠান চিত্তভদ্ধি দ্বারা ধ্যান যোগারোহণের সাধন হইয়া থাকে, এই কারণে ভাহাকেই দর্যাণী ও যোগী এই শক্ষ ছুইটী দ্বারা স্তুতি করা হইতেছে। ১।

ভাষা। অনাশ্রিতঃ ন আশ্রিতঃ অনাশ্রিতঃ কিং? কর্মফলং কর্মণঃ ফলং ১৫ই বৈশাখ, ১৩০৮।] উদ্বোধন। ২৫৫ ষংতং অনাপ্রিতঃ কর্মান্ত কর্মান্ত ইত্যান্ত হৈ তার্দ্ধান বিশ্ব কর্মান্ত কর্

ভাষ্যামুবাদ।--"অনাশ্রিত" (যে অন্তাঃ করেনা) সেই অনাশ্রিত, কি প (আপ্রার করে না ভাষাই বলা হইতেছে যে) কর্মফল (অর্থাং) কর্ম্মের ৰাহা ফল তাহা যে ব্যক্তি আৰ্ম না করে সেই অনাশ্রিত (শক্ষের ছারা প্রতিপাদিত হইতেছে) কর্মফল তৃষ্ণাশুল ইহাই অর্ণ। বাহার কর্মফলে তৃষ্ণা আছে দেই কর্মকলকে আশ্রম করিবা থাকে এই ব্যক্তি তাহা হইতে বিভিন্ন এই জনাই কর্মফলকে আশ্রয় করেনা এইপ্রকার হইয়া, কার্যা অর্থাং কর্ত্তব্য নিত্য অর্থাৎ কাম্য বিপরীত অগ্নিহোত্রাদি কর্ম করিয়া থাকে। বে কর্মপরায়ণ অধিকারী এতাদশবভাবসম্পন্ন দে অন্যান্য কর্মী হইতে বিশিষ্ট ইহাই বলা হইতেছে যে, দেই সন্ন্যাগী-ও যোগী সন্ন্যাস শব্দের অর্থ পরিভ্যাপ ভাহা যাহার আছে দে সন্যাদী ''যোগী'' যোগশব্দের অর্থ চিত্তস্মাধান তাহা যাহার আছে সে যোগী এইপ্রকার গুণসম্পন্ন ব্যক্তিকেও সন্ন্যাসী ও যোগী বলিয়া জানিবে কেবল নির্ব্বি ও অক্রিয় ব্যক্তিই যে গথাক্রমে সন্নাসী ও যোগী হইল থাকে তাহা নহে। কর্মের সাধন অগ্নিত্রর বাহার নিকট হইতে নির্গত হইরাছে, তাহাকে নির্গি কহা যায়, অগি দারা বাহাদের সাধন না হয়, এই প্রকার তপঃ দান প্রভৃতি ক্রিয়ার অনুষ্ঠান যে ব্যক্তি না করে, তাহাকে অক্রিয় বলা যায়। ১।

> ষংসন্ন্যাসনিতিপ্রান্ত র্যোগং তং বিদ্ধি পাণ্ডব। নহাসংস্তস্তসংকলো যোগী ভবতি কশ্চন॥২॥

ভাষয়।—হে পাণ্ডব বংসন্ন্যাস মিতি আছি: তং যোগং বিদ্ধি হি যন্নাৎ)
ভাসন্ন্যভাসকল কশ্চন যোগীন ভবতি॥ ২॥



মান্যের ভিতর অনত ভাব বিজ্ঞান; তার মধ্যে কডকওলো প্রকার ভাবে, আর অবঁশিষ্ঠ গলো অপ্রকাশ্ভভাবে। প্রজ্জানবাদ এই ভাব সমূহের এক একটার বিকাশমাত। গাছ, পালা, পোবা, জানোরার, অসাধু, সাধু, দেব, দানব, ইত্যাদি ইত্যাদি যত রক্ষের অবস্থা আছে, সে সমুদায় মানুষের ভিতর সাছে। এক এক সময়ে এক একটা ভাবের বিকাশ হ'য়ে গেছে: ভবিষ্যতে আবার এক এক সময়ে এক একটা ভাবের বিকাশ হবে। গাছ যে ভাবসমূহের গনষ্টি, যে জলো সেই ভাবসমূহ প্রাকাশ ছিল, সে জলো মাতুষ ছিল গাছ। যে ভাব সকল থাক্লে পশু হয়, যে জনো সেই ভাব সকল প্রকাশ ছিল, দে জন্ম মাত্র ছিল প্রত। বর্তুমান জন্মে জাত্ত সকল ভাব চাপা রয়েছে: কেবল য়ে ভাবসন্তি থাকলে মানুষ হয়, সেই ভাব সমূহ প্রকাশ রয়েছে; তাই আমরাম: ছ্যকণে রইছি। আবার যথন মাত্র হ্বরে ভাবসমূহ চাপা পড়ে গিয়ে, যে ভাব সকল থাকুলে দেবভা হয়, সেই সব ভাব জেলে উঠ্বে, তথ**ন** এই মানুষ হবে দেবতা। যদি কোন মানুষ অত্যন্ত কুংসিত ভাবাপন হয়, এত কুৎসিত যে সে ভাবের সহিত পশুদাবের কোনও পার্থক্য না থাকে,.. ভা হলে এই মারুষ পরজন্মে পশু হবে। বা'র থেকে কিছুই আনতে হয় মা; সমস্তই মান্ধের ভিতর আছে; কেবল সে গুলোকে জগোতে হয়, এই মাতা। ধর্মভাব, ভগবভাব, মুক্তি, জ্ঞান, বিবেক, বৈরাগ্য প্রভৃতি উচ্চ উচ্চ ভাব মান্ষের, প্রত্যেক মান্ষের ভিতর আছে। ইন্মি' অর্থ—এই উচ্চ উক্ত ভিতরের ভাবগুলোকে জাগান।

শুরু মাহৰ কেন প্রত্যেক জীবাত্মা অনস্ত ভাবের আধার; জাল, না হয় কাল, সে অনস্ত ভাব বিকাশ হবে। অতি ক্ষুদ্র পোকাটীর ভিতরেও এত শক্তি গুটুভাবে চাপা রয়েছে, যে শক্তি, বিকাশ হলে, সমস্ত ছনিয়া কাঁপিয়ে দিতে পারে।—হবেও সে শক্তির বিকাশ এক কালে; সমস্ত বাধা বিদ্ধ অতিক্রম ক'বে, ঐ লগণ্য পিনীলিকা একহিন ইন্ডাবে নিজের পার উপর, বধন ভার ফ্রাণ্ডির সাম্বে সম্প্রত্বেশ্পুর্ইনক্ষ বিশ্বস্থাও মহাসমুজে বৃদ্ধুদের লাভ ভুট্ বোধ হবে। ভবে, মহদের মধ্যে দে মহাশক্তি আছে সভ্য, কিছ বিকাশের

তারত। বিশ্বের অমূক্ল অবস্থা হলে, সে শক্তি জেগে উঠে; প্রতিকৃদ অবস্থার বিশেষায়।

অবস্থার আরুক্ল্য শক্তিবিকাশের মূল সহার। গান গাইনার ভার সকল-কার ভিতরেই আছে, কিছু গারকের কাছে না থাক্লে সে ভাবের বিকাশ হয় না। লেখা পড়া শিখে বিদ্যান হবার ভাব সকলকার ভিতরেই আছে; ইচ্ছা করলেই সকলেই বিদ্যান হড়ে পারেন, কিন্তু ভার জন্য পণ্ডিভের আবিশ্রক। চোরের সঙ্গে বেশী দিন থাক্লে চোর হঙে হয়, মাতালের সঙ্গে বেশী মিশলে মাতাল হতে হয়; সতের সঙ্গে সং সং, অসভের সঙ্গে অসং হওার কথাও সর্ক্রাধারণ-বিদিত। ধল্মভাব সম্ক্রের ছাড়া তাহার বিকাশ অসম্ভব। যে মান্বের কাছে থাক্লে, অন্তরিহিত ভগবদ্ধাবের উদ্দীপন হয়, তিনিই গুরুপদ্বাচ্য।

ধর্মভাব-উদ্দীপনার আর একটু বিশেষত আছে। যিনি লেখা পড়া, গান বাজনা বা অভ কোন্ত ঐ রকম ভাবের উদ্দীপন কর্তে চান, তাঁহার তং তং ভাবের শিক্ষকের কাছ থেকে উপদেশ নিয়ে কাজ করলেই ইষ্টনিদ্ধি ছতে পারে। কিন্তু ধর্মভাব জাগাতে হলে, যার তার কাছ থেকে ধর্মভাব উদীপনের সাধন পদ্ধতি জেনে নিলে নিজে নিজে সাধন কর্লে, সে ভাব প্রশক্তিভ হয় না। এই রকম করে ধ্যান করতে হয়, এই রকম করে এই মন্ত্র জপ করতে হর, এই রকম করে আসন, প্রাণায়ামাদি করতে ২য়, ইতাাদি বছবিধ ধর্মৌপ্রেশ দেওয়া তত কঠিন নয়; ঐ সমত্ত উপ্রেশ অনুসারে কাল করাও সহজ। কিন্তু ভাহাতে ভিতবের ভগবদ্ধাবের বিকাশ হর না। হে ব্যক্তি স্বয়ং জগবভাব প্রত্যক্ষ অফুডৰ করেছেন, তাঁহার নিকট হ'তে দাকাৎ সম্বন্ধে **শক্তি সঞ্জের আবশ্রক। ক্**মিতে নানান্রক্মের আগাছা থাকে; সে স্ব আগাছা পরিষার ক'রে, জমিতে সার দিয়ে জমি ঠিক করতে হয়; কিন্তু বতদিন না শক্তের বীজ সে জমিতে পড়ে, ততদিন শস্ত হর না। সেইরূপ শক্তিস্কার-কারী গুরুলাভ না হওয়া পর্যান্ত, যত সাধন ভজন করা যায়, ভাহাতে কেবল কমি তৈয়ার, চিত্ত বিষ্ক্তি থাকে; গুরুর নিকট হতে ধর্মবাজ না আসংগ্র ভগবদ্ধাবের বিকাশ হয় না। গুরু হ'তে শিষ্যে এই শক্তি সঞ্চারের নাম দীকা। কোন কোন সম্প্রদার বলেন, আন্তরিক ব্যাকুলতা থাক্লে দীকা ব্যতিরেকেও ভগবদ্লাত সম্ভব। ভগবান্ অন্তর্গানী রূপে সকলের ভিতর বিভয়ান; তাহাকে সরণভাবে ভাক্লে, তিনিই ভাঁছাকে পাবার পথ জানিয়ে দেন।

দীকার কোন বিশেষ নিয়ম নাই। কখন বা গুরু শিষাকে কোন বিশেষ মন্ত্র প কর্তে বলেন, সেই মন্ত্রের সঙ্গে সঙ্গে শক্তি সঞ্চারিত হয়। কখন কেবল স্পর্শের ছারা, কখন "শক্তি সঞ্চার ছউক" এই মাত্র গুরুর ইচ্ছো ছারা, কখন বা শক্তিমান্ গুরুর সঙ্গা, ইত্যাদি নানা উপায়ে ঐ শক্তি গুরু থেকে শিষ্যে আস্তে পারে।

শুরু পরক্ষরা থেকে ঐ শক্তি আবহমান কাল চলে আস্ছে। এক শুরু হতে তাঁর শিষা, সেই শিষা হতে তাঁর প্রশিষ্য, সে প্রশিষ্য হতে তাঁর পিব্যে, এই রক্ষম করে ধারাবাহিক ক্রমে এই শক্তি বহুপ্রাচীন কাল থেকে সঞ্চারিত হয়ে বর্ত্তমান সময়ে বিশেষ নিশেষ ব্যক্তির মধ্যে কাজ করছে। তাঁহারা ধর্মপিপাত্ম শিষ্যের মধ্যে উহার বীজ রোপণ কবলে, শিষ্যের ধর্মভাব প্রকাশ হবে; নহিলে নয়। এতি বলেন, "ওিছিজানাথং দ গুরুমেবাভিগছেৎ সমিৎপাণিঃ প্রোত্রিয়ং ব্রহ্মনিষ্ঠম্"—ভগবান্কে জান্তে হলে ব্রহ্মনিষ্ঠ গুরুর আশ্রয় গ্রহণ কর্তে হয়। প্রেক্শা-ভার্মাজ-প্রমুখ ব্রহ্মারিগণ ব্রহ্মজনর জন্ত মহর্মি পির্লাদের শর্পাণর হলেন; মহর্মি তাঁগানিগক ব্রহ্ম বিষয়ে উপদেশ শিবার পর, তাঁহারা মহর্ষিকে অচনা করে, "নমঃ পরম্থাবিভাঃ, নমঃ পব্যক্ষিত্তেই তাই ওবের স্থায়।

🔳 শুরু পরস্পরার আদি গুকু কে 🏾

'মুক্তি' মানে দেশ কাল নিমিত্তের পারে যাওয়া। যে মহারায়ার মহাশক্তির প্রভাবে দৃশ্রমান জগং ছায়াবং, স্থপুবং অলীক হ'লেও স্থদ্চ সভাবং
অচল অটল প্রতীগ্রমান হয়, 'মুক্তি' মানে সেই প্রবক্ষনার পাবে যাওয়া,
ভগংকে দৃর ক'রে, ভাড়িরে দিরে, নাশ করে, স্থা ভেঙ্কে, নির্বচ্ছির সভা
রাজ্যে যাওয়া,—মহামায়ার শক্তির পারে যাওয়া। মহাশক্তির বিকাশ ভিন্ন
এ কাজ অসন্তব। সে আদি গুরু কে, যার হতে এ শক্তির প্রথম প্রবাহ ?
কার উদ্দীপনায় মান্যের মধ্যে গুঢ় ভাবে স্থিত এই মহাশক্তি প্রথমে জেগে
ওঠে? অবশ্র, মান্যের মধ্যে এই মহাশক্তি, মহামায়ার পারে যাবার শক্তি
প্রক্রম ভাবে আছে; প্রভাব মায়ুহ, ভানি, জানোয়ার, সকলের ভিতরেই
আছে। কি অবস্থার আয়ক্শো, কোন আঘাত প্রভিষ্ঠিন করে, পে শান্তের
প্রথমে কেগে উঠে গুক্পারম্পান্তব্য আছেও স্থান্ত চলে আয়হে গ্

"ইমং বিবস্ততে যোগং প্রোক্তবান ১ মবারম্। বিবস্থান্ মনবে প্রাহ মন্ত্রিক্ষাক্তেই এবী ২ ॥ ১ ॥ এবং প্রস্পরাপ্র প্রাম্মং রাজ্ধয়ে। বিজ্ঞ।

স কালেনেই মহতা যেগো নটঃ পরস্তপ । ২ ॥ গীতা । 6 থ আঃ।
"আমি পূর্বে আদিতাকে এই অবার যোগ কল্রাছিলাম; তংপরে, আদিতঃ
মুক্তে ও মন্ত্ইক্লাকুকে কলিরাছিলেন। এই ক্রপ, বাজ্যিগল পরস্পরাগত এই
যোগ বৃত্তান্ত অবগত ইইয়াছিলেন। অন্তল্প কল্যাছল।"
নিশিল বিশ্নিয়প্তা অন্তলভির ভাধার ভগবান্ট এই শক্তির। আদি
প্রেক্তিক।

মান্বেভিছাদের অতি প্রাচান কাল হতে. অতি অসভ্য বর্দর অবস্থা থেকে,
মান্বের উপাসনার চেষ্টা, গাছ হ'ক, পাথর হ'ক, দাপ হ'ক, অন্ত কোন জন্ত
কানোয়ার হ'ক, কাজর না কাজব উদ্দেশ্যে মন্তক অবনত ক'রবার চেষ্টা, মান্বের সর্দ্ধকালেই দেখা যায়। বৃদ্ধির উন্নতির সঙ্গে সঙ্গে, স্থানের ক্রমণঃ বিস্তৃতির
সঙ্গে সঙ্গে মন্তব্য-স্মাজের এমন এক অল্ড: হযেছিল, যখন ভর্গনান্ বলে একটা
ভাবের চিন্তা অনেকেরই আলোচনার বিষ্য হয়। যে হাদর পূর্বে গাছপাথরাদির উপাসনায় সন্তই থাক্ত, সে হখন স্থানীম ভাল্ডর দিকে ধাবমান।
উপযুক্ত সম্য বুনো, উপবৃক্ত আধারে, স্থান শঙ্কীধ্ব এই ম্যাশক্তির উদ্দীপন
করিয়ে দেন সেই আধার হতে শিষ্যান্তশিষাক্রমে সে শক্তি কিছুকাল কাজ
করে চলে আলো। আবার কাল ক্রমে উন্ধার প্রভাবের দর্শার হয়।
কেব, "স্ভামাহ্ম্" হয়, ক্রের, "সন্তব্যমি যুগে যুগে" হয়।

অবতারই এই শক্তির মূল প্রস্ত্রবন। ধন্ত তাঁথারা, বাঁথারা অবতারদিগের পদপশ কর্তে সমর্থ হন। অবতার বিশেষ বাঁথাদের গুলু, তাঁথাদের অতঃস্থিত ভগবদ্ধাব সহজেই উদ্দিশিত হয়। সে সৌভাগ্য সকলের ভাগেঃ ঘটেনা।

শ কির তার হমাতেদে, অবতার শুরু, জানেখর শুরু, ও জাবিমাুক শুরু, এই তিন প্রকারের শুরু। অবতার শুরুর অবার নাম নিত্যেখর শুরু। ভগবান জনাদি কাল হ'তে চিরকাল নিয়মের নিয়ন্তা; তিনি ক্থনই নিরমের বন্ধ হন না; দেশকালনিমিত্ত নিত্য তাঁহার অধীন। তিনি চিরকাল কর্মের প্রাভু; কর্মের দারা তিনি ক্থন ও বহু হন নাই। শুভ্রাং তিনি ব্যন বেহুরের

মাত্রধন্ধ পে অবতার্গ হন, তিনিই কেবল ইচ্ছা কর্লে বদ্ধ জীবের কর্মা, সাধন বাতিরেকে, কাটিয়ে দিতে পারেন। আন গুরুর শিষ্যে হ'লে, দীক্ষার পর, নিজে সাধন করে কর্মা কয় করে মৃক্তি পেতে হয়। অবতার গুরুর দয়া হ'লে নিজে সাধন ভল্পন না করলেও, কেবল তাঁহার ইচ্ছামাত্রেই সমস্ত কর্মা মৃহর্ত্তেক মধ্যে নাশ হয়ে ঘেতে পারে। কিন্তু তিনি যে সকলে কেই ঐংপে দয়া কর্বেন, তারও কোনও বাধাবাধি নিয়ম নাই। অবতার সম্পূর্ণ অতপ্র, তাঁহার উপর কোনও নিয়মই খাটে না। হয়ত এক শিষ্যকে ঐ রক্মের দয়া করে ক্লান্কটাকে তার সমন্ত কর্মা নিমেষ মধ্যে কাটিরে দিলেন। আবার আর এক শিষ্যকে লক্তি সঞ্জর করলেন মাত্র; তার পর শিষ্যকে সাধন ভল্পন করে, নিজে থেটে খুটে, ক্রেমে উন্নত হতে হতে, মুক্তি লাত কব্তে হল। তবে তিনি ভগবান্ বলে, কথনও ক্যের ঘারা বদ্ধ হন নাই বলে, চিরকাল কর্মো প্রত্বেল, নিনা সাধনে শিধ্যের কর্মা নাশ করে দেবার শক্তি বেবল তাহাতেই সম্ভব, অন্ত কোনও গুরুতে নয়।

অবতার গুরুর কোনও লক্ষণ করা হায় না। এই রক্ম হলে, এই এই গুণ থাক্লে, অবতাব হবে, নইলে নয়,— এই রপ কোনও সংজ্ঞা হারা অবতার গুরুবকে নির্দেশ করা যায় না। তিনি সমস্ত লক্ষ্ণের অতীত; তাঁহার কাছে ক্লাপ সম্বয় হ্রবগ্যা। তাঁহাকে ধরা ছোঁয়া অতি কঠিন। তিনি যাহার কাছে স্বর্প প্রকাশ করেন, তিনিই কেবল তাঁকে বুঝ তে পারেন; অতা নয়।

অবতার গুরুর পর জ্ঞেরর গুরু। ইহাদিগকে ঘোগশাল্রে "প্রকৃতিশর" এবং বেদান্তে "আধিকারিক পুরুষ" কহে। হঁহারা প্রথমে সাধারণ লোকের ন্তাা বন্ধ জীব চিলেন; পরে সাধনার দ্বারা মুক্তি স্থায়ন্ত করেছেন, কর্থাং ইল ক'রলেই, মুক্ত হতে পারেন, কিন্তু সংসারের মদলের জন্তা, ইঁহারা মুক্তি প্রাণী করেন না এবং কেবল পরহিত রতে, আত্মোংস্যা করেন। অবতার গুরু হাটি হাদের প্রভেদ এই যে, অবতার গুরু কথনপ্ত বন্ধ হন নাই, কিন্তু জ্বনার্থী গুরু এক কালে বন্ধ ছিলেন, এক্ষণ সাধনার দ্বারা মুক্ত হয়েছেন। ইহারা ইই করেনেই শিষ্যের কর্ম্ম নাশ কর্তে পারেন না। ইইলের কাছ থেকে স্মাধার করে নিম্নে, নিজে সাধন করে, মুক্ত হ'তে হয়। জন্যের গুরু ক্রানে বন্ধন জ্বার প্রত্ত পারের বার, সেই স্ক্লে করারে বন্ধন জ্বার প্রত্ত আব্দার প্রতা থাকেন। কিন্তু ক্রানে বন্ধন জ্বার প্রতা বার, সেই স্ক্লে সঙ্গে হারা মুক্ত হয়ে হার।

জনোধর গুরুর নীচে জীবসূক্ত গুরু। বিনি প্রথমে কর্ম্মের হারা বদ্ধ ছিলেন, পরে সাধনার ছারা মুক্ত হয়ে গেছেন, কেবল তাঁহার দারীর ও মন পূর্ব সংস্থারের বেগে কাজ করছে নাত্র, িনি জীবসূক্ত। মনে কর, তুথানা চাকা মধ্যে একথানা লম্বা কাঠেব দ্বারা পরম্পর যুক্ত, যেমন গাড়ির চাকা সাধারণত: হরে থাকে। এবং ঐ তু থানা চাকা এক রাস্তার উপর দিয়ে সমবেগে চলে যাচেত্র। সহসা একথানা চাকা হাত দিয়ে ধরে, যদি সংযোজক লম্বা কাঠ-খানাকে কেটে দেওয়া ধায়,তা হলে যে চাকাথানা হাত দিয়ে ধরা হয়েছে,সেথানা ছির হয়ে থাকে, আর অপরথানা কিছুকণ গড়িয়ে চলে গিয়ে তবে পড়ে যার। জীবন্মুক্ত পুরুষের অবস্থাও ভক্রণ। তাহার অহংকাররূপ এক থানা চাক। একেবারে ব্রুক্ষ লীন হয়ে স্থির হয়ে গেছে, কর্ম্মণংযোজক রূপ কাষ্ঠ্যও চির-কালের জন্ত ছিল্ল হয়ে গেছে, কেবল শরীও ও মনরূপ অপ্র চাকা পূক্ কর্মের বেগে এখনও কাজ কছে। ইঁহাদের কাছ থেকেও শক্তি স্ফার করে নিম্নে নিজে সাধন ভলন করে, মুক্ত হতে হয়। ইহারাও অবতারের মত ইচ্ছামাত্র ছারা শিষ্যের কর্মনাশ কর্তে পারেন না। শরীরভাগের সঙ্গে মঞ্ মঞ্ ইহাদের একেবারে নাশ হয়ে যায়। জত্মেখর এক কল পর্য্যন্ত নিজেদের অহস্কার রেথে দেন। জীবমুক্ত গুরুর অধ্কার ত আগেই নাশ হয়ে গেছে; মৃত্যু পর্যান্ত পুর্ব কর্মের বেলে তাঁহার শতীর ও মন ছারা, অহস্কারের ছারা নয়, যা কিছ কাল হবার তা হয়; মৃত্যুর পর তাঁহার সম্বন্ধে সব ফুরিয়ে যায়।

পুর্বেব বংলাছি, অবতার গুরুর কোন বিশেষ লক্ষণ বা সংজ্ঞা হতে পারে না। জান্তেমর ও জীবনুক গুরুর সম্বন্ধেও তদ্ধেপ, কেবল তাঁহারা পূর্বেব বন্ধ ছিলেন, এক্ষণ মুক্ত হয়েছেন, অবতার কখনও বন্ধ হন নাই, এই মাত্র প্রভেদ। শৈরা সকলই নিয়মের পারে গেছেন। সাধারণ বন্ধ জীবের পক্ষে, যাহা লাল মন্দ, এঁদের কাছে দে সব অন্ত প্রকারের। পাপ পুণা, ধর্ম অধন্দ, চর্তির জাকর্তিনা, উচিত অনুচিত, এ সব কথার এঁদের কাছে কোন অর্থ ই হৈ। সংসারের চক্ষে এঁদের বিচার কর। যার না।

এঁদের কপাও অতৈ তুকী। কাকে দয়া কর্বেন, কাকে দয়া কর্বেন রা, ।
কেছুই ঠিক নাই। হয়ত এক জন সারা জীবন প্রার্থনা কর্লে, তার দিকে
ফিরেও চাইলেন না। আব এক জন ধর্ম কর্ম চায় না, নাতিকভাবাপল,
ভাকে দয়া করে নিজের স্ক্রি দিয়ে দিলেন। এক মাঠে এক রাস্তার ধারে
এক বাশক ব্যে আছে, কভকগুলো মোহার কাপ্তে করে। রাস্তার ধার

দিরে কত লোক যাচেছ, মাথা কুটে মর্ছে, একটা মোহর পাবার জ্ঞান বাল তার দিকে ফিরেও চাচেছ না। আবার এক জন বালকের দিকে না তাকি চলে যাছে; বালক নিজে উঠে গিয়ে তাকে হাতে ধরে সব মোছর তাকে। দিরে দিলে। গুসর স্বভাবত ঐ বালকের মত।

ি এই তিন থাকের গুরু ছাড়া আর কারও গুরু হবার অধিকার নাই। বে
নিজে কর্মের পারে বাই নি, তার কি সাধ্য অপরকে সেখানে নিয়ে যার ?
কেবল শক্তি পেয়েই, সাধনার চরমাবভায় না গিয়েই, শিষ্য কর্মার লোভ
হলে, সে গুরু ও তাহার শিষ্য, উভয়েরই সর্বনাশ। শ্রীশ্রীরামকৃষ্ণ পরমহংসদেব বল্তেন, গুরু হ'লে শিষ্যের কর্মের ভার নিতে হয়, শিষ্যের পাপ গুরুত্তে
স্পর্শার। যিনি শক্তিমান পুক্ষ, তাঁহারই কেবল গুরু হওয়া সাজে। নহিলে
এক সের চালের ভাত রেঁধে লক্ষ লোক নিমন্ত্রন করা হয়ে দাঁড়ায়। নহিলে,
গুরু শিষ্য জড়াজড়ি করে উভয়ে অক্ষ-বুপে পড়ে যায়। মহানায়র শক্তির
পারে নিয়ে যেতে হবে,— এ ছেলে খেলা নয়। গুরু হওয়া নয় ত,—জা'ত্
সাপ নিয়ে যেতে হবে,— এ ছেলে খেলা নয়। গুরু হওয়া নয় ত,—জা'ত্
সাপ নিয়ে থেলা করা। দক্ষ সংপুড়ে না হলে, মরণ গ্রুব নিশ্চিত। শক্তি-সঞ্চায়
করবার শক্তি না থাক্লে, গুরু হওয়া যায় না, এ কথা বলা বাহল্য। গুরুব
বিশেষ ভাব—স্বার্থত্যাগ। তিনি শিষ্যের কাছে এক কপর্ককেরও আশ

ধন্মের একটা টান আছে, গুকর একটা টান আছে। যেনন বেখাদের একটা টান আছে, মদের একটা টান আছে, যে টানে পড়ে লোক কর্ম্বব্য ভূলে যার, ভাল মন্দ ভূলে যার, বাজি হর দোর আগ্রীর অজন ভূলে গিয়ে বারবনিতার হরে গড়ে থাকে, তেমনি গুরুর একটা টান আছে। সে টানে পড়লে, শিষ্যের সাধ্য কি স্থির থাকে। শত বিল্ল ঠেলে ফেলে, সমন্ত বন্ধন কেটে ফেলে, উন্মত্রের আল্ল, শিষ্য গুরুর কাছে যেওে গাকে। কোনই প্রতিব্রুক্ত তাকে বারণ বর্তে পারে না; নিজের ইচ্ছা না থাক্লে, অনিচ্ছা সন্তেও শিষ্য গুরুতে পারে না। স্ব ভূলে গিয়ে গুরুর হয়ে যায়। তথ্নই শ্রুকি সঞ্চার হতে আরম্ভ হয়েছে; শিষ্যের জার মার নাই।

যতই শিষা আগনার হতে থাকে, ততই গুরুর স্বরূপ তার কাছে প্রকাশ হতে থাকে। আগে শিষা গুরুকে মানুষ বৃদ্ধিতে দেপে। পরে দেখে, গুরু আর ইউ অভেদ, গুরু আর জগবান্ অভেদ। মনে মনে নয়, প্রভাক দেখুতে পার, গুরুদ্ধী ভগবান্ তার সাম্নে বিরাজ্মনে। ইহার নাম ক্লাভা চিদিন না গুক্তে পাক। ভগবদুদ্ধি হয়, ততদিন ঠিক গুজ্লাভ হয় নি।
ক্তে ভগবদুদ্ধি হ'বে, সাধনার শেষ। তারপর দেবা। যতদিন না
ভারবদুদ্ধি হয়, ততদিন গুকুর শিষাকে দেবার জিনিষ থাকে, তাকে
আত্তে আন্তে, বাপ ধেমন ছোট ছেপেটীকে হাত ধরে তোলে, সে রকম
করে ধর্মরাজ্যের দোপানের পর দোপানে ভুলতে হয়। কিন্তু একবার ভগবহুদ্ধি পাকা হয়ে গেলে, আর গুকুর শিষাকেও কিছু দিভে হয় ন', শিষাকেও
ভাকর কাছ থেকে আর কিছু পাবার অপেক্ষা থাকে না। এই অবহার নিদাম
ভারভিক, ঠিক ঠিক, যথার্থ নিদাম গুকুসেবা হয়ে হয়। এ সেবা
মৃক্ত পুরুষের সেবা।

শেষ কথা, এই রকম গুকর অবির্ভ ব জগতে দর্মন। হয় না। আর এ
রকম গুরু না হলে'ও নিস্তার নাই। তবে, তাই বলে, চুপ করে হাত পা
গুটিরে বসে থাকুলে চলবে না। মুনুকু ব্যক্তি পারেনও না চুপ করে
বসে থাকুতে। যার যেরপ বিশ্বাস, তার সেই বিশ্বাসে দৃঢ় হ'রে,
সরলতা বজার রেথে, সাধন করে যেতে হবে। সময়ে সবই আসবে।
"মহ্ব্যাণাং সহস্রেষ্ কশ্চিদ্য গতি সিম্বরে। যততামপি সিদ্ধানাং কশ্চিশাং
বিক্তি তান্তঃ"।—এ কথা অতি সত্য; "ঘুড়ি লক্ষে কভু একটা কাটে,"—
এ কথা অতি সত্য।

প্রীন্ত্রাসক্রম্ণ-কথায়ত।•

ব্রীম——কথিত।]

[১২১ **প**ৃষ্ঠার পর।

প্রথম পরিচ্ছেম।

[দক্ষিণেথরে—ভক্তদঙ্গে]

আৰু রবিবার, ২৬শে অক্টোবর, ১৮৮৪ খ্রীফীজ। হেমন্তকাল। কার্ত্তি-কের ওক্লাসপ্রমী ভিথি।

ছপুরবেলা। দক্ষিণেখরের কালীবাড়ীতে ঠাকুরের সেই পূর্বপরিচিত ধরে ভজেরা সমবেত হইয়াছেন। সে ধরের পশ্চিম পায়ে অর্ক্টক্রাকার বারাগুা। বারাগুার পশ্চিমে উদ্ভানের পথ উত্তর দক্ষিণে হাইডেছে। পথের পশ্চিমে মা

[•] অবৰ আৰ ছাপা বৃইতেছে।

কালীর পুল্পোভান, ভাহার পরে পোস্তা, তংপরে পবিজ্ঞস্লিলা দক্ষিণ-বাহিনী

ভক্তেরা অনেকেই উপস্থিত আছেন। আজ আনন্দের হাট।। আনন্দময় ঠাকুর রামক্ষের ঈশর-প্রেম ভক্ত-মুখদর্শণে মুকুরিত হইতেছিল। আশ্চর্যা! আনন্দ কেবল ভক্ত মুখদর্শণে কেন —বাহিরের উল্পানে, রুক্ষে, নানাবিধ বে কুরন ফুটিয়া রহিয়াছে ভলাগো--বিশাল ভাগীরখী বকে, রবিকর-প্রদীপ্ত নাল নভোমগুলে, মুরারি চরণচাত গঙ্গাবারি-কণ্ণাহী শীতল সমীরণ মধ্যে—এই আনল প্রতিভাগিত হইতেছিল। কি আশ্চর্যা! সতা স্তাই 'ম্ধুমংপাথিবং রজ:'—উত্তানের ধূলি পর্যান্ত মধুময় ৷ ইচ্ছা হয়, পোপনে বা ভক্তসঙ্গে এই ধুলির উপর গড়াগড়ি দিই। ইচ্ছা হয়, উত্তানের একপার্খে দাঁড়াইয়া সম্ভ দিন এই মনোধারী বারি দশন করি। ইচ্ছা হয়, এই উত্তানের তরুণতা-গুল্মপত্রপুষ্পশোভিত স্নিগোজ্জন বৃক্ষ ওলিকে আত্মীয়জ্ঞানে সাদর সন্তায়ণ ও প্রেমলিকন দান করি। এই গুলির উপর দিয়া ঠাকুর রামকৃষ্ণ কি পাদ চারণ करत्र १ -- এই तुक मंडा अना मना निषा जिनि कि अवःत्र या जाशांक करत्र १ हेका करत, स्त्राा जिन्द्र गगनभारन जनअनुष्टि इहेशा जोकाहिया थाकि, रकन ना, **८** एथिट ज हि. इंट्या क छाट्या क मम अहे (अमान क्या निष्ठ हा) शक्त ना की त পृथाति, दोतातिक, अतिहातक, ८कन मकन एक अत्रमान्नीय द्वाव इहेएछए ? --কেন ওছান, বছদিনাতে দুউ জনাভূমির ভাষে, মধুর লাগিতেছিল ? আকাশ, পদা, দেবমন্দির, উত্তানপথ, রুক্ষ, লতা, গুলা, সেবকগণ, আসনে উপবিষ্ট ভক্ত-গৃণ, স্কলে যেন এক জিনিদের তৈরারী বোধ হইতেছে। যে জিনিদের তৈরারী খ্রীরামক্ট, এঁরাও বোধ হইতেছে, সেই জিনিসের হইবেন। বেন একটা মোমের বাগান, গাছপালা ফলপাতা, বাগানের পথ, বাগানের মালী, বাগানের নিবাদিগণ, 🛢 বাগান-মধ্যন্থিত গৃহ—সমস্তই মোমের। এখানকার সমস্ত যেন আনন্দ দিয়ে গড়া।

শ্রীমনোমোহন, শীযুক্ত মহিমাচরণ শ্র মাফার উপস্থিত ছিলেন। ক্রমে ঈশান, হাধাল হার ও হাজরা। এঁরা ছাড়া অনেক ভক্তেরা ছিলেন। বলরাম, রাধাল এঁরা তথন শীরুন্ধাবনধামে। এই সময়ে নৃতন ভক্তেরা আসেন ধান—নারাণ, শন্টু, ছোট নরেন, তেজচক্র, বিনোদ, হরিপদ। বাবুরাম আসিয়া মাঝে মাঝে থাকেন। রাম, হ্রেশ, কেদার আ দেবেন্দ্রাদি ভক্তরণ প্রার আসেন—কেহ কেহ সপ্তাহাজে, কেহ তুই সপ্তাহের পর। শাটু থাকেন। যোগীনের বাড়ী

নিকট; তিনি প্রায় প্রত্যাহ বাতায়াত করেন। নরেন্দ্র মাঝে মাঝে আদেন, এলেই আনন্দের হাট। নরেন্দ্র তাঁহার সেই দেবছর্ল্লত কর্প্তে ভগবানের নাম ও গুণ গান করিতেন, অথনি ঠাকুরের নানাবিধ তাব ■ গমাধি হইত। একটী বেন উংগব পড়িয়া বাইত। ভারি ইঙ্ছা, ছেলে.দের মধ্যে কেছ তাঁর কাছে রাজি দিন থাকেন, কেননা, ভারা সংসারে বিবাহাদি হত্তে বা বিষয়-কর্ম্মে আবদ্ধ হয় নাই। বাবুরামকে থাকিতে বলেন, তিনি মাঝে যাঝে থাকেন। খ্রীয়ুক্ত অধ্যর দেন প্রায় অংকেন।

[THE DIFFERENTIATED]

ছরের মধ্যে ভিজেরা বসিধা আছেন। ঠাকুর রামকৃষ্ণ বাশকের স্থার ক্ষাড়িয়ে কি ভাবছেন। ভক্তেরা চেরে আছেন।

শীরামক্বঞ (মনোমোহনের প্রতি) সব রাম দেখছি। তোমর। সব বদে আছে, দেখছি রামই সব এক একটা হয়েছেন।

মনোমোহন। রামই সব হয়েছেন; ছবে আগনি বেমন বলেন—"আপো-নারামণ", কিছ কোন জল থাওয়া যায়, কোন জলে মুখ ধোয়া চলে,কোন জলে বাসন মাজা—

শীরামক্কা। হাঁ; কিন্ত দেখছি ভিনিই স্ব। জীব জগৎ তিনিই হয়েছেন। এই কথা বলিতে বলিতে ছোট খাট্টাতে বসিংগন।

| সত্য কথা]

শীরামকৃষ্ণ। (মহিমাচবণের প্রতি) হাঁগো, সভ্য কথা কইতে হবে বলে কি—আমার শুচিবাই হলো নাকি! যদি হঠাং বলে কেলি খাবনা, তবে থিলে পেলেও আর খাবার যো নাই। যদি বলি, অমুক লোক বাউভলার আমার গাড়ু নিবে যাবে, তারেই নিয়ে যেতে হবে; আর কেউ নিয়ে গেলে তাকে আবার ফিরে যেতে বলতে হবে। একি হগো বাপু! এর কি কোন উপার নাই?

[সঞ্য় ও সন্ন্যাসী]

"আবার সক্ষে করে কিছু আনবার যো নাই। পান, থাবার, কোনও জিনিদ সংক করে আনবার যো নাই। তা হলে সঞ্চয় হলে। কি না। হাতে মানী নিয়ে আসবার যো নাই!

करे भगत्य क्रकी लाक व्यक्तिया बिलल, महाभन्न खनन्न यह मिह्नदक्त

বাগানে এসেছে, ফটকের কাছে দাঁড়িয়ে আছে, আপনার সঙ্গে দেখা করতে চার।

জীরামরক। (ভরুদের প্রতি) স্থদের দক্ষে একবার দেখা করে স্মাসি। ভোমবা বোসো।

এই বলে বার্ণিস করা চটা জুভাটী প'রে তিনি পূর্বাদিকের ফটক-জভিমুৰে চলিলেন। সঙ্গে কেবল মান্তার।

লাল হারকীর উত্থানপথ। সেই পথে ঠাকুর পূর্বাদিক হইয়া ঘাইতেছেন।
পথে থাজাঞ্চী দাঁ ড্রেছিলেন, ঠাকুরকে প্রণাম করিলেন। দক্ষিণে উঠানের
ফটক রহিল, সেথানে শাক্রবিশিষ্ট দৌবারিকগণ বসিয়াছিল। বামে কুঠী।
তৎপরে পথের হুই দিকে কুস্মর্ক—অদুরে পথের ঠিক দক্ষিণ দিকে গাজীভলা
ও না কালীর পুকণীর সোপানাবলীশোভিত ঘাট। ক্রমে – পূর্বহার, বামদিকে
হারবানদের হার, ও দক্ষিণে তুলগী-মঞ্চ। উত্যানের বাহিরে আফুমিরা
সেথেন, যহমলিকের বাগানের ফটকের কাছে হুদের দণ্ডারমান।

দিতীয় পরিজেদ।

[সেবক সন্নিকটে]

হাদর ক্বতাঞ্লিপুটে দণ্ডায়মান। দর্শনিমাত্র রাজপথের উপর দণ্ডের স্থার নিপ্তিত হইলেন। ঠাকুর উঠিতে বলিলেন, হাদর আবার হাতেক্রোড় করিরা বালকের মত কাঁদিতে লাগিলেন।

কি আশ্চর্যা। ঠাকুব রামকৃষ্ণও কাঁদিতেছেন। চক্ষের কোণে করেক কোঁটো জল দেখা দিল। তিনি অঞ্চবারি হাত দিয়া মুছিয়া ফেশিলেন— যেন চক্ষে জল পড়ে নাই। যে হৃদয় তিঁকে কত যন্ত্রণা দিয়াছিল, ভার জন্ম ছুটে এসেছেন। আর কাঁদছেন।

শ্রীরামক্ত্র এখন যে এলি १

স্থান (কাঁদিতে কাঁদিতে) ডোমার সঙ্গে দেখা করিতে এলাম। আমার ছঃথ আর কার কাছে বলুবো ?

শ্রীরামকৃষ্ণ। (সান্ত্রার্থ সহাস্যে) সংসারে এইরূপ ছঃখ আছে। সংসার

করতে গেলেই স্থ হঃথ আছে। (মাষ্টারকে দেখাইয়া) এঁরা এক একবার ত ই আমেন। এদে ঈশ্বীয় কথা হটে। শুনলে মনে শান্তি হয়।

শ্রীরামক্কম। তোর কিদের ছঃখ ?

হৃদয়। (কাঁনিতে কাঁদিতে) আপনার দক্ষ ছাড়া, তাই তুঃধ ?

শ্রীরামকৃষণ। ভুইতে। বলেছিলি, 'ভোমার ভাব ভোমাতে থাকৃ, আমার ভাব আমাতে থাক।'

সদয়। ই।, তাতো বলেছিলাম — আমি কি জানি ?

শ্রীর।মক্কার আজ এখন সার, আর একদিন তখন বসে কথা হবে।
আজ রবিশার অনেক লোক এসেছে, তারা বসে ররেছে। এশার দেশে ধানটান কেমন হয়েছে ?

क्तता है। ए। এक तत्र मन इस नाहै।

শ্রীরামক্ষ। আজ তবে আয়, আবার একদিন আদিস্।

হৃদয় আবার মাটাক হইরা এবাম করিল। ঠাকুর সেই পথ দিয়া কিরিয়া আংসিতে লাগিলেন। সকো মাঠার।

শ্রীরাসক্বয়। (মাষ্টারের প্রতি) আমাব দেবাও বত করেছে, যক্ত্রণাও তেমনি দিয়েছে। আমি যথন পেটের ব্যারামে ছ্খানা হাড় হয়ে পেছি—কিছু খেতে পাতেম না, তথন আপনি সেই দৰ জিনিদ খেতে থেতে আমায় বল্লে, "এই দেখ, আমি কেমন খাই; তোমার মনের ওপে থেতে পাও না!" আগার খলতো, "বোকা——আমি না পাকলে তোমার সাধুগিরি বেরিয়ে বেতো!" এক দিন এ রক্ষ করে এত যন্ত্রণা দিলে, বে পোন্তার উপর দাঁড়িফে জোয়ারের জলে দেহত্যাগ কর্তে গিয়েছিলাম।

মাষ্টার শুনিয়া অবাক হইয়া রহিলেন। বোধ হয় ভাবিতে লাগিলেন, কি আশ্চর্যা! এমন লোকের জন্ত ইনি অশ্বাবি বিস্ক্রেন করিতেছিলেন ?

শীবামক্ষা। (মাষ্টারের প্রতি) "আছে। অত সেবা কর্ত্রো, তবে কেন ওর এমন হলো। ভিলেকে ধেমন মানুধ করে, সেই রকম আমাকে দেখেছে। আমি তো রঃত দিন বেহঁদ হয়ে থাক্তুম, তার উপর আবার অনেক দিন ধরে ব্যামোর ভূগেছি। ৩, যে রকম করে আমার রাধতো, দেই রকমই আমি থাক্তুম।"

মাষ্টার কি বলিবেন, চুণ করিয়া গৃহিলেন। হয়ত ভাবিতেছিলেন থে, হৃদ্দ্ বুঝি নিস্কাম হইয়া ঠাকুরের সেবা করেন নাই। কথা কহিতে কহিতে ঠাকুর নিজের খরে আসিয়া পঁছছিলেন। ভক্তের। প্রতীকা করিতেছিলেন। ঠাকুব আবার ছোট খাটটীতে উপবিষ্ট ছইলেন।

তৃতীয় পরিচ্ছেদ।

ভক্তসঙ্গে — ঈর্ধবলাভোপায় তথ্যিচারে।

[ভাব, মহাভাবের গুড়ভত্ত্ব]

শীযুক্ত মহিমাচরণ ইত্যাদি ছাড়া কয়েকটী কোলগরের ভক্ত এসেছিলেন। তাহাদের মধ্যে একজন ঠাকুর রামক্ষের দক্ষে কিন্নংকাল বিচার করেছিলেন। কোলগরের ভক্ত—(শুরামক্ষের প্রতি)। মহাশয় ! শুন্লাম যে, আপানার ভাব হয়, স্মাধি হয়। কেন হয় আর কিরুপ হয়, আমাদের বুঝিয়ে দিন।

শ্রীরামক্ক । শ্রীমতার মহাভাব হতো, স্থীরা কেন ছুঁতে গেলে **রু স্থা** বল্তো, 'কৃক্বিলাগের অঙ্গ ছুঁস্নি এঁর দেহমধ্যে এখন কৃষ্ণ বিশাস করছেন।'

''ঈশ্বর অকুভব না হলে ভাব বা মহাভাব হয় না,গভীর জল থেকে মাছ এলে জলটা নড়ে—তেমন মাছ হলে জলটা তোলপড়ে করে। তাই ভাবে 'হাঁসে, 'কালে, নাচে গায়।'

"অনেকক্ষণ ভাবে থাকা যায় না। আয়নার কাছে বদে কেবল সুধ দেখ্লে লোকে পাগল মনে কর্বে।"

কোলগরের ভক্ত। ভানেছি, মহাশার ঈশ্বর দশনি ক**রে থাকেন; তাছলো** জামাদের দেখিয়া দিন।

শ্রীরামকৃষ্ণ। স্বই ঈশ্বরাধীন— মাগুষে কি কর্বে? তাঁর নাম কর্তে কর্তে কথন ধরা পড়ে, কথন পড়ে না। তাঁর ধ্যান করতে করতে এক একদিন বেশ উদ্দীপন হয়—মাবার একদিন কিছুই হলো না।

[কৰ্মযোগ ও ঈশ্ব দর্শন]

শ্রী রামকৃষ্ণ। "কর্ম চাই। তবে দর্শন হয়, একদিন ভাবে । 'বি-পুকুর *
দেখলুম। দেখি একজন ছোটলোক পানা-জল ঠেলে জল নিচেচ, আর জল হাতে
তুলে এক একবার দেখ্ছে। যেন দেখালে, পানা না ঠেল্লে জল দেখা যায় না

[&]quot; ত্গলি জেলার অন্ত:পাভী কামারপুক্র প্রামে ঠাকুব রামকুদের বাড়ী। তাহার সমুধে হালগার পুকুর—একটা গিমী বিশেষ।

—কর্মা করলে ভক্তিলাভ হয় না, ঈশ্ব দর্শন হয় না। গান জপ এই স্ব কর্মা, তাঁর নামগুণ কীর্নিও কর্মা। দান যত্ত এই স্বও কর্মা।

শাথম যদি চাও, ভবে ছগকে দই পাংতে হয়। তার পর নির্দ্রের রাথ্তে হয়। তার গর দই বৃদ্লে প্রিল্ল করে মছন করতে হয়। তবে মাথম ঘোলা হয়।

মহিমাচরণ। আজিলাই। কর্ম চাই বই কি ! অনেক থাট্তে হয়, তবে ভাগ হয়। গড়ভেই—কত হয় ! অনভ শাস্ত !

ি আগে বিদ্যা (জ্ঞানবিচার) না আগে ঈশ্বরলাভ ?]

জীরামরক। (মহিনার প্রতি) শাস্ত্র বত পড্বে ? শুধু বিচার করকে কিছবে ? আনে তাঁকে লাভ কব্বার চেষ্টা কর। গুরুবাকো বিখাস করে, বিছুক্ম কর। গুরু না থাকেন, তাঁকে ব্যাকুল হয়ে প্রাথনা কর, ভিনি কেমন — তিনিই জানিবে দেবেন।

"এই প'ড়ে কি জান্বে ? হতক্ষণ না হাটে পঁছছান যায়, ততক্ষণ দ্র হ'তে কেবল গোহোশক। হ'টে পঁছজিলে আর এগরক্ষ। স্পষ্ট দেখ্তে পানে, ভাতে পাবে। 'আলুনাও' প্যদাদাও' স্পটি ভন্তে পাবে।

"সগুদ্ৰ হ'তে হো হো শক্ষ করছে। কাছে গেলে কত জাহাজ যাতে, পাথী উড়ছে, ডেউ হতে দেখতে পাৰে।

"বই পতে ঠিক অনুভব হয় না। আনেক তকাং। তাঁকে দর্শনের পর—বই, শাস্ত্র, সাংক্রেস (science) সব গড় কুটে: বোধ হল।

"বড় বাবুৰ সঙ্গে আলাপ দৰকাৰ। তাঁৰ ক'খানা বাড়ী, ক'টা বাগান, কত কোম্পানিৰ কাগজ, এ— আগে জানবার জন্ম অত বংস্ত কেন ! চাকরদের কাছে গেলে তাবা দাঁড়াভেই দেয় না—কোম্পানির কাগজের থবর কি দেবে!

"কিন্ত হো সো কৰে বড় বাবুৰ সজে একবার আলাপ কর, তা ধাকা। থেমেই হোক, জার বেডা ডিজিটেই হোক,—তথন কত বাড়ী, কত বাগান, কত কোম্পানির কাগজ, তিনিই বলে দেবেন। বাবুৰ সজে আলাপ হলে আবার চালর খাববান্সৰ সেলাম কব্বে। (সকলের হাস্য)।

[কর্মযোগ ও ঈশরলাভ]

একজন ভক্ত। এখন বড় বাবুর 🗫 আলাপ কিলে হয় 🛚 (সকলের হাস্ত)।

শীরামর । তাই কর্ম চাই। ঈশর আছেন বলে বদে থাক্লে ধবে না। যো দোলর তাঁর কাছে যেতে হবে। নির্জ্জনে তাঁকে ভাকো, প্রার্থনা কর, 'দেখা দাও' বলে বাকেল হয়ে কাঁদো। কামিনী-কাঞ্চনের জন্ম পাগল হয়ে বেজাতে পার, তবে তাঁর জন্ম একটু পাগল হও। লোকে বলুক, যে ঈখবের জন্ম অনুক পাগল হয়ে গেছে। দিন কতক না হয় সব ভাগে করে উচিক একলা ভাকো।

"শুধু 'তিনি আছেন' বলে বসে থাক্লে কি হবে ? হলেদার পুকুরে বড় মাছ আছে। পুকুরের পাড়ে শুধু বসে থাক্লে কি মাছ পাওষা যায় ? চারা করো, চার ফেলো। ক্রেন গভার জল থেকে মাছ আস্বে, আর জল নড়বে। তখন আন্দ হবে। হাতে মাছটার খানিকটা একবার দেখা গেল মাছটা ধ্পাশু করে উঠ্লো। যথন দেখা গেল, তথন আবো আননদ।

"হুধকে দই পেতে মহুন করণে ভবে তো মাথম পাবে।

(মহিম চরণের প্রতি) এ—তো ভাল বালাই হলো। স্বীরকে দেখিছে । দাও, আর উনি চুগ করে বসে থাক্বেন। মাথম তুলে মুখের কাছে ধর! (সকলের হাস্ত)।

"ভাল বালাই—মাছ ধ'রে হাতে দাও <u>৷</u>

ত্রক জন রাজাকে দেখ্তে চার। রাজা আছেন সাত দেউড়ীর পরে। প্রথম দেউড়া পার না হতে হতে বশে, 'রাজা কই?' বেমন আছে, এক একটা দেউড়ী ভো পার হতে হবে!

(ঈশ্বরলাভের উপায়—ব্যাকুলতা)

মহিমাচর।। কি কর্ম্মের দারা তাঁকে পাওয়। বেতে পারে ?

শীরাসকৃষ্ণ। এই কর্মের দারা তাকে পাওয় হ'বে, আরও কর্মের দারা পাওরা যাবে না, তা নয়। তাঁর কুপার উপব সব নির্ভির। তবে ব্যাকুল হয়ে কিছু কর্ম করে যেতে হয়। ব্যাকুলতা থাক্লে হয়ে য়য়। ব্যাকুলতা শাক্লে তাঁর কুপাহয়।

"একটা স্থোগ হওয়া চাই। সাধুসক, বিবেক, সদগুরু বান্ত। হয় তো একজন বড় ভাই সংসারের ভার নিলে; হয় তো স্ত্রাটা িভাশকি, বড় ধার্মিক। কি বিবাহ আদপেই হ'ল না, সংসারে বন্ধ হতে হ'ল না—এই এই মন বোগা-বোগ হবে হবে বার।

"একজনের:বাড়ীতে ভারি অবস্থ— যায় যায়। কেউ বল্লে, অমুক নকতে বৃষ্টি পড়বে, সেই বৃষ্টির জল মড়ার মাধার খুলিতে থাকুবে, 'আবার একটা দাপ ব্যাঙ্কে তেড়ে যাবে, ব্যাঙ্কে ছোবল মারার সময় বাঙ্টা যেই লাফ দিয়া পালাবে, অমনি সেই সাপের বিষ মড়ার মাগার খুলিতে পড়ে যাবে; দেই বিষের ঔষণ হৈত্যার করে যদি খাওয়াতে পাব, ভবে বাঁচে। এখন यात वाफ़ीए श्रद्ध्य, रगहे लाक मिन कन नक्क तिर्थ वाफ़ी रणतक বেরুলো, আর ব্যাকুণ হয়ে ঐ সব খুঁজতে লাগল। মনে মনে ঈশ্বরকে ভাক্ছে, 'ঠাকুর! তুমি যদি জোট্ পাট্ করে দাও তবেই হয়।' এইরপে বেতে বেতে সভ্য সভাই দেণ্তে পেলে, একটা মড়ার মাধার খুলি পতে, রয়েছে। দেখ্তে দেখ্তে এক পদলা রুটি হল। তথন দে বাকি বল**ু** হে গুরুদেব! মড়ার মাথার খুলিও পেলুম, আবার দেই নক্ষত্রেও বৃষ্টিও হলো সেই বৃষ্টির স্কলাও ঐ খুলিতে পড়েছে, এখন রূপ। করে আর কয়টার যোগাযো করে দাও ? ব্যাকুণ হয়ে ভাবছে এমন সময়ে দেখে, একটা বিষধর সর্প্রা তথন সে লোকটীর ভারি আহলাদ হলো; আর এতো ব্যাকুল হলো যে, বু হুড় হু**ড় করতে লাগলো; আ**রে সে বলতে লাগলো, 'হে গুকদেব! এবা _{ইচ} সাপও এসেছে, অনেকগুলির যোগাযোগও হল।' রুপা করে এখন আর ে খেলি বাকী আছে, দে গুলি করিয়ে দাও! বল্তে বল্তে আঙ এলো, সাপৌ ব্যাঙ্ভাড়া করে থেতে লাগলো, মড়ার মাথার খুলির কাছে এসে যাই ছোবল मिर्छ शारत, व्यमिन साक्ष्णे नाकित्य अमिरक शिर्य भ'क्रना, व्यांत विष व्यमिन খুলির ভিতর পড়ে গেল। তথন লোকটী হাত তালি দিয়ে নাচ্তে লাগলো।

"তাই বলছি, ব্যাকুলতা থাকলে সব হয়ে যায়।"

[ঈশ্বরণাভ ও ত্যাগ; ঠিক সন্মাদী কে ?]

ব্ৰীরাষকৃষ্ণ। মনথেকে সব ভ্যাগ না হলে ঈর্বরণাভ হয় না। যে লোক সাধু, সে সঞ্চয় কর্তে পারে না। সঞ্চ "না করে পজ্জী আউর দরবেশ।" পাধী আর সাধু সঞ্চর করে না।

"এথানকার ভাব-হাতে মাটা দেবার জন্ম মাটা নিয়ে থেতে পারে ন।। বেটুগাটা করে পান আনবার যো নাই। হলে যখন বড় ষরণা দিচে, তখন এখান থেকে কালী চলে যাব মংলব হল। ভাবলুম, 'কাপড় লব কিন্তু টাকা (क्यन करत नद?' आत कानी वाखवा श्रुग ना।

ষহা কিছু দেখিতে, ভাবিতে গুনিতে বা কলিতে পারি। যাহ। কিছু আমানে জ্ঞানের দীমার মধ্যে, তাহাই এইরূপেই চলিতেছে—ঠিক যেমন মন্ত্র্যাদেহে নিখাদ প্রখাদ। সমুদয় স্ষ্টিই, স্থতরাং, এইরূপে চলিয়াছে, একটী তরঙ্গ উঠিতেছে, একটা পড়িতেছে, আবার উঠিয়া আবার পড়িতেছে। প্রভ্যেক ভরঙ্গেরই মঙ্গে সঙ্গে একটা করিখা ভাবনতি, প্রত্যেক অবনতির সঙ্গে সঙ্গে একটী করিয়া তরঙ্গ। স্মুদ্য প্রস্কাত্তেই, উহার ্পপ্রাধিতা হেতু একই নিয়ম ঘটিবে। অভএব আনৱা দেখিতেছি বে, সনুদল ব্রহ্নাভেরই বেন উহার কারণে লম্ব; ত্র্যা, চক্র, গ্রহ, তারা, পৃথিবী, মন,শরীর, যাহা কিছু এই প্রসাতে াছে, সকলেবই উহাদের হুলা কারণে শুয়, তিরোভাব, আপাত দৃষ্টিতে যেন নাশ। বাস্তবিক কিন্তু উহার। উহাদেন কারণে স্ক্রপে থাকিবে। উহ তে আবার তাহারা বাহিরিবে, আবার পৃথিবী, চল্ল সুয্য তারা প্রস্বিবে। এই উথান পতন সম্ব:ৰ আৰু একটা বিষয় জানিবাৰ আছে। বীজ বুক্ষ হইতে ইসে। উহা অমনি তংক্ষণাং বুক্ষ হয় না। উহাব ক্তক্টা বিশ্রামের বা অতি অবাক্ত কার্যোর সময়ের আবগুক। বীজকে থানিকক্ষণ মাটির নীচে থাকিয়া ্য করিতে হয়। উহাকে আপনাকে খণ্ড এও করিয়া কেলিতে হয়,যেন আপ-ক থানিকটা অবনত কবিতে হয়, আৰু ঐ অবনতি হইতে উহার পুন্করতি ষা থাকে ৷ অভ্নৰ এই সনুদ্ধ ব্ৰণাণ্ডকেই কিছু সনৰ অদৃশ্য অবাক্তভাবে একপে কাশ্য করিতে হ্ব, যাহাকে প্রশাং বা স্ক্রি পূর্কবিস্থা বলে, তাহার পর আবার পুনস্টে হয়। এই জগংপ্রবাহের একটা প্রকাশকে— অর্থাং সূক্ষ্-ভাবে পরিণতি, কিছুকাল তদনস্থায় অবস্থান, আবার পুনরাবির্ভাব—ইহাবেই কল বলে। সমুদ্ধ ব্ৰহ্মা ওই এইরূপে কলে কলে চলিয়াছে-প্ৰকাণ্ডতম ্দাও হইতে উহার অন্তর্কতী প্রত্যেক পরমাণু পর্য্যন্ত। সম জিনিষ্ট এই তরঙ্গাকারে চলিয়াছে। একণে অবার এবটা গুরুতর প্রশ্ন আদেশ—বিশেষতঃ বর্ত্তমান কালের পক্ষে। আমরা দেখিতেছি, সুশাতর রূপগুলি ধীরে ধীরে বাক্ত হইতেছে, ক্রমশঃ সুলাৎ স্থলতর হইতেছে। আমরা দেখিয়াছি যে, বারণ ও কার্য্য অভেদ—কার্য্য কেবল কারণের রূপান্তরমাত্র। অতএব এই সমূদ্য বন্ধাণ্ড শুক্ত হইতে প্রস্তুত হইতে পারে না। বিছুই কারণ বাতীত ঋদ্দিতে পারে না, শুধু তাহাই নহে, কারণটী কার্যো স্কারণে বর্ত্তমান।

তবে এই ব্ৰহ্মাণ্ড কোন বস্ত ২ইতে প্ৰস্ত হইয়াছে ? পূৰ্ব্ব বৰ্তী স্ক্ষ ব্ৰহ্মাণ্ড হইতে। মান্ত্ৰ কোন্ বস্ত হইতে প্ৰস্ত ? পূৰ্ববৰ্তী স্ক্ষয়ণ হইতে। ১লা আমাঢ়, ১৩০৮:] উদ্বোধন। [৩] ২৭৩

ুক্ষ কাহা হইতে হইল ? বীজ হইতে। বুক্ষটী সমুদ্ৰ, বাজে বঠমান ছিল। উহা ব্যক্ত হয় মাত্র। অভ এব এই জগদু স্বাণ্ড এই জগতেরই স্ক্রবেস্থা হইতে প্রস্ত হইবাছে। একণে উহা বাক্ত হইবাছে মাত্র। উহা পুনশায় ঐ স্ক্ ন্ধপে যুহিবে, আবার ব্যক্ত হইবে। এফলে আমরা দেখিলান, স্কারপভাবি ব্যক্ত হইয়া সুলাং সুলভর হয়, যভদিন না উহার। উহাদের চরমসীমার পৌছে; চরমে পৌছিলে, তাহারা আবার পাণটিয়া সূত্রাং স্থাতর হয়। সূত্র হইতে জমশঃ মুল হইতে তুলতর্রণে পরিণতি, কেবল বেন উহাদের অংশগুলির অবস্থান পৰিবৰ্ত্তন, ভাহাকেই বৰ্ত্তমান কালে 'ক্ৰমনিকাশ' বাদ বলে। ইহা স্মৃতি স্ভা, সম্পূর্ণরূপে সত্য; আমবা আমাদের জাবনে উহা দেখিতেছি; বিচারণান দে বাকি এই এই 'এক দ্বিকাশ' বাদীদের সহিত বিবাদের সম্ভাবনা নাই। আমাদিগকে আরে। একটা বিষয় জানিতে হইবে—ভাগা এই যে, প্রচ ক্রমবিকাশ, একটা ক্রমদকোচের ছারা পুরবৃত্তিত। বীজ বুক্ষের জনক ব কিন্তু অপর এক বৃক্ষনী আবার ঐ বীজের জনক। বীজই সেই সুন্মরপ, হইতে বৃহৎ বৃক্ষটী আদিবাছে, আবার আর একটী প্রকাণ্ড বৃক্ষ ঐ বীজ জনসন্তুচিত হইগাছে। সনুদয় কৃষ্টাই ঐ বীকে বর্তমান। শৃত্ত হইতে (বুক্জনিতে পারে না, কিন্তু আমরা দেখিতেছি, বুক্ষ বীজ হইতে আ আরে কতক গুলি বাজ কতক গুলি কুক্ট জন্মায়, আপ্র কুক্ষ নহে। ইহা বেশাইতেছে যে, সেই বুক্ষের কাবণ ঐ নীজ - কেবল সেই বীজমাত্র; আর তে ৰীজে সমুদ্ধ বুক্ষটীই গৃধিয়াছে। সমুদ্ধ মহাধাৰ ঐ এক জীবাণুব ভিতরে, উহ चारांत्र भीरत भीरत वाक १ व । गम्मा उका ७३ - एक उकारण तिवारह সন্ কারণে, উহার হুলারণে রহিনাছে। অত এব 'ক্রমনিকাশ' বাদ,—সুলাৎ স্থাতররপে ক্রমপ্রকাশ - এই মত অতি মতা। উহা সম্পূর্ণরপেই সতা; তে প্রত্যেক ঘটনাটীই একটা ক্রমণস্কোচের দ্বারা প্রবংঠিত। অভএব যে দ্ব অণুটী পরে মহাপুরুষ হটল, তিনি দেই ক্রমস্তুচিত মহাপুরুষই ছিলেন, তিনি আবার মহাপুরুষরতে ক্রমনিকাশ প্রাপ্ত ইটবেন। যদি ইছাই সভ্য ছনু, তবে আমাদের ক্রমবিকাশবাদীদের শহিত কোন বিবাদ নাই, কারণ আমধা ক্রমশঃ দেখিব, যদি ভাঁহ'রা এই ক্রমদক্ষোচ প্রক্রিয়াটীয় অঙ্গীকার করেন, তবে ভাঁহারা ধর্মের বিনাশকর্তা না হইয়া উহার প্রবল মহায় হইবেন।

এতদুর আমরা দেখিলাম, শৃত্ত হইতে বিছুব উৎপত্তি হইল, এই হিসাবে সৃষ্টি হইতেই পারে না। সকল জিনিষ্ট অন্তকাল ধরিয়া রহিয়াছে এবং ২৭৪ উদোধন। (৩য়—৯ম সংখ্যা;

অনন্ত কাল ধরিয়া থাকিবে। কেবল ক্রমবর্ত্তী তরক ও অবনতি ক্রমে উথাদের সতি হয়। সুক্ষভাবে একবার গতি, আবার ভূপভাবে আগেমন। সমুদয় প্রকৃতিতেই এই ক্রমদকোচ ও ক্রমবিধাশ প্রক্রিয়া চলিতেছে। স্বতরাং সমুদয় ব্রহ্মাণ্ড প্রকাশের পূর্বে অব্শুট ক্রন্মছুচিত হইয়াছিল, আবার উহা এই সকল বিভিন্নরূপে আপনাকে ব্যক্ত করিবে – আবার আর এব বার ক্রমস্কু-চিত হইবার জ্ঞা। উলাহরণ স্বরূপ একটা ক্ষুদ্র উদ্ভিদের জীবন ধর। আম্বর্ দেখিতেছি, দুইটী জিনিষ ঐ উত্তিদ রূপেই এব অপ্রদান করিতেছে, উহার উৎপত্তি 🎟 বিকাশ আর উহার ক্ষয় ও বিনাশ। এই ছুচ্টী মিলিয়াই একটা একত্ব বিধান করিতেছে - উদ্ভিদ্ জীবন। অত এব ঐ উত্তিদ্ জীবনকে প্রাণ শৃথালের একটা অংশমাত্র ধরি। আমরা সমুদয় বস্তর নিকেই এক প্রাণ বলিয়া ধরিতে পাবি ---শীবাণু হইতে উহার আরম্ভ এক পূর্ণমান্তর উহার সনাপ্তি। মাত্র 🗗 শুখালের একটা অংশা; আর যেমন ক্রমবিকাশবাদারা বংলন,নানারপ বানর তার পর আবের कृत कृत व्यानी वातः উहिদ्। वार्य मधानाः म। वाकरण स कृष्टम च छ इहेट उ আমরা আরম্ভ করিমাছিলাম, তথা হইতে এই সমুদাকে এক প্রাণ বিশিষা ধর: আর আমরা এই মাত্র যে নিষম পাইলাম, তাহ। প্রয়োগ করিয়া দেখি যে. প্রভাক ক্রম বিকাশই পূর্ব্ববর্তী কিছুর ক্রমসকোচ আর অতি নিয়ত্ত জন্ত হইতে সর্ব্যোচ্চ পূর্ণতম মাতৃষ পর্যান্ত সমুদ্ধ শ্রেণীই অবশাই অপর কিছুর ক্রমন मटकाठ शहेरवा कि तमा का गमारकाठ जाव ? हेश ई अभा कि मार्थ क्या সমুটিত হইয়াছিল ৭ ক্রমবিকাশবাধী ভোনাদিগকে ধলিবেন, ভোমার স্বাধ্ব-ধারণা ভূপ। কাবেণ, তোমবা বল, চৈতভাই জগতের অষ্ঠা, কিন্ত আমরা প্রতিদিন দেখিতেছি যে, চৈত্ত অনেক পরে আসে। মাধুষে ও উচ্চতর জয়তেই কেবল আমরা চৈততা দেখিতে পাই, কিন্তু এই চৈততা জনিবার পুর্বে এই জগতে লক্ষ্ লক্ষ্ বৰ্ষ অতীত ধ্ইয়াছে৷ ভয় পাইও না, তোমাব নিজ মত থাটাও। বৃক্ষ বীজা হইতে অংনে, আবোর বীজে যায়— আরম্ভ ও প্রিণাম সমান। পৃথিবী তাহার কারণ হুইতে আনে আবার কারণে যায়। এই ম্মুদর শৃত্থালের শেষ কি ? আমরা জানি, আরস্ত জানিতে পারিলে আমরা পরিণামও জানিতে পারিব। এইরূপ, অন্ত জানিতে পারিলেও আদি জানিতে পারিব। তাহাই যদি হর, ভাহা হইলে এই সমুদর 'ক্রমবিকাশ'বাদ-সঙ্গত শ্রেণী লও, উহার এক প্রান্তে জীবার, অপব প্রান্তে পূর্ণ মানব। এই সমুদর শ্রেণীটী এক ক্রাণস্বরপ। অস্তে পূর্ণ মানবকে দেখিতেছি, সুতরাং আদিতে 9 ১লা আবাঢ়, ১৩০৮।] উদ্বোধন। 290

ঐ হইবে। অত এব ঐ জীবাণু অবগ্রাই উচ্চ চম চৈত্তের ক্রমসঙ্ক চিত্ত অবস্থা। তোমরা ইহা দেখিতে না পার, কিন্তু সেই ক্রমসমূচিত চৈতন্তই আপনাকে ব্যক্ত করিতেছে, যতদিন না উহা সম্পূর্ণতম মানবন্ধপে প্রাণাশিত হয়। ইহা সম্পূর্ণরূপে গণিতমতে প্রমাণ কবা মাইতে পারে। যদি শক্তির অবিনশ্বত্তর নিম্ম (Law of Conservation of Energy) সভ্য হয়, তবে তুমি কোন যন্ত্র হইতে কিছু পাইতে পার না, যদি তুমি পুর্বো উহাতে তাহা না দিয়া থাক। এঞ্জিন হইতে ভূমি যভটুকু কার্য্য পাও, তাগা তুমি উহাতে জল কয়লাক্সপে ষাহা দিয়াছিলে, ঠিক তভটুকু-এক চুল বেশীও নয় কমও নয়। আমি একণে যে কার্য্য কৰিতেছি, তাহা আমি আনাব ভিতরে বায়ু, থাত ও অক্তান্ত পদার্থ-রূপে যাহা দিয়াছি, ঠিক ততটুকু। কেবল সেগুলি আর একরূপে প্রিণত এই মাত্র এই বিশ্বসাথে এক বিন্দু জড় বা এচটুকুও শব্দি বাড়াইতে অথবা কমাইতে পার, যায় না। যদি তাই খ্যা, তবে এই চৈত্তা কি গ মদি উহা জীবাণুতে বৰ্তমান না পাকে, তবে উহা সংগ্ৰহ আক্ষাক্ৰ বলিতে হইবে — অবং (কিছু না , হইতে মতের (কিছুব । উংপত্তি হইল—বাহা অসম্ভব। তাহা হইলে ইখা একেবারে নিঃদলিগ্রভাবে প্রমাণিত ১ইতেছে যে, যেমন অন্ত অন্ত বিষয়ে দেখি, নেধানে আঁওন্ত, সেইখানেই শেষ, ভবে কথন অন্যক্ত, ক্থন বাব্যক্ত। এই শুমালর এক প্রাপ্ত পুনমানব মুক্তপুক্ষ, দেবমানব, বিনি প্রকৃতির নির্মেব বাহিরে গিয়াছেন, বিনি দম্দর অতিক্রম করিয়াছেন। তাঁহাকে এই জন্মনুত্যশৃত্থলের ভিতর দিয়া যাইতে হয় না। পেই মানৰ যাহাকে গ্রীষ্টারানরা গ্রীষ্টমানৰ বলেন বৌদগণ বৃদ্ধমানৰ বলেন, যোগীরা মুক্ত গ্রেন, সেই পূর্ণমানৰ এই শুজালোর এক প্রান্ত, আরু সেই শ্রীজন জেমসন্তুচিত হইয়া এই জীবাণুতেও বর্ত্তমান :

এক্ষণে এই প্রদাণ্ড সম্বন্ধে কি ইইল । এই জগতের শেষ উৎপন কি ?

তৈতন্ত — তাই নয় কি ? জগতে সন শেষে হয় হৈছন্ত। আর যথন ক্র হৈতন্ত ক্রমবিকাশবাদীদের মতে, স্টির শেষ বস্ত হইল, তাহা ইইলে চৈ-এই আবার স্টির প্রেল্ — স্টির কারণ ইইনে। মান্ত্র্যে জগতের এক অংশ অপর অংশের পারে ? মান্ত্র্য এই ধারণা কবিতে পারে যে, জগতের এক অংশ অপর অংশের সহিত সম্বদ্ধ— জগতের প্রত্যেক বস্তুতেই জ্ঞানের ক্রিয়া প্রকাশ — দেই প্রাচীন 'অভিপ্রায়বাদী' (Design theory) আগরা জড়বাদীদের সহিত মানিয়া লইতেছি গে, চৈত্তাই জগতের শেষ বস্তু — স্টিক্রমের ইহাই শেষবস্ত্য। বেশ ২৭৬

কথা, কিন্তু মাতৃষ জনিবার লক্ষ লক্ষ বর্ষ পূর্বের জ্ঞান ছিল না, অর্থাৎ প্রকাশিত জ্ঞান ছিল না কিন্তু অব্যক্ত চৈত্ত্ত্য ভিল — আর স্পষ্টব শেষ চৈত্ত্য — মানুষ। তবে আদি কি হইল ? আদিও চৈত্য। আদিতে সেই চৈত্ত ক্ৰমস্থুচিত হয়, **আবার পরিণামে** উহাই ক্রমবিকশিত হয়। স্বাত্তএব এই জগং ব্রহ্মাণ্ডের সমুদয় জ্ঞানসমষ্টি অব্থাই েই ক্রমসন্ধৃতিত স্ক্রিয়াপী সমষ্টি চৈত্র। উহা धीरत धीरत चापनारक वाक कविरुट्छ। ७० मर्स्त्राणी विश्वक्रतीन टेह्टरक्रत নাম ঈশর। উতাকে অভাযে কোন ত'ম দাও না চেন, টহা দির যে, আদিতে সেই অনন্ত বিশ্ববাপী চৈত্ত ছিলেন। সেই বিশ্বজনীন চৈত্ত জ্ঞ-সন্ধৃতিত হইয়া স্কাহইলেন, আবার সেই তৈত্তাই আপনাকে ক্রমণঃ ব্যক্ত করিতেছেন— মতদিন না তিনি পূর্ণ মানব, গ্রীষ্টমানব, বুদ্ধমানবে পরিণত হন। তখন তিনি নিজস্তানে ফিরিয়া আসেন। এই জ্লুই সকল শাস্ত্রই বলেন, 'অম্মরা তাঁহাতে জীবিত, তাঁহাতেই থাকিয়া চলিতেছি, তাহাতেই আমাদের সতা।" এই জন্মই সকলশাস্ত্ৰলেন, আমরা ঈশর হইতে আসিয়াছি এবং তাঁহ তেই ফিরিয়া গাইব। শঙ্গে ভ্য পাইও না, শঙ্গে যদি ভয় পাও, তবে তোমবা দার্শনিক হটবার যোগ্য নও। এই বিখব্যাপী চৈতভাকেই ব্রহ্মবাদীর। केशत दिनियां थ रिक्न।

আমাকে অনেকে অনেক বার জিজাসিয়াছেন, আপনি পুরাতন 'ঈধর' শক্টী ব্যবহার করেন কেন ? কাবণ, যত কথা বাবহৃত হইতে পারে, তন্মধ্যে ইহাই দর্কোত্রন। তাহার কারণ,—মান্নবের সকল আশা ভরসা সকল হুধ ঐ এক শব্দের উপর কেন্দ্রীভূত। এখন ঐ শন্দ পরিবর্ত্তন করা অসম্ভব। যথন বড় বড় সাধু মহামারা একপশদ গড়েন, তথন তাঁহারা উহাদের অর্থ থুব ভালরপেই বুনিতেন। ক্রমে সমাজে যথন ঐ শক্তলি প্রচারিত হইয়া পড়িল, তথন অজ্ঞলোকে ঐ শব গুলিব বাবহাৰ করিতে লাগিল। ভাহার ফল এই হইল যে, শক্ত লির মহিমা হাদ হইল। 'ঈশ্ব' শক্টী প্রবাতীত কাল হইতে আসিয়াছে আর যাহা কিছু মহৎ ও প্রিত্তার এই সর্ক্র্যাপী চৈতভের ভাব, ঐ শব্দের ভিতর রহিষাছে। কোন নির্কোধ ঐ শব্দ ব্যবহারে আপত্তি করিলেই কি উহা ত্যজিতে বল ? আর একজন আদিবে, বলিবে আমার এই শক্টী লও, অপরে আবার তাহার শব্দ লইতে বলিবে। এরপ হইলে 🗷 এইরূপ যত্ত শব্দের কিছু অন্ত থাকিবে না। তাই বলি, সেই প্রাচীন শব্দটীই ব্যবহার কর, কিন্তু উহাকে আন্নো ভালভাবে ব্যবহার কর, মন হইতে কুদংকার তাড়া->লা ভাষাতৃ, ১৩০৮।] छ ध्यापन । 299 ইয়া দাও, আর সম্পূর্ণভাবে উপলব্ধি কর, যে, এই মহৎ প্রাচীন শকের অর্থ কি? যদি ভোমরা 'ভাবযোগবিধান' (Law of Association of ideas) কাহাকে বলে বুঝ, তবে জালিবে এই শব্দগুলির সহিত নানা প্রকার মহৎ মহৎ শক্তির ভাব যুক্ত আছে, লক্ষ্ণ লক্ষ্ণ মানব উহা ব্যবহার করিয়াছে। লক্ষ্ণ লক্ষ্ণ লোক ঐ শক্তুলির পূজা করিয়াছে, আর উহাদের সহিত যাহা কিছু সর্কোচ্ছ ও স্করতম, যাহা কিছু যুক্তিযুক্ত, যাহা কিছু প্রোম্পাদ, মহয়স্বভাবে যাহা কিছু মহৎ ও স্কর, তাহাই যোগ করিয়াছে। অভ্এব এই শক্তুলি ঐ সমস্ত ভাবের উদ্দাপক কারণস্বরূপ হয়, স্তরাং উহাদিগকে তাগে করিতে পারা যায় না। আমি যদি আপনাদিগকে শুধু এই বলিয়া বুঝাইতে চেন্টা করিতাম যে, ঈরর জগং স্ক্রিয়াছেন, তাহা হইলে উহা কোনরূপ অর্থ প্রকাশ করিত না। তথাপি এই সমুদার নিচাবাদির পর আমরা সেই প্রাচীন পুরুষের নিকটই পৌছিব।

ভবে আমরা একণে কি দেখিলামণ যে জাগতিক শক্তির এই সকল বিকাশ- তাহাদিগকে যে নামই দাও নাকেন, ভূত বা চিম্বাশক্তি বা শক্তি বা চৈত্ত তাহারা দেই বিশ্ববাণী চৈত্ত্তের প্রকাশ, অথবা আমরা ভবিষ্যতে তাঁহাকে দেরপ বশিব—পরম প্রভু। যাহা কিছু দেখ, শোন, বা অমুভব কর, সবই তাঁহার স্ষ্টি, ঠিক বলিতে গেলে--তাঁহারই পরিণাম—আরো ঠিক বলিতে গেলে বলিতে হয়, গুভু শ্বয়ং। তিনিই পুর্যা ও তারকারণে উজ্জ্লভাবে প্রকাশ পাইভেছেন, তিনিই জন্নী ধরনী, তিনিই স্বঃং সমূদ্র। তিনিই মুহ বৃষ্টিধারারূপে পড়িতেছেন, ভিনিই মুহ বাতায ষাহা আমরা খাস লই, তিনিই শরীরে শক্তিরূপে কার্য্য করিছেছেন। তিনিই বক্তা, তিনিই বক্তা, তিনিই এই শ্রোত্মগুলী। তিনিই সেই বেদী, যাহার উপর আমি দাঁড়াইরা; তিনিই ঐ আলোক, যাহা শারা আমি তোমাদের মুধ দেখিতেছি। এ সবই তিনি। তিনি জগতের উপাদান ও নিমিত্ত কারণ, আর তিনিই ক্রমসম্ভূচিত হইয়া অণু হন, আবার ক্রমবিকশিত হইয়া ঈশ্বর হন। তিনিই অবনত হইয়া অতি নিম্ভম প্রমাণু হন আবার ধীরে ধীরে নিজ্মরূপ প্রকাশিয়া নিজেতে যুক্ত হন। ইহাই জগতের রহস্ত। ভূমিই পুরুষ, ভূমিই ন্ত্রী, তুমিই যৌবনগর্মের ভ্রমণশীল যুবা, তুমিই বুদ্ধ-দণ্ড ধরিয়া ভ্রমিতেছ, তুমিই সকল বস্তুতে—হে প্রভু, ডুমিই সকল। জগতের এই একমাত্র ব্যাথাা, বাহাতে মানবের যুক্তি তৃপ্ত। এক কথায় বলিতে গেলে, আমরা 296 উঘোধন ৷ िण्य- अग मश्चा: তাঁহা হইতেই জনাই, তাঁহাতে বাঢ়িয়া থাকি এবং তাঁহাতেই ফিরিয়া যাই:

জগ্ৰ ৷

কুদ্র ব্রহ্মাণ্ড।

মনুষামন অভাবতই বাহিরে যাইতে চায়। মন খেন শরীরের বাহিবে ই শ্রিষ প্রণালী দিয়া উঁকি মারিতে চার। চক্ত অবশুই দেখিবে, কর্ণ অবশুই শুনিবে, ই জিমুগণ অবশুই বহিজ্পিং প্রত্যক্ষ করিবে। তাই অভাবতঃই প্রকৃতির भोक्या ७ महत्व मालुरमत पृष्टि धांधरमङ चार्व्यन करता मानवाचा धांधरमङ বহির্জ্জগতের সম্বন্ধে জিল্লাসিয়ছিল। আকাশ, নক্ষত্রপুঞ্জ, অন্তবীক্ষত্র অন্তান্ত পদার্থনিচয়, পৃথিবী, নদী, পরতে, সমুদ্র প্রভৃতি সম্বন্ধ প্রশ্ন জিজাদিত হইয়া-ছিল, আর আমরা স্পল প্রাচান ধর্মেই ইহার কিছু কিছু পরিচয় দেখিতে পাই, প্রথমে মানব মন সাক্ষকারে হাতড়াইতে হাতড়াইতে, বাহিরের ঘাহা কিছ ভাহাই, ধরিতে চেটা করিয়াছিল। নদীর একজন দেবতা, আকাশের অধিষ্ঠাতী আর একজন, মেঘের অধিঠাতী একজন অব্যের বৃষ্টির অধিষ্ঠাতী আর এক জন। যাহাদিগকেই প্রকৃতিব শক্তি বলিয়া জানি, তাহারাই সচেতন পদার্থ-ন্ধপে পরিণত হইল। কিন্তু এই প্রশ্নের মতই গভীর হইতে গভীরতর অনু-সন্ধান হইতে লাগিল, ততই এই বাহু দেবতাগণে মুখ্যের আরু তুপ্তি হইল ন।। তথ্য মহুষ্যের সমুদ্য শক্তি অন্তবে প্রথাহিত হইল – মানুষের নিজ আত্মা স্থানে প্রশ্ন জিজাসিত হইতে লাগিল। বহিজ্জগং হইতে ঐ প্রশ্ন গিয়া অন্ত-র্জগতে পহছিল। ৰহিজ্জগৎ বিশ্লেষণ করিয়া শেষে মাগ্রম অন্তর্জ্জগৎ বিশ্লেষণ করিতে আরম্ভ করে। এই ভিতরের মানুষ স্থানে প্রশ্ন, ইহা আদে--উচ্চতর সভাতা হইতে, প্রকৃতি স্বরে গভারতর অস্তদ্তি হইতে, উচ্চতর ভূমিতে উন্নতি হটলে।

এই ভিতরের মানুষ্ট অন্তকার বৈকালের আলোচ্য বিষয়। এই অন্ত-মনিবসম্বন্ধে প্রশ্ন মানুষ্টের যতদ্র প্রিয় ও তাহার হৃদয়ের যত সল্লিহত আর কিছুই ওত নহে। কত লক্ষ বার, কত কত দেশে এই প্রশ্ন জিজাসিত ইয়াছে। কি অরণ্যবাসী সন্ন্যাসী, কি রাজা, কি দার্জ কি ধনী, কি সাধু >লা আষ্ট্, ১৯০৮।

कि भाभी, প্রত্যেক নর, প্রত্যেক নারী, সকলেই কোন না কোন সময়ে এই প্রশ্ন জিজ্ঞানিয়াছেন--এই ক্ষণভকুর মানবজীবনে কি নিত্য কিছু নাই ? এই শরার মরিলেও এমন কিছু কি নাই, যাহা মরে না ? ষথনি এই শরীর ধূলিমাত্রে পরিণত হয়, তখন কি কিছু জীবিত থাকে না ? অগি শরীরকে ভন্মশাং কবিলে তাহার পর আর কিছু কি অবশিষ্ট থাকে না ? যদি থাকে, তবে তাহার নিয়তি কি

 উহা যায় কোণায

 কোথা হইতেই বা উহা আসিয়াছিল ? এই প্রশ্ন গুলি পুনঃ পুনঃ জিজাসিত হইয়াছে, আর যতদিন এই সৃষ্টি থাকিবে, তভদিন মানব-মন্ত্রিফ চিন্তিবে, তভদিনই এই প্রশ্ন জিজ্ঞাসিতে হইবে। ইহার উত্তর যে আদে নাই, তাহা নহে, প্রতিবারই উত্তর আদিয়া-ছিল; আরু যত সময় যাইবে, ভত্ত উহা উত্রোত্তর অধিক বল নংগ্রহ করিবে। সহস্র বর্ষ পরের ঐ প্রশ্নের উত্তর একেবারেই প্রদত্ত হইয়াছিল; আর পরবর্তী সময়ে ঐ উত্তরই পুনঃ কথিত, পুনঃ বিশদাকৃত, হইয়া আমাদের বৃদ্ধির নিকট উজ্জলতররূপে প্রকাশিত হইয়াছে। অতএব আমাদের কেবল ঐ উত্তরের পুনঃ-কথন করিতে হইবে মাত্র। আমরা এই সর্ব্যাসী সমস্থাগুলি সম্বন্ধে নৃতন আলোক প্রক্ষেপ করিব,এরপ ভান করি না। আমাদের আবাজ্ঞা এই যে, সেই প্রাচীন মহানু সত্য বত্তমান কালের ভাষায় প্রকাশিব, প্রাচীন দিগের চিস্তা আধুনিক্দিগেব ভাষায় প্রকাশিব, দার্শনিক্দিগের চিন্তা লৌকিক ভাষায় विनय-(नवजाति किया भागति जायात्र विनय, जिथरत के किया कर्यन भागत-ভাষায় প্রকাশিব, যাহাতে লোকে উহা বুঝিতে পারে, কারণ আমরা পরে দেখিব, বে ঐশী সভা হইতে ঐ সকল ভাব প্রস্তু, তাহা মানবেও বর্তমান-যে সন্তা ঐ চিম্বাণ্ডশি স্থিয়াছিলেন, তিনিই মানুষে প্রকাশিত হইয়া নিজে छेश वृत्थिदवन ।

আমি তোমাদিগকে দেখিতেছি। এই দৃষ্টির জন্ম কতকগুলি জিনিবের আবশ্রক প প্রথমতঃ চক্ষু—চক্ষু, অবশ্রই থাকাই চাই। আমি সর্ববিকার পূর্ণ হইতে পারি, কিন্তু যদি আমার চক্ষু না থাকে তবে আমি তোমাদিগকে দেখিতে পাইব না। অত এব, প্রথমতঃ আমার অবশ্রই চক্ষু থাকা আবশ্রক। দ্বিতীয়তঃ, চক্ষুর পশ্চাতে আর কিছু যাহা বাস্তবিক দর্শনেক্রিয়, তাহা যদি না থাকে, তবে পর্যাপ্ত হইবে না। চক্ষু বাস্তবিক ইন্দ্রিয় নহে। উহা দর্শনের ষরমাত্র; ইন্দ্রিয় হইতেছে—মন্তিক্ত স্থার্থকেক্র বাস্তবিক তৎপশ্চাতে— যদি ঐ কেন্দ্রনী নই হয়, ওবে ২৮০ উদ্বোধন। [৩য়্—ন্ম সংখা;

কোথায় এইরূপ তির তির বর্ণ শুনা যায় ? সংযুক্ত বর্ণে বেমন—শ্ব+ই = ঐ, অ+উ=ও। সংযুক্ত বর্ণে (ঐও তে), বিসুত্র উচ্চারণ হেতুই গ্রহণ হইবে না *।

ক্র ও এই সংযুক্ত বর্ণে যে অবর্ণ আছে, তাথা বিস্তৃত্ব প্রায় বিশিষ্ট অন্তর্ত্ব প্রায় বিশিষ্ট অন্তর্ত্ব প্রায় করিব। আর ইহাতে যে ই বর্ণ এবং উ বর্ণ আছে তাহাও বিস্তৃত্বর প্রায় বিশিষ্ট বলিয়া অন্যান্ত বির্তৃত্বর প্রায় বিশিষ্ট বলিয়া অন্যান্ত বির্তৃত্বর প্রায় বিশিষ্ট 'ই' 'উ'বর্ণ হরতে পুরক্ হইবে। অতএব এই অনুল যখন বিরুত্ত এবং বিস্তৃত্বর ভেদে প্রয়ুই ভিন্ন ভিন্নই হইল, তথন 'ঐ''ঔ' প্রায়ুতি সংযুক্ত বর্ণে আ ই প্রভৃতি ভিন্ন ভিন্ন বর্ণের প্রহণ কিরুপে হইবে। অতএব বর্ণের একদেশ বর্ণ গ্রহণে কদালি গৃহীত্ত হিত্তি পাবে না।

ভাষ্যমূল।— অপব। প্নৰ্গ্থাতে। অগ্ৰহণং চেনুভ্বিধি লাদেশবিনানেব্ ঋকারগ্রহণম্ *। অগ্ৰহণং চেনুভ্বিনাদেশ বিনামেযু ঋকার গ্রহণং কল্বাম্। তত্মামুভ্বিহলঃ। ঋকারে চেতি বক্তবাম্। ইহাপি যথা ভাৎ আন্ধলুঃ আনুধ্বিতি।

বঙ্গালুবাদ।—জ্থব। পুনঃ নাহ্য, জন্মবের গ্রহণ নাই করা হাউক। বদি জ্বস্বী গ্রহণে, জ্বমবের গ্রহণ না বর। যায়; তবে হুট্ বিধানে লকার আদেশে গ্রহং বিনামে (পত্ত বিধানে) ঋঞারের গ্রহণ কইবা।*

ষ্বরবী গ্রহণে মবরবের গ্রহণ না করিলে, নুট্ বিধানে, ঋ স্থানে ৯ আদেশে, ন স্থানে এক বিধানে, ঋকারের গ্রহণ করা কত্র্য। অভ্যথা "ভ্যারুড্ বিহলঃ" ৭। ৪। ৭১। ছেংটী ব্যঞ্চনবর্ধ বিশিক্তী ধাতুর দাঘীকত আকারের পর তুট্ আশম হয়; দেমন — 'অর্দ' ধাতুর রেফ এবং দ কার মিলিয়া, ছই ব্যঞ্জনবর্ণ বিশিষ্ট ধাতু হওয়াতে এবং লিটের ণলে, অন কারের রুদ্ধি আকার হইলে হট্ আলম হইয়া "আনর্দ" পদ সিদ্ধ হইয়া থাকে) এই স্থকে, ঋ বর্ণ গ্রহণ করা কর্ত্তবা। অর্থাৎ ভুত্রান্তে "ধকারে চ" (ঋশার পরে থাকিলেও, পূর্ব্বোক্ত ভুত্রাতুসারে ভুট্ আগম হয়) এইরূপ বাত্তিক করা কর্তব্য। যেন ঋধু এই বাতুব উত্তর পুট্ আগম করিয়া 'আনুধতুঃ আনুধুং' এই স্থাও প্রয়োগ নিদ্ধ হইতে পারে। নতুবা 'ঋধু' গাতুর 'ঋ' কারে, তদব্যব স্থরপ 'রকারের গ্রহণ না করিলে, ঋধু ধাতুতে হই ব্যঞ্নবর্থ দিদ্ধ হুইবে না, স্তানুসারে মুট্ আগমও সভব হুইবে না। সূট্ আগম কালে 🖷 কারের গ্রহণ জন্ত বাতিক করিলে, সুট্ আগম সিদ্ধ ১লা আবাঢ়, ১৩০৮।] **छ**८५१४न । [8]

"ঋ গারের 'এইরূপ একটা রুহ্ং অবয়ব বিশিষ্ট বার্ত্তিক প্রয়োগ নিবন্ধন গৌরব ইটবে।

ভাষামূল।—ষত্ত পুনগৃহ্যন্তে দিহল ইত্যেব তত্ত সিদ্ধন্। ষত্তাপি ন গৃহত্তে ওসাপোষ ন দোষঃ। দিহল্গাহণং ন করিষাতে। তত্মানুড্ ভণতীত্যেব। খদি ন ক্রিয়তে। আট হুঃ, আটুরিতানোপি প্রাপ্তোহি। অক্ষোতিগ্রহণং নির্মার্থং ভবিষ্টি। অক্ষোত্রেরক বর্ণোপ্যত নাত্ত্যাবর্ণোপ্যতেতি।

বঙ্গানুবাদ।— যাহার মতে অব্যবীর গ্রহণে অবংবের গ্রহণ হয় না, ভাহার মতেও এই ফলে দেয়ে হইবে না। কেননা, 'ভন্মানুভ্বিহলঃ' প্রে 'বিহল' গ্রহণ করা হইবে না। কেনল মাত্র 'ভন্মানুভ্বিহলঃ' প্রে পর তুট্ অংগন হয়। 'কাল মাত্র 'ভন্মানুভ' (দীর্ষক্ত জাকাবের পর তুট্ অংগন হয়। 'ভানুবভুঃ' পদিজ হইবে। যদি প্রে বিশাস হাত্র জাকা হয়; ভবে 'আটভুঃ' 'আটুঃ' এই সমস্ত একরাজন বর্গ বিশিষ্ট ধাতুর উভর ভাট্ আগম হইবে। যথা সঞ্চ প্রেংগ সিদ্ধি না হইবা অসক্ত আনউভুঃ প্রভৃতি প্রেমাগ হইতে থাকিবে। "আশোভেন্ড" ৭।৪।৭২ (অভাসে (১) সংজ্ঞক দীর্ষ আকারের পর তুট্ আগম হয়; যথা আনকে।)। যদি স্প্তিই কুট্ আগম প্রাপ্তিইত ভাহা হইলে এই প্রে জনাব্রক হইবে। এই প্র ব্রে ছইয়া এই নিয়ম করিবে বে, 'অন্ত' ধাতুর অবণ উপধা বিশিষ্টের ই তুট্ আগম হইবে, অন্ত অবণ উপধা বিশিষ্ট ধাতুর কুট্ আগম হইবে না।

ভাষ্যমূল।— রুপো রোলঃ, ঋকারল চেতি বক্তাম্। লাদেশে
চ ঋকার গ্রহণং কর্ত্রাম্। ইহাপি যথা স্থাংক্ ৯প্রঃ ক্ ৯প্রানিতি।
যক্ত পুনগৃহান্তে র ইত্যেব তক্ত সিদ্ধা যক্ষাপি ন গৃহাতে ভক্তাপ্যে
ম ন পোষঃ। ঋকারোকাত্র নিন্দ্রিটে। ক্থম্য অবিভিন্দিকা
নির্দ্দেশঃ রূপ উ: রঃলঃ রুপোরোল ইভি। অথবা উভয়তঃ ক্ষেটিমানং
নির্দ্ধিতাতে। রুক্তেল্ফাতি উবভীতি। বিনামে ক্কার গ্রহণং কত্র ম্।

⁽১) কোনও শব্দের দিছ চইলে ভাহার পূর্ব শব্দের অভাান সংজ্ঞার বেমন ভূ ধাতুর লিটেতে গল্ আদি প্রভাষ আদেশ হইলে, তৎ পূর্ববিদ্ধ থাতু দ্বিছ হইয়া ভূব্ ভূব্ এই রূপ আদেশ হয়। এই দুইবার উচ্চারিত ভূব্ এর পূর্ব শব্দ অর্থাৎ ভূব্ এর অভাান সংজ্ঞা হয়। অশ্ ধাতুরও এই স্থলে লিটের গলে দ্বিছ হইয়া অশ্ অশ্ এইরূপ আদেশ হইয়াছে। ইহার পূর্বে অশ্ ভাবের অভাান সংজ্ঞা হইয়াছে।

র্ষাভাগি নোণঃ সমান পদে ঋকারাচেতি বক্তপুম্। ইহাপি যথা ভাগে। মাতৃণাং পিতৃণামিতি। যভ পুনগৃহত্তে র্ষাভামিত্যের তভ ধিত্বম্। ন দিদ্ধাতি। যন্তজেকাং পরং ভকেঃ তেন ব্যবহিত্থার প্রাপ্রোতি। মাতৃদেবমঃ। অট্বাবারইত্যেব সিদ্ধম্।

বঙ্গানুবাদ। 'লা দেশে' (র স্থানে ল আদেশে), ঋকার গ্রহণ করা কর্ত্তর্য 'রুপোরোলঃ' এই স্ত্তে, ঋকারের স্থানে ল কার আদেশ হইবেও স্ত্তে, পূনঃ ঋ কারের গ্রহণ করা কর্ত্তর্য। যেহেতু 'রুপোরোলঃ' এই স্ত্তে ঋকারস্ক্রিক্ত রেক্ অংশের স্থানেই ধলি ল আদেশ হয়; তাহা হইলে, 'সমগ্র ঋ কার' এইরূপা স্বর্থ স্থানে, 'সমগ্র ৯ কার', এইরূপা স্বর্থ আদেশ হওয়ার জন্ত ; "ঋকার স্থানে ৯ কার হয়" এইরূপা ও স্ত্তের অভিরিক্ত বার্ত্তিক করিতে হুইবে। যাহাতে রূপা ধারু ইইতে ৯ কার আদেশ হইয়া 'ক্সপ্র' ক্ষপ্রবান প্রভৃতি পদ দিদ্ধি হইতে পারে। আর যাহার মতে অবয়্বী গ্রহণে আংশাব্যবেরও গ্রহণ হইয়া থাকে, তাহার মতে ঋকারের অভ্যন্তরে রকার দিদ্ধই আছে; প্রভরাং ঋকারংশ রকার স্থানে ল কার হইয়। এবং তাহার সহিত ঋকারের অভ্যান্তর কার স্থানে ল কার হইয়। এবং তাহার সহিত ঋকারের অভ্যান্তর হালেশ হইবে।

যাহার মতে অনমনী গ্রহণে অবমনের গ্রহণ হয় না, ভাগার মতেও কোনও দোষ হইবে না। যেহেছু, 'ক্পোরোলঃ' এই স্থতে ঋকারও নির্দেশ করা ইইবে। ভাগা কি ক্লপে হইবে ?

স্থাটী কোনও বিভক্তি বিশেষ ছারা নির্দেশ করা হইবে না। "রূপ উঃ রঃ লঃ" এইরূপ পদচ্চেদ করিয়া রূপোরোলঃ এইরূপ স্থা করা হইবে। তাহা হইলেই এইরূপ অর্থ ইইবে, যে রূপ ধাতুব ঋকারের স্থানে, ল কার বিশিপ্ত স্বরবর্গ সর্থাৎ ৯ কার এবং র কার স্থানে ল কার আদেশ হইবে। তাহা হইলেই ঝ খানে ৯ হইয়া 'ক্৯প্ত' ক্৯প্তবান্ প্রভৃতি প্রয়োগও দিদ্ধ হইবে।

অথবা অবেয়বী গ্রহণে অবিয়বের গ্রহণ এবং অগ্রহণ, উভয় পক্ষেই কোট বর্ণ (বাজনের) মাত্র নির্দিন্ত হইয়াছে অর্থাৎ যে স্থানে র্ শ্রবণ হইবে, সেই র্ স্থানে আদেশ হইলে, ল শ্রবণ হয় এইরূপ স্পান্ত বর্গ আদেশ হইবে। তাহা হইলে র কার শ্রবণীভূত ঋকার স্থানেও ল কার শ্রবণীভূত স্কার অবশ্রই হইবে। 'বিনামে' (ন স্থানে ণাস্ব বিধানে) ঋ কারের গ্রহণ করা কর্ত্তর। রমাভাগি নোলঃ সমানপদে' ৮।৪। > (একবাকাস্থিত রেক্ এবং সকারের পর যে ন কার, তাহার স্থানে ণকার হয়) এই স্থ্রে ঋণারাচ্চ। অথাং ঋকারের পরে ণকার হয়, এইরপ বলা কর্ত্তর। যেহে র রমাভাগি স্থ্রে—"রকার যকারের পরে ন কার থাকিলে, ণকার হয়'। এইরপই উলিখিত আছে; কিন্তু ঋকারের পরে ণকার হইবান কোনও উল্লেখ নাই যদি র কার গ্রহণে, ঋকারের অব্যবস্থিত রকারের গ্রহণ না হয়; তবে মাভুণাম্ এই স্থলেও যাহাতে ণকার হইতে পাবে, এই জন্তু স্থ্রে, ঋকারের পরে ন কারের স্থানেও ণ কার হয় এইরপ বলিতে ইটনে।

যাহার মতে অব্যুখী প্রছণে অব্যুখ্যের প্রহণ হয়, ভাষার মতে "র্ষাভ্যাং অর্থাৎ র করি ধকারের পবে ন ভানে ও হয়" এইরূপ বলিলেই, মাভূণামূ প্রভৃতি প্রয়োগ সিদ্ধি হইবে। যেহেতু মাতৃ শব্দের 'ঋ'ক্রের অভ্যন্তরে যে মকার আছে, ভাষাকে নিমিত্ত করিয়া 'নাম্' শ্কের 'ন'কার,'ণ' হইবে। স্থতরাং 'মাজ্গান্ প্রয়োগও সিদ্ধ হইবে।

এই রূপ করিলেও প্রয়োগ সিদ্ধি হটবে না। যেহেতু ঋকারে কেবল রকারই নাই উহার পূর্বাংশ রকার এবং শেষ্ংশ ইকার সদৃশ কোনও প্রবর্ণ। অভ্তএব ঋণারের রেফ অংশের শেষ দ্যান, অন্ত স্থারবর্ণ থাকাতে এবং রকারের পরে, সেই স্থারবর্ণ ব্যবধান থাকাতে, ঋকারের পরে, ন কার স্থানে শকাব প্রাপ্তি হইবে না।

স্থতরাং যাহারা অবয়বী গ্রহণ করিয়া থাকেন, ভাহাদের মতে ত দোষ ঘটবেই।

না, এই স্থান দোষ ঘটিবে না। 'রষাভ্যাং' স্থারে দ্বারা প্রয়োগ সিদ্ধি হইলেও, ভৎপরবর্তী অট্কুপ্ডের্ন ব্যবায়েহিপি।৮।৪।২।(অট্পোডারায়র্গত বর্ণ, ক বর্গ, প বর্গ, অঙে উপসর্গ, তুম্ অথাং অক্সার ইহারা পৃথক্ পৃথক্রপে, অথবা একত্র মিলিত হইয়া, যথা দক্তব রূপে ব্যবধান হইলেও র কারে বহারের পরস্থিত ন স্থানে ৭ হয়) এই স্ত্রাস্থারে, স্বর্ণ মাজেরই অট্পোত্যাহার মধ্যে অন্তর্ভাব হেডু, ঝকারের অভ্যন্তরম্থিত র কারের পরবর্তী 'ই'সদৃশ স্বন্ভাগও অট্পাত্যাহার মধ্যে সারিপিট হইয়াছে। স্থতরাং ঐ স্বর্ণে ব্যবধান থাকিলেও, রকারের পরস্থিত ন স্থানে ৭ হয় বলিয়া, ঝর পরেও প' হইবেই।

ভাষামূল।—ন দিছতি বলৈকদেশা কে বর্ণ গ্রহণেন গৃহাতে। যে ব্যপর্কা অপি বর্ণা ভবস্তি। যক্তাপি রেকাংপরং ভক্তে: ন তৎক্রচিদপি ব্যপর্কার্ত্তরে এবং তথি যোগ কিলাগঃ করিষ্যতে। র্ষাল্যাং নোণঃ সমানপদে। ততো ন্যাবে। ব্যবারে চ র্যাল্যাং নোণঃ ভবলীতি। ততোইট্কুপ্রভুম্ভি রিতি। ইদ্মিদানীং কিমর্থম্। নির্মার্থম্। এতৈরেবাক্ষর্স্মামান্তি কৈব্যবারে নান্যারিতি।

বদারুবাদ।--এইরপ করিলেও মাতৃণাম্ প্রভৃতি শব্দের ঋণারের পরে ণ্ড হইবেনা যদিও ঋষারের মধ্যে, র্কারাংশের শেষাংশ যে সার বর্ণ, তাহা অট্ প্রত্যাহার মধ্যে পাঠ হেতু, প্রয়োগদিদ্ধি দন্তব বলা হইয়াছে, তাহাও হইবে না। বর্ণের এক অংশ, বর্ণগ্রহণে গৃহীত হয় বটে; কিস্ত কোন্বর্গকল বর্গ গ্রহণে গৃহীত হয়। যাহার। ব্যাপারক অর্থাৎ পৃথককৃত হুইলেও বর্ণ বলিয়া প্রতীতি হয়। যেনন র কার বা অকার ইহারা অন্য বর্ণের সহিত (র কার ঋকারের সৃহিত, মিলিত হইয়া থাকিলেও, পুনরায় স্বতন্ত্র দুষ্ঠ ২ইলা থাকে। যথা 'রবি'শদে রকার 'অহ্য' শদে 'অ'কার পৃথক্ ব্যবস্ত হয়। এই স্থলে ঋ বর্ণের একাংশ যে রকার, তাহার অভত দৃষ্ট হয় विनया अकात अहरन 'ब' गृहीं हुई एन अकारन अन्ताः पर खत वर्न, তাথার অত কুলাপি দৃষ্ট হয় না বলিয়া, ক্লকার গ্রহণে তাহার গ্রহণ হইকে পারে না। মেহেতু ঋকাবন্তিত বেফের শেষাংশ কোনও বর্ণ বলিয়া প্রাক্ত প্রতীতি হয় না, বে, বর্ণাংশে উহার গ্রহণ হইবে। অর্থাৎ যেমন অকারের স্বর্থ আকরে, ইকারের স্বর্ণ স্কার বলিয়া, আকার গ্রহণ করিলেই তাহার স্বর্ণ আকারাদি অন্টাদশ প্রকার অকারেরই গ্রহণ হইয়া থাকে, এবং ८मटे जलहे कहे अलाहात मधा प्रका अकातत का का के गृशी हत. দেইরপ ঋকারের শেষাংশ কাহার দবর্ণ যে, অট্ প্রত্তাহার মধ্যে গৃহীত হইবে; এবং সেই বর্ণাংশ বার্ধান থাকিলেও রকারের প্রতিত नकात शाम न कात इहेरत? এहेन्स्य व्यामान मिकि ना इहेरन, श्राब যোগ বিভাগ করা যাইবে। যেবন "র্যাভাং নোণঃ স্মানপদে" একাংশ এইরূপ হত্ত করিয়া অট্কুপাঙ্ এম্ বাবায়েপি" এই হতের শেষাংশ 'ব্যবারোপি' এই টুকু মাত্র গ্রহণ করিয়া এইরূপ স্থ্র করিব যে, 'র্যাভ্যাং নোণঃ সমান পদে ব্যবামেপি' একণে এই স্তোর ইহাই মন্ম হইবে যে, এক পদহিত রেফ এবং 🙀 ব কারের পরে, যে কোনও বর্টু ব্যবধান থাকুক না ১লা আখাড়, ১৩০৮। উধোধন। 260

কেন, ন কারের পরে ণ কার হইবেই। স্থুভরাং ঋকারের অভ্যস্ত⊲স্থিত র কারের পরে যে কোন বর্গই ব্যবধান হউক তাহার প্রেই ন স্থানে ণ হইবে। অতএব মাতৃণাম্ শব্দের ঋকারের প্রেও ণ্কার প্রাপ্তি না হইবে না।

এইরূপ স্ত্র করিবার পবে, পর, স্ত্রের অপরাংশ যে পূর্ব ভাগে, "অট্ট্রুপ্ডি নুম্ভিঃ" গ্রহণ করিব। (ভালা হইলে অট্ প্রভ্যাহারস্থিত বর্ণ ক বর্গ, পবর্গ, আঙ্উপদর্গ ইলাদের ছারা ব্যবধান থাকিলেও র এবং ষ এর পরস্থিত ন স্থানে গ হয়। এইরূপ অর্থ হইবে)। যদি এই রূপই হয় তবে, পূর্ব করিত স্ত্রান্থ্যারেই ত রেফ ও ষ কারের পরস্থিত ন স্থানে গ সর্ব্বেই প্রাপ্ত হবৈ পূত্রে পুনরায় "অট কুপ্রাঙ নুম্" (অট্প্রভ্যাহারান্তর্গত বর্ণ,কবর্গ, পর্বর্গ, ইলারা ব্যবধান থাকিলেও গ হয়) এই স্ত্র করিবার প্রয়োজন কি পূ

এইরপ স্ত্র নিরম বিধানের জন্ম করিবার প্রয়োজন হইবে। সেই নিরম এই বে, যদি "অক্ষর সমায়ায়িক" (১) স্থিত কোন বর্ণ বাবধান থাকিলে, র ও ষ এর পরস্থিত ন স্থানে ৭ প্রাপ্তি হয়, তাহ। হইলে অট্ প্রত্যাহারাস্থর্ণত বর্ণ (স্বরবর্ণ এবং যবরহ), কবর্গ প বর্গ, আঙ্ উপসর্গ, ভুম্ (জানুস্থার) এই সকল বর্ণ হারা ব্যবধান থাকিলেই হইবে। অন্য বর্ণ হারা ব্যবধান থাকিলে হইবে না।

ভাষান্ল।— ম্ঞাপি গৃহাত্তে তত্তাপ্যেষ ন দোষ:। আচার্য্য প্রবৃত্তিত্ত পিনরত। ভবভাকারালোণ্ডমিতি। যদরং ক্তাদিষু নুন্মনশকং পচতি। নৈতদন্তি জ্ঞাপকন্। বৃদ্ধার্থমেতংস্থাং। নার্ণমনিঃ। যত্তি ত্থোতি শকং পঠতি। যজাপি নুন্মনশকং পঠতি। নুম্চোক্তং বৃদ্ধার্থমেতংস্থাং। বৃদ্ধির ও বৃদ্ধার প্রমান বৃদ্ধির বৃদ্ধির ও বৃদ্ধার অসিদ্ধার বৃদ্ধির ও বৃদ্ধার বিশ্বার বৃদ্ধার বৃদ্ধার বিশ্বার বৃদ্ধার বৃদ্ধার বৃদ্ধার বিশ্বার বৃদ্ধার বৃদ্ধার বৃদ্ধার বৃদ্ধার বৃদ্ধার বৃদ্ধার বিশ্বার বৃদ্ধার বিশ্বার বৃদ্ধার ব

⁽১) এইরপ ইতিহাস প্রসিধ্ধ আছে যে, মহর্ষি পাণিনি ব্যাকরণ শারের প্রণার জনা দীর্বদাল মহাদেবের উপাননা করিয়াছিলেন। মহাদেব উপাসনার ভূপ হইরা আনন্দে মৃত্যু করিছে লাগিলেন। নৃডোর শেষে প্রথমতঃ নরবার এবং পরে পাঁচবার ডমর-ধ্বনি করিয়াছিলেন, ভাষা হইছে এই চতুর্জনটী স্ত্র বিনির্গত হইয়াছিল। মেই স্তা এই,—অইউণ্। ১ ৷ ঝ৯কৃ। ২ ৷ এ৬৬ ৷ ৩ ৷ ঐউচ্ ৷ ৪ ৷ হয়ববট ৷ ৫ ৷ লণ্ ৷ ৬ ৷ এ৬ণনম্ ৷ বাজ এ ৷ ৮ ৷ ঘচধষ্ ৷ প জবগডদশ্ ৷ ১০ ৷ বাজ ছঠব টভব ৷ ১১ ৷ কপ্য ৷ ২ ৷ শ্বসর ১৩ ৷ হল ৷ ১৪ ৷ মহাদেবের নিকট হইতে এই আক্ষর সমূহ আগমন করার পরে, এই সকল আক্ষরের "আক্ষর সমান্ধিক" নাম হইয়াছে ৷

করিলে, অবয়বী গ্রহণ বঙ্গান্তবাদ।—— এইরূপা য!হার মতে অবয়বের গ্রহণ হয় না, তাহার মতেও দোষ হইবে না। কেন না ঋকারের পরে যে নি' কার স্থানে 'ণ' কার হয়, তাহা আচার্য্য পাণিনির প্রবৃত্তি অনুসারেই জানা ধাইবে। বেংহতু তিনি "কু ভাুদি গণ" মধ্যে, "নৃনমন" শব্দ পাঠ করিয়াছেন। ধনি ঋকারের পরে 'ন' স্থানে 'ণ' না হইত; তবে স্বভাবতঃ 'নু' শব্দের 'ঝ'কারের পরে, নমন শব্দের 'ন'কার মূর্দ্বভ্রি' হইত না। সুতরাং আচার্য্য পাণিনি 'কুভাদি গণ ''নধ্যে, 'ন'কারের স্থানে 'ণ'কার না হইবার জন্ম, যথন নুনমন শব্দ পাঠ করিয়াছেন, তথন তাথাতে ইহাই জানা যাইতেছে যে, ঝকারের পরে 'ন' কারের স্থানে 'ন'বার হয় এই জগুই শব্দের ঋকারের পরে 'নমন' শব্দের 'ন'কার মূর্দ্ধ তা 'ণ' হইছা থাকে। আমার তাহা যাহাতে না হুইতে পাবে, এই জগ্রুই ক্ষুত্রাদিগণ মধ্যে নুনমন শব্দ পাঠ করিয়াছেন। স্বত্রাং পাণিনির অভিপ্রায়ান্ত্র্যারেই ঋকারের পরস্থিত ন স্থানে । হইবে।

ইহা কথনও জ্ঞাপক হৃহতে পারে না। কেন না ক্লু াদিগণে যে, 'ন্নমন' শব্দ পাঠ করা হুইনাছে, তাহা 'ন' কার স্থানে 'ণ' কার নিষেধ করিবার জন্য নহে। তবে "ক্লু াদিগণে" পাঠ করিবার ইহাই প্রয়োজন যে, যেরপ 'ক্লু াদি গণ পঠিত শব্দের আতা স্থারব বৃদ্ধি হয়, সেইনপ 'ন্নমন' শব্দেরও আদি স্বরের বৃদ্ধি প্রাপ্ত হুইনে। তাহা হুইনে, 'ন্নমন শব্দের স্থানেও থাকারের বৃদ্ধি হুইয়া, 'নার্নমনি' শব্দ সিদ্ধ হুইবে।

যাদ ক্ষুভালি গণে নুনমন শক্ষ, ঋকারের রুজির জাভাই পাঠ হইয়া থাকে; তবে 'ত্পোতি শক ক্ষুদ্দিগিণে কেন পাঠ কবা হইয়াছে ?

যে (বৃদ্ধির) জন্ত 'নূনমন শব্দে কুজু াদিগণে পাঠ করা হইয়াছে, 'তৃপ্লোতি শব্দ দেই জনাই পাঠ করা হইয়াছে। যদি ইহাই বলা যায় যে, 'তৃপ্লোতি শব্দেরও ঋকারের বৃদ্ধি হওয়ার জন্তই কুডু াদিগণে পাঠ হইয়াছে; তাহা কথনও সঙ্গত হইতে পারে না। যেহেতু, বৃদ্ধি কার্য্য বৃদ্ধিক, ণ্ছ বিধান অন্তর্জ (১) অতএব "অভ্যক্ষ কার্য্য কর্ত্তবা হইলে, বৃহ্রিক্ষ কার্য্য,

⁽১) যে কার্য্য বছ অপেক্ষা অর্থাৎ বহু নিমিও থাকে, ভাষাকে বহিবক বলে। যে কার্য্যে অক্স নিমিও থাকে ভাষাকে অন্তব্য বলে। 'নৃনমন' শব্দে, 'ফি' প্রভায় করিয়া 'ভিদ্ধিতেখচামাদেঃ গাহা১১৭ (ফ ইং গইং প্রভায় বিশিষ্ট ভদ্ধিত পরে থাকিলে, শব্দের আদি বর বর্গে হরিছ হয়) এই স্কোক্ষারে, ঝকারের রৃদ্ধি ইয়া 'নার্নমিন' শব্দ নিম্পন্ন হইয়াছে। স্ভরাং ইহাজে দেখা ঘাইতেছে যে, 'ফি' প্রভাগ্ন প্রে থাকিলে আর দেই ত্র্যাছে। স্ভরাং ইহাজে দেখা ঘাইতেছে যে, 'ফি' প্রভাগ্ন প্রে থাকিলে আর দেই ভ্রাছে। স্ভরাং ইহাজে দেখা ঘাইতেছে যে, 'ফি' প্রভাগ্ন প্রে থাকিলে আর দেই

অসিন্ধই হইবে এই স্বভঃদিদ্ধ নিষমানুদারেই, স্কুভাদিগণে 'ন্নমন, ও তৃপ্লোতি শব্দের পাঠ, ম কার স্থানে গ কার বিধানের জন্মই জানিতে হইবে বৃদ্ধির জন্ম কদাপি ইহার উল্লেখ্য হইতে পারে না।

ভাষামূশম্।— সংধ্বা উপরিষ্টাদ্যোগ বিভাগঃ করিষ্যতে। ঋতঃ নো ণো ভবতি। ততশ্চনভা বগ্রহাং। ৠত ইত্যেব। প্লুতাবৈচ ইত্তোঁ। এতচ বক্তবাম্। যতা পুনগ্ভিতে গুরোফেরিত্যেব প্লুত্যা ততা সিদ্ধ্। যদ্যাপি ন গৃহত্তে তশাপোষ ন দোষঃ। ক্রিয়ত নাম এব। তুল্যরূপে সংযোগে বিব্যক্তন বিধিঃ *। তুল্যরূপে সংযোগে দ্বিয়ক্তনাশ্রেয়ে বিধিন মিধ্যতি। কুরুটাঃ। পিল্লী। পিত্মিতি।

ৰখাথবাণ।—পক্ষান্তরে, যেমন পূর্বের ২ সূত্র দকলে, যোগবিভাগ করা হুইয়াছে সেই প্রকার "ছন্দজুদ্বপ্রহা২" ৮। ॥। ২৬।

(ঋকারান্ত অবগ্রহের (১) পবেন্তিত ন কার হানে ৭ কার হয়, বেদের প্রয়োগে)
এই স্থানের প্রাণি বিভাগ করা যাইবে। সেই যোগ বিভাগ এইরূপ করা হইবে
বে স্থানের একাংশ 'ঋতঃ' (ঋকাবের পরছিত ন কার হানে ৭ কার হইযে)
নোণো ভবতি। তদনন্তর স্ত্রের অপরাংশ এইরূপ করা হইবে যে 'ছলদাবগ্রহাং
(বেদে, অবগ্রহের পরস্তিত ন কার হানে ৭ কার হয়) এক্ষণে দম্পূর্ণ ক্র মিলিত
হইরা এইরূপ অর্থ হইবে যে, বেদের অবগ্রহের পরস্তিত নকার হানে যেখানে
পকার হইবে, সেইখানে ঋকারের পরস্তিত নকাবেরই হইবে। আর ঐ স্থাংশ
'ঋতঃ', (যাহা এক্ষণে মৃদ্দ্রে হইতে পৃথক করা হইরাছে,) সেই স্থানের অক্রেডি
আসিয়া রমাভ্যাং প্রে সংযুক্ত হওয়াতে এইরূপ অর্থ হউবে যে, রকার যকার
এবং ঋকারের পরস্তিত নকার হানে শকার হয়) একই বাক্যে থাকিলে।
স্তরাং ঋকাবের এক অংশ ক্রিপ্রাক্তির মধ্যে গ্রহণ না করিলেও কোনও
স্থানই দোষ ঘটিবে না বিশ্ব প্রাণ্টির মধ্যে গ্রহণ গ্রহণ করিবার
কোনও আবশ্রক নাই।

^{&#}x27; ঞি' ১ প্রত্যয় ভদ্ধিত নিশান্ন ভইলে, কৃত্যু দিনণ পঠি নান শদ্দের ঝকাবের হৃদ্ধি হৃত্য।
বাকে। অতএব ইচণতে ঞি প্রত্যা ক্রিক্সিক্ত হণ্ডরাতে এই বৃদ্ধি কার্যা
বাহরত হইয়াছে। আন 'নুমমন নিশ্রেলার অব্যবহিত পরেই ন কার থাকাতে
অন্তরত্ব এবং নকল বর্ণের শেষে, ' কি' প্রত্যয় হণ্ডয়াতে শদ্দের নর্কাপ্রে বর্ণে ঝকারের হৃদ্ধি
হণ্ডয়াতে, ঝকাবের বৃদ্ধি অনেকবর্ণ ব্যবধান হেতু, বহিরত্ব হইল।

⁽১) সংযুক্ত বা নিকটস্থ বৰ্ণ সমূহের, পৃথক্ পৃথক্ ভ;বে অবস্থানকে অবগ্ৰহ বলে। থেমন—নিহে'ডো সং দি বর হি যি।



ক্রীম---কথিত।

চতুর্থ পরিচ্ছেদ

্ গুহস্তাশ্রমণ্র্য-পদক্ষে

শ্রীবামকৃষ্ণ। (মহিমার প্রতি) তোমৰা সংসারী ওও বাখ। সংসারও রাধ, ধর্মাও রাধ।

মহিমা। এ কি আর থাকে ?

শ্রীবামক্রক্ষ। আমি পঞ্চবটার কংছে গলাব ধাবে টাকা মাটী, মাটীই টাকা ও টাকাই মাটী, এই বিচার কর্তে কবতে ধখন টাকা গলাব ললে কেঁলে দিলুম, তথন এবটু ভব হলো। ভাবলুম, আমি কি লক্ষীছাড়া হলুম! মা লক্ষী যদি খাঁটে বন্ধ করে দেন, তা হলে কি হবে! তখন হাজ্বার মত পাটোলাবী করলুম। বন্ম মা। তৃমি যেন ভদয়ে পেকো। একজন তপজা করাতে ভগবতী সন্তুম হার বলেন, তুমি বর কওে। দে বলে, মা। যদি বর দেবে তবে এই কর, যেন আমি নাতিব সঙ্গে দোনার থালে ভাত ধাই। এক ববেতে নাতি, ঐথহা, সোনাব থাল সব হল, (সকলের হাজ)।

[দং দারী ও ভ্যাগ , বদ্ধ ও মুক]

"মন থেকে কামিনী-কাঞ্চন ত্যাগ হলে ঈগরে মন যায়, তাঁতে মন গিয়ে শিপ্ত হয়। যিনিই বন্ধ, তিনিই মুক্ত হতে পাবেন।

ঈশর পেকে নিম্থ হলেই বদ্ধ ;— নিক্তির নীচের কাটা থেকে তফাৎ হয় কথন ? যথন নিক্তির বাটীতে কামিনী-কাঞ্চনের ভার পড়ে।

"ছেলে ভূমিষ্ট হয়ে কেন কাদে ? 'গভে ছিলাম, যোগে ছিলাম।' ভূমিষ্ট হয়ে এই ব'লে কাদে— কাহা এ কাহা এ কাহা এ— এ কোথায় এল্ম, ঈশবের

"তোমাদের পক্ষে মনে ত্যাগ---সংগার অনাসক্ত ইয়ে কব।

[সংগার ভ্যাগ]

মহিমা। তাঁর উপর মন গেলে আর কি সংসার থাকে?

শ্রীরামকৃষ্ণ। সে কি ? সংসারে থাকবে না ত কোথার বাবে ? আমি দেখছি, যেখানে থাকি, রামের অধোধার আছি। এই জগৎ-সংসার রামের অধোধার।

^{*} এবম ভাগ ছাপা চইতেছে।

"রামচন্দ্র গুকর কাছে জান লাভ করিবার পর বলেন, আমি সংসার ত্যাগ করবো। দশবথ তাঁকে বুঝবার জল বশিষ্ঠকে পাঠালেন। বশিষ্ঠ দেখলেন, রামের ভার বৈরাগ্য। তথন বলেন, 'রাম! তুমি আগেশ্আমার সঙ্গে বিচার কর, তাবপর সংসার তাগি কর। আছো, জিজ্জামা করি, সংসার কি ঈশ্বর ছাড়া, তা যদি হল, তা হলে তুমি তাগি কর।' রাম দেখলেন যে, ঈশ্বরই জীব জগং সব হয়েছেন। তাঁর সভাতে সনস্ত সভাবান। তথন রামচন্দ্র চুপকরে রশ্বলেন। "সংসারে কাম ক্রোধ এই সবের সঙ্গে যুদ্ধ করতে হয়, নানা বাসনার সঙ্গে যুদ্ধ করতে হয়, আমান্তির সঙ্গে যুদ্ধ করতে হয়, নানা থেকে হলেই স্থবিধা। গৃহে থেকে যুদ্ধই ভাল, খাওয়: মেলে, ধন্মপান্নী আনক সাহায় করে। কলিতে অনুগত প্রাণ - সাত জায়গায় আয়ের জ্ঞা ঘুরার চেয়ে এক জায়গাই ভাল। এই গৃহে যেন কেলার ভিতর থেকে সুদ্ধ করা।

"আর সংসারে থাকো, ঝড়ের এটোপাতা হবে। ঝড়ের এটোপাতাকে ক্যান্ত খ্রের ভিতর নিয়ে যায়,ক্যান্ত আঁতাকুড়ে। হাওয়া যে দিকে যায়,পাতাও সেই দিকে যায়। ক্থান্ত ভাল জায়গায়, ক্থান্ত মল জায়গায়! তোমাকে এখন সংসারে ফেলেছেন, ভাল; এখন সেই থানেই থাক, আবার যথন সেথান থেকে ভুলে ওর চেয়ে ভাল জায়গায় নিয়ে ফেল্বেন, ভুখন যা হুয় ছবে।

''সংসারে রেখেছেন, তা কি করবে গ সংসার ও আরু সমর্থণ (Resignation) সমস্ত তাঁকে সমর্থণ কর, তাঁকে আরু গমর্থণ কর—ভাহলে আর কোন গেল থাকবে না। ভখন দেখে, িনিই স্ব করছেন। স্বই 'বামের ইছে।'।

এক্ষন ভক্ত। 'রামের ইচ্ছা' গল্পটা কি ?

শীরামক্ষণ। কোন এক গ্রামে এবটা তাতী থাকে। বড় ধার্মিক, দকলেই তাঁকে বিখাদ করে, আর ভালবাদে। তাঁতী হাটে গিয়ে কাপড় বিক্রী করে। খিরিদ্যার দাম জিজ্ঞাসা করলে বলে, 'রামের ইচ্ছা, স্থতার দাম এক টাকা, রামের ইচ্ছা মেচলতের দাম ।০ আণা, রামের ইচ্ছা, মুনফা ১০ গানা, কাপড়ের দাম রামের ইচ্ছা ১০০। লোকের এতো বিখাদ যে, তৎক্ষণাৎ দাম কেলে দিয়ে কাপড় কিনে নিত। লোকটী ভারি ভক্ত, রাত্রিতে থাওয়া দাওয়ার পর অনেকক্ষণ চণ্ডীম গুণে বদে ঈথর চিন্তা করে, তাঁর নামগুণ কীর্তন করে। একদিন অনেক রাত হয়েছে, লোকটীর খুম হচেচ না, বদে

আছে, এক একবার ভাষাক থাছে, এমন সময় সেই পথ দিয়ে এক দল ডাকাত ডাকাতি করতে যাছে। তাদের একজন মুটের অভাব হওগতে ঐ তাঁতীকে এনে বলে, 'মায় আমানের সঙ্গে' এই বলে হাত ধবে টেনে নিয়ে চল্লা। তারপর এবজন গৃহত্বে বাড়ী গিয়ে ডাকাতি ক'বলে। কতক ওলা জিনিষ তাঁতীর মাথায় দিলে। এমন সমব প্লিম এমে গড়ল। ডাকাতেরা পালাল, কেবল তাঁতীটী মাথায় মোট ধরা প'ড়ল। সে বাত্রি তাকে ছাজতে রাখা হ'ল। ভারপর দিন ম্যাজিষ্ঠার সাহেবেব কাছে বিচার। কিন্তু গ্রামের লোকে জানতে পেরে মব এমে উপন্তিত। তারা সকলে বলে, ভজুর। এলোক বখনও ডাকাতি কব্তে পাবে না।

সাহেব তথন তাঁতীকে জিজাসা কর্লেন, 'কি গো ভূমি কি হং তে বল ?
"তাঁতী বলে, হজুব! রামের ইন্ডা, আমি রাজিতে ভাত থেল্য। তাংগব
রামের ইচ্ছা, আমি চণ্ডিমণ্ডপে বদে আছি, রামেব ইচ্ছা অনেক রাত হ'ল।
আমি, রামেব ইচ্ছা, ভগবানের চিন্তা করছিলাম আর তাব নাম গান করছিলাম
এমন সময় রামের ইচ্ছা, একদল ডাকাত সেই পথ দিয়া য চ্ছিল। রামের
ইচ্ছা, তারা আমায় ধবে টেনে নিয়ে গেল। বামের ইচ্ছা, তারা এক গৃহত্বের
বাড়ী ডাকাতি করে। রামের ইচ্ছা, আমাব মাগায় মোট দিলে। এমন সময
রামের ইচ্ছা, পুলিস এসে প'ড্লা। রামেব ইচ্ছা, আমি ধরা পড্লুম। তথন
রামের ইচ্ছা, পুলিসের লোকেরা আমায় হাজতে দিলে। অ'জ স্কালে বামের
ইচ্ছা, পুলিসের লোকেরা আমায় হাজতে দিলে। অ'জ স্কালে বামের
ইচ্ছা হুজুবের কাছে এনেছে।

অমন ধার্ম্মিক লোক দেখে সাহেব উভিটাকে ছেড়ে দেবৰ হকুম দিলেন। উভিী রাস্তায় বন্ধুদের বলে, রামেব ইচ্ছা, আমায় ছেড়ে দিয়েছে।

"সংশার করা, সর্যায় ক্রায়ত্র বামে ইচ্ছা।" তাই তাঁব উপৰ স্বংশকে দিয়ে সংসারে কাজ কর

"তানাহ'লে আরে কিইবাকবনে ?

"কেরাণী একর্দ্ধন জেলে গিছিল। জেল খাটা শেষ হলে, সে জেল থেকে বেরিয়ে এল। এখন জেল থেকে এসে, সে কেবল পেট পেই কালে নাচৰে না কি ? না সে এসে কেরাণী গিবিই কবৰে।

''সংসারী যদি জীবনুক হয়, সে মনে কর্লে অনাধাসে সংসারে থাক্তে পারে। যার জ্ঞানলাভ হয়েছে, তার এখান সেধান নাই। তার সব স্মান। যার সেধানে আছে, তার এখানেও আছে।

[কেশব সেন, সংসার 🏿 জীবশ্বক্তি]

যথন কেশব সৈনকে বাগানে প্রথম দেখলুম, বলেছিলাম; 'এরই ল্যাজ খনেছে দেখছি। সভাগুদ্ধ লোক হেদে উঠ্লো। কেশব বলে, 'তোমরা হেদোনা, এর কিছু মানে আছে, এঁকে জিজ্ঞাসা করি।' আমি বলাম, যত দিন বেঙাচির ল্যাজ না খদে ততদিন কেবল জলে থাকতে হয়, আড়ায় উঠেডাঙ্গায় বেড়াতে পারে না। যেই ল্যাজ খদে, অমনি লাফ দিয়ে ডাঙ্গায় পড়ে। তখন জলেও থাকে, আবার ডেঙ্গায়ও থাকে। তেমনি মায়্য় যতদিন অবিভার ল্যাজ না খদে, ততদিন সংসাব, জলে প'ড়ে থাকে। অবিভার ল্যাজ খদ্লে—জ্ঞান হলে, তবে মৃক্ত হযে বেড়াতে পারে, আবার ইচ্ছা হলে সংসারেও থাকতে পাবে

ভগৰৎকুপা ও সাধন।

(সামী প্রকাশানন্দ।)

যংলকু । চাপরং লাভং মহাতে নাধিকং ততঃ। যক্ষিন্ছিতোন জংগেন ৩৪কণাপি বিচালাতে॥

যে অবস্থা লাভ করিলে আর কিছু লাভ অধিক বলিয়া মনে হয় না এবং যে অবস্থার থাকিয়া জীব সংসারের গুক্তর শোক তাপে বিচলিত । না, সেই অবস্থা-লাভের জন্ম চেন্টা করাই মানব-জীবনের উদ্দেশ, ভগবান্ শ্রীকৃষ্ণ শ্রীমন্তগবগদীতায় অর্জ্জনকে পান: পান: এই উপদেশ দিয়াছেন। যিনি সংসারসম্ভের ভীষণ তরঙ্গে আপনার জীবনতরী স্থিরভাবে চালাইতে কৃতকার্য্য হইয়াছেন, যিনি শোকতাপ যন্ত্রণার বাত প্রতিবাতে বায়ুখীন স্থানে নিশ্চল দীপ-শিখার হার অবিচলিত থাকিতে সমর্থ হইয়াছেন, য়াহার নিকট সংসারের বাহ্য চাকচিক্য । 'ইক্রাদি সম্পদ স্থখ'' তুচ্ছ হইয়া গিয়াছে, যিনি আপনার ভাবে আপনি বিভোর, আত্মন্তৃপ্ত, আত্মনতি, আত্মানাম সেই জীবই গন্তব্যস্থানে পৌ-ছিয়াছেন। তুর্ল্ভ মানব জীবন ধারণ করিয়া সেই চরম অবস্থা লাভের জক্ত একাস্ত যক্ষ করাই মন্থ্য জীবনের একমাত্র উদ্দেশ্য।

শ্রীশ্রীরামক্তফদেব বলিতেন " মূখে সিদ্ধিসিদ্ধি বলিলে নেশা হইবে না, সিদ্ধি বাজার হইতে কিনিয়া আন, ভৎপরে উচা বাটিয়া পান কর, তবে নেশা হইবে;

ধর্মালগতেও ঐকপ, ধর্মোর কেবল উচ্চ উচ্চ কথা মধে বলিলে জীবনে ধর্মালাভ হব না, স্পাকুর আশ্ররণাভ করতঃ শ'স্তাত্মায়ী অভ্যাস ও সাধন ব্যতীত ধর্ম-জীবন লাভ অসম্ভব।" কেবল শাস্ত্র পড়িলে অথবা পণ্ডিত হুইলে কি ইইবে ? ছেলেবেলা আমরাত বিতীয়ভাগে পড়িয়াছি, "মিথ্যা কথা কছিও না," কিস্ত কায়মনোবাকো সভা পালন করা অতি কঠিন, হয় ত সারা জীবন কাটিয়া গেল, তথাপি কার্মনোবাক্যে সভাপালন করিতে শিশিলাম না; আমরা স্কলেই ধর্মের কণ। অনেক জানি, ধর্মের স্থদীর্ঘ বক্তৃত। দিতে পারি, কিন্তু 🗷 🖷 সীবনে মেই ধর্মোপ্দেশগুলি প্রতিফলিত কবাই কঠিন। জী শীরামকুফদেবের জীবনে এই তত্ত্বের অভূত বিকাশ আমরা শুনিতে পাই। তিনি নিরক্ষর ছিলেন, তিনি শাস্তাদি পড়েন নাই, কিন্তু জ্ঞান ভক্তি যোগের চর্ম অবস্থা তাঁহার স্বীবনে অত্তভাবে প্রকাশিত হইয়াছিল। ইহার মর্গ্যোদ্যাটন করিতে যাইলে আমরা দেখিতে পাই, কথা ও কামে আকাশ পাতাল প্রভেদ। কথা কামে পরিণত করাই, জীবের কর্ত্রা। কথা কাষে পরিণত করার নামই মাধন। সাধন বাতী 5 দিদ্ধিলাভ অসম্ভব। আমি বাটীতে বদিধা কাশীর কথা ৰলিলে ত আর আমার কাশী দেখা হইবে না। আমাকে কণ্ট করিয়া কাশীতে ঘাইতে হইবে. তবে কাশী দেখার সাকল্য হইবে। বাল্যকাল হইতে সামাক্ত বিজ্ঞানিকার জ্ঞ কত পরিশ্রম ও কত যত্ন করিতে হয়, এক এক পরীকা দিতে অর্দ্ধেক পরমায়ু ক্ষয় হইয়া যায়, সামাত অর্থোপার্জনের জ্ঞাকত চেন্তা করিতে হয়, মাথার ঘাম পায়ে ফেলিখা জীবনান্ত করিয়া তবে অর্থোপার্জ্জন করিতে হয়, জার যে বিল্ঞা সকলের শ্রেষ্ঠ, সেই পরা বিল্ঞা লাভ কি কেবল মুখের কথায় হইবে, না ছুটো শাস্ত্রের প্লোক মুখন্থ করিলেই হইবে,না ছ একবার অপ বা উপাসনা অথবা এক ধার ধর্ম্মন্দিরে যাইলেই হইবে: এই ভগবছন্তলাভের আশার পঞ্চমব্দীর শিশু এব, হুর্ভেক্ত মাতৃত্বেহমমতা দূরে বিসর্জ্ঞন দিয়া খাপদস্খুল বনমধ্যে কঠোর তপস্থা করিয়াছিলেন,এই ধর্মতন্ত্রলাভের জন্ম রাজপুত্র শাক্যসিংহ রাজ-শিংহাসন তুদ্ধ করিয়া কঠোর সাধনে ব্রতী হইরা বলিয়াছিলেন,—

> অত্রাসনে শুষাতু মে শরীরং ত্বগন্থিমাংসং প্রশায়ঞ্চ যাতু অপ্রাপ্য বোধিং বহুকল্লগুল ভাং অত্রাসনাৎ কার্মভশ্চনিষ্যতে।

আমি এই আসন করিয়া বসিলাম, আমার শরীর শুক্ক হই ধা বাউক. আফাৰ

স্ক্ অভি মাংদ চুৰীক্লত হটয়া যাউক, দেই বল বহু কলাস্করেও চল্লতি যে প্রম্ভলন লাভ না করিয়া আমার শ্রীর এই আসন হইতে টলিবে না। কি কঠোর তপ্তা! কি তীব সাধন! কি অছুত তাাগ!

মহাপুক্ষগণ জগতে আদর্শ জীবন লইয়া আবিভূতি হন। যে আদর্শ-জীবন লাভ করা জীবের চরম লক্ষা, সেই আদর্শ-জীবন আমরা মহাপুক্ষদিগের জীবনেই দেখিতে পাই। লোক শিক্ষাব জন্তই তাহারা ধরণীতলে অবতরপ করেন; যখন জীবগণ ধর্ম বিশ্বত হয়, আদর্শ-জীবনগাভে জীবের ঘোর সন্দেহ ও অনিখান আসিয়া উপস্থিত হয়, তথন প্রকৃতির অলৌকিক নিয়ম প্রভাবে, মহাত্মাগণের আবিভিবে হয়; তাঁহারা নিজ জীবনে গাধনা করিয়া ধর্মের চরম আদর্শ স্থীয় জীবনে প্রক্রিলত করিয়া জীবগণকে সন্মার্গে প্রবর্তন করেন। তাঁহা-দিগকে দেখিয়াই শাল্পে ও ধর্মে বিশ্বাস হয়, হ্লরে নিবাশের হালে অদম্য উৎসাহ ও বিশ্বাস আদিয়া উপস্থিত হয়। আমরা এইকপ মহাপুক্ষগণের জীবনবেদ পাঠ করিয়া দেখি, সকলেরই কঠোব সাধক-জীবন, বাক্যের ছটা অয়, কেবল বাক্য-সকলকে কার্যে পরিণতির একান্ত চেটা।

এক্ষণে প্রশ্ন উঠিতে পারে, নানা পথ, নানা মত; কোন পথ অমুসরণ করিব, কোন সাধন অবলম্বন করিব ? কথা এই, লক্ষাস্থল সকলেরই এক। উদ্ধান ও উদ্ধানিক একই কথা, ইহাই মহাপুরুষদিপের নির্দান্ত বাক্য। চরম ছল এক . কিন্তু সেই চরমস্থলে যাইনার বিভিন্ন পথ আছে। মেনন মই, বাল সিঁজি বিভিন্ন প্রকার উপায় দ্বারা ছালে উঠিতে পারা বায়, তক্রপ সেই পরমন্তব্ধনাভের বহু পথ আছে। ক্রচিভেদে, জীবের মান্দিক অবস্থা ভেলে ভিন্ন ভিন্ন মতের অবসারণা ইইয়াছে। আমি হয়ত নৌকাযোগে হুগলী যাইতে ভালবাসি, তুমি হয়ত রেলযোগে অথবা অন্ত কোন উপায়ে তথায় যাইতে আনন্দিত হও, ইহাই পার্থক্য। অপরকে ঘূণা না করিয়া নিম্ন পথের উপর নিষ্ঠা করিয়া চলিয়া যাইতে হয়। জ্ঞানী হও, জ্ঞানের ক্লুরধার পথে, ভক্ত হও ভক্তির কোমল পথে, ধ্যাগী হও যোগমার্গের স্থা আধ্যান্থিক পথে, এবং কর্ম্মী হও ত কর্ম্মের কঠোর পথে ভোমাকে চলিতে হুইবে।

সাধকগণকে সাধারণতঃ চাবি ভাগে বিভক্ত করা যাইতে পারে;—জ্ঞানী ভক্ত, যোগী ও কর্মী। অবৈতাচার্য্য শ্রীশৃঙ্কর বাাসস্তা "অথাতো ব্রহ্ম-জ্ঞাস্য" ব্যাথা করিতে যাইয়া বলিয়াছেন, সাধনচতুইয় সম্পন্ন ইইবার পর

তবে জীবের ব্রন্ধভিজাসার অধিকার জনায়, ব্রন্ধজ্ঞান লাভাথ চেষ্টা করিবার পূর্বে দাধন চতুষ্টয়, অর্থাং চারিটা সাধন, করিতে হইবে। প্রথম নিত্যানিত্যবস্তবিবেক— এই বিশ্ববন্ধাণ্ডে কোন্ বস্তুই বা নিত্য, আর কোন্ বস্তুই বা অনিত্য ইহাই বিচার করা প্রথম সাধন। সমুদায় দুগু অদুগু যাহা কিছু--অনিতা, নিয়ত পরিবর্তনশীল, ছদিনের জভা,মক্সভিনিতে মরীচিকার ভাষে মিথ্যা; আর একমাত ব্দ্রাভগবান্বা কার। – নিভা, অবিনাশী ও অপ্রিব্তনশীল। অনিত্য বস্তুতে আমক্তি করিলেই চুঃখ, শেংক ও যন্ত্রণা ; কারণ পরিবর্ত্তনশীল যে বস্তাতেই আসক্ত হওনা কেন, ছদিন বাদে তাহা ভোমার সমুখ হইতে সরিয়া যাইবে, জুদিন পরে তাহরে পুরিবর্তন হইবে, ফল – তোমাণ কটা ও যন্ত্রণ। দাসারে আমরা যে হাহাকার শুনিতে পাই, ইহার কাবণ ঐ অনিত। বস্তর উপর আস্ভি ; অনিত্য বস্তু হইতে মন গুড়াইয়া লইবা মেই নিভা বস্তুর উপর স্থাপন করিতে চেটা কর। খিতীয় - ইংামুত্রফলভোগবিরাগ। ইঃ জগতের যাবতীয় ভোগা বস্ততে এবং পরকালের স্বর্গানি স্থাবিলানে একাও বিহক্তিই দিনীয় সাধন। ইং জগতের স্থবিলাদের বাছ চাকচিক্যে মুগ্ধ হইয়া ছঃথের উৎস থুলিয়া দেওয়ায় ফল কি ? আর এক কথা, আমবা ধর্ম করি, ইছ জগতের ভোগ-বিলাদ ত্যাগ করি, ভবিষাতে মৃত্যুর পর স্বর্গে আবও অধিক স্থলিপার জন্ত কি ভোগভৃষণ। ইহজগতের ভোগ স্থ ছাড়িতে হইবে, এবং পর জগতের ভাবী স্থভোগলাক্ষাও অতলভণে বিষ্ণ্ডেন দিতে হইবে, তবে ব্রহ্মতত্বের আভাস ধীরে ধীরে উদ্থাসিত হইবে ৷ তৃতীয়- শমদ্মাদিষট্সম্পত্তি मम, मम, উপরতি, তিভিকা, সমাধান ও শ্রা । বৃহিত্তির মুগণকে ইল্লিয়ের বিষয় হইতে নিগ্রহ করার নাম দম। অস্তরেক্তি গগণকে ইচ্চিমের বিষয় হইতে নিগ্রহ করার নাম শম। ইন্দ্রিয়গণকে বিষয় হইতে আকর্ষণ করিয়া ধ্যেরবস্তুতে বিরাম করানর নাম উপরতি। প্রতিকারের চেষ্টা না করিয়া শীভোঞাদিংক সহস্কার নাম তিতিক্ষা। চিত্তের একাগ্রভার নাম সমাধান। গুক্ত বেলান্ত বাকো বিশাসের নাম এলা। চতুর্থ-মুমুকুতা; পুনঃ পুনঃ জন্ম ও মরণ জনিত শোকা-নলে সম্ভপ্ত হইলা জীবের এই ত্রিতাপ হইতে মুক্তি হইবার একাম্ভ ইচছাই চতুর্থ সাধন। এই চারিসাধনে পরিপক হইলে তবে ব্রহ্মতন্ত্র জিজ্ঞাসার অধিকারী হয়। জ্ঞানীর পক্ষে মেতি নেতি সাধন আমবা শাস্ত্রে দেখিতে পাই, অর্থাৎ ন ইভি, ইহা নয়; আমরা যাহা দেখিতেছি, শুনিতেছি, ইক্রিয়গ্রান্থ সমুদায় পদার্গ

ত্রহ্ম নয়; শরীর, মন, বৃদ্ধি, চিত্ত ■ অহ্সার ত্রহ্ম নয়; এইরূপ বিচার-সাধন করিতে করিতে, এইরণে স্বাসরূপের অনুসৃদ্ধান করিতে করিতে জীব দেখে ও প্রত্যক অমুভা করে যে, সমস্ত জগৎ এফাণ্ড ইন্দ্রজাল স্বপুরৎ, মকুমরী চিকাবৎ মিখ্যা, একমাত্র প্রকাত্মা বা ভগবান সভ্য এবং আপনার ষ্থার্থ স্বরূপই **(महे बन्न) ज्थानहे छानी बानत्म विस्त्रण इरेग्र। वर्णन, "गिवरक वर्णाश्रह:** চিদামন্দকপে। শিবোহহং শিবোহহং''। তথন্ট ভাষার শোকতাপ চলিয়া যায়, ভয় দুরে পলাইয়া যায়, সকল সন্দেহ মিটিয়া যায় ও সকল বন্ধন ছিল হইয়া যায়। ইহাই জ্ঞানীর চরম লক্ষা। এই প্রতাক্ষারভৃতি বছজনাসাধন-দাপেক -'বহুনাম জন্মনাং অন্তে জ্ঞানবান মাং প্রপত্তে"।

> শ্রবণং কীর্ত্তনং বিফোঃ শরণং পাদদেবনং অর্চনং বন্দনং দাঞ্চ সখ্যমা গুনিবেদনং।

ইহাট ভজের সাধন,-ভগবং গুণ লীলাপ্রবণ, ভগবং গুণকীর্ত্তন, ভগবং-পাদপল্লে একার শর্ণাগতি। তাঁহার দেবা, পূজা ও প্রণাম। দা্য ও স্থা প্রভৃতি বিভিন্ন ভাবে হাঁহার উপাসনা। আপনাকে তাঁথার পাদপল্পে একাস্তরূপে উৎদর্গী করণ।

অনক্সকর্মা ও অনক্সচিত্ত হইয়া সেই প্রাণারাধ্যের অমুদিন ধ্যানই ভজের একমাত্র কর্ত্তব্য কম্ম ও সাবনা। ভগবংপাদপলের স্থাপান ব্যতীত ভক্তের অক্ত চিম্তা নাই, অক্ত কার্য্য নাই। ভগবানের নিরস্তর ধ্যান করিতে করিতে, ভকের সমস্ত জগং ভুল হইখা যায়, প্রাণাবামের সেই চিদ্যন মৃত্তি দর্শন করিতে করিতে ভক্ত আত্মহারা হইয়া যান, এবং তিনি ভিন্ন আর বিছুই দেখিতে পান না। জানীর আমি, ও ভক্তের ভূমি বা তিনি, একই কথা।

চিত্তবৃত্তি নিরোধের নাম যোগ। যিনি চিত্তবৃত্তি সংযম করিতে সমর্থ **बहेबार्डिन, उाँ**रां बहे नाम (यानी। स्थान ७ जिल्ला नाधनाय (यार्गत अन्नमकल বাকিলেও এই সাধনার সাধক, বিশেষ যোগী আখ্যা পাইয়াছেন। আমাদের ম অনবরত চতুর্দিকে ধাবিত হইতেছে, একদণ্ডও বিরাম নাই, চিত্তের এই বিভি: মুখী পতি সংবত করিয়া এক ধোয় বস্তার দিকে সঞ্চালন করাই যোগীর কার্যা বেরপ, বিভিন্নস্থী স্থাকিরণ কেন্দ্রীভূত করিলে এক ভয়ানক ভেজ উৎপন্ন হং দেইরপ বিভিন্নমুখী মানসিববৃত্তি একমুখী করিলে অপূর্ব্য শক্তির বিকাশ হয় : মনের সেই অব্সার সহজে তত্ত্তানের বিকাশ হইতে পারে। যোগশান্তে অষ্টার খোগের কথা লিখিত হইরাছে। বম, নিয়ম, আসন, প্রাণায়াম, প্রত্যাহার

ধানে, ধারণা, সমাধি। যে অবস্থান চিত্তবৃত্তি স্থিন হইনা ধ্যায় বস্তুতে একাপ্র ভাবে অবস্থান করে, যম নিয়মাদি যোগাল দাধন দ্বারা সেই অবস্থা লাভ করাই যোগীর চরম লক্ষা। এই যোগসাধনা করিতে করিতে ধোগীর কতকগুলি বিভূতি বা দিদ্ধি আদিয়া উপস্থিত হয়। অনেক দাধক এই দিদ্ধিতে আদক্ত হইয়া চরম লক্ষা ভূলিয়া নায়। আমি ঘাইব একস্থানে, যদি পথিম ধ্য কোন ভামাদা কিন্তা গৌল্ব্যানয় স্থানে আকুইচিত্ত ধুইয়া তথায় রহিনা ঘাই, ভাহা হুইলে আমার আর গস্তব্য স্থলে পৌছান হুইল না। ভবে ও দল ঘাইফুটের ভাষে বুবিভে হুইবে। উহাতে আদক্ত না হুইনা বরং চানমন্তব্যের নিকটব্রী হুইয়াছি মনে করিয়া খুব উদ্যুদ্ধের স্থানত দাবিলার প্রত্ত হুওমা উচিত। এই যোগদাধনা বহু কইসাধ্য ও অভ্যাদ সাপেক। এই ছুদ্দি বারণভূল্য মনকে দংবত করা যে কত ধৈন্য ও কত দ্বিধাল অভ্যানের প্রবিধাল ক্ষানের প্রবিধাল মৃত্তিভোগী ভিল্ল কেইই বুঝিতে পারিবেন না।

কন্মী বলেন, তুমি এক দণ্ড কন্ম না করিয়া পাকিতে পার না, ভোমাকে কর্ম করিতেই হইবে, অতএব নিকাম ও নিংসার্থ হইয়া কর্ম করিতে অভ্যাস কর, ভাবানের প্রাত্যেথে কর্ম কর। কর্মফলে আসক্ত হইয়াই আমরা তঃথ পাই। যাহা কর্ত্রবা কর্ম, ভাহাই করিয়া, কন্মের ফলের জন্ম ভাবিও না; ভগণান্ গাভায় বলিয়াছেন, "কর্মেই ভোমার অবিকার, কন্মফলে নহে"; কর্মফলে আনাস্ক্রিই মৃত্তির কারণ। অসং কন্ম কর, অসংফল পাইবে, সংকর্ম কর, সংফল পাইবে। আমি কন্তা নাই, ইক্রিয়গণ স্ব স্থ করিতে পারিবে না।

সাবনা কালে সল্পুকর একান্ত আবঞ্চক। বাল্যকালে ক, ৰ শিক্ষা ইইতে শিক্ষকের প্রয়োজন হয়। আর এই গুরুতর বিষয়ে, জীবন মরণের ব্যাপারে সলপুক ব্যতীত শিক্ষা একেবারে অসন্তব। "তীর্ণা স্বয়ং ভীমভবার্ণবং জনানহেতুনাপ্তানপি ভারগ্রতঃ", সলপুক এই ভীম সংসার সমৃদ্র পার হইয়াছেন, এবং অপর ব্যক্তিদিগকে অহেতু সংসার সাগরের পর পারে লইযা যান। অনেকে সল্পুকর অভাবে অসদ্যুকর হাকে পড়িয় পথন্ত ইইয়াছেন। তজ্য প্রতিতে আমরা পুন: পুন: সলপুকর শরণ লইবার ও অস্লার আপ্রয়ের বিষময় ফল বর্ণনা দেখিতে পাই। "প্রাণ্য বরান্ নিবােধত", "ত্রিজ্ঞানার্থং স গুক্মেক্বিজং ব্রক্ষনিটং", শ্রেষ্ঠ গুরুগণের আপ্রয়ের লাভ করিয়া সেই পরতক্ত স্মিৎপাশিঃ প্রান্তিমং ব্রক্ষনিটং", শ্রেষ্ঠ গুরুগণের আপ্রয়ের লাভ করিয়া সেই পরতক্ত

অবগত হও। দেই ভব কানিবার 💵 কুশ হল্তে করিয়া বেদজ্ঞ এধানিষ্ঠ क्षकत्र निक्छे यहित्।

> অবিভারামন্তরে বর্তমানাঃ স্বাং ধীরা: পণ্ডিতস্বস্তমানা:। 🔫 সম্মানাঃ পরিয়ন্তি মূঢ়া अप्यदेनव नीव्रमाना यथाकाः।

অস্পার্কাণ আপনার। অলিক্তার মুগ্র হইরা রহিয়াছে, অপচ আপনাদিগকে ধীর ও পণ্ডিত মনে করিয়া অহ্ডারে আত্মহ:রা হইতেছে। একজন অভ্জ আত্ম একজন অন্ধকে পথ দেখাছতে বাইয়া যেমন পথ না পাইয়া পথহারা হই না কেবল খুরিভে থাকে, ইংগাগও সেইরূপ ধর্মপথের পথিককে বিপথে লইয়া পিরা কেবল ঘুরাইয়া মারে। অতএব সদাুকলাভের জন্ম ভগবানের নিকট একান্তমনে প্রার্থনা করা কর্ত্ব। প্রাণের একান্ত বাাকুলভা হইলে স্চা ক ষ্পাপনা হইতেই মাসিলা উপস্থিত হন। সক্ষের যেনন আবশ্রক, শিধ্যও তেমনই সং হওয়া আবশ্রক। সংশিধ্য স্পাকুর জাশ্রের সাধনায় অচিরে সিদ্ধি শান্ত করিতে পারে। তবে দাশুকর আশ্রের অনংশিধ্যেরও দোষ দকণ সম্বরেই ভাধরাই রা বার।

সাধকের অফুরাগ 🖪 ব্যাকুলতা একান্ত প্রয়োজন। প্রঞ্জলি বলিয়াছেন, "তীব্রসম্বেগানাং আসরঃ", যাধানের হৃদরে ভীব্র আনেগ আসিয়া উপস্থিত হই-রাছে, ভাহাদের সে ভভদিন অতি নিকটাতী। কোন সমরে একবুল এক মহাপুদ্ধকে জিজাসা করেন, "প্রভু কবে আমার ভগবান্ লাভ হইবে ?"। তহ-ন্তরে তিনি কিছুই বলিলেন না, ভাহার হস্ত ধরিয়া নিকটবর্ত্তী সরোবরে লইয়া গিরা তাহাকে চুবাইয়া ধরিলেন; যথন তাহার খাসরে।ধ হইবার উপক্রম ছইল, ভধন তাহাকে ছাড়িয়া দিয়া বলিলেন, "ভগবান্লাভের জন্ত যথন এইরপ आन राश्ति इरेवांत जेनकम हहेत्व, उथनरे लोगांत जगवान् नाफ इहेत्व"। শ্রীবামকৃষ্ণদেব বলিভেন, "বিষয়ীর বিষয়ে ষেত্রপ টান, সতীর পভিতে ষেত্রপ টান, ক্লপণের ধনে ধেরূপ আদক্তি, ভগবানের প্রতি সেইরূপ অমুর্জি উপস্থিত হইলে ভগবৎলাভের বিলম্ব ছইবে ন।"। তাঁহার জীবনে আমরা অত্ত বাকুলভার কথা ভনিতে পাই। দিরাবদান হইয়া मका। आंगड क्रेटन बोमकुकारत्व या या वित्रा काँनिर्डन ७ वनि-"म। त्रामध्येतान्तक त्मचा मिनि, व्यामात्र तम्या मिनि न।।" এই কথা বলিতে বলিতে ছুটিয়া গলার ধারে যাইয়া জীব টানিয়া বাহির করিতেন। মধ্যে মধ্যে এত কাঁদিতেন যে লোকে বলিত, ব লক এবেবাবে পাগল হইয়া গিয়াছে। এইরূপ পাগল হইতে হইবে, এইরূপ থাকুল ও উন্মত্ত হইতে হইবে, তবে, ছইবে। ব্যাকুল সাধ্যকের দল না করিলে ব্যাকুলতা আন্সে না, ওজ্জেন্ত সংখুসল এবান্ত আংখ্যক ও প্রমকলানকর বলিয়া শালে পুনং পুনং উক্ত ইইয়াছে।

কেছ কেছ বংশন, সাধনার আবেশ্বকতা কি, ভগবানের কুণার কালে সমস্ত ছইবে, কিছুই করিবার আবিশ্রকতা নাই। যে ব্যক্তি ভগবানের কুপার উপর বিখাস ও নির্ভির করিখা, সংসারের ঘাত প্রতিঘাত অবাধে সহু করিয়া স্ক্রাক্রায় নিশ্চিস্তভাবে অবহান করিতে পারেন, তাঁহার পদধ্লি আমি মন্তকে গ্রহণ করি; তিনি গন্তব্যস্থানে পৌছিরাছেন, তাঁহার অবহু। আমি মন্তকে গ্রহণ করি; তিনি গন্তব্যস্থানে পৌছিরাছেন, তাঁহার অবহু। আমি মন্তকে গ্রহণ করে; তিনি গন্তব্যস্থানে পৌছিরাছেন, তাঁহার অবহু। আমি মন্তকে, তাঁহার কথা স্বতন্ত্র। কিন্তু যাহারা সংসারেব সমস্ত কার্য্যে চেষ্টা ভিত্তম প্রকাশ করে, কিছুর অভাব হইবে আশান্তিতে যাহাদের হৃদয় ভরিগ্রা যার এবং সেই অভাবপ্রণের জন্ম প্রাণণণ করে, কেবণ ধল্মের বেলা কোন চেষ্টা নাই, উত্তম নাই, ভগবানের কুপার হইবে খলিয়া ব্যাহাব।

পক্ষান্তবে গাঁহার। ভগবান্কে নিয়মাধীন করিয়া ফেলিতে চান, তাঁহারা বাতুল। অমুক মন্ত্র জ্বপ করিলে ভগবান্ সাক্ষাংকার হইবে ইত্যাদি বলিয়া তাঁহাকে গণ্ডির ভিতর আনা মন্তিজ-বিক্লতির লক্ষণ ব্যতীত আর কিছুই বোধ হয় না। যিনি মহা স্বাধীন, যিনি নিয়মাতীত, যাহা হইতে সমস্ত নিয়ম, তাঁহাকে নিয়মের অদীন করা আম্পর্কার কথা ভিন্ন আরা কৈ বলিব। রামক্রণ্ডদেব পুনঃ পুনঃ বলিভেন, "আমার ছাগল যদি আমি লেঙ্কের দিকে কাটি"। ভগবান্কে নিয়ম হারা বদ্ধ করা যাইতে পারে না। তবে সাধন ভ মন্ত্রাদি জ্বপ, পূজা ইত্যাদির প্রয়োজনীয়তা ও রহ্ম কি ও ধেরপ আমর্ক্ষ হইতে কথন আম্ম পড়িবে, তাহা কেত জানে না, তবে যে বুক্ষতলে থাকে, সে হে প্রথমে আম্ম পাইবে, এ কথা নিশ্চিত সাধন ভলন যোগ, যাগ, ভলান, কর্মা, এই সকল হারা সেই ভগবজন আমর্ক্ষের ভলায় যাওয়া। তাঁহার কুপাতেই সমস্ত হয়, একথা অভি সভা, তবে কবে তাঁহার কুপা হবে কে জানে। "পাহারাওয়ালার হাতে আধারে থাকে, সে

সেই আঁধারে নিজের মুখের দিকে ধরে, তবেই ভাহাকে সকলে দেখিতে পার"। ভগবান্ কুপা করিয়। নিজস্বকথ প্রকাশিত না করিলে, তাঁহাকে বুঝিবার সাধ্য কাহার ও নাই। শরণগেত হইয়া তাঁহার মুখপানে চাইয়া তাঁহার চরণ তলে পড়িয়া থাক। সময়ে তাঁহার কুণালাভ করিয়া কুত্রতার্থ ইইবে।

এী এরা মান্তজ্ব চরিত।

স্বামী রামক্রফানন্দ। বিষ্ বর্ষ, ৬২৪ পৃষ্ঠার পর।

জ্ঞানকাণ্ডের কিন্তু কোনও পরিবর্ত্তন হয় নাই, কারণ যথার্থ জ্ঞান নিতাই একরপ। ইউক্লিডের স্বভঃনিক্ষ প্রমাণগুলি কোটি বংসর পূর্দে যেমন সভ্য ভিল, কোটি বংসর পরেও সেইক্রপ সভ্য থাকিবে। সেই অষ্টোত্তরশত উপনিষদ্ পূর্বেও যেমন বর্ত্তমান ছিলেন. এখনও তজ্ঞপ বর্ত্তমান আছেন, এবং ভবিষাতেও তজ্ঞপ থাকিবেন। তাঁহারা সকলেই একবাকো বলিতেছেন, "ভ্যাগেনৈকে অস্তত্তমানশুঃ", মহাত্মাগণ জ্যাগ্রারাই জন্ম মৃত্যু অতিক্রম করিয়া অমবত্ব লাভ করিয়াছিলেন। তাাগই মন্থ্যের অভাবরূপ ভ্রম দ্রাকরিয়া তাঁহাকে প্রমানন্দের অধিকারী করিতে সক্ষম।

যাহা বলা হইল, তদ্বারা স্পষ্টই বুনা ষাইতেছে যে, জ্ঞানমার্গের পথিক পৃথিবারাজ্যে অতি বিরল। যাঁধার কর্মবাসনা বলনতী, তিনি উক্ত পথের পথিক হইতে চেন্তা কবিলে তাহান অন্ধিকারচর্চা করা হইবে, এবং তদ্বারা যে তাঁহাব ও সমাজের বিশেষ ক্ষতি হইবে, তাহাতে আর সন্দেহ কি ?

কর্মাকাণ্ডের মূল ধর্মা বা কর্ত্রপালন, ইহা পুর্বেল বলা হইষাছে। স্ক্তরাং যিনি কর্ত্রপালনপরাস্থ্য, তাঁহার কর্মে অধিকার নাই। কর্ত্রপারারণ মানব যে কর্ত্ররা প্রতিপালনে সক্ষম হয়েন, ভাহার কারণ, তিনি ইন্দ্রির গুলির উপর কিয়ং পরিমাণে আধিপতা লাভ কবিয়াছেন। ইন্দ্রিয়লারা নীয়মান ব্যক্তি সক্ত যথেচছাচারী। পুর্বের কোন সময়ে ঋষিক্ ও যাজিককুল ইন্দ্রিপরবশ হইয়া পজিয়াছিলেন। তাঁহালের হস্তেই যজাদির ভার ক্তস্ত ছিল। স্ক্তরাং তাঁহারা স্বীয় উলরপূর্ত্তি ও ইন্দ্রিয়-চরিতার্থতার জন্ম অভিরক্ত-মত্যমাংসময় হিংসাসাধ্য যজের স্টে প্রকি ভাহা বেদোক্ত বলিয়া জনসমাজে প্রচার করিলেন। ধর্মান্তা ও ধর্মানননী শ্রুতি আপনার ছায়াকে মানবসমাজে প্রাপন পূর্বক লজ্জিতা হইয়া যেন হিমালয়-কলরে লুক্রায়িতা হইয়া পজিলেন। এই ছায়া শ্রুতিকে অবলহনপূর্বক, শ্রুত্রক পেরণে বিগোগের নাম প্রহণ করতঃ আয়ান্তরি যাজিককুশ

পশুশোণিতে ভারতবক্ষ কলন্ধিত করিতে লাগিলেন। কর্ম-জ্ঞান-ময় বেদ দর্শত্রই অদৃশু হইয়া পড়িলেন। ছণীতি, পখাচাব, হিংমা, দ্বেষ ভাইতকে যেন বন্যপণ্ডৰ নিবাসভূমি করিয়া তুলিশ। সান্ত্ৰিক আচাৰ, দয়া, দাক্ষিণ্য, উদারতার অভাব সর্ব্যক্ত পরিশক্ষিত হইল। অভাব হইলেই তাহার পুর্ত্তি আছে, ইহা পূর্বে দেখাইয়ছি। সেই আভাবিক নিয়মানুসারে, সত্ত্বপু, দয়া, দাকিণা 🖫 উণারতার মৃত্তি পরিপ্রহপূর্বক সর্ব্বার্থসিদ্ধ বুদ্ধ নামে হিমালমপ্রাত্তে উদ্ভিত হই-শেন। জন্মভূচজরান্যাধিছঃথদোষময় জীবনের উপর বীতপ্রদ্ধ হইয়া যৌবনের প্রারভেই নিনি বাণপ্রস্থী ও ডিক্রুক হটলেন এবং পরিশেষে তঃখলেশপ্রিশ্র শান্তিগামের পথ আৰিছাবপূর্কাক ত্রিভাপতপ্ত মানবকুলকে তৎপপের পৃথিক করিয়া আচ্ডাল সকলকেই অমুভের অধিকারী করিলেন। আবিদ্ধস্তম্ব পর্যান্ত যাণ্ডীয় জীণকুল সমভাবে তাঁহার সুবিশাল হানয়রাজ্যে হান প্রাপ্ত হইরাছিল। ছাবাঞ্তির বিভীবিকাম্মী মুর্ত্তি ও বাজিককপোলকল্পিত রাক্ষ্য-তুলা জগৎকর্তা, এ চুইটিই কেবল তাঁহার দৃষ্টিতে হেম বলিয়া বোধ ছইয়াছিল। বে এগৎকর্ত্তা ত্রণীতি, পশ্বাচার, হিংসা, দ্বেষাদির পৃষ্ঠরক্ষস্বরূপ, সে কি কখন জগংক ঠার আসন গ্রহণ করিতে পারে 🕈 স্থতবাং ভিনি তাৎকালিক প্রাতি 🔞 লীখন উভয়কেই নির্দাসিত করিয়া দিয়া সংকর্মের পূজা প্রচাব করিলেন। শুভাশুভ কর্ম শুভাশুভ ফল প্রায়র করে, অভএব হে মানর, শুভকর্ম্মের অফুষ্ঠান কব, সুধে পাকিবে। অভ্লেষাক বৃদ্ধকে নান্তিক বলে, কারণ ভিনি ঈশ্বর মানেন নাই। তিনি যে ঈশ্বংকে মানেন নাই, সে ঈশ্বংক না মানাই ভাল। এরপ ঈশবকে মান্য করিয়া আন্তিক হওয়া অপেকা যে নান্তিক হওয়া সহস্তিণে ভাল, ইহা পাঠকমাত্রই স্বীকার করিবেন। বস্তুতঃ বুদ্দেব কি নাস্থিক ছিলেন গ ওঁটোর লায় ঈশ্বরপরায়ণ আস্থিক জগতে সাতিশন বিরল। কারণ কর্ম্ম কর্ত্তা ব্যতীত কুত্রাপি দৃষ্ট হয় না। তিনি শুকর্ম মানিয়াছেন, সুদ্রাং দংকর্তাকেও তংসজে মানা ছইয়াছে। স্থারট ছেয়গুণরহিত, স্প-কল্যাণ গুণ দস্ত্রিত সংকর্ত্তা। অত্তর্ত্র বন্ধদেশকে নান্ত্রিক বশিব কি প্রকারে ই

তাহার সর্কভোমুখী উদার হৃদয় সমভাবে সর্কজীবকুলের পর মঙ্গলের জন্ত সর্কদাই জগরক থাকিত। স্কতরাং অধিকারীনির্কাচন তাঁহার পক্ষে এক প্রকার অসভবপর হইয়াছিল। তিনি সাধু অসাধু, বালক রৃদ্ধ, জী পুরুষ, ধনী দহিত, পণ্ডিত মূর্থ সকলকেই নির্কাণপথের পথিক করিলেন। কিন্ত থেমন উদরামর রোগ্রন্ত প্রচুংঘ্তসিক্ত ■■ পরিপাক করিতে সক্ষম হয় না,

দেইকপ অন্ধিকাবীগণাও তংশাদ্র মহামূল্য উপদেশরাজি ভ্রেম্পম কবিতে সক্ষম হইল না। স্থান্ধ উহোর পরম পবিত্র আন্তিকধর্ম নান্তিকভায়, ও শ্রুবাদে পরিণত হইল। "সভা মিথাা, ধর্ম অধর্ম সকলই মিথাা। জগতের স্প্টিকস্তা কেহই নাই, কাহাকে ভর করিব ?" এইরপ ধারণা বশতঃ বৌদ্ধাণ বংগতের বংগতে প্ররার স্থানান্তির অভাব হইল। প্থিনী বৌদ্ধান্তর ভারে গীড়া পাইতে লাগিলেন। হুতরাং জগতের হুংখ অপনয়নের জন্ত মঙ্গলমন্ন বিধাতা শ্রীশ্রীশক্ষর নাম গ্রহণ করিয়া লোক গুরুকলে অবতীণ হইলন।

ভগবান শ্রীশ্রীশঙ্করাচার্য্য যোড়শবর্ষীর যুবকমান্ত। কিছু যেমন ওরুণ ওপনের শল্পে জগতের তমোরাশি কথনও অবস্থান করিতে সমর্থ হর না, সেইরুণ দিবা প্রতিভান্তাসি তবদনমগুল, পরম মনোহর সেই তেজপ্রী যুবকের সন্থ্য নাল্ডিকতা যথেজ্যাচার প্রভৃতি বিছুই অবস্থান করিতে পারিল না। দিবাগমে তার্কাবলির ক্যার বৌদ্ধাহরগণ ভারত গগন হইতে চির্নিনের জক্স অপ্যারিত হইল। নির্দাল জ্ঞানাল্যেকে চতুর্দিক্ উদ্থাসিত হইরা উঠিল। আধ্যভূমিতে প্ররায় শান্তির রাজ্য সংস্থাপিত হইল। ধর্মজ্ঞানজননী শ্রুতিদেবী হিমাদ্রিক্তর্বর হুইতে বহির্দ্তা হইরা সেই দিব্যকান্তি, নবীন সন্থানীর কঠে বনমাণ্য অর্পন করতঃ তাঁহাকে পতিতে বরণ করিলেন। ক্রতিস্থানা শঙ্কর অধিকারি-নির্দ্ধানন প্রায়র বন্দমার্গ প্রকৃতি করিলেন। সনাতন্ধর্মের জন্মপতাকা হিমান্তি হইতে ক্যারিকা পর্যান্ত স্কর্তেই উজ্ঞীর্মান হইল। দেবপিতৃগণ স্থাবাধ্যমন্তে প্ররায় তর্পিত হইতে লাগিলেন। চিরস্থান্তিজান-বিগ্রহ ঋষিকুল উপনিষ্য সমূহের পবিত্র ধ্বনিতে প্ররায় জাগর্ক হইয়া উঠিলেন। ভারত-মাতার আর আনন্দের সীমা রহিল না।

শ্বকার্যা সাধন পূর্ব্ধক ছাত্রিংশৎ বংসর বয়য়ের সমরে শঙ্করমৃত্তি শঙ্করদেশ শিক্ষীর পরমধানে গমন করিলেন। কাল এক দিকে বেমন স্থান্তর জ্বনর নৃত্তন বন্ধর আবির্চান করাইরা সকলের চিত্তকে পূল্ডিত ও আফুই্ট করে, অস্ত্র দিকে, আবার সেই চিত্তোংক্লকর নবীন পদার্থকে ছিল্ল ভিন্ন বিশীর্ণ করিয়া দ্বিজ্বেও হেম্ম করিয়া তুলে। ইহাই কালধর্মা। সেই কালধর্মানুসারে শঙ্করক্ষিত বেদচতুই মসার মহাবাক্ষাচ ভূইবের ছর্ম্ব করিয়া তন্মতাবলম্বী অনেক স্থাসীবেশধারী ইক্রিমপরন্ধ মানব, আপনাদের উপর এবং সমাজের উপর বহু কর্মবিয়ান ফেলিবেন। "অহং গ্রহ্মান্ত্র" বাক্ষো ভারারা সাম্ক্রিইস্ত

পরিমিত, সপ্তধাতুময়, বিষ্ঠামূত্রণাহী, জন্মমূত্যুজরাব্যাধির নিবাদভূমি, সঙ্কীণ-চুষ্টি, অঞ্বন্বর্জীবন, অতীতানাগ্ড বিষয়ে সম্পূর্ণ অনভিজ্ঞ, এবং অক্তবুদ্ধি भश्राहे सनामि, जन्य, मसर्गाभी, मसंख्य, मसाख्य, भद्रमानन्त्राम, अहा उ उन्न এরপ স্থির করিলেন। পদ্মপতে যেকপ জল লগ্ন ছইতে পারে না, ব্রহ্ম বস্তুতেও দেইরূপ পুণা পাপ, আচার জনাচার, সতা মিখা। প্রভৃতি কিছুই সংশ্লিইট ছইতে পারে না। আনিই দেই ব্রহ্ম, —স্থতরাং আমি যাহাই করি না কেন. আমাতে কোনও দাগ লাগিতে পারে না। ইহাপেকা পৈশাচিক সিদ্ধান্ত আর কি হইতে পারে ? এরূপ ধারণার বশংকীগণ যে শীঘ্রই আপনাদের 🔳 খাদেখের স্থানাশের কারণ হটবে, তালা কি আর ব্যাতে বিশ্ব হয় ? বস্তত:ই -উক্ত স্বকপোলকলিত চরর্থকারীগণ শঙ্করকথিত পরননির্মণ ধর্ম ধারণা করিতে না পারিষা, পুনরায় ভার চবর্ষে, হণীতি, হিংদা, দেষ, অনত্য প্রভৃতির রাজ্য দ্বাপন করিল। সুখ, শাল্তি ও সভ্যের অভাব সর্ব্যাই পরিক্ষিত হইতে লাগিল। সেই অভাব দুর করিবার জন্ম যে মহাপুরুষ অবতীর্ণ হইলেন, ছে পাঠক। এস এফলে স্থানরা সেই বিশিপ্তাধ্যেত্রাদপ্রচারকর্তা ভগবান শ্রীশ্রীরামসুজাচার্যোর নিমাল জীবনচরিত্র আলোচনরে জস্ত অগ্রসর হই। এ ভাবরাজ্যে অভাব বস্তু থাকিতে পারে না। স্থুখ, শান্তি, সভা, দাকিণা, ধর্ম প্রভৃতি ভাব বস্তু এবং ছঃখ, অনাজি, মিধ্যা, হিংদা, সন্ধীর্ণতা, ঈর্বা, ছেব, অধশা প্রভৃতি অভাব বস্তঃ যাহা না ধাকিলে মহুবোর কট হর, তাহাই ভাব পদার্থ। অতএব সুধ শান্তি প্রভৃতি ভাব বস্তু, এবং তৎসমুদদের অভাব, ছাথ অশাস্থি প্রভৃতি অভাব বস্তা। অভাব হইলেই ভাব আসিয়া ভাহার প্রতিবিধান করে, ইহা পূর্কে প্রমাণ করা হইয়াছে। সেই নিরমানুসারেট ভারতভূমিতে শ্রীমদ্রামামুলাচার্যোর অবিভাব হইণ।

দ্বিতীয় ভাগ। দ্বিতীয় অধ্যায়।

মান্ত্রাক্ত হাতে দার্ক ত্রিযোজন নৈর্মতে প্রীপেরেম্বুরর নামে একটি বর্জিষ্ঠ প্রাম আছে। সংস্কৃত ভাষার ইহার নাম প্রীমহাভূতপুরী। প্রাম্বাসীদের মধ্যে ব্রক্ষণের সংখ্যাই অধিক। একটি ন্মণীর ও বিশাল বিষ্ণু-মন্দির অভ্যন্তরে অবস্থিত। তন্মধ্যে কেশব পেরুমল্ নাম ধারণ পূর্বক ত্রিলোক-ভর্তা বিষ্ণু সন্মিতবদনে, সকলের প্রতি সমভাবে রুপাকটাক্ষ বিতরণ করিয়া বিরাজ করিতেছেন। মন্দির প্রাঙ্গনের অপর পার্শ্বে অক্স একটি দেবগৃহ শোভা পাইতেছে। ইহাতে যতিরাজ, ভক্তবীর, ভক্তবংসল, বেদান্তক্মলভাস্কর, ভাষ্যকার প্রীমদ্রামানুকাচার্য্য যুক্তকরে সেবকরাঞ্জের আসন এহণ ক্রিয়া

উপিনিমী আছেন। শমুবে একটা নির্মান্যনিকা, নিষ্কার্য্যা, স্থানিশাল দীর্ষিকা পবিত্রভক্ত ক্রদ্বের তার সেই বৈক্ঠপ্রতিম সমগ্র দেবারভন্টিকে স্থার অভ্যন্তরে ধারণ করিয়াছেন। ভদ্বতীত ভত্রতা নৈগর্গিক শোভা সকলেরই চিত্তকে আকর্ষণ করে। স্থানটি নানাবিধ বৃক্ষলভামন্তিত, বিহগ্রুলের মধুব কলরবে মুখরিত, মধ্যে মধ্যে প্রস্কৃতি ত কুম্মকুল কর্তৃক উদ্ভাসিত ও নৌরভিত, শান্তি-মাধুর্য্য-সৌন্দর্য্য-প্রচুর, এবং স্ক্রপুইজনাকীর্ণ। দেখিলে নোদ হয়, যেন বিশের পালন-কার্যা নিরন্তব নিযুক্ত থাকায় মধ্যে মধ্যে পরিশ্রম অন্তব করিলে স্থীয় প্রিমত্য সেববের সহিত ক্ষলাগতি তথায় বিশ্রামলাভ করিবার জন্ম আগ্রন্ম করিবা থাকেন।

রাসকৃষ্ণ-সিশন।

স্থানী বিবেক নিক্ । তাকা হইতে স্থানীজি ৮ চন্দ্রনাথ ও জীলীকামাথা দর্শন করিতে গান। কামাথায় গৌহাটী সহরে তিনটী অভি ক্ষের বক্তা করেন। গোহাটীবাসিগণ আশাতা চ মন্তোষণাত করিয়াছিলেন। শরার আরও বেলী অস্থ্র হওয়াতে স্থানীজ ক্ষেক দিবদের জন্ত শীলতে আসেন; সংবাদ পাইয়াই তথায় স্থাং শ্রীলুক্ত কটনসাহেব স্থানীজিকে যাহার পর নাই থাতির যত্ন ও অভ্যর্থনা করিয়াছিলেন; বেখানেও স্থানীজির একটী বক্তা হয়। প্রায় যাবতায় ইংরাজ ক্ষাচারী উপস্থিত ছিলেন। বক্তা গুনিধা শ্রীপুক্ত কটন সাহেব অত্যন্ত প্রীত হইয়াছিলেন। সকলকায়ই নিবট শতমুবে প্রশংসা করিতেছেন। প্রজারজক বতন সাহেবের অসাবাবণ নমতা ভদ্রতা প্রবং গুণ্গাহিতা দেখিয়া অমরা মুন হইয়াছি। স্থানীজি একানে মঠে প্রত্যাসমন করিয়াছেন; শাবার তত স্থান মন।

দিস্টার নিবেদিতা I— ইংলতে রাম ক্ল-নিশনের প্রচার-

কার্য্য খুবই হই তেছে। ইংলপ্তের বড় বড় সভার এবং সম্প্রদারে ব্রহ্মচারিণী নিবেদিতা অতি সাদরে ও সাগ্রহে আছুত হই তেছেন। তথার তিনি ভারতের সমাজচিত্র এবং গাইস্থা । পারিবারিক চিত্র আশ্রুথা ক্ষমতার সহিত অক্ষত করিয়া সকল নর নারীর সমক্ষে দেখাইতেছেন যে,জাবতেব গৌরব কভ উজ্জল, কত মহিমান্তিত, এবং কত অন্ধকরণীয়। ভারতের নিন্দুকগণ ব্রহ্মচারিণীর নিকট নির্কাক্ হইয়া যাইতেছেন। ক্রমশং সকলেই ভারতের গুণ গ্রহণ করিছেন। ক্রমশং সকলেই ভারতের গুণ গ্রহণ করিছেন। ক্রমশং নার্ত্রী বৃদ্ধি ও বলিবার-কহিবার ক্ষমতা অলোকসামান্ত। এরপ বাজি আর কিছুদিন হংলণ্ডে থাকিলে ভারতের প্রভৃত মঙ্গল সন্দেহ নাই। শুনিলাম, সিস্টার, বত্তমান ভারত সম্বন্ধে এমন একথানি স্থল্য পত্তক প্রণয়ন করিতেছেন যে, তাহার দারা ইংরাজগণ প্রচুব উপকৃত হইবেন এবং ভারতেরও যথেই গৌরব বৃদ্ধি হইবে। এরূপ উচ্চধরণের বৃহ্বি নাকি আর এ পর্যান্ত কেহু বাহির করিতে পারেন নাই। প্রার্থনা করি, ভিনি শীষ্মই ক্বজার্য হউন।

মাতুষের অতি নিজাল চক্ষুব্য থাকিতে পাবে, কিন্তু সে কিছু ই দেখিতে পাইবে ন।। অতএব, ইহা বিশেষ আবশ্যক যে, পক্ষত হল্লিয়তী যেন থাকে। আমাদের প্রত্যেক ইন্দ্রি সমন্ত্রেও তক্প। ব্রচিরের কর্ন কেবল ভিতরে শক্ত লহমা যাইবার বন্ধান; উহা মণ্ডিক্ষ কেলে বা ওয়া চাই। তবু ইহাই ার্য থি নছে: কথন কংন এক্স হয়, ভূমি ভোমাৰ প্ৰস্তুকাগারে বসিয়া একাগ্রমনে কোন পুত্তক পড়িছেছ, এমন সুমুঘড়িতে বারটা বাজিল, কিন্তু হুমি ভাগে শুনিতে পাইলে না। এখানে কিসেব অভাব ৫ মন উহাতে ছিল না। অতএব আমিব। দেখিতেছি, তৃতায়তঃ, নন অবশুই থাকা চাই। প্রথম, বাছ যন্ত ; তার পর এই বাছ যন্ত্রী চক্রিয়েব নিকট যেন ঐ বিষয়কে বহুন করিয়া লইয়া যায়: ভারপ্র আগার মন ই। জায়ে যুক্ত হওয়া চাই। বর্থন মন ঐ মস্তিদ্ধ কেলে যুক্ত না থাকে, তথন কর্ণ যত্ত্বে এবং মাজিকত্ত কেন্দ্রে বিষয়েব ছাপ পড়িকে পারে, কিন্তু আমবা উহা বুঝিতে পারিব না। মনও কেবল বাহক মাত্র, উহাকে ঐ বিধয়ের ছাপ আরো ভিতরে বহন কবিয়া বৃদ্ধিকে প্রাদান কবিতে হয় ৷ বৃদ্ধি উহার স্থপ্তে নিশ্চণ করে। তথাপি কিন্তু পর্যাপ্ত হইল না। বুদ্ধিকে আবার আরো ভিত্রে লইয়া গিয়া এই শরীরের রাজা আত্মার নিকট সমর্পণ ক্রিতে হয়। তাঁহার নিকট প্রভিলে, ত্রিন তবে আদেশ করেন, ''কর' অথবা "করিও না।" তথন যে যে ক্রমে উহা ভিতরে গিয়াছিল, সেই সেই ক্রমে আবার বহির্নন্তে আইসে,— প্রথমে বৃদ্ধিতে, তার পর মনে, ভারপর মস্তিম্কেনেন্ত্র, তাবপৰ ৰহিৰ্যন্তে, তথ্নই বিষয়-জ্ঞান সম্পূৰ্ণ হইল বলা যায় :

বিরপ্তলি মানুষেব সুগদেহে অবস্থিত। নন দিন্ত ভাষা নহে, বুদ্ধিও নহে।
হিল্পালে উহাদের নাম স্থা শরীর, খৃষ্টিয়ান শাস্ত্রে আধ্যায়িক শরীর। উহা
এই শরীর হইতে অনেক স্কাবটে, কিন্তু উহা আধ্যা নহে। আমা এই সকলের
অতীত। স্থাশরীর অল দিনেই ধরণ্য হইতে পারে। স্থা শরীর এত সহজে
নই হয় না। কিন্তু উহাও কথন সবল, বিন বা হুবল হয়। আমরা দেখিতে পাই,
বৃদ্ধ লোকের ভিতর মনের তত বল থাকে না, আনার শরীর সবল থাকিলে
মনও সবল থাকে, নানাবিধ ঔষধ মনের উপর কাষ্য করে, বাহিরের সকল বস্তই
উহার উপর কার্যা করে, আনার উহাও বাহু জগতের উপর কার্য্য করিয়া থাকে।
বেমন শরীরের উন্নতি অবনতি আছে, তেমনি মনেরও সবলতা ত্র্লিতা আছে,
অতএব মন কথন আলা হইতে পারে না, কারণ আলা অবিনিশ্র ও ক্রমইতি।
১৫ই আরাচ্, ১৩০৮।

শমরা কিরপে উহা জানিতে পারি ? আমরা কি করিয়া জনিতে পাবি ষে, মনের পশ্চাতে আবো কিছু আছে ৷ স্বপ্রকাশ জ্ঞান কথন জডের ধর্ম इंडेट পारत ना! এমন কোন ছড कम्र (मर्गा गांग नांहे, ज्ञानहें गांकात স্বরূপ জড চত কথন আপনাকে প্রকাশ করিতে পাবে না। জ্ঞানই সমদয় জভকে প্ৰাশ কৰে। এই যে স্মুখে হল hall- দেখিতেছি, জানই ইহার মূল বলিতে হইবে, কারণ কোন না কোন কানের মহায়ত। ব্যতিরেকে উহার অভিত্ত উপ্লব্ধ হটত ন।। এই শ্বীর স্থাকাশ নহে। যদি ভাতাই ২ইত, তাবে মৃত ব্যক্তির দেহও অংগ্রাশ ১ইচ: মন অথবা আ্বাট্যুক শ্রীরও সংপ্রকাশ হুইতে পাবে না। উহা জ্ঞানক্ষণ নহে। যাহা সংপ্রকাশ, ভাহার কখন ধ্বংস হয় না। যাহা অপরের আলোচ লইখা আলোকিড, তাহার আলোক কথন থাকে, কথন থাকে না। কিছু যাগা আলোকস্বরূপ, তাহার আসা যাওয়া, স্বলভা দুর্বলভা আবার কি? আমরা দেখিতে পাই, চন্দ্রে কর হয়, আবার উহার কলা বুদ্ধি হইতে থাকে,—তাহাব কারণ, উহা হর্য্যের আলোকে আলোকিত। খাদ অগ্নিতে গৌহপিও ফেলিরা দেওরা বার, আর বদি উহাকে ণোধিতোত্তপ্ত করা কাম, তবে উহা আলোক বিকিরণ করিতে থাকিবে, কিন্ত ঐ আলোক অপরের বলিয়া উহা চলিয়া যাইবে। অতএব ক্ষয় কেবল দেই আলোকেই সন্তব, যাহা অপরের নিকট হইতে গৃহীত, যাহা স্বপ্রকাশ আলোক नरहा

একণে আমবা দেখিলাম, এই সুগদেহ শ্বপ্রকাশ নহে, উরা আপনাকে আপনি জানিতে পারে না। মনও আপনাকে আপনি জানিতে পারে না। কেন গ কারণ, মনের শক্তির হাসবৃদ্ধি আছে, কখন উহা গবল কখন আবার হুর্বল হয়, কারণ বাহ্য সকল বস্তুই উহার উপর কার্যা করিয়া উহাকে সবল ও করিতে পারে, হুর্বলও করিতে পারে। অভএব মনের মধা দিয়া বে আলোক আগিতেছে, তাহা উহার নিজের নহে। তবে উহা কাহার ? উহা এমন কাছারও আলোক অবশ্র হইবে, যাহার পক্ষে উহা ধার করা আলোক নহে, অথবা অপর আলোকের প্রতিবিশ্ব নহে, কিন্তু যাহা আলোকশ্বরূপ; অতএব সেই পুরুষের শ্বরূপভূত যে জ্ঞান, তাহার কখন নাশ বা ক্ষয় হয় না, উহা কখন প্রবাণ কখন বা মৃত্ হইতে পারে না। উহা স্প্রকাশ—উহা আলোকশ্বরূপ। আল্লা আননেন, তাহা নহে, আল্লা জ্ঞানশ্বরূপ; আল্লা আননেন, তাহা নহে, আল্লা জ্ঞানশ্বরূপ; আল্লা শ্বশ্বরূপ। বে উল্লোধন।

মথী, তাহার স্থ অপর কাহাবও নিকট প্রাপ্ত — উহা আর কাহারও প্রতিবিশ্ব।
যাহার জ্ঞান আছে, সে অপর কাহারও নিকট জ্ঞানলাভ করিয়াছে, উহা
প্রতিবিশ্বরূপ। যাহাব অন্তিত্ব আছে, ভাহার নেই অন্তিত্ব অপর কাহাবও
অন্তিবের উপর নির্ভর করিতেছে। যেথানেই গুণ ছ গুণীর ভেদ আছে,
সেথানেই বুঝিতে হইবে, সেই গুণগুলি গুণীর উপর প্রতিনিম্থিত হইরাছে।
কিন্তু জ্ঞান, অন্তিত্ব বা আনন্দ এ গুলি আত্মাব ধর্মানহে — উহাবা আ্যার
স্বরূপ।

পুনরায় প্রায় হইতে পারে, আমরা এ কথা স্বীকার করিয়া লইব কেন ? কেন আমরা স্বীকার করিব যে, আনন্দ, অন্তিত্, সপ্রকাশিতা আত্মার শ্বরপ্র আবাব ধর্ম নহে ৪ ইহাব উত্তব এইঃ -- যেমন আমরা দেখিয়াছি, শ্রীরের প্রকাশ মনের প্রকাশে, মতক্ষণ মন থাকে, ততক্ষণ উহার প্রকাশ, মন চুলিয়া গেলে দেহেরও প্রকাশ আর থাকে না। চক্ষু হইতে মন চলিয়া গেলে, আমি ভোমার দিকে চাহিলা থাকিতে পারি,কিন্ধ ভোমাল দেখিতে পাইব না: অথব: শ্রবণেক্সির হইতে উহা চলিছা গেলে, তোমাদের কথা একবিন্দুও গুনিতে পাইব না। সকল ইন্দ্রিয় সম্বন্ধেই এইরুণ। সুতরাং আমেরা দেখিতে পাইলাম, শরীরের প্রকাশ-মনের প্রকাশে। স্থাবার মন সম্বন্ধেও তদ্রপ। ৰহিৰ্জ্জগতের সকল বস্তুই উহার উপর কার্য্য করিতেছে, সামান্ত কারণেই উহার পরিবর্ত্তন ঘটিতে পাবে, মস্তিকের মধ্যে একটু সামাত্ত গোলমাল হইলেই উহার পরিবর্ত্তন ঘটিতে পারে। অভ এব মনও পপ্রকাশ হইতে পারে না কারণ আমরা সমুদর প্রকৃতিতেই দেখিতেছি, যাহা কোন বস্তর সরপ, তাহার পরিবর্ত্তন হইতে পাবে না: কেবল যে গুলি অপর বস্তুর ধর্মা, যাহা অপর বন্ধর প্রতিবিদ্বস্থবাপ, ভাহারই পরিবর্ত্তন হয়। কিন্তু তর্ক ইইতে পারে, আত্মার প্রকাশ, অনুষ্ঠার জ্ঞান, আত্মার জ্ঞানন্দও কেন ঐরপ অপরের নিকট ইইতে গৃহীত হউক নাং এরপ দীকারে দোষ এট হইবে যে, ইহার অস্ত কিছু পাওয়া যাইবে না ; — এরপ প্রশ্ন উটিবে, উহা আবার কাহার নিকট হইতে আলোক প্রাপ্ত হইল ? যদি বল, 'অপর কোন আত্মা হইতে, তবে আবার প্রশ্ন উঠিবে— উচাই বা কোণা হইতে আলোক পাইল ? অত এব অবশেষে আমাদিগকে এমন এক জান্নগান থামিতে হইবে, যাহার আলোক অপরের নিকট প্রাপ্ত নহে। অতএব ভারদন্ত দিছাত এই, যেখানে প্রথমেই স্বপ্রকাশিতা দেখিতে পাই, সেখানেই থামি, আর অধিক অগ্রসর না হওয়া।

অতএব আমরা দেখিলাম, মানুষেব প্রথমতঃ এই সুল দেহ, তৎপরে স্ক্র শরীর—উহার পশ্চাতে মানুষেব প্রকৃত স্বরূপ আত্মা রহিয়াছেন। আমরা দেখিয়াছি, সূলদেহের সমুদ্র শক্তি মন হইতে গৃহীত—মন আবার আত্মার আলোকে আলোকিত।

আত্মার স্বরপদয়কে আবার নানা প্রশ্ন উঠিতেছে। আত্মা স্বপ্রকাশ, সচিচদানন্দই আহ্মার স্বরূপ, এই যুক্তি হইতে ধদি আহ্মার অভিত স্থীকার করিতে হয়, তবে স্বভাবতঃ ই ইহা প্রামাণিত হইতেছে, যে, উহা শুল হইতে স্ট হইতে পাবে না। যাহা স্ব প্রকাশ, অপরবস্ত -নিরপেক্ষ, ভাষা কখন শুন্ত হইতে উৎপন্ন ২ইতে পারে না। আমরা দেখিয়াছি, এই জড়জগতও শুন্ত হইতে হয় নাই--শালা ত দুরের ক্থা। অভএব উহার সর্বদাই অন্তিত ছিল। এমন সময় কথন ছিল না, যখন উহার অন্তিত্ব ছিল না, কাবণ যদি আত্মার অন্তিত্ব ছিল না, তবে কাল কোথায় ছিল ? কাল আত্মার ভিতরে। যথন আত্মার শক্তি মনের উপার প্রতিবিদ্ধিত হয়, আর মন চিস্তা কবে, তথনই কালের উংপত্তি। যুগন আত্মা ছিল না, তথন স্তর্থ চিস্তাও ছিল না, আর চিস্তা না থাকিলে, কালও থাকিতে পারে না। অভতব যপন কাল আত্মাতে রহিয়াছে, ভথন আ্যা এক সময়ে বর্তুমান ছিলেন, কি করিয়া বলা যাইতে পারে প উহাব জন্মও নাই, মৃত্যুও নাই, উহা কেবল বিভিন্ন দোপানের মধ্য দিয়া চলিতেছে মাত্র। উহা ধীরে ধীরে আপনাকে নিয় অবস্থা হইতে উচ্চ ভাবে প্রকাশ করিতেছে। উহা মনের ভিতর দিয়া শরীরের উপর কার্য্য করিয়া আপনার মহিমা বিকাশ করিতেছে, আব শরীর দাবা বাহ্য জগং গ্রহণ করি-তেছে ও উহাকে ব্ৰিভেছে। উহা একটা শরীর গ্রহণ করিয়া উহাকে বাবহার করিতেছে, আর যথন দেই শরীর ছারা আর কোন কাম হইবার সম্ভাবনা থাকে না, তথন আর এক এক শরীর গ্রহণ করে।

এক্ষণে আবার আত্মার প্নর্জন্মসথন্ধে প্রশ্ন আসিল। অনেক সময় লোকে এই প্নর্জন্মের কথা গুনিলেই ভয় পায়, আর লোকের কুসংস্কার এত প্রবল যে, চিন্তাশীল লোকেও বরং বিখাস করিবে যে, আমরা শৃত্য হইতে উৎপন্ন হইরাছি, তারপর আবার মহা যুক্তির সহিত সিদ্ধান্ত স্থাপন করিতে চেষ্টা করিবে যে, যদিও আমরা শৃত্য হইতে উৎপন্ন, কিন্তু পরে আমরা অনন্তকাল ধরিয়া থাকিব। যাহারা শৃত্য হইতে আদিয়াছে, তাহারা অবশ্রুই শৃত্য ঘাইবে। তুমি আমি বা উপস্থিত কেহই শৃত্য হইতে আইসে নাই, স্কৃতরাং শৃত্যে ঘাইবেও ৩০৮ উল্লেখন। তিম্ব—১০ম সংখ্যা;

না : আমরা অনস্তকাল ধ্রিয়া রহিয়াছি এবং গাকিব, আর জগদুসাতে এমন কোন শক্তি নাই, য'হা তোমার অথব। আমার অস্তিত্ব উড়াইয়া দিতে পাবে। এই পুনজ্জন্মানে কোন ভয় পাইবার কাবণ নাই, উহাই মান্তধের নৈতিক উন্নতির প্রধান সহায়ক। চিস্তাশীল ব্যক্তিদিগের ইহ্:ই ভাগ্যসঙ্গত সিদ্ধান্ত । যদি পরে ভোমার অনত্তকাল অভিত্ব সন্তব হয়,ভবে ইহাও স া যে, ভূমি অনস্তকাল ধরিয়া ছিলে: আব কোনরূপ হইতে পাবে না। এই মতের বিক্রে যে কতক-গুলি আপ্রি শুনিতে পাওয়া যায়, তাহার নিরাকরণ করিতে চেষ্টা করিতেছি। যদিও তোমনা অনেকে এই আপত্তিগুলিকে অনিঞ্চিংবর বোধ করিবে, কিন্তু তথাপি আমাদিগকে উহাদের উত্তব দিতে হইবে, কারণ, কথন কথন আমরা দেখিতে পাই, খুব চিস্তাশীল লোকেও খুব মুর্খোচিত কথা দকল বলিয়া থাকে। লোকে যে বলিয়া থাকে, 'এমন অস্কৃত মত্ত নাত, যাহা সমর্থন করিবার জন্ম কোন না কোন দার্শনিক উঠেন,' এ কথা অতি সত্য। প্রথম আপত্তি এই, আমাদের ছত জন্মের কথা শ্বরণ থাকে না কেন ? তাছাতে জিল্পায় এই,আমরা আমাদের এই জন্মের অভীত ঘটনাই কি দব স্মরণ করিতে পারি ৪ ভোমাদের মধ্যে কয়জনের শৈশবকালের কথা স্থরণ হয় ? শৈশবকালের কথ তোশাদের কাহারই স্মরণ হয় না : আরু যদি স্থতিশক্তির উপর অন্তিত্ব নির্ভঃ কবে, তবে ভোমার উহা স্মরণ নাই বলিয়া, ঐ শৈশবাবস্থায় তোমার অভিছও ছিল না বলিতে হইবে ৷ কেহ যদি শ্বরণ করিবার থাকে, তবে তাহারই উপর অন্তিম্ব নির্ভর করিতেছে বলা কেবল রুখা প্রলাপমাত্র। আমাদের ভুক জন্মের কণা স্মরণ থাকিবার প্রয়োজন কি ৮ সেই মস্তিদ্ধও নাই, উহা একেবারে ধ্বংস হইয়া গিয়াছে, আর নৃতন প্রকার মন্তিক রচিত হইয়াছে। অতীতকালের সংস্থারসম্প্রি আমাদের মন্তিকে আগিয়াছে—উভা লইয়াই মন এই শ্রীরে বাস করিতে আসিয়াছে।

আমি এক্ষণে যেরপ, তাহা আমার অনস্ত অতীত কালের কর্মফল্বরপ।
আর সমূহ অতীত স্মরণ করিবারই বা আমার কি প্রয়োজন? কুসংস্থারের
এমনি প্রভাব যে, যাহারা এই পুনর্জনাবাদ অ্যীকার করে, তাহারাই বিখাস
করে, এক সমরে আমরা বানর ছিলাম, কিন্তু তাহাদের বানরজন্ম কেন স্মরণ
হয় না, তাহা জিজ্ঞাসিতে ভরসা কবে না। যথন কোন প্রাচীন ঋষি বা
সাধুসভ্য প্রভাক্ষ করিরাছেন শুনি, আমরা তাহাকে ভ্রান্ত বলিয়া থাকি; কিন্তু
হাক্সিলি ইহা বলিয়াছেন, টিপ্তাল ইহা বলিয়াছেন, তবে ইহা অবগ্রই সভা
১৫ই আয়ণ্চ, ১৩০৮।

হটবে তথন আমবা উহা অমনি गানিয়া লই। প্রাচীন কুসংস্কারের পরিবর্তে আমরা আধুনিক কুদংস্কার আনিয়াছি, ধর্ম্মের প্রাচীন পোপের পরিবর্তে আমরা বিজ্ঞানের আধুনিক পোপ বস্টিয়াছি। অত্তাব আমরা দেখিলাম, এই স্মৃতিসম্বন্ধে যে আপতি, ভাহা সত্য নছে। আরে এই পুনর্জ্জনসম্বন্ধে যে সকল অপত্তি হটয়া থাকে, তন্মধ্যে ইচাই একমাত্র আপত্তি, যৎসম্বন্ধে বিজ্ঞ লোকে আলোচনা করিতে পারেন: ধণিও পুনর্জন্মবাদ প্রমাণ করিতে হইলে, তাহার দকে দকে স্তিও থাকিবে, ইহা প্রমাণ করার কোন প্রয়োজন নাই, ইহা আমরা দেখিয়াছি, তগাপি আমরা ইহা দুঢ়ভাবে বলিতে পারি যে, অনেকের এইরপে য়ুতি আসিয়াছে, আর তোমরাও সকলে বে আনে মুক্তি লাভ করিবে, সেই অন্মে এই শ্বতি লাভ করিবে। তথনই কেবল ভুমি জানিতে পারিবে যে, জগৎ স্বপ্নমাত, তখনই তুমি অন্তরের অন্তবে বুঝিবে যে, তোমৰা এই লগতে নট মাত্র, আর এই লগৎ রক্ষভূষিমাতে, তথনই অনাসভিয় ভাব ভোমাদের ভিঙর বজ্রবেনে আদিবে, তথনই যত ভোগতৃষ্ণা, জীবনের উপর এই মহা আগ্রহ— এই সংসার চিরকালের জক্ত উঠিয়া বাইবে। তথন ভূমি স্পষ্টই দেথিবে, ভূমি জগতে কডবার আসিয়াছ, কত লক্ষ কক বাব ডোমরা পিতা, মাতা, পুত্র, কতা, স্বামী, স্ত্রী, বনু, ঐথগা, শক্তি লইয়া কাটাইয়াছ। এই স্কল কভেবার আসিয়া কতবার চ^{লি}য়া গিয়াছে। কভবার তুমি সংসার ভরক্ষের উচ্চ চুড়ায় উঠিয়াছ, আনবার কতবার তুমি নৈরাণ্ডের গভীর গহবরে নিমজ্জিত হইয়াছ। যথন শ্বতি ভোষার নিকট এই সকল আনিয়া দিবে, তথনই কেবল তুমি বীরের ক্রায় দাঁড়াইবে, আর জগণ বখন তোমায় জভঙ্গী ক্রিবে, তথন ভূমি হাস্ত ক্রিবে। তথনই ভূমি বীরের ক্রায় দাঁড়াইয়া বলিতে পারিবে, "মৃত্যু,তো 'কেও আমি গ্রাহ্ম করি না,ড়মি আমাকে কি ভন্ন দেখাও ?" ষধন ভূমি জানিতে পারিবে, মৃত্যুর তোমার উপর কোন শক্তি নাই, তথনই ভূমি মৃত্যুকে অর করিতে পারিবে। সকলেই এই জ্ঞানলাভ করিবে।

আঝার যে পুনর্জন হয়, তাহার কি কোন যুক্তিযুক্ত প্রমাণ আছে?
এতক্ষণ আমরা কেবল শক্ষা নিরাস করিছেছিলাম, দেণাইতেছিলাম যে এই
পুনর্জন্মবাদ অপ্রমাণ করিবার যে যুক্তিগুলি, তাহা অকিঞ্জিংকর। এক্ষণে
উধার সর্পক্ষে যে যুক্তি আছে, তাহা বিবৃত হইতেছে। পুনর্জন্মবাদ ব্যতীত জ্ঞান অসন্তব। মনে কর, আমি রাস্তায গিয়া একটা কুকুরকে দেখিলাম।
উহাকে কুকুর বণিয়া জানিগাম কিরূপে? আমি মনের দিকে তাকাইগাম—
৬১০
উধোধন। (৩য়—১০য় সংখ্যা;

দেখানে আমার সম্পন্ন পূর্বাসংস্কাবগুলি যেন ওরে স্তরে সজ্জীকৃত রহিয়াছে। নুতন কোন বিষয় আদিবামাত্রই আমি ঐ টাকে দেই প্রাচীন সংস্কারগুলিব সহিত মিলাইলাম। যথনত দেখিলাম, মেইকপ ছাতের আর কভকগুলি নংকার রহিয়াছে, অমনি অন্নি উহাদিগকে ভভাদের স্থিত মিলাইলাম, অমনি অংগার তৃপ্তি আগিল। অংমি তথন উহাকে কুকুর বলিন, জানিতে পারিলাম, ারণ, উহা পুষাব্ভিত কতকগুলি সংস্থারের স্থিত মিলিল। যথন আমি উহার ভুলা সংস্কাৰ অনোৰ ভিতৰে না দেখিতে পাই, ভখনই আমার অভুপ্তি আইনে। এইরূপ ২ইলে উহাকে অক্তান বলে। আর ভূপি হইলেই উহাকে 'জ্ঞান'ালে। ষথন একটা আপেল (apple) পড়িল,ভখন মানুষের **অতৃপ্তি আদিল**। ভারপর মানুষ ক্রমণ ঐরুপ কভকগুলি ঘটনা—্যেন একটা শৃথাল, দেখিতে পাইল। কি সে শৃত্যাণ ? সেই শৃত্যাণ এট যে, সকল আপেলই পড়িয়া থাকে। মানুষ উহাও মাধ্যাকর্ষণ সংজ্ঞা দিল। অত্তরত আমরা দেখিলাম, পূর্বে কৈতক গুলি অনুভূতি না থাকিলে নুঙ্ন অনুভূতি অসম্ভব, কারণ, ঐ নৃতন অতুভূতির সহিত মিলাহবার আব কিছু পাওয়া যাইবে না। অতএব, কতকগুলি ইউরোপীয় দার্শনিকের মত, ''বালক ভূমিষ্ঠ হতবার সময় সংস্কারশৃত্য মন লইয়া আনে" একথা যদি সভা হয়, তবে ভাহাকে সংস্কারশুল মন লইয়া ষাইতে হইবে। কারণ, ভাগার ঐ নুতন অন্নভূতি মিলাইবার জন্তে আর কোন সংস্কার রহিল না: অভএব দেখিলাম, এই পূর্কাস্থিত জ্ঞানভাগার ব্যতীত নৃতন কোন জ্ঞান হওয়া অসম্ভব। বান্তবিক কিন্তু আমানের স্কলকেই পূর্বসঞ্চিত জ্ঞানভাপ্তার সঙ্গে করিয়া শইয়া আলিতে হুইয়াছে। জ্ঞান কেবল ভূয়োদর্শনলন্ধ, জানিবার আর কোন পথ নাই। যদি আমরা এখানে ঐ জ্ঞানলাভ না করিয়া থাকি, আম্বা অবশ্রই অবের কোথাও উহা লাভ করিয়া থাকিব। মৃত্যুভয় সর্পত্রই দেখিতে পাই কেন? একটা কপোত এইমাত্র ডিম্ব হইতে বাছির হইয়াছে— একটী শ্রেন আদিল অমনি দে ভয়ে মায়েব কাছে পলাইয়া গেল। কোথা হইতে ঐ কপোভটী শিখিল যে, কপোত শ্রেনের ভক্ষ্য; ইহার একটা পুরাতন ব্যাখ্যা আছে, কিন্তু উহাকে ব্যাখ্যাই বলা যাইতে পাবে না। উহাকে স্বাভাবিক জ্ঞান ৰণা হইত। যে কুদ্র কপোভটী এইমাত্র ডিম্ব ইইতে বাহির হইরাছে, তাহার এরূপ মর্ণভীতি আবে কোণা হইতে ? সদ্য ডিম্ব হইতে বহির্গত হংস জলের নিকট আসিলেই জলে ঝাঁপ দিয়া পড়ে, এবং সাঁতার দিতে থাকে কেন্ উহা কথন সম্ভৱণ ক্ষে নাই,অথবা কাহাকে ■ সম্ভৱণ দিতে ३६६ मायाह, ३७०৮। উদ্বোধন। 033

দেখে নাই। লোকে বলে উহা স্বাভাবিক জ্ঞান। উহা একটা মস্ত কথা, কিন্তু উহা আমাদিগের নৃতন কিছুই শিখাইল না। এই স্বাভাবিক জ্ঞান কি, তাহা আলোচনা করা যাক। আমাদের নিজেদের ভিতরই শত প্রকারে স্বাভাবিক জ্ঞান বহিয়াছে। প্রথমে কোন ব্যক্তি পিয়ানো বাজাইতে শিভিতে পাগিলেন। প্রথমে তাঁহাকে প্রত্যেক প্রদার দিকে নজর রাথিয়া তবে উহাদের উপর অঙ্গণি প্রায়েণ করিতে হয়: কিন্তু অনেক মাস, অনেক বংসর অভ্যাস করিতে করিতে উহা স্বাভাবিক হইরা দাঁড়ায়, আপন। আপনি ২ইতে থাকে। এক সময়ে যাহাতে ইচ্ছার প্রয়োজন হইত, তাগতে আর জ্ঞানপূর্বক ইচ্ছার প্রয়োজন পাকে না, কিন্তু উহা জ্ঞানপূর্বক ইজ্ঞা ব্যতীভুই নিষ্পন্ন হইতে পারে, উহাকেই বলে আভাবিক জ্ঞান। প্রথমে উহা ই জ্ঞানহকুত ছিল, পরিশেষে মার ইছোর উহাতে প্রয়েভন রহিল না। এখনও সম্পূর্ণ প্রমাণ হইল না। আর্ক্রেক প্রমাণ এখনও বাকি। ঐ অর্থ্বেক প্রমাণ এই সে, প্রান্ন দম্দর কাণ্যই, যাহা এক্ষণে আমানের স্বাভাবিক, ভাহাদিগকে ইচ্ছার অধীনে আনয়ন করা ঘাইতে পারে। শরীরের প্রত্যেক পেশীই আমাদের অধীনে আনয়ন করা ঘাইতে পারে। এ বিষয়ে সাধারণে উত্তমরূপেই জ্ঞাত আছেন। অতএব অন্তর্যী ও বাতিরেকী হুই উপায়েই প্রমাণ হইল যে, যাহাকে আমরা স্বাভাবিক জ্ঞান বলি, ভাহা ইচ্চাকৃত কাৰ্য্যের অবনত ভাব মাত্র। অতএব যদি সমুদয় स्टिउर वर वक माम् अद्यान कदा यात्र, यिन ममूनत अकृतिर ममअनानीक **ইয়, তবে মন্নয়ে এবং** তির্যাগ্ জানিতে যাহা স্বাভাবিক জ্ঞান, তাহা ইচ্ছার অবনত ভাব মাত্র।

আমরা বহিজ্জগতে যে নিয়ম পাইয়াছিলায়, অর্থাং প্রত্যেক ক্রমবিকাশ প্রক্রিয়ার পূর্বেই একটা ক্রমসংকাচ প্রক্রিয়া বর্ত্রমান ৭ আর ক্রমসংকাচ হাইলেই তৎ সঙ্গে ক্রমবিকাশ ও থাকিবে, এই নিয়ম খানাইয়া আমরা স্বাভাবিক জ্ঞানের কি ব্যাখ্যা পাইতে পারি ? স্বাভাবিক জ্ঞান তাহা হইলে বিচারপূর্বেক কার্যের ক্রমসংক্রাচভাব হইয়া দাঁড়াইল। অত এব মানুষে বা পগুতে যাহাকে স্বাভাবিক জ্ঞান বলি, তাহা অবশ্রুই পূর্বেবর্ত্তী ইচ্ছাকৃত কার্যের ক্রমসংক্রাচভাব হইরা দাঁড়াইল। অত এব মানুষে বা পগুতে যাহাকে স্বাভাবিক জ্ঞান বলি, তাহা অবশ্রুই পূর্বেবর্ত্তী ইচ্ছাকৃত কার্যের ক্রমসংক্রাচভাব হইবে। আর ইচ্ছাকৃত কার্য্য বলিলেই পূর্বের আমরা বাস্তবিক কার্যা করিয়াছিলাম, স্বীকার করা হইল। পূর্বকৃত্ত কার্য্য হইতেই ঐ সংস্কার আসিয়াছিল, আর ঐ সংস্কারও রহিয়াছে। এই মৃত্যুভীতি, এই জন্মিবামাত্র জ্বেস সম্বর্গ, আর মনুষ্যের মধ্যে যাহা কিছু অনিচ্ছাকৃত স্বাভাবিক কার্য্য রহিয়াছে, ৩১২

মৃশান্তবাদ।—হে পাণ্ডৰ, বাছাকেই (প্রাচীন গবিগণ) সন্ধাস বলিয়াছেন, ভাহাকেই ভূমি যোগ বলিয়া জানিবে, কারণ যে ব্যক্তি সকলের সন্মাস করে নাই, সে কথনও যোগী হইতে পারে না॥ ২॥

ভাষ্যানুবাদ — একণে আশকা এই প্রকার ইইতে পারে যে, শ্রুতি স্মৃতি এবং যোগশান্তে নির্নি এবং অক্রিয় ব্যক্তিরই সন্যাসিত্ব ও যোগিত্ব প্রানিত্ব পরিকাল নাই। কারণ গোণীলক্ষণাদারা এই উভয়কে প্রতিপাদন করিবার ইচ্ছাতেই এই প্রকার বলা হইয়াছে; ভাহা কি প্রকার গুকর্মফলবিষয়ে সংকল্প পরিত্যাপ করা হয় বলিয়া (ভাদৃশ কর্মীর) সন্নাসিত্ব (উক্ত হইয়াছে); ধ্যান্যোগের সাধন বলিয়া ক্রের অনুঠান করা হয় বলিয়াই হউক, অথবা চিত্তবিক্ষেপের হেতু কর্মফলসংকল্পের পরিত্যাপ করা হয় বলিয়া, ভাহার যোগিত্ব (শাস্ত্রে উক্ত হইয়াছে)। এই সন্নাসিত্ব ও যোগিত্ব গোণিত্ব এ স্থলের অভিপ্রেত নহে, এই বিষয়টী দেখাইবার জন্ম (ভগবান) বলিভেছ্ন (যে)॥২॥

ভাষ্য।—যং সর্ক্রক্ষকণপরিত্যাগলক্ষণং পরমার্থসন্ন্যাসমিতি প্রান্থ: শ্রুতিবিদঃ বোগং কর্মান্থলীনলক্ষণং তং পরমার্থসংন্যাসং বিদ্ধি জানীহি হে পাণ্ডব। কর্মান্যাস্থ প্রসৃত্তিলক্ষণস্থ তদ্বিপরীতেন নির্ভিলক্ষণেন পংমার্থ-সংন্যাসেন কীদৃশং সামান্তমঙ্গীকৃত্য তদ্ভাব উচ্যক্ত ইত্যপেক্ষায়াং ইদ্মৃচাতে। অন্তি পরমার্থসন্থাসেন সাদৃশ্যং কর্ত্বারকং কর্মান্যাসন্থা। বোহি পরমার্থসংস্থা-সী স তাক্তসর্বকর্ম্যাধনতয়। সর্বকর্মতৎকলবিষয়ং সন্ধন্ধ প্রতিহেতুকাম-কারণং সংক্ততা। অয়মপি কর্মান্যাসী কর্ম্মর্কাণ এব ফলবিষয়ং সন্ধন্ধং সংক্রং সংক্ততীত্যতমর্থং দর্শন্ধাহ নহি ধন্মাং অসন্যান্তসন্ধ্রোহসন্ত্রাহপরিত্যক্তঃ ফলবিষয়ং সন্ধাহ নহি ধন্মাং অসন্যান্তসন্ধ্রোহসন্ত্রাহপরিত্যকঃ ফলবিষয়ং সন্ধাহ ভিস্থিবিদ্যাহসন্ত্রান্ত্রাহ্বান্যান্যান্যান্যান্যান্ত্রাহ্বান্যান্যান্ত্রাহ্বান্যান্যান্ত্রাহ্বান্যান্ত্রাহ্বান্যান্যান্ত্রাহ্বান্যান্যান্ত্রাহ্বান্যান্ত্রাহ্বান্যান্যান্ত্রাহ্বান্যান্যান্ত্রাহ্বান্যান্ত্রাহ্বান্ত্রাহ্বান্যান্ত্রাহ্বান্ত্রাহ্বান্যান্যান্ত্রাহ্বান্ত্রাহ্বান্যান্ত্রাহ্বান্ত্রাহ্বান্যান্যান্ত্রাহ্বান্যান্যান্ত্রাহ্বান্যান্যান্ত্রাহ্বান্ত্রাহান্ত্রাহ্বান্যান্যান্যান্ত্রাহ্বান্ত্রাহান্ত্রাহান্যান্যান্যান্যান্ত্রাহান্যান্যান্ত্রাহান্ত্রাহান্ত্রাহান্যান্ত্রাহান্ত্রাহান্ত্রাহান্ত্রাহান্যান্ত্রাহান্ত্রাহান্ত্রাহান্ত্রাহান্যান্ত্রাহান্ত্রাহান্যান্ত্রাহান্ত্রাহান্ত্রাহান্ত্রাহান্ত্রাহান্ত্রাহান্যান্ত্রাহান্ত্রাহান্ত্রাহান্ত্রাহান্ত্রাহান্ত্রাহান্ত্রাহান্ত্রাহান্ত্রাহান্যান্ত্রাহান্ত্রা

কশ্চন কশ্চিদপি ক্সী সংগ্রন্তক আফল সংকলোভবেৎ স যোগী সমাধানবান্ অবিক্সিপ্ত চিন্তাভবেৎ টিন্তবিক্সেপহেতোঃ ফলসহল সন্মন্ত বাদিত্য ভিপ্রায়:।
এবং পরমার্থ সন্ধ্যাসক প্রযোগ্যো: কর্ত্বারকং সংগ্রাসসামান্ত মণেক্যা 'মং
সংখ্যাসমিতি প্রান্ত হোলং ভং বিদ্ধি পাশুব', ইতি কর্প্রোগল স্থাত্য গং সংভাসম্মৃত্যু । ২ ॥

ভাষাাত্রাদ ৷-- ক্রতি ও স্থৃতির বেতাগণ, যে সর্কাকর্মফণ পরিত্যাগরূপ প্রমার্থ সন্ত্রাস বলিয়া থাকেন কন্মান্তহানলক্ষণ যোগকেও সেই প্রমার্থ সল্লাস্ বলিয়াই ভূমি জানিও, হে পাওব ! প্রবৃত্তি লক্ষণ কম্যোগের ও তাংব বিপরীত নিবৃত্তিলক্ষণ প্রমার্থ স্ল্যাদের কোন নাধর্ম্মকে অবশ্বন করিয়া উভয়ের একরাপতা কথিত হইতেছে, এই প্রকার প্রয়ের উত্তর দিবার জ্ঞা এই বলা হইতেছে, যে প্রমার্থ স্লাসের স্হিত ক্রায়ের কর্ত্রারক সাদৃত্য আছে ; (কর্ত্ত্বারক সাদৃশ্র কিপ্রকার ভাষা বলা হইতেছে যে যেব্যক্তি পরমার্থ-সন্মাসী, সে সকল কণ্মদ্রেপ সাধন পরিত্যাগ করে, এই জন্ম প্রবৃত্তি হেতু কামের কারণ, স্কল প্রকার কর্ম ও তংফ্রবিষয়ে সংলেব সন্ন্যাস করিয়া থাকে; (পুর্ব্বোক্ত) এই কর্মহোগীও কর্মের মনুষ্ঠান কালেই ফলবিষয়ে সঙ্কর পরি-ত্যাগ করিয়া থাকে। এই প্রকার পরস্পর সাদৃগু প্রতিপাদন করিবার জন্ত বলা হইতেছে যে, যে কারণ "অসল্লান্তসকল" (ফলবিষ্যে সকল অর্থাৎ **অভিস্কিকে যে ব্যক্তি** পরিত্যাগ কবে না,) কোন ব্যক্তি যোগী অর্থাৎ সমাহিতচে া হইতে পারে না, কাবণ ফলবিষয়ক দক্ষম, চিতের বিক্ষেপের প্রতি e তু, দেই কারণ যে কোন কথা কর্মফলের সকল পরিত্যাগ করিয়াছে, দে স্মাহিতচেতা (অধাং) অবিশ্বিপাচিত্র হয়, কারণ চিত্তবিক্ষেপের হেতু ফল-বিষয়ক সকল সে প্রিত্যাগ করিয়াছে। ইহাই অভিপ্রায়। এ প্রমার্থ সন্যাস ও কর্মঘোগের এই প্রকার কর্তনারক সন্যাসরূপ সাধারণ ধর্মকে অপেকা ক্রিয়া মাহাকে সন্মাস বলিয়াছেন, ভাছাকেই তুমি যোগ বলিয়া জানিবে, ছে শাওব!" এই বাকোর ঘারা কর্মানোগেরই স্থাতির অন্ত তাহার সন্মাসত্ব কীর্তিত इटेशाएइ॥२॥

> আরুককে মুনের্যোগং কর্ম কারণমূচ্যতে। যোগারুত্য তঠৈত্ব শমঃ কারণমূচ্যতে॥ ৩॥

শ্বর।—ব্যোগং শাক্রক্শোঃ মুনে: কর্ম কারণ্যু উচাতে ওঠিএব (পুনঃ) যোগার্চ্ন্যু শ্বঃ কারণ্যু উচাতে ॥ ৩॥

মুশান্থবাদ।—ধ্যানযোগে আরোচণার্থী মননশীল ব্যক্তির পক্ষে কর্মাই (ধ্যান যোগ লাভের কারণ (বলিয়া) উক্ত হয়। সেই ব্যক্তিই যোগান্ধত হইলে ভাহার পক্ষে শম (অর্থাৎ) সর্প্রকশ্মনিবৃত্তিই (ইট্টসিদ্ধির) কারণ বেলিয়া) কার্ত্তিত হইয়া থাকে। ৩ ।।

ভাষা।—ধ্যানযোগত ফলনিরপেক্ষঃ কণ্মযোগঃ বহিংক্সাধনমিতি তং সন্ন্যাসত্বেন স্তত্ত্ব। কণ্মযোগত ধ্যানযোগসাধনভাং দর্শগতি আক্রুক্সো-রাব্যেত্ মিচ্ছতোহনারত্ত্ব ধ্যানযোগত ধ্যানযোগসাধনভাং দর্শগতি আক্রুক্সো-রাব্যেত্ মিচ্ছতোহনারত্ত্ব ধ্যানযোগেহবস্থাভূমশকতৈত্ব ইত্যর্গঃ কত্ত্বাক্ত ক্রুক্তাঃ দ্যান্য হত্ত্বাল ক্রুক্তারণং স্থানমূচ্যতে। যোগারত্ত্ত প্রস্কটের শমঃ স্বক্র্ডাটা নিবৃত্তিঃ কারণং যোগারত্ত্বত্ত সাধনমূচ্যত ইত্যর্থঃ। যাবদ্যাবং কর্ম্মভা উপরমতে তাবং তাবং নিরান্নাসত জ্বিভেক্তিরত চিত্তং স্মাধীরতে। তথা সতি স্ব্টিতি বোগারত্বে ভবতি। তথাচোকং ব্যাদেন

"নৈতাদৃশং ব্রাহ্মণ ডাল্ডি বিত্তং যথৈকতা সমত। সতকো চ। শীলং স্থিতিদ গুনিধানমার্জ্বং তত্তত তেশ্বোপরমঃ ক্রেয়াভাঃ ॥'' ইচি ৩ ॥

ভাষাামুবাদ - কলনিরপেক কর্মবোগ, ধ্যান্যোগের বহিরক সাধন ধ্যান र्यार्गत विषय (धाय वन्छ, कर्यार्यार्गव विषय नरङ, जाथक कर्यार्य ग कि उन्हें कि बावा ধাানযোগের কারণ হয়, এই জন্ম ধ্যানযোগের বহিরপ সাধন বলিয়া শাল্তে কর্মাযোগের নির্দেশ হয়), এই কারণ সম্যাসক্রপে স্তুতি করিনা একণে কর্ম-যোগ যে গান্যোগের সাধন,ভাহাই দেখাইতেছেন, আরুরুক্ত আরোহণ করিতে অভিশাষী, অনার্চু (অর্থাং) ধ্যান্থোগে অব্ধিতি করিতে অসমর্থ বাকির शक्त हेटाटे वर्ष। वाक्रकक कित्र ? मूनि, वर्षा के कर्माकन महानी कित्म আরোহণ করিতে অভিলাষী ? যোগে, (এই প্রকার ব্যক্তির) কর্ম্মই কারণ (অর্থাৎ) সাধন উ জ হয়। সেই ব্যক্তিই ঘোণারে ছ ইলে (ভাহার পক্ষে) "শম" উপশম (অর্থাং) সর্ব্ধ কর্ম হইতেই নির্ত্তিই কারণ (অর্থাং) মোগা-ক্রচত্ত্বে সাধন উক্ত হয়। বেমন বেমন কর্ম্ম হইতে উপরত হয়, সেই প্রকারে নিরাশ্বাস ও জিতে লিয় ব্যক্তির চিত্ত সমাহিত হয়, এইরূপ হইলে দে শীঘ্র যোগা-রুচ্ হইয়া থাকে, ব্যাস ও এই প্রকারই বলিয়াছেন যে একত্মপ্রতায়, সম থা. ३६ई षाचात् ३७०४ [] - छेरश्रापन । 254

সত্যব্যবহার, শীল, স্থৈগ, অহিংসা, সারল্য এবং ক্রমে ক্রমে ক্রিয়ানিচয় হইতে উপরতি, এই কয়টীর স্থায় ব্রাহ্মপের পক্ষে অস্ত কোন ধন নাই॥৩॥

> যদা হি নেব্রিয়ার্থের্ ন কর্মারস্থক্ষতে। সর্বাসকলস্মাদী যোগারচন্তদোচ্যতে ॥ ॥

অবয়।—যদা সকাদজলসল্লাদী ই ক্রিয়াথেপুক্রুক্ন; অনুষজ্জতে তদা যোগাকত উচাতে ॥ ॥

মূলারুবাদ।—-বে সময় সর্কাপ্রকার সকলের পরিত্যাগকারী (কর্মী) ইন্দ্রিয়ার্থ কর্ম্মস্থে কর্ত্তন্যন্ত জ্ঞান করে না, সেই সময় সেই ব্যক্তি যোগারুড় বলিয়া কথিত হয়॥৪॥

ভাষ্য।—এবেদানীং কলা যোগাকঢ়োভবতীত্যুচাতে। যদা সমাধীয়মানচিত্তে। যোগী হি ইন্দ্রিয়ার্থেব্ ইন্দ্রিয়াণামর্থাঃ শকাদরতেরু ইন্দ্রিয়ার্থেব্ কর্মান্ত চিতে। বৈমিতিককামাপ্রতিষিদ্ধেরু প্রয়োজনাভাববৃদ্ধা নাহ্যজ্জতে অনুষক্ষঃ কর্ত্তবাতাবৃদ্ধিং ন করোতি ইত্যর্থঃ দর্মসংকল্পংস্থাদী দর্মান্ সঞ্জান্ ইহাম্তার্থকামহেতৃন্ সংস্থাসিত্ং শীলমস্থেতি দর্মদংকল্পানামী যোগারুতঃ প্রাপ্তযোগ
ত্যতং তদা তন্মিন্ কালে উচাতে। দর্মদংকল্পানীতি বচনাং দর্মাংশ্চ
কামান্ দর্মাণি কর্মাণি সংস্তান্তিগ্রেং। সম্বন্ধন্য হি সর্মে কামাঃ—

সংক্রম্শঃ কামোবৈ বজাঃ সক্রসগুবাঃ।
কাম জানামি তে মূলং সংক্রাত্তং জায়দে।
ন সাং সক্রয়িয়্যামি তে মে ন ভবিষ্যে ॥

ইত্যাদিশ্বতেঃ।

সর্বকামপরিত্যাগে চ দর্বকর্ষ্মংস্থাসঃ সিদ্ধোভ∃তি"স যথাকামো ভবতি তৎ ক্রুত্ত্বিতি যত্ত্রুত্বিতি তৎ কর্ম কুরুতে।" ইত্যাদি শ্রুতিভাঃ ।

যদ্যদি কুকতে কশ্ম তত্ত্ব কামস্ত চেষ্টিতম্।

ইত্যাদিস্তিভ্যশ্চ।

ক্সায়াচ্চ নহি সর্কাংকলসংক্সাসে কশ্চিং স্পানিতুমপি শক্তঃ। তথাত্ সর্ক-সংক্রসন্ম্যাসীতি বচনাং সর্কান্ কামান্ সর্কাণি কর্মাণি চ ত্যাজয়তি তথবান্॥ ৪॥

ভাষা দুবাদ : — অনস্তর এইকণে কোন সমগে গোগারু হয় ভা**শাই বলা**হইতেছে — যে সময় সমাধী স্থানহাদ য় যোগী, ইন্দ্রিয়ার্থ সমূহে (ইন্দ্রিয়ের **অ**র্থ ৩১৬ উলোধন : [৩য়—১০ন সংখা; (অর্থাৎ) শব্দাদি বিষয়ও ইন্দ্রিমের ক্রিয়া এই বিবিধ পদার্থই ইন্দ্রিয়ার্থ শব্দের দ্বারা এইস্থানে অভিহিত হইতেছে) এবং নিত্য নৈমিন্তিক কাম্য ও প্রতিষিদ্ধ কর্ম্মমূহে, নিপ্প্রোজনত জ্ঞাননিবন্ধন অনুষক্ত হয় না অর্থাৎ অনুষক্ত" কর্ত্তবার বোধ করে না। (এবং) "সর্ক্রসঙ্করসংস্থাসী" এইক ও পার্ক্রিক সকল প্রকার কামের হেতু সংকলনিচ্নকে পরিত্যাগ করাই ঘাহার স্থভাব, সেই সর্ক্রমংকলসংস্থাসী (এই প্রকার হইলে) সেই সময়ে (এ ব্যক্তি) যোগাবিত (অর্থাৎ) লব্ধবিগে বলিয়া উক্ত হয়। সর্ক্রমন্ত্রাসী এই বিশেষ্ণ্টী দ্বারা প্রতিপাদিত হইতেছে যে, সকল প্রকার সঙ্কর ও সকল কর্মের সন্ন্যাস করিতে হইবে, কারণ সংকল্পই সকল কামের মূল।

"সকল প্রকার কাম সংকল হইতে উংপর হয়। হে কাম, আমি ভোমার মূল কারণকে জানি। তুমি সঙ্কল হইতে উৎপর হও। তোমাকে আমি আর সংকলের বিষয় করিব না, তাহা হইলেই তুমি আমার (হাদরে) উংপল হইতে পারিবে না।"। এই প্রকারের বাক্য, স্থতি শালে দেখিতে পার্যাযায়।

সর্বকাম পরিত্যাগ করিলে সর্বাক্ষের সংস্থাস সিদ্ধ হয়। "সেই পুরুদ্দি যে প্রকার কামনা করে, সেইকপ যাগকে সাধনবৃদ্ধিতে গ্রহণ করে, যে প্রকার যাগাদি ক্রিয়াকে সাধন বৃদ্ধির বিষয় করে, সে সেই প্রকার যাগাদিকশ্বের অমুষ্ঠান করিয়া থাকে", এই প্রকার ক্রতিবাকা দ্বারাও ইহা প্রমাণ হইতেছে—

"লোক যাহা কিছু কর্ম করে, তাহা সকলই কামেরই বিলাস মাত্র", এই প্রকার স্থানিকান্ত ইহাতে প্রমাণ হইয়া থাকে। যুক্তিবলেও ইহা সিদ্ধ হইছে পারে, কারণ সর্বপ্রকার সংকল্পের সম্ভাস হইলে জীব স্পাদিত হইতেও পারে না। সেই কারণে (স্থির করিতে হইবে যে, যোগারুড় ব্যক্তির পক্ষে) সর্ববিদ্ধেল্ল-সংকল-সংক্রাসী এই পদটী উল্লেখ দ্বারা ভগবান্ সকল প্রকার কাম ও সকল প্রকার কর্মের পরিভাগে করাইভেছেন॥ ৪।।

উদ্ধরেদাত্মনাত্মানং নাত্মানমবসাদয়েৎ। অংক্রের হ্যাত্মনা বন্ধুরাইত্মব রিপুরাত্মনঃ॥ ৫॥

অধ্য ।—আত্মনা আত্মানং উদ্ধরেৎ। ন আত্মানং অবসাদরেৎ হি (যতঃ)
আত্মা এব আত্মনঃ ব্যুঃ (তথা আত্মাএব) আত্মনঃ রিপু:॥ ॥ ॥
১৫ই আ্যানূ, ১৩০৮।] উল্লেখন। ৩১৭

ম্লাকুবাদ। — আপনি আপনার উদ্ধার করিবে, আপনাকে অবদন্ধ করিবে না, আত্মাই আত্মার বন্ধু এবং আত্মাই আত্মার রিপু হয়। ৫॥

ভাষা ।— যদৈবং যোগাক চৃত্তদা তেন আত্মা আত্মনা উদ্ধৃতো ভবতি সংসারাদনর্থকা ভাষ অতঃ। উদ্ধর্থে সংসারাদনর্থকা ভাষ অতঃ। উদ্ধর্থে সংসারাদনর্থকা আন্ধান বিদ্যানি কাল্যানা বিদ্যানি কাল্যানা বিদ্যানি কাল্যানি কাল্যানিক কাল্যানিক

ভাষাক্রণাল।— যে কালে এই প্রকার যোগারত ইইবে, সেই সময় (সাধক)
আনর্থা মৃত্পূর্ণ সংসার হইতে আপনা হইতেই উক্ত হয়। (ইহাই বলা ইইতেছে)
সংসারনিমগ্ন আত্মাকে আধার সাহায্যেই সেই সংসার হইতে উর্জে উঠাইবে
অর্থাৎ ধ্যানযোগে আরত করিবে। আত্মাকে অবসর করিবে না অর্থাৎ
অধংপতি করিবে না, কাবণ আত্মাই আত্মার বন্ধু; (লোকপ্রসিদ্ধা) বন্ধু প্রকৃত
পক্ষে মোক্ষের প্রতিকূলই হয়, কাবণ ঐ বন্ধু মেহরূপ সংসারবন্ধনের হেতু।
এই লল্ল অংধারণ করা ইইয়াছে মে, আত্মাই আত্মার বন্ধু (অপর ব্যক্তি বন্ধু)
নহে, আত্মাই আত্মার শক্র, বাহিরের যদি কেই অপকারী শক্র হয়, সে আত্মার
ব্যবহারেই শক্র হয়, এই কারণে (ক্ষলেও) অবধারণ করা ইইভেছে যে, আত্মাই
আত্মার শক্র (অপর কেহ নহে)। ৫॥

বন্ধুরাত্মাশ্বনস্তস্ত যেনাইয়বাত্মনা জিঙঃ। অনাত্মনস্ত শক্তত্তে বর্তেতাইয়চ শক্তবং॥৬॥

জন্ম ।— যেন আত্মনা এব আত্মা জিতঃ তম্ম আত্মা আত্মনঃ বরুঃ অনাত্মনঃ (অজিতেক্তিরম্য) আত্মা এব শক্রবং শক্তত্বে বর্তেত॥ ৬॥

মূলামুবাদ।—যে ব্যক্তি আত্মার বলে দেহাদি জয় করিতে পারিয়াছে, দেই ব্যক্তির আত্মাই আপনার বন্ধু হয়, যে ব্যক্তি অজিতেন্দ্রিয় তাহার আত্মাই শক্র-বং আত্মার অহিতাচরণ করিয়া থাকে ॥ ৬॥

ভাষ্য। - আইশ্ব বন্ধুরাইশ্বব রিপুরাত্মন ইত্যুক্তং তত্র কিং লক্ষণ শাত্মানো-বন্ধু কিংলক্ষণোবাত্মনো রিপুরিত্যুচ্যতে। বন্ধুরাত্মাত্মনন্তম্ম তত্ম আত্মনঃ স ৩১৮ উর্থাধন। [০য়-১০ম সংখ্যা;

আবা বন্ধ: যেন আবানা আবৈ কি ভঃ অবা কার্যাকারণগভ্যাতঃ যেন বলীক্তঃ জিতেক্তিয় ইভার্থ**ে অনাখনস্ত অজিতাখনস্ত শত**ুজে শক্র**ভাবে বত্তেত** আবৈরৰ শক্রবদ্ধথা অনোত্রা শক্ররাত্মনোহপকারী তথা আত্রা আত্রনোহ-পকারে বর্ত্তে ইত্যর্থ:॥৬॥

ভাষাক্রোদ। অংখ্যাই আত্মার বন্ধু ও শক্র ইহা বলা হইয়াছে। কিরূপ জাত্ম। হাত্মাৰ বন্ধু এবং কিন্তেপ আগ্ৰাইনা আগ্ৰাৰ শত্ৰ হয়, ভাহাই বলা হই-তেছে। দেই সাত্মাই আত্মার বন্ধু, যে সাত্মার দারা আত্মা জিড অর্থাৎ বশীক্বত হটয়। তে, এই তলে আয়া এই শক্টার অর্থ নেহ ও হল্রিয় সূমূহ। বিতে ক্রিয় বাজির আ্যাই আ্যার ব্লু ইহাই তাংপ্রা); অনাত্মা (অর্থাৎ) অজিতেজির ব্যক্তির আত্মাই শত্রর ক্রায় শত্রভাব (অর্থাং) অপকার করিতে প্রবুত্ত হয়। অজিতেন্ত্রিয় আগ্লা আপনিই আপনার অপকার করিয়া থাকে ইহাই অর্থ॥৬॥

> জিতাল্লনঃ প্রশান্ত্র পর্যাল্লা স্মাহিত:। नीट्टाक्टळ्यबङ्ट १ वर्ष ७ थ। मानाशमान्द्राः ॥ १॥

অষয়।— জি গায়নঃ প্রশান্ত্র (সংস্থাসিনঃ) শাক্তোঞ্জ্যত্ঃবেষু তথা মানা-প্মান্যো: প্রমাল্লা স্মাহিতঃ (সাক্ষ্যোল্লভাবেন প্রকাশিতঃ) ভব্তি ॥ ৭ ॥

মলামুবাদ ৷—-দেহ ■ ইন্দ্রি দক্লকে যে জর করিতে পারিগাছে ও যাহার অনতঃকরণ প্রায়র, সেই সর্যাসার শীত উক্ষেও ভক্তেনিত স্থাধ ও এঃৰ সম্পর্কে এবং মান বা অস্মানেও প্রনাত্মা দাক্ষাং আয়ভাবে প্রবাশ পাইয়া शांदकन ॥ १ ॥

ভাষা ৷--জি গান্ত্রন ইতি ৷ জিতামুকঃ কার্য্যকার শদিশসংখাত আয়া জিতো বেন স্বিতামা ওভা জিতাজানঃ প্রশান্তভা প্রসায়ে: করণভা স্তঃ সংভাসিনঃ পরমাত্রা সমাহিতঃ সাক্ষানাত্রভাবেন বর্ততে ইত,র্ঘঃ। কিংচ শীতোঞ্চর্থ-হঃখেরু তথা মানে চ অপমানে চ মানাপমানয়োঃ পূজাপরিভবয়ো:॥ १ ॥

ভাষ্যামুবাদ।—জিভামন ইডাদি (শ্লোকের অর্থ) 'ভিতামা' দেহ ও ইন্দ্রিগদির সমষ্টিরূপ আত্মা জিত হটগাছে যংকর্তৃক, সেই জিতাত্মা "প্রশাস্ত" প্রমান্তিক জিতাকা ও প্রমান্তিক হইলে সংকাসীর প্রমাকা সমাহিত (হয়) অর্থাং সাক্ষাং আত্মভাবে প্রকাশ পায়, শীত উঞ্চ (ও ডজ্জনিত) রুধ হুংধ সমূহে এবং মানে বা অপমানে (দকল অবস্থাতেই প্রমাত্মা সমাহিত হয়); মান 🛮 অপ্যান শকের অর্থ পূজা 🗷 পরিভ্রাণ 🛚।

জ্ঞানবিজ্ঞানতৃপ্তাস্থা কৃটস্থোবিজ্ঞিকেঞ্চিয়ঃ। যুক্ত ইত্যাচ্যতে যোগী সমলোষ্টাশ্মকাঞ্চনঃ॥৮॥

শ্বয়।—জ্ঞানবিজ্ঞানতৃপ্তাত্ম। কুটস্থঃ বিজিতেজিয়ঃ সমলোটাশ্মকাঞ্নো-যোগী যুক্ত: (সমাহিতঃ) ইতি উচ্যতে॥৮॥

মূলাতুবাদ।——জ্ঞান । বিজ্ঞানের দারা যাহার আয়া তৃথ, যে কৃটস্থ (অপ্রকাশপত) যাহার ইজিরান্চর বলীকৃত, লোট প্রস্তার ও কাঞ্নে যাহার সমতাবুদ্ধি হইয়াছে, সেই যোগীই যুক্ত (অর্থাং সমাহিত) বলিয়া নিদিট হয়॥৮॥

ভাষা।—জানেতি! জ্ঞানবিজ্ঞানতৃপ্তায়া জ্ঞানং শাস্ত্রোক্তপদার্থানাং পরিজ্ঞানং বিজ্ঞানং ও শাস্ত্রতো জ্ঞাতানাং তথৈব স্বান্থভবকরণং। তাভাঃং জ্ঞানবিজ্ঞানাভাঃং ভূপঃ দংজাতালং প্রভায়ঃ আ্ঝা অন্তঃকরণং যুক্ত সজানবিজ্ঞানভূপ্তায়া কুটস্থোহপ্রকশা ভবভাত্যর্থঃ। বিজিতোক্তরণত। যুক্তঃ স্মাহিত ইতি স উচাতে কথ্যতে। সুযোগা সমলোফীশ্মকাঞ্চনঃ বোপ্তাশ্মকাঞ্চনঃ বোপ্তাশ্মকাঞ্চনঃ বাজাশ্মকাঞ্চনঃ বিভাগিকাঞ্চনানি স্মানি যুক্তঃ স্বালোকাঞ্চনাল স্থানি ব্যাহার স্বালোকাঞ্চনঃ । ৮॥

ভাষাম্বাদ। — জ্ঞান ইত্যাদি (শ্লোকের অর্থ) 'জ্ঞানবিজ্ঞানত্প্রায়া", জ্ঞান (শব্দের অর্থ) শাস্ত্রীয় বিষয় সমূহের পরিজ্ঞান; বিজ্ঞান (শব্দের অর্থ) শাস্ত্রের হারা পরিজ্ঞাত সেই, পদার্থ সমূহের সেই ভাবে নিজের অনুভবের বিষয়ীকরণ, এই প্রকার জ্ঞান । বিজ্ঞানের হারা যাহার আত্ম. (অর্থাৎ অন্তঃকরণ) তৃপ্ত হইন্যাছে (অর্থাৎ) অন্ত সকল বস্তব প্রতি অপেক্ষণীয়তা নাই, এই প্রকার বৃদ্ধি যুক্ত হইয়াছে, সেই জ্ঞানবিজ্ঞানত্প্রায়া (এই শব্দের হারা অভিহিত হইতেছে)। এবং 'ক্টছ' অপ্রকল্প হয়। বিজিতেক্সিয়, যে ব্যক্তি উদ্ধৃণ হয়, সেই যুক্ত (অর্থাৎ) সমাহতে উক্ত হইয়া থাকে। সেই যোগী ''সমলোষ্টাশ্মকানন' ক্রেই (জ্বা) অরু (ক্রিকা) অরু (ক্রিকা) ক্রিকার সমান

সমলোষ্টাশ্মকাকন 🕅 🖟 🖟 : : : ::: UUL. 18

रक्ष्मिक्ष्य मानी नमधायः विवादक्ष्यः ।

মধ্যেপি চ পাপেষু সমবৃদ্ধিবিশিষাতে॥ ১॥

শ্বন ।— সুহান্মিত্রাযুর্গাদীন মধ্যন্থ ছেব্যবন্ধু সাধুষু অপি চ পাপেন্ব সমবৃদ্ধিঃ
(বোগী) বিশিষ্যতে (সর্বোংক্সষ্টোভবতীত্যর্থঃ)॥ ॥॥

মূলান্থবাদ !--- সুহৃং, মিত্র, জরি, উদাসীন, মধ্যত্ব, ছেধ্য, বন্ধু, সাধু ও ওং - উদোধন ৷ (৩য়--->৽ম সংখ্যা;

প্রিমানক্ষকথায়ত। • প্রিমানক্ষিত। • প্রিমানক্ষিত। • প্রিমানক্ষিত। • প্রিমানক্ষিত।

শীশীপরমহংস রামক্ষেত্র সহিত শীঘুক্ত ঈশানচন্দ্র মুর্গোপার্চ্চ ডাক্তার সরকান, শীমুক্ত গিবিশচন্দ্র ঘোষ ইন্ত্রামিন

ৰ গোপক থন।

প্রথম পরিচেছদ

[গৃহস্থান্ম কণাপ্রসংক।]

আখিন মাসের শুক্লা চতুদ্দা তিনি। সপ্তনী, অটমী ও নামী তিন দিন ধরিয়া মহামায়ার পূজা মহোংমন হইয়া গিয়াছে। দশমীতে নিজয়া ও তহুপলক্ষে পরস্পরের প্রেমালিঙ্গন ব্যাপার সম্পন্ন ইইয়াছে। ভগবান শ্রীরাম-কৃষ্ণ ভক্তসঙ্গে কলিকাভার অন্তর্বতী শ্যামপুকুর নামক পল্লীতে বাস করিতে-ছেন। শরীরে কঠিন ব্যাধি, গলার ক্যান্সার। চিকিৎসার্থ কলিকাতার আগমন করিয়াছেন। বলরামের বাড়ীতে যথন ছিলেন, কবিরাজ গঙ্গাপ্রসাদ দেখিতে আদিয়াছিলেন। তাঁহাকে পরমহংসদেব জিজ্ঞাসা করিয়াছিলেন, এ রোগ সাধ্য, না অসাধ্য। কবিরাজ এ প্রশ্নের উত্তর দেন নাই, চুপ করিয়া ছিলেন। ইংরাজী ডাক্তারেংগও রোগটী অসাধ্য, এ কথা ইঙ্গিত করিয়াছিলেন। এক্ষণে ডাক্টার সরকার চিকিৎসা করিতেছেন।

আজ বৃহম্পতিবার, ২২শে অক্টোবর, ১৮৮৫ দলে। শ্রামপুক্রছিত একটা বিতল গৃহমধ্যে ভগবান শ্রীরামকৃষ্ণ, একটা হতলাথরের মধ্যে শ্যা রচনা হইয়াছে, ভাহাতে উপবিষ্ট। ডালোর সরকার, শ্রীয়ত ঈশানচক্র মুখোপাধ্যার ও ভক্তেরা সল্পুথে এবং চারিদিকে সমাসীন। ঈশান বড় দাতা, পেন্সন লইয়াও দান করেন, ঝা করিয়া দান করেন, আর সক্ষাই ঈশার চিন্তায় থাকেন। পীড়া শুনিয়া তিনি দেখিতে আসিয়াছেন। ডাজার সরকার চিকিৎসা করিতে আসিয়া ৬। ৭ ঘণ্টা করিয়া থাকেন—ভগবান্ শ্রীরামকৃষ্ণকে সাতিশয় ভিজিশ্রা করেন, ও ভক্তদের সহিত পাম আজীবের ভার বাবহার করেন।

রাত্তি প্রায় ৭টা। বাহিরে জ্যোৎসা – পূর্ণাবয়ব নিশানাৰ যেন চারিদিকে স্থা চালিয়াছেন। ভিতরে দীপালোক। ঘরে অনেক লোক, অনেকে

প্রথম ভাগ ছাপা ইইভেছে।

মহাপুরুষ দর্শন করিতে আসিয়াছেন। সকলেই এক দৃষ্টে তাঁহাব দিকে চাহিষা বহিষ্টেছন ভানিবেন, ভিনি কি বলেন। দেখিবেন, ভিনি কি করেন।
ইংশ্বেক নেশ্বিষী প্রমহংসদেব বলিতে লাগিলেন,

(निलिश्व भरमादी)

"যে স. দারী স্বীরের পাদগলো ভক্তি কেথে সংশার কবে, সে ধতা, সে বীরপুর্ষ: যেমন কাজর মাথায় ও মন ধোঝা আছে, ভাবে বরু যাচেড, মাথায় বোঝা, তবুও দে দেখতে। খুন শক্তি না থাক্লে হয় ।।।

"যেমন পাঁকাল মাছ পাকে থাকে, কিন্তু গাঘে একট্ও পাঁকে নাই। পানকোটী কলে স্কল্ডু মারে কিন্তু পাখা এক বি আছে দিলেই আর नार्य जल थारक ना ।

(নিলিপ্ত হ'বার উপায়)

"किन्ह मः मारत निनिश्वेष्ठारव थाकृष्ठ शिल, किन्नु माधन कता हारे। দিন কতক নির্জনে থাকা দরকাব, তা এক বছব হোক, ছ মাদ হোক, তিন মাদ হোক, বা এক মাদ হোক। সেই নির্জ্ঞনে ঈর্ধর চিন্তা করুতে হয়, সর্ব্বদা তীহাকে ব্যাকুল হয়ে, ভক্তির জন্ম প্রার্থন। কর্তে হয়। আর মনে মনে ৰলতে হয়, 'আমার এ সংগারে কেউ নাই,যাদের আপনার বলি,তারা ও দিনের জন্ত , ভগবানু আমার একমার প্রাপনার লোক, ভিনিই আমার স্পস্থ, হায় ! কেমন করে তারে পাব।

"ভজিলাভের পর সংসার করা যায়। যেমন হাতে তেল মেণে কাটাল ভাঙ্গলে, হাতে আর আটা লাগে না।

''সংসার জলের স্বরূপ, আবর মালুষের মনটা যেন ছগ। জলে যদি ছধ রাখতে যাও, ছবে জলে এক হয়ে যাবে। তাই নির্জন স্থানে দই পাতে **হয়। দই পেতে মাথম** তুল্তে হয়। মাথম তুলে যদি জলে রাখ, ভা'হলে জলে भिगद ना, िर्निश्च हात्र जाम एक थाकरव।

''ভক্জানীর। আমাং বলেছিল, মহাশয় আমাদের জনক রাজার মত। তার সতন নিলিপ্রভাবে আমবা সংলার কববো। আমি বল্ম, নিলিপ্রভাবে সংসার করা বড় কঠিন, মুখে বল্লেই জন বাজ হ হয়। হায় না।

"জনকালা হেটমুণ্ড হবে, উদ্ধি পদ করে কত তপস্ত্যা করেছিলেন। टिंगारा इस्टेम् वा किंक्षण करत करत ना, किन्छ माधन हारे, निर्द्धान वाम চাই। নিৰ্দ্ধনে জ্ঞানলাভ, ভজ্জিণাভ করে, তবে গিয়ে সংশার কর্তে হয়। দই নিৰ্দ্ধনে পাত্তে হয়। ঠেলাঠেলি নাড়ানাড়ি করলে দই বদে না।

"জনক নির্লিপ্ত বলে তাঁর একটা নাম বিদেহ—কি না দেহে দেহবুদ্ধি নাই। সংসারে থেকেও জীবলুক হয়ে বেড়াতেন। বিস্তু দেহবুদ্ধি ধাওয়া অনেক দ্বের কথা। খুব সাধন চাই।

"জনক ভারী বীরপুক্ষ। হ্থানা তলোহার ঘুক্তেন। একথানা ভান, একথানা কলা।

(সংগার আধ্রমের জ্ঞান ও সন্মান আধ্রমেব ক্রান)

ুষদি বলা, সংসার আশ্রমের জ্ঞানী, আর সন্নাদ আশ্রমের জ্ঞানী, এ হ্যের ডফাং আছে কি না। তার উত্তব এচ যে, ছই-ই এক জ্ঞানিষ। এটীও জ্ঞান, উটাও জ্ঞান-এক জিনিষ। তবে সংসারে জ্ঞানীবও ভর আছে। কামিনী কাঞ্চনের ভিতর থাক্তে গেলেই একটু না একটু ভর আছে। কাজলের ঘরে থাক্তে গেলে যত সিমানাই হও না কেন, কাল দাগ একটু না একটু গারে লাগ্রে।

"মাথম ভুলে যদি নৃতন হাডিতে রাপ, তা হলে মাথম নত হবার কোনও সন্তাবনা থাকে না। কিন্তু যদি বোলের হাঁড়িতে রাথ, তা হলে সন্দেহ হয়।

"শই যথন ভাজা হয়, ছ চারটে খই খোলা থেকে টপ্টপ্করে লাফিরে পড়ে। সেগুলি যেন মলিকা ফুলের মত, গায়ে একটুও দাগ থাকে না। খোলার উপর যে দব থই থাকে, দেও বেশ থই তবে অত ফুলের মত হয় না, একট্ গায়ে দাগ থাকে। সংসারত্যাগী সন্ন্যাগী যদি জ্ঞানলাভ করেন, তবে ঠিক এই মলিকে ফুলের মতন দাগশৃত্য হয়। আর জ্ঞানের পর সংসার খোলায় খাকলে, একটু গায়ে লাল্চে দাগ হতে পারে। জনকরাজাব সভায় এক ভৈরবী এফেছিল। স্ত্রীলোক দেগে জনকরাজা হেটমুখ হয়ে, চোথ নীচু করেছিলেন। ভৈরবী তাই দেখে বলেছিলেন, হে জনক। ভোমার এখন স্ত্রীপ্রেষ বলে ভেম ! প্রভান হলে পাঁচ বছরের ছেলের ফভাব হয়—তখন স্ত্রীপ্রেষ বলে ভেদ বৃদ্ধি থাকে না।

'যাই হোক, যদিও সংসারের জ্ঞানীর গায়ে দাগ থাকতে পারে, সে দাগে কোনও ক্ষতি হয় না। চল্লে কলঙ্ক আছে বটে, কিন্তু আলোর ব্যাঘাত হয় না।

(জ্ঞানের পর কর্মা লোকসংগ্রহার্থ)

"কেউ কেউ ক্ষানলাভের পর লোকশিক্ষার জন্ম করে, যেমন জনক ও

নারদাদি। লোক-শিক্ষার জন্ম শক্তি থাকা চাই। খাষিরা নিজের নিজের জ্ঞানের জন্ম ব্যস্ত ছিলেন। নারদাদি আচার্য্য গোকের হিতের জন্ম বিচরণ করে বেড়াতেন। তারা বীর পুরুষ।

"হাবাতে কাঠ যখন ভেদে বায়, একটী পাথী বসলে ডুবে যায়: কিন্তু বাহাত্রি কাঠ যথন ভেদে যায়, তখন গরু, মানুষ, এমন কি, হাতী পর্যান্ত তার উপর যেতে পারে। Steam boat আপনি ও পারে যায়, আবার কত মানুষকে পার করে দেয়।

"নারদাদি আচার্য্য ওই বাহাছব্রি কাঠের মত, ওই steam-boatএর মত। "কেউ আম থেয়ে গামছা দিরে মুথ পুঁচে বদে থাকে, পাছে কেউ টের পায়। আবার কেউ কেউ একটা আম পেলে, কেটে একটু একটু সকলকে দেয়, আর আপনিও খাও।

নাম্বাদি আচার্য্য সকলের মঙ্গলের জন্ম জ্ঞানগাডের পরও ভক্তি নিয়ে किरमग।

দ্বিতীয় পরিজ্ঞেদ।

[ভক্তিযোগ—যুগধর্ম কথা প্রসঙ্গে]

জ্ঞানযোগ । ভক্তিযোগ।

ভাকোর। জ্ঞানে মাতৃষ অবাক হয়, চকু বুজে যায়, আর চকে জল আদে। তথ্য ভক্তির দরকার হয়।

শ্রীরামকুক্ষ। ভক্তি মেয়ে মানুষ, তাই অন্তঃপুর পর্যান্ত যেতে পারে। জ্ঞান বারবাড়ী পর্যান্ত যার।

ভাকার। কিন্ত অন্তঃপুরে যাকে তাকে চুক্তে দেওয়া হয় না। বৈশারা ঢ্কৃতে পারে না। জ্ঞান চাই।

প্রীথামক্ষ। ঠিক পথ জানে না, কিন্তু ঈশবে ভক্তি আছে, তাঁকে জানবার ইচ্ছা আছে, এরূপ লোক কেবল ভক্তির জোরে ঈশ্বর লাভ করে। একজন ভারি ভক্ত জগলাথ দর্শন করতে বেরিয়েছিল, পুরীর কোন্পথ দে कानरक। ना, मिक्कन मिरक ना शिरह शिक्तम मिरक शिक्ति। १९ जूलिहिन वर्षे, किन्छ बाकून राम्न लाकरनत जिल्लामा कताला। जाता वान मिरन, 'এ পথ नम्न, ঐ পথে যাও। ভক্তটা শেষে পুরীতে গিরে জগন্নাথ দর্শন কর্লে। না জানলেও (कड़े ना (कड़े रहन (भग्र।

ভাৰুলার। সে ভূলে তো গিছিল। আীরামঞ্জা। হাঁ, ভা হয় বেটে, কিন্তু শেষে পায়। একজন জিজাগা করিলেন, ঈশার সাকার না নিরাকার। (ঈশার সাকার না নিরাকার)

শীরামরুষ্ণ। তিনি দাকার, আবার নিরাকার। একজন সন্নাদী জগনাপ দর্শন করতে গিছিল। অগলাথ দর্শন করে দলেহ হল, ঈথর দাকার, না নিরাকার। হাতে দণ্ড ছিল, দেই দণ্ড দিরে, দেখ্তে লাগ্ল—ক্ষণনাথের গায়ে ঠাকে কিনা। একবার এধার থেকে ওধারে দণ্ডটী নিয়ে যাবার সমর দেখলে যে, জগনাথের গায়ে ঠেক্লো না—থেন দেখানে ঠাকুরের মূর্ত্তি নাই। পুনর্কার দণ্ড এধান থেকে ওধারে নিয়ে বাবার সমর বিশ্বহের গায়ে ঠেকল। তথন সন্নাদী বৃঝ্ল, যে ঈথর দাকার, আবার নিরাকার। কিন্তু এটা ধারণা করা বড় শক্ত। 'যিনি নিরাকার, তিনি আবার সাকার কিন্ধপে হবেন ং' এ সন্দেহ মনে উঠে। আবার সাকার যদি হন, তো এত নানারূপ কেন ং

ভাক্তার। বিনি আকার করেছেন, তিনি সাকার। তিনি আবার মন করেচেন, তাই তিনি নিরাকার; তিনি সবই হতে পারেন।

শীরামক্ষণ। **ঈশরকে লাভ** না করতে পারলে, এ সব বুঝা যায় না। সাধকের জন্ম তিনি নানাভাবে নানারূপে দেখা দেন।

"একজনের এক গামলা রঙ্ছিল। অনেকে তার কাছে কাপড় রঙ্ কর্তে আস্তো।সে লোকটা জিজাস। করতো, 'তুমি কি রঙে ছোপাতে চাও'। একজন হয়তো বল্লে, 'আমি লাল রঙে ছোপাতে চাই ?' অমনি সেই লোকটা গামলার রঙে সেই কাপড় ধানি ছুপিয়ে বলতো, 'এই নাও তোমার লাল রঙে ছোপান কাপড়।' আর একজন হয়তো বল্লে, 'আমার হল্লে রঙে ছোপান চাই।' অমনি সেই লোকটা সেই গামলার কাপড় থানি ডুবিরে বলতো, 'এই নাও জোমার হল্লে রঙা।' নীলরঙে ছোপাতে চাইলে, আবার সেই একই গামলায় ডুবিয়ে সেই কথা, 'এই নাও তোমার নীলরঙে ছোপান কাপড়।' এই রকমে যে, যে রঙে ছোপাতে চাইতো, তার কাপড় সেই রঙে সেই একই গামলা হতে ছোপান হ'ত। একজন লোক এই আশ্রুষ্য ব্যাপার দেখ্ছিল। যার গামলা, সে জিজাসা করলে, 'কেমন হে! তোমার কি রঙে ছোপাত হবে?' তথন সে বললে, 'ভাই! তুমি যে রঙে রঙেছ, আমার সেই রঙ দাও।' (সকলের ছাম্র)

"একজন বাছে গিছিল--দেখলে, গাছের উপর একটা স্থলর জানোয়ার রয়েছে। সে এসে আর একজনকে বল্লে, ভাই। অমুথ গাছে নামি একটী लाल ३ ए छ। त्नामात (मर्थ धनुम। ' दम लाक है। यन तम, 'व्यामिख (मर्थ এদেছি, তাদে লাল রঙ হতে যাবে কেন, সে যে সবুজ রঙ।' আরে একজন বললে. 'না না, দে সবুজ হতে যাবে কেন, সে যে হলদে।' এইরপে আরও কেউ কেউ বললে বেগুনি, নীল, কাল ইত্যাদি। শেবে ঝগড়া। তথন তারা গাছতলায় গিয়ে দেখে, একজন লোক বসে আছে। তাকে জিজ্ঞাসা করায়, সে বললে, 'আমি এই গাছতলায় থাকি, আমি দে জানোয়ারটীকে বেশ জানি। ভোমরা যা যা বলছো, দব সভা, দে কথন লাল, কখন সবুজ, বখন নীল কথন হলদে, আরও দব কত কি হয়। কখন দেখি, কোন রঙই नारे।

"যে ব্যক্তি দ্রাদর্শন স্থার চিস্তা করে, সেই জানতে পারে, তার স্বরূপ कि ? दन वाक्टिरे जारन (य, जेनेत मानाजारण (मथा (मन। नानाजारव (मथा দেন। তিনি স্গুণ, আবার নিগুণ (The Absolute)। যে গাছত্লায় থাকে, সেই জানে যে, বছরূপীর নানাবঙ্গ, আবার কথন কথন কোন রঙ্গই থাকে না। অন্ত লোকে কেবল তর্ক ঝগড়া করে কট্ট পায়। তিনি সাকার, তিনি নিরাকার। কি রকম জান ? যেন স্প্রিদানক সমুজ, কুল কিনাবা নাই। ভক্তি হিমে এই সমুদ্রের স্থানে স্থানে জল বরফ হয়ে যায়, যেন জল বরফ মাকারে জমটি বাঁধে, অর্থাৎ ভক্তের কাছে তিনি বাক Personal God হরে, কখন কখন সাকার রূপ হয়ে দেখা দেন। আবার জ্ঞানসূর্য্য উঠলে সে বরফ গলে যার।"

ভাক্তার। স্থ্য উঠলে ব্রহ্ম গলে জল হয়, আবার জানেন, জল আবার নিরাকার বাস্প হয় ?

শ্রীরামরুষ্ণ। অর্থাং 'ব্রহ্ম সভ্য, জগৎ মিথা।' এই বিচারের পর সমাধি হলে রূপ টুপ উড়ে বায়। তথন আর ঈশরকে ব্যক্ত (Personal God) वरल दोध हम ना। कि जिनि, मूर्थ वला याय न।। दक वनदव ? विनि वलदन, তিনিই নাই। তিনি তাঁর আমি আর খুঁজে পান না। তথন এক নিতুৰ (The Absolute)। তথন তিনি কেবল বোধে বোধ হন। মন, বৃদ্ধি ছারা তাঁকে ধরা বায় না (The unknown and the unknowable)।

"তাই বলে ভক্তি চক্র, জ্ঞান প্রা। শুনেছি, খুব উত্তয়ে আর দক্ষিণে

শমুর আছে। এত ঠাতাবে, জল মাঝে মাঝে বরফের টাই হয়। জাগজে চলেনা। সেখানে গিলে আটকে যায়।

ডাকার। ভক্তিপণে মানুষ মাটকে যায় ?

শীরামরুঞ। হাঁ, তা যায় বটে, কিন্তু তাতে হানি হয় না, কেন না, সেই সচিদানন্দ সাগবের জলই জমে বরফ হয়েছে। যদি আরও বিচার করতে চাও, যদি 'এক সত্য, জগং মিথ্যা' এই বিচার কর, তাতেও ক্ষতি নাই, জ্ঞানক্ষে বরফ গলে যাবে—তবে সেই সচিদানন্দ সাগরই রইল।

(কাঁচা আমি ও পাকা আমি , ভক্তের আমি)

"জ্ঞানবিচারের শেষে সমাধি হলে, আমি টামে কিছু থাকে না। কিন্তু
সমাধি হওয়াবড় কঠিন। 'আমি' কোন মতে যেতে চার না। আর যেতে
চার নাবলে, ফিরে ফিরে এই সংসারে আসতে হয়। "গরু হাষা হাষা
(আমি, আমি) করে, তাই এত ছংখ। সমস্ত দিন লাঙ্গল দিতে হয়—এীখা নাই,
বর্ষা নাই। কিষা ক্লাইয়ে কাটে। তাতেও নিস্তার নাই। চামারে চামড়া
করে, জুতো তৈয়ার করে। অবশেষ নাড়া ভুঁড়া থেকে তাঁত হয়। ধুত্রির
হাতে পড়ে যথন ভুঁভুঁভুঁ (ভুমি ভুমি) করে, তথন গরুর নিস্তার হয়।

"যথন জীব বলে, 'নাহং', 'নাংং' 'আমি কেহ নই, আমি কঠা নই, হে ঈরর ! তুমি কঠা, আমি দাস, তুমি প্রভু', তথন নিভার, তথনই মুক্তি।"

ডাক্তরে। কিন্তু ধুম্বারির হাতে পড়া চাই। (পক্লের হাপ্র)

জ্ঞীরাম ক্ষণ। যদি একাভ 'আনি'ন যায়, তবে থাক্ শালা 'দাস্ আমি' হয়ে। সেকলের হাভ)

"সমাধির পর কাহারও কাহারও অ.মি থাকে,—দাস আমি, ডভের আমি। শঙ্করাচার্যা বিভার আমি' লোক শিক্ষার জন্ত রেখে দিছিলেন।

"দাস আমি,' 'বিতার আমি,' 'ভকের আমি,' এরই নাম 'পাকা আমি,'।
'কাঁচা আমি' কি জান? আমি কঠা, আমি এত বড় লোকের ছেলে, আমি
বিদ্যান, আমি ধনবান, আমাকে এমন কথা বলে? এই সব ভাব। যদি কেউ
বাড়াতে চুার করে, তাকে যদি ধর্তে পারে, ভাহলে প্রথমে জিনিষ পত কেড়ে
নের, ভার পর উত্তম মধ্যম মারে, ভারপর প্লিশে দেয়। বলে, 'কি!
জানে না, কার চুরি করেছে।'

(বালকের আমি)

"ঈশ্র লাভ হলে গাঁচ বচ্চবেৰ বালকের স্বভাব হয়, 'বালকের আমি'ও

'পাকা আমি।' বাশক কোন গুণের বশ নয়। ব্রিগুণাভীত। সন্ধ্য রক্ষঃ, ভমঃ কোন গুলের ধশ নয়। দেখ, ছেলে তমোগুণের বশ নয়। এই মাত্র ঝগড়া মারামারি কর্লে, আবার তৎকণাৎ তাবই গলা ধরে কত ভাব, কত (ধলা। আবার রজো গুণের ও বশ নয়। এই খেলা-মর পাৎলে, কত বলো-বস্তাবার কিছুক্ষণ পরেই সংপড়েরইলো। মার কাছে ছুটেছে। হয়ত একথানি হুদ্র কাশড় পরে বেহাচেচ। থানিকক্ষণ পরে কাপড় খুলে পড়ে পেছে। হয় কাণড়ের কথা একেবারে ভুলে পেল—ন্য, বল্লদ্বিষ করে বেড়াকে। যদি ছেলেটাকে বল, 'বেশ কাপড় খানি, কার বাপড় রে?' বে বলে, 'আমাৰ কাপড়, আমার বাবা দিয়েচে।' যদি বল, 'লক্ষী ছেলে, আমায় কাপড় খানি দাও না।' সে বলে, 'না, আমার কাপড়, আমার বাবা দিয়েছে, না, আনি দোব না।' তারপর ভুলিয়ে একটী পুঁতুল, কি একটী বাঁশি যদি হাতে দাও, তা হলে পাচ টকো দামের কাণড় থানি তোমায় দিয়ে চলে ষাবে। আমাবার পাঁচ বছরের ছেলের সন্থ্রণেরও আঁটে নাই। এই পাড়ার থেলুড়েদের সঙ্গে কত ভালবাদা, একদও না দেখলে থাক্তে পারে না। কিন্তু বাপ মার সঙ্গে ধধন সভা জাঙগায় চলে গেল, তথন নৃতন ধেলুড়ে হ'ল। তাদের উপর তথন সব ভালবাস। পড়লো। প্রাণো খেলুড়েদের এক রকম একেবারে ভূলে গেল। তারপর জাত অভিযান নাই। মা বলে দিয়েছে, 'ও তোর দাদা ১য়,' তা সে ষোল খান: জানে যে, এ আমার ঠিক দাদা। তা একজন যদি বামুনের ছেলে হয়, আর একজন যদি কামারের ছেলে হয়, তো এফণাতে বদে ভাত থাবে। আর ওচি মণ্ডচি নাই, হেগো পৌদে খাবে। আবার লোক লক্ষা নাই, ছোঁচাবার পর যাকে তাকে পেছন ফিরে বলে, 'দেথ (मिथि, धामात (काँ) न करवरक किना?'

"আবার 'হুড়োর আমি' আছে (ডাক্তারের হাস্ত)। বুড়োর অনেক গুলি পাन। জাতি অভিমান, गड्या, खुना, ভन्न ইত্যাদি। বিধর বুজি, পাটোয়ারি, কপটতা: যদি কারুর উপর আকোছ হয়, তো সহজে বার না, হয়তো যতদিন বাচে, ভতদিন যার না। তারপর পাণ্ডিত্যের অংকার, ধনের অংকার ; এই সব 'বুড়োর আমি' কাঁচা আমি।

(ख्डान काहारण त्र इव ना)

শ্রীরামকৃষ্ণ। ৪া০ জনের জ্ঞান হয় না। যার বিজ্ঞের অহকার, যার পাতিতোর অহকার, বার ধনের অহতার, তার জ্ঞান হয় না। এসব লোককে ৰদি বলা যায় যে, অমুখ জায়গায় বেশ একটা সাধু আছে, দেখুতে যাবে ? অমনি নানা ওজর করে বলে, যাব না। আর মনে মনে বলে, আমি এত বড় লোক, আমি যাব ?

"তমোগুণের স্বতাব অহ্ফার। অংকার অজ্ঞান থেকে হয়, তমোগুণ থেকে হয়।

"পুরাণে আছে, রাবণেব রজোগুণ, কুস্তকর্ণের তমেরগুণ,বিভীষণের সর্গুণ। বিভীষণ রামচক্রকে লাভ করেছিলেন। তমোগুণের আর একটা লক্ষণ— ক্রোধ। ক্রোধে দিক্ বিশিক্ জ্ঞান থাকে না। হত্তমান লক্ষা পুড়ালেন, এ জ্ঞান নাই যে, সীতার কুটার নত হবে।

"আবার তমোগুণের আর একটা লক্ষণ—কাম। পাথুরেঘাটার গি ীক্স ঘোষ বলেছিল, কাম ক্রোধাদি রিপু এরাতো ঘাবেনা, এদের মোড় ফিরিমে লাও। ঈর্থরের কামনা কর। সক্তিদানন্দের সহিত রমণ কর। আর ক্রোধ্ যদি না যায়, তবে ভক্তির তমঃ আন। কি! আমি ছ্র্গানাম করেছি, উদ্ধার হ'ব না। আমার আবার পাপ কি? আমার আবার বন্ধন কি? ভারপর ঈর্ম্বর লাভ করবার লোভ কর। ঈর্মারের রূপে মুগ্ধ হও। আমি ঈর্মবের দাস, আমি ঈ্যারের ছেলে, যদি অহস্কার করতে হয়, তো এই অহস্কার কর। এই রক্মে ছয় রিপুর মোড় ফিরিমে দিতে হয়।

ভাক্তার। ইন্দ্রির সংযম করা বড় শক্ত। ঘোড়ার চক্ষের ছুদিকে ঠুন্দি দাও। কোন কোন ঘোড়ার চকু একেবারে বন্ধ করিতে হর।

শ্রীরাসকৃষ্ণ। তার যদি একবার কুণা হয়, ঈশ্বরের যদি একবার দর্শন লাভ হয়, আত্মার যদি একবার সাক্ষাংকার হয়, তা হলে আর বোন ভয় নাই—তথন ছয়রিপু আর কিছু কর্তে পার্বেনা।

"নারদ, প্রহলাদ এই সব নিত্যসিদ্ধ মহাপুক্ষদের অত করে চক্কের ছদিকে ঠুলি দিতে হয় না। যে ছেলে নিজে বাপের হাত ধরে মাঠের আল্পথে চল্ছে, সে ছেলে বরং অনাবধান চয়ে বাপের হাত ছেড়ে দিয়ে খানায় পড়তে পারে। কিন্তু বাপ যে ছেলের হাত ধবে, সে কথন ও খানায় পড়ে না।

ভাকার। কিন্তু বাপ ছেলের হাত ধরা ভাল নর।

জীরামক্লফ। তা নগ়। মহাপুরুষদের বালকস্বভাব। **ইশ**ের কাছে

ভাহারা সক্ষাই বালক। তাঁদের অহঙ্কার থাকে না। তাঁদের স্বশক্তি ঈশবের শক্তি, বাপের শক্তি, নিজের কিছুই নয়।

(विठात्रभथ ७ ष्यानन्मभथ ; ख्यानर्याग 🔳 एक्टियाग)

ভাক্তার। আথে ঘোড়ার চক্ষের ছদিকে ঠুলি না দিলে, ঘোড়া কি এগুতে চান ? রিপু বশ না হলে, কি ঈশ্বরকে পাওয়া যায় ?

শ্রীরাম্ক্রফা । তুমি যা বলচো, ওকে বিচার-পথ বলে—জ্ঞানযোগ বলে।
ও শ্থেও ঈশ্বকে পাওয়া যায়। জ্ঞানীরা বলে, আগে চিত্ত দি হওয়া দরকার।
আগগে সাধন চাই, তবে জ্ঞান হবে।

"আবার ভক্তিপণেও ওাঁহাকে পাওয়া যায। যদি ঈর্বরের পাদ-পছে একবার ভক্তি হয়, যদি তাঁরে নামগুণ গান কর্তে ভাল লাগে, ভাহলে ইন্দ্রিদ সংযুদ্ধার চেন্টা করে কব্তে হয় না। রিপুবেশ আপনা আপনি হয়ে যায়।

'ঘদি কাহারও পুত্র শোক হয়, সে দিন সে কি আর লোকের সঙ্গে ঝগড়া কর্তে পায়ে, না নিমন্ত্রণে গিয়ে থেতে পারে ৷ সে কি লোকের সাম্নে অহলার করে বেড়াতে পারে, না হল সভোগ কর্তে পারে ৷ বাছলে পোকা যদি একবার আলো দেখ্ডে পার, তা হ'লে কি সে আর জন্ধকারে থাকে ?

ভাকার। তাপুড়েই মকক সেও স্বীকার।

জীরামরক। নাগো, ভক্ত কিন্ত বাছলে পোকার মত প্ডে মরে না। তক্ত যে আলো দেখে ছুটে যায়, সে যে মণির আলো। মণির আলো খুব উজ্জ্বল বটে, কিন্ত স্থিয় আর শীতল, এ আলোতে গা পুড়েনা, এ আলোতে শাস্তি হয়, আনক হয়।

(জ্ঞানযোগ বড় কঠিন)

"বিচারপথে, জ্ঞানযোগের পথে, তাঁহাকে পাওয়া বায়। কিন্তু এ পথ বড় কঠিন। আমি শরীর নই, মন নই, বুজি নই, আমার রোগ নাই, শোক নাই, অশান্তি নাই, আমি সচিদানক্ষরপ, আমি স্থতঃখের অতীত, আমি ইক্রিয়ের বশ নই, এ সব কথা মুখে বলা থুব সোজা। কাজে করা, গারণ হওয়া, বড় কঠিন। কাঁটাতে হাত কেটে বাচেচ, দর্দব্ করে রক্ষ পড়ছে, অথচ বলছি, 'কই, কাঁটার আমার হাত কাটে নাই, আমি বেশ আছি।' এ সব কথা বলা বাজে না, আগে ঐ কাঁটাকে জ্ঞানাম্মি দিয়া পোড়াতে হবে তো?

(বই পড়া জ্ঞান বা পাণ্ডিতা; শিক্ষাপ্রণালী)

"व्यत्नदक मदन करत, वहे ना भएड़ वृत्ति क्वांन हम ना, विका इस ना। कि क

পড়ার চেয়ে গুনা ভাল, গুনার চেয়ে দেখা ভাল। কাশীর বিষয়ে পড়া, কাশীর বিষয়ে গুনা, আর কাশী দর্শন করা অনেক ডফাং।

"আবার যারা নিজে সতরঞ্চ থেলে, তারা চাল তত বুঝে না, কিন্ত যারা না থেলে, উপর চাল বলে দেয়, তাদের চাল ওদের চেয়ে আনেকটা ঠিক ঠিক ছিয়। সংসারী লোক মনে করে, আমরা বড় বুদ্ধিমান্। কিন্তু তারা বিষয়া-সক্তা নিজে খেলচে। নিজেদের চাল ঠিক বুঝাতে পারে না। কিন্তু সংসার-ত্যানী সাধুলোক বিষয়ে অনাসক্ত। তারা সংসারীদের চেয়ে বুদ্ধিমান্। নিজে থেলে না, তাই উপর চাল ঠিক বলে দিতে পারে।

ভাকার। (ভক্তদিগের প্রতি) বই পড়লে এ ব্যক্তির (প্রমংংস্দেবের) এত জ্ঞান হতো না। Faraday communed with nature. প্রকৃতিকে ফের্য়াডে নিজে দর্শন করতো, ভাই অতো Scientific truth discover কর্তে পেরেছিল। বই পড়ে বিলাহলে, অত হত না। Mathematical formulae only throw the brain into confusion. Original inquiry ব পথে বড় বিল্ন এনে দেয়।

(ঈশ্ব প্রদত্ত জ্ঞান ও মানুষের পাভিত্য)

শ্রীরামক্কষ। (ডাক্টারের প্রতি) যখন পঞ্চনীতে মাটীতে পড়ে পড়ে আমি মাকে ডাক্তুম, আমি মাকে বলেছিলাম, মা! আমায় দেখিয়ে দাও, কল্মীরা কর্ম্ম করে যা পেয়েছে, যোগীরা যোগ কবে যা দেখেছে, জ্ঞানীরা বিচার করে যা জেনেছে, আরও কত কি, তা কি বলবে।।

"আহা! কি অবভাই গেছে। ঘুম যায়। এই বলিয়া পরম ংশদেব গান-করিয়া বলিতে লাগিলেন;—

বুম ভেলেছে আর কি বুমাই,
নোগে বালে জেগে আছি।
এখন বোগ নিজা ভোৱে পেরে মা,
ঘুমেরে বুম পাড়ায়েছি।

"নামি তো বই টই কিছুই পড়িনি, কিন্তু দেগ, যার নাম করি বলে, আমার স্বাই মানে। শস্তু মলিক আমার বলেছিল, চাল নাই, তরোয়াল নাই, শাস্তির্বাম দিং। (সকলের হাজ)

প্রীযুক্ত গিরীশচক্র ঘোষের 'বুদ্ধদেব চরিত' অভিনয় কণা হইকে কাগিল।

তিনি ডা কারকে নিমন্ত্রণ করাইয়া ঐ অভিনয় দেখাইয়াছিলেন। তাকার উহা দেখিয়া যারপর নাই আনন্দিত হইয়াছিলেন।

ডাক্তার। (গিণীশের প্রতি) তুমি বড় বদ্লোক। আমায় কি রোজ থিয়েটার থেতে হবে।

শ্রীরামকৃষ্ণ। কি বলছো, আমি বুঝতে পারছি না। মান্টার। ওঁর থিয়েটার বড় ভাল লেগেছে। (ক্রমশঃ।)

শ্রীন্ত্রীরাসাস্থজচরিত।

साभी बाबककानमा।

ি ৩০৪ পৃষ্ঠার পর।

প্রায় সহস্র বৎস পূর্ব্বে আহারি কেশবাচার্য্য নামে এক ইইনিন্ত সদ্মান্ত্রণ এই প্রামে বাস করিতেন। সেই সময় জীনদ্ যামুনাচায্য বা আল্ওয়ান্দার রাজনিংহাসন পরিত্যাগ করিয়া নম্বির শিষ্যত্ব গ্রহণ পূর্বাক জীরদ্ধন্ধত্রে অত্যাশ্রমী-ভিক্কবেশে অবস্থান করিতেছেন। ওরুর বৈকুঠ প্রাপ্তি হইলে, আল্ওয়ান্দরই তৎকালিক সমগ্র বৈষ্ণবমগুলীর নেড়রূপে পরিগৃহীত হইলেন। তাঁহার অসাধারণ ত্যাগ, বৈরাগ্য, পাণ্ডিত্য, নত্রতা, ইউনিষ্ঠা প্রভৃতি, সকল বৈষ্ণবেরই অফুকরণীয় হইয়া উঠিল। তদ্রচিত প্রমধুর ভোত্র সকল সজ্জনই সাদরে কঠছ ও হালয়ত্ম করিয়া আপনাদের কত্রতা মনে করিলেন। বস্ততঃই, মহাত্মা যামুনাচার্য্য উক্ত স্থোত্রে এরূপ উৎকট ভক্তি ও প্রীতির সহিত শ্রমণ্ড ভারবংপালপদ্মে সরলভাবে আত্মনিবেদন করিয়াছেন যে, তাহা পাঠ করিলে পাষ্থাছদয়েও ভক্তির সঞ্চার হয়। চতুর্দ্দিক্ হইতে দলে দলে ভগবড্রিস্পরাহণ বৈষ্ণবিগণ আসিয়া তাহার শিষ্যত্ব গ্রহণ পূর্বাক আপনাদিগকে পরম ভাগ্যবান্ বিলয়া জ্ঞান করিলেন। তন্মধ্যে ত্রই, একজন তাঁহার ভার ভিক্কণাশ্রম গ্রহণ পূর্বাক নিরন্তর তৎসহবাদে ও তৎদেবায় কালাতিপাত করিয়া আপনাদের সর্বভোভাবে ক্রহার্থ বিলয়া বোধ করিতে লাগিলেন।

পেরিয়া তিরু মলাই নম্বি বা বৃদ্ধ শ্রীশৈলপূর্ণ ষামূনাচার্য্যের সর্বপ্রধান শিষ্য ছিলেন। তিনি জীবনের শেষভাগে গার্হস্থাধর্ম পরিত্যাগ করিয়া উক্ত মহাপুক্ষের নিকট সন্ত্রাস গ্রহণ করেন । তেওসহ্বাপে কালাতিপাত করেন। তাঁহার হুইটি ভগ্নী ছিলেন। জ্যেষ্ঠার নাম ভূমি পেরাট্রি', ভূদেবী, বা কান্তিমতী। কনিষ্ঠার নাম পেরিয়া পেরাট্রিবা মহাদেবী।

শ্রীপেরেমবুছর নিবাসী আহরি কেশবাচার্য্য কাষ্ট্রমতীর পাণিগ্রহণ করেন। কনিষ্ঠা মহাদেশী নিকটস্থ আহরম্ গ্রামনিবাসী কমলনয়ন ভটের সহিত উদ্বাহশুঝালে বন্ধা হয়েন। ভগ্নীবংগর উদ্বাহকার্য্য সম্পার হইরা গেলে শ্রীশৈল-পূর্ণ নিশ্চিস্ত মনে ভগবদ্ধানপরায়ণ হইলেন এবং পরিশেষে মহাত্মা যামুনা-চার্য্যে ক্যায় সদ্ভক্রণাভ করিয়া বৃদ্ধাবস্থায় তৎসহবাসে পরমানন্দ উপভোগ করিতে লাগিলেন।

আহরি কেশবাচার্য্য সাতিশয় বজনিষ্ঠ ছিলেন বলিয়া পণ্ডিতগণ তাঁহার "সর্বজ্জতু" উপাধি দিয়াছিলেন। স্থতবাং তাঁহার পূর্ণনাম, শ্রীমদাস্থরি সর্বজ্জতু কেশবদীক্ষিত। বিবাহের পর দম্পতি বহু বংসর শ্রীপেরেম্বৃহরে স্থাধ্বাস করিতে লাগিলেন। কিন্তু তাঁহাদের কোনও সন্তান না হওয়ায় ভক্ত কেশবাচার্য্য কিঞ্জিৎ উদ্বিধননাঃ হইলেন। পরিশেষে বজ্জনারা শ্রীভগবান্কে প্রীত করিয়া ভৎকুপায় পুত্রসন্তান লাভ করিবার আদা তাঁহার হৃদয়ে জাগক্ষক হইল।

যক্ত এব পরোধর্ম্মো ভগৰৎপ্রীতিকারকঃ। অভীষ্টকর্মধুন যক্তস্তস্মাৎ যক্তঃ পরাগতিঃ॥

ইত্যাদি সন্তাপছেলী শাস্ত্রবাক্য সমূহও সেই আশাকে বলবতী করিয়া তুলিল। তিনি মহোদ্ধিতীরবর্তী-বৃন্ধারণানিবাদী শ্রীমংপার্থনারথির সমীপে গমন পূর্বক স্বীয় মনোভাব নিবেদন করিয়া তত্বদেশে যজ্ঞ করিতে সঙ্কল করিলেন। তদস্সারে তিনি সন্ত্রীক বৃন্ধারণো উপস্থিত হইলেন ও শ্রীপার্থ-সার্থির কুম্দসরোবর বা তিরুইল্লি কেণির (তিরু-শ্রী, ইল্লি-কুম্দ, কেণি-সরোবর) তীরে পুত্রকামনায় যজ্ঞানুষ্ঠান করিলেন। অধুনা আমরা যে স্থানকে ট্রিপ্রিকেন্ বিলি, তাহা ঐ তিরুইল্লি কেণির ইংরাজি অপলংশ। যাহা পূর্বের বৃন্ধারণ্য নামে,খ্যাত ছিল, তাহা একণে ঐ সরোবরের নামানুসারে ট্রিপ্রিকেন আখ্যা প্রাপ্ত হইয়াছে। মাদ্রাজ্ঞ, মহরা বা মধুরার অপলংশ। ইহা বৃন্ধারণ্য বা ট্রিপ্রিকেনের উত্তরে।

যজ সমাপ্ত হইলে নিশাকালে কেশবাচার্য্য নিজিতাবস্থায় প্রীমৎ পার্থ-সার্থিকে পথ দেখিলেন। পথে ভগৰান্ তাঁহাকে সম্বোধন করিয়া কহিলেন, "হে সর্বজ্ঞতো, আমি তোমার দ্বাচার, নিন্ধা, ও ভক্তিতে সাতিশ্য পরিভূষ্ট হইয়াছি। ভূমি উদ্বিধ হইও না। আমিই তোমার পুত্ররূপে জন্ম প্রহণ করিব। মনুষ্গণ জ্ম্ দ্বিশতঃ প্রাচার্য্যগণের ঘণার্থ অভিপ্রায় জন্গত হইতে

না পারিয়া আপনাদিগকে ঈশর মনে করিতেছে, এবং অহস্কারের বশবতী হইয়া কুকর্মপুরায়ণ 🖻 যথেক্ছাচারী হইয়া দাঁড়াইয়াছে। স্তরাং আচার্য্য ক্রপে আমি অবতীর্ণ না হইলে ভাহাদের কোনও গতি নাই। তুমি স্ত্রীর সহিত গৃহে প্রতিগমন কর। শীঘুই সিদ্ধকাম হইবে:" এরূপ স্কুস্থর দেখিয়া দেখিয়া কেশবাচার্য্যের আর উল্ল দের দীমা রহিল না। তিনি পত্নীকে স্কলই কহিলেন এবং প্রদিন প্রভুষ্যে উভয়ে স্বগ্রামাভিসুথে প্রস্থান করিলেন।

এই ঘটনার এক বংসর পরে ভাগ্যবতী কান্তিমতী সর্পস্থলক্ষণ-সম্পন্ন এক পুত্রত্ব প্রদাব করিলেন। ৪১:৮ কল্যানে, ৯৩৯ শকান্দে, বা ১০১৭ খুটালে আর্দ্রনিক্তর্ক চৈত্র মাদের দাদশ দিবদে, শুক্র পঞ্মী হিথিতে, কর্কট লগ্নে, বুহস্পতিবারে, পিঙ্গলা নাম্ক বংসবে, হারিভগোত্তীয়, ষ্জুঃশাথা-ধাায়ী ভগৰান শীরামানুজাচার্য্য তরুণ তপনের স্থায় অজ্ঞান অক্ষকার বিদ্রিত কবিয়া সকলোক সমক্ষে সমূদিত হউলেন। উাহার জলো হর্ক্দির নাশ ছইয়া সদ্বৃদ্ধির বিকাশ হইয়াছিল বলিয়া, পণ্ডিতগণ 'ধীলুদ্ধা" এই বাকা দ্বারা তাঁহার জন্মকাল নির্ণয় করিয়াছেন। "অঙ্কল্ম বামা গতিঃ" এই ভায়াকুলারে উক্ত বাক্যে ধ, ল, এবং ধ, এই তিন প্রধান অক্ষর আছে। কাদি নব, টাদি নব, ও বাদি নব এই কয় অক্ষর মালা এক হটতে নর পর্যান্ত সংখ্যার জ্ঞাপক। छै। मि न दवत भरधा भ नत्म छानीय विनया नय मरथा वुकारेदन । अवर यामि न दवत মধ্যে ল ত্তীয় স্থানীয় বলিয়া তিন দংখ্যা বুঝাইবে। অভএব ধ, ল, এবং ধ, এই অক্ষরতার ১৩১ শকাক বুঝাইল।

সেই সময় কনিষ্ঠা ভগ্নী মহাদেবী ও এক পুত্ররত্ন প্রদাব করিলেন। পুতিকা গুচ হটতে বহির্গতা হইয়া কিয়দিনেদ পরে তিনি নবজাত পুত্রের সহিত জ্যেষ্ঠা কান্তিম নার পুত্র সন্দর্শন বাসনায় শ্রীপেরেমুবুছরে আগমন করিলেন। ভগ্নীবয় পর স্পারের মন্ততিমুখাবলোকনে যৎপরোনান্তি আনন্দিতা হইলেন। ইত্যবসবে লোকমুখে বাৰ্ত্তা পাইয়া প্ৰীরঙ্গক্ষেত্র হইতে বৃদ্ধ প্রীশৈলপূর্ণও নবপ্রস্থত ভাগিনের দয়কে দর্শন করিবার মান্দে তথায় উপনীত ছইলেন। বছকালের পর ভ্রাতাকে পাইয়া কান্তিমতী ও মহাদেবী উভয়েই পরম নির্কৃতি শাভ করিলেন। সর্বাহ্মলক্ষণযুক্ত শিশুদমকে দেখিয়া রুদ্ধ সম্নাসীও পরম প্রীত হুট্লেন। কান্তিমতীর পুত্রের নানাবিধ দৈবলকণ দর্শন করিয়া তাঁহার ন্যা। আলোগার কথিত উক্ত সমধ্যে শ্রীপেরেম্বুছরে আদিশেষাবভারের কথা অরণ হইল। রুহং পদ্মপুরাণের দ্বাত্রিংশং অধ্যায়, নারদ পুরাণ, কর পুরাণের

ত্রোবিংশ অধ্যায়, এবং শ্রীমন্তানবতের একাদশ ক্ষরে কলিযুগে যে অনপ্ত দেবের কথা বর্ণিত আছে, এই শিশুই যে সেই লম্মণাবতার, ভাছাতে ভাঁহার আর কোনও সন্দেহ রাইল না। তদনুসারে তিনি উহার নাম জীরামারজ वाशित्वन, अतः महादनवीत भूजदक शाविन जाना अनान कात्रात्वन । महादनवा ভ'বষ্যতে আর একটা পুত্র প্রস্থা করেন, তাঁখার নাম ছোট গো। বন্দ।

আদি কবি নহবি বালিকী লিখিতেছেন যে,

সার্প্যে জাভৌ তু সোমিত্রী কুলীরেহ ভ্যাণতে রবৌ।

হৈত্র মানের অল্লেধা নক্ষত্রে, রবি কর্কট রাশিতে গমন করিলে লক্ষণ ও শক্ত্র জ্বতাহণ করিলেন। ত্রিমন্তামাত্রলাচায্যেরও জ্বামাস এবং রাশি স্থ মিত্রানন্দ্রম্বরের ভুল্য।

শিশু হুইটা চারি মাদের হুইলে, তাহাদিগকে অংক লইয়া মাতৃষয় গুছ হইতে নিজ্ঞান করিলেন, ও আদিতা দর্শন করাইলেন। পরে যথা সময়ে তাহাদের অন্প্রাশন, কণ্ণেধ, চুড়াক্বণ, বিভার্ভ ও উপন্যন ক্যা সম্পন্ন হইল। বাল্যকাল ১ইতেই রামান্ত্র অস্থারণ ধাশক্তির পরিচয় দিয়াছিলেন। শিক্ষকের মুগ হইতে একবার শুনিলেই, যেরূপ প্রবহ পঠি হউক না কেন, তিনি অনামাদে তাথার অর্থবোধ কবিতে পারিতেন। এজন্ত সকল শিক্ষকেরই স্যাত্র্যার প্রিয় ছিলেন।

তাঁহার ধাশক্তি কেবল যে বহিমুখী ছিল তাহা নহে। দিগদর্শন যজের স্কীর স্থায় ইহা উত্তর দক্ষিণ রূপ ধন্ম অর্থ উভয়কেই সমভাগে দেখাইয়া দিত। ধবের অনুনীলন ও ধার্মিকের সহবাদ তাহার দাতিশয় প্রিয়কর ছিল। স্থবিধা পাহলেই তিনি সাধুদক্ষ করিতে বিলম্ব করিতেন ন।।

সেই সময় একাঞিপূর্ণ নামে এক পরম ভাগবত কাঞ্চি নগরীর প্রধানতম্ রয় বলিয়া দর্মজন পরিচিত ছিলেন। উক্ত মহাধ্য প্রতিদিন কাঞ্চি হইতে দেব পূজার্থ পুনামেণি নামক গ্রামে গমন করিতেন। জ্রীপেরেম্বুছুব, ঐ স্থানম্বরের মধ্যবজ্ঞী। স্থতরাং তিনি রামানুজের বাটির পার্ম দিল। প্রতিদিন গমনাগমন করিতেন। জাতিতে শুদ্র ২হলেও তাহার প্রগাঢ় ঈশ্বরাত্রগাগ দোথয়া ব্রাহ্মণগণও তাঁথাকে সমুচিত শ্রনা 🗷 ভক্তি করিতেন। একণা সায়ং-कारण द्वा भूक अधार्यक गृह इहेर७ जानमन कालीन ५३ जानवाजाउरमद স্থিত প্ৰিমধ্যে সহসা মিলিত হইলেন, এবং তদীয় দিবা সুখজ্যোতিঃ নিরীক্ষণ বরিয়া স্বতঃই তাঁহার দিকে সাতিশ্ব আরুষ্ঠ হইয়া পড়িলেন। তিনি অভি

বিনীতভাবে তাঁহাকে সেই রজনী তাঁহার আলয়ে ভিক্লা করিতে অনুনয় করিলেন। একাঞ্চিপূর্ণ বালকের দিব্যকান্তি 🛮 ভগণলঞ্চণ দেখিয়া আমন্ত্রণ অস্বীকার করিতে পারিলেন না। পরমভাগবতকে অতিথি পাইয়া রামান্তজের আর আনন্দের সীমা রহিল না। তাঁহাকে সুচ:রুক্সপে ভিকা করাইয়া, ভদীয় পাদদধাহন করিতে উত্মত হইলেন। অতিথি কিন্তু শ্বীকৃত हरेलन ना। कहिलन, "आिश्व नीह, मृज। आपिस बाक्षण । पत्र रेवछव। কোণায় আমি আপনার পদসেবা করিব, তাহা না হইয়া আপনি কি না দাসের সেবা করিতে চাহিতেছেন ?" শীরামালুজ তাহাতে ছঃখিত হইয়া কহিলেন, "বুঝিলাম, আমার অচুষ্ট মনদ। তজ্জভাই আপনার ভাগ মহাপুরুষের দেবা-ধিকার পাইলাম না। মহাশয়, উপবীত ধারণ করিলেই কি ত্রাহ্মণ হয় প যিনি হরিভক্তিপরায়ণ, তিনিই প্রকৃত ব্রাহ্মণ। দেখুন তিরুপ্পান আলোয়ার চণ্ডাল হইয়াও ব্রাহ্মণের প্রজা হইয়াছেন।"

বালকের ঈদুশী ভক্তি দেখিয়া একাঞ্চিপূর্ণ তাঁহাকে মনুষ্যজ্ঞান করিতে পারিলেন না। নানাবিধ সদালাপের পর রজনীতে রামাতুজগৃৎে বিভামতুথ অমুভব করিয়া পর্দিন প্রাভঃকালে স্বস্থানে গমন করিলেন। সেই দিবস ছইতে উভয়ে উভয়ের প্রেমে চিরদিনের জন্ম বন্ধ হইয়া পড়িলেন।

পূর্বাচার্য্যগণ রামাত্মজকে কেন যে লক্ষ্ণাবতার বলিয়াছেন, ভাহা ভাঁহারা পুরাণপ্রমাণাতুদারে দেখাইয়াছেন, ইহা পুর্বে ইন্সিত করিয়াছি। সৌমিতির স্বভাবের সহিত কেশবনন্দনের সভাব তুলনা করিলেও আমরা অনেক সৌসাদৃষ্ট দেখিতে পাই। লক্ষীবর্দ্ধন লক্ষণের কর্তব্যপরায়ণ্ডা, সত্যনিষ্ঠা, রামভব্দি, জিতে জিয়তা, ও ধর্মপ্রায়ণ তা জনতী তলে অতুলনীয়। তাঁহার হৃদ্ধরাজ্যের শ্রীবামচলাই একমাত্র অধীখার ছিলেন। রামবদ ভিন্ন ইতর রুদে উহার আছা-মাত্রই চিল না ৷ স্বতরাং তিনি যে পার্থিব প্রলোভন হইতে স্বদূরে অবস্থান করিবেন, তাহাতে আশ্চর্যা কি ? ইহার ভূরি ভূরি প্রমাণ, আমরা "বাল্মীকি-সিরিসস্তা, রাম্পাগরগামিনী", রামায়ণী গঞ্চায় অবপাহন করিলে প্রাপ্ত হই। যধন মায়াময় অর্ণমূল, রুমণীকুলের গৌরবস্বরূপিণী জনকনন্দিনীকে মোহিত क्रिया, मर्खक्लाान्छन्मम्बिङ छभवान् श्रीवामहत्त्रक्ष विस्माहिङ क्रियाहिल, সেই সময় শ্রীমান্ লক্ষ্ণ তাঁহার হৃদয়ের একমাত্র অভিষ্ঠদেবকে এইরূপে (ক্ৰমশঃ) সাবধান করিতেছেন।

সবই পুৰা কাৰ্য্য, পূৰ্ণ অনুভূতির ফল, উহারা এফনে স্বাভাবিক জ্ঞানকণে প্রিণত ইইয়াছে। এতক্ষণ আমির। বেশ আমিলাম, আর এত্দুর প্র্যুক্ত আধুনিক বিজ্ঞানও আমাদেব মহায় রহিলেন, কিন্তু আৰ এক গোল আনিতেছে। আধুনিক বিজ্ঞানবিদের। প্রাচীন ঋষিদের সহিত একমত ংইতেছেল এবং ভাষাদের ষ্ড্লা'ন প্রাচীন ঋ্ষিদেব সঙ্গে মিল্ ভভ্যানি কোন গোণ নাই। নৈজ্ঞনিকেবা স্বাকার করেন যে, প্রত্যেক মান্ত্র এবং প্রত্যেক জত্ত ক্রক ওলি অতুভূতি সম্প্রীক্ষা জন্মগ্রহণ করে , উঞ্চার: ইহাও মানেন ্ষ, মনের এই সকল কাষ্যা পূকা অভুভূতিব ফল; বিশ্ব ভাছারা বলেন, ঐ অসভূতিগুলি যে আল্লার, ইহা বলিবার আবিশ্রকতা কি ? উচা কেবল শরীরেবই ধর্ম, আই। বলিলেইত হয়। উহা বংশালুক্রমিক সংখার বলিলেইত হয়। ইহাই শেষ প্রধা: খানি যে দেবল সংসার লইষ, জলিয়াছি, ভাছা সামার পুक्त पूर्वरप्रव मिकिङ मध्याव, इंश्हें वन ना (कन पृक्क की वान इंसेड সম্প্রেষ্ঠ মন্ত্রা পর্যান্ত সকলেওই কন্দাংকার আমার ভিতরে রছিয়াছে, কিন্তু উহ। বংশানুক্রনিক সঞ্চারের বশেহ আমাতে আসিরাছে। এরূপ হুইলে আর কি গোল থাকে ? এই প্রশ্নটি অতি সূক্ষ্য। আমরা এই বংশাতুক্রমিক সঞ্চা-বের কতক অংশ মানিবাও থাকি। কতটুকু মানি ? মানি কেবল আ্থার বালোপ্যোগী গৃহ লান করা পর্যান্ত। আমবা আমাদের পূক্ষ কন্মের ছারা কোন বিশেব শরাব আশ্র করিনা থাকি। আর যাঁহার। আপ্নাদিগকে পেই আত্মাকে সন্তানরূপে লাভ করিবার উলযুক্ত করিয়াছেন, তাঁহাদেব নিকট হইতেই তিনি উপসুক্ত উপাদান গ্রহণ করিলা থাকেন।

বংশালুক্রনিক-জনবিকাশবাদ প্রমাণ বাতীতই একটা অনুত প্রতিজ্ঞা বীকার কবিল্ল, থাকেন যে, মনের সংস্কারবাশির ছাপ জড়ে থাকিতে পারে। যগন সামি ভোমাব দিকে তাকাই, তথন আমার চিত্ত দে একটা তরঙ্গ উঠে। ঐ তর্গ চলিল্লা যাল্ল, কিন্ত স্ক্রারপে তরঙ্গাকারে থাকে। আমরা উহা বুঝিতে পারি। ভৌতিক সংস্কার যে শরীরে থাকিতে পারে, তাহা আমরা বুঝি। কিন্তু শরীর ভগ্ন হইলেভ যে মান্দিক সংস্কার শনীরে বাস করে, তাহার প্রমাণ কি ! কিমের ঘারা ঐ সংস্কার সঞ্চারিত হল্ন থনে কর, যেন মনের প্রত্যেক সংস্কার শনীরে বাস করা সম্ভব; মনে কর, আদিম মন্তুয়া হইতে আরম্ভ হইলা বংশানুক্রমে সকল পূর্কাপুরুষের সংস্কার আমার পিতার শরীরে রহিয়াছে এবং প্রতার শরীর হইতে আমাতে আসিতেছে। কি করিয়া ! ভীবালুকোষের তলা শ্রাবণ, ১০০৮।] উদ্বোধন। Bio-plasmic cell) দারা। কিন্তু কি করিয়াইহা সন্তব হইবে, কারণ, পিতার শরীর সম্পূণ সন্তানে আইসে না। একই পিতামাতার অনেকগুলি সন্তানসম্ভতি থাকিতে পারে, তাহা হইলে এই বংশান্তক্রমিক সঞ্চারবাদ হইতে ইহা নিঃসংশ্যভাবে প্রমাণিত হইতেছে বে, এথানে সঞ্চারক ও সঞ্চার্য্য এক, অর্থাং ভৌতিক বলিয়া পিতামাতা তাহাদের নিজ মনোবৃত্তির কিঞ্চিদংশ পোয়াইবেন, মার যদি তাহাদের সম্দয় মনোবৃত্তিই আইসে, তবে প্রথম সন্তানের জন্মের পর জাঁহাদের মন শৃত্যক্ষপ হইবে।

जानाव यनि जीवान्द्रकारम हिडकारमह मन्द्रावममष्टि थारक, जरव জিজান্ত এই, উহা কোথায় ও কিরুপেই বা থাকে ? ইহা একটা অভান্ত অসম্ভব প্রতিজ্ঞা, আরে যতদিন না এই জড়াাদীরা প্রমাণ করিছে পারেন, কি কার্মা ঐ নংখার ঐ কোষে থানিতে পারে, আর কোথায়ই বা থাকিতে পারে, এবং মনোরতি ভৌতিক কোষে নিজিত থাকে, ইহার অর্থ কি, বুঝাইতে भारतम, उडिमम डीशामित अधिका चौकात कतिया न उता वाहरू भारत मा। এইটুকু বেশ ম্পষ্ট বোঝা ঘাইতেছে যে এই দংস্কার মনের মধ্যে, মনই জন্মজন্মা-📰 গ্রহণ করিতে আইদে, মনই আপন উপযোগা উপদোন গ্রহণ করে, আর যে মন মাপনাকে কোন বিশেষ প্রকার শরীব ধারণ করিবার উপযুক্ত কর্ম क्रियार्ड, यडमिन पर्याञ्च न। উट्ट राइ डेलामान पाइंटल्ड, उडमिन উट्टार्क অপেকা করিতে হইবে। ইহা আমরা বুঝিতে পারি। অতএব দাড়াইল এই টকু যে, আত্মার দেহগঠনোপগোগী উপাদান প্রস্তুত করা পর্যান্তই বংশা-মুক্রমিক দঞ্চারাত্রসারে পিতামাতার কার্যা। আত্রা কিন্তু দেহের পর দেহ গ্রহণ করেন-শরীরের পব শবীর প্রস্তুত কবেন; আমরা যে কোন কার্য্য করি. তাহাই সৃষ্ণভাবে রহিয়া যায়, আবার সময় পাইলেই উহাবা প্রকাশ পাইতে প্রস্তুত হয়। যথনত আমি তোমার দিকে দল্পাত করি, তথনই আমার মনে একটা তরঙ্গ উঠে। উহা যেন চিত্তব্রন্থের ভিতর ভুবিয়া যায়,সক্ষাৎ স্ক্ষতর হইতে _ थारक, किन्न छेश একেবারে নাশ श्रेषा यात्र ना। উरा आवात्र उत्रक्षाकात्त्र উঠিতে প্রস্তুত হইবা থাকে-- উহার নাম মুতি। দেখা গেল, সমুদয় সংস্থার-সমষ্টি আমার মনে বহিয়াছে, মুতা হইলে এই সমুদ্ধ সংস্থারের সমবেড সমষ্টি আমার উপর থাকে। একটা বল রহিরাছে, আর আমাদের মধ্যে প্রত্যেকেই হাতে একটা ছড়ি লইধা দব দিকু হটতে উহাকে মারিতে আরম্ভ করিলাম: বলটা খরের এক ধার হইতে আর এক ধারে যাইতে আরেম্ভ হয়, দরজার के खाशन । ಲ ಎ ৮ [७३--- : > भ मः था ;

কাছে পঁছছিলেই উহা পলাইয়া যায়। উহা কোন্ শক্তিতে বাহিরে চলিয়া ষায় • যতগুলি ছড়ি মারা হইতেছিল, ভাগাদের সমবেত শক্তিতে। উহার দিক্ও এ সকলের সমবেত ফলে নির্ণীত হইবে। এইরপ, মগ্রীরের পতন হইলে আত্মাকে চালায় কে ৫ উথা—যে সকল কার্যা করিয়াছে, যে সকল চিন্তা করিয়াছে, উহা ঐ সকল শক্তি লইয়া চলিবে। যদি সমবেত কর্ম্মামষ্টি এরূপ হয় যে, পুনর্বার ভোগের জন্ম উহাকে নূতন শরীর গড়িতে হয়, তবে ডহা टमरे मकल भिजाभागत निक्रे वाहत, याशामत निक्रे हहेट एमरे मंत्रीत গঠনের উপধোগী উপাদান পাওয় যাইবে-তখনট উহা একটা নূতন শ্রীর গ্রহণ করে। এইরপে উহাদেহ হইতে দেখান্তরে যায়, স্থার্ যায়, আবার পৃথিবীতে আইসে, মাতুষ হয়, অথবা উচ্চতর বা নিয়তর শরীর গ্রহণ করে। এইরপেই উহা চলিতে থাকে,যভাদন না উহার ভোগ শেষ হল গ্লাবার প্রিয়া পূর্বস্থানে প্রত্যাবৃত্ত হয়। উহা তথন নিজের স্বরূপ জানিতে পারে, নিজে কি তাহা জানিতে পাবে, অজ্ঞান চলিয়া যায়, উথার শক্তি সমূহ প্রকাশিত হয়, উহা তথন সিশ্ব হটয়া যায়, সারে উহার পক্ষে তুল শ্বীরের কোন আব-খ্যকতা থাকে না---সুকা শ্রীরেবও আবশুকতা থাকে না। উহা নিজ আলোকে নিজে প্রকাশিত হয়, মুক্ত ২ইয়া যায়, উহার আনর জনা বা মৃত্যুর আবিশুক্তা থাকে না।

আমবা এ সম্বন্ধে একণে ভার বিশেষ অনেলাচনা করিব না। কিন্তু এই পুনর্জ্জন্মবাদ সম্বন্ধে আর একটা কথা বলিয়াই নিবৃত্ত হইব। এই মতই কৈবল জীবাআর মাদীনভা ঘোষণা করিয়া থাকেন। উহা আমাদের সমুদ্র ফুর্ম্মলভার কারণ অপর কাহাবও মাড়ে চাপায় না—মাহা একটা সাধারণ মানবীয় গুর্ম্মলভা। আমরা আমাদের নিজেদের দোষ দেখিতে পাই না। চক্ষ্ কখন আদনাকে দেখিতে পায় না। উহারা আর সকলেব চক্ষ্ দেখিতে পায়। আমরা আমাদের ভর্ম্মলভা শীকার কবিতে বড় নাবাজ, আমারা অপবের মাড়ে দোষ চাপাইতে পারি। সাধারণ মানব অপর লোকের উপর সমুদ্র দোষ চাপাইয়া থাকে; ভাহা মদি না পারে, ভবে ঈর্মরের মাড়ে দোষ চাপায়; ভাহা না হইলে অদৃষ্ট নামক একটা ভূভের স্থান্ট করে। অদৃষ্ট আবার কি ? উহা কোথায় গ্ আমরা যাহা বপন করি, আমরা ভাহাই পাইয়া থাকি।

আমরাই আমাণের অদ্টের স্টিক গ্রা। আমাদের অদ্ট মন্দ হইবেও কাহাকেও দোষ দিবাব নাই, আধার ভাল হইবেও কাহাকেও প্রশংসা করিবার ১লা শ্রাবন, ১৩০৮ টা উদ্বোদন : ৩৩৯ নাই। বাভাগ সমদাই চলিতেছে। যে সকল জাহাদ্যেব পাল থাটানো পাকে, দেই গুলিতেই বাতাস লাগে—তাহারাই পাল ভরে এগিয়ে যায়। যাতাদের পাল গুটানো থাকে, তাতাদিগের বাতাস লাগে না—তবে কি ইতা বায়র দোষ হইল ৭ জামরা যে, কেহ প্রথী, কেহ বা জঃখী, ইহা কি সেই ক্রণাম্য পি হার দেষে, যাঁছার কুপা প্রন দিবারাত্তি অবিরত বহিতেছে— ঘাঁতার দ্যাব কোন ক্র নাই ও আমরাই আমাদেব অন্তের রচ্থিত।। উচেব সূর্যা চুক্লি বল্লান সকলের জন্ত উদিত। ভাঁছার বায়ু গাধু পাণী সকলের জ্ঞাই স্মান ৰহিতেছে। তিনি স্কলেব প্ৰভ, স্কলেব পিভা, দ্যাস্থ, স্মাদ্ধী। ভোমরা কি মনে কর ক্ষুদ্র জুদ্র ক্র আমন। যে দৃষ্টিতে দেখি, হিনিও সেই দষ্টিতে দেখিয়া থালেন। জলবৎ-দম্পন্ধ ইছা কি কুদু ধাৰণা। আমৰা কুদু ক্ষুপুত্ৰ প্ৰানে নানা বিষ্ণের জন্য অভি আগ্রাহ্ব সহিত প্রোণ্প্রে (চ্টা করিতেছি, আব নিসোদের মত মনে করিতেছি, ভগবান ও ঐ বিধ্য ওলি ঠিক দেইকাণ মত্য বলিয়াই গ্রহণ করিবেন। তিনি ছানেন, এ প্রতল খেলার অর্থ কি। তাঁহার প্রতি স্ব দোষ চাপান, তাঁখাকে দণ্ড পুরস্কারের কতা বলা, কেবল নিক্রেণ্পর কথা সাত্র। তিনি কাহারও দণ্ড বিধানও করেন না, ক। হাকেও পুনস্থারও দেন না। সদ্ধ দেশে, স্দাক।লে, স্দ্রি তাবস্থায় তাঁহার অন্ত দল পাইবাৰ সকলেই অধিকারী। উহার বাৰহাৰ কিরপ করিব, তাহা আমাদিগের উপর নির্ভব করিতেছে। মাল্য ঈথর বা আর কাহারও দোষ দিও না। যথন নিজ কর পাও, তথন আপেনাকেই নিল। কর, এবং যাহ**াতে আপনার মঙ্গল, ভাহার**ই চেপ্তা কর।

পূন্দোক্ত সমস্তার ইহাই মীমাংসা। যাখানা নিজেদেব কঠের জন্ত অপরের নিলা কবে (গুংখের বিষয়, এরূপ লোকের সংখাই দিন দিন বাড়িছেছে), তাহারা সাধারণতঃ হতভাগ! গুরুল মন্তিম ; ইহারা নিজেদের কর্মনোধে এ অবস্থায় আসিষা পড়িয়াছে, এক্ষণে ভাখাবা অপরেব নিলা •করিতেছে, কিন্তু তাহাতে ভাহাদের অবস্থার কিছুমাত্র পরিবর্তন হয় না, উগতে তাহাদের কিছুমাত্র উপকার হয় না। বরং অপবের আড়ে দোষে চাপাইনার এই চেটাতে তাহাদিগকে আবত্র তুর্দল করিয়া ফেলে। ছত্রব কাহাকেও ভোমার নিজেব দোষের জন্ত নিন্দা করিও না, নিজের পাথে নিজ দাড়াও, সমুদ্ধ দাছিত ভোমার নিজের ঘাড়ে লও। বল, আমি যে কপ্ত ভোগ করিতেছি, তাহা আমারই রুত্বশ্যের ফল –তাখ হইতেই প্রমাণিত হইতেছে, উগ্ল আমারই ওঙ্ব

দারা নাশও হইতে পারে। যাহা আমি স্টে কবিয়াছি, তাহা আমি ধ্বংস করিছে পারি, ঘাহা অপর কেহ স্টে করিয়াছে, তাহা আমি কথন নাশ কবিতে সমর্থ হটব না। অতএব উঠ, সাহসী হও, বীর্ণবান্ হত। সন্দয় দায়িত্ব আপনার ঘাড়ে লও —জানিয়া রাখ, তুমিই তোমাব অন্টেথ স্থানকতা। তুমি যে কিছু বল বা সহায়তা চাও, তাহা তোমার ভিতরেই রহিয়াছে। অতএব তুমি এক্ষণে জানিয়া নিজের ভবিষাৎ গঠন করিতে থাক। 'গত্ত শোচনা নান্তি'— এক্ষণে সম্দায় অনস্ত ভবিষাৎ তোমার সম্মুখে। সর্কাদাই ইহা মনে রাখিবে, তোমার প্রত্যক চিন্তা, প্রত্যক কার্যাই স্থিত থাকিবে। মনে মনে এই আশা বাখিবে, যেমন অসং চিন্তা, তুমং কাণ্য সমুদ্ধ তোমার উপর বাালের স্তায় লাফাইয়া পড়িতে উত্যত, সেইরাণ সংচিন্তা, সংকার্যাগুলি সহস্র দেবতার বলসম্পান হটয়া ভোমাকে সদা রক্ষা কবিতে উত্যত থাকিবে।

অমৃতর।

কোন প্রশ্ন মান্ত এতবার জিজানা করিবাছে, কোন তত্তের রহল ইলবাটন করিতে মালুষ সমুদায় জলৎ খুঁজিয়াছে, কোন প্রশ্ন মানব-জ্বরের এত অন্তর্তর ও প্রিবতর, কোন প্রশ্ন আমাদের অন্তিত্বের সহিত এক অচ্ছেন্তলতে জড়িক যত এই মানবালার অন্যত্ত সহকে প্রশ্ন ক্রিদিগের তেও বল্লনার বিষ হট্য়াছে, সাধু মহাত্মা জানী সকলেরই ইহা মহা চিন্তাৰ বি হট্যাত সিংহাসনোপনিষ্ট বাজগণ ইছার বিচার করিয়াছেন, প্রিম্পাস্থ অভি দ্ভিত্ত এই অমরত্বের স্বপ্ন দেখিয়াছে। শ্রেষ্ঠ মানবর্গণ এই প্রশ্নের উত্তব প্রায় স্পর্ণ করিষাছেন – অতি হীন মানবগণও ইহার আশা করিয়াছে। এই বিষয়ে লোকের আগ্রহ এখনও নষ্ট হয় নাই, এবং বছদিন মানব প্রকৃতি বিভয়ান পাকিবে, জ্রুদিন নষ্ট কইবেও না। জগতে এই সম্বন্ধে ভানেকে অনেক উত্তব দিয়াছেন ৷ আবাব ঐতিহাদিক প্রতি যুগেই দেখা যায় যে, সহল্র মছল্ল ব্যক্তি এই প্রশ্ন একেবাবে অনাবশ্রক বলিয়া পবিভাগে করিয়াছেন, কিন্তু তথাপি উহা দেইরূপই নুতন রহিষাছে। অনেক সময় জীবন সংগ্রামে বাস্ত থাকিয়া এই প্রশ্ন যেন ভূলিয়া যাইতে হয়। হঠাৎ কেহ কালগ্রাদে পতিত হইল-এমন কেহ, যাহাকে আমি হয়ত খুব ভাল বাসিতাম, আমার অন্তরের অন্তর্ভম কেই হঠাং ধম আমাদের নিকট হইতে কাড়িয়া লইলেন, তথন যেন মুহুর্ত্তের 2러 | 최연이, 그00나 1] **छेट्या**धन । 053

জন্ম এই সংসাবের কোলাহল, সব পোলমাল খামিয়া গেল, সব বেন নিস্তক্ষ হুইল, আর মাত্মার গভীরতম প্রেদেশ হুইতে সেই প্রাচীন প্রশ্ন জিজাসিত হইতে লাগিল—ইহার পর আরে কি আছে? আয়ার কি গতি হর? ঠেকিয়াই মালুষ সমুদ্ধ শিক্ষা করে। আমাদের বিচারও এই কতক গুলি সাধারণ অমুভূতির উপর নির্ভব করে। আমাদের চতুর্দ্ধিকে নয়ন বিফারিভ করিয়া আমরা কি দেখিতে পাই ? ক্রমাগত পরিবর্ত্তন ! বীজ বুক ছইতে উৎপর হয়—আবার বৃক্ষ হইতে বীজ হয়। বীজ অন্ত্রিত হইয়া বৃক্ষ হয়— আবার ঘুবিয়া বীজন্ধপে পবিণ্ড হয়। কোন জীব উৎপন্ন ছটল — কিছুদিন রহিল - আবার ফিরিয়া মরিয়া গেল-এই রূপে একটা বৃত্ত সম্পূর্ণ চইল। মাত্যের সম্বন্ধেও ভদ্রাণ। পর্বাত সকল ধীরে অথচ নিশ্চিত রূপে ওঁড়াইয়া যাইতেছে, নদী সকল ধীরে অণচ নিশ্চিত শুকাইয়া ঘাইতেছে। সমুদ্র হুইতে বুষ্টি আসিতেছে, আবার উহা সমূদ্রে ঘাইতেছে। সর্বত্রই একটা একটা বৃত্ত--জন্ম, বৃদ্ধি ও নাশ যেন গণিতের স্থায় দঠিকভাবে এক নব পর আর একটী আসিতেছে। ইহাই আমাদের প্রতিদিনের অভিজ্ঞতা। এই সকলেরই অভ্যস্তর-দেশে ক্ষুদ্রতম প্রমাণু ১ইতে আরম্ভ করিয়া অনম্ভ প্রকারের অনম্ভ আরুতিযুক্ত উচ্চত্ম সিদ্ধপুৰ্য পৰ্যান্ত মহান বস্তুরাশির পশ্চাতে আমৰা একটা একছ দেখিতে পাই। প্রতিদিনই আমরা দেখিতে পাই, যে হর্ভেন্ত প্রাচীর এক পদার্থ হইতে আর এক পদার্থকে পৃথক করিতেছে, লোকে ভাবিত, তাহা ভঙ্গ হইয়া যাইতেছে— আর আধুনিক বিজ্ঞান সমুদর ভূতকেই এক পদার্থ বলিয়া ব্ঝিতেছে—কেবল যেন সেই এক প্রাণশক্তিই নানারূপে ও নানা মাকারে প্রকাশ পাইতেছে—উহা বেন সমুদয়ের মধ্যে এক শৃত্যলক্ষপে বিদ্যামান— এই স্কল বিভিন্নরূপ যেন তাহার এক একটা জংশ-অনস্তরূপে বিস্তুর, অথচ সেই এক শৃঙ্খলেরই অংশ। ইহাকেই ক্রমোরতিবাদ বলে। এই ধারণা অতি প্রাচীন - মমুষ্যমাজ যত প্রাচীন, এই ধারণাও তত প্রাচীন। কেবল মাঁমুষের জ্ঞান যত বর্দ্ধিত ছইতেছে, ততই উহা যেন আমাদের চক্ষে আরও উজ্জ্বত্বরূপে প্রতিভাত হইতেছে। শাচীনেরা আর একটা বিষয় বিশেষরূপ বুঝিতেন-ক্রমসঙ্কোচ। কিন্তু আধুনিকেরা এই তব্দী তত ভালরূপ বুঝেন না। বীজট বুক্ষ হয়, এক বিশু বালুকণা কথন বুক্ষ হয় না। পিতাই পুত্ৰ হয়, मृ जिकाथल कथन मञ्चानदार बनाय ना। (काथा इटेट वरे क्रमविकांग इत्र, ইহাই প্রশ্ন। বীজ পূর্বেক কি ছিল ? উহা সেই বৃক্ষরণ ছিল। ঐ বীঞ िय-३३म मृश्याः 985 **উ**र्शिश्य ।

ভবিষাং একটা বুক্ষের সম্ভবনীয়তা রহিয়াছে। ক্ষুদ্র শিশুতে ভবিষাৎ মান্তবের প্রদার শক্তি অন্তানিহিত রহিয়াছে। সর্ব্যকার ভবিষাৎ জীবনই অব্যক্তভাবে উধাদের বাজে রহিয়াছে। ইহার তাৎপর্য্য কি ? ভারতের প্রাচীন দার্শনিকেরা ইংাকে 'ক্রম্মেল্র' বলিভেন। অতএব আমরা দেখিতে পাইতেছি, প্রত্যেক ক্রমবিকাশের মালিতেই একটা 'ক্রমনস্কোচ' প্রক্রিয়া রহিয়াছে। যাহা পূর্বা इटेट उर्दे वर्दभान नार, जाहात कथन ज्ञानकान हटेर्ड शांत ना। এथारिख व्याधुनिक विकान व्यामानिगटक माश्रीस कित्रा थाटकन । गणिट वर युक्ति चात्रा সঠিকভাবে প্রতিপন্ন হইয়াছে যে, জগতে যত শক্তির বিকাশ দেখা যায়, ত। হাদের সমষ্ট সরবদাই সমান। তুমি এক বিন্দু জড় বা এক বিন্দু শক্তি বাড়াইতে বা কমাইতে পার না। অভএব শূল হইতে কথনই ক্রমবিকাশ इय नाहै। তবে কোণা ६६८७ इहेन १ वर्ष हेशत शुक्त क्रमरह ह প্রাক্রিয়া হইয়া থাকিবে। পূর্ণবয়স্ক মানুষের ক্রম সঙ্কোচে শিশুর উৎপত্তি,আবার শিশু হৃহতে ক্রমবিকাশ প্রক্রিয়ায় মানুষের উংপত্তি। সর্বব্রকার জীবনের উংপাত্তর দন্তবনীয়তা তাহাদের বীচে রহিবাছে। এখন এই সম্ভা যেন বিছু সরল হইয়া আগিতেছে। ইহার সহিত পূদোক ধন্দ্য জাবনের একত্তের ভাব ধর ৷ কুত্রতম জাবাণু হইতে পূণ্তম মানব প্র্যাপ্ত বাস্তাবক এক সন্তা, এক জীবনই বৰ্ডমান। যেমন এক জীবনেই আমরা শৈশব, মৌবন, বার্দ্ধক্য প্রভৃতি বিবিধ অবসা দেখিতে পাই, এই তত্ত্তীকেই আরু একটু অগ্রসর ইইয়া আর একটু বিস্তারিত করিয়া দেখ,—ঐ শৈশব অবস্থার পশ্চাতে—তাহার পশ্চাতে—তাহার পশ্চাতে—কি আছে দেখ, ষতক্ষণ না তুমি জীবাণুতে উপনীত হও। এইক্লপে ঐ জীবাণু হইতে পূণ্ডম মান্ব প্রান্ত যেন এক জীবন-স্ত্র বিরাজমান। ইহাকেই ক্রমবিকাশ বলে এবং মামরা দেখিয়াছি, প্রত্যেক ক্রমণিকালের পূর্বেই একটা ক্রমসংস্কাচ রহিয়াছে। যে জীবনীশক্তি এই मुज को वानू हहेट जात्र कि विशा भीति भीति भून ध्य मानव अथवा এहे क्षाउप ঈশ্বর বভার রূপে ক্রেমবিকশিত হয়, –এই সমুদ্ধ গুলিই অবশ্রই জীবাণুতে স্মাভাবে অবস্থান করিতেছিল। সমুদয় শাও -- এমন কি, স্বাং ঈশ্বর উহার মধ্যে অস্তর্নিহিত ছিল—ধীরে ধীরে আত ধীরে ক্রমশঃ প্রকাশত হইতে থাকে। সর্বোচ্চ প্রকাশও অবশ্রই বীজভাবে সৃন্ধভাবে উহার ভিতরে ছিল—ভাহা ११एन छेरा कारात्र क्रमगढ़ार रहेन १ भिरु मर्जवाशी जगनम कोरनीमकिन क्रममरक्रांत । এই এक देवज्ञानामि याश की वानू इट्रेंट भूनं वस मानव भवाख व्या व्यावन, १००४।] छ्टबाधन ।

বিজ্ঞান, ভাষা ধীরে ঘীরে প্রকাশিত হইতেছে। উঠা-কি দু উষ্ট্রেই মৰ্ববাপী জগন্ম চেত্তের অংশ- উহা ঐ জীবাণুতে ক্রমস্থাটত হত্যা বর্তমান ছিল। উহা সমুদ্ধই পূণভাবে বর্তমান ছিল। উহা য জনাল, ভাহন नरहा जनारमात छात भश्वम मन क्षेट्ड मृत्रेया (५८। हनारमा वा বুদ্ধির দক্ষে এই ভাবের যোগ আছে, যেন বিছু বাহিব হুইতে আদিভেছে। ইহা মানিলে পুলোক্ত গাণ্ডসঙ্গত পমাণ অথাৎ তগতে শক্তি সক্দাই স্কাত স্থান থাকে, ইছা সিদ্ধ হণ না। উহা ভিতরেই থাকে, কেবল উহা আপন্তক প্রকাশ করে মাত্র। বিনাশের অর্থ কি ? এই একটা মাস বাহয়ছে। আমি উহা ভূমিতে ফেলিয়া দিলাম, উহা চুর্গ বিচুর্গ হইয়া গেল। উহা কি হল্প ১২। পুরুদ্বে প্রিণ্ড হইল মাত্র। তবে ক্রিশে কি হইল স স্থলের সৃষ্টাবে পতিণতি। উহার উপাদান প্রমাণুগুলি একও ১ইয়া গ্রাস্ নামক এই ক:গো পরিণত ছইয়াছিল। উগারা আবার উথাদের কাবণে চলিতা यात्र, आंत्र नाम देशतिहे नाम-कांत्रप नत्ता कांगा किए ना, कांत्रपंत বাক্তভাব। কার্যা ও কারণে স্বরূপতঃ কোন ভেদ নাই। আবার ঐ গ্রাদের क्याहे ध्रा छेशात छेपानान छनि अनः छेशात नियाणात देखा मश्याण উহা উংপন্ন। এই এইটাই উহার কারণ এবং উহাতে বর্তমান। নিমাভার ইজাশক্তি এক্ষণে উহাতে কি ভাবে বভ্রমান । সংহতিশক্তিরপে। ঐ শক্তি না থা কিলে উহার প্রত্যক প্রমাণু পুথক পুথক হইয়া ঘাইত। তবে একণে কাষ্যারী কি হটল গুনা, উচার কাবেশর সাহিত অভেদ, কেবল উহা আর এক রূপ ধরিয়াছে মাত্র। যথন কাংণহ কিছু কালের জন্ম পরিণাম প্রাপ্ত হয়, অশ্ব কোন নিশিষ্ট স্থানের ভিতর স্ফুচিত আকারে অবস্থান করে, তথন ঐ कार्या तिकह कार्या वरमा व्यामारम्य हैश मरन कविया ताथा छे हिछ। अह ভত্তীকে আনাদের জীবনের ধারণা সম্বন্ধে প্রযুক্ত করিলা দেখিতে পাই যে, জীবাৰু হইতে দম্পূৰ্ণতম মানৰ প্ৰয়ন্ত সমুদ্ৰ শ্ৰেণীহ অবভা সেই বিশ্ববাপী প্রাণশক্তির সহিত অভেদ। কিন্তু অমৃতত্ব সম্বন্ধে প্রাম্ম এখানেও মিটিল না। আমরা কি পাইলাম ? আমরা পুরোক্তে বিচার হইতে এই টুকু মাত্র পাইলাম (य, जनर छत कि हुन हे ध्वरम इय ना। नृत्न कि हुहे नाहे-कि इ ६हे(वर्ष ना। দেই একই প্রকারের বস্তরাশি চক্রের কায় পুনঃ পুনঃ উপস্থিত হইতেছে। জগতে যত গতি আছে, স্বহ তর্পাকারে একবার উঠিংছে, একৰার পড়িতেছে। কোটাকোট একাও স্থাতর রপ হইতে প্রস্ত হইতেছে--(०६-১: म मस्या); উध्याधन ।